# भारत-भ्रमणके चतुर्थ खण्डका सूचीपत्र।



॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥



# भारतभ्रमण.

## चतुर्थ खण्ड.

## पहला अध्याय ।

**( सूबे बंगालमें ) आसनसोल जंक्शन, ( सूबे छोटेनागपुरमें ) चाईवासा, (मध्यदेशमें) सम्भलपुर, रायगढ, सारनगढ़, कुदरमाल, शबरीनारायण, बिलासपुर, रतनपुर, कवरदह, रायपुर, राजनन्दगाँव, खैरागढ़, भंडारा कामटी और रामटेक।**

### आसनसोल ।

शंकर पद पाथोज नमि 'साधुचरणपरसाद' ।
चौथ खण्ड 'भारत-भ्रमण' वरनत राहित विषाद ॥

मेरी चौथी यात्रा सन् १८९३ ईस्वीके मार्च ( संवत् १९५० के चैत ) में आरम्भ हुई । मैंने तीसरी यात्रा समाप्त करनेके उपरान्त कई एक दिन अपने घर रहकर चौथी यात्रा आरम्भ की ।

चरजपुरासे दक्षिण गङ्गाके दूसरे पार 'ईष्टइण्डियन रेलवे' का स्टेशन बिह्यिा है, जहाँ मैं रेलगाडीमें सवार होकर आसनसोल चला ।

बिहियासे पूर्व ४४ मील बाँकीपुर जंक्शन और १२० मील लक्खीसराय जंक्शन और लक्खीसराय जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ६१ मील वैद्यनाथ-जंक्शन और १३० मील

आसनसोल जंक्शन है । मैं आसनसोलसे बिलासपुर, नागपुर और भुसावल जंक्शन होकरके बम्बई और मदरास हातेके तीर्थों और शहरोंमें गया। जिसको विहियासे रामेश्वर, बम्बई, द्वारिका इत्यादि जाना हो उसको विहियासे नैनी जंक्शन और जबलपुर होकर भुसावल जानेसे ३७८ मील मार्गका बचत होगा; क्योंकि विहियासे आसनसोल होकर भुसावल ११२१ मील और नयनी होकर केवल ७४३ मील है।

सूबे बङ्गालके बर्दवान जिलेमें कार्डलाइनपर ( २३ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश १ कला पूर्व देशान्तरमें ) रानीगञ्ज सबडिवीजनके अन्तर्गत आसनसोल एक बस्ती है। वहाँसे पश्चिम कुछ दक्षिण 'बङ्गाल नागपुर रेलवे' नागपुरको गई है, जो सन् १८९१ ई० में खुली थी। आसनसोलमे एञ्जिनका बडा कारखाना, एक थाना और एक रोमनकथोलिक स्कूल है और उसके चारोओर कोयलेकी खानोंका मैदान है। वहाँके प्राय. सबलोग पत्थरके कोयलेसे रसोई बनाते हैं।

आसनसोल जंक्शनसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) आसनसोलसे पश्चिम थोडा दक्षिण 'बङ्गाल-नागपुर रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाडीका महसूल प्रति मील २ पाई है, गई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४७ पुरुलिया ।
८० चण्डील।
८९ कन्दरा ।
९७ सीनी * ।
१०७ अमडा ।
११९ चक्रधरपुर ।
१५६ मनारपुर ।
१८२ रौरकेला ।
१९० कलूंगा ।
२२१ बामड़ा ।
२४४ झारसुगढ जंक्शन ।
२८९ रायगढ़ ।
३३८ चाँपा ।
३४५ नैला ।
३७१ विलासपुर जंक्शन ।
४३९ रायपुर + ।
४८१ राजनान्दगाँव ।
५०० डुङ्गरगढ़ ।
५८८ भंडारारोड ।
६०३ तोरसा ।
६१८ कामटी ।
६२७ नागपुर ।

झारसुगढ़ जंक्शनसे ३० मील दक्षिण सम्भलपुर ।

विलासपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रारोड और १९८ मील कटनी जंक्शन ।

नागपुरसे पश्चिम ओर ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे

* सीनीके स्टेशनसे रेलवेकी नई शाखा खरगपुर होकर कलकत्तेके पास हवडेको और खरगपुरसे कटक होकर वालटेयरको गई है सीनीसे पूर्व ९९ मील खरगपुर, १५१ मील उलवडिया और १७१ मील हवडा और खरगपुरसे उत्तर ८ मील मेदनीपुर और दक्षिण पश्चिम ७२ मील वालेश्वर, ११० मील भद्रक, १३० मील जाजपुर रोड, १८१ मील कटक, १९८ मील भुवनेश्वर, २१० मील खुरदारोड, ३०२ मील ब्रह्मपुर, ४३६ मील विजयानगरम् और ४७४ मील वालटेयर जंक्शन और खुर्दारोड जंक्शनसे दक्षिण १७ मील शाखीगोपाल और २८ मील जगन्नाथपुरी है।

+ रायपुरसे दक्षिण ४६ मीलको रेलवेशाखा धमतरी कसबेको गई है।

पर२४४मील भुसावल जंक्शन, ३५८ मील मनमार जंक्शन, ४८७ मील कल्यान जंक्शन और ५२० मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन ।

(२) आसनसोलसे पश्चिमोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २३ पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६ सीतारामपुर जंक्शन ।
५१ मधुपुर जक्शन ।
६९ वैद्यनाथ जंक्शन ।
१०३ गिद्धौर ।
११७ जमुई ।
१३० लक्ष्मीसराय जक्शन ।
१५० मोकामा जक्शन ।
१६७ बाढ़ ।
१७८ बखतियारपुर ।
२०० पटना ।
२०६ बाँकीपुर जंक्शन ।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़ ।

मधुपुरसे २३ मील पश्चिम दक्षिण गिरिडी ।

वैद्यनाथ जंक्शनसे ४ मील पूर्व दक्षिण देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथजी ।

लक्ष्मीसराय जक्शनसे पूर्व २५ मील जमालपुर जक्शन,४३मील सुलतानगञ्ज,५८ मील भागलपुर, ७८ मील कहलगाँव और १०४ मील साहबगञ्ज ।

मोकामा जंक्शनसे उत्तर और गयांके बॉयें ओर २ मील मोकामाघाट, २२ मील सेमारियाघाट, और ६० मील समस्तीपुर जंक्शन ।

बाँकीपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर६ मील दीघाघाट,दक्षिण और गयाब्रेंचपर ८ मील पुनपुन, २८ मील जहाँनाबाद और ५७ मील गया; और पश्चिम कुछ दक्षिण ६मील दानापुर, ३० मील आरा, ४४ मील विहिया, ६३ मील डुमरॉव,७३मील बक्सर, ९५ मील दिलदारनगर जंक्शन और १३१ मील मुगलसराय जंक्शन ।

(३) आसनसोलसे पूर्व-दक्षिण 'ईष्टइण्डियन रेलवे' ।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

११ रानीगञ्ज ।
१६ अण्डाल जंक्शन ।
५७ खाना जंक्शन ।
६५ वर्द्दवान ।
१०३ मगरा ।
१०८ हुगली जंक्शन ।
१११ चन्दरनगर ।
११८ सेवडाफुली जंक्शन ।
१२० श्रीरामपुर ।
१३२ हवडा ( कलकत्तेके पास ) ।

अण्डाल जंक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गउरागदी ।

खाना जंक्शनसे लुपलाइनपर १४४ मील उत्तर साहबगञ्ज और साहबगञ्जसे १०४ मील पश्चिम लक्ष्मीसरायजंक्शन।

हुगली जंक्शनसे५ मील पूर्व दक्षिण नइहाटी जंक्शन ।

सेवडाफुली जंक्शनसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर ।

# चाईबासा।

आसनसोल जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण ४७ मील पुरुलियाका रेलवे स्टेशन है, जिससे ४९ मील पश्चिम दक्षिण चण्डील और कन्दराके स्टेशनोके बीचमें सुवर्णरेखा नदीपर रेलवेका पुल बना है। पुरुलियासे ६० मील ( आसनसोल जंक्शनसे १०७ मील ) पश्चिम दक्षिण अमड़ाका रेलवे स्टेशन है, जिससे लगभग १५ मील दक्षिण चाईबासाको १ सडक गई है। सूबे छोटेनागपुरके ( २२ अंश, ३२ कला, ५० विकला, उत्तर-अक्षांश और ८५ अंश ५० कला ५७ विकला पूर्व देशान्तरमें ) सिंहभूमि जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा चाईबासा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चाईबासामें ६००६ मनुष्य थे, अर्थात् ५१२० हिन्दू, ७७८ मुसलमान और १०८ दूसरे।

चाईबासामें मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, अङ्गरेजी स्कूल और खैराती अस्पताल है। वहाँ प्रतिवर्ष बड़े दिनके समय एक मेला होता है, लगभग २००० मनुष्य मेलेमें आते हैं, ३१ दिसम्बरको घोडदौड, नाच इत्यादि तमासा होते हैं। चाईबासा कसबेसे चारोंओर देहाती सड़क निकली है।

सिंहभूमि जिला—यह छोटानागपुर विभागके दक्षिण-पूर्वमें ३७५३ वर्गमीलके क्षेत्र-फलमें फैलता है। इसके उत्तर लोहारडागा और मानभूमि जिला, पूर्व मेदनीपुर जिला; दक्षिण सूबेउड़ीसा और पश्चिम लोहारडागा जिला और छोटेनागपुरके देशी राज्य हैं। जिलेके चारोंओर पहाड़ियाँ हैं। जिलेके दक्षिणी सीमापर कुछ दूर तक सुवर्णरेखा नदी और पश्चिमी सीमापर वैतरणी नदी बहती है। देश पहाड़ी है। प्रधान नदी सुवर्णरेखा और कोयल है। जङ्गलोंमें बाघ, तेंदुए, भालू इत्यादि वनजन्तु रहते हैं और कभी २ हाथियोंके छोटे झुण्ड चले आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिंहभूमि जिलेमें ४५३७७५ मनुष्य थे, अर्थात ४४७८१० हिन्दू, २९८८ कृस्तान, २३२९ मुसलमान और ६४८ पहाड़ी कोम संथाल। इनमें ३०४४९९ पहाडी और जङ्गली कोम थे, जिनका वड़ा भाग हिन्दूमें लिखा गया। इनमें १८७७२३ कोल थे। हिन्दूमें ३८६७२ ग्वाला, २०८३९ तांती, २८८६ ब्राह्मण, २२५९ बनिया, १९४९ राजपूत, शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। जिलेमें केवल चायवासा में ५००० से अधिक ममुष्य थे।

# सम्भलपुर।

अमडाके रेलवे स्टेशनसे १२ मील पश्चिम-दक्षिण सिंहभूमि जिलेके चक्रधरपुरमे रेलवे के एञ्जिन बदलते हैं। स्टेशनके आसपास अनेक कोठियाँ बनी हैं। वहाँसे उत्तर एक सड़क रांचीको गईहै। उससे आगे रेलवेके दोनों ओर अधिक पहाड़ियाँ देखनेमें आती है। चक्रधर-पुरसे ३७ मील पश्चिम-दक्षिण मनारपुरका स्टेशन है। वहाँ उत्तम शालके वृक्षोसे भरे हुए जङ्गलोंसे रेलवे निकलती है। उन जङ्गलोंमें बहुत पहाडियाँ होनेके कारण घूम घाम कर रेलवे लाइन निकली है। एक जगह पहाड़ी फोड़कर उसके भीतर लाइन बैठाई गई है जिससे होकर रेलगाडी निकलती है, वहाँके प्रायः सम्पूर्ण निवासी कोल है। मनारपुरके स्टेशनसे

३४ मील पश्चिम दक्षिण कलूँगाका स्टेशन है। रौरकेला और कलूँगाके स्टेशनके बीचमें ब्राह्मणी नदीपर रेलका पुल बना हुआ है। उस देशके गरीब लोग नदीके बालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। कलूँगाके स्टेशनसे तीस चालीस मील दक्षिण ब्राह्मणीनदीके पूर्व सूबे छोटेनागपुरके एक देशी राज्यकी राजधानी गांगपुर है। कलूँगासे २१ मील पश्चिम-दक्षिण गारपोस स्टेशनके आसपासके घने जङ्गलमें बरसातके समय जङ्गली हाथी आते हैं। गारपोससे १० मील आगे जानेपर बामडाका रेलवे स्टेशन मिलता है, जिससे लगभग २५ मील दक्षिण मध्य देशमें एक देशी राज्यकी राजधानी बामड़ा है। बामड़ाके स्टेशनसे १० मील बगदेहीके स्टेशन तक रेलवे लाइन पहाडियोके दरमियान होकर जाती है। बगदेहीसे १३ मील और आसनसोल जंक्शनसे २४४ मील पश्चिम-दक्षिण झारसुगढमें रेलवेका जंक्शन है।

एक रेलवे शाखा झारसुगढ़से ३० मील दक्षिण सम्भलपुरको गई है। मध्यदेशके छत्तीसगढ़ विभागमें (२१ अंश, २७ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश १ कला पूर्व देशान्तरमें) महानदीके बाँये किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा सम्भलपुर है, जहांसे एक सडक उत्तर कुछ पूर्व रांचीको; दूसरी सडक पूर्व कुछ उत्तर मेदनीपुर होकर कलकत्तेको और तीसरी सडक दक्षिण पूर्व कटकको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सम्भलपुर कसबेमे १४५७१ मनुष्य थे, अर्थात् १२१६९ हिन्दू, १२७४ मुसलमान, ९८९ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी कोम और १३९ कृस्तान।

कसबेके निकट महानदीकी चौडाई लगभग १५० फीट है; किन्तु वर्षाकालमें यह नदी १ मील चौडी होजाती है। कसबे और स्टेशनके सामने नदीके किनारेके चट्टानोंपर झौंआंका सघन जङ्गल लगा है। कसबेके पश्चिमोत्तर सम्भलपुरका उजडा हुआ किला है, उसकी खांईकी निशानी अब तक देखनेमें आती है और सम्भलाई देवीके निकट सम्भलाई फाटक विद्यमान है किलेके भीतर सोलहवीं सदीके बने हुए परमेश्वरी देवी, वड़ा जगन्नाथ अनन्तजी इत्यादि देवताओंके बहुतेरे मन्दिर स्थित हैं। सम्भलपुरमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, जिलास्कूल, जनाना अस्पताल और दो सराय प्रधान इमारत हैं और एक बडा बाजार फैला हुआ है। पहिले कसबेके पश्चिमोत्तर महानदीके विस्तरमें बहुत हीरे मिलते थे।

सम्भलपुर कसबेसे लगभग ५० मील दक्षिण महानदीके दहिने मध्य देशके एक देशी राज्यकी राजधानी सोनपुर है, जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ८६९८ मनुष्य थे। सोनपुरसे पश्चिम और पटना राजधानी है।

सम्भलपुर जिला—यह जिला छत्तीसगढ विभागके पूर्वमें ४५२१ वर्गमीलमें फैला है। इससे मिले हुए कालाहांडी, रायगढ, सारनगढ, पटना, सोनपुर, बामडा और रेहराखोल ७ देशी राज्य ११८९७ वर्गमीलमें हैं सम्भलपुर जिले और देशी राज्योंके उत्तर छोटा नागपुर और पूर्व और दक्षिण कटक, बिलासपुर और रायपुर जिला हैं। सम्भलपुर जिलेमे होकर महानदी बहती है। नदीके पश्चिमकी भूमि अच्छी तरहसे जोती जाती है। उस भागके बहुत अधिक साफ किये गये हैं। जिलेके प्राय प्रत्येक बस्तीमें एक तालाव है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सम्भलपुर जिलेमें ६९३४९९ मनुष्य थे; अर्थात् ६३२७४७ हिन्दू, ४६६७२ पहाडी कोमे, १०१२० कवीरपंथी, २९६६ मुसलमान, ६९२ कुम्भीपंथिया जो केवल सम्भलपुरहीमें हैं, २१२ सतनामी और ११० कृस्तान। जातियोके खानेमें ७९०७९ गोर, ७८६२२ गांडा, ७७४५३ केवट, ६७१०२ कोलटा, ६५८४५ सवर, ५७३२७ गोंड़, ४०६९६ वेगा, ४०६९६ कोल, २२२५० तेली, २१८२८ ब्राह्मण, १८६४३ कुरा, १६६७२ खॉंद, ५६४४ राजपूत, और शेषमे दूसरी जातियोके लोग थे।

इतिहास—पटनेके १२ वे राजा नरसिंहदेवने अपने भाई वलरामदेवको दक्षिणका जङ्गली देश दे दिया। वलरामदेव सम्भलपुरका पहला राजा हुआ। उसने अपने आस-पासके कई राजाओंसे भूमि छीनकर अपना राज्य वढाया। उसके वडे पुत्र हरिनारायण-देवने, जो सन् १४९३ ई० मे राजगद्दी पर वैठा, अपने दूसरे पुत्र मदनगोपालको सोन-पुरका देश दे दिया, जो अव तक उसके वंशधरोंके अधिकारमे है। उस समयसे लगभग २०० वर्षतक सम्भलपुरका वल वढता गया और पटनाका घटता गया। सन् १७९७ में महाराष्ट्रोंने बडी लडाईके उपरान्त सम्भलपुरको ले लिया और वहॉंके राजा जेठसिह और उसके पुत्रको कैदी बनाकर नागपुरमे भेज दिया। सन १८०८ मे जेठसिह मरगया। उसके चन्द महीनोके पीछे जेठसिंहका पुत्र राजा वनाया गया। सन् १८२७ मे उसके मरनेके पश्चात् उसकी विधवा मोहनकुमारीके उत्तराधिकारिणी होनेपर झगड़ा आरम्भ हुआ। रानी तख्तसे उतारी गई और सम्भलपुरके तीसरे राजाकी रखेलिन स्त्रीसे जन्मा हुआ पुत्र नारायणसिह राजा बनाया गया। सन् १८४९ मे जव नारायणसिंह विना पुत्रके मर गये तव सम्भलपुर अङ्गरेजी अधिकारमें होगया। सन् १८६४ के आरम्भमे सुरेन्द्र शा वागी हुआ था, जो कैद किया गया। तबसे जिलेमे शान्ति स्थापित हुई और सम्भलपुर कसबेकी उन्नति होने लगी।

## रायगढ़।

झारसुगढ़ जंक्शनसे ४५ मील पश्चिम (आसनसोल जक्शनसे २८९ मील पश्चिम-दक्षिण) रायगढका रेलवे स्टेशन है। मध्य देशमें (२१ अंश ५४ कला उत्तर अक्षाश और ८३ अंश २५ कला पूर्व देशान्तरमे) एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान कसवा रायगढ है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय ४८६० मनुष्य थे, अर्थात् ४३६१ हिन्दू, ३२८ मुसलमान, १६६ आदि निवासी, ३ कवीरपन्थी और २ सतनामी।

रायगढ़का राजवंश गोंड जातिका है। कसवेमे राजाका महल वना है और १ स्कूल है। राजाके पूर्व पुरुष ठाकुर दरियावसिंहने महाराष्ट्रोंकी सहायताकी,इस लिये उनको राजाकी पदवी मिली। रायगढ़के वर्तमान राजा भूपदेव २५ वर्षके नौजवान है।

रायगढके राज्यके उत्तर सरगुजा और गाङ्गपुरका राज्य, दक्षिण महानदी और सम्भ-लपुर जिला, पूर्व गाङ्गपुरका राज्य और पश्चिम चन्द्रपुर इत्यादि है। राज्यकी पहाडियोंमें लोहाका ओर होता है। राज्यका क्षेत्रफल १४८६ वर्गमील है। उससे लगभग ६६७०० रुपये

मालगुजारी आती है, जिसमेसे ४०० रुपया अङ्गरेजी सरकारको दिया जाता है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस राज्यमे १२८९४३ मनुष्य थे।

## सारनगढ़।

रायगढ़से दक्षिण-पश्चिमकी ओर महानदीसे दक्षिण मध्य देशमे एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी सारनगढ़ है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४२२० मनुष्य थे, अर्थात् ३६३८ हिन्दू, ३१७ पहाडी कोमें, २३० मुसलमान और ३५ कबीरपंथी। राजधानीमें राजाका महल, कचहरियाँ और एक स्कूल है।

सारनगढ़का राजा गोंड है। लाञ्जीका राजा नरेन्द्रशा सन् ९१ ई० में भण्डारा गाँवमे था। सारनगढ़के राजाओके कथनानुसार नरेन्द्रशाके पोता जगदेवशाके ५५ वें पुश्तमे सारनगढ़का वर्तमान राजा है। जगदेवशाके ४२ वे पुश्तमें कल्यानशा था, जिसको राजाकी पदवी मिली। राजा संग्रामसिंह, उसके बाद राजा भवानीप्रतापसिंह, सारनगढ़के राजा हुए थे, जिसके पीछे वर्तमान राजा लालजवाहिरसिंह, जो निरे बच्चे हैं, राजा बने हैं।

राज्यका क्षेत्रफल ५४० वर्गमील है। इसके उत्तर रायगढ़का राज्य, पूर्व सम्भलपुर जिला, दक्षिण फुलझर और पश्चिम बिलासपुर जिला है सन् १८८१ में राज्यमें ७१२७४ मनुष्य थे। राज्यमें होकर महानदी बहती है। राज्यसे ४१७०० रुपया मालगुजारी आती है। पहिले यह राज्य १८ किलेमेंसे एक था।

## कुदरमाल।

रायगढसे ४९ मील पश्चिम (आसनसोल जक्शनसे ३३८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण) चाँपाका रेलवे स्टेशन है, जिससे पूर्व हसदू नदीपर रेलवेका पुल बना है। रेलवेसे लगभग २०मील उत्तर कोवराके कोयलेके मैदानमें उस नदीके किनारोपर जंगलोंमें कभी कभी जङ्गली हाथियोंके दल देख पडते हैं।

चाँपाके रेलवे स्टेशनसे १४ मील उत्तर (बिलासपुर कसबेसे ३२ मील पूर्वोत्तर) कुदरमाल एक बस्ती है, जो श्रीकबीरजीके सुप्रसिद्ध शिष्य धर्मदासजीके पुत्र वचनचूड़ामणि साहबकी समाधि और वंश घरानेके मठ होनेके कारणसे प्रसिद्ध है। इस घरानेका प्रधान मठ कुदरमालसे लगभग ८० मील पश्चिम कुछ उत्तर कवरदहमें है।

कुदरमालमें वचन चूडामणि साहबका समाधि मन्दिर है। माघकी पूर्णिमाको वहाँ प्रसिद्ध मेला होता है, जो पूर्णिमाके पहिलेसे उसके पीछे तक लगभग ३ सप्ताह रहता है। यात्रीगण चूडामणि साहबकी समाधिका दर्शन करते हैं। चतुर्दशी और पूर्णिमाको बडी धूम धामसे समाधिकी चौका आरती होती है। कुदरमालके महंत कवरदहके मठके आधीन हैं। इस समय महंत विश्वनाथदास कुदरमालके मठके मालिक हैं।

## सबरीनारायण।

चांपाके स्टेशनसे ७ मील पश्चिम नैलाका रेलवे स्टेशन है। नैलासे १६ मील दक्षिण कुछ पूर्व और बिलासपुर कसबेसे २९ मील दक्षिण-पूर्व बिलासपुर जिलेमें महानदी और शिवनाथ नदीके संगमसे लगभग १० मील पश्चिम शिवनाथ नदीके दहिने किनारेपर शबरी-नारायण एक तीर्थ स्थान है, जिसको शेवरीनारायणभी लोग कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शवरीनारायण वस्तीमे २२५० मनुष्य थे, अर्थात् २००९ हिन्दू, १२७ मुसलमान, ७९ कवीरपन्थी, २६ पहाडी जातियाँ और ९ दूसरे।

नदीके तीरपर महादेवजीका और उससे थोड़ी दूर पर शवरीनारायण और राम लक्ष्मणका मन्दिर है। एक लेखसे ज्ञात होता है कि लगभग सन् ८४१ ई० में शवरीनारायणका मन्दिर बना। वहाँ फाल्गुनकी शिवरात्रिको एक बड़ा मेला और विजयादशमीके समय छोटा मेला होताहै। शवरीनारायणके महन्त धनी हैं।

वस्तीमें तहसीली कचहरी, थाना, डाकखाना और मदरसा, ये सरकारी इमारतें पक्की बनी हैं। निवासी गोड और छतीसगढ़ी अधिक हैं।

कुछ लोगोंका कथन है कि श्रीरामचन्द्र वनवासके समय इसी स्थानपर शवरीसे मिले थे, किन्तु वाल्मीकि अध्यात्म इत्यादि रामायणोंमें लिखा है कि पम्पासरके समीप रामचन्द्र शबरीसे मिले थे। वह स्थान शवरीनारायणसे ६०० मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम मदरास हातेके वलारी जिलेके हुसपेट कसवेसे कई मील दूर निजामके राज्यमें है। नासिकसे जहाँ सीता हरण हुआ था, लगभग ४०० मील दक्षिण-पूर्व पम्पासर और ६०० मील पूर्व कुछ उत्तर शवरीनारायण हैं। शवरीकी कथा किष्किन्धाके वृत्तान्तमे मिलेगी।

## बिलासपुर।

नैलाके स्टेशनसे २६ मील पश्चिम ( आसनसोलसे ३७१ मील पश्चिम-दक्षिण ) विलासपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्य देशके छत्तीसगढ़ विभागमे ( २२ अंश, ५ कला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश, १२ कला पूर्व देशान्तरमें ) रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा बिलासपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बिलासपुर कसवेमें ११११२ मनुष्य थे, अर्थात् ९४९६ हिन्दू, १४४१ मुसलमान, १०६ कृस्तान, ७५ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी और जङ्गली, २ जैन और २ पारसी।

कसवेके उत्तर एक छोटी नदी बहती है। आस पास आमके वहुतेरे वाग लगे हैं और कुछ दूरपर अनेक पहाडियाँ हैं।

विलासपुरसे १९८ मीलकी रेलवे लाइन पहाडी जिले और उमरियाके कोयलेके मैदान होकर कटनी जंक्शनको गई है। विलासपुरसे ६३ मील उत्तर पेन्ड्रारोड और पेन्ड्रारोडसे १३५ मील पश्चिमोत्तर कटनी है।

पेन्ड्रारोडसे लगभग ७ मील दूर रीवाँके राज्यमें अमरकण्टकके शिखरपर वहुतेरे देव-मन्दिर वने हैं। उसमें स्थानको अमरकण्टक तीर्थ कहते है; उसी शिखरसे नर्मदा नदी और सोन नदी निकली हैं। भारतभ्रमण पहिले खण्डके इक्कीसवे अध्यायमें अमरकण्टकका वृत्तान्त है।

विलासपुर जिला–इसके उत्तर रीवाँका राज्य, पूर्व गढ़जातके अनेक राज्य; दक्षिण रायपुर जिला और पश्चिम मण्डला बालाघाट जिला है। जिलेका सदर स्थान विलासपुर कसवा है। जिलेके पूर्व, पश्चिम और उत्तर पहाडियोंके सिलसिले हैं। सोन और महानदी

वर्षा कालमें वहुत चौड़ी होजाती है, किन्तु अन्य ऋतुओंमें विना नावके लोग पार चले जाते हैं। जिलेमें जङ्गल वहुत है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय विलासपुर जिलेके ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०१७३२७ मनुष्य थे; अर्थात् ६२९६५९ हिन्दू, १५७५४७ आदिनिवासी, १३३०८६ सतनामी, ८७३४८ कवीरपन्थी, ९६२५ मुसलमान, ३५क्रस्तान, १७ जैन और १० सिक्ख, हिंदुओंमें ९५०२० चमार, ८४५४६ अहीर, ६१३२४ तेली, ४१३२७ कूर्मी, ३४७६७ केवट; २४५४१ मराार, २३२२४ ब्राह्मण, १५९२८ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोके लोग थे और आदि निवासियोंमें १२५९२८ गोड, बाकीमें सारिया, कुरुकू इत्यादि जातियोंके मनुष्य थे। विलासपुर जिलेके कसवे विलासपुरमे ७७७५. रतनपुरमें ५६१५ और मुँगेलामें ४७५७ मनुष्य थे।

विलासपुर जिलेके किशान इत्यादि सर्व साधारण पुरुष छोटे वस्त्र पहनते हे और स्त्रियाँ लम्बे वस्त्रके आधे भागको कमरमें लपेट कर ठेहुनो तक लटकाती हैं और आधेको छातीपर फैला कर दहिने कंधे पर रख देती हैं। वहाँकी भाषा पहाडी लोगोंकी वोलियोसे मिली हुई हिन्दीका अपभ्रंश है। उस जिलेमें वहुत सी जोतने योग्य भूमि विना जोती हुई पडी है। सन् १८८१ में जिलेके ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफलमेसे केवल २१२१ वर्गमील भूमि जोती जाती थी, ४१६४ वर्गमील जोतने लायक थी और १०६३ वर्गमील जोतने योग्य नहीं थी। जिलेकी प्रधान फासिल धान है। गेहूं, इत्यादि दूसरे अन्न, तलके वीज, ऊख और कपास भी होते हैं। जिलेमें ज्वरकी वीमारी अधिक होती है।

इतिहास—लगभग ३०० वर्ष हुए कि विलास नामक एक मछुहेने विलासपुरको वसाया, इस लिये कसबेका नाम विलासपुर पडा। वहाँ वहुत दिनों तक केवल मछुहोकी चन्द झोंपाडियाँ थीं। सन् १८६१ में विलासपुर एक जिला नियत हुआ। सन् १८६२में विलासपुर कसवा जिलेका सदर स्थान वना। विलासपुर संवंधी इतिहास रतनपुरके इतिहासमें है।

# रतनपुर।

विलासपुर कसवेसे १५ मील उत्तर कटनी शाखाके कोटाके रेलवे स्टेशनसे कई मील दूरपर विलासपुर जिलेमें रतनपुर एक छोटा कसवा है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय ५६१५ मनुष्य थे, अर्थात् ४७६५ हिन्दू, ५०२ मुसलमान, १४२ कवीरपंथी, ११४ आदि निवासी और ९२ सतनामी।

यह सन् १७८७ ई० तक छत्तीसगढके हैहयवंशी राजाओकी राजधानी था। पुराने किलेकी टूटी हुई मेहराबियाँ और पुराने महलकी टूटी फूटी दीवारें तथा शहरके चारों ओरकी खाई, जो लगभग आधी भर गई हैं, रतनपुरके पूर्वकालके ऐश्वर्यको प्रकट करती हैं। वहाँके निवासी तिजारती लोग कपडे मसाले और लाहके कारोवार करते हैं। वहाँ ब्राह्मण वहुत हैं, जो उस देशके ब्राह्मणोंमे मुखिया समझे जाते हैं, उनमें विद्वान् वहुत हैं। कसवेके आस पास वहुतेरे मीलों तक पुराने कसवेकी निशानियाँ मिलती हैं, उसके भीतर आमके वृक्षोंके वडे जङ्गलमें जगह जगह वहुतेरे तालाव, मन्दिर और सतियोंके स्थान हैं जिनमेंसे पुराने किलेके निकट सवसे अधिक प्रसिद्ध सतीकी एक वडी इमारत है, जिसमे लिखा है कि यहाँ राजा लक्ष्मण शाहीकी वीस रानियाँ सती हुई।

इतिहास—महाराष्ट्रोंके आक्रमणक पहले और उनके आक्रमणके समय तक बिलासपुर जिला रतनपुरके हैहयवंशी राजाओंके आधीन था। जैमिनिपुराणमे लिखा है कि रतनपुरके राजा मयूरध्वज बडे दानी और धर्मनिष्ठ थे। कृष्णभगवानने राजाके धर्मकी परीक्षा लेनेके लिये ब्राह्मण बनकर उनसे उनका आधा शरीर माँगा। राजाने अपना आधा शरीर आरासे चिरवाकर देना स्वीकार किया। अन्तमें श्रीकृष्णने प्रकट होकर राजाको दर्शन दिया। १८ वीं सदीके महाराष्ट्रोंके आक्रमणके समय तक, जब हैहयवंशी राज्यका अन्त होगया, वहाँका कोई मनुष्य आराको अपने काममे नही लाया।

रतनपुरके राजा लोगोंने ३६ किलोपर राज्य किया, इस लिये वह देश छत्तीसगढ़के नामसे प्रसिद्ध हुआ। ३६ किलोमेंसे प्रत्येक एक तालुकाका सदर स्थान था। लगभग सन् ७५० ई० में रतनपुरके बीसवें राजा सूरदेवके राज्यके समय छत्तीसगढ़ दो भागोमें बट गया। रतनपुरसे उत्तरके आधे भागमे राजा सूरदेव और दक्षिणके आधे हिस्सेमें सूरदेवके छोटे भाई ब्रह्मदेव (रायपुरमे रहकर) हुकूमत करने लगे। ब्रह्मदेवसे ९ वें पुस्तमें कोई पुरुष नहीं था, इस लिये लगभग सन् १३६० में रतनपुर राजघरानेका एक छोटा पुत्र रायपुरकी गद्दी पर बैठा, जिसके वंशधर महाराष्ट्रोंके आक्रमणके समय तक हुकूमत करते रहे।

रतनपुरके राजा सूरदेवके पुत्र पृथ्वी देव बडे प्रतापी, प्रजाप्रिय और पण्डित थे। उस देशके लोग उनकी बहुत कहानी कहते हैं और अमरकण्टक तथा मल्हारमे संस्कृत लेख हैं, जिनमें उनके प्रताप और यशका वर्णन हुआ है। १६ वीं सदीमें दिल्लीके बादशाह अकबरने रतनपुरके प्रधान कल्यानशाहीको उस देशके राज्यका पूरा अधिकार और राजाकी पदवी दी। कल्यानशाहीके ९ वे पुस्तमें राजसिंह हुए, उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये एक ब्राह्मण द्वारा रानीसे क्षेत्रज पुत्र उत्पन्न कराया गया। उस पुत्रका नाम विश्वनाथसिंह पड़ा, जिसका विवाह रींवाँके राजाकी पुत्रीसे हुआ। एक समय विश्वनाथसिंह अपनी स्त्रीके साथ जुआ खेलते हुए उसको बार बार हराने लगे। अन्तमें स्त्रीको सन्देह हुआ कि मेरा पति द्यूतमें छल करके जीतता है। तब उसने कुछ गुस्सा होकर परिहासके तौरपर विश्वनाथसिंहसे कहा कि आप न तो ब्राह्मण हैं और न राजपूत। ऐसा सुन विश्वनाथसिंहने ग्लानिमे आकर आत्महत्या कर डाली। कुछ दिनोंके पश्चात् राजसिंह घोडेसे गिरकर मरगया। तब उसका चचा सरदारसिंह राजसिंहासनपर बैठा, जो २० वर्ष राज्य करनेके पश्चात् सन् १७३२ ई० मे मरगया। तब उसका भाई रघुनाथसिंह, जिसकी अवस्था ६० वर्षकी थी, उसका उत्तराधिकारी बना। सन् १७४१ ई० में महाराष्ट्रोंने रघुनाथसिंहको परास्त किया। हैहयवंशी राज्यका अन्त हुआ। रघुनाथसिंह, भोंसलेके आधीन हुकूमत करने लगा। रघुनाथसिंहकी मृत्यु होनेपर सन् १७४५ में नागपुरका पहला राघोजी भोंसलाने रायपुर राजघरानेके मोहनसिंहको रतनपुरकी गद्दीपर बैठाया। सन् १७५८ में भीमाजीने उत्तराधिकारी होकर ३० वर्ष तक राज्य किया। उसके मरनेपर उसकी स्त्री अनन्दीबाई लगभग सन् १८०० तक राज्य करती रही। उसके मरनेपर सूबेदार वीठल दिवाकर उसका उत्तराधिकारी बना, जिसके समयके पीछे राज्यमें बड़ा गड़बड फैला। सन् १८१८ में अङ्गरेज महाराजने नागपुरके आपासाहबको गद्दीसे उतारकर एक लडका रागोजीको, जो सन् १८३० में बालिग

हुआ, नागपुरके तख्तपर बैठाया, जिसके मरनेपर सन् १८५४ में नागपुरका राज्य अङ्गरेजी अधिकारमे होगया। छत्तीसगढ एक अलग कमिश्नरी बनाया गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—जैमिनिपुराण–( ४१ वॉ अध्याय ) जिस समय श्रीकृष्ण और अर्जुनसे रक्षित राजा युधिष्ठिरका यज्ञ-अश्व मणिपुरसे खुला, उसी समय रत्ननगर ( रतन-नगर ) के राजा मयूरध्वजका यज्ञ-अश्व उसके पुत्र ताम्रध्वजकी रक्षामें वहॉ जा पहुँचा। जब अर्जुनका घोडा ताम्रध्वजके घोडेके निकट गया तब ताम्रध्वजने उसको पकड लिया। उस समय दोनो ओरकी सेना लडने लगी। ( ४४ वॉं अध्याय ) बडे युद्धके पश्चात् ताम्रध्व-जने कृष्ण और अर्जुन दोनोको मूर्च्छित किया। दोनो घोडे और ताम्रध्वज रतनपुरमें आये। राजा मयूरध्वज अपने पुत्र ताम्रध्वजके मुखसे यह वृत्तांत सुनकर उसकी निन्दा करने लगे। उधर कृष्णचन्द्र और अर्जुन सचेत होनेपर मणिपुरसे प्रस्थान कर अपनी सेना सहित मयूरध्वजकी राजधानी रतनपुरमें आये। कृष्णभगवान्‌ने वृद्ध ब्राह्मणका रूप धारण किया। अर्जुन उनके शिष्य बने। ( ४५ वॉं अध्याय ) ब्राह्मणने यज्ञमें दीक्षित राजा मयूरध्वजके समीप जाकर स्वस्ति वचन कहा। राजा बोले कि हे ब्राह्मण! तुम जिस लिये मेरे यज्ञमे प्राप्त हुए हो वह कहो, मुझको कुछ अदेय नहीं है, मै तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूंगा। ब्राह्मणने कहा कि हे राजन्! मैं धर्मपुरसे अपने पुत्रके विवाहके निमित्त तुम्हारे पुरोहित कृष्णशर्मासे कन्या याचनेके लिये अपने पुत्रके साथ चला। मार्गके घोर वनमें एक सिंहने मेरे पुत्रको पकड़ लिया। मैंने उससे प्रार्थना की कि तुम मुझको भक्षण करो, मेरे पुत्रको छोड़ दो, सिंहने कहा कि तेरा अंग तपस्या करने और वृद्ध होनेके कारण जर्जर होगया है, स्वादिष्ठ नहीं है। अगर दिव्यरस दुग्ध और नाना विधि फलो करके पुष्ट राजा मयूरध्वजके शरीरका आधा दाक्षि-णीय भाग तुम आनकर मुझको दो तो मै तुम्हारे पुत्रको छोड दूँ। तुम राजाके पास जाकर मांगो वह अपना शरीर देदेगा। हे राजन्! तुम सिंहसे मेरे पुत्रको बचाओ। ( ४६ वॉं अध्याय ) राजाने प्रसन्न चित्तसे अपना शरीर दो भाग करनेके लिये अपनी स्त्री और अपने पुत्रके हाथमें 'आरा' दिया। रानी कुमुद्वतीने राजाकी आज्ञासे अपने पुत्रके सहित उस आरासे राजाके मस्तकको छेदन किया। शिरके कटनेके समय बडा हाहाकार शब्द हुआ। उस समय राजाके बायें नेत्रसे जल गिरता हुआ देख ब्राह्मण बोले कि हे राजन्! तुम रोदन करते हुए दान देते हो मै अभावसे दिया हुआ तुम्हारा आधा अङ्ग ग्रहण नहीं करूंगा। तब राजाने कहा कि हे मुनिशार्दूल! इस लिये मेरे बायें नेत्रसे जल गिरा कि मेरा दहिना अङ्ग ब्राह्मणके काममें लगता है, किन्तु बायॉं अङ्ग वृथा जायगा। ऐसा राजाका वचनसुन ब्राह्मणरूपी कृष्ण भगवान्‌ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर शरीर राजाको दिखलाया और ताम्रध्वज द्वारा अर्जुनके सहित अपना मूर्च्छित होनेका वृत्तान्त उनसे कहा, तथा ३ रात्रि राजाके गृहमें निवास किया। राजा मयूरध्वज अपने मित्र वर्गोंके सहित युधिष्ठिरके यज्ञ अश्वकी रक्षा करनेके लिये कृष्णके साथ चला।

## कवरदह।

बिलासपुरके रेलवे स्टेशनसे ६० मील पश्चिम कुछ उत्तर ( २२ अंश १ कला ३२२ अक्षांश और ८१ अंश १५ कला पूर्व देशान्तरमें ) बिलासपुर जिलेके अन्तर्गत

कवरदह एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी है। उसमें कवीरन्पथीक वंश घरानेका प्रधान मठ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कवरदहमे ५६८'१ मनुष्य थे; अर्थात् ४१३१ हिन्दू, ४५६ मुसलमान, ४२० पहाडी, ३४८ कवीरपंथी और ३३० सतनामी।

कसबेके अधिक मकान खपडेसे छाये हुए हैं, जगह जगह पक्के मकान देख पडते हैं राजाका मकान दो मञ्जिला घना है। कसबेमें रूई और लाहकी सौदागरी होती है ' राजाके राज्यका क्षेत्रफल ८८७ वर्गमील है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ८६३६२ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ६८००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेसे १६००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको दिया जाता है।

कवीरपंथी—कवरदह कवीरपंथी वंशघरानेका सर्व प्रधान स्थान है। वहाँ वंशघरानेके प्रधान महन्त रहते हैं। उनके मठ पर हिन्दुस्तानके सब विभागोसे बहुत कवीरपंथी यात्री आते हैं। इसके आधीन वंशघरानेका दूसरा मठ कवरदहसे ८० मीलसे अधिक पूर्व कुछ दक्षिण कुदरमालमें है।

कवीरसाहब भारतवर्षमे बहुत प्रख्यात हुए। उनका नाम सब लोग जानते हैं। उनका जन्म श्रीकाशीजीमें और शरीरत्याग गोरखपुर जिलेके मगहर वस्तीमें हुआ था। उन स्थानोके वृत्तान्तमें उनकी कथा देखिये।

नाभाजीने अपने भक्तमाल ग्रन्थमें, जिसको बने हुए ३०० वर्ष हुए, लिखा है कि कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षटदर्शनी। भक्ति विमुख जो धर्म सो अधर्म करि गायो। योग यज्ञ व्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखायो। हिन्दू तुरक प्रमाण रमैनी सबदी शापी। पक्षपात नहीं वचन सबहीके हितकी भाषी। आरूढ दशा है जगतपर मुख देखी नाहि न भनी। कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षटदर्शनी ॥ ६० ॥ अर्थ,—कवीरसाहबने वर्णाश्रम और षटदर्शनोकी मर्यादा नहीं रक्खी। उन्होने भक्तिसे विमुख धर्मको अधर्म कहा, विना भजनके योग, यज्ञ, व्रत और दानको तुच्छ बतलाया, हिन्दू और मुसलमानके प्रमाणके लिये रमैनी ग्रन्थमें बहुतसी शाखी लिखी, पक्षपात रहित सबके हितका वाक्य कहा और जगत्मे आरूढ दशाको प्राप्त होकर मुहदेखी बात नहीं कही।

कवीरसाहबके पीछे कबीरपन्थियोंके वंशघराने, सुरतगोपाली, ज्ञानी इत्यादि १२॥ पथ चले। धर्मदासजी कवीरसाहबके प्रधान शिष्य थे, कवीरपन्थियोंके बहुतेरे ग्रन्थोमें कवीरसाहब और धर्मदासजीके सम्वादकी कथा है कवरदहसे कई एक मञ्जिल दूर गढ़बांधव एक वस्ती है, जिसमें धर्मदासजीका जन्म हुआ था वहाँ भी कवीरपन्थीका मठ है।

कवीरसाहबके अनुरागसागर आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि धर्मदासजीकी प्रार्थना करने पर कवीरसाहबने कहा था कि तुम्हारा ४२ वंश चलेगा। ग्रन्थोंमें ४२ वंशोके भविष्य नाम लिखे हुए हैं वह ये हैं,—१ वचनचूडामणिसाहब, ( धर्मदासजीके पुत्र ) २ सुदर्शननाम ३ कुलपतिनाम, ४ प्रमोदगुरुबालापीर, ५' कमलनाम, ६ अमोलनाम, ७ सुरतसनेहीनाम, ८ हकनाम, ९ पाकनाम, १० प्रकटनाम, ११ धीरजनाम, १२ उग्रनाम, १३ दयानाम, १४ गिरिधरनाम, १५ प्रकाशनाम, १६ उदितनाम, १७ मुकुन्दनाम १८ अर्द्धनाम, १९ उदय-

नाम, २० ज्ञानीनाम, २१ हंसमणिनाम, २२ सुकृतनाम, २३ अग्रमणिनाम, २४ रहस्यनाम, २५ गङ्गमणिनाम, २६ पारसनाम, २७ जाग्रतनाम, २८ गङ्गामणिनाम, २९ अकहनाम, ३० कण्ठमणिनाम, ३१ सन्तोषनाम, ३२ चातकनाम, ३३ धनीनाम. ३४ नेहनाम, ३५ आदिनाम, ५६ महानाम, ३७ निजनाम, ३८ साहबनाम ३९ उद्धवनाम, ४० केतनाम, ४१ दृगमणिनाम और ४२ विज्ञानीनाम।

इनमे ११ वंश होगये। दशवे वंशके प्रकटनामसाहबके रहते हुए उनके पुत्र ११ वाँ वंश धीरजनामसाहबका देहान्त होगया था। प्रकटनामसाहबकी मृत्यु होनेपर उनके भतीजे और धीरजनामसाहबके पुत्र मुकुन्दीजीसे कवरदहको गद्दी पर १२ वाँ वंश उग्रनाम बननेके लिये अदालत हो रही है। प्रकटनामसाहबका भतीजा कहता है कि मुकुन्दीजी धीरजनाम साहबकी विवाहिता स्त्रीका पुत्र नही है; यह क्यो गद्दीका अधिकारी होगा। कुदरमालका महन्त विश्वनाथदास मुकुन्दीजीके पक्षपर और कवरदह वाले लोग भतीजेकी ओर हैं। भतीजेकी जीत हुई है।

मध्यदेशमें खास करके बिलासपुर, रायपुर, और छिंदवाड़ा जिलेमें कबीरपंथी बहुत है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमे ३४७९९४ कबीरपंथी थे। वंश घरानेके कबीरपंथी साधुओंके लिये विवाह करनेका निषेध नहीं है। मध्यदेशके प्रायः सब कबीरपंथी विवाह करते है। किन्तु वंश घरानेके अनेक साधु आदरके लिये अपना विवाह नहीं करते।

## रायपुर।

बिलासपुरसे ६८ मील (आसनसोल जंक्शनसे ४३९ मील) पश्चिम-दक्षिण रायपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके छत्तीसगढ़ विभागमें (२१ अंश १५ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ४१ कला पूर्व देशान्तरमे) रेलवे स्टेशनसे एक मील दूर छत्तीसगढ़ विभाग और रायपुर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा रायपुर हैं। एक सडक नागपुरसे रायपुर सम्भलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ रायपुर कसबेमें २३७५९ मनुष्य थे, अर्थात् १९०१३ हिन्दू, ३६२३ मुसलमान, ५२८ एनिमिस्टिक, ३०० जैन, २७२ कृस्तान, २१ यहूदी और २ पारसी। मनुष्य संख्याके अनुसार यह मध्यदेशमें ६ वाँ शहर है।

रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर कसबेके पास ऋषीराम मारवाड़ीकी पुरानी धर्मशाला है जिसका भाग उजड गया है। धर्मशालेसे दक्षिण गोल नामक चौकमें छोटी छोटी दुकानोंके ४ चौखूटे बाजार हैं। गोल चौकसे दक्षिण २ मील लम्बी १ पक्की सड़क है जिसके बगलोंमें बहुतेरे बडे मकान और कपडे बर्तन इत्यादिकी दूकानें बनी हैं। कसबेमें १७ वीं सदीका बना हुआ पत्थरका कंकाली तालाव है जिसको महन्त कृपालगिरने बनवाया था। इसमे अब लोग कपडे धोते है। रायपुरमें जल कल सर्वत्र लगी हैं और प्रधान सडकों पर रात्रिमे लालटेने जलती हैं।

कसबेके चारो ओर अनेक तालाव और बहुतेरे आम इत्यादि वृक्षोंके बाग हैं और इसके पास एक पुराना जर्जर किला देख पडता है, जिसको सन् १४६० ई०में राजा भुवने-

श्वरसिंहने बनवाया था। किलेके बाहरका घेरा लगभग १ मील लम्बा है। किलेके पूर्व उसी समयका बना हुआ बूढा तालाव है जो पूर्वकालमें १ वर्ग मीलमे फैलता था किन्तु हालमें मरम्मतके समय वह छोटा कर दिया गया था। उसके पूर्व बगलमें पबलिक बाग लगाया गया है। किलेके दक्षिण ½ वर्गमीलमे फैला हुआ महाराज तालाव है। तालावके बाँधके निकट श्रीरामचन्द्रका मन्दिर खडा है। जिसको सन् १७७५ मे रायपुरके राजा भीमाजी भोंसलाने बनवाया। कसवेसे ¼ मील उत्तर लगभग २०० वर्षका पुराना अम्बा तालाव है। जिसको एक तेली सौदागरने बनवाया था। लगभग सन् १८५०मे रायपुरके शोभाराम महाजनके खर्चसे वह सुधारा गया और उसके तीन बगलोंपर पत्थरकी सीढ़ियाँ बनाई गई। तालाबका पानी उत्तम है, इसलिये कसवेके बहुत लोग उसको लेजाते हैं। शोभारामके पिता दीनानाथने लगभग सन् १८३५ ई० में तेली बाँध बनवाया था, जिसके एक बगलमें पत्थरका काम है। यह छोटा है, किन्तु इसमे पानी बहुत रहता है। कसबेसे १ मील पश्चिम राजा बरियारसिंहके समयका बना हुआ लगभग २०० वर्षका पुराना राजा तालाव है। तालाबके एक बगलमें पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हैं। रायपुरके पास लगभग ६० वर्षका बना हुआ कोको तालाबहै, जिसके तीन बगलोंमे पानी तक सीढियाँ और ऊपर पत्थरकी दिवारे है। उस तालाबमें गणेश चौथके उत्सवके अन्तमे गणपतिजीकी मूर्तियोंको लोग विसर्जन कर देते हैं।

इनके अतिरिक्त रायपुरमे कमिश्नरकी कचहरी, दीवानी और फौजदारी कचहरियाँ, अस्पताल, एक गिर्जा, सेंट्रल जेल इत्यादि इमारते हैं। देशी पैदलकी एक रेजीमेंट रहती है। गल्ले, कपास, लाह और दूसरी पैदावारकी सौदागरी बढ़तीपर है। वर्तमान कसबेके दक्षिण और पश्चिम छोटी नदीके किनारे महादेवघाट तक रायपुरका पुराना कसबा था।

रायपुर जिला—छत्तीसगढ़ विभागके दक्षिणी विभागमे रायपुर जिला है। इसके पूर्व सम्भलपुर जिलेके छोटे छोटे देशी राज्य, पश्चिम चन्दा और बालाघाट जिला, उत्तर बिलासपुर जिला और दक्षिण बस्तरका राज्य है। जिलेका क्षेत्रफल ११८८५ वर्गमील है, जिसमेसे लगभग ४००० वर्गमील भूमि जोती जाती है, और लगभग ४५०० वर्गमील जोतने लायक जमीन वीरान पडी है। रायपुर जिलेकी प्रधान फसिल धान है, उसके पश्चात् गेहूँ, चना, अरहर, कोदो, तिल, कपास, रेडी इत्यादि होती है। जिलेकी सीमाके भीतर छुइकडा, काँकर, खैरागढ और राजनन्दगाँव ये ४ देशी राज्य हैं। जिलेका सदर स्थान रायपुर कसबा है। जिलेके पूर्वोत्तर और दक्षिणके भागमे जङ्गल है। जिलेमे दो नदियाँ है; महानदी और शिवनाथ। शिवनाथ नदीमे बहुतेरी छोटी नदियाँ मिली है, जो आगे जाकर महानदीमें मिलगईहै। महानदी रायपुर जिलेके नवगढके पाससे निकलकर सम्भलपुर, सोनपुर और कटक होकर लगभग ५३० मील बहनेके पश्चात् कटक शहरसे पचास साठ मील पूर्व फल्सपाइण्टके समीप समुद्रमें मिली है। पहिले यह उत्तर तब पूर्व जाकर सम्भलपुर जिलेमें प्रवेश करनेपर उससे आगे दक्षिण-पूर्व गई है। रायपुर जिलेमे बहुत तालाव है। महानदीके आस पास और जिलेके दक्षिणी भागमें १२ फीटसे ३४ फीट तक भूमिके नीचे कूपोंमे पानी है। जिलेकी कोई कोई पहाडी १५०० फीटसे अधिक ऊँची है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रायपुर जिलेके अङ्गरेजी राज्यमें १४०५१७१ मनुष्य थे, अर्थात् ८५६४९२ हिन्दू, १६५७२९ आदि निवासी, १४३१७८ कबीरपंथी,

२२३४४१ सतनामी, १४९९१ मुसल्मान, ८२७ कृस्तान और ५१३ जैन। जातियोंके खानेमें २६१७९१ गोड़, २४८४२९ चमार, २०३५०३ तेली, १४१९८३ अहीर, ५८२९३ कुर्मी, ५०९२३ केवट, ३५७२८ गंडा, ३५०९६ मरार, ३१६५९ पङ्का, २९३३३ कन्वार या कनवार, २६७९६ मेहरा, २०३०७ कलार, २०२६१ ब्राह्मण, ९३९३ राजपूत और शेषमें विजवार, भुँइयाँ, खाँद, खरबार, कोस्टी, भीमर, वनजारा, घासिया इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सतनामी कबीरपंथी रायपुर जिलेमे बहुत है। सतनामी हिन्दू है, वे जाति भेद नही मानते हैं। इस पंथमे चमार जातिके लोग अधिक है, जो अपनेको रैदासी कहते हैं। रैदास चमार १५ वीं सदीमें रामानन्द स्वामीका १ चेला था।

रायपुर जिलेके केवल दो कसबोंमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे, अर्थात् रायपुरमें २४९४८ और धमतरीमें ६६४७।

इतिहास—रायपुर जिला रतनपुरके हैहयवंशी राजाओंके राज्यका एक भाग था.। उस वंशके २० वें राजा सूरदेवके राज्यके समय लगभग सन् ७५० मे छत्तीसगढ़ दो भागोमें वँट गया। राजा सूरदेव उत्तरीय भागमें और उसका छोटा भाई ब्रह्मदेव रायपुरको राजधानी वनाकर दक्षीणीय भागमें राज्य करने लगा। ब्रह्मदेवके ९ पुश्तके पीछे जव रायपुरके राजवशमें कोई नहीं था तव लगभग सन् १३६० में रतनपुरके राजा जगन्नाथसिंह देवका पुत्र रायपुरका राजा हुआ, जिसके वंशधर महाराष्ट्रोंके आनेके समय तक स्वतंत्र राज्य करते रहे। सन् १४६० में राजा भुवनेश्वरसिहने रायपुरके किलेको वनवाया। सन् १८१८ मे जब रायपुर अँगरेजी अधिकारमें आया, किलेके उत्तर वगलमें प्रधान फाटक विद्यमान था सन् १७४१ में महाराष्ट्रोंने रतनपुरके राजा रघुनाथसिंहको परास्त किया। उसके कई एक वर्ष पीछे रायपुरका राजा अमरसिंह राजसिंहासनसे उतार दिया गया। उसको निर्वाह के लिये राजिमपाटन और रायपुर परगना मिला, जिनके लिये उसको ७०० पौण्ड खिराज देना पडता था। सन १८२२ में अमरसिंहके पोते रघुनाथसिंहने विना लगानके वारहगाँव और उसके पडोसके ४ गावोंको पाया। महाराष्ट्रोंके आधीन होने पर रायपुरकी घटती होने लगी। सन् १८१८ मे अङ्गरेजी सरकारने नागपुरके आपासाहवको गद्दीसे उतार कर एक लडके तीसरे राघोजीको राजा वनाया और राज्यका प्रवन्ध अपने हाथमें लिया, उस समयसे रायपुरकी उन्नति होने लगी। सन् १८३० में रायपुरका वर्तमान कसवा वसा। पुराना कसवा इसके दक्षिणपश्चिम था। सन १८५४ में नागपुरका राज्य अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके अधिकारमे हो गया। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८५८ में वलवे करनेके अपराधमे रायपुरके जमीन्दार नारायणसिंहकी जमीन्दारी छीन ली।

## राजनन्दगाँव।

रायपुरसे ४२ मील पश्चिम (आसनसोलसे ४८१ मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण) राजनन्दगाँवका रेलवे स्टेशन है, जिसके १४ मील पहिले अर्थात् पूर्व राजनन्दगाँवके राज्यकी पूर्वी सीमाके पास शिवनाथ नदीपर रेलवेका पुल मिलता है। मध्य देशके रायपुर जिलेमें एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी राजनन्दगाँव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राजधानीमें ८८५० मनुष्य थे, अर्थात् ७६७९ हिन्दू, ६७७ मुसलमान, ३४४ जैन, ८३ क्रस्तान और ६७ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशनसे राजधानी तक सुन्दर सडक वनी है। राजधानीमे राजाका महल, कचहरियाँ, स्कूल इत्यादि इमारतें बनी हुई हैं। रेलवे होनेसे राजधानीकी उन्नति हुई है।

राजनन्दगाँवका राज्य––यह रायपुर जिलेमे देशी राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल ९०५ वर्गमील है। इसमें चार परगने हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यके १ कसवे (नन्दगाँव) और ५४० गाँवमे १६४३२९ मनुष्य थे। राज्यकी प्रधान फसिल धान, गेहूँ, चना, कोदो, तेलके वीज और कपास है। राज्यके क्षेत्रफलमें लगभग आधी भूमि जोती जाती है, जोतने लायक वहुत भूमि पडी हुई है। सन् १८८३ ई० में राज्यके ८ स्कूलोंमे २६३ विद्यार्थी पढ़ते थे। राज्यसे २२२००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेसे ४६००० रुपये अङ्गरेजी सरकारको 'कर' दिया जाता है।

इतिहास––सन् १७२३ ई० में नागपुरके राजाने अपने गुरुको रायनन्दगाँवका राज्य दान कर दिया। सन् १७६५ और सन् १८१८ में राज्य वढ़ाया गया। राजा वैरागी हैं। महन्त घासीदासने जिनकी मृत्यु सन् १८८३ मे हुई, रेलवे स्टेशनके पास एक वडा डाक बँगला और अपने राज्यमें अनेक तालावोको वनवाया और कई एककी मरम्मत करवा दी। इस समय महन्त घासीदासके पुत्र (२६ वर्षकी अवस्थाके) महन्त राजा वलरामदास बहादुर राजनन्दगाँवके राजा हैं। राजाको ७ हाथी, १०० घोड़े और ५०० पैदल सेना रखनेका अधिकार है।

## खैरागढ़।

राजनन्दगाँवसे उत्तर ओर रायगढ़ कसवेसे ४५ मील पश्चिमोत्तर (२१ अंश, २५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, ३ कला, पूर्व देशान्तरमे) अम्वा और पिपरिया नदीके संगमके समीप रायपुर जिलेमें एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी खैरागढ़ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खैरागढ़में २८८७ मनुष्य थे, अर्थात् २६०० हिन्दू, १७६ मुसलमान, ७८ कवीरपन्थी, २७ आदिनिवासी ४ जैन और २ सतनामी।

खैरागढ़के राजा राजगोंड हैं। कसबेमें राजाका मकान, जेलखाना, कचहरी और स्कूल वना हुआ है।

खैरागढ़ राज्य––यह राज्य छत्तीसगढ़के राज्योंमे सवसे अधिक प्रसिद्ध रायपुर जिलेमें है। इसका क्षेत्रफल ९४० वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यके ५१२ कसवे और गावोंमें १६६१३८ मनुष्य थे। राज्यमें किसी किसी जगह लोहेके ओर मिलते है। राज्यसे २१४७०० रुपया मालगुजारी आती है। खैरागढ़ और डूँगरगढ़में अस्पताल खुले हैं और जेलखाना तथा कचहरियाँ इत्यादि कई एक सरकारी इमारतें वनी हैं। खैरागढ़से २४ मील दक्षिणकी ओर और राजनन्दगाँवके रेलवे स्टेशनसे १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़का रेलवे स्टेशन है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डूँगरगढ़ कसबेमे ५६७५ मनुष्य थे।

इतिहास—खैरागढ़के राजा, जो जातिके राजगोंड है, गढ़मण्डलाके राजवंशकी सतान हैं। जबलपुर कसवेसे लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व जिलेका सदर स्थान मण्डला एक कसबा है, जिसके ३ बगलोंमें नर्मदा नदी बहती है। आरम्भमे खेलवा नामक एक छोटे जङ्गली देशपर खैरागढ़के राजाका अधिकार हुआ, किन्तु सन् १८१८ मे मण्डलाके प्रधान और नागपुरके राजाने उसको भूमिका एक बड़ा भाग दे दिया।

खैरागढ़के राजा लाल फतहसिंह तख्तसे उतारे जानेके पश्चात् सन् १८७४ में मर गये। राज्य अङ्गरेजी प्रवन्धके आधीन रहा। सन् १८८३ में लाल उमरावसिंहको राज्यका अधिकार दिया गया।

## भण्डारा।

राजनन्दगाँवसे १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़का रेलवे स्टेशन है, जहाँ एञ्जिन बदलते हैं और रेलवे संबन्धी वहुतसे यूरोपियन लोग रहते है। कसबेमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय ५६७५ मनुष्य थे। कसवेके निकट ४ मीलके घेरेका पहाड़ी पुराना किला उजाड पडा है, जिसके हातेके भीतर १ तालाब है। डूँगरगढसे २३ मील पश्चिम सलेक्साके स्टेशन तक पहाडियों और बाँसके भारी जङ्गलोंमें होकर रेलवे लाइन निकली है। १७ मील पर दरक्साके स्टेशनसे पश्चिम पहाडी फोड़ कर सुरङ्गी मार्गसे रेलवे लाइन निकाली गई है, जिसके पासके जङ्गलमें वहुतसे वाघ रहते है। रेलवे बननेके समय वाघोंने बहुतेरे लोगोंको मार डाला था। सलेक्सासे ९ मील आगे जानेपर आमगॉवके स्टेशनके पास छत्तीसगढ छूटकर नागपुर विभाग मिल जाता है। आमगॉवसे ४३ मील पश्चिम तमसारोड स्टेशनके पास वेणगङ्गापर रेलवेका पुल है।

तमसारोडसे ११ मील और आमगॉवसे ५६ मील ( आसनसोल जंक्शनसे ५८८ मील ) पश्चिम और भण्डारारोडका रेलवे स्टेशन है। नागपुर विभागमें रेलवे स्टेशनसे ६ मील दक्षिण वेणगंगा नदीके पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान भण्डारा एक कसवाहै।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भण्डारा कसवेमें १३३४८ मनुष्य थे, अर्थात ११५०९ हिन्दू, १६५९ मुसलमान, ८९ क्रस्तान, ६३ एनिमिस्टिक और २८ जैन।

कसवेमें मामूली कपडे और वर्तनकी सौदागरी होती है। कूप और वाहरके तालावोंके पानी लोग पीते है। सरकारी मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, पुलिसस्टेशन, पवलिक लाइब्रेरी, गवर्नमेण्ट अस्पताल, जिला स्कूल, लडकियोंका स्कूल इत्यादि इमारते हैं। वहाँ एक महाराष्ट्र राजा रहता है। एक अच्छी सडक नागपुरसे पूर्व भण्डारा, रायपुर, सम्भलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है।

भण्डारा जिला—इसके पूर्व रायपुर जिला, दक्षिण चन्दा जिला, पश्चिम नागपुर जिला और उत्तर सिउनी और वालाघाट जिला है। जिलेके पश्चिमका भाग वेणगङ्गाके किनारे तक मैदान और उत्तर और पूर्व पहाडिया है, जिनपर खास करके गोंड और अन्य जङ्गली जातियोंके लोग रहते है। जिलेके क्षेत्रफलसे एक तिहाई भागसे अधिक जङ्गल हैं। गर्मीकी ऋतुओंमे वेणगङ्गाके अतिरिक्त किसी नदीमे पानी नहीं रहता है। जिलेमें ५००० से अधिक झील और तालाब है जिनमे नवगॉव, सिउनी और शेरगॉव इत्यादि की झीले और बहुतेरे तालाब बहुत बडे है। नवगॉव झीलका क्षेत्रफल ५½ वर्गमील और उसका घेरा १७ मीलका

है, जिसमें जगह जगह ९० फीट तक गहरा पानी है। जङ्गलोंमें महुए छोडकर किसी वृक्षकी लकडियां मकानके कामके योग्य नहीं होतीं। लोहाके और बहुतेरी जगहोंमे मिलते हैं। इमारतके कामका पत्थर पहाडियोंसे निकलता है। बाघ इत्यादि जङ्गली जानवर अनेक मनुष्योंको मारते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भण्डारा जिलेके क्षेत्रफल ३९२२ वर्गमीलमें ६८३७७९ मनुष्य थे; अर्थात् ५८९६९९ हिन्दू, ७८०२१ एनिमिस्टिक अर्थात् आदिनिवासी, १३१०२ मुसलमान, २१६९ कबीरपंथी, ५७६ जैन, १५७ कृस्तान, ३८ सतनामी, १२ सिक्ख, ४ पारसी और १ बौद्ध। आदिनिवासियोंमें ७०६८८ गोंड और शेषमें कुरकू कोल इत्यादि और हिन्दुओंमे ११३५८९ धद और महारा, ७९०३६ कुर्मी, ५३९९० पोनवार, ४२७९६ गोरी, ३६९५२ तेली, २९३४७ धीमर, २५१९५ कलार, २०२५८ गोंड, ७९९४ राजपूत, ६४३५ ब्राह्मण और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। भण्डारा जिलेके भण्डारा कसबेमे ११९५० पोनीमें ९७७३, तुमसरमें ७३८८ और मोहरीमें ५१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—१७ वीं शदीमें भण्डारा जिला देवगढ़के गोंड राजाके अधिकारमें था। उस समय बहुतसे पोनवार, लोधी, राजपूत, कोरी और कुनबी आकर उस जिलेमें खास करके वेणगङ्गाके निकटवर्ती गावोंमें बसे। सन् १७३८ में पहला राघोजी भोंसलाने उस देशको जीता। उसके पश्चात् बहुतसे अग्रवाल, मारवाडी, महाराष्ट्र, कुनबी और लिगायत वहाँ आ बसे। नागपुरके तीसरे राघोजी भोंसलेके मरने पर सन् १८५४ में भण्डारा जिला अङ्गरेजी अधिकारमे हो गया।

## कामटी।

भण्डारारोडके स्टेशनसे ३० मील ( आसनसोलसे ६१८ मील ) पश्चिम और नागपुर शहरसे ९ मील पूर्वोत्तर कामटीका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके नागपुर जिलेमें कंधान नदीके दहिने किनारेपर कामटी एक अच्छा कसबा और फौजी छावनीका मुकाम है। कामटीसे थोडीही दूरपर पेंध और कोल्हार नदी कंधानमें मिली हैं। कंधान नदीपर छावनीके पूर्व पत्थरका सुन्दर पुल बना है, जिसके बनानेमें लगभग ९००००० रुपया खर्च पडा था। उसके पास १०००००० रुपयेके खर्चसे बना हुआ लोहेका रेलवे पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कामटी कसबे और फौजी छावनीमें ४३१५९ मनुष्य थे; अर्थात् २२६६० पुरुष और २०४९९ स्त्रियाँ। इनमे २८५२१ हिन्दू, ११५४६ मुसलमान, २४१२ कृस्तान, ३२० एनिमिष्टिक, २९१ जैन, ३९ पारसी, १६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ बौद्ध थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९३ वाँ और मध्य प्रदेशमें ४ था शहर है।

छावनी और कसबेके बीचमें छावनीके दक्षिण-पूर्व परेडकी फैली हुई भूमि है। कसबेमे चौडी सडके बनी हैं। कई धर्मशाले, स्कूल, एक अस्पताल, हालका बना हुआ एक उत्तम तालाब, एक अच्छी सराय और बडा बाजार है। मवेसी, लकडी, गल्ले, नमक, कपडे और अंगरेजी वस्तुओंकी बडी तिजारत होती है।

सन् १८२१ ई० में वहाँ फौजी छावनी नियत हुई। उसी समय वहाँ कामटी कसबा बस गया। कामटीमें कंधान नदीके दहिने फौजी छावनी है, किन्तु रिसाले वायें रहती है। नदीके दहिने लगभग ४ मील लम्बी छावनीकी चौडी सडक है। प्रथम कामटीमें बहुत फौज रहती थी, किन्तु अब यूरोपियन आरटिलरीकी एक बैटरी और कुछ देशी सेना है। इनके अतिरिक्त कामटीमें ७० मन्दिर, ५ मसाजडे, २ गिरजे और लगभग ४६० कूप हैं।

## रामटेक।

कामटीसे १८ मील और नागपुर शहरसे २४ मील पूर्वोत्तर (तीरसाके रेलवे स्टेशनसे ११ मील उत्तर) २१ अंश, २४ कला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २० कला पूर्व देशांतरमें नागपुर जिलेके अन्तर्गत एक तहसीलीका सदरस्थान रामटेक छोटा कसबा है। एक बड़ी सडक नागपुर शहरसे कामटी और रामटेकसे ४ मील पश्चिम होकर जबलपुरको गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रामटेकमे ७८१४ मनुष्य थे, अर्थात् ६९७८ हिन्दू, ६१४ मुसलमान १२१ पहाडी जातियाँ और १०१ जैन।

रामटेक पवित्र स्थान है। और पानके लिये भारतवर्षमें प्रसिद्ध है। उसमें लगभग २०० घर तंबोली बसते हैं उसके आसपास पान बहुत होता है। वहाँसे बहुत पान छिंदवाड़ा, सिउनी, जबलपुर और बम्बईको भेजा जाता है। कसबेमें छोटे बडे लगभग २० देवमन्दिर बने हुए हैं। कसबेके पश्चिम भागमें सरकारी आफिसे हैं। मैदानसे ५०० फीट ऊँची पहाड़ी पर एक सुन्दर बँगला बना है।

रामटेकके पास एक पहाडी है, जिसके उत्तर बगल पर एक बहुत पुराना मन्दिर है, जिसके पास अनेक मन्दिर बने हैं। पहाडीके ऊपर उसके पश्चिम किनारेके पास एक हातेके भीतर श्रीरामचन्द्रजीका प्राचीन विशाल मन्दिर है। उसके पासके छोटे मन्दिरों और दीवारोंके ऊपर उसका शिखर दूरसे देख पडता है रामटेकके पाससे पहाडीके शिखर तक बहुत सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

रामटेकसे २ मील दूर अम्बाडा वस्ती तक एक अच्छी सडक गई है, जहाँ अम्बाड़ा नामक पुराना तालाब है। तालाबके तीन बगलोंमें पानी तक पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हैं और बगलोंमें महाराष्ट्रोंके बनवाये हुए पन्द्रह बीस देव मन्दिर बने हुए हैं। यहाँ कार्त्तिककी पूर्णिमाको एक बडा मेला होता है, जो ५ दिन तक रहता है। मेलेमें कपडे, बर्तन, मनिहारीकी चीजें इत्यादि वस्तु बिकती हैं और लगभग १००००० आदमी आते हैं।

तालाबके किनारेसे पहाडीके ऊपरके मन्दिरोंतक $\frac{1}{2}$ मील लम्बी पत्थरकी सीढ़ियाँ गई हैं। यात्रीगण तालाबमें स्नान करके सीढ़ियो द्वारा ऊपरके मन्दिरोंमें जाकर पूजा करते हैं। पहाडीके शिखरके पास एक बावलीके समीप एक धर्मशाला है। पहाड़ीपर पहला राघोजी भोंसलाका बनवाया हुआ गढ है। उसके पहले चौगानमें दहिने नारायणका और बायें एक दूसरे देवताका मन्दिर है। दूसरे चौगानमें महाराष्ट्रोंका हथियारखाना था जिसकी दीवारमें निशानी विद्यमान है। तीसरे चौगानमें भैंवर दरवाजा होकर जाना होता है। इस

हिस्सेकी दीवार और बुर्ज अभी तक अच्छे बने हुए है। गोकुल दरवाजा होकर गणपति, हनूमान और रामचन्द्रके मन्दिरको जाना होता है। इसी चौगानसे पत्थरकी दूसरी सीढियां नीचे रामटेक कसबेको गई है।

# दूसरा अध्याय।



## ( मध्यदेशमें ) नागपुर, वरधा, चाँदा, ( वरारमें ) अमरावती, एलिचपुर, अकोला, वासिम, सेगाँव, और खामगाँव।

## नागपुर।

कामटीसे ९ मील पश्चिम और आसनसोल जंक्शनसे ६२७ मील पश्चिम थोडा दक्षिण नागपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्य देशमे ( २१ अंश, ९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ७ कला पूर्व देशान्तर मे ) नाग नामक छोटी नदीके किनारे पर मध्यदेश और नागपुर जिलेका सदर स्थान और मध्यदेशका प्रधान शहर नागपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ नागपुर शहरमे ११७०१४ मनुष्य थे; अर्थात् ६०६४० पुरुष और ५६३७४ स्त्रियाँ। इनमें ९४९४९ हिन्दू, १६३८७ मुसलमान, ३०८७ क्रस्तान, ११६३ एनिमिष्टिक, १०४१ जैन, ३३७ पारसी, २३१ बौद्ध, १३८ सिक्ख और ८१ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २३ वाँ और मध्यदेशमे पहिला शहर है।

म्युनिसिपेल्टीके भीतर खास शहरके अलावे सीतावर्डी और ताकली शहरतली है। शहरके भीतर सीतावर्डी पहाड़ीके ऊपर सीतावर्डी नामक किला है, जिसको देखनेके लिये पास लेना होता है। पहाड़ीके नीचे उसके उत्तर और पश्चिम नागपुरका सिविल स्टेशन है। स्टेशनसे उत्तर फौजी लाइन और बाजार है। उनसे उत्तर ताकली शहरतली है, जिसकी पहाड़ीपर उत्तम नई रेजीडेंसी बनी है; किन्तु चीफकमिश्नर खास करके सतपुड़ा पहाडीपर पचमारीमें रहते हैं। सीतावर्डी पहाडीके दक्षिणके बगलके नीचे सीतावर्डी शहरतलीमें पुरानी रेजीडेंसी है, जहाँ चीफ कमिश्नर रहते थे।

पहाड़ीके पूर्व नागपुरके रेलवे स्टेशनके पास पुतलीवर और राजाराम और रामचन्द्रकी नई धर्मशाला हैं; उसी धर्मशालेमें मेरे ( पिताके ) रामेश्वरके पण्डेके दो गुमास्ते मुझको मिल गये। उनमेसे एक हमारे साथ चला और रामेश्वर तक हमारे साथ साथ गया। उस धर्मशालेके अलावे नागपुरमें कई धर्मशाले और ३ सरकारी सराय हैं। रेलवे स्टेशनसे पूर्व महाराष्ट्र राजाका बनवाया हुआ बहुत बड़ा जामा तालाब और तालाबसे पूर्व खास शहर है। ३ बडी सडकें यूरोपियन स्टेशनसे शहरको गई हैं, एक उत्तर, दूसरी जामा तालावके दक्षिण किनारे होकर और तीसरी, जो सबसे उत्तर है, स्टेशनके उत्तर रेलवे होकर। किलेसे थोडी दूरपर एक छोटा अजायब खाना है।

रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर नागपुरकी दीवानी कचहरियाँ हैं। शहरके पडोसमें महाराष्ट्र राजाओंका बनवाया हुआ अम्बाझीरी और तेलिंगखेरी उत्तम तालाब है। अम्बाझीरीसे जल कलद्वारा शहर और सिविल स्टेशनमें पानी आता है। इनके अलावे नागपुरके आस पास कई छोटे तालाव है। शहर और शहरतलियोंमे वहुत बाग अर्थात् उद्यान हैं; जिनमेंसे सीतावर्डीका महाराजबाग, शहरके भीतरका तुलसीवाग, शहरतलियोंमे सकरदरा, पाल्डी, सोनगाँव और तेलिङ्गखेरीबाग प्रधान है। इनमेसे महाराजवाग सब बागोंसे उत्तम है। इसमें स्थान स्थानपर फूल और पत्तोंकी बेलके गमले सजे है। एक स्थानपर छोटे हौजमें जीवित हाथीके समान पत्थरका वडा हाथी खड़ा है। उसके सून्डसे कलका पानी सर्वदा गिरा करता है, जो हौजसे नाला द्वारा निकल कर फूलकी क्यारियोको सींचता है। इस बागमें एक छोटा चिडियाखाना (जन्तुशाला) है, जिसमें अनेक बाघ, भालू, बन्दर, हरिन, भेडिया, नीलगाय, और भाँति भाँतिके चिड़िये पाले जाते है।

नागपुरमे महाराष्ट्र राजाओंके समयके बहुतेरे मन्दिर हैं, जिनमेंसे कई एक मन्दिरोंमें नकासीका उत्तम काम बना है। शहरके दक्षिण शुक्रवारी महल्लेमे भोसले राजाओंकी अनेक छत्तरियाँ अर्थात् समाधिमन्दिर बने हुए है। इनके अतिरिक्त नागपुरमे एक सेंट्रल जेलखाना, जिसमे लगभग १ हजार कैदी रह सकते है, दो गिरजे, कई एक स्कूल, मोरिस कालिज, पागलखाना, कोढीखाना, गरीबखाना, एक कृषीस्कूल, जिसमें लड़कोंको खेतीकी विद्या सिखलाई जाती है और दो कल कारखाने हैं। काले अर्थात् तेलिया पत्थरका बना हुआ नागपुरके भोंसलेका उत्तम महल था, जो सन् १८६४ में जलादिया गया, अब केवल उसका नक्कारखाना है। शहरमे भोसले वंशके एक छोटे राजा हैं।

गुरुगञ्ज स्केयर और गचीपगारमें सप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है। शहरमे शुक्र आदि दिनोंके नामसे कई महल्लेका नाम पड़ा है। नागपुर नारंगियोंके लिये प्रसिद्ध है। वहाँसे नारंगी हिन्दुस्तानके दूर दूरके प्रदेशोके अलावे विलायतमें भी भेजी जाती हैं। नागपुरकी बडी सौदागरी उन्नतिपर है। गेहूँ, गल्ला, नमक, कपडा, मसाला, अङ्गरेजी सामान इत्यादि चीजें दूसरे देशोसे नागपुरमें आती हैं और बहुतसे कपड़े बनकर दूसरे देशोंमें जाते हैं। सवारीके लिये टमटम और एक्के वहुत मिलते हैं। वहाँके बहुतेरे लोग सवारीके लिये हलकी सुन्दर बैलगाड़ी रखते है, जिसको लोग रिंगी कहते हैं। वह एक दूसरे ढंगकी लम्बी होती है, उसके बैल तेजीसे दौड़ते हैं।

नागपुरसे एक सडक उत्तर कुछ पूर्व जबलपुरको और दूसरी सड़क पूर्व भण्डारा, रायपुर, सम्भलपुर, क्योझोर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है।

नागपुर जिला—इसके पूर्व भण्डारा जिला, उत्तर चिन्दवाडा और सिउनी जिला, दक्षिण-पश्चिम वरदा जिला और दक्षिण-पूर्व चाँदा जिला है। नागपुर विभाग और जिलेका सदर स्थान नागपुर कसवा है। इस जिलेकी उत्तरी सीमापर लगातार पहाडियोंका जञ्जीरा है और दक्षिण-पश्चिमकी सीमाके भीतर पहाडियोंका वडा भाग है। जिलेकी सबकी पहाडी समुद्रके जलसे लगभग २००० फीट ऊँची है। पहाडियोंका तीसरा सिलसिला देशके बीचसे होकर उत्तरसे दक्षिण चला गया है। ये तीनो सिलसिले सतपुडाके हिस्से हैं। जिलेके पूर्वोत्तर भागमे रामटेक नामक पवित्र पहाडीपर एक पुराना किला और कई एक देवमन्दिर

स्थित है। नागपुर शहरके पास एक छोटी पहाडीपर सीतावर्डी किला है। सन् १८८३-१८८४ में जिलेके ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १९३२ वर्गमील भूमि जोती जाती थी; ७८९ वर्गमील जोतनेके लायक और १०६५ वर्गमील नहीं जोतने योग्य थी। जिलेकी प्रधान फसिल गेहूँ, कपास, ऊख और तम्बाकू हैं। जिलेमें जोखार बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नागपुर जिलेके ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६९७३५६ मनुष्य थे, अर्थात् ५९८४४१ हिन्दू, ४२७५० आदि निवासी, जो प्राय सब गोंड है; ३९७६५ मुसलमान, ७३७१ कबीरपंथी, ४८५० क्रस्तान, ३५६४ जैन, ४१६ सतनामी, १७८ पारसी, ६ ब्राह्म, ५ बौद्ध, ४ यहूदी और ६ अन्य। हिन्दुओंमें १४५८१५ कुर्मी, ८२०६६ महारा, ५४४५१ तेली, ३७७३३ कास्टी, २७६१० माली, २१०२८ ब्राह्मण, १८८८४ मेहरा, ११२१२ राजपूत और शेषमे गारी, वरई इत्यादि दूसरी जातियोंके लोग थे। नागपुर जिलेके कसबे नागपुरमें ९८२९९ ( सन् १८९१ में ११७०१४ ), कामटीमें ५०९८७ ( सन् १८९१ में ४३१५९ ), अमरेरमें १४२५७ ( सन् १८९१ में १५१८० ). खापामें ८४६५, रामटेकमें ७-१४ और नरखेरामे ७०६१ मनुष्य थे।

इतिहास--सोलहवीं सदीमे नागपुर जिला देवगढके गोंड राज्यका एक भाग बना। देवगढ़के राजाके छोटे भाई जतबाने पहाड़ीपर एक दृढ किला बनवाया। उसके और उसकी सन्तानके बनवाये हुए बहुतेरे टूटे फूटे किले नागपुर जिलेमें जगह जगह देख पडते है। लगभग सन् १७०० ई० में उसके ३ या ४ पुश्त पोछेके वख्त बुलन्दने देवगढके राज्यको प्रतापी बनाया और राज्यको बहुत बढ़ाया। उसके बादके राजा चाँदसुलतानने नागपुर शहरको दीवारसे घेरवाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १७३९ मे चाँदसुलतानकी मृत्यु होनेपर वख्तबुलन्दके पुत्र अलीशाह बरजोरीसे तख्तपर बैठ गया। तब चाँदसुलतानकी विधवाने अपने पुत्र बुरहानशाह और अकबरशाहको राज्य दिलानेके लिये बरारसे राघोजी भोंसलेको बुलाया। अलीशाह मारा गया। चाँदसुलतानके पुत्रोंको राज्य मिला। राघोजीके चले जानेपर चाँदसुलतानके दोनों पुत्रोंमें राज्यके लिये लडाई हुई। बुरहानशाहने सन् १७४३ में अपनी सहायताके लिये राघोजी भोंसलाको बुलाया। अकबरशाह राज्यसे निकाला गया। राघोजीने बुरहानशाहका पेंशन मुकरर करके उसको राजाकी पदवी देकर राज्यको अपने अधिकारमें कर लिया और नागपुर शहरको अपनी राजधानी बनाया।

सन् १७४४ में नागपुरके राघोजी भोसलाने पूनाके पेशवासे बरारसे कटकतक 'कर' लेनेकी सनद ली और सन् १७५० में बरार, गोंडवाना और बङ्गालके लिये नई शनदे हासिलकीं। उसने सन् १७५१ में बङ्गालसे चौथ तहसीली और सूबे उडीसेका दक्षिणी भाग अपने अधिकारमें कर लिया। इस प्रकार उसने बाहरके देशोको जीतकर एक बड़े देशके ऊपर अपनी हुकूमत फैलाई। सन् १७५५ में पहला राघोजीकी मृत्यु होनेपर उसका बड़ा पुत्र जानोजी नागपुरका राजा हुआ और छोटे पुत्र माधोजीको छत्तीसगढ और चन्दा मिला। सन् १७६५ में निजाम और पेशवा दोनोंने मिलकर जानोजीको परास्त करके नागपुरको जलाया, किन्तु उसके ४ वर्ष पीछे पेशवाने जानोजी भोंसलेसे एक सन्धि की, जिसके अनुसार जानोजीकी पूरी स्वाधीनता होगई। उसके ३ वर्ष पश्चात् जानोजी मर गया। वह चन्दाके माधोजीके पुत्र अर्थात् अपने भतीजे राघोजीको गोद ले चुका था। माधोजी अपने पुत्रको गद्दीपर

बैठा कर राज्य कार्य चलाने लगा। सन् १७८८ में माधोजीके मरने पर उसका पुत्र दूसरा राघोजी राज्यका काम करने लगा। उसके राज्यके समय नागपुरका बल अधिक बढ़ गया और अङ्गरेजोंसे अधिक सरोकार हुआ। जब सन् १७५६ और १७६५ के बीचमें बङ्गालमें अङ्गरेजोंका अधिकार होगया तब महाराष्ट्रोंकी चढ़ाई बन्द हुई। सन् १७९८ के थोडे दिन पीछे राघोजीने सिंधियाके साथ मिलकर अङ्गरेजोंसे मुकाबिला किया। अङ्गरेजोंने जब असाई और अरगांवकी लड़ाइयोंमे महाराष्ट्रोंको दबाया तब देवगाँवमें सन्धि हुई, जिसके अनुसार राघोजी भोसलाने अपने राज्यका तीसरा भाग अङ्गरेजोंको दे दिया और नागपुरमे एक रेजीडेटको रखना कबूल किया। सन् १८०३ में अङ्गरेजोंने महाराष्ट्रोंको सूबे उडीसेसे निकाल दिया। राघोजी अपने राज्यसे अधिक मालगुजारी लेने लगे और पिण्डारी लूट पाट करने लगे, इससे नागपुरका वर्तमान जिला पूरे तौरसे बरबाद होगया। सन् १८१६ में दूसरा राघोजी मर गया। उसका पुत्र परशूजी अन्धा लँगडा और निर्बल था, इसलिये राघोजीका भतीजा आपासाहब राजप्रतिनिधि बना। चन्द महीनोके पश्चात् आपासाहबने परशूजीको विष देकर मरवा डाला और आप नागपुरके राजसिंहासन पर बैठा। उसने अङ्गरेजोंके दुश्मन पेशवासे दोस्ती की, इसलिये अङ्गरेजोंने कई बार नागपुर पर आक्रमण किया। प्रथम तो आपासाहबने अङ्गरेजी सेनाको भगादिया, किन्तु सन् १८१७ के अन्तमे वह नागपुरके पास परास्त होकर भाग गया। अङ्गरेजोंने दूसरे राघोजीके पोतेको, जो निरा बालक था, राघोजीकी पदवी देकर गद्दीपर बैठाया। अङ्गरेजी रेजीडेण्ट राज्यका प्रबंध करने लगा। सन् १८३० में बडे होनेपर तीसरे राघोजीको राज्यका अधिकार मिला। सन् १८५३ में तीसरा राघोजी मर गया। तब अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने उसके गोद लिये हुए बालकको राजा स्वीकार न करके नागपुरके राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया।

सन् १८५७ के बलवेके समय देशी सवारोंने शहरके मुसलमानोंसे राय करके बगावत करनेको ता० १३ जून नियत की, किन्तु पैदल सेना अङ्गरेजोंकी ओर थी, इसलिये बगावत नहीं होसका। पीछे बागी होनेवाली फौजके हथियार छीन लिये गये और वे लोग निकाल बाहर किये गये। ता० २४ जूनको इर्रेगुलर रिसालेके हथियार लेलिये गये, किन्तु नवम्बरमें उनको फिर हथियार दिये गये और वे लोग सम्भलपुरकी ओर सरकारी कामके लिये भेजे गये।

सन् १८६१ मे सागर और नर्मदा देशमे नागपुर देश मिला दिया गया। तीनों मिल कर वर्तमान मध्य देश, जिसका सदर स्थान नागपुर कसबा है, नियत हुआ।

मध्यदेश—मध्य देश एक चीफ कमिश्नरके आधीन है, जो नागपुर शहरमें रहते हैं। इसके पूर्व गवर्नमेण्ट बङ्गाल, दक्षिण मदरास हाता और हैदराबादका राज्य, पश्चिम बरार, पश्चिमोत्तर मालवा और उत्तर मध्यहिंद और बुन्देलखण्ड है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ६०० मील और उत्तरसे दक्षिण तक करीब ५०० मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल ८६५०१ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या १०७८४२९४ थी अर्थात् ५३९७३०४ पुरुष और ५३८६९९० स्त्रियाँ। इनमे ८८२१४६३ हिन्दू, १५९७१४९ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली

जातियाँ इत्यादि, २९७६०४ मुसलमान, ४८६४४ जैन, १२९७० कृस्तान, ७८१ पारसी, ३२२ बौद्ध, १७६ यहूदी, १७२ सिक्ख और ९ अन्य थे। इनमे सैंकड़े पीछे ६०¼ हिन्दी भाषा वाले, १९¾ महाराष्ट्र भाषा वाले, ९¼ गोंड भाषा वाले, ६¾ उडिया भाषावाले, १½ उर्दू भाषावाले और ३ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। मध्यदेशके लोगोंकी बोली और चाल तथा पहराव बँगला, उडिया, महाराष्ट्री और हिन्दीकी खिचड़ी है।

मध्यदेशमे ४ भाग और १९ जिले इस भाँति है,–( १ ) नागपुर किस्मतमें नागपुर, भण्डारा, वरधा, चाँदा, वालाघाट और अपरगोदावरी, ( २ ) नर्मदा विभागमे नरसिंहपुर, हुशंगाबाद, निमार, बेतूल और चिंदवाडा, ( ३ ) जबलपुर विभागमे जबलपुर, सागर, दमोह, मण्डला और सिउनी और ( ४ ) छत्तीसगढ विभागमें रायपुर, विलासपुर और सम्भलपुर जिला।

मध्यदेशके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,–

| नं० | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या | नं० | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नागपुर | नागपुर | ११७०१४ | ११ | हरदा | हुशंगाबाद | १३५५६ |
| २ | जबलपुर | जबलपुर | ८४४८१ | १२ | हुशंगाबाद | हुशंगाबाद | १३४९५ |
| ३ | सागर | सागर | ४४६७४ | १३ | भण्डारा | भण्डारा | १३३४८ |
| ४ | कामटी | नागपुर | ४३१५९ | १४ | सिउनी | सिउनी | ११९७६ |
| ५ | बुरहानपुर | निमार | ३२२५२ | १५ | दमोह | दमोह | ११७५३ |
| ६ | रायपुर | रायपुर | २३७५९ | १६ | विलासपुर | विलासपुर | १११२२ |
| ७ | चाँदा | चाँदा | १६१७५ | १७ | हिंगनघाट | वरधा | १०५६४ |
| ८ | खण्डवा | निमार | १५५८९ | १८ | नरसिहपुर | नरसिंहपुर | १०२२० |
| ९ | अमेरर | नागपुर | १५१८० | १९ | वरोरा | चाँदा | १००१८ |
| १० | सम्भलपुर | सम्भलपुर | १४५७१ | | | | |

मध्यदेशमें १५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय देशी राज्योंके २९४३५ वर्गमील क्षेत्रफलमें २१६०५११ मनुष्य थे, अर्थात् १०८९०११ पुरुष और १०७१५०० स्त्रियाँ। इनमें १६५८१५३ हिन्दू, ४८९५७२ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियोंके लोग, ११८७५ मुसलमान, ५६८ जैन, ३३८ कृस्तान, ३ बौद्ध १ सिक्ख और १ अन्य था। इनमें सैकड़े पीछे ४२½ उड़िया भाषावाले, ३६ हिन्दी भाषावाले, ८½ गोंड़ भाषावाले, ६½ हलार्बी भाषावाले ३ खाँद भाषावाले और ३½ अन्य भाषावाले मनुष्य थे।

देशी राज्यके कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे,–

| नं० | कसबा | राज्य | जन-संख्या | नं० | कसबा | राज्य | जन-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | राजनन्दगाँव | राजनन्दगाँव | ८८५० | ४ | कवरदह | कवरदह | ५३४९ |
| २ | सोनपुर | सोनपुर | ८६९८ | ५ | जगदलपुर | वस्तर | ५०४४ |
| ३ | डूगरगढ | खैरागढ़ | ५६७५ | ६ | वेंका | ० | ५०४० |

मध्यदेशके देशी राज्योंका त्रिज,–

| नं० | देशी राज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | मनुष्य-संख्या सन् १८८१ | मालगुजारी रुपया | राज्यका पता |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | खैरागढ़ .... | ९४० | १६६१३८ | २१४७०० | रायपुर जिलेमें। |
| २ | राजनन्दगाँव | ९०५ | १६४३३९ | २२२००० | रायपुर जिलेमें। |
| ३ | वस्तर . .... | १३०६२ | १९६२४८ | १४१३०० | रायपुर जिलेके दक्षिण और चाँदा जिलेके उत्तर। |
| ४ | कालाहांडी ... | ३७४५ | २२४५४८ | १००००० | पटना-राज्यके दक्षिण। |
| ५ | पटना .. . | २३९९ | २५७९५९ | ८१००० | कालाहांडी—राज्यके उत्तर और सोनपुर-राज्यके पश्चिम। |
| ६ | रायगढ ..... | १४८६ | १२८९४३ | ६६७०० | सुरगुजासे दक्षिण और सम्भलपुर जिलेसे उत्तर। |
| ७ | सोनपुर ... .. | ९०६ | १७८७०१ | ५१५०० | सम्भलपुर जिलेके दक्षिण और पटना-राज्यके पूर्व। |
| ८ | वामडा ...... | १९८८ | ८१२८६ | ३७००० | सम्भलपुरके पूर्व। |
| ९ | कवरदह ...... | ८८७ | ८६३६२ | ६८००० | विलासपुर जिलेमें। |
| १० | सारनगढ़ ... | ५४० | ७१२७४ | ४१७०० | सम्भलपुरके पश्चिम और रायगढ-राज्यके दक्षिण। |
| ११ | कांकर ... ... | ६३९ | ६३६१० | २२००० | रायपुर जिलेके पश्चिम और वस्तर-राज्यके उत्तर। |
| १२ | छुइकदा ... | १७४ | ३२९७९ | ३३००० | रायपुर जिलेमें सालटेकरी-पहाडीके पास। |
| १३ | रेहराखोल .. | ८३३ | १७७५० | ३३००० | वामड़ा राज्यके दक्षिण और सम्भलपुर जिलेके पूर्व। |
| १४ | सकराई .. | २१५ | १६७६४ | ३३००० | हुशंगावाद जिलेमें। |
| १५ | सकटी .. | ११५ | २३८१९ | २५००० | रायगढके पश्चिम विलासपुर जिलेके पूर्वी सीमाके पास। |
| | जोड | २८८३४ | १७०९७२० | ११६९९०० | |

खैरागढ, रायगढ़, सारनगढ, सकराई और सकटीके राजा गोंड बस्तर, कालाहाँडी, पटना, सोनपुर, वामडा, काँकर और रेहराखोलके राजा राजपूत और राजनन्दगाँव तथा छुइखदाके राजा वैरागी है।

सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके अनुसार मध्यदेशके अङ्गरेजी और देशी राज्य दोनोंका क्षेत्रफल ११५९३६ वर्गमील और मनुष्य–संख्या १२९४४८०५ है। मध्यदेशमें

जङ्गल और पहाडियाँ बहुत है। आबादी कम है । कोयले और लोहेकी खानिया बहुत स्थानोंमें है। गेंहू और कपास बहुत उत्पन्न होते हैं। महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, वरधा, वेणगङ्गा, इत्यादि बहुतसी नदियाँ बहती हैं। सीमेपर कुछ दूर तक गोदावरी नदी बहती है। झील और तालाब बहुत हैं। क्षेत्रफलकी एक तिहाईसे कुछ अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय मध्य देशकी जातियोंमें नीचे लिखी हुई जातियोके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे, प्रति हजारमे कायस्थोंमे ४७५ पुरुष और १६ स्त्रियाँ, बनियोंमें ३८८ पुरुष, विधुरमे ३४२ पुरुष और ४ स्त्रियाँ और ब्राह्मणोंमें ३१७ पुरुष और ७ स्त्रियाँ ।

मध्यदेशके निवासियोंमे महाराष्ट्र और गोंड अधिक हैं। लगभग २० लाख कोल हैं। बहुतेरे लोग कबीरपन्थी, सतनामी, कुम्भीपन्थिया, सिंहपन्थी, धामीपन्थी इत्यादि मतोंके अनुगामी है।

मध्यदेशके प्रायः सब पहाडी कोमोंका काला चमडा, चिपटा नाक और मोटा ओठ होता है, जिससे वे पहचाने जात है कि एरियन नही हैं। वे लोग खास करके भगवा पहनते हैं और माता तथा हैजेको पूजते हैं और भूत तथा प्रेतोंमें अधिक विश्वास रखते हैं। साधारण प्रकारसे लोग विवाह बन्धनपर बहुत कम खियाल रखते हैं । अविवाहिता स्त्रीका पुत्र विवाहिता स्त्रीके पुत्रके बराबर पिताके धन संपत्तिका भागी होता है। पहाडी लोगोंमे मारिया जातिके लोग बड़े गवाँर है, जो तीर चलानेमें बडे प्रवीण होते हैं। मारीलोग उनसे भी अधिक गवाँर है। वे लोग बिना पहचानके आदमीको देखकर अपने पासके झोपडोंमें भाग जाते हैं। वे अपने राजाको वर्षमें एक बार मालगुजारीमे गल्ले आदि फसिल देते है। राजाके कर्मचारी लोग उनकी झोपड़ियोके निकट जाकर बाजा बजानेके उपरान्त आप छिप जाते हैं। तब मारीलोग नियत स्थानोंपर नियत फसिल रखकर चले जाते है । कर्मचारी लोग उसे उठा ले जाते है। बहुत पहाडीलोग हिन्दूमे मिल गये हैं और हिन्दूमे लिखे जाते हैं। वस्तरके राज्यमे काली दन्तेश्वरी राज्यकी रक्षक समझी जाती है। उसको पहले मनुष्य बलि दिये जाते थे, किन्तु अङ्गरज महाराजने सन् १८४२ से उस रीतिको रोक दिया । उस राज्यके पूर्वी भागमें गडवा जातिके पहाड़ीलोग होते है, जो खेती और मजदूरीसे अपना निर्वाह करते हैं। उनकी स्त्रियाँ करिङ्गके वृक्षकी छालसे बने हुए ६ फीट लम्बे और ३ फीट चौड़े कपडेको अपनी कमरके चारो तरफ लपट कर कन्धेके पास लाकर लगभग १½ फीट लम्बे पटुयेसे छातीपर बाँधती हैं। वे कुश ( घास ) के बने हुये शिरोभूषण और पीतलके तारके कर्णभूषण अर्थात बडा बाला, जो कन्धे तक लटके रहते हैं, पहनती हैं।

मध्यदेशके बहुतेरे बैल और गाय लाल रङ्गकी होती है। हल और गाड़ियोंमें भैसे भी जोते जाते है। प्राय सब गाडियोंके पहिये बहुत छोटे छोटे होते हैं। रेलवेके बडे स्टेशनोपर केले, अमरूद और नारङ्गी मिलती हैं।

कबीरपंथी—मध्यदेशमें खास करके बिलासपुर, रायपुर और छिन्दवाड़ा जिलेमें कबीरपंथी बहुत हैं, जो सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमे ३४७९९४ थे। मध्यदेशके कबीरपंथीका प्रधान मठ बिलासपुर जिलेके कवरदहमें और उसके बाद कुदरमाल और गढ़ धान्यवर्में है।

सतनामी—लगभग सन् १८३५ ई० में घासीदास नामक एक विना पढ़ा हुआ मनुष्य अपने चेलोंको एक स्थानपर ६ मासमे एक नियत दिनपर इकट्ठे होनेको कहकर जङ्गलमें चला गया। नियमित दिनपर उस स्थानमें बहुत चमार एकत्र हुए। प्रातःकाल सन्नाटे समयमे घासीदास पहाडीसे उतरा। उसने अपने चेलोंसे अपना स्वर्ग जानेका वृत्तान्त कह सुनाया और घोषणा किया कि सम्पूर्ण मनुष्य एक समान है। मूर्ति पूजा करनेसे कुछ लाभ नहीं है। हमारे आदेशपर चलनेसे मनुष्योंका उद्धार होगा। हमारे घरानेमे उपदेशक सर्वदा हुआ करेंगे। घासीदासकी मृत्यु होनेपर उसका बडा पुत्र बालकदास उसका उत्तराधिकारी उपदेशक हुआ, किन्तु सन् १८६० ई० मे किसी दुश्मनने उसको मारडाला। छत्तीसगढके प्राय सब चमारोंने इस नये मतको स्वीकार कर लिया है। वे लोग सतनामी कहलाते है, जो प्रतिदिन प्रात.काल और संध्याके समय सतनाम, सतनाम, सतनाम कहते हुए सूर्यके आगे दण्डवत करते है अर्थात गिरते है। वे लोग मांस भक्षण, नही करते और मद्य नहीं पीते। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमें ३९८४०९ सतनामी थे।

भारतवर्षमें सबसे अधिक नीच जातियोंमेसे चमार समझे जाते है; किन्तु भारतमें जो सब काम कृषक लोग करते है, उन्हीं कामोंको अर्थात् उन्ही पेशेको मध्यदेशके छत्तीसगढ विभागके चमार भी करते है और वे लोग अधिक मिलनसार और मजहबी हो रहे है। बहुतेरे गाँवामे चमार मुखिया और जमीन्दार है।

कुम्भीपंथिया—सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इनकी संख्या ९१३ थी। वे लोग मध्यदेशहीमें खास करके सम्भलपुर जिलेमें हैं। यह पन्थ सन् १८६६ में सूबे उडीसेके अङ्गोल जिले और धंकेल राज्यमें नियत हुआ। इस पन्थको कायम करनेवाला एक आदमी था। इस पंथवाले कहते हैं कि इस मतको नियत करनेवाला स्वर्गमे रहता है। वह निराकार ( अर्थात् विना शरीरका ) है। उसका प्रधान चेला गोविन्ददास मरगया, उसके एक दूसरे चेले नरसिंहदासने उसके स्मरणार्थ बॉकी गाँवमें एक मन्दिर बनवाया है। इस मतका एक दूसरा मन्दिर बांकीमें है। इस पन्थके ३ फिरके हैं,—कुम्भीपंथिया गोसाईं, कनफाटिया गोसाँई और आश्रिता। कुम्भीपंथिया और कनफाटिया दोनो परस्पर एक साथ भोजन नही करते और विरक्त होते है और आश्रिता विवाह करते है और जातिका बंधन नही छोडते और वे लोग कुम्भीपन्थिया और कनफाटियाको अपना गुरु समझते है और उनकी शिक्षाका पालन करते है। इस मतके लोग सूर्योदय और सूर्यास्तके समय सूर्यके आगे दण्डवत् करते है। सूर्यास्त होनेपर कभी भोजन नहीं करते। हिन्दूके देवताओंकी मूर्तियोंको नही मानते। यद्यपि वे लोग ३३ किरोड देवताओंको मानते हैं, किन्तु उनको पूजते नहीं। वे कहते है कि मालिकको पूजना चाहिये, नोकरोंकी पूजा करनेकी जरूरत नहीं है। वे लोग एक ईश्वरकी, जिसको वे अलख कहते है, उपासना करते है।

सिंहपन्थी—सिंहजी नामक एक साधु थे, जिनके नामसे निमार और हुशगाबाद जिलेमें अनेक मन्दिर बनाये गये है, जिनमें सब जातिके लोग जाते हैं।

इतिहास—पूर्व समयमें मध्यदेशका अधिक भाग गोंडवाना अर्थात् गोंडोंका देश कहलाता था। एरियन लोगोंके आक्रमणके समय आदि निवासियोंकी जातियोंके लोग सतपुडाकी ऊंची भूमि पर चले गये और दूसरे पूर्व दक्षिण भाग गये।

पाँचवीं सदीमें विदेशी जाति यवन लोग सतपुड़ाके प्लेटू पर शासन करते थे, दशवीं और तेरहवीं सदीके बीचमें चन्द्रवंशी राजपूत लोग जबलपुरके चारोंओरके देशमें हुकूमत करते थे और मालवाके प्रमार लोग सतपुडाके दक्षिणके देशमें शासन करते थे । गोड़के चाँदा-खाँदानने कदाचित् दशवीं या ग्यारहवी सदीमें राज्य किया था । छत्तीसगढ़के हैहयवंशी लोग पुराने समयसे थे । सन् १३९८ में सतपुड़ा-प्लेटूके खेरलाके राजाओंके आधीन गोंडवानेकी सम्पूर्ण पहाड़ियां थीं । सन् १४६७ में वहमनी राजाने उनको जीता । सोलहवीं सदीमे गौंडलोग फिर वली हुए; किन्तु सन् १७४१ मे महाराष्ट्रोंने उस देशपर आक्रमण किया और पीछे उसको अपने अधिकारमें करलिया । अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने सन् १८१८ मे सागर और नर्मदा विभागको और सन् १८५३ मे शेष मध्यदेशको अपने राज्यमें मिला लिया ।

रेलवे——बङ्गाल नागपुर रेलवे और इण्डियन पेनिनसुला रेलवेका जंक्शन नागपुरमें है ।

(१) नागपुरसे पश्चिमकी ओर ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाडीका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है——

मील——प्रसिद्ध स्टेशन——

४९ वरधा जंक्शन ।
८० धामनगाँव ।
१०८ वडनेरा जंक्शन ।
१५७ आकोला ।
१८० सेगाँव ।
१८८ जलंव जंक्शन ।
२४४ भुसावल जंक्शन ।
३१६ चालीसगाँव ।
३४२ नन्दगाँव ।
३५८ मनमार जंक्शन ।
३७४ लासलगाँव ।
४०४ नासिक ।
४३५ इगतपुर ।
४८७ कल्याण जंक्शन ।
४९९ थाना ।
५१४ दादर ।
५१५ परेल जंक्शन ।
५२० वम्बई विक्टोरिया स्टेशन ।

वरधा जंक्शनसे पूर्व दक्षिण २१ मील हींगनघाट और ४५ मील वरोरा ।

वड़नेरा जंक्शनसे ६ मील उत्तर अमरावती ।

जलंव जंक्शनसे ८ मील दक्षिण खामगाँव ।

भुसावल जंक्शनसे पूर्वोत्तर ७७ मील खण्डवा जंक्शन १८७ मील इटारसी जंक्शन, २१८ मील सोहागपुर, २८८ मील नरसिंहपुर ३४० मील जबलपुर, ३९७ मील कटनी जंक्शन, ५०६ मील मानिकपुर जंक्शन, ५६४ मील नयनी जंक्शन और ५६८ मील इलाहाबाद शहर ।

(२) नागपुरसे पूर्व थोडा उत्तर बङ्गाल नागपुर रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ीका महसूल प्रतिमील २ पाई लगता है——

मील——प्रसिद्ध स्टेशन——

९ कामटी ।
३९ भण्डारा रोड ।
५० तुमसर रोड ।
१२७ डूगरगढ़ ।

१४६ राजनन्दगाँव।
१८८ रायपुर।
२५६ विलासपुर जंक्शन।
२८२ नैला।
२८९ चापा।
३३८ रायगढ़।
३८३ झारखुगढ़ जंक्शन।
४०६ बामडा।
५०८ चक्रधरपुर।
५३० सीनी।
५८० पुरुलिया।
६२७ आसनसोल जंक्शन।

विलासपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रा रोड और १९८ मील कटनी जंक्शन।

झारसुगढ़ जंक्शनसे दक्षिण ३० मील सम्भलपुर।

## वरधा।

नागपुरसे ४९ मील पश्चिम-दक्षिण वरधाका रेलवे जंक्शन है। वरधा मध्यदेशके नागपुर विभागमें ( २० अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान एक नया छोटा कसबा है, जो सन् १८६६ में पलकवारी गाँवके स्थानपर बसा।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वरधा कसबेमें ५८१६ मनुष्य थे; अर्थात् ४६३३ हिन्दू, ८०७ मुसलमान, १९६ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ५५ कृस्तान, ८ यहूदी, ६ पारसी और २ दूसरे।

कसबेमें रूईकी बडी तिजारत होती है। बम्बईके बहुत सौदागरोंके गुमास्ते रहते हैं। रूई दबानेके लिये इञ्जनवाली २ बड़ी कलें हैं। तिजारत उन्नत पर है। कसबेके पूर्व सरकारी कचहरियाँ, पुलिस लाइन, जेलखाना, पबलिक बाग इत्यादि हैं। कसबेके चारों ओर कई मीलों तक सुन्दर सडकें बनी हैं।

वरधा जिला—यह मध्यदेशके अखीर पश्चिममें त्रिभुजाकार है। इसके पूर्व नागपुर जिला, पश्चिमोत्तर चाँदा जिला और पश्चिम वरदानदी; बाद बरार प्रदेश है। देश पहाडी है। क्षेत्रफलकी आधीसे अधिक भूमि जोती जाती है। ग्रीष्म ऋतुओंमें जब इस जिलेकी पहाडियोंकी घास सूख जाती है, तब मवेशियोंके बहुतेरे झुण्ड मँडला और चाँदा जिलेके वनोंमें खदेर दिये जाते हैं। इस जिलेमें बच्चे देनेके लिये बहुत मवेशियाँ पाली जाती हैं। उत्तम भैंस और बैलोंके लिये यह जिला प्रसिद्ध है। बहुत कपास इस जिलेसे दूसरे जिलेमें भेजा जाता है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके २४०१ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३८७२२१ मनुष्य थे, अर्थात् ३२८५२३ हिन्दू ४१९३३ एनिमिष्टिक, १४२०० मुसलमान, २३५६ जैन ९६ कृस्तान, ९२ कबीरपंथी, ८ यहूदी, ७ पारसी, और ६ दूसरे। हिन्दुओंमें ८०९०७ कुर्मी, ३९००३ महार, ३७५७७ तेली, १७२०७ माली, ८५८९ ब्राह्मण, ३५९६ [illegible] ३८८१ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। एनिमिष्टिकोंमें [illegible] हैं।

जिलेमे हीङ्गनघाट प्रधान कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०९६४ मनुष्य थे और देवली आदि कई छोटे कसवे है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि वरधा जिलेके पश्चिमोत्तरका भाग विदर्भ देशके राजा भीष्मकके राज्यका एक हिस्सा था। भीष्मककी रुक्मिणी नामक पुत्रीसे श्रीकृष्णचन्द्रका विवाह हुआ था। उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें पिण्डारी इस देशमे लूट पाट करते थे। उस समय वस्ती वालोंने उनसे वचनेके लिये मट्टीके किले वनानेका काम प्रारम्भ किया। वरधा जिलेके प्राय. सव गावोंमें मट्टीके छोटे किले देखनेमें आते हैं। इस जिलेका इतिहास नागपुरके इतिहासमें शामिल है। यह जिला सन् १८६२ में नागपुरसे अलग किया गया।

हिङ्गनघाट—वरधा जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४५ मीलकी रेलवे लाइन हिङ्गनघाट होकर कोयलेकी खानोंके मैदानके वरोरामे गई है। वरधासे २१ मील दक्षिण-पूर्व हिङ्गनघाटका स्टेशन है। वरधा जिलेमें प्रधान कसवा हिङ्गनघाट है, जहाँसे वहुतसे कपास और रूई दूसरे जिलोंमें भेजी जाती है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हिङ्गनघाट कसवेमें १०९६४ मनुष्य थे, अर्थात् ९३६८ हिन्दू, १२१४ मुसलमान, २१८ जैन, १४२ एनिमिष्टिक और २२ कृस्तान।

हिङ्गनघाटसे २४ मील दक्षिण–पूर्व वरोराका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके चाँदा जिलेमे वरोरा एक कसवा है, जिसमें कपास और रूईकी वडी तिजारत होती है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय वरोरा कसवेमें ८००१८ मनुष्य थे। वरोराके निकट कोयलेकी अच्छी खानियाँ हैं, जिनमेंसे प्रति वर्ष लगभग १००००० टन कोयला निकाला जाता है।

## चान्दा।

वरोराके रेलवे स्टेशनसे ३० मील दक्षिण–पूर्व मध्यदेशके नागपुर विभागमे ( १९ अंश, ५६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २० कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा चाँदा है। वरोरासे एक अच्छी सडक चाँदा कसवेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय चाँदा कसवेमें १६१७५ मनुष्य थे, अर्थात् १४५९८ हिन्दू, १०९९ मुसलमान, ३४४ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी, ९४ जैन और ४० कृस्तान।

चाँदा कसवा ५½ मीलकी पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है, जिसमे ४ फाटक और ५ खिडिकियाँ हैं। दीवारके भीतर कई वस्तियोंके साथ चाँदा कसवा और जोते हुए खेतोंकी भूमि है। पुराने गढ़के भीतर जेलखाना और एक वडा कूप है, जिसमे जानेके लिये भूमिके भीतर एक मार्ग वना है। चाँदामें अचलेश्वर, महाकाली और मुरलीधर तीनोंके ३ मन्दिर और गोंड राजाओंके अनेक समाधि मन्दिर, एक सराय, एक वङ्गला, कोतवाली ( जिसके आगे वाग है ), जिला स्कूल, अस्पताल और जतपुरा फाटकके समीप विक्टोरिया वाजार है। कसवेके उत्तर सिविल स्टेशन, कसवे और सिविल स्टेशनके वीचमे एक पवलिक पार्क, जिसमें सरकारी कचहरियाँ और देशी पैदलके एक रेजीमेंटके रहने लायक मकान है और सिविल स्टेशनके पश्चिम फौजी छावनी है।

चाँदामें बड़ी सौदागरी होती है। खास करके एक बड़े मेलेमें; जो वैशाखमे आरम्भ हो करके लगभग २० दिन रहता है। कसबेमें कपडे, पीतलके वर्तन, चमड़ेके स्लीपर और वॉसकी अनेक भाँतिकी चीजें बनती है। चाँदामें बहुत गोड़, जो मत और भाषामे आस पासके लोगोंसे भिन्न है देखनेमें-आते है।

चाँदा जिला—इसके उत्तर बरधा, नागपुर, और भण्डारा जिला, पश्चिम बरधा नदी और दक्षिण-पूर्व बस्तरका राज्य और रायपुर जिला है। जिलेके भीतर उसकी पश्चिमी सीमाके पास बरधा नदीके समीपवर्त्ती नीची भूमिके सिवाय जिलेमें सर्वत्र छोटी छोटी पहाडियाँ हैं। वानगङ्गा नदी इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिणको बहती हुई सिउनी जिलेमे जाकर बरधा नदीसे मिली है। जिलेके पूर्वी भागमें महानदी और पूर्वोत्तर इन्द्रवती नदी बहती है। जिलेमें बहुत झीलें, बहुत जंगल जङ्गल और वॉसका बहुत बड़ा वन है। सन् १८८१ मे १०७८५ वर्गमील भूमिमेंसे केवल ११४८ वर्गमील जोती गई थी, ३७९७ वर्गमील नहीं जोतनेके लायक और ५८४० वर्गमील जोतनेके लायक भूमि विना जोती हुई पडी थी। पहाडियोंमें लोहेका ओर बहुत है। चन्द पहाड़ी नदियोंके वालूमे सोनेके चूर्ण मिलते है। पूर्व समयमें वैरागढ़के निकट हीरे और लाल मिलते थे। देवल, भॉडक, बिजवसनी और घुगुसमे सुन्दर गुफा मन्दिर, वलालपुरके पास चट्टानी मन्दिर और एक किला और डोमाके निकट झरना और गुफा देखनेके लायक हैं। मध्य देशमे चॉदा जिलेके पानके वाग अर्थात् वरेज प्रसिद्ध है। बड़ा मेला वैशाख मासमे चॉदा कसबेमें और उससे छोटा मेला फागुनमे भाँडकमें होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चॉदा जिलेमें ६४९१४६ मनुष्य थे; अर्थात् ४९९३२७ हिन्दू, १३६५६४ आदि निवासी कौमें, १०९८७ मुसलमान १०६४ कबीरपन्थी, ७३७ जैन, २८९ कृस्तान, १७३ सतनामी और ५ सिक्ख। जातियोंके खानेमें ९२८०६ कुर्मी, ७२४७२ महारा, ४२७९६ गावली (मवेसी चराने वाले), ३२००१ चमार ३११२६ तेली, ६४५८ ब्राह्मण, २२२१ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चाँदा जिलेके चाँदा कसबेमें १६१७५ और वरोरामे १००१८ मनुष्य थे।

इतिहास—महाराष्ट्रोंके राज्यमे पहिले चाँदाके गोड राजा यद्यपि वराय नामके दिल्लीके बादशाहके आधीन थे, किन्तु वास्तवमे चॉदाका राज्य स्वाधीन था। चॉदाके असभ्य निवासियोंने गोड राजाओंके आधीन बहुत सभ्यताको प्राप्त किया। सन् १७४९ मे नागपुरके रघोजी भोंसलाने चोंदाको ले लिया और उससे २ वर्ष पीछे पूरे तौरसे उसको अपने अधिकारमें कर लिया। गोड घरानेके अन्तिम राजा नीलकण्ठ शाह कैदखानेमे मर गये। सन् १७७३ मे नीलकण्ठशाहके पुत्रके आधीन गोडोंने बलवा किया था, किन्तु नीलकण्ठशाहका पुत्र परास्त होकर कैदखानेमे गया। सन् १७८८ में महाराष्ट्रोंने उसको ६०० रुपया वार्षिक पेन्शन नियतकर दिया। १९ वीं सदीके प्रारम्भमें सन् १८०२ से १८०७ तक पिण्डारियोंने चाँदाके आधे वाशिंदोको मार डाला। सन् १८५३में नागपुरके तीसरे रघोजी भोंसलेकी मृत्यु होनेपर अङ्गरेज महाराजने नागपुरके अन्य देशोंके साथ चाँदाको ले लिया।

# अमरावती।

वरधा जंक्शनसे कई एक स्टेशनोसे पश्चिम वरधा नदीपर रेलवेका पुल है। वरधाके स्टेशनसे ३१ मी० पश्चिम धामन गाँवका रेलवे स्टेशन है, जिसके पास मध्य देश छूटकर बरार देश मिल जाता है। धामन गाँवसे २८ मील और वरधा जंक्शनसे ५९ मील ( नागपुरसे १०८ मील ) पश्चिम वडनेराका रेलवे स्टेशन है, जिससे उत्तर ६ मीलकी एक रेलवे शाखा अमरावती कसबेको गई है। सूबे बरारके पूर्वी विभागमे जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा बरार है

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय छावनीके सहित अमरावती कसबेमें ३३६५५ मनुष्य थे, अर्थात् १८५०४ पुरुष और १५१५१ स्त्रियाँ। इनमे २६४०३ हिन्दू, ६०४७ मुसलमान, ६७३ जैन, ३९७ कृस्तान, ९६ एनिमिष्टिक, ३६ पारसी, २ सिक्ख और १ यहूदी थे।

अमरावती कसबेके चारोओर सवा दो मील लम्बी और २० फीटसे २६ फीट तक ऊँची पत्थरकी दृढ़ दीवार है, जिसमे ५ फाटक और ४ खिड़िकियाँ बनी हुई हैं। निजाम सरकारने अमरावतीके धनी सौदागरोंको पिण्डारियोंसे बचानेके लिये उन्नीसवीं सदीके आरम्भमे इसको बनवाया। अमरावती दो भागोंमें विभक्त है,–कसबा और पेट। अमरावतीके सम्पूर्ण कूपोंका जल खारा है।

अमरावतीके देवमन्दिरोंमें ८ मन्दिर प्रसिद्ध है, जिनमेसे एक हजार वर्षका पुराना अम्बाका मन्दिर प्रधान है। बहुत लोगोंका मत है कि इसीके नामसे कसबेका नाम अमरावती पड़ा था। इनके अतिरिक्त अमरावतीमे कमिश्नर, और डिपुटी कमिश्नरके आफिस, कचहरियाँ, जेलखाना अस्पताल, गिरजा, कबरगाह, बङ्गला, धर्मशाला, स्कूल, एक कम्पनी देशी पैदल सेनाकी छावनी और बहुतेरे रूईके मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। सन् १८७७ ई० में अमरावती कसबा और उसके पडोसमें रूईके १२ मिल थे। अमरावती बहुत दिनोंसे रूईके लिये प्रसिद्ध है। अब बरार प्रदेशमे खामगाँवके बाद सब कसबोंसे अधिक रूईका कारोबार अमरावतीमे होता है और यह कसबा बरारके सम्पूर्ण कसबोंसे अधिक तिजारती और धनवान है।

अमरावती जिला—इसके उत्तर (मध्यदेशका) बेतूल जिला, पूर्व वरधा नदी, दक्षिण वासिम और वून जिला और पश्चिम अकोला और एलिचपुर जिला है। यह जिला समुद्रके जलसे लगभग ८०० फीट ऊँचा मैदानमें है। जिलेमें कपास बहुत उत्पन्न होता है। यह जिला रूईके लिये बहुत दिनोंसे प्रसिद्ध है, इसमे कई एक मेले होते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अमरावती जिलेके २७५९ वर्गमीलमे ५७५३२८ मनुष्य थे, अर्थात् ५२७४६७ हिन्दू, ४१११८ मुसलमान, ६१२७ जैन, ३६६ कृस्तान, ११९ सिक्ख, १०३ पारसी, २७ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध। हिन्दुओमे १५९७६८ कुनबी, ७९४९२ महारा, ५७१२७ माली, १५९३६ ब्राह्मण, ११७०९ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अमरावती जिलेके अमरावती कसबेमें ३३६५५, करेंजामें १४४३६ और सन्दुरजनमे १००४३ मनुष्य थे। वडनेरा, खोलापुर, तालेगाँव, अजाँगाँव भी छोटे कसबे हैं।

बरार प्रदेश—बरार प्रदेश एक चीफ कमिश्नरके आधीन है, जो हैदराबादके अङ्गरेजी रजीडेंट भी हैं। इसके उत्तर और पूर्व मध्यदेश; दक्षिण हैदराबादका राज्य और पश्चिम बम्बई हातेका खानदेश जिला है। इसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग १५० मील और औसत् चौडाई १४४ मील है। इस प्रदेशमें तापती; पूर्णा, बरधा, पेनगङ्गा इत्यादि नदियाँ बहती है। इसके उत्तरकी सीमापर तापती. पूर्वकी सीमापर बरधा नदी है और दक्षिणकी सीमापर पेनगङ्गा है। बुलडाना जिलेमें खारा पानीका एक दर्शनीय झील है। यह सघन बनोंसे हरी भरी पहाड़ियोंसे घेरी हुई. स्वाभाविक गोलाकार ३४५ एकड़में, जिसका घेरा ५$\frac{3}{8}$ मील है, फैली हुई है। सन् १८८३ मे बरार प्रदेशमें ४३४४ वर्गमील क्षेत्रफलमें जङ्गल था। बरारकी घाटीके बडे भागमें मकानके कामके योग्य वृक्ष और बाँस बहुत होते हैं। इस देशकी पहाडियोंमे लोहेकी खान और बरधा नदीकी घाटीके पास कोयलेकी खान है। देशकी भूमि आबादी है। कपास और नील बहुत होता है।

सूबे बरारमें ६ जिले है,–पूर्वी बरारमे एलिचपुर अमरावती और वून और पश्चिमी बरारमे अकोला, बुलडाना और बासिम।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सूबेबरारके १७७१८ वर्गमील क्षेत्रफलमें २८९७४९१ मनुष्य थे, अर्थात् १४९१८२६ पुरुष और १४०५६६५ स्त्रियाँ। इनमे २५३१७९१ हिन्दू, २०७६८१ मुसलमान. १३७१०८ जङ्गली जातियाँ इत्यादि, १८९५२ जैन १३५९ कृस्तान, ४१२ पारसी, १७७ सिक्ख, ४ बौद्ध, और ७ अन्य थे। जिनमें सैकड़े पीछे ७९$\frac{1}{2}$ महाराष्ट्री भाषावाले, ९$\frac{3}{4}$ हिन्दी भाषावाले, ३$\frac{1}{4}$ गोंड भाषावाले और ७$\frac{1}{2}$ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। इस समय बरार प्रदेशकी जातियोंमेसे नीचे लिखे हुए लोग इस भाँति पढे हुए थे,–प्रति हजार पीछे प्रभूमे ७६४ पुरुष और १६० स्त्रियाँ, ब्राह्मणमें ६६८ पुरुष और २१ स्त्रियाँ कायस्थमे ५५७ पुरुष और १६० स्त्रियाँ; वनियामे ४८० पुरुष; विधुरमे ३६८ पुरुष और कोमटीमें ३४९ पुरुष।

बरार प्रदेशके शहर और कसबे, जिनमे सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,—

| न० | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या | न० | शहर या कसबा | जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | एलिचपुर | एलिचपुर | ३६२४० | ७ | बासिम | बासिम | १२३८९ |
| २ | अमरावती | अमरावती | ३३६५५ | ८ | सेगॉव | अकोला | ११४२२ |
| ३ | अकोला | अकोला | २१४७० | ९ | अजॉगाँव | एलिचपुर | १०५९३ |
| ४ | अकोट | अकोला | १५९९५ | १० | बालापुर | अकोला | १०२५० |
| ५ | खामगॉव | अकोला | १५५९८ | ११ | सन्दुरजन | अमरावती | १००४३ |
| ६ | करंजा | अमरावती | १४४३६ | | | | |

इतिहास—अनुमानसे जान पडता है कि बरार प्रदेश पूर्व कालमें कल्याण और देवगढके आधीन था। सन् १३१९ मे यह बराय नामके मुसलमान हुकूमत करने वालोंके आधीन हुआ। बादशाह महम्मदतुगलकके मरने पर सन् १३५१ से लगभग ५० वर्ष तक यह स्वाधीन रहा। इसके पश्चात् लगभग १३० वर्ष तक बहमनी बादशाहोंके आधीन था। सन् १४२८ मे बहमनी खानदानके राज्यका अन्त होनेपर इमादशाही बादशाहोंके जिनकी

राजधानी एलिचपुर था, अधिकारमें हुआ । सन् १५७२ मे अहमद नगरके अधिकारमे हुआ सन् १५९६ मे अकबरने अहमदनगरसे ले लिया । सन् १७२४ से वरार हैदराबादके अधिकारमें चला आता था । सन् १८५३ मे अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने हैदराबादकी फौजके खरचके बदलेमें निजामसे इसको ले लिया ।

## एलिचपुर ।

अमरावती कसबेसे ३० मीलसे अधिक उत्तर कुछ पश्चिम ( २१ अंश, १५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २९ कला, ३० विकला, पूर्व देशान्तरमें ) सूबे वरारमे जिलेका सदर स्थान और जिलमे प्रधान कसबा एलिचपुर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर कसबेमे ३६२४० मनुष्य थे, अर्थात् १८७४१ पुरुष और १७४९९ स्त्रियाँ । इनमें २५६३५ हिन्दू, १०१५४ मुसलमान, २७९ जैन, १०८ क्रस्तान, ५२ एनिमिष्टिक, ११ पारसी, और १ अन्य थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बरार प्रदेशमें पहिला शहर है ।

कसबेमे अनेक दिलचस्प इमारतें हैं;–एक बडे चबूतरेके ऊपर, जिसके चारों ओर ४ फाटक हैं, दुल्ला रहमानका दरगाह है, जिसको लगभग ४०० वर्ष हुए कि वहमनी खाँदानके एक बादशाहने बनवाया था महलके पत्थरका काम उत्तम है, जिसको सलावतखाँ और इसमाइलखाँने बनाया था, किन्तु वह शीघ्रतासे उजड़ रहा है । नवाबोंके मकबरोंमेंसे कई एक सुन्दर हैं । सुलतानगढ़ी नामक एक पत्थरका सुन्दर किला है, जिसको ( १०० वर्षसे अधिक हुए कि ) सुलतानखाँने बनवाया था । इसके अलावे अस्पताल, पुलिस स्टेशन और कई एक स्कूल है ।

कसबेसे लगभग २ मील दूर फौजी छावनी और सिविल स्टेशन हैं । सन १८८२–८३ में छावनीमें ७३ सवार, १२५ आदमीके साथ आरटिलरीकी एक बैटरी और ७६५ पदल थे ।

एलिचपुर जिला–यह जिला सूबे बरारके उत्तरीय भागमे है । इसके पूर्व वरधा नदी और अमरावती जिल; दक्षिण और पश्चिम अमरावती और अकोला जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर निमार, हुसङ्गाबाद और बेतूल जिला है । इस जिलेके उत्तरके भागमे जो क्षेत्रफलके करीब आधा है, लगातार सतपुडाका एक भाग पहाड़ियाँ और घाटियाँ हैं, जिनको मेलघाट या गाविलगढ़ कहते हैं । जिलेके दक्षिणके भागमे मैदान है, जिसमें बहुतेरी छोटी नदियाँ बहकर बरधा और पुर्ना नदीमें गिरती है । जिलेमे आमके कुञ्ज बहुत हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर जिलेका क्षेत्रफल २६२३ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या ३१३८०५ थी, जिसमें २८२००० हिन्दू, ३०२९९ मुसलमान, १२८० जैन, १९७ क्रस्तान, २७ सिक्ख और २ पारसी थे । हिन्दुओंमें १७२८० कुनबी ७४२२ ब्राह्मण, ४८३० राजपूत और शेषम दूसरी जातियोंके लोग थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर जिलेके एलिचपुर कसबेमे ३६२४० और अजँगाँवमें १०५९३ मनुष्य थे ।

इतिहास—कहावतसे जान पड़ता है कि जैन राजा एलने एलिचपुरको बसाया; जो चाडगाँवके निकटवर्ती खानजामा नगरसे आया था। सन् १५२६ में बहमनी खानदानके राज्यका अन्त होनेपर सूबेबरार इमादशाही बादशाहके अधिकारमें हुआ; जिसकी राजधानी एलिचपुर थी। सन् १५७४ में वह अहमदनगरके राज्यमें मिल गई। १८ वीं सदीके पहले भागमें पहला निजामुलमुल्क डेकानमें हुकूमत करने वाला हुआ, तब एलिचपुर एक सूबेदारके अधिकारमें किया गया। उस समयसे कसबेकी घटती होने लगी। सन् १८५३ में अङ्गरेजी सरकारने बरार दूसरे जिलोंके साथ एलिचपुरको निजामसे ले लिया।

# अकोला।

बडनेरा जङ्क्शनसे ४९ मील (नागपुरसे १५७ मील) पश्चिम अकोला रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरारमें जिलेका सदर स्थान जिलेमें प्रधान कसबा और बरारके जुडिसियल कमिश्नरका सदर स्थान अकोला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अकोलामें २१४७० मनुष्य थे, अर्थात् ११८१४ पुरुष और ९६५६ स्त्रियाँ। इनमें १४६६० हिन्दू, ६१५० मुसलमान, २५२ जैन, १८८ कृस्तान, ९८ एनिमिष्टिक, ६८ पारसी ४९ सिक्ख, ४ बौद्ध और १ अन्य थे।

अकोला कसबेके आगे पत्थरकी दीवार और इसमें ईंटोंका पुराना किला है, जिससे जान पड़ता है कि यह एक समय प्रसिद्ध शहर था। कसबेके बीचमें मोरना नदी है नदीके पश्चिम किनारेपर खास अकोला कसबा और पूर्व ताजनापेट है, जिसमें कमिश्नर, और डिपुटी कमिश्नरके आफिस, कचहरियाँ, जेलखाना, टाउनहाल, गिरजा, खैराती अस्पताल, सराय, इनके कई एक स्कूल और यूरोपियन लोगोंके मकान है। नदीके पूर्व रविवारको और पश्चिम बुधवारको बाजार लगता है।

अकोला जिला—इसके उत्तर सतपुडा पहाडियाँ, पूर्व एलिचपुर और अमरावती जिला, दक्षिण अजंताका सिलसिला, जो वासिम और बुलडाना जिलेसे इसको अलग करता है और पश्चिम बुलडाना और खानदेश जिला है। जिलेके मध्य होकर पूर्णा नदी बहती है। गाबदुमी नक्लकी एक पहाडी बालापुर तालुकके दक्षिण भागमें और दूसरी अकोला तालुकमें है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके २६६० वर्गमील क्षेत्रफलमें ५९२७९२ मनुष्य थे, अर्थात् ५३९०६८ हिन्दू, ४९३३७ मुसलमान, ३७३६ जैन, ३८८ कृस्तान, १०८ पारसी, ९३ सिक्ख, ५९ पहाडी और ३ यहूदी। हिन्दुओंमें २०७२५३ कुन्बी ६६७८१ महारा, ५३४२१ माली, १८६३२ ब्राह्मण, १०९२२ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अकोला जिलेके अकोला कसबेमें २१४७० अकोटमें १५९९५ खामगावमें १५५९८, सेगाँवमें ११४२२ बालापुरमें १०२५० और जलगांव इत्यादि पांच कसबोंमें दस हजारसे कम मनुष्य थे।

अकोट और बालापुरमें बहुत गलीचे और पगड़ियां बनती है। इस जिलेमें ३ बड़े मेले होते हैं—फागुनमें पाटोरका मेला लगभग २० दिन, कार्त्तिकमें सोनालाका मेला ५ दिन और कार्त्तिकमें अकोटका मेला १० दिन रहता है। मेलेमें दूर दूरसे बहुत सौदागर आते हैं।

इतिहास—अठारहवीं सदीमें अकोला कसबेके पास निजाम और महाराष्ट्रोंसे लड़ाई हुई थी। सन् १७९० में कसवेकी दीवारके पास भोंसलाके सेनापतिने गाजीखाँ पिण्डारीको परास्त किया। निजामके राज्यके पिछले भागमे देशी अफसरोंके अत्याचारसे अकोला कसबेकी घटती हुई; इसके बहुतसे निवासी अमरावतीमे जा वसे। अङ्गरेजी अधिकार होनेपर इसकी उन्नति हुई है।

## बासिम।

अकोलाके रेलवे स्टेशनसे ५२ मील दक्षिण कुछ पूर्व ( २० अंश, ६ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ११ कला, पूर्व देशान्तरमें ) सूबे बरारमें जिलेका सदर स्थान बासिम एक पुराना कसबा है। अकोलाके रेलवे स्टेशनसे बासिमको पक्की सडक गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बासिम कसबेमें १२३८९ मनुष्य थे; अर्थात् ९३६३ हिन्दू, २६५६ मुसलमान, ३०० जैन, और ७० कृस्तान।

कसबेके बाहर पद्मतीर्थ नामक एक तालाव है। लोग कहते हैं कि तालावके स्थानपर पानीका छोटा कुण्ड था। जब उसमें स्नान करनेसे वासुकी नामक राजाका कुष्टरोग छूट गया, तव उसने कुण्डको बढ़ाकर तालाव बनवा दिया। बासिममे नागपुरके भोंसलेके कर्मचारी भवानीकालूका बनवाया हुआ लगभग १०० वर्षका एक तालाव और बालाजीका सुन्दर मन्दिर है। इसके आतिरिक्त बासिममें पुलिस स्टेशन, स्कूल, अस्पताल इत्यादि सरकारी इमारत हैं। बासिम कसबेसे दक्षिण २९ मीलकी पक्की सडक निजामके राज्यमे हिंगोलीकी फौजी छावनी तक गई है।

बासिम जिला—इसके उत्तर अकोला और अमरावती जिला, पूर्व यून जिला, दक्षिण पेनगङ्गा नदी, वाद हैदराबादका राज्य और पश्चिम बुलडाना जिला है। जिलेकी आधीसे अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बासिम जिलेके २९५८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३५८८८३ मनुष्य थे, अर्थात ३३५६४७ हिन्दू, १९७१५ मुसलमान, ३३६२ जैन, १०७ कृस्तान, ५१ सिक्ख और १ पारसी। हिन्दुओमें १२०३१० कुनबी, ७२३९ ब्राह्मण, १७६३ राजपूत और सेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे।

## सेगाँव।

अकोलाके रेलवे स्टेशनसे २३ मील ( नागपुरसे १८० मील ) पश्चिम सेगाँवका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरारके अकोला जिलेमें सेगाँव एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सेगाँवमें ११४२२ मनुष्य थे, अर्थात् १००८४ हिन्दू, ११५२ मुसलमान, ९९ जैन, ४३ कृस्तान, ३८ पारसी और ६ सिक्ख।

सेगाँवमें अङ्गरेजी बङ्गला, पुलिस स्टेशन, स्कूल, सराय और रूई दबानेकी कई एक कल है। सेगाँवसे ११ मील बालापुर है।

# खामगाँव।

सेगाँवसे ८ मील पश्चिम ( नागपुरसे १८८ मील ) जलम्बका रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण ८ मीलकी रेलवे शाखा खामगावको गई है। सूबे बरारके अकोला जिलेमें खामगाँव तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खामगाँवमे १५५९८ मनुष्य थे; अर्थात् ११९३२ हिन्दू, ३२५७ मुसलमान, ३३० जैन, ५२ कृस्तान, २७ पारसी, ७ एनिमिष्टिक और ३ अन्य।

खामगाँव अफीमका प्रसिद्ध स्थान है और उसमें गल्ले, विशेष करके रूईकी बड़ी सौदागरी होती है। प्रति वर्ष लाखों वैल रूई अन्यत्रसे खामगाँवमे लाई जाती है। दिसम्बरसे जुलाई तक रूईका कारबार होता है। कसबेके चारोंओर छोटी पहाड़ियाँ है। पूर्व ओर घेरा हुआ रूईका बाजार है। ४०० से अधिक सरकारी और साधारण लोगोंके कूप हैं जिनमेंसे बहुतेरे नष्ट होगये हैं। कसबेसे १½ मील दूर एक नया बहुत उत्तम तालाब बना है, इनके अलावे तहसील, एसिस्टेंट कमिश्नरकी कचहरी, सराय, बंगला, अस्पताल, पुलिस स्टेशन, कई स्कूल, रूई दबानेके धुएँकी कल, अनेक बाग और यूरोपियन सौदागरोंके सुन्दर मकान हैं।

---

# तीसरा अध्याय।



## ( बम्बई हातेमें ) भुसावल, ( हैदराबादके राज्यमें ) अजंताके गुफा मन्दिर, ( बम्बई हातेमें ) धूलिया, मनमार जंक्शन, ( हैदराबादके राज्यमें ) इलौराके गुफा, मन्दिर, रौजा, दौलताबाद, औरङ्गाबाद घृश्मेश्वर पैठन, परणीवैद्यनाथ और नागेश।

## भुसावल।

जलम्ब जंक्शनसे करीब ३५ मील पश्चिम जाने पर बरार प्रदेश छूटकर बम्बई हाता मिलजाता है। इस स्थानसे करीब २१ मील पश्चिम कुछ उत्तर ( नागपुरसे २४४ मील पश्चिम और ) भुसावलमें रेलवेका जंक्शन है। बम्बई हातेके खानदेश जिलेमे तापती नदीसे २ मील दक्षिण ( २१ अंश, १ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४७ कला, पूर्व देशान्तरमें ) तहसीलीजनका सदर स्थान भुसावल एक कसबा है, जो रेलवे खुलनेके बाद प्रसिद्ध हुआ है। तापती पर दृढ और सुन्दर रेलवेका पुल बना है भुसावलमें लगभग [illegible] आदमी, जिनमेंसे लगभग १०० यूरोपियन और यूरेशियन हैं, रेलवेके कारखानेमें काम करते हैं और यूरोपियन लोग बहुत रहते हैं। रेलवे फाटकसे बाहर एक बड़ी [illegible] है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भुसावलमें १३१६९ मनुष्य थे, अर्थात् ९५१३ हिन्दू, २२९८ मुसलमान, ९१७ कृस्तान, १८५ जैन, १८३ पारसी, ६२ यहूदी और ११ दूसरे।

रेलवे लाइनकी एक ओर रेलवे सम्बन्धी इमारतें और दूसरी ओर भुसावल कसबा है। रेलवेके उत्तर सदरालाकी कचहरी, मामलतदारका आफिस, रेलवे मजिष्ट्रका आफिस. मातहत जेलखाना, स्कूल, टेलीग्राफ आफिस इत्यादि इमारतें है। जलकल द्वारा तापती नदीसे जल आता है। कई एक सुन्दर बाग लगे हैं।

भुसावलमे ग्रेटइंडियन पेनिनसुला रेलवेका बडा जंक्शन है। यहाँसे २७६ मील दक्षिण पश्चिम बाम्बे, ३४० मील पूर्वोत्तर जबलपुर और २४४ मील नागपुर है। इस रेलवेके तीसरे दर्जेके पसेंजर और डाकगाडीका महसूल प्रति मील २¾ पाई लगता है।

(१) भुसावलसे दक्षिण-पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१५ जलगाँव ❊

४४ पचौरा।

७२ चालीसगाँव।

९८ नन्दगाँव।

११४ मनमार जक्शन।

१३० लासलगाँव।

१६० नासिक।

१६३ देवलाली।

१९१ इगतपुरी।

२०१ कसारा।

२४३ कल्यान जक्शन।

२५५ थाना।

२५९ भण्डूप।

२७० दादर जंक्शन।

२७६ बम्बई विक्टोरियाटर्मिनस।

मनमार जंक्शनसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर १४६ मील धोंद जंक्शन।

धोंद जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ११७ मील शोलापुर १२६ मील होतगी जंक्शन, १८७ मील गुलवर्गा, २१० मील वाडी जंक्शन और २७७ मील रायचुर जंक्शन और धोंदसे पश्चिमोत्तर ४८ मील पूना, १३४ मील कल्याण जंक्शन और १६७ मील बम्बई।

कल्यान जक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४ मील अमरनाथ, २० मील नेरल, २९ मील करजत ४५ मील खंडाला, ४७ मील लोन वली ५२ मील कारली, ६३ मील धाड़गाँव, ७६ मील चिचवाड ८३ मील किरकी और ८६ मील पूना है।

दादर जंक्शनसे उत्तर २६ मील बेसिनरोड, १५९ मील सूरत, १९६ मील बरौच २४० मील बरोदारोड २६२ मील आनन्द जंक्शन और ३०२ मील अहमदाबाद जक्शन है।

(२) भुसावलसे पूर्वोत्तरकी लाइनपर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३४ बुरहानपुर।

४६ चाँदनी।

७७ खँडवा जंक्शन।

१४० हरदा।

१६६ सिउनी।

❊ जलगावसे पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे लाइन सूरतको गई है।

१८७ इटारसी जंक्शन।
२६० गडरवाड़ा जंक्शन।
२८८ नरसिंहपुर।
३४० जबलपुर।

खँडवा जंक्शनसे अधिक उत्तर कम पश्चिम राजपूताना मालवा रेलवे पर ३७ मील मोरतक्का ( मोरतक्कासे ओंकारनाथ ७ मील है ) ७३ मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, १११ मील फतेहाबाद जंक्शन ( फतेहाबादसे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन ) १६० मील रतलाम जंक्शन १८१ मील जावरा, २४३ मील नीमच और २७७ मील चित्तौरगढ़।

इटारसी जंक्शनसे उत्तरकी ओर 'इंडियन मिडलेंड रेलवे' पर ११ मील हुशंगाबाद, ५७ मील भोपाल जंक्शन, ९० मील भिलसा, १४३ मील बीना जंक्शन, १७९ मील ललितपुर और २३८ मील झाँसी जंक्शन है। गाडरवाड़ा जंक्शनसे १२ मील दक्षिण पूर्व मोपानी।

जबलपुरसे पूर्वोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे' पर ५७ मील कटनी जंक्शन' १६६ मील मानिकपुर जंक्शन; और २२४ मील नयनी जंक्शन है।

( ३ ) भुसावलसे पूर्वकी ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
५६ जलम्ब जंक्शन।
६४ सेगाँव।
८७ अकोला।
१३६ बड़नेरा जंक्शन।
१९५ बरधा जंक्शन।
४४८ नागपुर।

जलम्ब जंक्शनसे ८ मील दक्षिण खामगाँव।

बडनेरा जंक्शनसे ६ मील उत्तर अमरावती।

बरधा जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण २१ मील हिङ्गनघाट और ४५ मील बरोरा है।

# अजन्ताके गुफा मन्दिर।

भुसावल जंक्शनसे ४४ मील पश्चिम-दक्षिण रेलवेका स्टेशन पचौरा है, जहाँसे ३४ मील दक्षिण( २० अंश, ३२ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४८ कला पूर्व देशान्तरमें ) निजामके राज्यमें अजंता एक बस्ती है, जिससे ४ मील पश्चिमोत्तर अजन्ताकी प्रसिद्ध बौद्ध गुफा है। रास्ता जंगलका है। पचौरासे फरदापुर तक, जहां एक मुसाफिरखाना है, बलगाड़ीका मार्ग और उससे आगे ३१/३ मील घोडाका रास्ता है। बगोरा नदी कई वार पार उतरना होता है। अजन्तासे ५५ मील दक्षिण-पश्चिम औरंगाबाद है।

अजन्ताके गुफा मन्दिरों और मठोंसे अशोकके बादसे बौद्ध लोगोंके ख्देर जानेके समय तकका बौद्ध कारीगरीके इतिहास जान पड़ते हैं; अर्थात् सन ईस्वीसे लगभग २०० वर्ष पहिलेसे सन ६०० ईस्वीतकके वे बने हुए है।

करीब २५० फीट ऊंचे चट्टानकी एक दीवारसे जो आधे गोलाकारकी शकलमें है, पानीकी एक नालीके, जिसके पिछले छोरके पास ७ कुण्डोंका बड़ा झरना है, ३५ फीटसे १०? फीट [illegible] ऊपर करीब [illegible] मील पूर्वसे पश्चिमको छोटी बड़ी २७ गुफा बनी हुई है, जिनमेंसे [illegible] [illegible] बौद्ध मठ और धर्मशालाके साथ मन्दिर और ५ चैत्य अर्थात बौद्ध मन्दिर

निशन पहाडी चट्टानमें पत्थर खोदकर अर्थात् भीतरसे पत्थर निकालकर बनाये हुए हैं। इनमेसे ५ बौद्ध मन्दिरोंकी लम्बाई उनकी चौडाईसे लगभग दूनी अधिक है। जो सबसे बड़ा है वह ९४ फीट लम्बा और ४१ फीट चौडा है। सम्पूर्ण विहार अर्थात् बौद्ध मठ साधारण प्रकारसे मोरब्बा शकलके है। उनके भीतर खम्भोकी पंक्तियाँ बनी हैं। इनमेसे बड़ी बड़ी गुफाओंमे है मध्यमे एक बडा कमरा है। उसके आगे एक दालान, जिसके दोनो बगलोंमे एक एक कोठरी हैं, पीछे एक छोटे कमरेमें तख्तपर बैठी हुई बुद्धदेवकी मूर्त्ति और तीनो बगलोंमे बौद्ध सन्तोके रहनेकी छोटी कोठरियॉ बनी हैं। प्रायः सब गुफामन्दिर रंगसे चित्रित हैं। बाहर ८ शिला लेख और भीतर लगभग १६ रंगके लेख संस्कृत और मागधी भाषामें हैं। इनमेसे अनेक बहुत छोटे है और अनेकका काम पूरा नहीं हुआ है। चन्द प्रधान गुफाओंके वृत्तान्त नीचे लिखे जाते है।

एक पगडण्डी, जिससे गुफाओके पास जाना होता है, सातवीं गुफाके पास पहुंचो है, जहॉसे रास्ते पूर्व और पश्चिम दोनो तरफ ऊपर गुफाओंके पास गये है।

सबसे पूर्व नम्बर १ एक विहार गुफा है। उसकी बनावट उत्तम है। उसमें बहुतेरे हाथी घोड़े मनुष्य और शिकारी लोग पत्थरके बने है। उसका बीचवाला कमरा हरतरफसे ६४ फीट लम्बा है, जिसमे २० पाये बने है। उसके पीछेकी तरफ ४ और प्रत्येक बगलोंमे ५ छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। एक स्थानमे उपदेश करते हुए बुद्धकी मूर्त्ति है।

नम्बर २–यह एक विहार गुफा है। वरण्डेमे २ एबादतखाना हैं। बुद्ध अपने बाये हाथकी अंगुलीको दहिने हाथकी अंगुलियोंसे पकडेहुए हैं। गुफाओंकी दीवारोमे रामकी लडाई, बहुत देवता, स्त्री पुरुष आदिकी बहुतसी मूर्त्तियाँ पत्थरमें बनी हैं।

नम्बर ६–यह विहार गुफा दो मञ्जिला होनेसे प्रसिद्ध है। इसकी सीढ़ियॉ टूट गई हैं, इससे ऊपरकी मञ्जिलमें कोई नहीं जाता। भील लुटेरे बहुत दिनों तक यहॉ रहते थे। उन्होने इसकी बडी हानि की।

नं० ७ विहार गुफा—इसमें एक बडा वरण्डा है, जिसके पीछे दो कोठरियॉ आगे तरफ २ पेशगाह और दोनो अखीरमें २ एबादत खाने है। देवढ़ीमे कमल पर बैठी हुई ५ सूरतोकी ४ पंक्तियाँ और ध्यान करते हुए बुद्धकी मूर्त्तियोंका एक कत्तार है। दहिने तरफ इसी तरहकी बुद्धकी २ मूर्त्तियाँ हैं। मन्दिरमें दोनो तरफ दो दो बडी और एक एक छोटी और दो दो पंखोंको लिये हुई मूर्त्तियॉ हैं।

नं० १० एक दगोबा—बुद्धकी मूर्त्ति दीवारसे अलग है। छत पहलूदार है। गुफाके भीतरी चेहरेके ऊपर सन् ई० से १०० या २०० वर्ष पहिलेका लाट अक्षरमें एक शिलालेख है।

नं० १६ और १७—ये इस सिलसिलेके सबसे उत्तम विहार हैं। बाहरी द्वारपर २ लम्बे शिलालेख हैं। ये गुफाये चौथी सदीकी अनुमान की जाती हैं। बडे कमरेमे लडाई जाहिर करते हुए रंगके उत्तम चित्र हैं। नं० १७ की गुफा १६ वीं गुफाके समान है, परंतु यह उतना ऊंचा नहीं है और इसकी कारीगरीभी उसके समान नहीं है।

नं० २६ चैत्य गुफा—यह इस सिलसिलेमें सबसे नयी है। इसकी संग तराशी सबसे अधिक और बारीक है। दगोबाक आगे अपना चरण नीचे किये हुए बुद्ध देव बैठे हैं।

बुद्ध और उनके चेलोंकी मूर्त्तियोंकी संग तराशीसे दीवार छिपी हुई है। जिस सकलमें बौद्ध लोग निर्वाणलेनेको उद्यत होते है, उसी सकलमे गुफाके दक्षिणके बाजूमे २३ फीट लम्बी एक बौद्ध मूर्त्ति है। ऊपर बहुतेरे फिरिस्ते है। बाहरी तरफ २ लेख है.-एक फाटकके बॉये बुद्धकी सूरतके नीचे और दूसरा दहिने तरफ छठवी सदीकी भाषामें।

## धूलिया।

पचॉराके रेलवे स्टेशनसे २८ मील ( भुसावलसे ७२ मील ) दक्षिण-पश्चिम चालीसगॉवका रेलवे स्टेशन है। चालीसगॉवसे ३० मील उत्तर कुछ पश्चिम ( २० अंश,५४ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ४६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे ) बम्बई हातेके मध्य विभागके खान देश जिलेमे एक छोटी नदीके दक्षिण किनारेपर खानदेश जिलेका सदर स्थान धूलिया एक कसबा है। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धूलियामें २१८८० मनुष्य थे, अर्थात् १५९९१ हिन्दू, ४९०० मुसलमान, ६५८ जैन, २३३ एनिमिष्टिक,४९ कृस्तान, ४५ पारसी और ४ यहूदी।

धूलिया कसबा दो भागोंमे बटा है,—नया और पुराना धूलिया। नया धूलियामें सडकें अच्छी है और मकान अच्छे अच्छे बने है। नदीके ऊपर पत्थरका पुल बना है। धूलियामें सरकारी कचहरियॉ, जेलखाना, टेलीग्राफ आफिस, रुई दबानेके लिये एंजिनवाला एक मिल अर्थात् कल कारखाना, २ अस्पताल और बहुतेरे स्कूल हैं। वहॉं अन्न रुई आदि वस्तुओंकी बड़ी तिजारत होती है। ऊनी कपडा और पगडी बहुत तैयार होती हैं। कसबेके दक्षिण-पश्चिम फौजी लाइन है और ६ मील दूर एक ऊॅची पहाडीके सिरपर लालिङ्गका पुराना किला है। धूलियामें प्रति गुरवारको सप्ताहिक बडा बाजार लगता है, जिसमे लगभग ५००० की वस्तु बिकती है। धूलियासे सडक द्वारा ६४ मील पूर्व भुसावल है।

खानदेश जिला—इसके पूर्व सूबा बरार और मध्य देशका निमार जिला, दक्षिण सातमाला या अजन्ता पहाडी, दक्षिण-पश्चिम नासिक जिला पश्चिम बडोदाका राज्य और उत्तर सतपुडा पहाडी और नर्मदा नदी है। तापती नदी खानदेश जिलेके अग्निकोणसे प्रवेश करके जिलेमे पश्चिमोत्तरको बहती है, जिससे यह जिला दो भागोंमे विभक्त हो गया है। इनमेसे दक्षिण वाले बडे भागमें बडे बडे कसबे और घनी बस्तियॉ हैं और उपजाऊ बडा मैदान है। उत्तर सतपुडा पहाडीकी ओर भूमि ऊंची होती गई है। मध्यमें और पूर्वकी नीची पहाडियोंके चन्द सिलसिलोको छोडकर देश प्राय बराबर है उत्तर और पश्चिम ओर ऊंचा मैदान है। देश कठिन है। जंगलमे भील बहुत बसते हैं, जो जङ्गलके फलोंको खाकर और बनकी लकडी बेचकर अपना निर्वाह करते है। बहुतेरे भील सतपुडा पहाडीके पाद-मूलके निकट बस्तियोंमे और बहुतेरे सातमाला पहाडीके नीचे बसते हैं। इनमेसे चन्द अब तिजारत करते है। तापती नदीका किनारा बडा ऊंचा है। वर्षा कालमें वह विना नावके पार होने लायक नहीं रहती। जिसमें भुसावलके पास उसपर पुल है। जिलेमें जङ्गल और जङ्गली जानवर बहुत है। अब बाघ और तेन्दुये कम देखनेमें आते है।

---

* [illegible] २० [illegible] है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खानदेश जिलेके ९९४४ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२३७२३१ मनुष्य थे, अर्थात् ९५८१२८ हिन्दू, १७५३४९ भील, ९२२९७ मुसलमान, १००१३ जैन, ११४६ क्रस्तान, १५८ पारसी, ८८ यहूदी, ४३ सिक्ख, ८ बौद्ध और १ दूसरे। हिन्दुओंमें ३३७८१६ कुन्बी, ८५६७४ महारा, ४९१५३ माली, ५८३०७ कोली, ४७७४३ धांगर, ४५८६९ राजपूत, ४०४५९ ब्राह्मण, २८५७९ वनजारा, २३१७८ तेली, २०१०२ सोनार और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खानदेश जिलेके कसबे धूलियामें २१८८०, धोपडामें १५६५५, धरनगाँवमे १५०७२, जलगाँवमे १४६७२, परोलामें १४४७८, भुसावलमें १३१६९, एराण्डलमे १२५५७, नसीरावादमें ११४७२, इयावलमे १०८०० और शेरपुरमें १०१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—खानदेश राजपूतोंके बाद अन्ध्रभृत्य वंशक राजाओंके अधिकारमे हुआ, जिनके बादशाहवंशके राजाओंने इसपर हुकूमतकी उसके पश्चात् पाँचवीं सदीमें इसपर सालुक्य वंशका अधिकार हुआ। कई एक मालिकके आधीन होनेके बाद सन् १३२३ से सन् १३७० तक यह तुगलकके अधिकारमें रहा। सन् १३७० में यह अरब वालोंको आधीन हो गया। उन्हीके राज्यके समय धूलियाका किला बना। सन् १५९९ में दिल्लीके बादशाह अकबरने अपनी भारी फौजके साथ स्वय आकर असीरगढ़के किलेको ले लिया और वहाँके राजा बहादुरखाँको ग्वालियरमे भेजकर खानदेशको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १७६० में महाराष्ट्रोंने मुसलमानोंसे असीरगढ़का किला और खानदेश ले लिया। सन् १८०३ में हुलकरकी लूटपाटसे और उस सालके अकालसे दुःखी हो धूलियाके निवासियोंने कसबेको, जो एक छोटा गाँव था, छोड दिया, किन्तु पेशवाके आधीनके कर्मचारी बालाजी बलवन्तने दूसरे वर्ष धूलियाको फिर बसाया और धूलियामें अपना सदर स्थान बनाया।

सन् १८१८ में खानदेशपर अङ्गरेजी अधिकार होनेपर खानदेश एक नया जिला बनाया गया। धूलिया कसबा जिलेका सदर स्थान हुआ और वासिन्दे सुखी हुए। तबसे कसबेकी उन्नति होने लगी। सन् १८७२ की बाढ़से धूलिया कसबेकी बड़ी हानी हुई, बहुतेरे मकान गिर गये और बहुतेरे माल बह गये।

## मनमार जंक्शन।

चालीसगाँवके रेलवे स्टेशनसे २६ मील दक्षिण-पश्चिम नन्दगाँवका रेलवे स्टेशन और नन्दगाँवसे १६ मील पश्चिम ( भुसावल जंक्शनसे ११४ मील दक्षिण पश्चिम ) बम्बई हातेमें धोंद और मनमार स्टेट रेलवेका जंक्शन मनमार है *। उससे ४ मील दक्षिण एक किला उजाड पडी है और ७ साधारण बौद्ध गुफाये है। रेलवे स्टेशन और गुफाओंके बीचमें रामगुलनी नामक एक पहाडी है, जिसके सिरेपर ८० या ९० फीट ऊँचा चट्टानका एक अपूर्व स्वाभाविक मीनार है। मनमारके स्टेशनसे ६ मील दक्षिण अगस्त्य पहाडी पर

* एक रेलवे लाइन हालमें मनमारसे पूर्व थोडा दक्षिण हैदराबादको गईहै। उस पर ६३ मील दौलताबाद ७१ मील औरंगाबाद, ११० मील जालना, १८१ मील प्रभानी, १९९ मील पुरना २१८ मील नादेड. २८६ मील इडुर, ३१८ मील कामरदी, ३७७ मील बलारम और ३८६ मील हैदराबादका स्टेशन है।

अगस्त्यमुनि और रामलक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ है। लोग कहते है कि इसी जगह वन वासके समय रामचन्द्र अगस्त्यजीसे मिले थे।

मनमारसे दक्षिण-पश्चिम ४६ मील नासिक और १६२ मील बम्बई है। द्वारिकाके यात्री बम्बईमें आगबोटपर चढ़कर समुद्रके मार्गसे द्वारिका जाते है। मनमारसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर और १४६ मील धोंद जंक्शन है। मदरास, बालाजी, कांची, रंगजी, मदुरा, रामेश्वर इत्यादिके जानेवाले लोग मनमारसे अहमदनगर और धोंद होकर जाते है। मैं मनमारसे लौटकर उससे १६ मील पूर्वके नन्दगॉवके स्टेशनमें रेलगाडीसे उतरकर इलोरा औरंगाबाद, पैठन इत्यादि स्थानोमे होकर अहमदनगरमें रेलगाड़ीपर चढ़ा।

# इलोराके गुफा मन्दिर।

चालीसगॉवके स्टेशनसे २६ मील ( भुसावलसे ९८ मील ) दक्षिण-पश्चिम और मनमार जंक्शनसे १६ मील पूर्व बम्बई हातेमें नन्दगॉवका रेलवे-स्टेशन है, जिससे दक्षिण पूर्व ५६ मीलकी सडक औरंगाबादको गई है। छोटा तांगा नव दश घण्टेमे औरंगाबाद पहुँच जाता है। नन्दगॉवमे किरायेपर तांगा मिलते हैं। नन्दगॉवसे ३६ मील देवगॉव है, जिसके ४½ मील आगे औरंगाबादकी सड़क छोड कर, वहॉसे ४½ मील दूसरी सडक द्वारा जानेपर हैदराबादके राज्यमें ( २० अंश, २ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १३ कला पूर्व देशान्तरमे ) इलोरा गॉव मिलता है, जिसमें एक मुसलमानी दरगाह है। इलोरासे २ मील रोजा, ७ मील दक्षिण-पूर्व दौलताबाद * और १४ मील दक्षिण-पूर्व औरङ्गाबाद है। नन्दगॉवसे २६ मील पीछे चालीसगॉवके रेलवे स्टेशनसे इलोरा करीब ४५ मील है, परन्तु वहॉसे गाडीकी सडक नही है।

इलोरा गॉव गुफामन्दिरोंके लिये बहुतही प्रसिद्ध है। ऐसा मनोहर और आश्चर्यजनक शिल्पविद्याका स्मारक चिह्न, जो पहाडसे पत्थर काटकर बनाये गये हैं, भारतवर्षमे सहसा देख नही पडता। हिंदुस्तानके चट्टानोंमें बने हुए गुफामन्दिर ईशासे २५० वर्ष पहिलेसे ८०० वर्ष पीछे तकके है। सबसे प्रथम बौद्धोने उसके पीछे हिन्दुओंने और हिन्दुओंके पश्चात जैनोने गुफामन्दिर बनवाये, जिनमे बौद्धोंके अधिक हैं। पश्चिमी भारतमें ५० से अधिक झुण्डोंमे छोटे बडे ९०० से अधिक गुफामन्दिर है। इनमे बम्बई हाते और इसके आसपासमे बहुत है। इनके अलावे अप्रसिद्ध गुफा मन्दिरोंके झुण्ड उडीसा, सिंध, पञ्जाब और बलुचिस्तानमे है।

इलोरा गॉवके पास अर्द्धचन्द्राकारकी शकलकी पहाडीमें उत्तरसे दक्षिण १ ३/८ मील तक गुफा मन्दिर फैले हुए है। अजन्ताके गुफामन्दिर खडी पहाडीमें बने है, किन्तु इलोराके गुफामन्दिर पहाडीके ढालुए बगलमे है, इससे प्राय सम्पूर्ण गुफाओंके आगे आंगन बने है बहुतोंके आगे एक दीवार है और उनके भीतर जानेके लिये एक एक रास्ता बना है। आगे दीवार होनेसे बाहरसे गुफामन्दिर नही देख पडते है।

---

* [illegible] दौलताबाद [illegible] निकले है। [illegible] पूर्व-[illegible]

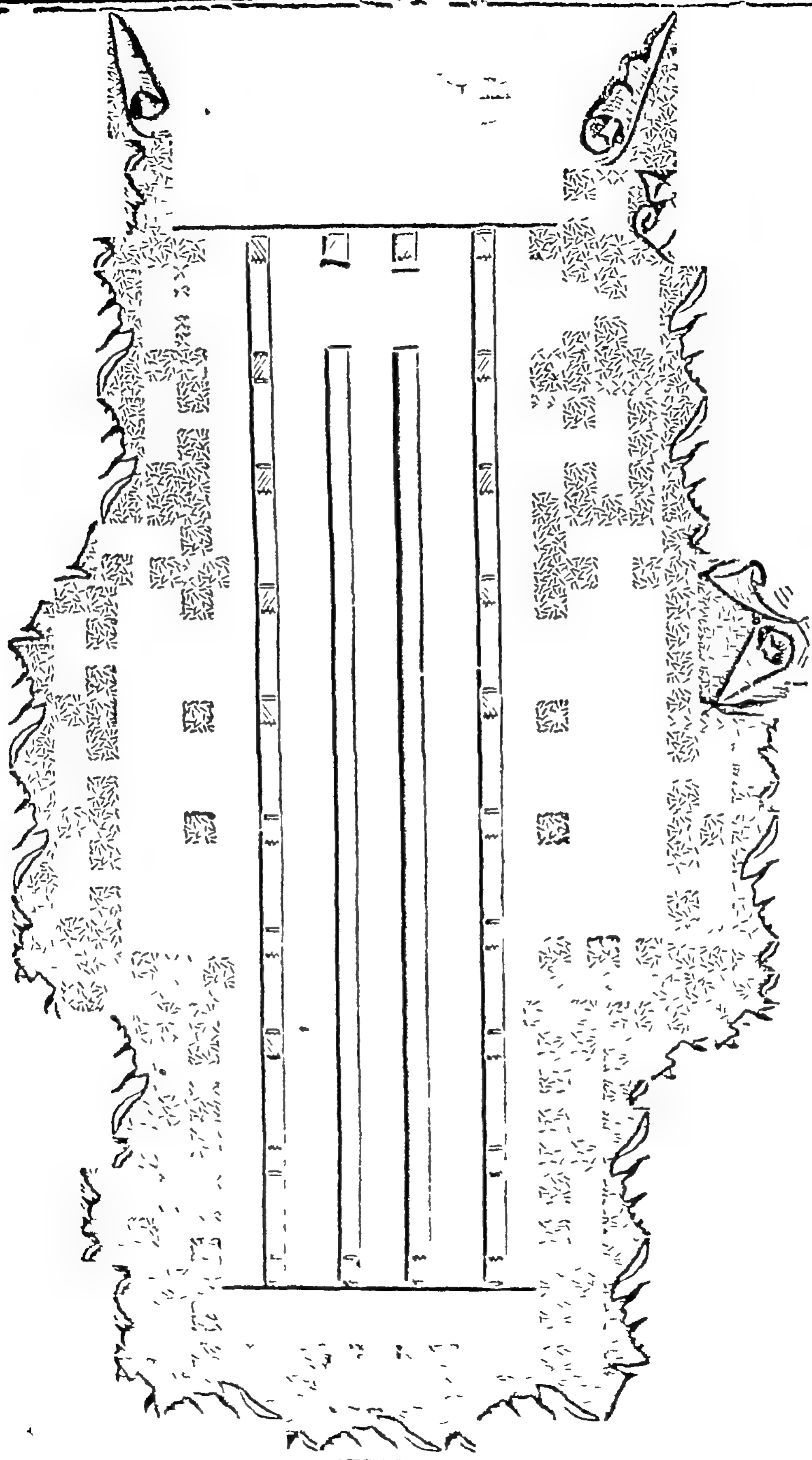
यहाँ बौद्ध, हिन्दू और जैनगुफाओंके अलग अलग सिलसिले हैं,—दक्षिण तरफ १२ बौद्ध गुफायें; मध्यमें गुफाओंके ऊपरवाले छोटे गुफाओंको छोडकर जो १७ से अधिक है, १७ हिन्दू गुफाये और उत्तरमें ५ जैन गुफाये हैं गुफाओंके आगे बडे बडे झरने और पहाडीकी नेवपर झाड़ी और वृक्ष हैं।

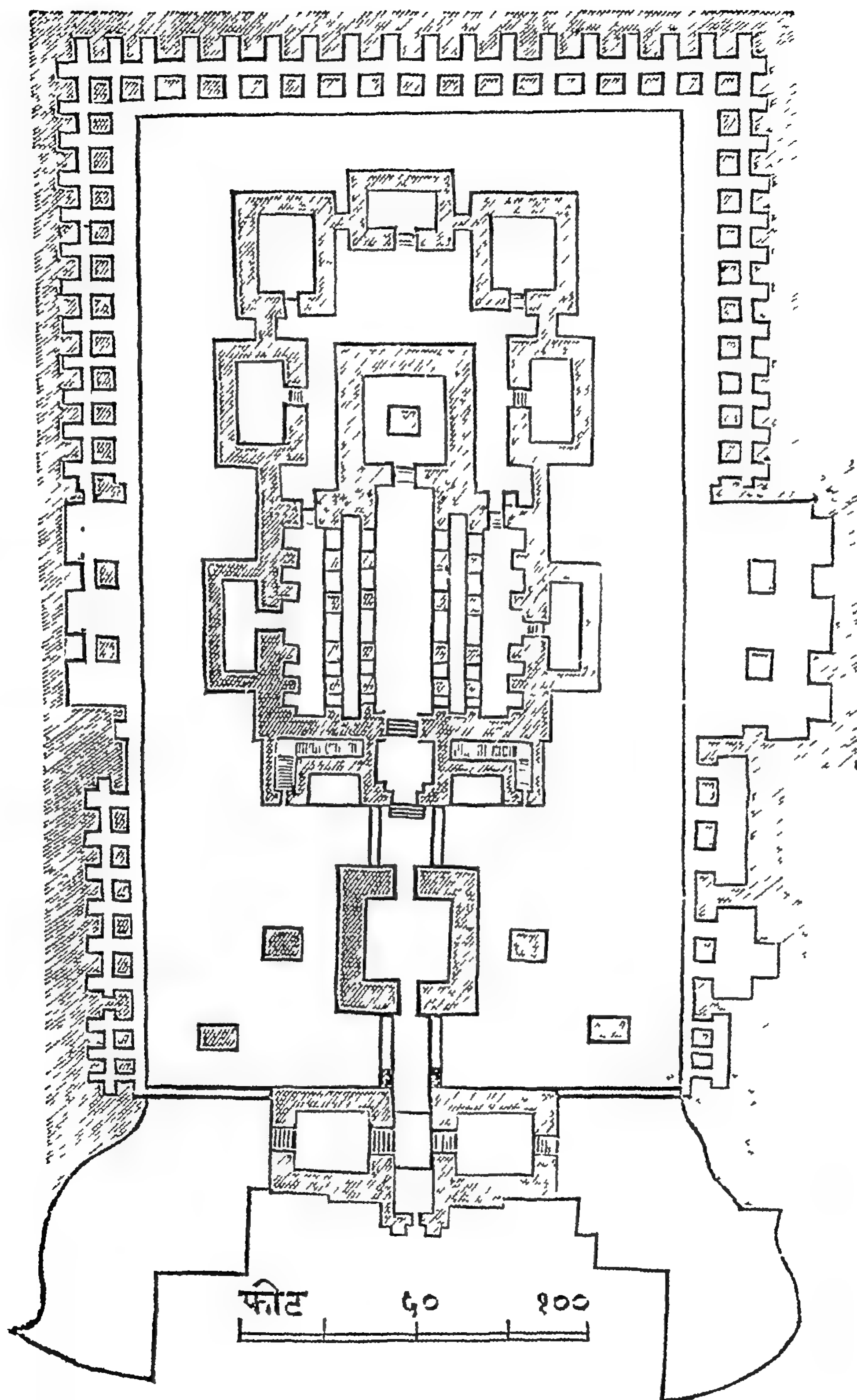
बौद्ध गुफाओंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध ये है;—पहली धारवार गुफा, जो सबसे अधिक पुरानी है, दूसरी विश्वकर्माकी चैत्य गुफा, जो ८५ फीट लम्बी है, तीसरी दो मञ्जिली गुफा और चौथी तीन तलवाली गुफा। विश्वकर्माकी सभामे एक बहुत बडी बुद्धकी मूर्ति है, जिसको वहाँके लोग विश्वकर्मा कहते है।

सम्पूर्ण गुफाओमे प्रधान, सबसे अधिक उत्तम कैलास नामक गुफामन्दिर है। कहा जाता है कि ८ वीं सदीमें सूबेबरारके एलिचपुरके राजा यदुने, जिसने इलोरा नगरको कायम किया, यहाँ कैलास आदि गुफामन्दिर बनाये। यह बाहरसे मालूम होता है कि मैदानमे बना हुआ एक मन्दिर है। भीतरके समान इसके बाहरसे भी पत्थर काटकर निकाल दिया गया है। भीतर कई गुफा मन्दिर हैं, जिनमें आठ(दश फीट ऊँची बड़ी बडी मूर्तियाँ बनी हुई है। दीवारोंमें चारों तरफ जिन्दे जानवरोंके समान बडे बडे हाथी. सिंह, घड़ियाल, हरिन, हंस और बैल चट्टान काटकर बनाये गये है,—पहाड़ीके ढालू बगल पर १०० फीट गहड़ा १५० फीट चौडा और २७० फीट लम्बा आँगनकी शकलका खन्दक है, जिसके बीचमें १६४ फीट पूर्वसे पश्चिमको लम्बा और १०९ फीट उत्तरसे दक्षिणको चौडा और लगभग ९० फीट ऊँचा खास कैलाश मन्दिर खडा है। आंगनके आगे एक परदा छोड दिया गया है, जिसके बाहरी बगल पर शिव, विष्णु आदिकी बहुत सी बडी बड़ी मूर्तियाँ, भीतरी बगलपर कोठरियाँ और मध्यमे रास्ता है। जिसके दोनों तरफ दो कोठरियां हैं। उससे आगे जानेपर कमलोपर हाथियोंके साथ लक्ष्मीकी मूर्ति देख पड़ती है। दहिने और बायें आंगनके आगेका हिस्सा चन्द फीट नीचा है। उसके उत्तर और दक्षिणके अखीरके पास जिन्दे हाथीके समान दो बडे हाथी खड़े हैं। फिर पूर्व जाकर चन्द सीढ़ियोंके ऊपर चढ़ने पर मन्दिरका एक बडा कमरा मिलता है जिससे आगे पुल द्वारा चौखटा मण्डपमें जाना होता है, जिसमे नन्दी बैल है, इसमे दो दरवाजे और दो खिडिकियाँ हैं। खिडिकियोंके सामने मण्डपके दोनों तरफ ३८ फीट ऊँचे दो ध्वजास्तम्भ खडे हैं, जिनके सिरोंपर पहले सिंह थे। नन्दीसे आगे एक दूसरा पुल लाघने पर एक बडा कमरा मिलता है, जिसके दरवाजे पर दो बडे द्वारपाल बने है। आखीरके कमरेमें जिसमे उत्तम सङ्गतरासीका काम है, शिवलिङ्ग है।

एक बरंडेमे देवताओंके ४३ झुण्ड हैं, जिससे पुराणोंकी कथा और लीला जाहिर होती है। पहली हिन्दू गुफाको रावणकी खाई कहते हैं जिसमे दुर्गा, लक्ष्मी, शिव, पार्वती आदिकी ऐतिहासिक कर्तव्यताकी बहुत सी मूर्तियाँ सङ्गतरासीसे बनी हुई है।

हिन्दू गुफाओमे दश अवतारकी गुफा सब गुफाओंसे पुरानी है, उसका बडा कमरा १०३ फीट लम्बा और ४५ फीट चौडा है, जिसके भीतर ४६ पाये बने हैं।


धारवाड़ा




कैलास

हिन्दू गुफा मन्दिरोंसे करीब १ मील ( अखीर ) उत्तर जैन गुफाओंको एक पगडण्डी गई है; जहाँ जगन्नाथसभा और इन्द्रसभा बनी है। वहाँ चन्द छोटी छोटी कोठरियाँ और अनेक छोटी तथा एक बडी जैन प्रतिमा है।

इनके अतिरिक्त वहाँ आदिनाथ सभा, परशुराम सभा, लंका, जनवासा, तीनलोक, इत्यादि बहुतेरे स्थान बने हुए है। इलोराके सम्पूर्ण मंदिर एक उसी पत्थरके पहाड़में पत्थर खोदकर बनाये गये हैं अर्थात् उसमें कोई पत्थर अथवा ईटा नहीं जोडे गये है।

## रौजा।

इलोराके गुफाओंसे २ मील दूर ( दौलताबादसे ६ मील पश्चिमोत्तर हैदराबादके राज्यमें २२०० आदमियोकी बस्ती रौजा है; जिसके चारोंतरफ औरङ्गजेबकी बनवाई हुई पत्थरकी ऊँची दीवार है। सडकके दोनो तरफ बहुतेरे स्थानोंमें पुरानी तबाही हालतमें मसजिदें और कबरें पाई जाती हैं।

रोजाका आब हवा खुशनुमा और मातदिल है। गरमीके महीनोमे स्वास्थ्यके लिये यहां लोग आते है। यह दक्षिणके मुसल्मानोका करबला ( पवित्र स्थान ) है और यहा बहुतेरे प्रसिद्ध मुसलमानोके कबरस्थान होनेसे यह मशहूर है। यहाँ औरङ्गजेब बादशाह, उसका लडका आजिमशाह, हैदराबाद खान्दानके कायम करनेवाला आसफजाह, उसका दूसरा लडका नासिरजङ्ग, पिछला निजामशाही बादशाहका मन्त्री मलिकअम्बर, गोलकुण्डाका कैदी राजा थानाशाहकी कबरें है।

औरङ्गजेबका मकबरा—रौजा बस्तीके उत्तर और दक्षिणके फाटकके बीचमें औरङ्गजेबका मकबरा है। पहले गुम्बजदार पेशगाह और फाटकका रास्ता मिलता है, जिसको लगभग सन् १७६० में औरङ्गाबादकी एक वेश्याने बनवाया उसके भीतर चौगान अर्थात् आंगन है, जिसके चारोंओरकी इमारतोंमेंसे चन्दमें मोसाफिर टिकते है और एकमें स्कूल है। दक्षिण तरफ मध्यमे एक छोटा नौबतखाना और पश्चिम तरफ एक बडी मसजिद है, मसजिदके उत्तर एक फाटक है, जिससे भीतरके आँगनमें जाना होता है। आँगनके दक्षिण–पूर्वके कोनेके पास एक वृक्षके नीचे १ फीट ऊँचे पत्थरके चबूतरेपर ५ फीट ऊँची मार्बुलकी झंझरीसे घेरी हुई दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबकी कबर है। औरङ्गजेब सन् १६५८ में बादशाही तख्तपर बैठा और सन १७०७ की फरवरीमें अहमदनगरमें मरगया।

दूसरी कबरें—औरङ्गजेबकी कबरके पूर्व मार्बुलसे बना हुआ एक छोटा चौखूटा घेरा है जिसमें एक फकीरकी लडकीकी, औरङ्गजेबके दूसरे लडके आजिमशाहकी और आजिमशाहकी बीबी कबर है। इस घेरे और औरङ्गजेबकी कबरके बीचमें सैयद जैनुद्दीनका मकबरा है जिसके दरवाजेपर चांदीका पत्तर जडा है।

औरङ्गजेब और आजिमशाहकी कबरोंके सामने हैदराबादके पहले निजाम आसिफजाहका सुन्दर मकबरा है। यहां एक चौगानके चारो तरफ बरण्डे और पूर्व एक नौबतखाना है और पश्चिमकी इमारतमें कुरानकी शिक्षा होती है। इसके दरवाजेमें पश्चिमके दूसरे आँगनमें जाना होता है जिसमें बहुतसी कबरें है। इसके पूर्वमुखकी इमारतमें, जिसमें चारोंतरफ लाल पत्थरकी जालीदार टट्टी है, आसफजाह और उसकी एक बीबी कबर है। वहाँ सैयद [illegible] बुरहानुद्दीन एक प्रसिद्ध फकीरकी, जो सन् १३४४ ई० में यहाँ मरा था, कबर है।

हैदराबादके
नैनानगरसे )
सन् १८८१
जिसको देखनेके
लिए है।
मस्जिद बना हुआ
३० फीट चौड़ी
फाटकके पास
पुराना हिन्दू
एक रास्ता
है जिसको
चारो तरफ
अनुसार यह

सुरंग व्यास
और तीसरी
२०० सिपाही
समाधि
मन्दिरमें

हुआ, देवगि-
। वह १५०००
चांदी और
अपने आधीन
हुआ और कैदी
सिर दे दिया।
जनरल काफूरने
। सन् १३३८ में
राज्यकी राजधानी
८०० मील दूर देव
दौलताबाद रक्खा
राजा, उसके पीछे
दौलताबादके शासन
ने ६३ मी

हुए। सन् १७०७ में औरङ्गजेवके मरनेके पीछे दौलतावादका किला निजाम घरानेके नियत करने वाले आसफजाहके हाथमें आया, जिनके वंशधरोके अधिकारमे यह अव तक है।

## औरंगावाद।

दौलतावादके किलेसे पूर्व-दक्षिण औरङ्गावाद तक ८ मीलकी पक्की सड़क है। इलोरासे १४ मील और नन्दगॉवके रेलवे स्टेशनसे ५६ मील पूर्व-दक्षिण हैदरावादके राज्यमें जिलेका सदर स्थान औरङ्गावाद एक कसवा है, जो पहले किरकी नामसे मशहूर था *। सन् १६१० मे मलिकअम्बरने इसको कायम किया। औरङ्गावादसे ६८ मील दक्षिण-पश्चिम अहमदनगर है

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय औरङ्गावाद और उसकी छावनीमे ३३८८७ मनुष्य थे, अर्थात् १७१८६ पुरुष और १६७०१ स्त्रियॉ। इनमें १८९०७ हिन्दू, १४०४१ मुसलमान, ५११ जैन, ३१६ कृस्तान, ६० पारसी, और ५२ सिक्ख थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह हैदरावादके राज्यमे दूसरा शहर है।

कसवेके चारोओर पक्की दीवार, जिसके कोनोपर टावर है, वनी हुई है, जिसके भीतर वहुतेरी इमारतोके खण्डहर है। औरङ्गजेवका वनवाया हुआ महल उजड़ गया है। कसवेके पास एक छोटी नदी वहती है। कसवेसे पूर्व चालीस पचास छोटे वड़े मकवरे और पश्चिम फौजी छावनी है। औरङ्गावादमें हैदरावाद राज्यका सदर तालुकेदार रहता है। गेंहू, कपास वरतन इत्यादिकी तिजारत होती है औरङ्गावाद जिलेमे कादिरावाद एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २३३५३ मनुष्य थे।

रावियादुर्रानीका मकवरा—रावियादुर्रानी दिल्लीके वादशाह औरङ्गजेवकी लड़की थी। यह वडा मकवरा शहरसे १ मील पूर्वोत्तर पुराने कवरगाहके करीव ३०० गज दक्षिण है। इसके वडे फाटकमे पीतलका पत्तर जडा है। इसके किनारेपर लिखा है कि यह उमदे मकवरेका दरवाजा सन् १०८९ हिजरी (सन् १६७७ ई०) में वना। वागमे एक लम्बी तङ्ग जगहमे पानी है, जिसमें फौआरे इस्तमाल होते थे। पानीके दोनो तरफ रास्ता है, मकवरेकी दीवारसे ६ फीट ऊचा, पीतल जडे हुए दरवाजेका फाटक है; जिसमें अजीव तरहकी नक्काशीके फूल और सांप वने है। मकवरेके भीतर मार्वुलके ऊँचे चवूतरेपर ८ पहलकी मार्वुलकी पंझरीदार टट्टियोके भीतर रावियादुर्रानीकी कवर है। निजाम सरकारने इसकी मरम्मतमे वहुत खर्च किया है। मकवरेके पश्चिम ईटोंकी मसजिद है।

मसजिद—छावनीसे वगमपुरा पुलपर जानेवाली सडकके दहिने घूमनेपर एक खूवसूरत वागमे मछलियोंसे भरा हुआ एक तालाव मिलता है जिसका पानी उमड़कर नीचेके दूसरे तालावमे गिरता है और फिर एक तङ्ग नालेमे वहता है। वहॉ वोखारेका वावाशाह, जो औरङ्गजेवका उपदेशक था दफन किया गया है। वागके वाद एक वड़े तालावके पास एक उत्तम मसजिद है, जिसकी छतके नीचे पायोके ४ कत्तार है। मसजिदके दक्षिण-पश्चिम एक छोटे वागमे हलके रङ्गके मार्वुलसे वना हुआ एक खूवसूरत मकवरा है।

---

* [illegible]

# दौलताबाद ।

रौजासे ६ मील पूर्व-दक्षिण और औरङ्गाबादसे १० मील पश्चिमोत्तर हैदराबादके राज्यमे ( १९ अंश, ५७ कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १८ कला, पूर्व देशान्तरमें ) दौलताबाद एक पुराना कसबा है,उसको पूर्व समयमें लोग देवगिरी कहते थे,जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १२४३ मनुष्य थे*। दौलताबाद किला प्रसिद्ध है। जिसको देखनेके लिये एक अफसरसे इजाजत लेना होता है। दौलताबादसे ६ मील दूर घुश्मेश्वर शिव हैं।

किला—५०० फीट ऊँची गावदुमी खडी पहाडी पर १३ वीं सदीका बना हुआ किला है, जिसके बाहरीका घेरा २$\frac{3}{4}$ मीलका है। किलेके नीचे लगभग ३० फीट चौडी खाई और पूर्वतरफ फाटक है। खाईपर पत्थरका छोटा पुल बना है। तीसरे फाटकके पास ५६ फीट ऊँचा एक बुर्ज है। चौथे मेहराबी रास्तेके बाद दहिने तरफ एक पुराना हिन्दू मन्दिर देखनेमें आता है। एक तालाबके बगलसे होकर बाये तरफ घूमते हुए एक रास्ता एक मसजिदको गया है। उत्तर ओर २१० फीट ऊँचा एक मीनार मिलता है, जिसको मुसलमानोंने इस किलेके विजयके स्मरणार्थ बनवाया। मीनारके सिरपर चढ़नेसे चारो तरफ देशका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है । एक कमरेमे पारसी लेख है, जिसके अनुसार यह सन् १४३५ ई० में बना था।

किलेमे एक तोप महम्मदहसनकी बनवाई हुई २२ फीट लम्बी, जिसके मुखका व्यास ८ इंच है, दूसरी एक बैठकीपर १९$\frac{1}{2}$ फीट लम्बी, जिसका सुराख ७ इंच है और तीसरी एक बडी तोप गुजराती लेखके साथ है। किलेमें निजाम सरकारके लगभग १०० सिपाही रहते है। किलेके भीतर पहाड़ीके शिखरपर एकनाथ स्वामीके गुरु जगन्नाथ स्वामीका समाधि मन्दिर है, जिसके दर्शनको हिन्दू लोग जाते हैं । दीपके प्रकाशसे लोग अंधेरे मन्दिरमे दर्शन करते है।

इतिहास—सन् १२९३ मे अलाउद्दीनने, जो पीछे दिल्लीका बादशाह हुआ, देवगिरिको जो, उस समय महाराष्ट्रकी हिन्दू बादशाहतकी राजधानी था, लेलिया। वह १५००० पाउन्ड सोना, १७५ पाउन्ड मोती, ५० पाउन्ड हीरा और २५००० पाउन्ड चॉदी और आसपासके जिलोके साथ एलिचपुरको लेकर और वहाँके राजा रामचन्द्रको अपने आधीन बनाकर महासरा उठाकर चला गया। सन् १३०६ मे रामचन्द्र बागी हुआ और कैदी बनाकर दिल्ली भेजा गया, किन्तु बादशाहने रामचन्द्रको उसका अधिकार फिर दे दिया। उसके मरनेपर उसका पुत्र शङ्कर मुसलमानोंसे बागी हुआ, तब मुसलमान जनरल काफूरने जाकर दौलताबादके किलेको ले लिया और राजा शंकरको मारडाला। सन् १३३८ मे गयासुद्दीन तोगलकके पुत्र महम्मद तोगलकने देवगिरिको मुसलमानी राज्यकी राजधानी बनानेकी इच्छाकी, वह दिल्लीके निवासियोंको दिल्लीसे लगभग ८०० मील दूर देवगिरिमें ले गया। उसने किलेको मजबूत किया और देवगिरिका नाम दौलताबाद रक्खा। दौलताबाद प्रसिद्ध हुआ। उसके कई एक वर्षबाद गुलबर्गाका बहमनी राजा, उसके पीछे अहमदनगरके निजामशाही वंशवाले, उसकेबाद मुगल खाँदानके बादशाह दौलताबादके शासक

* मनमार जंक्शनसे पूर्व ओर हैदराबादको एक रेलवे लाइन निकली है, उसपर मनमारसे ६३ मील पूर्व दक्षिण और औरंगाबादसे ८ मील पश्चिमोत्तर दौलताबादका रेलवे स्टेशन है।

हुए। सन् १७०७ मे औरङ्गजेबके मरनेके पीछे दौलतावादका किला निजाम घरानेके नियत करने वाले आसफ़जाहके हाथमें आया, जिनके वंशधरोके अधिकारमे यह अब तक है।

## औरंगाबाद।

दौलतावादके किलेसे पूर्व-दक्षिण औरङ्गावाद तक ८ मीलकी पक्की सड़क है। इलोरासे १४ मील और नन्दगॉवके रेलवे स्टेशनसे ५६ मील पूर्व-दक्षिण हैदरावादके राज्यमे जिलेका सदर स्थान औरङ्गावाद एक कसवा है, जो पहले किरकी नामसे मशहूर था *। सन १६१० मे मलिकअम्बरने इसको कायम किया। औरङ्गावादसे ६८ मील दक्षिण-पश्चिम अहमदनगर है

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय औरङ्गाबाद और उसकी छावनीमे ३३८८७ मनुष्य थे, अर्थात् १७१८६ पुरुष और १६७०१ स्त्रियॉ। इनमें १८९०७ हिन्दू, १४०४१ मुसलमान, ५११ जैन, ३१६ कृस्तान, ६० पारसी, और ५२ सिक्ख थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह हैदरावादके राज्यमे दूसरा शहर है।

कसवेके चारोंओर पक्की दीवार, जिसके कोनोपर टावर है, वनी हुई है, जिसके भीतर बहुतेरी इमारतोके खण्डहर है। औरङ्गजेबका वनवाया हुआ महल उजड़ गया है। कसवेके पास एक छोटी नदी वहती है। कसवेसे पूर्व चालीस पचास छोटे बड़े मकवरे और पश्चिम फौजी छावनी है। औरङ्गावादमें हैदरावाद राज्यका सदर तालुकेदार रहता है। गेंहू, कपास वरतन इत्यादिकी तिजारत होती है औरङ्गावाद जिलेमें कादिरावाद एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २३२५३ मनुष्य थे।

रावियादुर्रानीका मकवरा—रावियादुर्रानी दिल्लीके वादशाह औरङ्गजेबकी लड़की थी। यह बडा मकवरा शहरसे १ मील पूर्वोत्तर पुराने कवरगाहके करीब ३०० गज दक्षिण है। इसके वडे फाटकमे पीतलका पत्तर जडा है। इसके किनारेपर लिखा है कि यह उमदे मकवरेका दरवाजा सन् १०८९ हिजरी ( सन् १६७७ ई० ) मे वना। वागमे एक लम्बी तङ्ग जगहमें पानी है, जिसमें फौआरे इस्तमाल होते थे। पानीके दोनो तरफ रास्ता है, मकवरेकी दीवारमे ६ फीट ऊचा, पीतल जडे हुए दरवाजेका फाटक है; जिसमें अजीव तरहकी नक्काशीके फूल और साप बने है। मकवरेके भीतर मार्वुलके ऊंचे चबूतरेपर ८ पहलकी मार्वुलकी झंझरीदार टट्टियोके भीतर रावियादुर्रानीकी कवर है। निजाम सरकारने इसकी मरम्मतमे वहुत खर्च किया है। मकवरेके पश्चिम ईटोंकी मसजिद है।

मसजिद—छावनीसे वेगमपुरा पुलपर जानेवाली सड़कके दाहिने घूमनेपर एक खूबसूरत वागमे मछलियोसे भरा हुआ एक तालाव मिलता है जिसका पानी उमड़कर नीचेके दूसरे तालावमे गिरता है और फिर एक तङ्ग नालेमे वहता है। वहॉ वोखारेका वावाशाह, जो औरङ्गजेबका उपदेशक था. दफन किया गया है। वागके वाद एक वडे तालावके पास एक उत्तम मसजिद है. जिसकी छतके नीचे पायोंके ४ कतार है। मसजिदके दक्षिण-पश्चिम एक छोटे वागमे हलके रङ्गके मार्वुलसे वना हुआ एक खूबसूरत मकवरा है।

---

* [illegible]

खाम नदीके किनारेकी पनचक्कीसे $\frac{1}{8}$ मील उत्तर शहरका पुराना मक्का फाटक और मक्का पुल है। फाटककी इमारत ४२ फीट ऊँची है। फाटकके भीतर मलिकअम्बरकी बनवाई हुई काले पत्थरकी मसजिद है।

सरकारी मकानके निकट जुमा मसजिद है। मसजिद और उसके मीनार बहुत ऊँचे नहीं हैं मसजिदके सम्पूर्ण अगवासमे अपूर्व जालीदार काम है। मलिकअम्बरने आधी मसजिदको और औरङ्गजेबने बाकीको बनवाया।

सरकारी आफिस—छावनीके दक्षिण-पूर्व औरङ्गजेबके गढ़में सरकारी आफिस है। वहाँ एक सुन्दर बडे कमरेके आगे एक सुन्दर तालाब और पीछे एक खूबसूरत बाग है, फिर उसके पीछे बारहदरी या सरकारी हौस है,जिसके आगे एक सुन्दर तालाब है। औरङ्गजेबके गढ़की निशानीमे अब केवल एक मेहराबी राह है। यहाँ एक समय हजारहाँ हथियार बन्द आदमियोंके साथ ५३ राजा औरगजेब बादशाहकी कचहरीमें हाजिर रहते थे, उस समय औरङ्गाबाद दक्षिणकी दिल्ली था।

औरङ्गाबादके गुफामन्दिर—शहरसे लगभग २ मील उत्तर पहाडियोंके बगलमें गुफामन्दिर हैं। पहले और दूसरे झुण्डमें ९ बौद्ध गुफाये है, जिनसे लगभग १ मील पूर्व तीसरे झुण्डमे ३ गुफामंदिर है, उनमे प्रधान ये है;—गुफा नं० १ के दरवाजेके बायें उपदेश करते हुए बुद्धकी मूर्ति है, जिसके आसपास कई सेवकोंकी मूर्त्तियाँ है। बगलके दरवाजेके ऊपर दो पल्थी मारकर बैठी हुई और तीसरी अपने गणोको उपदेश देती हुई बुद्धकी प्रतिमाँ है। प्रधान फाटकके दहिने बुद्ध और बायें उन्हीके समान ३ मूरते हैं। नीले पत्थरकी ६ फीट ऊँची बुद्धकी एक सूरत बैठी हुई है।

नं० २ चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर है। यह इलोराके विश्वकर्माकी गुफाके समान अर्द्ध गोलाकार छतके साथ है।

नं० ३ विहार अर्थात् बौद्ध मठ और धर्मशालाके साथ मन्दिर है। मध्यके कमरेमे १२ पाये हैं। बीचमे ९$\frac{1}{2}$ फीट ऊँची बुद्धकी प्रतिमा है, जिसके पास बहुतेरी मूर्तियाँ पूजा कर रही हैं। बाहरका बरंडा बिगड़ रहा है।

नं० ४ आठ फीट लम्बा और इतनाही चौडा एक छोटा विहार है, जिसमे उपदेश करते हुए बुद्ध बैठे हैं। दीवारमे चारो तरफ छोटी छोटी बुद्धकी मूर्तियाँ है।

नं० ५ अधिक ऊँचाई पर एक साधारण गुफा है।

पैठन—औरंगाबादसे लगभग ३० मील दक्षिण गोदावरी नदीके किनारे पर पैठन है, जिसका वृत्तान्त आगे लिखा जायगा। यात्री लोग पैठनसे पर्णी वैद्यनाथ और नागनाथके दर्शनको जाते है और घुस्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्गके दक्षिणसे आनेवाले यात्री पैठन होकर और उत्तरके यात्रीगण दौलताबाद होकर जाते है।

इतिहास—एक समय औरंगाबाद अहमदनगर राज्यके दक्षिणके बड़े भागकी राजधानी था कसबेके क्षेत्रफलके प्रायः $\frac{3}{4}$ भागमें शहरके खण्डहर फैले हुए है। कसबेके २ मील पश्चिम एक बड़ी शहर तलीका खण्डहर देखनेमें आता है। एक समय वहाँ भारी तिजारत होती थी। निजामकी राजधानी हैदराबाद होनेपर इसकी तिजारत घटने लगी।

# घुश्मेश्वर ।

दौलतावादके ६ मील पश्चिमोत्तर पहाड़ीके दूसरी ओर उसके पादमूलके पास और पैठनसे लगभग ३० मील उत्तर ओर हैदरावादके राज्यमें वेरुल एक वस्ती है । पैठनसे वेरुलको बैलगाडीका मार्ग है । वेरुलसे $\frac{१}{२}$ मील दूर एक छोटी नदीके किनारे पर घुश्मेश्वरका छोटा शिखरदार मन्दिर पूर्व मुखका बना हुआ है । मन्दिरके आगे अठपहला जगमोहनमें नन्दी है । नदीके किनारे पर एक छोटा पक्का घाट बना है । स्थान निर्जन है । रातको मन्दिरके पास कोई नही रहता । यात्री लोग पण्डोंके मकानपर चले जाते हैं । वेरुल वस्ती और घुश्मेश्वर शिवके मन्दिरके वीचमें एक तालावके मध्यमे एक वडा मन्दिर और उसके चारों कोनोंपर ४ छोटे मन्दिर है । घुश्मेश्वर शिवलिङ्ग महादेवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक हैं । यह लिङ्ग आधा हाथ ऊँचा है । मन्दिरमे दिन रात दीप जलता है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण,—( ज्ञानसंहिता ३८ वाँ अध्याय ) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे घुश्मेश्वर लिङ्ग शिवालयमे स्थित है । ज्योतिर्लिङ्गोंके पूजन करनेका अधिकार चारो वर्णोंका है, इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सव पापोंका नाश होजाता है ।

( ज्ञानसंहिता ५८ वाँ अध्याय ) दक्षिण दिशामें देवसंज्ञक पर्वत ( देवगिरि ) के निकट सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहता था । जब उसके कोई सन्तान नहीं हुई, तव उसने अपनी स्त्री सुदेहाके बहुत हठ करनेपर घुश्मा नामक स्त्रीसे अपना दूसरा विवाह किया । घुश्मा अपने स्वामीकी आज्ञा पाकर नित्य १०८ पार्थिवका पूजन करने लगी । वह नित्य पार्थिवोंको पूजकर एक तालावमे डाल देती थी । इस भाँति उसने १ लाख लिङ्गोंका पूजन किया । थोडे दिनोंके पश्चात् शिवजीकी कृपासे घुश्माका सुन्दर पुत्र जन्मा । युवाकालके उपरान्त उस पुत्रका विवाह हुआ । सब संबन्धी लोग घुश्माकी प्रशंसा करने लगे । यह देख सुदेहा अति दुःखी होकर अपनी सौतके पुत्रसे ईर्षा करने लगी । एक दिन उसने उस पुत्रको सोते हुए पाकर मारडाला और जिस सरोवरमें घुश्मा पार्थिवोंको पूजकर फेंक देती थी, उसीमें उसका शरीर डाल दिया । सवेरा होनेपर ब्राह्मणके पुत्रकी मृत्युकी खबरसे सब लोग दुखी हुए किन्तु सुधर्मा और घुश्मा यह समाचार पाकर भी शिवपूजनको त्यागकर अपने स्थानसे नहीं उठे । घुश्माने विज्ञान बलसे प्रसन्नता पूर्वक पार्थिव लिङ्गोंको लेजाकर पूर्ववत उस सरोवरमे विसर्जन किया । जब वह लौटने लगी तब सरोवरके तटपर उसका पुत्र देख पडा । वह अपनी मातासे आ मिला । उसी समय घुश्माकी यह भक्ति और सन्तोष देखकर शिवजीने ज्योतिर्मय होकर उसको दर्शन दिया और उससे कहा कि तेरी सौतने तेरे पुत्रको मारा था, मै प्रसन्न हूं तुम वर मागो । घुश्मा बोली कि हे स्वामी ! मै यही मागती हूं कि आप लोककी रक्षाके निमित्त यहांही स्थित होजावें । महादेवजीने कहा कि हे सुमध्यमे ! तेरेही नामसे मेरा नाम घुश्मेश्वर होगा और यह सरोवर शिवोंका आलय है, इस लिये यह शिवालय नामसे विख्यात होगा । ऐसा कह शिवजी लिङ्गरूप होकर पार्वतीके सहित स्थित होगये । उनका नाम घुश्मेश्वर और उस [illegible] का नाम शिवालय हुआ । इस लिङ्गका दर्शन करके मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है और [illegible] [illegible] चन्द्रमाके समान उसके सुखकी वृद्धि होती है ।

## पैठन।

औरङ्गाबादसे (जिससे ५६ मील पूर्वोत्तर नन्दगाँवका रेलवे स्टेशन है) लगभग ३० मील उत्तर और अहमदनगरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ६० मील पूर्वोत्तर हैदराबाद-राज्यके औरङ्गाबाद जिलेमें गोदावरी नदीके बाँये किनारेपर पैठन एक पुराना नगर है, जो एक समय शक जातिके राजा शालिवाहनकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर नामसे विख्यात था। अब तक लोग इसको दक्षिणका प्रतिष्ठानपुर कहते है। उसी शालिवाहनके नामसे शालिवाहन शाका चलता है, जो सन् ७८ ई० और विक्रमी संवत् १३५ में आरम्भ हुआ। पैठनसे औरङ्गाबाद तक दिहाती मार्ग और अहमदनगर तक पक्की सडक है, जिसपर तांगे चलते हैं *। पैठनसे पूर्वोत्तर एक सडक नागपुर शहरको गई है।

पुराने नगरके एक छोटे भागमे वर्तमान पैठन कसबा है। पूर्वकी भूमिपर पुराने नगरकी निशानियां दूर तक देख पड़ती है। कसबेमें बहुतेरे देव मन्दिर बने हुए है। और एकनाथ स्वामीका प्रसिद्ध समाधि मन्दिर है एक समय पैठन रेशमी कपडेकी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध था, अब भी कुछ उसका काम होता है।

## परणी वैद्यनाथ।

पैठनसे ३० मीलसे अधिक पूर्व हैदराबादके राज्यमें गोदावरी नदीके किनारेपर गङ्गा-खेड़ एक बस्ती है, जिससे १६ मील दूर त्र्यम्बकेश्वरसे लगभग ८० मील परणी गॉव है। पैठनसे वहाँतक बैलगाडीका मार्ग है। परणी वैद्यनाथसे लगभग ६० मील बार्सीरोड और १०० मील अहमदनगरका रेलवे स्टेशन है। परणी गॉवके पास छोटी पहाड़ीके ऊपर वैद्यनाथ शिवका शिखरदार विशाल मन्दिर और एक धर्मशाला है। शिवलिङ्ग आधा हाथ ऊँचा है। मन्दिरमें दिन रात दीप जलता है। पहाड़ीके दोनों ओर पत्थरकी सीढ़ियॉ नीचेसे ऊपरको गई हैं। एक ओर परणीगाँव और दूसरी ओर एक छोटी नदी और एक पक्का कुण्ड है।

दक्षिणी लोग परणी-वैद्यनाथहीको शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेका वैद्यनाथ कहते है, किन्तु शिवपुराणकी कथाओंसे विहार प्रदेशके संथाल परगनेके वैद्यनाथ, जिनका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके तीसरे खण्डमें है, १२ ज्योतिर्लिङ्गोमे सिद्ध होते है। तीसरे खण्डके १८ वें अध्यायमें देखिये। एक स्तोत्रमें "परण्यां वैद्यनाथं च" ऐसा लिखा है, किन्तु यह नही जान पडता है कि यह श्लोक किस पुस्तकका है।

## नागेश।

गङ्गाखेडसे लगभग ३० मील दूर अवढा नामक वस्ती है, जिसके पास अवढानाग-नाथ अर्थात् नागेशका शिखरदार बडा मन्दिर है। गङ्गाखेढ़से वहाँतक बैलगाडीका मार्ग है। नागेश शिवलिङ्ग शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेसे एक हैं। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम तरफ जगमोहन बना हुआ है। मन्दिर और जगमोहन दोनो खाली हैं, मन्दिरके भीतर एक बगलमें ४ सीढ़ियोंके नीचे एक बहुत छोटी कोठरीमें एक हाथ ऊँचा नागेश शिवलिङ्ग है। यात्रीगण सीढ़ीसे दर्शन करते हैं। कोठरीमे दिन रात दीप जलता है। मन्दिरके पीछे नदी-

---

* मनमार जंक्शनसे नई रेलवे हैदराबादको गई है, उसपर मनमारसे पूर्व-दक्षिण ६३ मील दौलताबाद और ७१ मील औरंगाबादका रेलवे स्टेशन है।

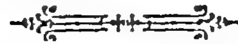
की मूर्त्ति है। मन्दिरके समीप एक टूटी फूटी धर्मशाला और एक कुण्ड है लोग कहते हैं कि हैदराबादके निजामकी ओरसे घुश्मेश्वर, परली वैद्यनाथ और अवढा नागनाथ ये तीनों देवताओंके भोगराग इत्यादि खर्चके लिये तीस तीस रुपये मासिक मिलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेसे नागेश लिङ्ग दारुकावनमें स्थित है। ज्योतिर्लिङ्गोंके पूजन करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है। इनके नैवेद्य खानेसे सब पापोंका विनाश होजाता है।

(ज्ञानसंहिता, ५६ वाँ अध्याय) चारोंओरसे १६ योजन विस्तीर्ण दारुका नामक राक्षसीका वन था। श्रीपार्वतीजीके वरदानके प्रभावसे दारुका जहाँ जानेकी इच्छा करती थी, तहाँ पृथ्वी, वृक्ष, महल सब सामग्रीके साथ वह 'वन' जाता था। वह राक्षसी अपने पति दारुकके सहित उस स्थानमें रहकर सब लोगोंको भय देने लगी। जब सबलोग दुःखी हो 'और्व' ऋषिके शरणमें गये, तब उन्होने राक्षसोंको शाप दिया कि यदि राक्षस लोग पृथ्वीमें प्राणियोंकी हिंसा और यज्ञमें विघ्न करेंगे तो प्राण रहित हो जाँयगे। देवता लोग यह समाचार पाकर राक्षसोंसे युद्ध करनेका उद्योग करने लगे। तब दारुका राक्षसीने पार्वतीजीके वरके प्रभावसे स्थल सहित अपने वनको लेजाकर पश्चिमके समुद्रमें स्थित किया। अनेक प्रकारके महल उसमें बनगये। सम्पूर्ण राक्षस उसमें सुखसे विहार करने लगे। वे लोग मुनिके शापके भयसे स्थलमें नहीं जाते थे, किन्तु नावमें बैठकर जानेवाले मनुष्योंको पकड़कर अपने नगरमें लाकर किसी २ को मारडालते और किसी २ को बन्धनागारमें रखते थे। एक समय वहाँ मनुष्योंसे पूर्ण बहुतसी श्रेष्ठ नौकाएँ आईं। राक्षसोंने सब मनुष्योंको पकड़कर अपने नगरके बन्धनागारमें डाल दिया। उन मनुष्योंका स्वामी वैश्य बड़ा शिवभक्त था। वह शिवजीके बिना पूजन किये हुए भोजन नहीं करता था। वह अपने सब साथियोंके साथ बन्धनागारहीमें शिवजीकी मानसी पूजा करने लगा सुप्रिय नामक वैश्य मानसिक पूजा और ध्यानसे जो कुछ शिवजीको निवेदन करताथा, शिवजी उसको प्रत्यक्ष स्वीकार करते थे, परन्तु वह इस बातको नहीं जानता था। इस प्रकारसे ६ मास बीतनेके उपरान्त राक्षसके सेवकोंने वैश्यके आगे शिवजीका सुन्दर रूप देखकर अपने राजासे सब वृत्तान्त कह सुनाया। राक्षसराजने अपने गणोंके साथ जाकर वैश्यको मारनेकी आज्ञा दी। राक्षस गण मारने दौड़े। वैश्य भय भीत होकर बोला कि हे शंकर! हमारी रक्षा करो। ऐसी प्रार्थना सुनकर शिवजी ४ द्वार युक्त विवरसे अपने ज्योतिर्लिङ्गके सहित प्रगट हुए। उनके साथ सब उनका परिवार था। वैश्यने शिवजीका पूजन किया। शिवजीने प्रसन्न हो कर वहांके राक्षसोंको नष्ट भ्रष्टकर डाला और वैश्यको वर दिया कि इस वनमें अपने धर्मके सहित चारों वर्णके लोग सदा विद्यमान रहेंगे। उसी समय दारुका राक्षसी पार्वतीजीकी स्तुति करने लगी, तब पार्वतीजीने कहा कि तुम क्या चाहती हो। राक्षसी बोली कि तुम मेरे वंशकी रक्षा करो। पार्वतीजीने उसको यह वरदान देकर शिवजीसे कहा कि हे स्वामी! तुम्हारा वचन युगान्तरमें सत्य होगा अभी दारुका यहाँ रहकर राक्षसोंका राज करेगी। शिवजीने पार्वतीका वचन स्वीकार करके कहा कि मैं इस वनमें निवास करूँगा। जो पुरुष [illegible] स्थित रहकर मेरा दर्शन करेगा वह चक्रवर्ती होगा। ऐसा कहकर पार्वतीके सहित [illegible] नागेश नामसे यहाँ स्थित होगये।

---

# चौथा अध्याय।



## ( बम्बई हातेमें ) अहमदनगर, धोंद जंक्शन, पंढरपुर, बार्सी, शोलापुर, होतगी जंक्शन, और ( हैदराबादके राज्यमें ) गुलबर्गा।

## अहमदनगर।

पैठनसे लगभग ६० मील पश्चिम-दक्षिण और मनमार जंक्शनसे ९५ मील दक्षिण अहमदनगरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके मध्य विभागमे ( १९ अंश, ५ कला, उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५५ कला पूर्व देशांतरमे ) शिवानदीके बांये किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा अहमदनगर है। मनमार जंक्शन और अहमदनगरके बीचमें गोदावरी नदीपर रेलवेका पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर और इसकी छावनीमे ४१६८९ मनुष्य थे, अर्थात् २२०७३ पुरुष और १९६१६ स्त्रियाँ। इनमे ३२०२७ हिन्दू, ६३४७ मुसलमान, १८८८ कृस्तान, ११७७ जैन, १८३ पारसी, ३२ यहूदी, २३ एनिमिष्टिक और १२ दूसरे थे।

मनुष्य-संख्याके अनुसार यह बम्बई हातेमे ११ वाँ और भारतवर्षमे ९७ वाँ शहर है।

शहर दश बारह फीट ऊँची मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ है, जिसके जगह जगहके बुर्ज और फाटक उजड रहे हैं। शहरके अधिक मकान ईंटोंसे बने हुए मामूली दरजेके मुड़ेरेदार है, निवासियोंमें शूद्र अधिक हैं। एक सड़कके बगलोमे गल्लेकी और दूसरी पर कपड़े इत्यादिकी दूकानें है। खास करके मारवाड़ी लोग कपड़े बेचते है। शहरमे ताँबे और पीतलके बहुत वर्तन बनते हैं। इसमें दरी और गलीचे बहुत मजबूत तैय्यार होते है; इनके लिये अहमदनगर प्रसिद्ध है। शहरकी कई एक पुरानी मशजिदे सरकारी आफिस बनी हे. कई एकमें यूरोपियन लोग रहते है। एक जेलखानेके काममे आती है और एक अस्पताल बनी है। लगभग सन् १६०० ई० का बना हुआ एक मुसलमान शरीफके महलमे जजकी कचहरी होती है। इनके अलावे अहमदनगरमे दो तीन देवमन्दिर; एक आरमेनियन चर्च, एक पारसी अग्निमन्दिर, और एक हाई स्कूल है। शहरके कूपोका पानी खारा है। दूर दूरसे कई प्रणालीद्वारा शहरमे पानी पहुँचाया जाता है। शहरसे लगभग १२ मील दूर शिवानदीका निकास स्थान है।

रेलवे स्टेशनसे २½ मील पूर्वोत्तर, शहरसे ½ मील पूर्व गोलाकार शकलका १½ मीलके घेरमे पत्थरका किला है। किलेके चारो ओर चौडी खाई है। पूनाकी सड़ककी ओर किलेका दरवाजा है। किलेके निकट २ गिरजे और उसके दक्षिण-पूर्व फौजी छावनी है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४५८९ मनुष्य थे।

किलेसे २ मील दूर फैरियाबागमें नागर बादशाहोका पुराना महल है। अहमदनगराक प्रधान दृश्य शहरसे ६ मील पूर्व एक ऊँची पहाडीपर चान्दबीबीका तीन मञ्जिल

मकवरा है । जमीनके नीचेकी कोठरीमे दो कवर है, ऊपरकी पहिली मञ्जिल बीमारखानेके काममे आती है । उसके पूर्व कुछ उत्तर एक बडा तालाव है ।

अहमदनगर जिला–इसके पूर्वोत्तर गोदावरी नदी, जो हैदरावादके राज्यसे इसको अलग करती है, पूर्व कुछ दूर तक हैदरावादका राज्य; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम शोलापुर और पूना जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर नासिक जिला है । पश्चिमकी सीमाके एक हिस्सेके पास पूर्व ओर फैली हुई सह्याद्रिकी पहाडियाँ है । जिलेके पश्चिमोत्तर भागमें पहाडियोंकी सबसे ऊँची चोटियाँ है । जिलेमे हरिश्चन्द्रगढ आदि नामके कई महाराष्ट्रोंके पुराने किले है । जिलेकी प्रधान नदी गोदावरी जिलेके पूर्वोत्तर और उत्तरकी सीमापर लगभग ४० मील और भीमानदी दक्षिणीय सीमापर लगभग ३५ मील बहती है । इनके अतिरिक्त बहुत सी छोटी नदियां हैं । इस जिलेमें कोई बडा वन नही है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर जिलेका क्षेत्रफल ६६६६ वर्गमील था, जिसमें ७५१२२८ मनुष्य थे, अर्थात् ६८४१८४ हिन्दू, ३९५९२ मुसलमान, १५४९७ जैन, ६८७६ एनिमिष्टिक, ४८२७ कृस्तान, १७९ पारसी, ६५ यहूदी और ८ सिक्ख । जातियोंके खानेमें ३०४८१८ कुन्बी, ६२०९१ महारा, ३९५२७ धांगड, ३२६३९ माली, ३२५८१ ब्राह्मण, ३००७२ वनजारा, २६७५३ कोली, १९१६५ भांग, १३५२३ चमार, ३२२९ लिङ्गायत, २७९४ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोके लोग थे । इस जिलेमें महाराष्ट्र अधिक है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर जिलेके कसबे अहमदनगरमें ४१६८९, कोलकामें १६४९४ और संगमनेरमें १३२६५ मनुष्य थे । पाथरडी, श्रीगोंडा, खरदा, भिंगर और सोनाई छोटे कसबे है ।

इतिहास—सन १४९४ ई० मे अहमद निजामशाह वहरीने अहमदनगरको वसाया । वह विजयानगरके एक ब्राह्मणका लडका था, जो मुसलमान होगया । वह पहिले वहमनी राज्यका एक अफसर था, जिसने वहमनी खान्दानके राज्य टूट जानेपर स्वाधीन हुकूमत करनेवाला बन गया और अहमदनगरको अपनी राजधानी बनाया. उसीसे निजामशाही खान्दान चला । उसका राज्य बरारके बडे भाग, औरङ्गाबादके सूबे और खानदेशके कई एक जिलोंमें और बेबटसे बेसिनतक कोकनमें फैला था इसके बाद उसका पुत्र बुरहान निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ, जिसको सन १५४६ में बीजापुरके राजा इब्राहिम आदिलशाहने परास्त किया । सन १५५३ मे बुरहान निजामशाहके मरनेपर उसका पुत्र हुसेन-निजामशाह अहमदनगरके तख्तपर बैठा । लोग कहते है कि इसीने सन १५५९ में अहमदनगरके किलेको और लगभग सन १५६३ मे अहमदनगरकी मट्टीकी दीवारको बनवाया । सन १५६५ मे बीजापुरके राजाने उसको अच्छी तरहसे परास्त किया और कई सौ हाथी और बहुतेरी तोपोंको उससे छीन लिया जिनमेंकी पीतलकी बडी तोप बीजापुरमें विद्यमान है । सन १५६५ मे हुसेन निजामशाहको, जो दीवानके समान हो गया था, उसके पुत्र [illegible] हुसेन निजामशाहने [illegible] । [illegible] केवल १० मास राज्य करनेके उपरान्त [illegible] सन [illegible] इसका [illegible] निजामशाह [illegible] इसके [illegible] वर्ष बाद [illegible]

बैठाया। सन् १५९४ में दूसरा बुरहानशाहकी मृत्यु होनेपर उसका पुत्र इब्राहिम निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ; किन्तु केवल ४ महीने राज्य करनेके पश्चात् बीजापुरके राजाकी लड़ाई-में वह मारा गया। उसके पश्चात् उसका बच्चा पुत्र बहादुरशाह गद्दीपर बैठायागया और उसकी कोई रिस्तेदार चाँद बीबी; जो बीजापुरके राजा अली आदिलशाहकी विधवा थी, राज्यका काम चलाने लगी। सन् १५९९ में बादशाह अकबरके पुत्रने अहमदनगरको परास्त करके शहरको ले लिया। उस समयसे अहमदनगर बराय नामके दिल्लीके आधीन था, किंतु सन् १६३७ में बादशाह शाहजहाँने इसको पूरे तौरसे अपने अधिकारमें कर लिया। शाह-जहाँके पुत्र औरंगजेब सन् १७०७ की फरवरीमें अहमदनगरमें मरगया और औरङ्गाबाद जिलेके रौजामें दफन किया गया। सन् १७५९ में पूनाके पेशवाने अहमदनगरको ले लिया। सन् १७९७ में पेशवाने इसको दौलतराव सिंधियाको दिया। सन् १८०३ में दो दिन लड़ाई होनेके उपरान्त अङ्गरेजी फौजने अहमदनगरके किलेको ले लिया। किलेमें अबतक उस समयका दर देख पडता है। कुछ दिनोंके पीछे अङ्गरेजी सरकारने पेशवाको अहमद-नगर दे दिया, किन्तु सन् १८१७ में पूनाकी सन्धिके अनुसार यह किला फिर अङ्गरेज महाराजको मिल गया। पीछे अहमदनगर एक जिलेका सदर स्थान बनाया गया।

## धोंद जंक्शन।

अहमदनगरसे ५१ मील और मनमार जंक्शनसे १४६ मील दक्षिण धोंदमें, रेलवेका जंक्शन है। स्टेशनके पास छोटा धर्मशाला है। स्टेशनसे ½ मील भीमा नदीके पास गार्डोन नामक एक बडी बस्ती है, जिसमें विठ्ठलनाथका बडा मन्दिर दूरहीसे देख पड़ता है।

धोंद जंक्शनसे ग्रेट इडियन पेनिनसूला रेलवेकी लाइन तीन तरफ गई है। जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है।

(१) धोंदसे पूर्व-दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ डिकसल।

५७ केम।

६८ बार्सीरोड।

९७ मोहल।

११७ शोलापुर।

१२६ होगती जंक्शन।

१८७ गुलबर्गा।

२०४ शाहाबाद।

२१० बाडी जंक्शन।

२७७ रायपुर।

(२) धोंदसे पश्चिमोत्तर।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४८ पूना।

१३४ कल्याण जंक्शन।

१६७ बम्बई

पूनासे दक्षिण सदर्न मरहट्टा रेलवे पर ७७ मील सितारारोड, ८३ मील कोरेगाँव; १३० मील कोल्हापुर २४५ मील बेलगाँव और २७८ मील लोंडा जंक्शन।

लोंडा जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ४३ मील धारवाड ५६ मील हुबली जंक्शन और ९२ मील गदग जंक्शन।

(३) धोंदसे उत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५१ अहमदनगर।

१४६ मनमार जंक्शन।

# पंढरपुर।

दोंद जक्शनसे दक्षिण-पूर्व १८ मील ढिकसलका स्टेशन, ३० मील भीमा नदी पर रेलका पुल और ६८ मील वार्सीरोड नामक रेलवेका स्टेशन है। स्टेशनसे ३० मील दक्षिण (१७ अंश, ४० कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, २२ कला, ४० विकला पूर्व देशान्तरमें) बम्बई हातेके दक्षिणी विभागके शोलापुर जिलेमें भीमानदीके दक्षिण अर्थात् उसके दहिने किनारेपर पढरपुर सबडिवीजनका प्रधान कसबा और बम्बई हातेकी यात्राके प्रधान स्थानोंमेंसे एक पंढरपुर है बार्सीरोडके स्टेशनसे पंढरपुर तक पक्की सड़क बनी है। उस सड़कसे घोडेकी डाकगाडी बहुतेरे टाँगे और बैलगाडियाँ पंढरपुर जाती है। बार्सीरोडके स्टेशनसे २९ मील दक्षिण-पूर्व मोहलका रेलवे स्टेशन है। जहाँसे २४ मील दक्षिण-पश्चिम पंढरपुर तक कच्ची सडक गईहै मोहलसे २० मील दक्षिण-पूर्व शोलापुरका रेलवे स्टेशन है, जिससे ३८ मील पश्चिम पढरपुरको एक सडक गई है। २० मील तक घोडे गाड़ीकी डाक चलती है, उसस आगे बैलगाडीकी सडक है। भीमानदीके उत्तर किनारेसे पढरपुर कसबेका सुन्दर दृश्य दृष्टि गोचर होता है। यात्रीगण नौकाओं द्वारा नदी पार होकर पंढरपुर पहुँचते है। भीमानदी जिसको भीमारथीभी कहते है, बम्बई हाते और हैदराबादके राज्यमे दक्षिण पूर्वको बहती हुई अपने निकास स्थानसे लगभग ५०० मील बहनेके पश्चात् कृष्णाके रेलवे स्टेशनसे दक्षिण कृष्णा नदीमें जा मिली है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पंढरपुर कसबेमें १९९५४ मनुष्य थे, अर्थात् १८३१६ हिन्दू, १०२६ मुसलमान ६११ जैन और १ क्रस्तान।

पंढरपुर कसबेका एक भाग, जिसमें विट्ठलनाथजीका मन्दिर है, पौंडरीक क्षेत्र करके प्रसिद्ध है विट्ठलनाथको लोग विठोबाभी कहते हैं। वर्तमान मन्दिर सन् ८० वीं ई० का बनाया हुआ है, इसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमतक ३५० फीट और चौडाई उत्तरसे दक्षिण तक १५० फीट है। प्रधान मन्दिर ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। वाये चौदीके पतरसे मढा हुआ एक स्तम्भ है, जिसको यात्रीगण अंकमाल करते हैं। ८ फीट लम्बी और इतनीही चौडी कोठरीमें पांडुवर्ण विट्ठलनाथ पूर्व मुखसे विराजते हैं। यात्रीगण भीमानदीमें स्नान करके विट्ठलनाथका दर्शन करते हैं। वहाँ चन्द्रभागा तीर्थ, सोमतीर्थ आदि अनेक पवित्र स्थानहै। बहुतेरे देवमन्दिर और पत्थरके ११ घाट बने हैं। बहुतेरे दो मञ्जिले तीन मञ्जिले मकान देखनेमें आते हैं। विष्णुपद और नारदकी रेतीपर अनेक मन्दिर बने हुए है एक अस्पताल है। रामबागमें लक्ष्मीनारायण और सोमदराम स्वामीका मन्दिर है।

पंढरपुरमें नित्य यात्री जाते है। प्रतिवर्ष वहाँ तीन मेले होते हैं। आषाढ़के मेले १००००० से १५०००० तक, कार्तिकके मेलेमें ४०००० से ५०००० तक और चैत्रवाले मेलेमें २०००० से ३०००० तक यात्री जाते हैं और प्रत्येक महीनेके शुक्लपक्षकी एकादशीके दिन ५००० से १००००तक यात्री पण्ढरपुरमें एकत्र होते है। मेलोंके समय प्रत्येक यात्रीसे चार आना (टिकट) लिया जाता है। सन् १८८० ई० में म्युनिसिपल्टीको तीनों मेलोंसे ४० हजार रुपयेसे अधिक आमदनी हुई थी पण्ढरपुरमें थोडी तिजारत होती है। वहाँसे चावल, कपास, गुड़, नारियल इत्यादि वस्तुएं दूसरे स्थानोंमें जाती हैं।

विट्ठलनाथ विष्णुके अवतार समझे जाते हैं। कथा ऐसी है कि पण्डलीक नामक एक ब्राह्मण अपने पिता माताको छोड़कर काशी जाता था। वह पण्ढरपुरमें एक ब्राह्मणके घरमें ठहर गया। पण्ढरपुरका ब्राह्मण अपने पिता माताका भक्त था, इस लिये गङ्गा, यमुना और सरस्वती उसके घर लौंडीका काम करती थीं। यह देखकर ब्राह्मणयात्री अपनी यात्राको छोडकर अपने पिता माताकी सेवा करने लगा।

एक दिन श्रीकृष्ण भगवान् अपनी स्त्री रुक्मिणीको खोजते हुए, जो घरसे रुष्ट होकर वहाँ आई थी, पण्ढरपुरमें आये। भगवान्ने देखा कि पण्डलीक ब्राह्मण अपने माता पिताका चरण धो रहा है और मेरे आनेपर भी चरण धोनेके कामसे निवृत्त नहीं होता है; तब उन्होंने उसकी ऐसी पिता मातामे दृढ़ भक्ति देखकर प्रसन्न हो उससे कहा कि हे विप्र! तुम इच्छित वर माँगो। पण्डलीकने कहा कि तुम जैसे हो उसी प्रकार सर्वदा स्थित रहो। उसने एक पाषाण दिया, जिसपर कृष्ण भगवान् स्थित हुए, जो विट्ठल और विठोबा नामसे विख्यात होगये।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णुस्वामी संप्रदायके नामदेवजीका जन्म पण्ढरपुरमें हुआ था। एक वामदेव नामक जातिका छीपी पण्ढरपुरमे रहता था, उसकी पुत्री बाल विधवा होगई, तब वामदेवने उससे कहा कि तुम भगवान्की सेवा करो, वह सब मनोरथ पूरा करते है। पुत्री पिताके वचनका विश्वासकर बड़ी निष्ठा भक्तिसे भगवान्की पूजा करने लगी। जब वह युवती हुई तब उसको पुत्रकी कामना हुई। भगवान्के प्रभावसे उसके गर्भ रहगया, जिससे नामदेवका जन्म हुआ। बालपनहीसे नामदेवजीकी भगवान्मे प्रीति हुई। वह अपने नाना बामदेवको भगवान्की मूर्त्तिका पूजन करता हुआ देखकर उनसे कहता था कि मुझको भगवान्की पूजा करने दो। एक दिन वामदेव, नामदेवको भगवान्की पूजाका काम सौंपकर किसी गाँवमे चला गया। नामदेव सध्याके समय कटोरेमे दूध और मिश्री भगवान्के आगे लेगया और हाथ जोड़कर बोला कि हे महाराज! यह दूध है आप पान कीजिये। वह जानता था कि जैसे लडके दूध पिया करते हैं वैसेही भगवान् भी पीते है। जब भगवान्ने दूध नहीं पिया, तब लड़का नामदेव निरास होकर रोते रोते विना भोजन किये हुए पड़ा रहा। तीसरे दिन उसने सोचा कि आज हमारे नाना आवेगे, हमको पूजा करनेकी रीति नहीं आती है, इससे वह हमको पूजाके कामसे अलगकर देगे। ऐसा विचार फिर दूध लेजाकर वह भगवान्से पीनेको कहने लगा, जब उस दिन भी भगवान्ने दूध नहीं पिया, तब नामदेव छूरी निकालकर अपना गला काटने लगा। भगवान्ने उसका दृढ़ विश्वास देखकर एक हाथसे उसका हाथ पकड़लिया और दूसरे हाथसे कटोरेका दूध पीलिया। जब कटोरेमे थोडा दूध रहा, तब नामदेवने कहा कि मैं ३ दिनका भूखा हूँ कुछ भी तो छोडो, तब भगवान्ने हँसकर उसको प्रसाद दिया।

पण्ढरपुरमे रॉकाजी, जो जगलसे लकडी लाकर बेचता था, परमभक्त हुआ था। उसकी बॉका नामक स्त्री उससे भी अधिक भगवतभक्त थी। एक दिन भगवान्ने नामदेवजीके साथ वनमे जाकर, जिस मार्गसे राँका और बॉका लकडीको जाती थीं, उसमे मुहरकी थैली डालदी, परन्तु दोनोमेसे किसीने मुहरको नहीं लिया। तब भगवान् और नामदेवजीने लकडी बटोरकर इकट्ठा करदी। रॉका और बाँकाने दूसरेकी बटोरी हुई जानकर लकडी

नहीं उठाई। वे लोग खाली हाथे घर चले आये और कहने लगे कि मुहर देखनेके अशकुनसे आज लकड़ी नहीं मिली, जो हम लोग मुहरोंको उठाते तो, न जाने क्या होता। जब भगवान्‌ने बटोरी हुई लकड़ी रॉकाजीके घर पहुँचा दिया, तब उन्होंने भगवतका भेजा हुआ प्रसाद जानकर अङ्गीकार किया। उसके पीछे भगवानने उन भक्तोंको दर्शन देकर कृतार्थ किया।

## वार्सी।

वार्सीरोडके रेलवे स्टेशनसे लगभग २१ मील पूर्व शोलापुरके जिलेमे (१८ अंश, १३ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) सबडिवीजनका प्रधान कसबा वार्सी है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वार्सीमें २०५६९ मनुष्य थे, अर्थात् १७७७० हिन्दू, २२५१ मुसलमान, ५०० जैन, ३० क्रस्तान और १८ पारसी।

वार्सीमे बड़ी तिजारत होती है। रुई, तीसी और तेल खास करके वहाँसे बम्बईमें भेजे जाते है। वहाँ सदरालाकी कचहरी, पुलिस स्टेशन अस्पताल और पोष्टआफिस है।

## सोलापुर।

वार्सीरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील (धोंद जंक्शनसे ११७ मील) दक्षिण-पूर्व (१७ अंश, ४० कला, १८ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ५६ कला, ३८ विकला पूर्व देशान्तरमे) सोलापुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणीय विभागमे महाराष्ट्र देशके अन्तर्गत जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा सोलापुर है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर कसबेमें ६१९१५ मनुष्य थे, अर्थात ३१७३४ पुरुष और ३०१८१ स्त्रियों। इनमे ४५३५३ हिन्दू, १४५६० मुसलमान. १०५१ जैन. ७७६ क्रस्तान, १६८ पारसी और २ यहूदी थे, मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ५७ वॉ और बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे ७ वॉ शहर है।

रेलवे स्टेशनके समीप एक छोटी धर्मशाला और स्टेशनसे ¾ मील दूर शहरका फाटक है। शोलापुर शहर पहिले २½ मील लम्बी दीवारसे घेरा हुआ था। वहाँकी म्युनिसिपल्टीने लगभग सन १८७२ मे पूर्वकी सम्पूर्ण दीवार और दक्षिण पश्चिम तथा उत्तरकी दीवारोंके भागको गिरवा दिया बाकी दीवारकी ऊँचाई ८ फीटसे १० फीट तक और चौड़ाई ७ फीटसे [illegible] फीट तक है।

समुद्रके जलसे १८०० फीट ऊपर एक बड़े मैदानमे शोलापुर कसबा है। कसबेके [illegible] मकान महीके है। पत्थर और ईंटोके मकान मुँडेरादार है। सन १८७९ और १८८१ के बीचमे जल कल बनी। जलकल द्वारा पानी कसबेमे सर्वत्र पहुँचाया जाता है। कसबेमे कई [illegible] एक हाईस्कूल [illegible] इडस्ट्रियल स्कूल है।

कसबेसे दक्षिण [illegible] सिद्धेश्वरका मन्दिर है उसके दक्षिण-पूर्व किनारेपर [illegible] लगा है उससे लगभग [illegible] हजार गज दक्षिण-पूर्व कलक्टर साहबका आफिस [illegible], जिसके दक्षिण-पश्चिम पुरानी [illegible] बड़े [illegible] है, जिनमे

* [illegible]

पश्चिम दो गिरजे है। पुरानी छावनीका बडा भाग अब सिविल स्टेशनके काममें आता है सदर बाजारसे लगभग ½ मील दक्षिण-पूर्व देशी पैदल फौजकी लाइन है, जिससे दक्षिण, अफसरोंके बङ्गले बने हुए है।

शोलापुर तिजारतमे मशहूर हुआ है। इसमें रेशम और कपडेकी दस्तकारीके काममें ५ हजारसे अधिक आदमी लगे हैं। इनको कातने और बिननेके लिये एक धुँयेकी मिल नियत हुई है, उस कारखानेमे कई सौ आदमी काम करते है।

रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक उत्तर कसबेके दक्षिण-पश्चिमकी दीवारके निकट २३० गज लम्बा और १७५ गज चौडा शोलापुरका पुराना किला है जिसकी दीवारमें जगह जगह २३ टावर बने हुए है। किलेके पूर्व-बगलमें सिद्धेश्वरकी झील और ३ बगलोंमें १०० फीटसे १५० फीट तक चौडी और १५ फीटसे ३० फीट तक गहरी खाई है। किलेकी दीवारोंमें गोले और गोलियाँ छोडनेके लिये बहुतेरे सुराख बने है। किलेके पहिले फाटकके पास सन् १८१० का शिला लेख पारसी अक्षरोंमें हैं।

कसबेसे लगभग ३ मील उत्तर, ६ मील लम्बी एक झील है, जिसको म्युनिसिपल्टीने सन् १८८१ में २ लाख २५ हजार रुपयेके खर्चमे बनवाया। यह झील बाँध बना करके बनाई गई है, इसका बाँध १½ मील लम्बा है। इससे ३ नहरें निकालकर आसपासके देशके खेत पटाये जाते है। झीलके पानीकी सबसे अधिक गहराई २० गज है, इससे जलकल द्वारा सम्पूर्ण कसबेमें पानी जाता है।

शोलापुर कसबेसे ३८ मील पश्चिम प्रसिद्ध तीर्थस्थान पण्ढरपुर है। २० मील तक घोडे गाड़ीकी डाँक जाती है, उससे आगे बैलगाडीकी कच्ची सड़क है।

शोलापुर जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला, पूर्व हैदराबादका राज्य और एक छोटा देशी राज्य; दक्षिण बीजापुर जिला और कई छोटे देशी राज्य और पश्चिम सितारा, पूना और अहमदनगर जिला और कई छोटे देशी राज्य हैं। शोलापुर जिलेके कई एक गाँव जिलेकी सीमासे बाहर हैं जिलेमें नीची पहाडियाँ और नीची ऊँची भूमि बहुत हैं। सन् १८८१ में ३४१३ वर्ग मील भूमि जोती गई थी। जिलेकी प्रधान नदी भीमा है। इसके अलावे अनेक छोटी नदियाँ जिलेमें बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर जिलेका क्षेत्रफल ४५२१ वर्गमील था और इसमें ५८२४८७ मनुष्य थे, अर्थात् ५३०१२१ हिन्दू, ४३९६७ मुसलमान, ७५१४ जैन, ६२५ कृस्तान, १५७ पारसी, ९४ यहूदी, ८ शिक्ख और १ बौद्ध। हिन्दुओंमे १७८९०८ कुन्बी, ५७७०४ धाँगर, ४४००१ महारा, २७०५९ ब्राह्मण, २३८९८ माली, २१५०९ लिङ्गायत, १९२३३ माँग, ११३८१ चमार, २९३८ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे। इस जिलेमें महाराष्ट्र लोग बहुत है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर जिलेके कसबे शोलापुरमे ६१९१५, बार्सीमें ३०५६९ और पण्ढरपुरमे १९९५४ मनुष्य थे। इस जिलेमें करकंब, करमाला और सङ्गोला बड़ी बस्ती हैं।

इतिहास—शायद सन् ई० के ९० वर्ष पहिलेसे ३०० वर्ष तक शोलापुर जिला पैठनके शातकर्णियाँ अंध्रभृत्य वंशके राज्यका एक भाग था। पड़ोसके जिले बीजापुर, अहमदनगर

और पूनाके समान शोलापुर जिला भी सन् ५५० से ७६० ई० तक चालुक्योंके, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटोंके, सन् ११८४ तक पश्चिमी चालुक्योंके और लगभग १३०० ई० तक देवगिरिके यादवोंके अधिकारमें था। सन् १३१८ में दिल्लीका गवर्नर देवगिरिमें रहकर महाराष्ट्र देशमे हुकूमत करने लगा। सन् १३३८ में महम्मद तुगलकने देवगिरिका नाम दौलताबाद रक्खा। सन् १३४६ में दिल्लीके बादशाहके अफसरोंने लूट पाट करके उस देशको बरबाद किया, तब दक्षिणके सरदारोंने एक अफगान सिपाही हसनको अगहर बनाकर दिल्ली वालोंको परास्त करके डेकान अर्थात् दक्षिणको स्वाधीन बनाया। तभीसे बहमनी खानदानका राज्य नियत हुआ। हसनने अपने रक्षक एक ब्राह्मणके स्मरणार्थ जो मुसलमान हो गया था, उस खानदानका नाम बहमनी रक्खा और शोलापुरमें किला बनवाया, जो अब तक विद्यमान है; किन्तु किलेके भीतरीकी दीवार १६ वीं और १७ वीं सदीकी बनी हुई है। सन् १४८९ में बीजापुरके गवर्नरने बहमनी वंशके राजाको परास्त करके शोलापुरको अपने आधीनकर लिया; तबसे लगभग २०० वर्ष तक शोलापुर कभी बीजापुरके और कभी अहमदनगरके अधिकारमें चला आया। सन् १६८६ मे दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबने बीजापुरके राजाको परास्त करके शोलापुरको ले लिया। अठारहवीं सदीमें मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय महाराष्ट्रोंने शोलापुरको अपने आधीनकर लिया। सन् १८१८ मे अङ्गरेज महाराजने बम्बई हातेके दूसरे जिलोंके साथ पेशवासे शोलापुर ले लिया। प्रथम यह पूना जिलेके साथ था, किन्तु सन् १८३८ मे एक अलग जिला बनाया गया।

# होतगी जंक्शन।

शोलापुरसे ९ मील और धोंद जंक्शनसे १२६ मील दक्षिण-पूर्व होतगी जंक्शन है। होतगी सन् १३४७ से १४४२ तक डेकानकी राजधानी थी। होतगीमे रेलवे लाइन तीन तरफ गई है।

(१) होतगीसे दक्षिण-पूर्व रायचुर तक 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला, रेलवे और रायचुरसे दक्षिण-पूर्व मदराम रेलवे है।

मील प्रसिद्ध स्टेशन।

६१ गुलबर्गा।
८४ वारी जंक्शन।
१३५ कृष्णा।
१४५ रायचुर छावनी।
१५१ रायचुर कसबा।
१६८ तुङ्गभद्रा नदी।
१९४ अदोनी।
२२६ गुटकल जंक्शन।
३११ गूटी।
[illegible] कडप्पा।
४१८ रेनिगुंटा जंक्शन।
४५९ आरकोनम् जंक्शन।
४७६ त्रिवलोर।
५०२ मदराम।

वाडी जंक्शनसे निजाम स्टेट रेलवे पर पूर्व ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकन्दराबाद, २०८ वारंगल और वारंगलसे दक्षिण-पूर्व १०६ मील बेजवाडा है।

गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण ६३ मील धर्मवरम् जंक्शन और १.४ मील बंगलोर शहर है। (वहांसे ५

लाइन निकली है गुंटकलमें देखो )

(२) पश्चिमोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे.—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

९ शोलापुर।

२९ मोहल।

५८ बार्सी रोड।

१२६ धोंद जंक्शन।

(३) होतगीसे दक्षिण सदर्न मरहठा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २½ पाई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५८ बीजापुर।

१३१ बादामी।

१७३ गदग जंक्शन।

गदगसे पूर्व कुछ दक्षिण ११ मील हरपालपुर, ५२ मील हुसपेट, ६८ मील गादिगनूर, ९१ मील बलारी छावनी और ९३ मील बलारी शहर और १२३ मील गुंटकल जंक्शन।

गदगसे पश्चिम ३६ मील हुबली जंक्शन, ४८ मील धारवाड, ९२ मील लोंडा जंक्शन १०७ मील कैसलरक और १५८ मील पोर्चुगीजोंके राज्य में गोआके पास मरमागोवा बन्दरगाह।

लोंडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील बेलगाँव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मिराज जंक्शन, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील बाथर और २७८ मील पूना जंक्शन।

# गुलबर्गा।

होतगी जंक्शनसे कई मील आगे जाने पर हैदराबादका राज्य मिलता है। होतगीसे ६१ मील दक्षिण-पूर्व गुलबर्गाका रेलवे स्टेशन है। हैदराबादके राज्यमे जिलेका सदर स्थान गुलबर्गा एक पुराना कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गुलबर्गामें २८२०० मनुष्य थे, अर्थात् १४७४७ पुरुष और १३४५३ स्त्रियाँ। इनमे १५२११ हिन्दू, १२६६८ मुसलमान, १७५ कृस्तान, १४१ जैन और ५ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह निजामके राज्यमें तीसरा शहर है।

निजाम सरकारके बहुतेरे आफिस और अफसरोंके लिये इमारतें रेलवे स्टेशनसे कसबे तक फैली हुई हैं। पुराना किला पीछेकी जमीन पर है, जिसमे जगह जगह बहुतेरे गुम्बज देख पड़ते हैं। एक खूबसूरत फाटकसे कसबेमे प्रवेश करना होता है, जिसमें सब दिशाओंमे नई इमारतें देख पडती हैं। और ३७० फीट लम्बा और ६० फीट चौडा एक बाजार है, जिसमें ६१ मेहराबियोंका एक कतार है। गुलबर्गाका जेलखाना बहुत सुन्दर है।

किलेकी बहुतेरी पुरानी इमारतें बाहरकी दीवारें और अनेक फाटक अतिहीन दशामें हैं। गढ या बालाहिसारको कम नुकसानी पहुँची है। इसके सिरेपर २० जोडे लोहेकी

कडिया लगी हुई २६ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पडी है। पुराने किलेमें फिरोजशाह राज्यके समयकी बनी हुई २१६ फीट लम्बी और १७६ फीट चौडी जुमामसजिद है। इसमें पश्चिमके अतिरिक्त तीन तरफ मेहराबियाँ बनी हुई हैं। मसजिदकी सम्पूर्ण जगह एकही छतके नीचे है। इतनी वडी मसजिद हिन्दुस्तानमे दूसरी नहीं है। यह हिन्दुस्तानमें पठानोके मत्रसे उत्तम पुरानी मसजिदोमेसे एक है।

शहरके पूर्वके महल्लेमे पुराने मकबरे है। वहां बड़े बड़े मोरब्बे गुम्बजदार मकबरोमे १४ वीं सदीके अखीरसे राज्य करनेवाले मुसलमान गाड़े गये है। उसी जगहमें तालुकदारकी कचहरी, गुलबर्गाका खजाना और अनेक जुडिसियल आफिस है।

इनसे थोडे फासिलेपर सन् १६४० की बनी हुई चीस्ती खान्दानके प्रसिद्ध मुसलमान फकीर बन्दानियाजकी, जो सन् १४१३ मे गुलबर्गामे आया था, दरगाह है। इस स्थानको इस प्रदेशके मुसलमान बहुत आदर करते है। सच्चे इतकाद करनेवालोके सिवा कोई आदमी दरगाहके भीतर नहीं जाने पाता है। इसके पास औरङ्गजेबकी बनवाई हुई सराय, मसजिद और मदरसा है। इनके सिवा गुलबर्गामे रुकनुद्दीन और शिराजुद्दीनका दरगाह और चोर गुम्बज नामक मकबरा है।

इतिहास—बहमनी खान्दानके मुसलमान बादशाहोने जिस ( खान्दान ) का राज्य सन १३४७ ई० में आरम्भ हुआ था, प्रथम गुलबर्गामे रहकर राज्य किया था। पीछे उनकी राजधानी बीदर हुआ। उस खान्दानके अन्तिम बादशाहको सन् १५१२ में कुतबशाही खान्दानके बादशाहने बीदरकके तख्तसे उतार दिया। सन् १६३५ तक गुलबर्गा डेकानके गवर्नमेन्टका सदर स्थान था, उसके बाद बीदर सदर मुकाम हुआ।

# पाँचवाँ अध्याय।



## ( हैदराबादके राज्यमें ) वाडी जंक्शन, हैदराबाद, बीदर, नांडेड़ और वारंगल।

## वाडीजंक्शन।

गुलबर्गासे २२ मील ( होतगी जंक्शनसे ८४ मील ) दक्षिण-पूर्व हैदराबादके राज्यमें ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला और निजाम स्टेट रेलवे का जंक्शन वाडीमें है। उससे पूर्व निजाम स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकन्दराबाद और २०८ मील वारंगल और वारंगलसे दक्षिण-पूर्व १२६ मील बेजवाड़ा है।

रायचूर, अदोनी, गुंटकल जंक्शन, गूटी, कडापा, रेनीगुन्टा जंक्शन, आरकोनम, [illegible] मद्रास शहर तथा [illegible], काँची, चिदम्बरम्, कुम्भकोनम्, तञ्जौर, [illegible] [illegible], टुटीकोरिन इत्यादि स्थानोंमें जानेवालोंको वाडी जंक्शनसे दक्षिण-पूर्वको [illegible] और मद्रास रेलवेसे जाना चाहिये। मैं, वाडीसे पूर्व हैदराबादकी ओर चला।

# हैदराबाद।

वाडी जंक्शनसे ११५ मील पूर्व कुछ उत्तर हैदरावादका रेलवे स्टेशन है। हैदरावादके राज्यके तैलंगदेशमे (१७ अंश, २१ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ३० कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग १७०० फीट ऊपर मूसी नदीके दक्षिण किनारेपर हैदरावादके राज्यकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान शहर हैदरावाद है। एक अच्छी सडक हैदरावाद शहरसे दक्षिण कुछ पूर्व मदरास शहरको गई है, जिसमें कटकसे आने वाली समुद्रके पासकी सडक आकर मिली है।

सन्‌१८९१की मनुष्य-गणनाके समय हैदरावाद शहर और उसकी छावनीमे४१५०३९ मनुष्य थे, अर्थात् २१६३२४ पुरुष और १९८७१५ स्त्रियॉ। इनमे २२६८४० हिन्दू. १७२८६१ मुसलमान, १३८२९ क्रस्तान, ६६९ सिक्ख, ६१६ पारसी, २०३ जैन और२१ यहूदी थे। इनमेसे शहरतलियोंको छोडकर खास शहरमे ३१२३९० मनुष्य थे। मनुष्य—गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे चौथा शहर है।

शहरका क्षेत्रफल २ वर्गमील है; इसके चारो ओर ६ मील लम्बी दीवार बनी हुई है। शहरके चारोंओर जङ्गल और पहाड़ियोंका मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। पश्चिमोत्तरकी दीवारमें पूर्व चादरफाटक, उससे पश्चिम क्रमसे दिल्लीफाटक, चम्पाफाटक, चारमहलफाटक, और पुराना पुलफाटक, पश्चिम—दक्षिणकी दीवारमें दुधनीफाटक. फतहफाटक; और अलीआ-वादफाटक; दक्षिणकी दीवारमे गौलीपुरफाटक, और गाजीवन्दफाटक और पूर्वकी दीवारमें मीरजुमलाफाटक, याकूवपुरफाटक और दाउदपुरफाटक है। शहरके पास मूसीनदीकी चौडाई लगभग ४०० गजसे ५०० गजतक है।

हैदरावादमे निजामका महल, अङ्गरेजी रेजीडेंसी और अनेक मसजिदे शहरकी प्रधान इमारते हैं।

रेलवे स्टेशनसे उत्तर एक उत्तम पवलिक वागमें २ सायवान और एक जंतुशाला है। बागके उत्तरीय भागमें 'नौवत पहाड़' नामक एक काला चट्टान है। बागके पास निजामकी सैफाबादकी फौजी छावनी है। शहरके पड़ोसमें वहुतेरे उत्तम वागोमें वङ्गले और मकान वनेहुए है। निजामके मन्त्रीका बाग ऊँची दीवारोंसे घेरा हुआ वहुत मनोहरहै, इसके मध्यमें मार्वुलके तख्तोंसे वना हुआ एक हौज है। सीतारामवागमे बरदराज, सीताराम और श्रीरामानुज-स्वामीका मन्दिर है। इसके अलावे हैदरावादमे वहुतेरे हिन्दू, मन्दिर बने है। शहरके पूर्व घोडदौड़का मैदान है, जिसमें प्रति वर्ष अकतूवरमे ५ दिनो तक घोडदौड होता है।

हैदराबाद शहरमे अति उत्तम इमारत बहुत नहीं है; किन्तु वाजार वहुत मनोरम है। उसमें भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंके लोगोंकी भीड़ रहती है और अरव, वोखारा, पारस इत्यादि दूसरे देशोंके मुसलमान और अन्य मतके लोग भी बहुत देखनेमे आते है। शहरमे कालीन, घोडेके साजके लिये मखमल, सूत मिले हुए रेशमके असवाव और लाल मट्टीके वर्तन बहुत तैयार होते है। शहरके कई मील दक्षिणके बड तालाबसे शहरमे पानी आता है। शहरकी प्रधान सड़कोपर रातमे लालटेनोकी रोशनी होती है। हैदराबाद-सरकारकी ओरसे एक टकशाल और करेंसीनोट जारी है। शहरसे ७ मील पश्चिम गोलकुण्डाका पुराना किला है।

मूसीनदीपर पश्चिमोत्तर तीन पुल हैं;—सबसे पूर्व सन् १८३१ का बना हुआ ओलिफेंट पुल, उससे पश्चिम अफजल पुल और उसके बाद पुराना पुल। अफजल पुल लॉघ करके रेजीडेसी स्कूल और सीटी अस्पतालके पास जाना होता है। उस अस्पतालसे लगी हुई ४ ऊँचे मीनारोके साथ अफजल मसजिद और सड़कके दूसरी तरफ औरतोका अस्पताल है। एक चौडी सडक, पुल लॉघकर अफजल फाटकसे शहर होकर गई है। चन्द सौ गज दूर उसके पास मृतसर सालारजङ्ग बहादुर जी० सी० एस० आईका, जो राज्यके इन्तजाममें बडा नामबर था, बारहदरी नामक महल है। वहाँ एक कमरेमे पहलेके रेजीडेट लोगो और दूसर प्रसिद्ध आदमियोकी तस्वीरे टॅगी है। इसके आगे फौआरोके साथ पानीका एक हौज है। सीलीखानेमें भाति भांतिके पुराने हथियार और वख्तरोके अजीब नमूने देखनेमें आते हैं।

अफजल पुलसे करीब ¾ मील दूर शहरके प्रायः मध्यमें, जहॉ शहरकी ४ प्रधान सडके मिलती है, १०० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी और १८६ फीट ऊँची सन् १५९१ की बनी हुई चार मीनार नामक इमारत है, जिसमे ४ मीनार बने है। उसके ऊपरके कई एक मञ्जिलोंमे कमरे हैं।

चारमीनारके थोड़ा पूर्व शहरकी मसजिदोंमे प्रधान जामामसजिद है, जिसको मक्का मसजिद भी लोग कहते है। यह मक्काकी मसजिदके ढांचेकी बनी हुई है। इसका विस्तार ३६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। भीतर एकही पत्थरके बहुत ऊँचे ऊँचे खंभे लगे है। जमीन,पत्थरके तख्तोसे पाटी हुई है। ऊपर ४ ऊँचे मीनार है। ऑगनके एक बगलपर खास मसजिद है। मुसलमानी तिहवारोके समय आठ दस हजार मुसलमान एबादतके लिये वहॉ एकत्र होते हैं।

निजामका महल—यह चारमीनारके पश्चिम बगल पर है। महल बहुत सुन्दर नहीं है परन्तु इसका विस्तार बहुत बडा है चौकसे निजामके महलको जाने पर एक फाटकसे बड़े चौगानमें जाना होता है, जिसके दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक गली है, जो एक दूसरे चौगानको गई है, जिसमे करीब २००० सवार, नौकर, इत्यादि रहते हैं। उसके दक्षिण-पश्चिमके कोनेसे एक रास्ता तीसरे चौगान (चौक) को गया है, जहा साधारण तरहसे एक या दो हजार नौकर देखनेमें आते है। महलकी इमारतें हर बगलमें तेहरानके शाहके महलके मानिन्द खूबसूरत है। कहा जाता है कि महलकी इमारतोंमे ७००० आदमी रहतेहैं।

मुहर्रमके समय दगरके उत्सवमे निजामकी ३०००० फौज जलसामें निकलती है। कहाजाता है कि हैदराबादके बसानेवाले बादशाह कुतुबशाह महम्मद कुलीके स्मरणार्थ यह उत्सव होता है। महलसे २०० गज दूर बगलकी सडकके पास वह मकान है, जिसमें [illegible] मिनिएर चन्दूलाल रहते थे। यह नीचा लेकिन बहुत उमदा मकान है।

चौक और शहरके पश्चिमकी दीवारके बाद समसुल उमराका बनवाया हुआ बारहदरी नामक बड़ा महल है। इसके सिरपर चढनेसे शहरका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है। [illegible] पश्चिम और गोलकुण्डाका किला और उसके पास बादशाहोंके मकबरे और दक्षिण और [illegible] महल और अमीर कबीरकी बनवाई हुई एक मसजिद देख पड़ती है।

[illegible] फाटकसे बाहर एक बहुत लम्बा बाजार है जिसमें खास मकान बने हुए [illegible], जिसमें हजारों फौजी पैदल और सवार रहते हैं। उसके

## हैदराबाद।

वाडी जंक्शनसे ११५ मील पूर्व कुछ उत्तर हैदरावादका रेलवे स्टेशन है। हैदरावादके राज्यके तैलंगदेशमे ( १७ अंश, २१ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ३० कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रके जलसे लगभग १७०० फीट ऊपर मूसी नदीके दक्षिण किनारेपर हैदरावादके राज्यकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान शहर हैदरावाद है। एक अच्छी सडक हैदरावाद शहरसे दक्षिण कुछ पूर्व मदरास शहरको गई है, जिसमे कटकसे आने वाली समुद्रके पासकी सडक आकर मिली है।

सन्१८९१की मनुष्य-गणनाके समय हैदरावाद शहर और उसकी छावनीमें४१५०३९ मनुष्य थे, अर्थात् २१६३२४ पुरुप और १९८७१५ स्त्रियाँ। इनमे २२६८४० हिन्दू. १७२८६१ मुसलमान, १३८२९ कृस्तान, ६६९ सिक्ख, ६१६ पारसी, २०३ जैन और२१ यहूदी थे। इनमेसे शहरतलियोंको छोडकर खास शहरमें ३१२३९० मनुष्य थे। मनुष्य—गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे चौथा शहर है।

शहरका क्षेत्रफल २ वर्गमील है; इसके चारो ओर ६ मील लम्बी दीवार बनी हुई है। शहरके चारोंओर जङ्गल और पहाडियोंका मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। पश्चिमोत्तरकी दीवारमे पूर्व चादरफाटक, उससे पश्चिम क्रमसे दिल्लीफाटक, चम्पाफाटक, चारमहलफाटक, और पुराना पुलफाटक, पश्चिम—दक्षिणकी दीवारमें दुधनीफाटक. फतहफाटक; और अलीआ-बादफाटक; दाक्षिणकी दीवारमे गौलीपुरफाटक, और गाजीवन्दफाटक और पूर्वकी दीवारमें मीरजुमलाफाटक, याकूबपुरफाटक और दाउदपुरफाटक है। शहरके पास मूसीनदीकी चौडाई लगभग ४०० गजसे ५०० गजतक है।

हैदराबादमें निजामका महल, अङ्गरेजी रेजीडेंसी और अनेक मसजिदे शहरकी प्रधान इमारते हैं।

रेलवे स्टेशनसे उत्तर एक उत्तम पवलिक बागमें २ सायवान और एक जंतुशाला है। बागके उत्तरीय भागमें 'नौवत पहाड़' नामक एक काला चट्टान है। बागके पास निजामकी सैफाबादकी फौजी छावनी है। शहरके पड़ोसमें वहुतेरे उत्तम बागोमे बङ्गले और मकान बनेहुए हैं। निजामके मन्त्रीका बाग ऊँची दीवारोंसे घेरा हुआ बहुत मनोहरहै, इसके मध्यमें मार्बुलके तख्तोंसे बना हुआ एक हौज है। सीतारामबागमे वरदराज, सीताराम और श्रीरामानुज—स्वामीका मन्दिर है। इसके अलावे हैदरावादमे बहुतेरे हिन्दू, मन्दिर बने है। शहरके पूर्व घोड़दौड़का मैदान है, जिसमें प्रति वर्ष अकतूबरमे ५ दिनो तक घोड़दौड होता है।

हैदराबाद शहरमे अति उत्तम इमारत बहुत नहीं है, किन्तु बाजार बहुत मनोरम है। उसमें भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंके लोगोंकी भीड़ रहती है और अरब, बोखारा, पारस इत्यादि दूसरे देशोंके मुसलमान और अन्य मतके लोग भी बहुत देखनेमे आते है। शहरमे कालीन, घोड़ेके साजके लिये मखमल, सूत मिले हुए रेशमके असवाव और लाल मट्टीके वर्तन बहुत तैयार होते है। शहरके कई मील दक्षिणके बड तालाबसे शहरमे पानी आता है। शहरकी प्रधान सड़कोपर रातमे लालटेनोकी रोशनी होती है। हैदराबाद-सरकारकी ओरसे एक टकशाल और करेंसीनोट जारी है। शहरसे ७ मील पश्चिम गोलकुण्डाका पुराना किला है।

मूसीनदीपर पश्चिमोत्तर तीन पुल हैं;—सबसे पूर्व सन् १८३१ का बना हुआ ओलिफेंट पुल, उससे पश्चिम अफजल पुल और उसके बाद पुराना पुल। अफजल पुल लॉघ करके रेजीडेंसी स्कूल और सीटी अस्पतालके पास जाना होता है। उस अस्पतालसे लगी हुई ४ ऊँचे मीनारोंके साथ अफ़जल मसजिद और सड़कके दूसरी तरफ औरतोंका अस्पताल है। एक चौडी सड़क, पुल लॉघकर अफ़जल फाटकसे शहर होकर गई है। चन्द सौ गज दूर उसके पास मृतसर सालारजङ्ग बहादुर जी० सी० एस० आईका, जो राज्यके इन्तजाममें बडा नामवर था, बारहदरी नामक महल है। वहॉ एक कमरेमे पहलेके रेजीडेंट लोगों और दूसरे प्रसिद्ध आदमियोंकी तस्वीरें टॅगी है। इसके आगे फौआरेके साथ पानीका एक हौज हैं। सीलीखानेमें भांति भांतिके पुराने हथियार और बख्तरोंके अजीव नमूने देखनेमे आते हैं।

अफजल पुलसे करीब ¾ मील दूर शहरके प्रायः मध्यमें, जहाँ शहरकी ४ प्रधान सड़के मिलती हैं, १०० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी और १८६ फीट ऊँची सन् १५९१ की बनी हुई चार मीनार नामक इमारत है; जिसमे ४ मीनार बने है। उसके ऊपरके कई एक मञ्जिलोंमे कमरे है।

चारमीनारके थोड़ा पूर्व शहरकी मसजिदोंमे प्रधान जामामसजिद है, जिसको मक्का मसजिद भी लोग कहते हैं। यह मक्काकी मसजिदके ढांचेकी बनी हुई है। इसका विस्तार ३६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। भीतर एकही पत्थरके बहुत ऊँचे ऊँचे खंभे लगे है। जमीन,पत्थरके तख्तोंसे पाटी हुई है। ऊपर ४ ऊँचे मीनार है। ऑगनके एक बगलपर खास मसजिद है। मुसलमानी तिहवारोंके समय आठ दस हजार मुसलमान एबादतके लिये वहॉ एकत्र होते हैं।

निजामका महल—यह चारमीनारके पश्चिम बगल पर है। महल बहुत सुन्दर नहीं है परन्तु इसका विस्तार बहुत बड़ा है चौकसे निजामके महलको जाने पर एक फाटकसे बड़े चौगानमे जाना होता है, जिसके दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक गली है, जो एक दूसरे चौगानको गई है, जिसमें करीब २००० सवार, नौकर, इत्यादि रहते हैं। उसके दक्षिण-पश्चिमके कोनेसे एक रास्ता तीसरे चौगान ( चौक ) को गया है, जहा साधारण तरहसे एक या दो हजार नौकर देखनेमें आते हैं। महलकी इमारतें हर बगलमें तेहरानके शाहके महलके मानिन्द खूबसूरत हैं। कहा जाता है कि महलकी इमारतोंमे ७००० आदमी रहतेहैं।

मुहर्रमके समय लंगरके उत्सवमें निजामकी ३०००० फौज जलसामें निकलती है। कहाजाता है कि हैदराबादके बसानेवाले बादशाह कुतुबशाह महम्मद कुलीके स्मरणार्थ यह उत्सव होता है। महलसे २०० गज दूर बगलकी सड़कके पास वह मकान है, जिसमे प्रसिद्ध मिनिष्टर चन्दूलाल मरे थे। यह नीचा लेकिन बहुत उमदा मकान है।

चौक और शहरके पश्चिमकी दीवारके बाद समसुल उमराका बनवाया हुआ बारहदरी नामक बडा महल है। इसके शिरपर चढनेसे शहरका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है। वहांसे पश्चिम और गोलकुण्डाका किला और उसके पास बादशाहोंके मकबरे और दक्षिण और जहान्नुमाका महल और अमीर कबीरकी बनवाई हुई एक मसजिद देख पडती है।

अलीआबाद फाटकके बाहर एक बहुत लम्बा बाजार है, जिसमें साफ मकान बने हुए है। इसके बाद एक ऑगन है, जिसमे हजारहा फौजी पैदल और सवार रहते हैं। उसके

अखीरके परस कालीन विछा हुआ सीढीघर है, जिसकी सीढ़ियाँ मेहमानोंके रहनेवाले कमरेमें गई हैं। महल, साज और सामानोंसे भरा हुआ है।

मीर आलम तालाव—शहरके दक्षिणकी दीवारसे २ मील दूर ७ मीलके घेरेमें मीर आलम तालाव है। ११२० गज लम्बी २१ मेहराबियोंकी तालावकी पुस्ता बन्दी है, जो फ्रेंच इनजिनियर द्वारा बनाई गई थी। उसके बनानेमें ८०००० पाउण्ड अर्थात् ८ लाख रुपया खरच पडा। उस तालावमे कई आगबोट रहते हैं। तालावसे ३०० गज दूर एक बॅंगला और उसके अखीर पश्चिम ८० फीट ऊंची एक पहाडी है, जिसके शिरे पर अच्छी बनावटका महब्बत अलीका दरगाह है।

रेजीडेंसी—शहरसे लगभग १ मील पश्चिमोत्तर चादरघाट नामक शहरतलीमें अङ्गरेजी रेजीडेंसी है, जिसके चारो ओर १२००० वासिन्दोंका बाजार है। रेजीडेंसीके चारो ओर पक्की दीवार है, जो सन् १८०३—१८०८ में बनी और सन् १८५७ के आक्रमणके पीछे मजबूत की गई। रेजीडेंसी और निजामके महलके बीचमें ८ मेहराबियोंका पत्थरका सुन्दर पुल बना है। रेजीडेंसीके उत्तरका अगवास, नदीमे और शहरसे देख पड़ता है। रेजीडेंसीमें दो फाटक हैं। सीढ़ी घरकी प्रत्येक सीढ़ियां एकही ग्रेनाइट पत्थरकी बनी हुई हैं। रेजीडेंसीके पास रेजीडेंसका एक खानगी मकान है।

सिकन्दरावाद—हैदरावाद शहरसे ६ मील उत्तर कुछ पूर्व सिकन्दरावादका रेलवे स्टेशन है। सिकन्दरावाद हिन्दुस्तानमे वहुत वड़ी अङ्गरेजी फौजी छावनी है। यह १९ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैली हुई है एक सड़क हैदरावादसे सिकन्दरावादको गई है, जिसके किनारोंपर वहुतेरे देशी धनी और निजामकी कचहरीके अफसरोंके वहुतेरे विले (देहाती बॅंगले) बने हैं। सड़कके पश्चिम हुसेन सागर तालाव है। सिकन्दरावादमे वहुत वडी परेडकी जमीन है। उसके उत्तर बगल पर बहुतेरे अफसरोंके मकान, खूबसूरत रेलवे स्टेशन और एक बडा गिरजा है। परेड ग्राउण्डके दक्षिण बगल पर कबरगाह और परेडकी जमीनके पास मट्टीका एक किला है।

त्रिमलगिरि—सिकन्दरावादके ३ मील पूर्वोत्तर त्रिमलगिरिके पास ७ फीट ऊंची दीवार और ७ फीट गहरी खाईसे घेरा हुआ एक लस्करगाह है। जिसके कई बुर्जों पर तोप चढ़ाई हुई हैं।

बुलारम—सिकन्दरावादसे ६ मील और हैदरावाद शहरसे ११ मील उत्तर और हैदरावाद कन्टिनजेन्ट फौजकी छावनी बुलारम है। वहाँ निजामकी फौजे रहती है।

गोलकुण्डा—हैदरावादसे ७ मील पश्चिम हैदरावादके राज्यमें उजड़ा हुआ पुराना शहर गोलकुण्डा है वहाँ एक किला है, जिसको वारङ्गलके राजाने वनवाया था पीछे सन् १३६४ ई० में वारङ्गलके राजाने गुलवर्गाके बाहमनी बादशाहको वह किला दे दिया। सन् १५१२ में कुतुबशाही खांदानके बादशाहने बहमनी वंशके बादशाहसे किलेको छीन लिया। सन् १६८८ मे मुगल बादशाह औरङ्गजेबने कुतुबशाही। खान्दानके बादशाहको कैद करके गोलकुण्डाको ले लिया। कुतुबशाही राज्यका अन्त होगया।

किलेके पत्थरका घेरा ३ मीलसे अधिक लम्बा है। उसमें ८७ बुर्ज बने हुए हैं, जिनमेंसे कोई एक पर पुरानी कुतुबशाही तोपोंमेंसे कई तोप अब तक रक्खी है। दीवारके बाहरकी

चारों तरफकी खाई बहुतेरी जगहोंमे भरगई है। उस किलेमें निजामका खजाना और राज्यके कैदी रहते है और निमाजसागर नामक तालाब तथा पुराने महलोंके खँड़हर है।

पहाड़ीके सिरे पर किलेकी दीवारोंके भीतर बालाहिसार अर्थात् बादशाही महलका खंडहर है जिसकी ऊँचाई मैदानसे करीब ४०० फीट है एक बाग होकर बालाहिसारके फाटक पर जो अभी मरम्मत है, पहुँचना होता है उस पहाडीके सिरेपर बादशाहका महल था, जिसकी कई मेहराबियाँ अब तक खडी हैं। किसी किसीको किला देखनेके लिये पास मिल जाता है।

किलेसे ६०० गज पूर्वोत्तर एक मैदानमें कुतुबशाही बादशाहोंके मकबरे है उनमेसे बहुतेरे खराब हालतमे विद्यमान है उनके नाम ये हैं,—पहिला कुतुबशाही वंशको नियत करनेवाला सुलतान कुली कुतुब जो सन् ९५० हिजरी ( १५४३ ई० ) में मरा, दूसरा जमसिद कुली कुतुब, जो सन् १५५० में मरा; चौथा इब्राहिम कुली कुतुब शाह, जो सन् ९८८ हिजरी ( १५८० ई० ) में मरा, पाँचवाँ महम्मद कुली कुतुबशाह, जिसने हैदराबादको बसाया और सन् १०३५ हिजरी ( १६२५ ई० ) मे मरा, और छठवाँ सुलतान अबदुलकुतुब शाह, जो सन् १०८३ हिजरी ( १६७२ ई० ) में मरा। महम्मद कुली कुतुबशाहका मकबरा सब मकबरोंसे बडा १६८ फीट ऊंचा है। कुतुब शाही वंशका पिछला बादशाह आबुलहसन्को औरङ्गजेबने जन्मभर कैद रहनेके लिये दौलताबादके किलेमें भेज दिया; वहाँ सन् १७०१ में वह मरगया। कुतुबशाहियोमे वही एक यहाँ नहीं गाड़ा गया।

पूर्व समयमे गोलकुण्डा हीरेके लिये प्रसिद्ध था। खास करके निजाम राज्यके दक्षिण पश्चिमकी सीमाके पासके पुर्टियलसे हीरा आतेथे और गोलकुण्डेमें काढकर दुरुस्त किये जाते थे और उनपर पालिस होती थी।

हैदराबादका राज्य—इसको निजाम-राज्य भी कहते है यह राज्य भारतवर्षके देशी राज्योंमें सबसे बहुत बडा८२६९८ वर्गमीलमे फैला है इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्व-दक्षिण से पश्चिमोत्तर तक लगभग ४७५ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पश्चिम-दक्षिणसे पूर्वोत्तर तक ४०० मील है। इसके उत्तर बरार, पूर्वोत्तर और पूर्व मध्यदेश; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर बम्बई हाता है इस राज्यके पश्चिमी भागमे अङ्गरेजी राज्यके कई छोटे टुकडे हैं। राज्यके उत्तरीय विभागमें मेहदक, इन्दुर, वारङ्गल और सिरपुर तदूर जिला, पश्चिमोत्तर विभागमे औरङ्गाबाद, बीड़ और प्रभानी जिला, पश्चिमी विभागमें बीदर, नन्देड और नालदुर्ग जिला, दक्षिणीय विभागमें रायचुर, लिङ्गसागर, शोरापुर और गुलबर्गा जिला और पूर्वी विभागमें कामेट, नलगोंड़ा और नागर करनूल जिला है। इन जिलोंके अतिरिक्त राजधानी हैदराबादका जिला अलग है । निजामको हैदराबादके राज्यसे लगभग ३ करोड रुपयेकी आमदनी है।

हैदराबादके राज्यके चन्द हिस्सोंमे पहाडियाँ और अन्य विभागोंमें जगह जगह समतल और जगह जगह नीची ऊँची भूमि है। मैदान ऊपजाऊ है जगह जगह ऊपर भूमिभी देखनेमे आती है। राज्यकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे १२५० फीट है। कई एक पहाडी चोटियाँ २५०० फीट ऊंची है। राज्यकी पहाडियोंमे बालाघाट सिलसिला, जो पूर्वसे पश्चिमको गया है, सैदियाद्री सिलसिला, जो इन्दुर जिलेसे बरार तक और बरारसे बम्बई हातेके खान

देश जिले तक गया है और सह्याद्री सिलसिला, जो निजाम राज्यके भीतर लगभग २५० मील है, जिसमेंसे १०० मील अजन्ताघाट सिलसिला, कहलाता है, प्रधान है।

पेनगङ्गा और वरधा नदीके संगमके निकट, वरधा नदीकी घाटीमे कोयलेकी खानियोंके मैदान है। उसीके आस पास लोहा और कंकड़की भी खानियाँ हैं। वाडी जंक्शनके समीप शाहावादमें पत्थरकी उत्तम खान है, जिससे मार्वुलके समान चिकना भूरे और काले रंगके पत्थर निकलते हैं; जो हैदरावाद शहर और दूसरे स्थानोमे इमारत वनानेके लिये भेजे जाते हैं। इसके अलावे दूसरीभी पत्थरकी कई खानियाँ हैं। पूर्व समयमें हीरेकी अनेक खानियाँ थीं।

इस राज्यकी प्रधान नदी गोदावरी है, जो नासिकके पास त्र्यम्बकसे निकल कर इस राज्यके मध्य होकर दक्षिण-पूर्व वहनेके उपरान्त वङ्गालकी खाढ़ीमे गिरती है। उसके वाद कृष्णा और तुंगभद्राहै। यह तीनो नदियाँ राज्यके भीतर और राज्यकी सीमापर वहती हैं। तुङ्गभद्रा कृष्णामें मिल गई है। इनके अलावे निजाम राज्यमें वहुतेरी छोटी नदियाँ और छोटे वडे लगभग १८००० जलाशय हैं।

धान, गेहूँ आदि सव प्रकारके गल्ले, तेलके वीज, नील, ऊख, कपास वहुत उत्पन्न होते हैं। खरवूजा, ककडी, आदि विविध प्रकारके फल वहुत होते हैं। मुरई, कन, अदरक, हलदी, आलू, इत्यादिभी होते है। वनोंमे रेशम वाले कीडे सर्वत्र हैं। मधु जङ्गलोसे वहुत निकाला जाता है। गोदभी वहुत होता है। अनेक प्रकारके गल्ले, चावल, रुई, तेलके वीज, देशी कपडा, धातुके वर्तन, चमडा इत्यादि सामान हैदरावादके राज्यसे दूसरे स्थानोमे भेजे जाते है और गल्ले, लकडी, यूरोपियन चीजें, इत्यादि वस्तु दूसरे स्थानोसे वहां आती हैं। पूर्वी और पश्चिमी किनारेसे निमक आता है। इस राज्यके कसवे वीदरमे वीदरके कामके धातुके उत्तम वर्त्तन, औरंगावाद, गुलवर्गा और अन्य कसवोमे कपडे पर सोनेका सुन्दर काम और दौलतावादके किलेके निकट कागजपुर ग्राममें अनेक प्रकारके उत्तम कागज वनते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हैदरावाद राज्यके ८२६९८ वर्गमीलमें ११५३७०४० मनुष्य थे, अर्थात् ५८७३१२९ पुरुष और ५६६३९११ स्त्रियाँ। इनमे १०३१५२४९ हिन्दू, ११३८६६६ मुसलमान, २९१३० जङ्गली जातियाँ इत्यादि, २७८४५ जैन, २०४२९ कृस्तान, ४६३७ सिक्ख, १०५८ पारसी और २६ यहूदी थे। इनमेसे सैकड़े पीछे ४३½ तेलगू अर्थात् तैलंगी भाषावाले, ३०⅔ महाराष्ट्री भाषावाले, १२⅔ कनड़ो अर्थात् करनाटकी भाषावाले, १०½ उर्दू भाषावाले, और ३⅙ अन्य भाषावाले मनुष्य थे। पढ़े हुए लोगोंमे प्रत्येक हजारमें ५६९ ब्राह्मण, ५ ब्राह्मणी, ४३८कायस्थ, १५१ विदुर और शेपमें दूसरी जातियोंके लोग थे। राज्यके पूर्व-दक्षिणके वड़े भागमें तैलंगी भाषा दक्षिण-पश्चिमके भागमें कृष्णानदीके आस पास कनडी अर्थात् करनाटकी भाषा और पश्चिम तथा उत्तरके भागमे महाराष्ट्री भाषा सर्व साधारण लोगोंमे प्रचलित है। पश्चिमी भागमे महाराष्ट्र लोग अधिक है। राजधानी और सरकारी कामोंमे खासकर मुसलमान लोग वहुत है। इस राज्यमें शिक्षाकी तरक्की हुई है। एक शिक्षाका डाइरेक्टर निजाम कालिज, ओरिएण्टल कालिज, मेडिकल स्कूल इत्यादि नियत हुए हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हैदरावाद राज्यके ९८४५५९४ मनुष्योंमें ९२५९२९ मुसलमान थे. अर्थात् ४८४१५५ शेख, ८९९०९ सैयद, ६१४३७ पठान, १५४२३ मुगल और २७५००५ दूसरे मुसलमान । इनके अतिरिक्त दूसरी जातियोंके १६५८६६५ कुन्वी, ८०६६५३ महारा, ४८२०३५ धांगड़; ४४७३१२ चमार, ३९३१८४ वनियाँ, ३६९६३६ महाराष्ट्र, ३२७३३८ तेलिंगा, ३१५७३२ माँग, २५९१४७ ब्राह्मण, २१३९६६ कोली, २१२६०८ गावली, १९४२८४ कोमटी (सौदागर) १३९५१३ गोंड, ११९१६१ वाडर, १०२२१३ महली, ९७६३६ लिङ्गायत, ९२१३६ भोई, ९०८३५ कुम्भार, ८८७६९ सोनार ८५२०४ लवनी, ८६८०६ माली, ७९१४३ कोस्ती, ६७५६४ तेली, ५६१२८ लोहार, ५४८३३ वेडदार, ४९८४३ राजपूत और शेषमें गौढ़ी, दर्जी, गोसांई, वनजारा भील, कोया इत्यादि जातियोंके लोग थे।

हैदरावाद राज्यके शहर और कसवे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,–

| नं० | शहर, कसवे | जिला वा तालुक | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|
| १ | हैदरावाद | हैदरावाद | ४१५०३९ |
| २ | औरंगाबाद | औरंगाबाद | ३३८८७ |
| ३ | गुलवर्गा | गुलवर्गा | २८२०० |
| ४ | कादिराबाद | औरंगाबाद | २३३५३ |
| ५ | रायचुर | रायचुर | २३१७४ |
| ६ | वीढ | वीढ़ | १८९९४ |
| ७ | गाडवाल | रायचुर | १४६७२ |
| ८ | मोमीनाबाद | वीढ | १३९२३ |
| ९ | नांदेड | नांदेड | १३१०५ |
| १० | कल्यानी | वीदर | १३०२६ |
| ११ | हिंगोली | प्रभानी | ११९६६ |
| १२ | नारापेट | महवूवनगर | ११८८८ |
| १३ | वारंगल | वारंगल | ११४८४ |
| १४ | इन्दुर | इन्दुर | ११४८२ |
| १५ | वसमथ | प्रभानी | ११३६१ |
| १६ | वीदर | वीदर | ११३१५ |
| १७ | निर्मल | इन्दुर | १०९३२ |
| १८ | मनवट | प्रभानी | १०९१२ |
| १९ | भारासर | नालदुर्ग | १०५११ |
| २० | प्रभानी | प्रभानी | १०१०२ |

सिकन्दराबाद, वलारम, दौलताबाद, इलोरा और असाईभी हैदराबादके राज्यमें प्रसिद्ध नगर हैं।

हैदराबादके राज्यमें साधारण तरहसे प्रत्येक गाँवोंके निकट लगभग ५० गज लम्बा और इतनाही चौडा पक्का अथवा मट्टीका एक एक किला है। पहाड़ियों और जङ्गलोंके रहने वाले गोंड वडे असभ्य हैं। इनमेंसे अधिक गुफाओं और वृक्षोंके खोखलोंमें रहते हैं। वे लोग शिकारसे अपना उदर पालन करते हैं; किन्तु जव सिकार नहीं मिलता, तव कीडे मकुड़े और जङ्गली जड अथवा फल खाकर अपना निर्वाह करते हैं।

इतिहास—सुलतान कुली कुतुवशाहके, जिसने गोलकुण्डाका राजवंश नियत किया था, पांचवें पुत्रमें महम्मद कुली कुतुवशाह था, उसीने सन् १५८९ ई० में कई एक कारणोंसे गोलकुण्डाको छोडकर उससे ७ मील दूर मूसीनदीके किनारेपर एक शहर वसाकर उसको अपनी राजधानी वनाया और अपनी प्रियस्त्री भागमतीके नामसे उसका नाम भागनगर रक्खा,

किन्तु उस स्त्रीके मरजानेपर उसने शहरका नाम हैदरावाद रख दिया। उसके पश्चात् उसने अपने राज्यको कृष्णानदीके दक्षिण फैलाया उडीसेके राजाको परास्त किया और वह उत्तरीय सरकारके बड़े भागको अपने अधिकारमे लाया। सन् १६२५ में महम्मद कुली कुतुबशाह मरगया। हैदरावादमे इसके राज्यके समयके वने हुए महल, इलाहीमहलका वाग, महमदी वाग, नौबतघाटका महल, चारमीनार, और मक्का मसजिद, जिसको जामामसजिदभी कहते है, विद्यमान है। महम्मदकुली वडा उदार और दानी था। उसके मरनेपर उसका पुत्र सुलतान अवदुलकुतुवशाह उत्तराधिकारी हुआ। मुगल वादशाह शाहजहाँने, जिसका राज्य सन् १६२७ से १६५८तक था, वीजापुर और गोलकुण्डाको अपने अधीन करनेके लिये अपने पुत्र औरंगजेबको भेजा। औरंगजेबने विश्वासघात करके हैदारावादको लेलिया और अवदुल कुतुवशाहको अपने अधीन वनाकर छोड दिया। सन् १६७२ में अवदुल कुतुवशाहके मरने पर उसका दामाद आबूहुसन उत्तराधिकारी हुआ। उसने मधुनापन्त नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मणको अपना प्रधान मन्त्री वनाया। सन् १६७६ में मन्त्रीने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीको वुलाया। शिवाजीने अपनी भारी सेनाके साथ करनाटक जाते समय हैदरावादमे आकर आवूहसनसे एक सन्धिकी। सन् १६८० में शिवाजीकी मृत्यु होने पर आवूहसनने उनके पुत्र शंभाजीसेभी मेल किया। सन् १६८८ मे खांजहाँ और उसके पीछे उसकी सहायताके लिये औरंगजेबका पुत्र मोअजिम गोलकुण्डापर आक्रमण करनेके लिये दिल्लीसे भेजा गया। गोलकुंडेकी सेनाके कमाण्डरने दगा करके मुगलोकी सेनाको हैदरावादमें घुसा दिया। मधुनापंत मारागया। हैदरावाद लूटा गया। आवूहसन गोलकुण्डाके किलेमें जा छिपा। पीछे उसने मुगलोंसे संधि की। सन् १६८७ में औरंगजेबने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। आवूहसन ७ मास तक गोलकुण्डाके किलेको बचाकर पीछे छल द्वारा परास्त हुआ और कैदी वनाकर दौलतावाद भेजा गया। औरंगजेब बीजापुर और गोलकुण्डाके सव राज्योंपर अपना अधिकार कर लिया। आवूहसन सन् १७०१ में दौलतावादमे मरगया।

टर्कोमैनके खांदनका आसफजाह, मुगल वादशाह औरङ्गजेबका जनरल था। उसीसे हैदरावादका वर्तमान निजाम खानदान नियत हुआ। दिल्लीके वादशाह फर्रुखशियरने; सन् १७१३ में आसफजाहको निजामुल मुल्ककी पदवी देकर डेकान अर्थात् दक्षिणका सूबेदार बनाया। वही पदवी उसके वंशमें अव तक चली आती है। सन् १७२२ में आसफजाह दिल्लीका वजीर बनाया गया; किन्तु सन् १७२३ में वह वजीरके कामसे इस्तीफा देकर दक्षिण चला गया। सन् १७२४ में वह हैदरावादके गवर्नर मुवारिजखांको, जो दिल्लीकी तरफसे था, परास्त करके हैदरावादमे रहने लगा और एक स्वाधीन राज्य कायम करनेवाला हुआ। सन् १७४८ में निजामुल मुल्क अर्थात् आसफजार मरगया। उस समय उसका फैला हुआ स्वाधीन राज्य मजवूत होचुका था। हैदरावाद उसकी राजधानी था। आसफजाहके मरनेपर उसके दूसरे पुत्र नासिरजङ्ग जौर पोता मुजफ्फरजङ्गने गद्दीके लिये झगडा किया। अङ्गरेज, नासिरजङ्गकी ओर और फरासीसी, मुजफ्फरजङ्गकी तरफ थे। अन्तमें नासिरजङ्गने मुजफ्फरजङ्गको कैद करालिया, किन्तु थोड़ेही दिनोंके वाद नासिरजङ्ग अपने खास आदमियों द्वारा मारागया और मुजफ्फरजङ्ग सूबेदार वनाया गया; परन्तु शीघ्रही वह मरगया, तव फरासीसियोंने मुजफ्फरजङ्गके बच्चा पुत्रको छोडकर नासिरजङ्गके

भाई सलावतजङ्गको दक्षिणका हुकूमत करनेवाला चुना। थोडेही दिनोंके बाद फरासीसियोंने अङ्गरेजोंसे डरकर सलावतजङ्गकी सहायता करना छोड दी। तब सलावतजङ्ग निर्बल होगया। सन् १७६१ में सलावतजङ्गके छोटे भाई निजामतअलीने सलावतजङ्गको तख्तसे उतार दिया और २ वर्षके पीछे उसको मारडाला।

सन् १७६६ में निजामतअलीसे अङ्गरेजोंकी एक संधि हुई, जिसके अनुसार मैसूरके हैदरअली पर चढ़ाई करनेके समय अङ्गरेजोंने अपनी फौजसे निजामतअलीकी सहायता की, किन्तु निजामतअलीका मनोरथ सफल नहीं हुआ, उसको हैदरअलीके पास सुलहका दरखास्त करना पडा। सन् १७९९ मे श्रीरङ्गपट्टनके टीपूसुलतानके परास्त होनेपर टीपूके राज्यका एक भाग निजामको मिलगया; क्योंकि वह अंगरेजोके मददगार थे। सन् १८०० ई० की संधिमे निजामने समय पड़ने पर अङ्गरेजोंको ६००० पैदल, ९००० घोडसवार और हर प्रकारकी सहायता देनेको कबूल किया। सन् १८५३ की संधिमें निजामको ५००० पैदल, २००० घोडसवार और ४ मैदानकी तोपे ( पहलेके सैनिक बलसे अधिक ) बढ़ानेका अधिकार हुआ। अङ्गरेजी सरकारने इसका खर्च देना स्वीकार किया। निजामने ५० लाख रुपये वार्षिक आमदनीके जिले अङ्गरेजी सरकारको दे दिये।

सन् १८५७ के बलवेके समय निजामने अङ्गरेजोंको सहायता की । सन् १८६० की साधम अङ्गरेज महाराजने निजामके राज्यको बढ़ाया और कर्जाका ५० लाख रुपया माफ करादिया। उससे सन् १८५३ की संधिके मतलबके लिये बरार देशके ३२ लाख रुपये आमदनीके जिलोंको लिया अङ्गरेजी प्रबंधसे बरारकी मालगुजारी बहुत बढ़ गई है। सन् १८८२-१८८३ में उसकी मालगुजारी लगभग ८५ लाख रुपया होगई थी।

हैदराबादके वर्तमान निजाम हिज हाईनेस मीर सर महबूबअलीखाँ बहादुर आसफजाह जी० सी एस० आई० सन् १८६६ में पैदा हुए, जो अपने बापके मरनेके समय केवल ३ वर्षके थे, मृत सर सालारजङ्ग और अमीर समसुलउमरा उनके लडकपनमें राज्यका काम करते थे। सर सालरजङ्ग बडी चातुरीसे राज्यका प्रबंध किया, किन्तु सन् १८८३ में वह हैजेसे मरगये। सन् १८८४ मे भारतवर्षके गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड रिपनने वर्तमान निजामको राजतिलक दिया। मृत प्राइम मिनिष्टर नवाब सर आसमानजाह बहादुर के० सी० आ० ई० निजामके रिस्तेदार थे, जिनके पीछे इकबालुद्दौला विकरुल उमरा बहादुर उनके कायम मुकाम हुए।

हैदराबादके निजामको २१ मैदानकी और ६५४ अन्य तोपें, ५५१ गोलंदाज, १४००० सवार और १२७७५ पैदल सेना रखनेका अधिकार है इनको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे २१ तोपोंकी सलामी मिलती है।

## बीदर।

हैदराबाद शहरसे ७८ मील पश्चिमोत्तर ( १७ अंश, ५३ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २४ कला पूर्व देशान्तर ) में हैदराबादके राज्यके अन्तर्गत जिलेका सदर स्थान बीदर एक पुराना कसबा है। यही बीदर पूर्व समयमें विदर्भदेशमें सुप्रसिद्ध राजा नलके ससुर और दमयन्तीके पिता विदर्भराज राजाभीमकी विदर्भनगरी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीदरमें ११३१५ मनुष्य थे; अर्थात ५७४५ मुसलमान, ५४७५ हिन्दू, ८२ जैन, ९ कृस्तान और ४ सिक्ख।

बीदरमे वहमनी बादशाहोंके विविध महल, मसजिदे और अन्य इमारतें टूट फूट गई हैं, किन्तु बची हुई इमारतें, जिनमे मदरसा और मसजिद अधिक प्रसिद्ध है, वहॉके पहिलेके ऐश्वर्यको जनाती है। कसवेका शहर पनाह, जिसका दौरा ६ मील होगा, टूट फूट गया है। उसकी पुश्तोंमेंसे एकपर २१ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पडी है। कसवेमे १०० फीट ऊँचा एक मीनार है और पश्चिमोत्तरके मैदानमें वहुतेरे मकवरे खडे हैं।

बीदरी धातुके वर्तनके लिये बीदर कसवा प्रासिद्ध है वहाँ इस धातुकी उत्पत्ति हुई, इस लिये इसका नाम बीदर पडा। सीसा, ताम्बा और राङ्गा इन तीनोंको गलाकर एक प्रकारका धातु तैयार करते हैं; उसका थाल, फर्शी, रेकावी, चारपाईके पावे, इत्यादि चीजें बनाकर उनपर विविध प्रकारके फूल खोदकर उनमे रूपा और सोना या केवल रूपा अथवा सोनाका मुलम्मा किया जाता है। काली धातुकी चीजोंपर सफेद और पीले फूल वहुत अच्छे लगते हैं। बीदर जिलेमें कल्यानी सबसे बड़ा कसवा है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उसमे १३०२६ मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—( महाभारत—आरण्य पर्व-५३ वॉ अध्याय ) निषध देशमें वीरसेन राजाके दो पुत्र उत्पन्न हुए। जिनमें ज्येष्ठका सुप्रसिद्ध राजा नल और कनिष्ठका पुष्कर नाम था।

राजा नल द्यूत विद्या और अश्व विद्यामें परम निपुण थे।

तथा विदर्भनगरीमें अति पराक्रमी राजा भीम नामक था। एक समय महर्षि दमनक राजाके समीप आये उन्हें राजाने निष्पुत्र होनेके कारण अत्यन्त प्रसन्न किया। महर्षि प्रसन्न होकर एक कन्या और ३ पुत्र होनेका वर दिया। जब राजाके एक कन्या और तीन पुत्र हुये, तब उनमें कन्याका दमयन्ती और पुत्रोंका दम, दान्त, दमन, नाम रक्खा।

दमयन्ती अत्यन्त रूपवती होनेके कारण लोकमें प्रसिद्ध हुई। लोग दमयन्तीकी नलके समीप और नलकी दमयन्तीके समीप प्रशंसा करने लगे। नल और दमयन्तीकी प्रीति परस्पर विना देखेही बढ़ गई। निदान यहाँ तक कि राजा नल विरहसे व्याकुल हो नगरके समीपके वनमें चले गये। वहाँ सुवर्णवर्णके वहुतसे हंस देखकर छलसे एकको पकड़ लिया। तव दूसरा हंस आकाशसे मनुष्य वाणी बोला कि हे राजन्। यदि हंसको आप न मारोगे और छोड दोगे तो दमयन्तीके पास जाकर तुम्हारा ऐसा वर्णन हमलोग करेंगे कि जिसमे वह तुम्हें छोड दूसरेको नहीं चाहेगी। इस वातको सुनकर नलने उस हंसको छोड़ दिया। तदनन्तर सब हंस विदर्भनगरमें जाकर जहाँ दमयन्ती थी, वहीं आकाशसे उतर पड़े।

उन्हें देख सखीगण और दमयन्ती एक २ हंसको पकड़ने चलीं। पर जैसे २ पकड़नेको आगे वढ़ती थीं, वैसे २ हंसभी आगे बढ़ जाते थे। उनमें जिस हंसको खास दमयन्ती पकड़ती थीं; वह हंस मनुष्यवाणीसे राजा नलकी प्रशंसा करने लगा और कहा कि तेरे रूपके योग्य तीनों लोकमें राजा नलके समान दूसरा नहीं है, इसलिये उन्हींको तूँ अपना पति वना। हंसके ऐसे कहनेपर दमयन्तीने कहा कि आप राजासे भी जाकर इसी तरह कहिये।

(५४ वाँ अध्याय) दमयन्तीको उसी समयसे नलके विरहमे विकल देखकर सखी जनोंने यत्न पूर्वक राजा भीमसे कुछ कहा। भीमने कन्याकी युवावस्था विचारकर स्वयम्बर रचा। सब राजागण स्वयम्बरमें आने लगे। उसी समय नारदऋषिके मुखसे दमयन्तीका रूप और वडा भारी स्वयम्बर सुनकर इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि भी दमयन्तीके लिये चले। मार्गमें अति रूपवान् राजा नलको स्वयम्बरमे जाते देखकर निरास हो विमान रोका और नलसे कहा कि हे राजन्! आप सत्यव्रत है; इसलिये मेरी सहायताके लिये दूत बनिये।

(५५ वाँ अध्याय) तव राजा नलने दूतत्त्व अंगीकार करके उन लोगोंका नाम पूछा और कहा कि किसका और क्या काम है।

तदनन्तर देवतोंने अपना २ इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, नाम वतलाकर कहा कि दूत वनकर दमयन्तीके पास जाकर यह कहना होगा कि आपको इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम चाहते हैं, उनमेंसे एक किसीको अपना पति वनाओ। ऐसा सुनकर नम्र हो नलने कहा कि हमारा और आपका एकही उद्देश्य होनेसे हमे दूत वनाना उचित नहीं है और मै अपने हृदयसे उसे अपनी स्त्री वनाकर दूसरेके पास जानेकी अनुमति कैसे दूंगा।

तव देवतोंने कहा कि हम लोगोंने तुम्हें परम सत्यवादी सुना है और तुम प्रतिज्ञा करचुके हो, इसलिये तुम्हें अवश्य दूत वनना होगा। ऐसा सुनकर नलने कहा कि द्वारपालोंसे रक्षित अन्तःपुरमे मेरा किस प्रकार प्रवेश होगा। तब इन्द्रके अन्तर्द्धान विद्या देने पर दमयन्तीके समीप पहुँचकर उसके पूछनेपर नलने कहा कि मैं नल हूँ–और इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, देवता तुम्हारी इच्छा करते हैं। मैं दूत वनकर उनके प्रभावसे अलक्ष्य होकर यहां आया हूँ। अव जैसा चाहो वैसा करो।

(५६ वाँ अध्याय) ऐसा सुन देवतोंको नमस्कार करके दमयन्तीने कहा कि मै सिवाय आपके कदापि दूसरेको नहीं वरूंगी और आप उनके दूत वनकर आए हैं, इसलिये आप उनलोगोंके साथ स्वयम्वरमें आइये; पर मै तो आपहीको जयमाल दूँगी। ऐसा सुन नलने देवतोंके पास आकर यथार्थ वृत्तान्त कह सुनाया।

(५७ वाँ अध्याय) तदनन्तर नल और चारों देवता स्वयम्वरमें एकाकार वनकर जा वैठे। दमयन्ती स्वयम्वरमें एकाकार पाँचों नलोंको देख परम विस्मित होकर जव देवतोंके चिह्न किसीमें न पाये, तव दीन हो ध्यानकर देवतोंकी प्रार्थना की कि मै हंसके वचनसे अपना प[ति] राजानलको वना चुकी हूँ, इसलिये मेरे पातिव्रत्यधर्मकी आप लोग रक्षा कीजिये। ऐसी प्रार्थना जानकर देवतोंने अपना २ चिह्न धारणकर लिया। तव दमयन्ती परम आनन्दसे राजा नलहीके गलेमें जयमाल दे दिया। यह देख सव लोग दमयन्ती और नलकी प्रशंसा करने लगे।

दमयन्तीके पिताने नलके साथ दमयन्तीका विवाह कर विदा किया।

राजानलके दमयन्तीको साथ ले आनेपर अपनी राजधानीमें इन्द्रसेन नामक पुत्र और इन्द्रसेना नामक कन्या उत्पन्न हुई।

इतिहास—बहमनी खानदानके वादशाहोंने, जिसका राज्य सन् १३४७ से प्रारम्भ हुआ, क्रमसे गुल्बर्गा, वारंगल और वीदरमें रहकर राज्य किया। सन १५१२ में गोल

कुण्डाके कुतबशाही खान्दानके बादशाहने बहमनी खान्दानके अन्तिम बादशाहसे गोलकुण्डाका किला छीन लिया। बहमनी खान्दानके पश्चात् बरीदशाही खान्दानके बादशाह, जो सन् १४९८ मे कायम हुए थे सन् १६०९ के पीछे तक बीदरमे स्वाधीन राज्य करते रहे सन् १६५७ ई० में मुगल बादशाह औरंगजेबने बीदरका किला लेलिया। अब वह हैदराबादके निजामके अधिकारमें है।

## नांदेड़।

बीदर कसबेसे लगभग ९० मील उत्तर हैदराबादके राज्यमें गोदावरी नदीके बायें एक नहरके निकट जिलेका सदर-स्थान नांदेड एक कसबा है। उसमे निजाम सरकारकी कचहरियाँ बनी हुई है। ❀

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नांदेडमे १३१०५ मनुष्य थे, अर्थात् ७३०४ हिंदू, ५०६८ मुसलमान, ६५९ सिक्ख ६७ जैन और ७ पारसी। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह हैदराबादके राज्यमे ९ वॉ शहर है।

नॉदेडमें सिक्ख लोगोंके दशवॉ गुरु श्रीगोविन्दसिंहजीकी संगति है। गुरुगोविन्द-सिंहने सन् १६६६ ई० में विहारके पटने शहरमें जन्म लिया और सन् १७०८ मे इसी नांदेडके समीप मुसलमानोसे लडकर परलोकको प्रस्थान किया। इनका संक्षिप्त जीवनचरित्र भारत-भ्रमणके दूसरे खण्डके अमृतसरमे और तीसरे खण्डके पटनेके वृत्तान्तमें है।

## वारंगल।

सिकन्दराबादके रेलवे स्टेशनसे ८७ मील पूर्वोत्तर वारंगलका रेलवे स्टेशन है। हैदराबादके राज्यमें जिलेका सदर स्थान वारंगल एक पुराना कसबा है, जिसमे चालुक्य कारीगरीकी इमारतोंमेसे ४ दिलचस्प कीर्तिस्तम्भ अब तक हीन दशामे विद्यमान है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय करीमाबाद और मतवारा शहरतलीके साथ वारंगलमें ११४८४ मनुष्य थे, अर्थात् ८३५४ हिन्दू, २७६२ मुसलमान, २५२ सिक्ख, १०४ कृस्तान और २२ पारसी।

इतिहास—वारंगल तेलीगानाके हिन्दू राज्यकी, जिसको नरपति अन्ध्रने नियत किया था, पुरानी राजधानी था। सन् १३०३ ई० मे अलाउद्दीनने वारंगल पर आक्रमण किया, किन्तु निरास होकर उसको लौटजाना पडा। सन् १३०९ में उसका कर्मचारी मलिक काफूरने बहुत दिनों तक घेरा देनेके पीछे वारंगलको लेलिया। वहाँका राजा 'कर' देनेको कबूल किया। गयासुद्दीन तुगलकके राज्यके समय जब फरासीसियोंने वारंगल पर आक्रमण किया, तब मुसलमानोंने वारंगलको फिर लेलिया, किन्तु गयासुद्दीनके पुत्र महम्मदआदिल तुगलकके राज्य ( सन् १३२५-१३५१ ) के समय हिन्दुओने वारंगलको फिर प्राप्त किया। सोलहवीं सदीके आरम्भमे बहमनी खानदानके बादशाहने वारंगलको लेलिया और वारंगलके राजाके पुत्रको कैदी बनाकर मारडाला। सन् १५१२ और १५४३ के बीचमे कुतबशाही खानदानके बादशाहोंने गोलकुण्डा राजधानी और बचे हुए राज्यको लेलिया।

---

❀ मनमार जक्शनसे पूर्व-दक्षिण हैदराबाद तक नई रेलवे लाइन निकली है। उसके पास मनमारसे २१८ मील पूर्व-दक्षिण और हैदराबादसे १६८ मील ( इन्दुर कसबेसे ६८ मील ) पश्चिमोत्तर नादेडका रेलवे स्टेशन है।

# छठवाँ अध्याय।



## ( मद्रास हातेमें ) बेजवाड़ा, मछलीपट्टम्, एलौर, राज-महेंद्री, धवलेश्वरम्, कोकनाड़ा, पीठापुरम्, अनका-पल्ली, विजगापट्टम्, विजयानगरम्, चिकाकोल, पर्लाखिमड़ी और ब्रह्मपुर।

## बेजवाड़ा।

वारंगलसे १२६ मील दक्षिण थोडा पूर्व वेजवाडाका रेलवे स्टेशन है। वहाँ निजाम स्टेट रेलवे, सदर्न मरहठा रेलवे और ईष्टकोष्ट रेलवेका जंक्शन और मद्रास, तथा हैदरावाद और कलकत्तेकी पुरानी सडकोंका मेल है ।

मद्रास हातेके तैलङ्गदेशके कृष्णा जिलेमें ( १६ अंश, ३० कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, ३९ कला, पूर्व देशान्तरमे कृष्णानदीके बायें किनारे पर बेजवाडा एक प्रसिद्ध तिजारती कसबा है, जिसको कुछ लोग विजयेश्वर और दक्षिण काशी कहते है। वेजवाडेसे ४५ मील दक्षिण कृष्णानदीका मुहाना है । नहरकी सौदागरी और सिंचावके कामोंका वह प्रधान केन्द्र है। वहांसे मद्रास, एलौर, मसुलीपट्टम्, कोकनेडा और राजमहेन्द्रीको नहरें गई है। वेजवाड़ामें सन् १७६० का बना हुआ एक उजडा हुआ किला और उसके पास चट्टान काट कर बने हुए बौद्ध और हिन्दुओंके बहुतसे पुराने गुफा मन्दिर है। वेजवाडेके आस पास वहुत पुराने रिमेन्स हैं। इनके अतिरिक्त वेजवाड़ामें मुनसफी कचहरी, अस्पताल, स्कूल, बंगला, लाइब्रेरी और जेलखाना और अन्य भी अनेक सरकारी आफिस है बेजवाडाके पास एक पहाडी है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय वेजवाडेमें २०७४१ मनुष्य थे, अर्थात् १८२२३ हिन्दू, २१७७ मुसलमान, ३३७ कृस्तान, २ जैन और २ पारसी।

बौद्ध गुफायें—पहाडीके उत्तरीय रिजके पूर्वके छोरके पास अनेक बौद्ध गुफाएं और छोटी कोठरियां है। कसबेसे एक मील पश्चिम कृष्णानदीके दक्षिणके रिजपर अण्डावल्लीका गुफा-मन्दिर है। एक दूसरे स्थान पर ७७ फीट भीतरको लम्बी ३० फीट दहिने बायें चौड़ी और ४५ फीट ऊंची, चट्टान काटकर गुफा बनाई हुई है।

हिन्दू गुफायें—बड़ी पहाडीके जिसके कदमके पास वेजवाडा बसा है, पूर्व बगलमें उसके पादमूलके पास वेजवाड़ा कसबेके पूर्वोत्तर छोटे गुफामन्दिरमें विनायककी मूर्ति है। उसके आगे कई एक छोटी कोठरियाँ और एक बड़ा मण्डप है, जिसमें चट्टानके खम्भे बने हुए है।

वेजवाडेसे १½ मील पश्चिम कृष्णानदीके दहिने किनारेपर सीतानगरम्के पश्चिम अण्डावल्ली गांवके निकट गुफा मन्दिर है। एकमें अनन्तस्वामी अर्थात् विष्णु भगवान है और दूसरेमें, जिसकी छत चट्टानके खम्भोंपर है, सीताहरण, रामद्वारा सीताका खोज और रावणवधकी लीला देख पड़ती है।

वेजवाड़ासे ३ रेलवेकी लाइन ३ तरफ गई है; जिनके तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

(१) वेजवाड़ासे पूर्वोत्तर 'ईष्टकोष्ट ( पूर्वी किनारा ) रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३७ एलोर।
४९ भीमाडोल।
९८ राजमहेन्द्री।
१३० सामलकोटा जंक्शन।
१३७ पीठापुरम्।
२०१ अनकापल्ली।
२२२ वालटेर जंक्शन।
२६० विजयानगरम्।
३०३ चिकाकोलरोड।
३३२ नवापाड़ा।
३७९ इच्छापुर।
३९४ ब्रह्मपुर।
४०८ छत्तरपुर।
४२४ रम्भा।
४८६ खुरदा रोड।
४९८ भुवनेश्वर।
५०८ कटक रोड ( शहरसे ६ मील )।

सामलकोटा जंक्शनसे ७ मील कोकानाडा और ९ मील कोकानाडा बन्दर।

वालटेर जंक्शनसे २ मील दक्षिण-पूर्व विजिगापट्टम्।

(२) वेजवाडासे दक्षिण-पश्चिम 'सदर्न मरहठा रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
७ मङ्गलगिरि।
२० गुटूर।
७१ विनुकुण्डा।
१८९ नंद्याल।
२३६ करनूल रोड।
२७९ गुटकल जंक्शन।

(३) वेजवाड़ासे पश्चिमोत्तर 'निजाम स्टेट रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
१२६ वारङ्गल।
२१३ सिकन्दराबाद।
२१९ हैदराबाद।
३३४ वाडी जंक्शन।

(४) *

# मछलीपट्टम्।

वेजवाड़ासे नहर द्वारा लगभग ५० मील पूर्व-दक्षिण ( १६ अंश ९ कला ८ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ११ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तरमे ) समुद्रके किनारेपर मदरास हातेके तैलङ्ग देशके कृष्णा जिलेमें प्रधान कसबा और प्रधान बन्दरगाह तथा कृष्णा जिलेका सदर स्थान मछलीपट्टम् एक कसबा है, जिसको मसुलीपटम् मछलीबन्दर तथा केवल बन्दर नाम भी लोग कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मछलीपट्टम्में ३८८०९ मनुष्य थे, अर्थात् १८६०१ पुरुष और २०२०८ स्त्रियाँ। इनमे ३३५४४ हिन्दू, ४६१८ मुसलमान, ६४४ कृस्तान, २ जैन और १ पारसी थे।

---

* वेजवाडासे दक्षिण मदरास रेलवेपर ३ मील कृष्णा नहर, ८६ मील अंगोल, १५८ मील नेलोर, १८२ मील गुडुर, और २६७ मील मदरास शहर है।

मछलीपटम्में जज और कलक्टरका आफिस, जेलखाना, सरकारी कचहरियाँ, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। किलेमें कई एक गिरजे है। किलेके वारक अर्थात् सैनिक गृह और हथियारखाना हीन दशामें खडे है, क्योंकि सन् १८६९ ई० में वहाँसे सरकारी सेना दूसरी जगह हटा दी गई कसबेमें अच्छी सड़के और ईटोंके मकान वने हुए है। किलेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ वनी हुई है।

सन् १८८२—१८८३ ई० में वन्दरगाहमे १०८३२८० रुपयेका माल आया और १५२८१४० रुपयेका माल वन्दरगाहसे यूरप इत्यादि देशोंमें गया। बड़े जहाज किनारेसे ५ मीलके वाहर लङ्गरपर ठहरते हैं।

मछलीपट्टम्में कपडे बिननेवाले और छापनेवाले वहुत लोग है, किन्तु कल कारखाने होनेसे उनका काम घटता जाता है। अबतक वहाँकी छींट दूसरे देशोंमें भेजी जाती है। वहाँ पादडी लोगोंकी वड़ी उन्नति है, वहुत लोग कृस्तान होते जाते है। कसबेकी दशा हीन है। सन् १८६४में समुद्रकी तूफानी लहरसे सम्पूर्ण कसवा वहगया और३०००० प्राणी मरगये। सन १८७९ की रातमें ऐसेही तूफानसे वहुतेरे सोये हुए लोग डूब मरे।

कृष्णा जिला—यह जिला मदरास हातेमें बंगालेकी खाढी अर्थात् पूर्वी किनारेके पास कृष्णा नदीके मुहानेके दोनो ओर है। कृष्णानदीके नामसे इस जिलेका यह नाम पड़ा है। इसके पूर्व बङ्गालकी खाढ़ी, दक्षिण नैलोर जिला; पश्चिम हैदराबादका राज्य और करनूल जिला और उत्तर गोदावरी जिला है। जिलेमें चन्द नीची पहाड़ियाँ हैं। उनमेंकी सबसे ऊँची पहाडी समुद्रके जलसे केवल १८७५ फीट ऊँची है। जिलेमें कृष्णा प्रधान नदी है, जिससे यह जिला मसुलीपट्टम् और गंतूर दो भागोमे वटगया है। कृष्णाके पूर्व मसुलीपट्टम् और पश्चिम गंतूरका भाग है। कृष्णामें सर्वदा नाव चलती है। इसके अलावे पाँच सात छोटी नदियाँ है। जिलेकी पूर्वी सीमापर कोलर झील जिसकी लम्बाई २१ मील और चौडाई १४ मील है, आषाढ़से फागुन तक नाव चलनेके लायक रहता है। उसमें जगह जगह टापू हैं। ( गोदावरी जिलेमें देखिये ) जिलेमें लोहे और ताम्बेकी अनेक खानियाँ है, जिनमेंसे एक समय वहुतसे धातु निकाले जाते थे। हैदरावादके राज्यकी सीमाके पासके ५ गाँवोंमें हीरेकी खान है, किन्तु वहुत कम हीरे निकलते हैं। पूर्व कालमें इस जिलेकी खानोमे असंख्य लोग काम करते थे और इस जिलेमें रक्तमणि और छोटे लाल भी निकलते थे। लोग कहते हैं कि इसी जिलेकी खानोंसे सुप्रसिद्ध कोहनूर और रोजेट हीरा निकला था। जिलेके भीतर अव वहुत थोडा जङ्गल है। जिलेमे तैलंगी भाषा प्रचलित है। साधारण प्रकारसे इस जिलेके लोग गरीब हैं।

कृष्णा जिलेके एक तालुकमे एक पहाडीके सिरपर, जो समुद्रके जलसे १५८७ फीट और मैदानसे ६०० फीट ऊँचा है, कटपाकुण्डा एक प्रसिद्ध गाँव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय २५०४ मनुष्य थे इस गाँवमें एक शिवमन्दिरके पास फाल्गुनकी शिव-रात्रिके समय एक मेला होता है, जो फाल्गुन सुदी २ तक रहता है। मेलेमें ५० हजारसे अधिक मनुष्य आते हैं और लकडीकी बडी तिजारत होती है। नीचेसे पहाड़ीके सिर तक पत्थरकी सीढ़ियां बनी है।

सन् १८८१की मनुष्य-गणनाके समय कृष्णा जिलेके ८४७१ वर्ग मीलमें १५४८४८० मनुष्य थे, अर्थात् १४२५०१३ हिन्दू, ८७१६१ मुसलमान, ३६१९४ कृस्तान, ८ जैन और १०४ दूसरे। हिन्दुओंमें ५२२६९६ बेलाला, १०१५७८ गड़ेरिया, ९४८९२ ब्राह्मण, ६९८५४ सेटी (व्यापार करनेवाले), ४७१९९ कैकोला, ४४२७६ वनान ( कपडा धोनेवाले ), ३४५२८ कमार, ३०६४३ साना, २४४५९ वनियाँ ( मजुराके किसिमकी एक जाति विशेष ), १८६०६ सतानी, १६५५७ अम्बातन ( क्षौर कर्म करनेवाले ), १६३६३ कुसवन ( मट्टीके वर्तन वनानेवाले ), ११५५९ राजपूत और बाकीमें मछुहा, कनाकन इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कृष्णा जिलेके कसवे मछलीपट्टमूमें ३८८०९, गंतूरमे २३३५९, विजवाडामे २०७४१, चिरलामें १०५८१ और मङ्गलगिरि, चेलापल्ली, कुण्डापल्ली, वल्लूर इत्यादि छोटे कसबोंमे इनसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—कृष्णा जिलेके जङ्गलीलोग अति पूर्व कालमे शिकारसे अपना निर्वाह करते थे। सन् ईस्वीके कुछ पहिलेसे कुछ पीछे तक कृष्णानदीके किनारोंपर बौद्धमतके लोग वसते थे। तीसरी सदीमें ब्राह्मणमतके लोग आये। सातवीं सदीमें कल्यानीपुरके चालुक्य वंशके राजाने वेंजीके राजाको जीता। चालुक्य राजाओंके बाद दक्षिणसे चोला वंशके राजा आये। उसके बाद धरनीकोड़ाके जैन राजाने कृष्णा जिलेपर हुकूमत की। उसके पीछे कुण्डावरके रेड्डी वंशके राजाने उडीसाके राजाके साथ उस देशके राज्यको बॉटा। सन् १३२८ से सन् १४२४ ई० तक रेड्डी वंशके राजाओंने राज्य किया। उनके बाद उडीसाके गजपति राजा आये और गजपति वंशके पीछे विजयानगरके राजाका राज्य कायम हुआ। १४ वीं सदीमें मछलीपट्टमूका वन्दरगाह नियत हुआ। सन १५८० में मुसलमानोंने कुण्डावीरके किलेको हिन्दुओंसे जीतकर कृष्णा जिलेपर अपना अधिकार किया।

सत्रवीं सदीके आरम्भमे यूरोपियन सौदागरोंने गोलकुण्डा राज्यके आधीन मछलीपट्टमूमे अपनी कोठियाँ कायम कीं। सन् १६११ में अङ्गरेजोंने वहॉ अपनी कोठी नियत की। सन् १६२८ में ४ वर्षके लिये वे लोग निकाल बाहर किये गये किन्तु गोलकुण्डाके बादशाहसे फरमान पाकर वे लोग फिर मछलीपट्टमूमें आये। सन् १६११ के पहिलेहीसे मछलीपट्टमूमे डच लोगोंकी कोठी कायम हो चुकी थी। सन् १६६९ में फरासीसी वहाँ आये। सन् १६८६ मे डच लोगोंने मछलीपट्टमूपर अपना स्वाधीन अधिकार कर लिया। सन् १६८९ मे मुगल-बादशाह औरंगजेबके जनरल जुलफकारखांने. डचवालोंसे मछलीपट्टमू छीन लिया और कृष्णा जिलेको मुगल राज्यमें मिला दिया। सन् १६९० में अङ्गरेजोंने औरंगजेबकी आज्ञापत्रसे मछलीपट्टमूकी सौदागरीका पूरा अधिकार पाया। सन् १७०७ से अङ्गरेजी अधिकार होनेके पहिले तक कृष्णा जिले डेकानके सूबेका एक भाग था। १७५० में निजामने चारो तरफके देशके साथ मछलीपट्टमूको फरासीसियोंको दे दिया। फरासीसियोंकी सहायतासे मुजफ्फरजङ्ग हैदराबादके तख्तपर बैठे। सन् १७५३ में अङ्गरेज लोग मछलीपट्टमूसे निकाल दिये गये। सन् १७५९ में वङ्गालके अङ्गरेजोंने अपनी सेना भेजकर मछलीपट्टमूपर अधिकारकर लिया। सलावतजंगने डरकर अङ्गरेजोंसे सन्धि करके कृष्णा जिलेका वडा भाग उनको दे दिया। सन् १७६६ में दिल्लीके बादशाहके सनद द्वारा

अङ्गरेजोंको ५ उत्तरी सरकार मिले। सन् १८२३ में सम्पूर्ण कृष्णा जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार होगया। सन् १८५९ में गंतूर और मछलीपट्टम् दो जिलोंके मेलसे कृष्णा जिला बना। गन्तूरका एक छोटा भाग और राजमहेन्द्री जिला गोदावरी जिला बनाया गया। पुराणोंके लेखसे मछलीपट्टम् और राजमहेन्द्रीके आस पासके देश कालङ्गदेशमें जान पड़ते है।

## एलौर।

वेजवाडा जंक्शनसे ३७ मील पूर्वोत्तर एलौरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें ( १६ अंश, ४२ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, ९ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमे ) एक छोटी नदी और नहरके पास एक तालुकाका सदर स्थान एलौर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय एलौरमे २९३८२ मनुष्य थे, अर्थात् १४२८७ पुरुष और १५०९५ स्त्रियाँ। इनमे २४८९८ हिन्दू, ४०४७ मुसलमान, और ४३७ कृस्तान थे।

एलौरमें मातहत मजिष्टरकी, कचहरी, पुलिसका स्टेशन स्कूल, पोस्टआफिस और कई गिरजे हैं। वहाँ ऊनी कालीन अच्छे तैयार होते है। कसबेके समीप पुराने किलेकी निशानिया विद्यमान है। नये बारकोंमें अब सरकारी आफिसोका काम होता है। एलौरमे गरमी बहुत पडती है। उससे कई मील दक्षिण २१ मील लम्बा और १४ मील चौड़ा कोलर झील है।

इतिहास—पूर्व समयमे एलौर उत्तरी सरकारकी राजधानी था, इस कारणसे यह इतिहासोंमे प्रसिद्ध है। पहिले यह वेजीके राज्यका हिस्सा था। सन् १४८० मे यह मुसलमानोके अधिकारमे था। विजयानगरके राज्यकी बढ़तीके समय यह फिर हिन्दुओंके अधीन हुआ था किन्तु सोलहवीं सदीके आरम्भमें गोलकुण्डाके कुतबशाहने इसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह क्रमसे देशी राजाओं, फरासीसियों और अङ्गरेजोंके अधिकारमें हुआ।

## राजमहेन्द्री।

एलौरके रेलवे स्टेशनसे ६१ मील ( वेजवाडासे ९८ मील ) पूर्वोत्तर राजमहेन्द्रीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें ( १७ अंश उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ४८ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमे ) समुद्रसे ३० मील पश्चिमोत्तर गोदावरी-नदीके बायें किनारेपर राजमहेन्द्री प्रसिद्ध कसबा है। इसको शास्त्रमे कलिङ्ग देशके अन्तर्गत लिखा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राजमहेन्द्रीमें २८३९७ मनुष्य थे, अर्थात् १३९३४ पुरुष और १४४६३ स्त्रियाँ। इनमें २६१८८ हिन्दू, १७९३ मुसलमान, ४१३ कृस्तान और ३ जैन थे।

राजमहेन्द्रीके निकट गोदावरीनदीपर ५६ स्तंभ लगे हुए एक बडा पुल बना हुआ है। राजमहेन्द्री सुन्दर बनाहुआ कसबा है। कसबेमें १ मिउजियम अर्थात् अजायबखाना, एक कालिज १ [illegible], अस्पताल, २ गिरजा, कई एक स्कूल, जिलाजज, मातहत मजिष्टर और [illegible] कचहरियां और २ जेलखाने है। इनमेंसे बडे जेलखानेमें लगभग १००० कैदी रह सकते है। जिलेके [illegible] प्रसिद्ध स्थानोंपर राजमहेन्द्रीसे सडक अथवा नहर गई है। जनर्दा

कोठी और कचहरियोंके मकान एक ऊँची भूमि पर बने हैं। पुराने शहरपनाहका कुछ भाग अबतक विद्यमान है कसबेके उत्तर और पूर्वोत्तर यूरोपियन लोग रहते हैं। राजमहेन्द्रीके पास गोदावरीकी चौडाई लगभग तीन मील है। राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण धवले-श्वरम् कसबा है।

उडीसेके राजा महेन्द्रदेवने राजमहेन्द्रीको बसाकर अपनी राजधानी बनाई। वह राजा सन् ईस्वीके पहिले १०३७ और ८२२ के बीचमें था, बहुत समयके बाद यह वेंजी राजाओंका बैठक हुआ। सन् १४७१ में मुसलमानोंने राजमहेन्द्रीको अपने अधिकारमें कर-लिया। सन् १५१२ में कृष्णरायने मुसलमानोसे छीन कर इसको उडीसेमें फिर मिलादिया। सन् १५७२ में डेकानके रफातखाँके आधीन मुसलमानोंने इसको जीत लिया। बाद १५० वर्षतक राजमहेन्द्रीमे लडाई होती रही। उसके पश्चात् यह गोलकुण्डाके बादशाहके आधीन हुआ। सन् १७५३ मे यह फरासीसियोको मिला। सन् १७५४ से १७५७ तक यह बूसीका सदर स्थान था। सन् १७५८ में फरासीसी खदेरे गये। अन्तमें अङ्गरेजोंने इसको लेलिया।

गोदावरी जिला—इसके उत्तर मध्यदेशके बस्तरका देशी राज्य और मदरास हातेका विजिगापट्टम् जिला; पूर्वोत्तर विजिगापट्टम् जिला, पूर्व और दक्षिण बंगालकी खाढ़ी, दक्षिण पश्चिम कृष्णा जिला और पश्चिम हैदराबादका राज्य है। गोदावरीके मुहानेके पास गोदा-वरीके दोनों ओर यह जिला फैला है। जिलेमें खास करके इसके उत्तरी भागमें (अधिक) स्थान स्थानमें गावदुमी पहाड़ियाँ हैं, जिन पर सघन जङ्गल लगे है। कई पहाडियोंके जङ्गल अगम हैं। जिलेके जङ्गलोंमे बाँस, साबुनके फल, मधुमक्खियोंका मोम इत्यादि पैदावार होते है और बाघ, तेदुये, भेड़िया, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं।

जिलेकी गोदावरी और सरारी इन दो नदियोमें सर्वदा नाव चलती है। सरारी नदी गोदावरीमें मिल गई है। राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण धवलेश्वरम् कसबेके निकट और समुद्रसे ३० मील उत्तर और गोदावरी नदीकी दो प्रधान शाखा होगई है, जिनके बीचमें अमलापुर तालुक है। इनमेसे एक मुहानेके पास नरसापुर कसबा और दूसरेके निकट फरा-सीसियोके अधिकारमें अनाम बस्ती है। गोदावरीके ७ पवित्र धाराओंमेसे अन्तिम धारा नरसापुरके निकट अन्तरवेदी स्थानमें है, वशिष्ठ धारा वहाँ समुद्रमे मिली है। यात्रीलोग सातों धाराओंमें स्नान करते हैं। अन्तरवेदीमें कल्याणम्का तिहवार होता है, जो ५ दिन रहता है। उसमे लगभग २० हजार यात्री आते है। गोदावरी नदी ७ धाराओसे, जो सातो पवित्र समझी जाती है, समुद्रमे मिली है। इनके नाम ये हैं,—तुल्यभागा; अत्रेया, गौतमी, वृद्धगौतमी, भरद्वाजा, कौशिका और वशिष्ठा। गोदावरीनदी बम्बई हातेके नासिकके पासके त्र्यम्बकसे निकलकर ९०० मील दक्षिण-पूर्व बहनेके उपरान्त यहाँ गोदावरी जिलेमें समुद्रसे मिली है। (इसकी कथा त्र्यम्बकके वृत्तान्तमें देखो) जिलेके पश्चिमी भागमे एलौर कसबेसे दक्षिण कोलर झील ३१ मील लम्बी और १४ मील चौड़ी है। उसमें जगह जगह टापू और मल्लुहोंके गाँव देखनेमे आते है। बहुतेरे टापुओंमें खेती होती है। झीलमे जल पक्षी और मछलियाँ बहुत हैं। वह झील कभी कभी १०० वर्ग मीलसे अधिक फैल जाती है। सूखी ऋतुओंमें इसका विस्तार बहुत कम होजाता है; बहुतेरे भागोमे केवल कीच रह जाता है। वह झील कृष्णा और गोदावरी इन दोनों जिलोंमें फैली हुई है। चन्द छोटी नदियोका पानी उसमें आता है। नदियोंकी मट्टीसे झीलका विस्तार धीरे धीरे घट रहा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोदावरी जिलेका क्षेत्र फल ( एजेंसी देशके साथ, जिसका क्षेत्र फल ८२० वर्गमील है ) ७३४५ वर्ग मील था, जिसमें १७९१५१२ मनुष्य थे, अर्थात् १७४८७३४ हिन्दू, ३८७९८ मुसलमान, ३८९३ क्रस्तान, १७ जैन और ७० दूसरे। हिन्दुओंमें ५३५८५४ वेलाला, ४२३२१८ परिया, १६१२६८ साना ( ताड़ी बेचने वाली जाति ),८९४०२ ब्राह्मण, ७१७७६ कैकोला ( विनने वाली जाति ), ६६१५१ इडैगा ( भेड चरानेवाली जाति ), ५६४२४ वनियां ( जाति विशेष, मजदूरी पेशे करनेवाले ), ४६६६१ क्षत्री, ४५६३१ वनान ( कपडा धोनेवाले ),४३१७१ सेटी ( सौदागर ), ३५६७८ कमार, १९०११ अम्बातन ( क्षौर कर्म करनेवाले ), और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय गोदावरी जिलेके कसबे कोकानाडामें ४०५५३, एलौरमें ३९३८२, राजमहेंद्रीमें २८३९७, पीठापुरम्‌में १३७३१, पेडापुरम्‌में १३६५८, सामलकोटमें १३४०९ और धवलेश्वरम्‌में १०४९२ मनुष्य थे। इनके अलावे इस जिलेमें अमलापुर, नरसापुर पल्लाकुडू, कपिलेश्वरपुरम्, कोरिङ्गा इत्यादि वहुतसे छोटे कसबे है।

भद्राचलम्—राजमहेंद्री कसवेसे लगभग १०४ मील और डुमागुडिमसे १५ मील दूर गोदावरीके किनारेपर गोदावरी जिलेके भद्राचलम् तालुकाका प्रधान कसबा भद्राचलम् है, जिसमे सन् १८८१ में १९०१ मनुष्य थे। गोदावरीके किनारेपर ४०० वर्षका बना हुआ रामचन्द्रका मन्दिर है। वह पीछे समय समयपर बढ़ाया गया था। मन्दिर ऊँची दीवारसे घेरा हुआ है। उसके दोनो वगलोंमें बीस पचीस छोटे मन्दिर हैं। गोदावरीसे मन्दिर तक सीढ़ियाँ बनी हैं। मन्दिरके पास सालाना मेला होता है। मन्दिरके देवताओंके वहुमूल्य भूषण है। निजाम प्रतिवर्ष मन्दिरके खर्चके लिये १३००० रुपये देते हैं। भद्राचलम्‌से २० मील दूर परणशला पुराना स्थान है। वहाँ चैत्रमें मेला होता है। मेलेमें कपडा, वर्तन, मसाला इत्यादि वस्तु विकती हैं। वहाँ सरकारी कचहरी, जेल, पुलिस और स्कूल हैं।

इतिहास—गोदावरी जिला पूर्व समयमें द्राविड देशका अन्ध्र विभाग था। उस जिलेमें कई एक सौ वर्ष तक चालुक्य, नरपति और रेड्डी वंशके राजा और पहाडी लोग लडते रहे। मुसलमानोने लगभग १५० वर्ष लडाई होनेके पश्चात् सन् १४७१—१४७७ के बीचमें हिन्दू राजाओंको अपने आधीन बनाया। सन् १५१६ में विजयानगरके राजा कृष्णरायने देशको लूटा और कुछ दिनोंके लिये वहाँ फिर हिन्दू राज्य नियत किया। छोटे छोटे हिन्दू राजाओंने कुछ दिनों तक स्वतंत्र होकर राज्य किया, किन्तु फिर सम्पूर्ण देश मुसलमानोंके अधिकारमें होगया। सन् १६८७ मे औरङ्गजेबने कुतवशाही खानदानके बादशाहसे इस जिलेको लेलिया। यह निजाम आसफजाहके गवर्नरके अधीन हुआ। सन् १७४८ में आसफजाहके मरनेके समयसे अङ्गरेज और फरासीसियोंमें लडाई आरम्भ हुई। सन् १७६५ मे अङ्गरेजोंने दिल्लीके बादशाहसे सनद पाकर उत्तरी सरकारपर अपना अधिकार जमाया। सन् १८०२—१८०३ मे दायमी बन्दोबस्त हुआ। सन् १८५९ में सीमा ठीक की गई। गंतूर, राजमहेन्द्री और मछलीपट्टम, तीनों जिलोंसे कृष्णा और गोदावरी दो जिले बनाये गये।

# धवलेश्वरम्।

राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण मदरास हातेके गोदावरी जिलेके राजमहेन्द्री तालुकमें गोदावरी नदीके किनारे पर धवलेश्वरम् एक कसवा और अति मनोरम स्थान है। उससे लगभग ३० मील दक्षिण समुद्र है। धवलेश्वरम्के निकटसे गोदावरी नदीकी दो वड़ी शाखा होगई है, जिनमेसे एकके मुहानेके पास गोदावरी जिलेका नरसापुर कसवा और दूसरेके पास फरासीसियोंके अधिकारमें अनाम वस्ती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धवलेश्वरम्मे १०४९२ मनुष्य थे अर्थात् १००१५ हिन्दू, ३१६ मुसलमान और १६१ कृस्तान।

धवलेश्वरम्मे जिलेका इञ्जिनियरिङ्ग महकमा है आस पासकी पहाड़ियोंपर यूरोपियन लोगोंकी पुरानी कोठियाँ हीन दशामें विद्यमान हैं खानोंमे मकान वननेके कामका अच्छा पत्थर निकलता है खानोका काम उन्नति पर है धवलेश्वरम्मे एक ३२ मीलकी नहर ओकानाडाको और अन्य भी कई नहर समुद्रके किनारे तक गई हैं।

जिस जगह गोदावरी नदीकी दो वडी शाखा होगई हैं। वहाँ १२ फीट ऊँचा और १६५० गज लम्बा, जो पिचिका टापू तक फैला है, एक वडा वाँध वना हुआ है। उसका काम सन् १८४७ में आरम्भ हुआ, उसके वनानेमें १५१७०७० रुपया खर्च पड़ा।

# कोकानाडा।

राजमहेन्द्रीसे ३२ मील (बेजवाड़ासे १३० मील) पूर्वोत्तर सामलकोटा जक्शनका रेलवे स्टेशन है। सामलकोटासे दक्षिण-पूर्व ९ मीलकी रेलवे शाखा समुद्रके किनारेपर कोकानाडाको गई है। कोकानाडा मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें प्रधान कसवा और वन्दरगाह है जिससे ५४५ मील पूर्वोत्तर कलकत्ता और ३१५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम मदरास शहर है। कोकानाडा और सामलकोटाके बीचमे नहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोकानाडामें ४०५५३ मनुष्य थे, अर्थात् २०३२८ पुरुष और २०२२५ स्त्रियाँ। इनमे ३७९४१ हिन्दू, १६९० मुसलमान, ९०७ कृस्तान ५ वौद्ध ४ पारसी, ४ जैन और २ यहूदी थे।

कोकानाडा गोदावरी जिलेका सदर स्थान है। इसमे मजिष्टर और उनके अधीन हाकिमोकी कचहरियाँ, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारते वनी है। सामुद्रिक माल रखनेके लिये कष्टम हौस हैं। सैकडों यूरोपियन सौदागर रहते हैं। जिलेके जजकी कचहरी राजमहेन्द्रीमें है। कोकानाडा और जगन्नाथपुरके वीचमें, जो दोनों एक म्युनिसिपल्टीमें शामिल हैं, एक लोहेका पुल वना है। समुद्रके ज्वार होनेपर लोग पुल द्वारा कोकानाडासे जगन्नाथपुर जाते है।

गोदावरी और कृष्णा जिलेकी रुई, तेलके वीजे और चावल कोकानाडासे जहाजों द्वारा यूरपमें भेजे जाते हैं। लोहा, ताँवा, वोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे कोकानाडामें आती हैं।

# पीठापुरम् ।

सामलकोटाके रेलवे जक्शनसे ७ मील (बेजवाडासे १३७ मील) पूर्वोत्तर पीठापुरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके गोदावरी जिलेके पीठापुरम् तालुकमें पीठापुरम् एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पीठापुरम्मे १२७३१ मनुष्य थे अर्थात् १२६४३ हिन्दू, १० ६९ मुसलमान, १८ बौद्ध और १ क्रस्तान।

पीठापुरम्में पादगया तीर्थ, कचहरी, स्कूल, पोष्टआफिस और एक जमींदार राजा है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजाके राज्यका क्षेत्रफल ३७१ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८४०१८ थी। राजा वेलमा जातिके है। लोग कहते है कि राजाके पुरुपे अवधसे आये थे। सन् १६४७ में वहाँ इनकी मिलकियत कायम हुई। राज्यसे ८११००० रुपयेकी आमदनी है, जिसमेंसे २४९००० रुपया सरकारको पेसकस दिया जाता है। वर्तमान राजाका नाम राजा राजाराव गङ्गाधररामराव है।

# अनकापल्ली ।

पीठापुरम्से ६४ मील (बेजवाडा जक्शनसे २०१ मील) पूर्वोत्तर अनकापल्लीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके विजिगापट्टम् जिलेमे सारदा नदीके पास अनकापल्ली तालुकका सदर स्थान अनकापल्ली कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अनकापल्लीमे १७०१० मनुष्य थे, अर्थात् १६७३७ हिन्दू, २५६ मुसलमान और १७ क्रस्तान।

अनकापल्ली कसबेमें सरकारी कचहरी, जेलखाना, स्कूल, अस्पताल इत्यादि इमारतें बनी है। कसबा उन्नति पर है। एक सडक कसबेसे समुद्रके किनारे तक गई है। अनकापल्लीके आसपास विजयानगरके राजाकी जमींदारी है।

# विजिगापट्टम् ।

अनकापल्लीसे २१ मील (बेजवाडासे २२२ मील) पूर्वोत्तर वालटेयरका रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण-पूर्व २ मीलकी रेलवे शाखा विजिगापट्टम्को गई है। मदरास हातेमे (१७ अंश ४१ कला ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, २० कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा विजिगापट्टम् है जिसको विशाखपट्टनम् अर्थात् कार्तिकेयका नगर भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजिगापट्टम्में ३४४८७ मनुष्य थे, अर्थात् १६५०२ पुरुष और १७९८५ स्त्रिया। इनमें ३०९६६ हिन्दू, २२३६ मुसलमान, १२७२ क्रस्तान, ९ जैन, २ पारसी और १ बौद्ध थे।

विजिगापट्टम्मे जिलेके जज, मजिष्टर, सब मजिष्टरकी कचहरियाँ, जेलखाना, गिरजा, कई एक स्कूल अस्पताल, मिशन, २ यतीमखाना, १ गरीबखाना, १ कोढीखाना, और छोटी फौजी छावनी है। सडकोंपर रातमें लालटेनोंकी रोशनी होती है। कसबेके पश्चिम एक पहाडी उत्तर और दक्षिण ओर कसबे और समुद्रके बीचमें एक छोटी नदी है, जिसमें घाट बने हुए है। जिलेके भीतर अङ्गरेजी पैदल सेनाके लिये बारके अर्थात्

सैनिकगृह और हाथियारखाना बने हुए है। किलेके भीतर सेसनका कचहरी होती है और दूसरे अनेक सरकारी इमारतें और एक गिरजा है।

कसबेके निकट छोटा बन्दरगाह है। सन् १८८३-१८८४ में लगभग ७४०००० रुपयेके माल बन्दरगाहमें आये और २२१८००० रुपयेके माल वहाँसे दूसरे देशोंमें गये। खास करके छोटी छोटी चीजें और अनेक भाँतिके धातु इङ्गलैंडसे आते हैं और गल्ले, चीनी इत्यादि वस्तु विजिगापट्टम्से दूसरे स्थानोमे जाती है। कसबेमें हाथीदांत, भैंस और हिरनके सीग, चन्दनकी लकडी और चांदीकी सुन्दर चीजें तैयार होती है। और बक्स, डेक्स इत्यादि कई प्रकारकी चीजें बहुत उत्तम बनती है।

विजिगापट्टम् जिला—इसके उत्तर गञ्जाम जिला और मध्यदेश, पूर्व गञ्जाम जिला और बङ्गालकी खाढ़ी. दक्षिण बङ्गालकी खाढी और गोदावरी जिला और पश्चिम मध्यदेश है। यह जिला सुन्दर पहाडी देश है, किन्तु इसका अधिक भाग रोगवर्द्धक है। पूर्वी घाट पहाड़ियोंका सिलसिला जिलेमें पूर्वोत्तरसे दक्षिण-पश्चिम गया है, जिससे जिला दो भागोमें बँट जाता है। इनमेंसे बडा हिस्सा पहाड़ी देश और छोटा हिस्सा समतल है। जिलेमें समुद्रसे ५००० फीटसे अधिक ऊँची कोई पहाडी नहीं है। बङ्गालकी खाढीके निकटकी भूमि उपजाऊ है। विजिगापट्टम् कसबेसे १८ मील पूर्वोत्तर इसी जिलेमें समुद्रके किनारे पर ८७४४ मनुष्योंकी बस्ती बिमलीपट्टम् एक बन्दरगाह है, जहाँ कलकत्ते और ब्रह्माके कई आगबोट लगते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जयपुर और विजयानगरम्की जमींदारियोके साथ विजिगापट्टम् जिलेका क्षेत्रफल लगभग १७३८० वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १७९०४६८ और जिलेकी एजेंसीकी, जिसके भीतर खास करके असभ्य जातियोके लोग बसते हैं, मनुष्य-संख्या ६९४६७३ दोनों मिलकर २४८५१४१ थी। इनमें २४६०४७४ हिन्दू, जिनमें जंगली असभ्य लोग भी सामिल हैं, २०४०३ मुसलमान, ३४१० क्रस्तान, ६७५ बौद्ध, २० जैन और १५९ अन्य थे। हिन्दुओंमें ८९१४९८ वेलाला (जो खास करके खेती करते हैं), २४१११७ परिया, १२२१९८ इडैगा (भेड़ पालते हैं), ८८४९० कैकोला (बिनाईका काम करते है), ७३३९८ कमालर (कारीगर), ७०३४१ साना (ताडीका काम करते है), ५७५६४ ब्राह्मण, ५७४३७ बनान (कपड़ा धोते हैं) ३४९०० सतानी, ३३४०० सेटी (व्यापार करते है), २९२५५ अंबातन (हजाम), २१४२३ क्षत्री, १६५९६ मछुहा, १५८५८ कनाकन (लिखनेका काम करते है), १५०५५ कुसवन (मट्टीके वर्तन बनाते हैं), १४४८९ बनिया (जाति विशेष) और बाकीमे दूसरी जातियोंके लोग थे। आदिनिवासी जातियोमें खास करके गोंड, गदवा, खांद इत्यादि थे। जिलेके एजेंसीके अधीन खास कर आदि निवासी असभ्य लोग बसते है, उसकी मनुष्य-गणना ३ या ४ महीनोमें एक दूसरी रीतिसे की गई थी।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजिगापट्टम् जिलेके कसबे विजिगापट्टम्में ३४४८७, विजयानगरम्में ३०८८१, अनकापल्लीमें १७०१०, बोबिलीमें १४४६८, सालूरमे १२९१७, पालकोंडामें १०३६७ और पार्वतीपुरमें १००५३ मनुष्य थे। इनके अलावे इस जिलेमें बिमलीपट्टम् और कासिमकोटाभी छोटे कसबे है।

जयपुरका राज्य–विजिगापट्टम् जिलेके पश्चिमी भागमें जयपुरका जमींदारी राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९३३७ वर्गमील है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६१२००० मनुष्य थे। राजाको १६००० रुपया पेशकस अङ्गरेजी सरकारको देना पड़ता है। राज्यमें बहुत पहाडियाँ हैं, किन्तु ५००० फीटसे अधिक ऊँची कोई नहीं है। बहुत भाग पहाडी जाति खॉद् लोगोके अधिकारमें है, जो लोग पाहिले समयमें पृथ्वीको मनुष्य-बलि देते थे। सन् १८४५ में इस कामको रोकनेके लिये अङ्गरेज सरकारकी ओरसे खास एजेंट नियत किया गया। राजधानी जयपुरमे राजाका महल और कई एक देवमन्दिर सुन्दर बने हुए हैं, अन्य प्राय: सब मिट्टीकी झोपडियाँ हैं। वहाँके वर्तमान राजा महाराज रामचन्द्रदेव जातिके क्षत्रिय हैं।

बोबिली राज्य—विजिगापट्टम् जिलेमें विजयानगरम्के-उत्तर बोबिलीका जमीदार राज्य है। यह राज्य मदरास हातेके बहुत पुराने राज्योंमेंसे एक है। इसका क्षेत्रफल ९२० वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १५८१७८ मनुष्य थे। राजाको राज्यसे लगभग २७५००० रुपया मालगुजारी आती है। बोबिली राजधानीमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४४६८ मनुष्य थे, अर्थात् १४०७५ हिन्दू, ३३३ मुसलमान और ६० कृस्तान। वहाँके वर्त्तमान नरेश राजा व्यंकटेश्वराचल पन्थी रंगाराव बेल्मा जातिके हैं।

विजिगापट्टम्का इतिहास–विजिगापट्टम्का वर्तमान जिला हिन्दू इतिहासके आरम्भमें कलिंग राज्यका एक भाग था। पीछे उसको चालुक्य वंशके पूर्वी शाखाके प्रधानने जीता। वह कभी कभी उडीसाके गजपति वंशके राजाओके और कभी कभी तेलिंगानाके राजाओंके अधीन होता था। चौदहवीं सदीके मध्य भागमें अन्ध्र वंशके राजा कुलोटगाचोलाने विजिगापट्टम कसबेको बसाया। पीछे वह जिला आस पासके देशके साथ बहमनी वंशके राजाको मिला, किन्तु उडीसेके राजाने उस देशको फिर लेलिया। पीछे कुतबशाही खानदानके इब्राहिमने उत्तर चिकाकोल तक सम्पूर्ण देशको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। सत्रहवीं सदीके मध्यमें ईष्टइण्डियन कम्पनीने विजिगापट्टम्में अपनी कोठी कायम की। सन् १६८७ में मुगल बादशाह औरंगजेबने गोलकुण्डाको जीता, तबसे उत्तरी सरकार, जिनमें विजिगापट्टम जिला है, बराय नामके दिल्लीकी बादशाहतका एक भाग बना। सन् १६८९ में मुगलोंने ईष्टइण्डियन कम्पनीकी कोठीको छीन करके कोठीवालोंको मारडाला, किन्तु दूसरे वर्ष यह कोठी फिर उसको मिलगई और शीघ्रही वहाँ किलाबन्दी बनाई गई।

मुगलोके निर्बल होनेपर उत्तरी सरकार हैदराबादके निजामके अधिकारमें आया। पहिले निजामकी मृत्यु होनेपर गद्दीके लिये झगड़ा हुआ। फरासीसियोंने सलाबतजंगकी सहायता की, इस लिये उसने इनको मुसतफानगर, एलोर, राजमहेंद्री और चिकाकोल नामक चारों सरकारोंको दे दिया। सन् १७५३ में फरासीसियोंने चारों सरकारोंके लिये परवाना हासिल किया। सन् १७५९ मे अङ्गरेजोंने गोदावरी जिलेमें फरासीसियोंको परास्त करके उनसे मछलीपट्टम्का जिला छीन लिया, तब निजामने ईष्टइण्डियन कम्पनीको मछलीपट्टम्के चारोंओरका देश दे दिया। सन् १७६५ में कम्पनीको शाही फरमान द्वारा सब उत्तरी सरकार मिल गये। सन् १७६८ में निजामके साथ कम्प-

नीकी एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार निजामने भी उत्तरी सरकारोंको कम्पनीको देदिया। इस तरहसे दूसरे देशोंके साथ विजिगापट्टम् अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगया । पीछे कई वार वगावत हुई किन्तु वढ़ने नहीं पाई ।

## विजयानगरम् ।

वालटेयर जंक्शनसे ३८ मील और विजिगापट्टम् कसवेसे ४० मील ( वेजवाड़ासे २६० मील ) पूर्वोत्तर विजयानगरम्का रेलवे स्टेशन है । मदरास हातेके विजिगापट्टम् जिलेमें ( १८ अंश, ६ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, २७ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें ) विजयानगरम् एक कसवा है, जिसको कुछ लोग ईजानगर कहते हैं । विजयानगरम्के महाराजकी राजधानी होनेसे यह अधिक प्रसिद्ध है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजयानगरम्में ३०८८१ मनुष्य थे, अर्थात् १४८८२ पुरुष और १५९९९ स्त्रियाँ । इनमें २८७४२ हिन्दू, १८२० मुसलमान, ३१५ कृस्तान, ३ पारसी और १ अन्य थे ।

विजयानगरम् एक सुन्दर कसवा है । इसमें एक सुन्दर वाजार, महाराजका दिया हुआ एक टौनहाल, एक वड़ा स्कूल और कई सरकारी इमारतें हैं और एसिस्टेंट कलक्टर रहते हैं । किलेके भीतर महाराजका विशाल महल और अन्य मकान वने हुए हैं । किलेसे १ मील दूर ऊँची भूमिपर अङ्गरेजी फौजी छावनी है, जिसमें देशी पल्टनकी एक रेजीमेण्ट रहती हैं । किले और छावनीके मध्यमें सड़कके पास एक वड़ा तालाव है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है ।

महाराजकी जमीन्दारी–यह विजिगापट्टम् जिलेमें भारतवर्षकी पुरानी और फैली हुई जमीन्दारियोंमेंसे एक है । सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इसके लगभग ३००० वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें १२५२ गाँव, १८५९०४ मकान और ८४४१६८ निवासी थे । महाराज अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको ४९६५८० रुपया पेशकस अर्थात् जमीन्दारीका लगान देते हैं ।

इतिहास—सन् ५९१ ई० में माधववर्मा नामक एक क्षत्रियने कृष्णा नदीकी घाटीमें राजपूतोंका नया देश बसाया, जिसके वंशमें विजयानगरम्के वर्तमान महाराज हैं । गोलकुण्डाके राज्यके समय उस वंशके लोग गोलकुण्डाकी कचहरीके प्रसिद्ध सरदार थे । सन् १६५२ में उस वंशके पशुपति माधववर्मा विजिगापट्टम्में आकर रहने लगे । वाद पशुपति वंश वाले उत्तरी सरकारोंमें सवसे अधिक वलवान् हुए । लगभग सन् १७१० मे पशुपति माधववर्माके मरनेपर उनके पुत्र पद्दा विजयरामराज उत्तराधिकारी हुए । उन्हींने सन् १७१२ मे पोटनूरको छोड़कर अपनी नई राजधानी वसाई और उसका नाम अपने नामके अनुसार विजयानगरम् रक्खा । उन्हींने विजयानगरम्मे किला वनाया और अपने अधिकारको वढ़ाया । सन् १७५७ में उन्होंने फरासीसियोंकी सहायतासे अपने वंशके शत्रु वोविलीके जमीन्दारको मार डाला; किन्तु दो रातके पीछे उस जमीन्दारके २ नौकरोंने उनको प्राण रहितकर दिया। उसके वाद पद्दा विजयरामराजके उत्तराधिकारी आनन्दराज और आनन्दराजके उत्तराधिकारी उनके दत्तक पुत्र विजयरामराज, जो निरे वच्चे थे, हुए । विजयरामराजके वैमात्रिक भाई सीतारामराज राज्यका काम करने लगे । उन्होंने सन् १७६१ में पर्लाखेमडीके राज्यपर आक्रमण करके राजाकी फौजको चीकाकोलमें परास्त करके एक वड़े देशको प्राप्त किया और

राजमेहन्द्रीकी लडाईमे भी उनकी जीत हुई। उस समय जयपुर, पालकुण्डा और आस पासके अन्य बहुत जमीन्दारोंने पशुपति वंशके राजाको अपना सरदार स्वीकार किया। अङ्गरेजोंने भी अपनी सेनासे उनकी सहायता की थी। पीछे सीतारामराजका बल बढ़ा हुआ देखकर ईष्टइण्डिया कम्पनीको अपने राज्यका भय हुआ, इसलिये सीताराम कुछ दिनके लिये अलगकर दिये गये। सन् १७९० में वह वापस आये थे, किन्तु सन् १७९३ मे फिर मदरास रहनेके लिये भेजे गये। युवा होनेपर राजा विजयरामराज अपने मनमें मरना कबूल करके अङ्गरेजोंके साथ लड़नेको तैयार हुए। सन् १७९४ की जूनमे अङ्गरेजी सेनाने पद्मनाभमें थोडीसी लडाईके बाद उनको परास्त किया। राजा और बहुतेरे प्रधान मारे गये। राजाके शिशुपुत्र नारायणबाबू पहाडी जमीदारोंकी रक्षामें चले गये। पीछे नारायणबाबू और पहाडी प्रधान लोग अङ्गरेजोंके आधीन हुए। विजयानगरम्‌के चन्द हिस्से निकाल लिये गये। राजाके राज्यका ६००००० रुपया पेशकस नियत हुआ, किन्तु सन् १८०२ में दायमी बन्दोबस्त होनेके समय अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने विजयानगरम्‌के राज्यका पेशकस ५ लाख रुपया कर दिया। उस समय राज्यमें ११५७ गाँवथे। सन् १८४५ में नारायणबाबू बहुत करजदार होकर और अपनी मिलकियतका प्रबन्ध अङ्गरेजी गवर्नमेंटके हाथमे छोड़कर काशीजीमें मरगये। विजयराम गजपतिराज उनके उत्तराधिकारी हुए। पशुपति घरानेके राजाओंको गवर्नमेंटसे मिर्जा और मनिया सुलतानकी पदवी और १९ तोपोंकी सलामी मिलती थी, परन्तु सन् १८४८ में पदवी घटा दी गई और सलामी १९ के स्थानपर १३ तोपोंकी की गई, जो अब तक मिलती है। १८५२ में राजा विजयराम गजपतिराजको राज्यका अधिकार मिला। उस समय उनकी मिलकियत अच्छी हालतमे होगई थी। सन् १८६४ मे राजाको हिज हाईनेस महाराजाकी और उसके पश्चात् के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। सन् १६७७ में उनको १३ तोपोंकी सलामी मिलनेका अधिकार हुआ। महाराज बड़े बुद्धिमान और दानी थे। उन्होंने अनेक सडक, पुल और अस्पताल बनवाये और विजयानगरम् कसबेकी अनेक उन्नति की। उन्होंने खैरात और सर्व साधारण लोगोंके हितके कामोंमे खास करके काशीजी और अपने राज्यमें लगभग १० लाख रुपया खर्च किया। मदरास, कलकत्ता और लण्डनमेभी उनकी उदारताका स्मारक चिह्न है। सन १८७८ में महाराज विजयराम गजपतिराजकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र विजयानगरके वर्तमान नरेश आनेरबल हिज हाईनेस महाराजा सर पशुपति आनन्द गजपतिराज के०सी०आई० ई०, जिनका जन्म सन् १८५० ई० मे हुआ था, उनके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८८४ में वह मदरासके लेजिस लेटिव कौसलके मेम्बर बनाये गये।

## चिकाकोल।

विजयानगरम् से ४३ मील ( बेजवाडासे २०३ मील ) पूर्वोत्तर चिकाकोल रोडका रेल्वे स्टेशन है। स्टेशनसे कई मील पूर्व मदरास हातेके गञ्जाम जिलेमें ( १८ अंश, १७ कला २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, ५६ कला, २५ विकला पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रसे ४ मील दूर चिकाकोल तालुकेका सदर स्थान चिकाकोल कसबा है। कसबेके पास एक छोटी नदीपर पुल बना हुआ है। कटकसे मदरास जानेवाली बडी सड़क कसबे होकर गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चिकाकोलमें १८२४१ मनुष्य थे; अर्थात् १७३१५ हिन्दू, ८३६ मुसलमान, ७७ कृस्तान, ३ बौद्ध और १० दूसरे।

चिकाकोलमें जेलखाना; स्कूल, अस्पताल, सरकारी कचहरियाँ और अनेक मसजिदें है, जिनमेंसे सन् १६४१ की बनी हुई गोलकुण्डाके बादशाहके फौजदार शेरमहम्मदखाँकी मसजिद प्रसिद्ध है। कसबेसे उत्तर पुराने किलेकी खाईके भीतर ऊपर लिखी हुई सरकारी इमारतोंमेंसे बहुतेरी इमारतें हैं। सन् १८८१ में कसबेके निवासियोमेंसे सैकडे पीछे २० आदमी सौदागर और ८ मनुष्य कपडे इत्यादिके बिनने वाले थे।

कुछ दिनोंके लिये चिकाकोल जिलेका सदर स्थान था। सन् १८६६ में अकालसे कसबेकी बडी हानि हुई। सन् १८७६ में एक बाढ़से पुलकी ६ मेहराबियाँ और कसबेके बहुतेरे मकान और माल बहगये।

## पर्लाखेमड़ी।

चिकाकोल रोडसे २९ मील ( बेजवाडेसे ३३२ मील ) पूर्वोत्तर नावापाडाका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग २५ मील पश्चिमोत्तर मदरास हातेके गञ्जाम जिलेमें ( १८ अंश, ४६ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ८ कला पूर्व देशान्तरमें ) एक जमींदारीका प्रधान कसबा पर्लाखेमडी है।*

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस कसबेमें १६३९० मनुष्य थे अर्थात् १५९२४ हिन्दू, ३१० मुसलमान, १०७ एनिमिष्टिक, ३७ कृस्तान और अन्य।

पर्लाखेमडी नाम दो गाँवोंके नामसे बना है। कसबेके जमींदारके महलके बनानेमें ४ लाख रुपये खर्च पडे हैं।

## ब्रह्मपुर।

पर्लाखेमडी रोडके स्टेशनसे ७९ मील ( बेजवाडासे ३९४ मील ) पूर्वोत्तर ब्रह्मपुरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें ( १९ अंश, १८ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ४७ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें ) गञ्जाम जिलेका सदर स्थान और फौजी स्टेशन ब्रह्मपुर एक सुन्दर कसबा है। कटकसे मदरास जाने वाली बड़ी सड़क ब्रह्मपुर होकर गई है। ब्रह्मपुरसे १८ मील पूर्वोत्तर गञ्जाम कसबा है।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय ब्रह्मपुर कसबे और इसकी फौजी छावनीमें २५६५३ मनुष्य थे, अर्थात् १२३९७ पुरुष और १३२५६ स्त्रियाँ। इनमे २३७६४ हिन्दू १३६४ मुसलमान, ४८८ कृस्तान, और ३७ एनिमिष्टिक थे।

ब्रह्मपुरमें जज मजिष्टर आदि हाकिमोंकी कचहरियाँ, फौजी छावनी, जिला जेल कालिज, अस्पताल अनेक देवमन्दिर और २ गिरजे हैं। चीनीकी सौदागरी बहुत होती है। वहाँका बिनाहुआ रेशमी कपड़ा बहुत अच्छा होता है। वहाँ मदरास बंककी एक शाखा खुली है। कसबेसे दूर पश्चिम और उत्तर पहाड़ियाँ है। कसबाका पवन पानी रोगकारक है। ब्रह्मपुरसे पूर्व ९ मील गञ्जाम जिलेका प्रधान बन्दरगाह गोपालपुर और पूर्वोत्तर रेलवे पर १४ मील

* नवापाडासे २५ मीलकी रेलवे शाखा पर्लाखेमडी कसबेको गई है।

छत्तरपुर, ३० मील रम्भा, ९२ मील खुदरारोड, १०४ मील भुवनेश्वर और ११४ मील कटकरोडका स्टेशन है ।

ब्रह्मपुरमें शिवमतावलम्बी लिङ्गायत लोग बहुत देख पडते हैं उनमें स्त्री पुरुष सबके गलेमें चाँदीका एक शिवलिङ्ग लटका रहता है उनमेसे कोई कोई लिङ्गको रूमालमें लपेटकर अपने गलेमें अथवा वाम भुजा पर बाँधते है। वे लोग सर्वदा भस्म धारण करते हैं । लिङ्गायत मनुष्यके देहान्त होनेपर उसके गुरु मृतकके गलेमे शिवके नामकी चिट्ठी बाँध देते है । चिट्ठीमें लिखा रहता है कि हे शिव ! इस अपने भक्तको स्थान दो इत्यादि ।

गञ्जाम जिला—मदरास हातेके पूर्वोत्तरकी सीमाके पास गञ्जाम जिला है । इसके उत्तर उडीसाके दसपला, बोड इत्यादि मालगुजार राज्य, पूर्व पुरी जिला और बङ्गालकी खाड़ी, पश्चिम मध्य देशका पटना और कालहाँडीका राज्य और दक्षिण मदरास हातेका बिजगापट्टम् जिला है ।

गञ्जाम जिलेका क्षेत्रफल ८३११ वर्गमील है, जिसमेंसे ५२०५ वर्गमीलमें एजेसी या पहाडी देश है जिलेमें १६ बड़ी और ३५ छोटी छोटी जमींदारियाँ है । पहाडियाँ बहुत है, जिनमेंसे बहुतेरियोंपर सघन जङ्गल लगे हुए है । जगह जगह घाटी और उपजाऊ मैदान है । समुद्रके किनारे पर लोना पानीकी झीलोंका एक जञ्जीरा है । बहुतेरी नदियाँ जिनमे ऋषिकुल्या वमसा धारा और लँगुलियाँ प्रधान है, बहती हैं । जङ्गलोंमें मधु बहुत होता है । चरागाहकी जमीन फैली हुई है । पहाडियोंमें वनैले जन्तु बहुत रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गञ्जाम जिलेमें १७४९६०४ मनुष्य थे अर्थात् १७४११७४ हिन्दू, केवल ६०७३ मुसलमान, १५५१ कृस्तान, २७० बौद्ध और ५३६ अन्य । इनमेसे २४६३०३ मनुष्य पहाड़ी देशोंमे और बाकी लोग मैदानोंमें थे जातियोंके खानेमें ४६१९९५ वेलाला, १९८१७९ परिया, १२७८६९ ब्राह्मण ५६५६७ इडैगा, ४४९७० कम्भार ४४४६७ साना, ४२७१२ धनियाँ, ( जाति विशेष ), ४१८५६ सम्बदवा, ४०४६२ वनान, ३८१०४ कर्कोला, ३०६८३ सेटी, २९६७० सतानी, २५६६५ कनाकन, २५२०६ अम्बातन, १५६६० कुशवन ४१४३ क्षत्रिय और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे गञ्जाम जिलेके मैदानोंके लोग तलङ्गी और उडिया भाषा और पहाडी कामोंके लोग खाँद और शवर भाषा बोलते है । आदि निवासियोंमें खास करके खान्द और शवर है, किन्तु ये प्राय: सबलोग अब हिन्दू मत पर चलते है और हिन्दुओमे गिने गये है । जिलेके मनुष्योंमें ७७७५५८ उडियाभाषावाले और बाकी मे ६९२९३१ तलङ्गीभाषा बोलनेवाले थे ।

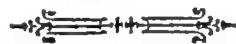
सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गजाम जिलेके कसबे ब्रह्मपुरमें २५,६५३ चिकाकोलमें १८२४१ और पर्लाखिमडीमें १६३९० और सन् १८८१ में रघुनाथपुरममें ५६३४, इच्छापुरमें ५५,२८, गंजाममे ५०३७, कलिङ्गापट्टम्में ४४६५, मंडासामें ४६७१, नरसन्नापेटमें ४२३०: बरुआमे ४२९८ और शेषमें ४००० से कम मनुष्य थे ।

गजाम कसबा, जो सन १८१५ ई० तक जिलेका सदर स्थान था, समुद्रके समीप ऋषिकुल्यानदीके मुहानेके पास है । ऋषिकुल्यानदीके दक्षिण एक पुराना किला खडा है । गंजामके पास कभी कभी यूरोपियन आगबोट आते हैं । चावल वहाँसे दूसरे देशोंमें भेजा जाता है । सरकार वहाँ नमक तयार करती है ।

इतिहास---पूर्व कालमें गंजाम दक्षिणी कलिङ्गराज्यका एक भाग था। बहुत दिनों तकका इतिहास मालूम नही है। सन् १६४१ में कुतुबशाही राज्यके बादशाहने शेरमहम्मदखाँको उस देश पर हुकूमत करनेके लिये फौजदार बनाकर चिकाकोलमें भेजा। वर्त्तमान गंजाम जिला मुसलमानोके आधीन चिकाकोल सरकारका एक भाग बना। गंजामके निकट ऋषिकुल्या नदीके दक्षिणका देश काशीबूगा तक इच्छापुर नामक देश करके प्रसिद्ध था। सन् १७५३ में निजाम सलावतजङ्गने फरासीसियोंको उत्तरी सरकारोंको देदिया। सन् १७५९ मे अङ्गरेजोने मसुलीपट्टमको ले लिया। जब उत्तरी सरकार अङ्गरेजोंके आधीन होगये, तब फरासीसियोने गंजाम और उत्तरकी अपनी कोठियोंको छोड दिया। सन् १७६६ मे मुगल बादशाहने अपने फरमान द्वारा उत्तरी सरकारोंको अङ्गरेजोंको देदिया। सन् १७६८ मे गंजाम अङ्गरेजी रेजीडेण्टके आधीन हुआ और वहाँ एक अङ्गरेजी कोठी नियत की गई। सन् १७०२ तक इच्छापुर देशका प्रबंध रजीडेण्ट, कौंसिल और कलक्टर द्वारा होता था। उसी सन् मे पुण्डीनदीके दक्षिणके चिकाकोल तकके देशका (वर्तमान) गंजाम जिला बनाया गया। सन् १८३६ मे अङ्गरेज सरकारको जान पडा कि खाँद लोग मनुष्य बलि देते है, तो उन्होने उनको परास्त करके उस असभ्य रीतिको रोक दिया। सन् १८६५ मे खाँद लोगोंने बलवा किया था, किन्तु बहुत सहजमें वे दबाये गये। उस समयसे देशमे कोई बलवा नही हुआ है।

---

# सातवां अध्याय।



## (मदरास हातेमें) पनानृसिंह, गुंटूर, मल्लिकार्जुन, करनूल, गुटंकल जंक्शन, बल्लारी, कुमारस्वामी, होसपेट और किष्किन्धा।

### पनानृसिंह।

बेजबाडेसे ७ मील दक्षिण-पश्चिम मङ्गलगिरिका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके कृष्णा जिलेमें मङ्गलगिरि एक छोटा कसबा है; जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५६१७ मनुष्य थे। कसबेमे ११ खनके विशालगोपुरसे सुशोभित लक्ष्मीनृसिहका मन्दिर है, जिसके सामने सुन्दर चित्रोंसे भूषित नृसिहजीका काष्ठमय रथ रक्खा हुआ है।

मङ्गलगिरि पहाडी पर एक मन्दिरके कोनेमें पनानृसिंहकी मूर्ति पश्चिम-मुखसे विराजमान है। उसके पासही सामने लक्ष्मीजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरमे सर्वदा दीप जलता है। शिखरके ऊपरी भागमे लक्ष्मीजीका स्थान है, जिसके आस पास बालाजी, रङ्गनाथ आदि देवमूर्तियां स्थापित हैं। उसी पहाडी पर हनूमानजीकी एक मूर्ति है। नृसिंहजीके मुखमे पना अर्थात् गुड अथवा शक्करका सर्वत पिलाया जाता है, इसी कारणसे उनको लोग पनानृसिंह और गुड़ोदकपान नृसिंह कहते हैं। यात्रीगण उनके मुखमें गुड़ वा शक्करका सर्वत देते हैं। वहाकँ पुजारी रामानुज संप्रदायके वैष्णव है उस देशमे जगह जगह नृसिंहजीकी मूर्त्ति है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—नृसिंहपुराण—(४४ वाँ अध्याय) नृसिंह भगवान् सब लोगोंके हितके लिये श्रीशैलके शिखरपर देवताओंसे पूजित होकर विख्यात हुए, और अपने भक्तोंके हितके लिये उसी स्थानपर स्थित होगये।

## गुण्टूर।

मंगलगिरेके रेलवेस्टेशनसे १३ मील (वेजवाड़ेसे २० मील) दक्षिण-पश्चिम गुंटूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके कृष्णा जिलेमें (१६ अंश, १७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, २९ कला, पूर्व देशान्तरमे) तालुकका सदर स्थान और प्रधान कसवा गुंटूर है, जिसके पास होकर बड़ी सडक कटकसे मदरास शहरको गई है। वेजवाडाके पास कृष्णानदीको पार उतरना होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गुंटूरमे २३३५९ मनुष्य थे, अर्थात् १७२८३ हिन्दू, ५४७४ मुसलमान, ५९२ कृस्तान, ८ जैन और २ दूसरे।

कसवा २ भागोंमें विभक्त है,—एक नया और दूसरा पुराना गुंटूर। उत्तर और पश्चिम ओर जिलेके मातहत कलक्टर और अन्य अफसरोंकी कचहरियाँ और कोठियाँ वनी हुई है। हालमें कसवेकी बड़ी तरक्की हुई है। वहाँ गल्ले और रुईकी वडी तिजारत होती है। और मदरासवङ्ककी एक शाखा भी है। गुंटूरकी कवरगाहमे फरासीसियोंके राज्यके समयके वहुत लोगोंकी कवरें हैं।

इतिहास—गुंटूर मुसलमानोंके राज्यके समय एक सरकारकी राजधानी थी। सन् १७५२ मे हैदरावादके निजामने इसको फरासीसियोंको देदिया। सन् १७७६ में जव उत्तरी सरकार अङ्गरेजोंको दिया गया, तव गुंटूर अलग निकाल लिया गया, क्योंकि यह जिन्दगीभरके लिये सलावतजङ्गका जागीर था। सन् १७७८ में अङ्गरेजोंने गुंटूरपर लगान कायम किया था, किन्तु सन् १७८० मे छोड दिया गया। सन् १७८८ में यह फिर अङ्गरेजोंके अधिकारमे आगया।

## मल्लिकार्जुन।

गुंटूरके रेलवे स्टेशनसे ५१ मील (वेजवाडा जंक्शनसे ७१ मील) दक्षिण-पश्चिम विनुकुण्डाका रेलवे स्टेशन है, जिससे ३ मंजिल उत्तर कुछ पश्चिम मल्लिकार्जुन हैं। मार्ग पहाड़ी और जंगली है। एक मंजिल तक वैल और घोड़े जा सकते हैं; उससे आगे पहाडी पगडण्डी है। मल्लिकार्जुन जानेका दूसरा मार्ग नंद्यालके रेलवे स्टेशनसे है। विनुकुण्डासे ११८ मील (वेजवाडा जंक्शनसे १८९ मील) दक्षिण-पश्चिम और गुंटकल जंक्शनसे ९० मील पूर्वोत्तर मदरास हातेके कर्नूल जिलेमे तालुकका सदर स्थान नंद्याल कसवा है, जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १०५२५ मनुष्य थे। कसवेमें नव दश शिव मन्दिर वने हुए है। नंद्यालसे पूर्वोत्तर ३६ मील तक वैलगाडीका और उससे आगे लगभग २४ मील मल्लिकार्जुन तक पगडण्डी मार्ग है। पूर्वके यात्री विनुकुण्डाके रेलवे स्टेशनसे और पश्चिमवाले यात्री नंद्यालके स्टेशनसे उतरकर मल्लिकार्जुनके दर्शनको जाते हैं। दोनों मार्गमें पहाडियां और भयंकर जंगल मिलते है। वन जन्तुओंके भयसे वहुतसे यात्री एकत्र होकर मार्गमें चलते है। पर्वके दिनोंमें विशेष करके फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय वहां यात्री लोग जाते हैं।

श्रीशैल नामक पर्वतके ऊपर मदरास हातेके कृष्णा जिलेमें कृष्णा नदीके किनारेपर महादेवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक मल्लिकार्जुन शिवका विशाल मन्दिर वना हुआ है। मन्दिरके चारोंओर सुन्दर गोपुर है। भ्रमराम्बा अर्थात् श्रीपार्वतीजीका मन्दिर अलग वना है। उस स्थानपर कई एक धर्मशाले और छोटे वडे वहुतसे देवमन्दिर है। मन्दिरके निकट कृष्णा नदीका करारा वहुत ऊँचा है। कृष्णाकी धारा वहुत नीचे वहती है, इसी कारणसे उसको लोग पातालगङ्गा कहते हैं। पर्वतपर पहाड़ी लोगोंकी झोंपडिया देखनेमे आती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( वनपर्व, ८५ वां अध्याय ) श्रीपर्वतपर जाकर नदीमे स्नान करके शिवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है। वहाँ पार्वतीजीके सहित शिवजी और देवताओंके साथ ब्रह्माजी निवास करते हैं। जो मनुष्य वहाँके देवह्रद तीर्थमे स्नान करता है, उसको अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और परम सिद्धि प्राप्त होती है।

लिङ्गपुराण—(९२ वाँ अध्याय) जो मनुष्य संन्यास ग्रहण करके श्रीशैल पर्वत पर निवास करता है, उसको दूसरे जन्ममें पाशुपत योग प्राप्त होता है। काशीजीके समान वहाँ भी प्राण त्याग करनेमे प्राणीकी मुक्ति होजाती है।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय ) भारतवर्षमे श्रीशैल एक उत्तम तीर्थ है।

पद्मपुराण—( उत्तर खण्ड, १९ वां अध्याय ) श्रीशैलका माहात्म्य सुननेसे मनुष्य बालहत्यादि पापोंसे छूट जाता है। तपस्वी ऋषियोंसे सेवित श्रीशैल पर्वत पर अनेक तालाव और देवताओंके मन्दिर बने हुए है। वहाँ मल्लिकार्जुन शिव सर्वदा स्थित रहते हैं। पर्वतके कँगूरेके दर्शन मात्रसे मनुष्योंकी मुक्ति होती है। दक्षिण दिशामें उत्तम श्रीशैल पर्वत विद्यमान है। वहाँके पातालगङ्गामें स्नान करनेसे मनुष्यका सम्पूर्ण पाप छूटजाता है। श्रीशैलके शिखरके दर्शन करनेसे, काशीजीमें मृत्यु होनेसे, और केदारके जल पीनेसे फिर जन्म नहीं होता है, अर्थात् मोक्ष होजाता है। वहाँ स्वर्गके समान सुखदाई सिद्धपुर नामक सुन्दर नगर है।

सौरपुराण—( ६९ वाँ अध्याय ) श्रीपर्वत पर चारों ओर सिद्ध और मुनि देख पडते हैं। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्गमें महेश्वर सर्वदा निवास करते हैं, जिनके दर्शन करनेसे मनुष्य जीवन्मुक्त होजाता है। वहाँ मृत्यु होनेसे मनुष्य, पशु, कीट, पतंग, सब प्राणी शिवलोकमें चले जाते हैं।

शिवपुराण—( ज्ञानसंहिता, ३५ वां अध्याय ) कार्तिकेय और गणेश दोनों कुमार पहिले विवाह करनेके लिये विवाद करने लगे। तब उनके माता पिता ( पार्वती और शिव उनसे वोले कि तुम दोनोमेंसे जो सम्पूर्ण पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करके पहिले लौट आवेगा, उसीका विवाह प्रथम होगा। यह सुनकर कार्त्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करनेके लिये शीघ्रही वहाँसे चले गये। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है, मै किस भाँति पृथ्वीकी परिक्रमा करूं। पीछे उन्होंने शोच विचार करके महादेवजी और पार्वतीजीको आसन पर बैठानेके उपरान्त उनकी पूजा करके उनकी ७ प्रदक्षिणा कीं उसके पश्चात् वह उनसे वोले कि तुम लोग अव शीघ्र हमारा विवाह कर दो माता पिताने कहा कि तुम पृथ्वीकी परिक्रमा करके कार्तिकेयसे पहिले आवो, तव तुम्हारा विवाह होगा। तव गणेशजी क्रोध करके वोले कि

तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगोंकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वीकी परिक्रमा नहीं हुई। वेद शास्त्रमें लिखा है कि माता पिताके पूजन करके उनकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वी परिक्रमाका फल मिलता है; क्या वह बात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्र मेरा विवाह कर दो, नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य हैं। गणेशजीकी ऐसी बातें सुनकर पार्वतीजी और शिवजी विस्मित हुए। ( ३६ वाँ अध्याय ) उन्होने गणेशजीकी चतुरता देख कर उनको बहुत सराहा और बड़े सामानसे विश्वरूपकी कन्या सिद्धि और बुद्धिसे उनका विवाह करदिया। कुछ दिनोंके उपरान्त सिद्धिसे क्षेम और बुद्धिसे लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। बहुत दिनोंके पश्चात् कार्तिकेयजी पृथ्वीकी परिक्रमा करके आये। नारदजीने मार्ग-हीमे कैलास पर्वत पर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिताने तुमको पर्य्यटनके बहानेसे बाहर निकाल कर दो स्त्रियोंसे गणेशका व्याह कर दिया। उनके दो पुत्र भी होगये है। ऐसे काम करनेवाले माता पिताका मुख देखना उचित नही है। कार्तिकेय महा क्रोधित हो शिवजी तथा पार्वतीजीको प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गये। शिवजीके निवारण करने पर भी उन्होने रहना स्वीकार नहीं किया। उसी दिनसे तीनों लोकोंमे उनका नाम कुमार करके प्रसिद्ध हुआ। शिवजी कार्तिकेयके विरहसे दुःखी होकर पार्वतीजीके सहित उनके पास गये। शिवजीको देखकर कार्तिकेयने उसस्थानसे दूसरे स्थानमे जानेकी इच्छा की, किंतु देवताओंकी प्रार्थना करनेसे वह उस स्थानसे १२ कोश दूरजाकर रहने लगे। तब पार्वतीजीके सहित शिवजी अपनेएक अंशसे ज्योतिर्लिङ्ग होकर उसी स्थानमें स्थित होगये और मल्लिकार्जुन नामसे जगत्मे प्रसिद्ध हुए। वहाँ अब तक पार्वतीके सहित उनका दर्शन होता है। प्रति अमावास्याको शिवजी और प्रति पूर्णिमासीको पार्वतीजी स्वयं स्कदके स्थानपर जाती है।

( ३८ वाँ अध्याय ) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्ग है, जिनमेंसे मल्लिकार्जुन श्रीशैल पर्वतपर विराजते है। ज्योतिर्लिङ्गोंकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सम्पूर्ण पापोका नाश हो जाता है। नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्यभी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममें शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होते हैं और उस जन्मके पश्चात् उनकी मुक्ति हो जाती है।

अग्निपुराण—( ११४ वाँ अध्याय ) श्रीपर्वत अर्थात् श्रीशैल पवित्र स्थान है। पूर्व-कालमे इस स्थानपर पार्वतीजीने लक्ष्मीजीका रूप धारण करके तपस्या की तब विष्णु भगवानने उनको वर दिया कि तुमको ब्रह्मज्ञान लाभ होगा और अबसे यह पर्वत तुम्हारे नामसे ( श्रीशैल ) विख्यात होगा। इस स्थानपर जो मनुष्य दान, तपस्या और श्राद्ध करेगा उन सबका फल अक्षय होगा। यहां मृत्यु होनेसे प्राणीको शिवलोक मिलेगा। ऐसा वर देकर विष्णु चले गये। हिरण्यकशिपु श्रीशैलपर तपस्या करके जगत् विजयी हुआ। देवताओंने यहां तप करके परम सिद्धि लाभ की।

## करनूल।

नन्द्यालके रेलवे स्टेशनसे ४७ मील पश्चिम, ( बेजवाडा जंक्शनसे २०६ मील पश्चिम कुछ दक्षिण ) और गुंटकल जंक्शनसे ४२ मील पूर्व करनूल रोड रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ( सड़क [illegible] ) ३३ मील उत्तर ( १५ अंश, ४९ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और

७८ अंश, ५ कला, २९ विकला पूर्व देशान्तरमे ) मदरास हातेके तैलंगदेशमे तुंगभद्रा और हिन्द्री नदीके सङ्गमके पास चट्टानी भूमिपर जिलेका सदर स्थान करनूल एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय करनूल कसवेमें २४३७६ मनुष्य थे, अर्थात् १२६३१ मुसलमान, ११४२९ हिन्दू, २८४ कृस्तान, ३१ जैन और १ दूसरा।

करनूल कसवेमे जिला जज, कलक्टर, मजिष्ट्रेटकी और अन्य सरकारी कचहरियाँ बनी हुई है। करनूलका पुराना किला, सन् १८६२ में तोड़ दिया गया, किन्तु उसके ४ पाये और ३ फाटक अवतक खडे हैं। सन् १८७१ तक किलेमें अङ्गरेजी फौज रहती थी। किलेमें करनूलका पहिला सूबेदार अवदुल वहावका सुन्दर मकवरा, कई एक मसजिदें और विजयानगरम्के महाराजका वनवाया हुआ एक नया सरोवर है। नवावके खानदानके चन्द-लोग अवतक किलेके मकानमें रहते हैं।

करनूल जिला—इसके उत्तर तुंगभद्रा और कृष्णानदी, जो हैदरावादके राज्यमे इसको अलग करती है और कृष्णा जिला, पूर्व नेलोर और कृष्णा जिला, दक्षिण कपाड़ा और वलारी जिला और पश्चिम वलारी जिला हैं। जिलेका सदर स्थान करनूल कसवा है। पहाड़ियोंके २ सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको जिलेके मध्यमे समानान्तर रेखामें फैलते हैं। इससे जिला ३ भागोमे वट जाता है। कोई पहाड़ी ३२०० फीटसे अधिक ऊंची नहीं है। मध्य भागकी फैली हुई चिपटी घाटी समुद्रके जलसे ७०० तथा ८०० फीट ऊंची है। जिलेके पश्चिमी भागमें करनूल कसवा है। जिलेकी प्रधान नदी तुङ्गभद्रा और कृष्णा है। जिलेमें लगभग १५० मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय करनूल जिलेका क्षेत्रफल एक छोटे राज्यके साथ ७७८८ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ७०९३०५ थी। इनमे ६१५९९२ हिन्दू, ८१८२७ मुसलमान, ११४६४ कृस्तान, ६ जैन और १६ दूसरे थे। हिन्दुओमे १९२०८६ वेलाला या कापू ( खेतिहर ), ९५९६९ परिया, ७१९११ इडैअर, ६६७०५ संवडवन ( यह मछरी और शिकार तथा पालकी ढोकर अपना निर्वाह करते है ), ३१५६४ चेटी, १९६२९ वनान, १८८४३ ब्राह्मण, १५१२२ कैकोला, १०८५९ अंवातन, १०५९३ साना, ९९५८ कुसवन ९८९५ कंमार, २८९८ क्षत्रिय और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। जङ्गली लोग पहाडियोंपर रहते हैं वे खेती करना नहीं चाहते, किन्तु गाँववाले लोग कभी कभी उनसे खेतोंकी रखवाली कराते हैं वे लोग जङ्गली तेहवारोंके समय यात्रियोंसे फीस लेते है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय करनूल जिलेके करनूल कसवेमें २४३७६ और नंद्यालमे १०७३७ मनुष्य थे।

इतिहास—करनूल जिला वारङ्गलके पुराने राज्यका एक भाग था। पीछे वह विजया नगरम्के राज्यका हिस्सा बना। राजा अच्युतदेवके राज्यके समय करनूलका किला वनवाया गया। वीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगरके ( तीनो ) राजाओंने तालीकोटकी लड़ाईमें विजयानगरम्के राजाको परास्त किया। उसके वाद सन् १५६४ में करनूल जिला वीजापुर राज्यका एक भाग वना। सन् १६५१ मे मुगल वादशाह औरङ्गजेवने वीजापुर पर विजय प्राप्त करके, खिजिरखाँ नामक एक पठानको करनूलका अधिकार देदिया। वहुत दिनों तक वह उसके वंशधरोके अधिकारमे था सन् १८०० में कड़ापा और वलारी जिलेके

साथ करनूल जिला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमे आया। सन् १८५८ मे करनूल एक जिला बनवाया गया। कड़ाप्पा और बलारी जिलेका भाग करनूलमें जोडा गया।

# गुण्टकल जंक्शन।

गुण्टकल जंक्शनसे रेलवे लाइन ५ ओर गई है;—पश्चिम कुछ उत्तर बल्लारी होकर गोवा-को, पश्चिमोत्तर बम्बईको, पूर्वोत्तर बेजवाड़ा होकर कटकको; दक्षिण-पूर्व मदरास शहरको और दक्षिण धर्मवरम्को।

(१) गुण्टकल जंक्शनसे पश्चिम कुछ उत्तर "सदर्न मरहठा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३० बल्लारी।
३६ बल्लारी छावनी।
५५ गादिगनूर।
७१ होसपेट।
११२ हरपालपुर।
१२३ गदग जंक्शन।
१५९ हुबली जंक्शन।
१७१ धारवाड।
२१५ लोंडा जंक्शन।
२३० केसिलरक।
२३३ पोर्चुगीज प्राण्टियर।
२८१ मरमागोवा बन्दरगाह।

गदग जंक्शनसे उत्तर ४२ मील बादामी, ५८ मील बटगेरी, ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन।

हुबली जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील बनावर, १८८ मील आर्सीकेरा, २४८ मील तुमकूर और २८८ मील बङ्गलोर शहर।

लोंडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील बेलगाम, ८१ मील गोकाक रोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, २०० मील सितारा रोड २०९ मील वाथर और २७८ मील पूना।

(२) गुण्टकल जंक्शनसे पश्चिमोत्तर रायचुर तक "मदरास रेलवे" उससे आगे 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे",—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३२ अदोनी।
५८ तुङ्गभद्रा।
७५ रायचुर।
९१ कृष्णा।
१४२ वाडी जंक्शन।
१६५ गुलबर्गा।
२२६ होतगी जंक्शन।

(आगेके स्टेशन होतगीमे देखो)।

वाडी जंक्शनसे पूर्व ११५ मील हैदराबाद और २०८ मील वारङ्गल

(३) गुण्टकल जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर "सदर्न मरहठा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २ पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन;

४३ करनूल रोड।
९० नन्द्याल।
१८८ विनुकुण्डा।
२५९ गुण्टूर।
२७० मङ्गलगिरि।
२८१ बेजवाडा जंक्शन।

(आगेके स्टेशन बेजवाडामे देखो)।

(४) गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व "मदरास रेलवे";—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१८ गूटी।

४८ ताड़पत्री।

११४ कडपा।

१९२ रेणुगुण्टा जंक्शन।

२३३ आरकोनम् जंक्शन।

२५० तिरुवल्लूर।

२७६ मदरास शहर।

रेणुगुण्टा जंक्शनसे पूर्वोत्तर १४ मील काल हस्ती, ३० मील वेंकटगिरि और ६२ मील नेल्लूर और रेणुगुण्टासे पश्चिम ६ मील तिरुपदी और १३ मील चन्द्रगिरि।

आरकोनम् जंक्शनसे दक्षिण—पूर्व १८ मील काँची और ४० मील चेङ्गलपट्ट जंक्शन और चेङ्गलपट्टसे दक्षिण कुछ पश्चिम ६४ मील विलीपुरम् जंक्शन।

(५) गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण "मदर्न मरहटा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

६३ धर्मवरम् जंक्शन।

११२ हिन्दूपुरम्।

१७४ बङ्गलोर शहर।

धर्मवरम जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व सौथ इण्डियन रेलवेपर ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन; पकालासे पूर्वोत्तर १९ मील चन्द्रागिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुण्टा जंक्शन और पकालासे दक्षिण-पूर्व ३९ मील कटपड़ी जंक्शन ४५ मील वेलूर और १३८ मील विलीपुरम् जंक्शन

## बल्लारी।

गुण्टकल जंक्शनसे ३० मील पश्चिम वल्लारीका रेलवे स्टेशन है। छावनीका स्टेशन उससे २ मील पश्चिम है। मदरास हातेमें ( १५ अंश, ८ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५७ कला, १५ विकला पूर्व देशान्तरमे ) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा बल्लारी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ वल्लारी कसबेमें ५९४६७ मनुष्य थे, अर्थात् ३०२४४ पुरुष और २९२२३ स्त्रियाँ। इनमे ३७२१७ हिन्दू, १७६९२ मुसलमान, ४३१४ कृस्तान, २३९ जैन और ५ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ६१ वाँ और मदरास हातेमें ६ वाँ शहर है।

शहरके रेलवे स्टेशनके पास रानीक्षेत्र नामक धर्मशाला है। कसबा किलेकी पहाडीके पादमूलके पास बसा है। उसमें कई एक रूईकी मिल अर्थात् कल कारखाने बने है। कसबेमे एक प्रकारका पैसा चलता है, जो एक आनेमें ३ होता है फौजी छावनीके दक्षिण-पश्चिमके भागमें एन० आई रेजीमेंटकी लाइनें हैं। १½ मील पूर्वोत्तर अङ्गरेजी पैदलके बारक बने है। छावनीमे मामूली तरहसे अङ्गरेजी पैदलकी एक रेजीमेट, आरटिलरीकी एक बैटरी, देशी पैदलकी एक रेजीमेंट, और देशी सवारकी एक रेजीमेंट रहती है। उत्तर बगलमें अनेक सरकारी आफिस, कई एक गिरजा, अस्पताल और स्कूल है।

किलेके सामन उसके ४ मीलके भीतर नोकदार एक ऊँची पहाड़ी है, जिसको लोग ताम्बाका पहाड कहते हैं। उसकी ऊँचाई पासके मैदानसे लगभग १६०० फीट और समुद्रके जलसे २८०० फीट है। मैसूरके हैदरअलीके राज्यके समय उस खानसे ताम्बा निकाला जाता था, किन्तु उसका खर्च नफेसे बढ़ जाता था, इस कारणसे खानका काम बन्दकर दिया गया। लोहाका ओर भी उसमे बहुत मिलता है, जिसमेसे कुछ चुम्बकका तासीर रखता है।

बल्लारीका पवन पानी सूखा होनेके कारण वह स्वास्थ्यकर स्थान है किन्तु वहाँ गरमी बहुत पडती है और सालाना औसत वर्षा केवल १६ इञ्च होती है। बाग कम होते है,क्योंकि बडे मुसकिलसे वृक्ष तैयार होते हैं।

किला—बल्लारी कसबेके पास बिना पौधेकी पहाडीके ऊपर, जो पासके मैदानसे ४५० फीट ऊँची है, लगभग २ मीलके घेरेमे किला फैला है। नीचे और ऊपर किलेकी २ लाइने हैं। ऊपरकी लाइनमें, जिसका शिरोभाग चिपटा है, एक पुराना गढ़ है। फौजी कैदियोंके रहनेके लिये किलेके भीतर बहुतसी छोटी छोटी कोठरियाँ बनीहुई है। वर्षाके पानी रखनेके लिये कई एक तालाब और हौज चट्टान खोदकर बनाये गये हैं। इनके अलावे किलेमे ६ बुर्ज, मीठे पानीसे भरेहुए अनेक गहरे खाते और एक पुराना शिवमन्दिर है, जिसके निकट ३६ फीट ऊँचा पत्थरका एक स्तभ है, जिसमें हनूमान और अन्य देवताओंकी सूरत बनी हैं।

नीचेके किलेके, जिसको सन् १७९२ में हैदरअलीके पुत्र टीपू सुलताननने बनवाया था, बगलोंमे दीवार और छोटे छोटे बुर्ज हैं। यह किला पहाडीकी नेवके पास है। पहाड़ीके दक्षिण-पश्चिमके कदमके पास तोपखाना है। किलेके दक्षिण ३ मील घेरेका एक तालाब है, जिसमे धाराका पानी आता है, किन्तु प्रति वर्ष वह समय समयमें सूख जाता है। किलेमें थोडेसे फौजी सिपाही रहते है।

बल्लारी जिला—इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर तुङ्गभद्रा नदी, जो हैदराबादके राज्यसे इस जिलेको अलग करती है, पूर्व करनूल जिला, दाक्षिण मैसूर राज्यका चितलदुर्ग जिला और पश्चिम तुङ्गभद्रानदी है, जो बम्बई हातेके धारवाड जिलेसे बल्लारीको जुदा करती है। बल्लारी जिलेके भीतर १६४ वर्गमील क्षेत्रफलमे सन्दूरका देशी राज्य हैं जिसमें सन् १८८१ मे १०५३२ मनुष्य थे। जिलेमे वृक्ष बहुत कम है। जिला मैदान है। जमीनसे नमक और सोडा बहुत बनाया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सन्दूरके राज्यके साथ बल्लारी जिलेका क्षेत्र-फल ५९०४ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ७३६८०७ थी, अर्थात् ६६२०७२ हिन्दू, ६९७६७ मुसलमान, ४१४० क्रस्तान, ६२० जैन और २०८ अन्य। इनमेसे हिन्दुओंमें १२५९०६ सेंबडवन (मछुहा), ९९८९३ बेलाला, ९७९५५ इडैयन, ८८५३० परिया, ४६८९१ सतानी, २८६६८ बढ़ल्र, २२५५९ कमाडन, १५३७५ ब्राह्मण, १३८३८ बनान, ११६६० सेटी, ६२९० सानान, ६१९० कुसबन, ६१८९ अम्बटन, २६२२ क्षत्रिय और बाकीमे दूसरी जातियोंके लोग थे। हिन्दुओंमें शैव और वैष्णव दोनों प्राय बराबर हैं, थोडे लिङ्गायत भी है। बल्लारी जिलेके पश्चिम भागके तालुकोंके लोग कनड़ी अर्थात् कर्नाटकी भाषा और पूर्वभागके तालुकोंके लोग कनड़ी और तेलुगु अर्थात् तेलङ्गी दोनों भाषा बोलतेहैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वल्लारी जिलेके कसबे वल्लारीमें ५९४६७ अदोनीमे २६२४३, होसपेटमें १२८७८, कॉपतीमें १०५२९ और रायदुर्गमें १०३८३ मनुष्य थे।

इतिहास–विजयानगरम् राज्यके अधीनके एक राजाने वल्लारीके किलेको बनवाया। उसने विजयानगरम्को वार्षिक खेराज देकर वल्लारीको अपने आधीन रक्खा था। तालीकोटमे विजयानगरम्के राजाके परास्त होनेपर वल्लारी मुसलमानोंके अधिकारमें हुई, किन्तु वल्लारीके राजाने अपनी आधी स्वाधीनताको कायम रक्खा था। सन् १६५० मे वल्लारीके राजाने विजयानगरम्के राजाके वंशधरोंको परास्त किया। पीछे वह जिला हैदराबादके निजामके आधीन हुआ। उसके पश्चात् मैसूरके हैदरअलीने किलेकी पहाडीके नीचे निजामकी सेनाको परास्त करके किलेको छीन लिया। सन् १७९२ मे वह किला सन्धिद्वारा निजामको फिर मिला। सन् १८०० में निजामने अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको किला दे दिया। बल्लारी अङ्गरेजी अधिकारमें होगई। सन् १८०७ में कडापा और वल्लारी अलग अलग जिला बनाया गया।

## कुमार स्वामी।

वल्लारीके रेलवे स्टेशनसे २५॥ मील ( गुंटकल जंक्शनसे ५५ मील ) पश्चिम गादिगनूरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे १६ मील दूर पहाडीके ऊपर कुमारस्वामीका मन्दिर है। ५ गोपुरोको लॉघनेपर स्वामिकार्त्तिकके निज मन्दिरका वड़ा चौगान मिलता है, जिसके बगलमें एक वडा गोपुर और भीतर स्वामिकार्त्तिकका निज मन्दिर है, जिसके आस पास एरम्बू सुब्रह्मण्य आदि देवताओके ४ मन्दिर है। १२ मील तक बैलगाडी जाती है, उससे आगे ४ मील पहाड़ी मार्ग है प्रतिवर्ष कार्तिककी पूर्णिमाको वहाँ दर्शनका बडा मेला होता है। मलमासके समय उससे भी अधिक यात्री वहाँ जाते हैं। कुमारस्वामीका नाम स्वामिकार्तिक, कार्तिकेय, स्कंद, सेनानी, षड्मुख, गुह इत्यादि है। द्राविडियन लोग उनको सुब्रह्मण्य कहते है।

कुमारस्वामी अर्थात् कार्तिकेय महादेवजीके पुत्र है। इनके जन्मकी कथा अनेक प्रकारकी है,–महाभारत वनपर्वके २२५ वें अध्याय, शल्यपर्व ४४ वे अध्याय, और अनुशासन पर्वके ८५ वें अध्यायमें, वाल्मीकि रामायण बालकाण्डके ३६ वें सर्गमें, मत्स्यपुराणके १५७ वें अध्यायमें, पद्मपुराण स्वर्गखण्डके १४ वें अध्यायमें, लिङ्गपुराणके ७१ वें अध्यायमें और शिवपुराण ज्ञानसंहिताके १९ वें अध्यायमें देखिये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शिवपुराण–( ज्ञानसंहिता, ३५ वॉ अध्याय ) कार्तिकेय और गणेश, शिवजीके दोनों कुमार अपना विवाह प्रथम करनेके लिये विवाद करने लगे। तव उनके माता पिता उनसे बोले कि तुम दोनोमेसे जो सम्पूर्ण पृथ्वीकी परिक्रमा करके प्रथम लौट आवेगा, उसीका विवाह पहिले होगा। ऐसा सुन कार्तिकेय पृथ्वीकी परिक्रमा करनेके लिये शीघ्रही वहॉसे चले गये। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है; मै किस भाँति पृथ्वी परिक्रमा करूगा। पीछे उन्होंने शोचकर महादेवजी और पार्वतीजीका पूजन करके उनकी ७ प्रदक्षिणा करदीं और वह उनसे बोले कि तुम लोग अब शीघ्र हमारा व्याह

कर दो। पार्वतीजी और शिवजी बोले कि तुम पृथ्वीकी परिक्रमा करके स्कन्दसे पहिले आवो, तब तुम्हारा विवाह पहिले होगा। तब तो गणेशजी क्रोध करके बोले कि तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगोंकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वीकी परिक्रमा नही हुई। वेद शास्त्रमें लिखा है कि माता पिताका पूजन करके उनकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वी परिक्रमा करनेका फल मिलता है, क्या वह बात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्रही हमारा विवाह कर दो नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य है। गणेशजीकी ऐसी बाते सुनकर पार्वतीजी और शिवजी परम विस्मयको प्राप्त हुए। ( ३६ वॉ अध्याय ) उन्होंने गणेशजीकी चतुरता देखकर उनको बहुत सराहा और विश्वरूपकी कन्या सिद्धि और बुद्धिसे उनका व्याह करदिया। कुछ दिनोके पश्चात् सिद्धिसे क्षेम और बुद्धिसे लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। बहुत दिनोंके उपरान्त कार्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करके आये। नारदजीने मार्गहीमे कैलास पर्वतपर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिताने तुमको बाहर भेजकर दो स्त्रियोंसे गणेशका विवाह कर दिया। उनके दो पुत्रभी होगये। ऐसे माता पिताका मुख देखना पुत्रको उचित नहीं है। ऐसा सुन कार्तिकेय महा क्रोधित होकर माता पिताको प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गये। उसी दिनसे उनका नाम कुमार प्रसिद्ध हुआ। शिवजी उनके विरहसे दुःखी होकर पार्वतीजीके सहित क्रौंच पर्वतपर कार्तिकेयके पास गये। उनको देखकर कार्तिकेयने उस स्थानसे अन्यत्र जानेकी इच्छा की, किन्तु देवताओंकी प्रार्थना करनेपर उन्होंने उस स्थानसे १२ कोस दूर जाकर निवास किया। तब शिवजीने ज्योतिर्लिंग होकर उसी स्थान पर निवास किया, जो मल्लिकार्जुन नामसे प्रसिद्ध है। प्रति अमावास्याको शिवजी और पूर्णिमाको पार्वतीजी स्वयं कार्तिकेय अर्थात् कुमारस्वामीके स्थानपर जाती है। कार्तिककी पूर्णिमाके दिन देवता, ऋषि, तपस्वी सब लोग क्रौंच पर्वतपर जाकर कुमारका दर्शन करते हैं। जो मनुष्य कार्तिकी पूर्णिमाको कृत्तिका नक्षत्रमें कुमारका दर्शन करता है, उसका सब पाप छूट जाता है और वह मनोवाछित फल पाता है।

कूर्मपुराण–( उपरि भाग ३६ वॉ अध्याय ) स्वामी नामक तीर्थ तीनों लोकमें विख्यात है। वहां स्कन्दजी देवताओंसे पूजित होकर निवास करते हैं। वहाँ कुमार धारामें स्नान करके पितरादिकोंके तर्पण करनेसे स्कन्दके निकट वास होता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति–( प्रथम अध्याय ) स्वामिकार्तिक, महागणपति और सूर्यका सर्वदा पूजन करनेसे और इनको तिलक लगानेसे सिद्धि प्राप्त होती है।

महाभारत–( आदि पर्व १३८ वाँ अध्याय ) कार्तिकेय अग्निके पुत्र कृत्तिकाके पुत्र, रुद्रके पुत्र और गङ्गाके पुत्र करके प्रसिद्ध होते है।

( वनपर्व—२२९ वाँ अध्याय ) पञ्चमी तिथिको कार्तिकेय लक्ष्मीवान हुए इसलिये इस तिथिका नाम श्रीपञ्चमी है। षष्ठीके दिन कार्तिकेयका विवाह हुआ, इसलिये षष्ठीको महातिथि कहा है।

स्कन्दपुराण—( [illegible] उत्तरार्द्ध—३६ वाँ अध्याय ) स्वामी तीर्थ नामक [illegible] है। [illegible] स्कन्द नित्य रहते है। वहाँ कुमारधारामें स्नान और देवदर्शन [illegible] करनेसे मनुष्य कार्तिकेय सहित आनन्द करता है।

भविष्यपुराण—( ४१ वॉ अध्याय ) भाद्रपद मासकी षष्ठी कार्त्तिकेयको अति प्रिय है। उस दिनके स्नान, दान आदि कर्मका फल अक्षय होता है। उस तिथिमे दक्षिण दिशामें प्रसिद्ध स्वामिकार्त्तिकका दर्शन करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते है। जो राजा कार्त्तिकेयका पूजन करके युद्धमे जाता है वह अवश्य शत्रुओंपर विजय प्राप्त करता है। षष्ठीके दिन व्रत करके कार्त्तिकेयका पूजनकर रात्रिको भोजन करनेसे कार्त्तिकेयके लोकमे निवास होता है। जो पुरुष तीन वार दक्षिण देशमे जाकर कार्त्तिकेयका दर्शन और भक्तिसे पूजन करता है, वह शिवलोकमें वसता है।

वाराहपुराण—( २५ वॉ अध्याय ) स्कन्दजीका जन्म षष्ठी तिथिको हुआ, इसलिये षष्ठी उनको वहुत प्रिय है। इस तिथिको फलाहार करके स्कन्दजीकी पूजा करनेसे धन, पुत्र आदि ऐश्वर्य्य प्राप्त होते हैं।

दूसरा शिवपुराण—( चौथा खण्ड–तीसरा अध्याय ) इन्द्रने स्कन्दके उपद्रव करनेपर उनकी दहिनी कॉखमे वज्र मारा, जिससे साग्य नामक गण और फिर वांई कांखमें वज्र मारा, जिससे विसाख्य नामक गण उत्पन्न हुए।

( चौथा अध्याय ) स्कन्दका जन्म कार्त्तिककी षष्ठीको हुआ।

( २८ वॉ अध्याय ) प्रति मासकी पूर्णिमाको सव देवता और मुनि जाकर स्कन्दके दर्शन करके कृतार्थ होते हैं और शिवजी वहॉ जाते हैं।

श्रीमद्भागवत–( दशम स्कन्ध–७९ वॉ अध्याय ) वलदेवजी पंपासर और भीमरथीमें स्नान करनेके उपरान्त स्कन्दका दर्शन करके श्रीशैल पर्वतपर पहुँचे।

देवीभागवत—( नवम स्कन्ध ४६ वॉ अध्याय ) षष्ठी देवी स्कन्दकी भार्य्या है। यह प्रकृतिके षष्ठाँशसे उत्पन्न है, इसलिये इसको षष्ठी कहते है। यह वालकोंकी अधिष्ठात्री और वालक देनेवाली है। यह देवी वालकोंको आयुष देती है और उनकी सदा रक्षा करती है।

स्वायंभुव मनुके पुत्र राजा प्रियव्रतको पुत्र नहीं होता था; तव कश्यप मुनिने राजासे पुत्रेष्टी यज्ञ कराया। यज्ञचरुके खानेसे मालिनी रानीके गर्भ रहा। देवताओंके १२ वर्षके उपरान्त रानीका सुन्दर पुत्र जन्मा, पर वह प्राण रहित था। तव राजा मृतक पुत्रको ले श्मशान भूमिपर जाकर रोदन करने लगे। उस समय कृपामयी षष्ठी देवी विमानमे बैठ वहाँ आई। राजाने वालकको भूमिपर धर भगवतीकी अच्छे प्रकारसे पूजा करके उनसे पूछा कि आप कौन हैं। भगवती बोली कि, हे राजेन्द्र ! ब्रह्माकी मानसी कन्या हूँ । देवसेना मेरा नाम है। मुझको ब्रह्माजीने उत्पन्न करके स्कन्दजीको देदिया। मै अपुत्र पुरुषोंको पुत्र, स्त्री रहित पुरुषोंको स्त्री और दरिद्रोंको धन देती हूँ इसके अनन्तर षष्ठी देवीने वालकको हाथमें ले कर अपने महा ज्ञानसे उसका जिला दिया। इसके पश्चात् वह स्वर्गको चलीगई। राजा पुत्रको ले अपने गृह आये और प्रतिमासकी शुक्ला षष्ठीको यत्नसे षष्ठी देवीकी पूजा कराने लगे। किसीके वालक होनेपर सौरीके गृहमे छठ दिन वा इक्कीसवें दिन वह षष्ठी देवीकी पूजा कराते थे, इसके अतिरिक्त वालकोंके शुभ कामोंमें और अन्नप्राशनादि कार्योंमे भी राजा षष्ठीकी पूजा कराते थे। षष्ठीकी पूजा शालग्राम शिलामें वा कलशमें, वा वरगदकी जड़में अथवा भीतिमें पुतली उरेह करके करनी चाहिये ( यहॉ षष्ठीस्तोत्र भी है )।

# होसपेट।

गादिगनूर स्टेशनसे १६ मील ( गुंटकल जंक्शनसे ७१ मील ) पश्चिम कुछ उत्तर होसपेटका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके ( १५ अंश, १५ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, २६ कला, पूर्व देशान्तरमें ) बल्लारी जिलेमें होसपेट एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय होसपेटमे १२८७८ मनुष्य थे; अर्थात् १०९७३ हिन्दू, १८११ मुसलमान, ७३ कृस्तान और २१ जैन।

होसपेट हेड एसिस्टेण्ट कलक्टरका सद्र स्थान है। वहाँ तहसीलदार, और मातहत मजिस्टरकी कचहरी, स्कूल, अस्पताल, बंगला और एक सुन्दर मन्दिर है। होसपेटसे ७ मील पूर्व किष्किन्धामें विरूपाक्ष शिवका मन्दिर है।

# किष्किन्धा-और विजयानगर।

होसपेटसे ७ मील पूर्व और हापी गाँवके पास, जो मद्रास हातेके होसपेट तालुकेमें करीव ७०० मनुष्योंकी एक वस्ती है, विरूपाक्ष शिवके मन्दिर तक बैलगाड़ीकी सड़क है। मैं एक रुपयेमें गाडी किराया कर उस पर सवार हो मन्दिरमें पहुँचा। होसपेटसे २ मील आगे रेलवे सडक लाँघने पर अञ्जनी पहाडीके ऊपरका मन्दिर देख पडा।

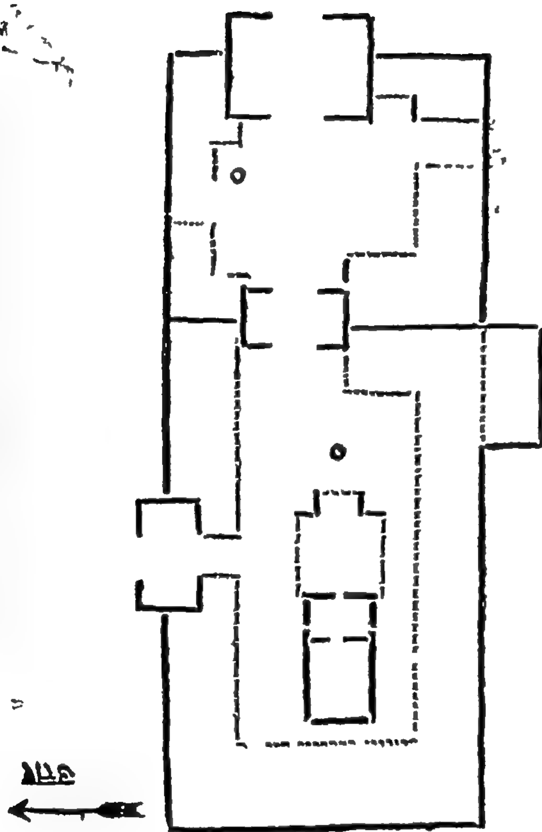
विरूपाक्ष शिवके मन्दिरके आगे मोदियोंकी दुकाने है। मन्दिरके पूर्ववाले चौगानके मकानोंमे यात्री टिकते है। मन्दिरके पुजारी यात्रियोंको पण्डोंके समान तीर्थ दर्शन कराते है।

विरूपाक्षशिवका मन्दिर–मन्दिरका प्रधान दरवाजा पूर्व है। उसका पत्थरका गोपुर १०५ फीट लम्बा, ८५ फीट चौडा और करीब १५० फीट ऊँचा है। शिखरके ऊपरका कुछ हिस्सा टूट गया है। गोपुर बाहरसे ११ मंजिला जान पडता है, क्योंकि नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरे ११ दरवाजे बने है; परन्तु भीतरसे वह तीन या चार मञ्जिलका है इसके बीचके मजिलमें कई एक छोटी देवमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं।

गोपुरके पश्चिम बडा चौगान है। इसके चारों बगलोंपर बडे बड़े मण्डप और मकान बने है, जिनमें यात्री टिकते है। चौगानके पश्चिम बगलके छोटे गोपुरके दक्षिण बगलमें गणेशजी और उत्तर ओर देवीजी है और चौगानके उत्तर हिस्सेमें एक कूप है। इसकी बाहरी दीवार पूर्वसे पश्चिमको करीब १९५ फीट और उत्तरसे दक्षिण तक लगभग २२५ फीट लम्बी है।

इस चौगानके पश्चिम बगलके छोटे गोपुरसे पश्चिमवाले बड़े चौगानमें जाना होता है, जिसके चारों बगलोंपर दोहरे दहरे दरण्डे और मकान बने हैं, जिनमें जगह जगह पार्वती [illegible] देवियोंकी मूर्तियां है और उत्तर बगल पर ऊँचा गोपुर है, जिसमें नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरे ७ दरवाजे बने हुए है। इस चौगानके बाहरकी दीवार उत्तरसे दक्षिण करीब २०५ फीट और पूर्वसे पश्चिम लगभग ३५५ फीट लम्बी है, जिसके भीतर [illegible] [illegible] ।

विरूपाक्ष शिवके मंदिरका नकशा,






फीट का स्केल.

चौगानके पश्चिम हिस्सेमे विरूपाक्ष शिवका मन्दिर है। खास मन्दिरमें सोनहरा कलश लगा हुआ है जिसके पूर्व एक कमरा और कमरेके पूर्व एक बड़ा मण्डप है। मन्दिरमें अन्धेरे रहनेके कारण दिनमे भी दीप जलाया जाता है। समय समय पर पूजाके लिये मन्दिर खुलता है। जागीरकी आमदनीसे मन्दिरका खर्च चलता है। पूजाके समय बाजा बजानेवाले नौकर है। खास पूजाके समय शिवलिङ्ग पर शृङ्गार मूर्ति रक्खी जाती है। मण्डपके पूर्व सोनेका मोलम्मा किया हुआ एक ऊँचा स्तम्भ खड़ा है।

मन्दिरसे उत्तर पुरइनसे भरा हुआ एक तालाब और समीपही दक्षिण हेमकूट नामक पहाडी है, जिसके ऊपर छोटे छोटे १२ देव मन्दिर बने है मन्दिरके प्रधान दरवाजेसे ½ मील पूर्व बडे नन्दीके पास मतंग पहाड़ीके पादमूल तक चौडी सडक गई है, जहाँ चैत्रकी पूर्णिमाको विरूपाक्ष शिवकी भोगमूर्तिका रथ जाता है। उस दिन यात्रियोंकी भारी भीड होती है। पहाडीके ऊपर एक मन्दिर है।

चक्र तीर्थ—विरूपाक्षके मन्दिरसे ½ मीलसे अधिक पूर्व कुछ उत्तर ऋष्यमूक पहाडीको चक्कर लगा कर पहाडियोंके बीचमें तुंगभद्रा नदी बहती है। वहाँ उसकी चौडाई लगभग १०० गज है। उसको चक्रतीर्थ कहते है। उसके उत्तर ऋष्यमूक पर्वत और दक्षिण बगलपर रामचन्द्रका एक छोटा मन्दिर है, जिसमें रामचन्द्र आदिकी मूर्तियाँ स्थित है। मन्दिरके पास सूर्य्य, सुग्रीव, रंगजी, आदि कई देवता हैं। यात्री लोग चक्रतीर्थमें स्नान करके राममन्दिरमे मेवे और फल भेंट देते हैं। वहाँ ऋष्यमूक पहाडीके तीन बगलोंमें तुङ्गभद्रा नदी बहती है, जो मैसूर राज्यके पर्वतसे निकलकर करीब ४०० मील पूर्वोत्तर बहनेके उपरान्त करनूलके नीचे कृष्णा नदीमें मिल गई है।

चक्रतीर्थके उत्तर ऋष्यमूकके पूर्व सीतासरोवर नामक एक निर्मल जलका कुण्ड है। उसके पास एक छोटी स्वाभाविक गुफा और दक्षिणकाशी, सीता अभरण राम लक्ष्मणके चरण चिह्न इत्यादि स्थान है।

चक्रतीर्थसे कुछ दूर पूर्व एक बडा मन्दिर है, जिससे पूर्वोत्तरकी पहाड़ीपर अनेक शिव-मन्दिर और पहाडीके पूर्वोत्तर विठोबाका एक मन्दिर है।

स्फटिक शिला—विरूपाक्षके मन्दिरसे लगभग ४ मील पूर्वोत्तर माल्यवान पहाडी है, जिसके एक भागका नाम प्रवर्षण गिरि है। उसीपर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मणने वनवासके समय वर्षा काल बिताया था। उसीके बगलपर चक्रतीर्थसे पूर्व और स्फटिकशिला एक स्थान है, जहां गुहामें श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी, सुग्रीव और हनूमानकी मूर्त्ति बनी हुई है। इसके आस पास अनेक मन्दिर और मण्डप बने है। एक बडा और एक छोटा गोपुर है। रथयात्राके लिये बडा रथ रक्खा है। सदावर्त लगा है।

कृष्णका मन्दिर—विरूपाक्षके मन्दिरके दक्षिणकी पहाडीके बाद कृष्णका बडा मन्दिर है। रास्ता बहुत [illegible] है। पहले शिवका एक पुराना मन्दिर मिलता है [illegible] नन्दी है। इसके बाद पश्चिम एक घेरेके भीतर नरसिंहकी बहुत बडी मूर्ति [illegible] जिसके ऊपर [illegible] है। [illegible] मूर्त्तिकी ऊंचाई [illegible] फीट है। [illegible] बाहर एक [illegible] पत्थरके दोनों [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन्दिरमें बैठे [illegible] बडा शिवलिङ्ग है,

जिसके पासमें कृष्णका बडा मन्दिर पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है। प्रधान आँगनकी चौडाई उत्तरसे दक्षिण तक २०० फीट और लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक ३२० फीट है। गोपुरके पास एक पत्थरपर दोनो ओर कनडी अक्षरमे शिला लेख और गोपुरके सतूनोंपर नागरी ओर कनडीके लेख हैं। उस मन्दिरसे करीब ५० गज दूर एक मन्दिरमें १० फीट ऊँची गणेशकी मूर्त्ति है, जिससे चन्द गज दूर दूसरे मन्दिरमें १८ फीट ऊँचे गणेश हैं।

आनागन्दी—विरूपाक्षके मन्दिरसे पगदण्डी द्वारा करीब २ मील पूर्वोत्तर तुङ्गभद्रा नदीके बायें निजाम राज्यमें आनागन्दी एक वस्ती है, जिसको वहुत लोग सुग्रीवकी राजधानी किष्किन्धा कहते है। चक्रतीर्थसे कुछ दूर आगे रास्तेके पास घेरेके भीतर छोटे बड़े ३ पुराने मन्दिर और कई मण्डप हैं। मन्दिरोंमे कोई देवता नहीं है। बडे मन्दिरकी छत और वहाँके दूसरे मन्दिर मण्डपोंमेसे कई एकके हिस्से गिर गये हैं। मन्दिरसे करीब १ मील पूर्व आनागन्दीके सामने एक वस्तीके पास तुङ्गभद्राके किनारे आदमी पहुँचता है। वहाँ कडाहके समान १० फीट व्यासके टोकरेमें, जिसपर वाहरसे चमडा मढ़ा रहता है; वैठकर नदीपार जाना होता है। उस पर २० आदमी तक चढ़ते हैं। एक आदमीका एक आना भाड़ा लगता है, किन्तु साधु लोगोंको भाडा नहीं देना पडता है। तुङ्गभद्राके वायें अर्थात् उत्तर निजामका राज्य है। तुङ्गभद्रा नदीसे ४० गज उत्तर आनागन्दीका फाटक है, जिससे ⅓ मील आगे आनागन्दीके राजाका महल साधारण इमारत है। महलके पास एक साधारण वस्ती और बाजार है। राजाकी तरफसे सदावर्त जारी है। वह राजा प्रख्यात विजयानगरके राजाके वंशमें हैं, जो अब हैदराबादके निजामके आधीन जमींदार हैं।

पम्पासर—आनागन्दीसे १ मीलसे अधिक पश्चिम तुङ्गभद्रासे उत्तर पम्पासर नामक तालाब है। आनागन्दीसे नीची ऊँची जमीनकी पगदण्डीसे जाना होता है। पम्पासर पूर्वसे पश्चिम तक लगभग २२५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणतक २०० फीट चौड़ा है, जिसके उत्तर उससे छोटा मानसरोवर नामका एक त्रिभुजाकार तालाव है। दक्षिणके सिवाय दोनो तालावोंके ३ तरफ नीची पहाड़ियाँ हैं। तालावोंके पश्चिम पहाडीके वगलपर कई पुराने जर्जर मन्दिर और मण्डप देखनेमें आते हैं, जिनमेंसे एकमें श्रीलक्ष्मीजी और श्रीनिवास भगवान्‌की मूर्त्ति है। वहाँ एक पुजारी रहता है। पंपासरसे लगभग ३० कोस पश्चिम शबरीका जन्मस्थान सुरोवनम् नामक वस्ती है। पंपासरसे दक्षिण तुङ्गभद्रा लाँघकर विरूपाक्ष शिवके मन्दिरमें लौट आनेमे लगभग डेढ़ घण्टा लगता है। मार्ग पगडण्डी है। रास्तेमें अंजनी पहाडी, जो ऋष्यमूकसे उत्तर है, दहिने मिलती है, जिसके ऊपर एक मन्दिर है।

विजयानगरकी तबाहियाँ——विरूपाक्षके मन्दिरसे करीव २ मील दक्षिण-पूर्व विजयानगरके राजाके महलका एक हिस्सा और स्त्रियोंका स्नान घर है। उसके पास ५० फीट लम्वा और इतनाही चौडा तथा ६ फीट गहरा एक हौज है, परन्तु इसमें अब पानी नहीं है। मेहराबदार २० स्तम्भोंपर हौजकी छत है। उससे ५० गज पश्चिमोत्तर बहुतसे टूटे फूटे मकान हैं, जिनमें हाथियोंका अस्तबल, जनानखाना, खजानाघर इत्यादि इमारतें और एक तख्त है। उस जगहसे करीब १०० गज उत्तर सुन्दर स्तम्भ लगे हुए एक मन्दिर है। मन्दिरका चौगान २०० फीट लम्बा और ११० फीट चौडा है। जनानखानेकी वाहरकी दीवार ३०फीट ऊँची है। भीतरकी इमारत गिर गई है। घेरेके कोनेके पास अब २ टावर हैं। जनान-

खानेसे १५० गज दक्षिण ३ कमरोंके साथ एक मकान है हौजसे करीब $\frac{१}{४}$ मील दक्षिण डाक बङ्गला है, जो पहले एक मन्दिर था। डाकबङ्गलेसे दक्षिण कमालपुर है, जहांसे एक सडक पहाडियोंको घूमती हुई हाँपी गाँवको गई है।

हाँपी विजयानगरके राजाओंकी राजधानी थी। राज्यका नाम विजयानगर था। तुङ्गभद्रा नदीके आस पास विजयानगरके राजाओंकी इमारतोंका खण्डहर ९ वर्गमीलमें फैला हुआ है, जिसके भीतर हाँपी, आनागदी, कमालपुर इत्यादि जगह है। एक सडक पहाडियोंको घूमकर कमालपुरसे उत्तर हाँपीको गई है। उन दोनोंके बीचमें पुराना शहर बसा था। राजमहलसे $\frac{३}{४}$ मील तुङ्गभद्राके निकट विष्णुका मन्दिर है।

इतिहास—बलाला वंशके राज्यकी घटतीके समय लगभग सन् १३३६ ई० में बूका और हरिहरने, जो वारङ्गलसे खदेरे गये थे, हाँपी नगरको बसाया; जिनके वंश वाले सन् १५६४ की तिलीकोटकी लडाई तक वहाँ थे; बाद आनागन्दी, वेलूर और चन्द्रगिरिमें एक सदी तक थे। बीजापुर और गोलकुण्डाके मुसलमान बादशाहोंने विजयानगर राज्यको ले लिया। विजयानगरके हिन्दू राजाओंने अपनी राजधानी हाँपीमें और उसके आस पास बहुत से महल और मन्दिर बनवाये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( वनपर्व—२७९ वाँ और २८० वाँ अध्याय ) कबन्ध राक्षसने रामचन्द्रसे कहा कि लंकावासी रावण सीताको लेगया है। तुम सुग्रीवके पास जाओ। वह तुम्हारी सहायता करेगा। ऋष्यमूक पर्वतके तटपर पंपा नामक तड़ाग है। उस पर्वतपर ४ मंत्रियोंके सहित वालीके भाई सुग्रीव निवास करते हैं। इतना सुन रामचन्द्र वहांसे चले और पम्पासरपर पहुँचे। उन्होंने वहाँसे आगे जाकर ऋष्यमूक पर्वतपर ५ बन्दरोंको बैठे हुए देखा। तब सुग्रीवने अपने बुद्धिमान मन्त्रीको रामके पास भेजा। वह मन्त्री राम और लक्ष्मणको सुग्रीवके पास लेगया। रामने सुग्रीवके साथ मित्रता की। तब सुग्रीवने रामको सीताका वस्त्र दिखाया, जो सीताने जातीबार गिरा दिया था। रामने सुग्रीवका अभिषेक अपने हाथसे किया। रामने वालीके मारनेकी और सुग्रीवने सीताके लानेकी प्रतिज्ञा की। फिर वे लोग युद्धकी इच्छा करके किष्किन्धा गये। सुग्रीव बडे वेगसे गर्जा। वाली ताराके वचनोंका निरादर करके माल्यवान पर्वतके नीचे खडा हुआ। वाली और सुग्रीव युद्ध करने लगे। जब उन दोनोंके रूपमें भेद कुछ न दिखाई दिया, तब हनुमानने सुग्रीवको गज माला पहना दी। जब रामने सुग्रीवके गलेमें चिह्न देखा, तब धनुषपर बाण चढ़ाकर वालीको पृथ्वीमें गिरादिया। वालीके मरनेके पश्चात सुग्रीवने ताराके समेत सब राज्य प्राप्त किया। राम माल्यवान पर्वतके ऊपर वर्षा ऋतु भर रहे।

( सभा पर्व ३१ वाँ अध्याय ) राजा युधिष्ठिरके भ्राता सहदेवने दक्षिण देशमें किष्किन्धा नामक कन्दरके निकट जाकर बन्दरनाथ मयन्द, और द्विविदसे युद्ध किया।

वाल्मीकि रामायण—( अरण्य काण्ड—६८ वाँ सर्ग ) रामचन्द्रसे जटायुने कहा कि रावण सीताको लेगया है। तब वह सीताको ढूंढते हुए वनमें चले। ( ७२ वाँ सर्ग ) उनको भयङ्कर [illegible] कबन्ध राक्षस मिला तब उन्होंने उस राक्षसको जलादिया, तब वह दिव्यरूप हो [illegible] कि हे राघव ! सुग्रीव नामक वानर, जो अपने भाई वाली द्वारा घरसे निकाला गया [illegible] पम्पासर पर निवास करता है। उस मित्रके होनेसे तुम्हारी सहायता करेगा।

जिसके पास कृष्णका बडा मन्दिर पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है। प्रधान आँगनकी चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक २०० फीट और लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक ३२० फीट है। गोपुरके पास एक पत्थरपर दोनो ओर कनडी अक्षरमे शिला लेख और गोपुरके सतूनोपर नागरी ओर कनडीके लेख है। उस मन्दिरसे करीब ५० गज दूर एक मन्दिरमे १० फीट ऊँची गणेशकी मूर्त्ति है, जिससे चन्द गज दूर दूसरे मन्दिरमें १८ फीट ऊँचे गणेश है।

आनागन्दी—विरूपाक्षके मन्दिरसे पगदण्डी द्वारा करीब २ मील पूर्वोत्तर तुङ्गभद्रा नदीके बायें निजाम राज्यमें आनागन्दी एक वस्ती है, जिसको बहुत लोग सुग्रीवकी राजधानी किष्किन्धा कहते हैं। चक्रतीर्थसे कुछ दूर आगे रास्तेके पास घेरेके भीतर छोटे बड़े ३ पुराने मन्दिर और कई मण्डप हैं। मन्दिरोंमे कोई देवता नहीं है। बडे मन्दिरकी छत और वहाँके दूसरे मन्दिर मण्डपोंमेसे कई एकके हिस्से गिर गये हैं। मन्दिरसे करीब १ मील पूर्व आनागन्दीके सामने एक वस्तीके पास तुङ्गभद्राके किनारे आदमी पहुँचता है। वहाँ कडाहके समान १० फीट व्यासके टोकरेमें, जिसपर बाहरसे चमड़ा मढ़ा रहता है; बैठकर नदीपार जाना होता है। उस पर २० आदमी तक चढ़ते हैं। एक आदमीका एक आना भाड़ा लगता है, किन्तु साधु लोगोंको भाडा नहीं देना पडता है। तुङ्गभद्राके बांये अर्थात् उत्तर निजामका राज्य है। तुङ्गभद्रा नदीसे ४० गज उत्तर आनागन्दीका फाटक है, जिससे ⅓ मील आगे आनागन्दीके राजाका महल साधारण इमारत है। महलके पास एक साधारण वस्ती और बाजार है। राजाकी तरफसे सदावर्त जारी है। वह राजा प्रख्यात विजयानगरके राजाके वंशमें है, जो अब हैदराबादके निजामके आधीन जमींदार हैं।

पम्पासर—आनागन्दीसे १ मीलसे अधिक पश्चिम तुङ्गभद्रासे उत्तर पम्पासर नामक तालाब है। आनागन्दीसे नीची ऊँची जमीनकी पगदण्डीसे जाना होता है। पम्पासर पूर्वसे पश्चिम तक लगभग २२५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणतक २०० फीट चौड़ा है, जिसके उत्तर उससे छोटा मानसरोवर नामका एक त्रिभुजाकार तालाब है। दक्षिणके सिवाय दोनो तालाबोंके ३ तरफ नीची पहाड़ियाँ हैं। तालाबोंके पश्चिम पहाडीके बगलपर कई पुराने जर्जर मन्दिर और मण्डप देखनेमें आते हैं, जिनमेंसे एकमें श्रीलक्ष्मीजी और श्रीनिवास भगवान्‌की मूर्त्ति है। वहाँ एक पुजारी रहता है। पंपासरसे लगभग ३० कोस पश्चिम शबरीका जन्मस्थान सुरेवनम् नामक बस्ती है। पंपासरसे दक्षिण तुङ्गभद्रा लाँघकर विरूपाक्ष शिवके मन्दिरमें लौट आनेमे लगभग डेढ़ घण्टा लगता है। मार्ग पगडण्डी है। रास्तेमें अंजनी पहाडी, जो ऋष्यमूकसे उत्तर है, दहिने मिलती है, जिसके ऊपर एक मन्दिर है।

विजयानगरकी तबाहियाँ—विरूपाक्षके मन्दिरसे करीब ३ मील दक्षिण-पूर्व विजयानगरके राजाके महलका एक हिस्सा और स्त्रियोंका स्नान घर है। उसके पास ५० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा तथा ६ फीट गहरा एक हौज है, परन्तु इसमें अब पानी नहीं है। मेहराबदार २० स्तम्भोपर हौजकी छत है। उससे ५० गज पश्चिमोत्तर बहुतसे टूटे फूटे मकान हैं, जिनमें हाथियोंका अस्तबल, जनानखाना, खजानाघर इत्यादि इमारतें और एक तख्त हैं। उस जगहसे करीब १०० गज उत्तर सुन्दर स्तम्भ लगे हुए एक मन्दिर है। मन्दिरका चौगान २०० फीट लम्बा और ११० फीट चौडा है। जनानखानेकी बाहरकी दीवार २०फीट ऊँची है। भीतरकी इमारत गिर गई है। घेरेके कोनेके पास अब २ टावर हैं। जनान-

खानेसे १५० गज दक्षिण ३ कमरोंके साथ एक मकान है हौजसे करीव ¾ मील दक्षिण डाक वङ्गला है, जो पहले एक मन्दिर था। डाकवङ्गलेसे दक्षिण कमालपुर है, जहांसे एक सडक पहाडियोंको घूमती हुई हॉपी गॉवको गई है।

हॉपी विजयानगरके राजाओंकी राजधानी थी। राज्यका नाम विजयानगर था। तुङ्गभद्रा नदीके आस पास विजयानगरके राजाओंकी इमारतोंका खण्डहर ९ वर्गमीलमे फैला हुआ है, जिसके भीतर हॉपी, आनागदी, कमालपुर इत्यादि जगह है। एक सडक पहाडियोंको घूमकर कमालपुरसे उत्तर हाँपीको गई है। उन दोनोके वीचमे पुराना शहर वसा था। राजमहलसे ¾ मील तुङ्गभद्राके निकट विष्णुका मन्दिर है।

इतिहास—वलाला वंशके राज्यकी घटतीके समय लगभग सन् १३३६ ई० मे वूका और हरिहरने, जो वारङ्गलसे खदेरे गये थे, हॉपी नगरको वसाया; जिनके वंश वाले सन् १५६४ की तिलीकोटकी लडाई तक वहॉ थे; वाद आनागन्दी, वेलूर और चन्द्रगिरिमें एक सदी तक थे। वीजापुर और गोलकुण्डाके मुसलमान वादशाहोने विजयानगर राज्यको ले लिया। विजयानगरके हिन्दू राजाओंने अपनी राजधानी हॉपीमे और उसके आस पास वहुत से महल और मन्दिर वनवाये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व—२७९ वॉ और २८० वाँ अध्याय) कवन्ध राक्षसने रामचन्द्रसे कहा कि लंकावासी रावण सीताको लेगया है। तुम सुग्रीवके पास जाओ। वह तुम्हारी सहायता करेगा। ऋष्यमूक पर्वतके तटपर पंपा नामक तड़ाग है। उस पर्वतपर ४ मंत्रियोंके सहित वालीके भाई सुग्रीव निवास करते है। इतना सुन रामचन्द्र वहॉसे चले और पम्पासरपर पहुँचे। उन्होने वहॉसे आगे जाकर ऋष्यमूक पर्वतपर ५ बन्दरोंको वैठे हुए देखा। तव सुग्रीवने अपने वुद्धिमान मन्त्रीको रामके पास भेजा। वह मन्त्री राम और लक्ष्मणको सुग्रीवके पास लेगया। रामने सुग्रीवके साथ मित्रता की। तव सुग्रीवने रामको सीताका वस्त्र दिखाया, जो सीताने जातीवार गिरा दिया था। रामने सुग्रीवका अभिषेक अपने हाथसे किया। रामने वालीके मारनेकी और सुग्रीवने सीताके लानेकी प्रतिज्ञा की। फिर वे लोग युद्धकी इच्छा करके किष्किन्धा गये। सुग्रीव वडे वेगसे गर्जा। वाली ताराके वचनोंका निरादर करके माल्यवान पर्वतके नीचे खडा हुआ। वाली और सुग्रीव युद्ध करने लगे। जब उन दोनोके रूपमें भेद कुछ न दिखाई दिया, तव हनुमानने सुग्रीवको एक माला पहना दी। जव रामने सुग्रीवके गलेमें चिह्न देखा, तव धनुशपर वाण चढ़ाकर वालीको पृथ्वीमें गिरादिया। वालीके मरनेके पश्चात् सुग्रीवने ताराके समेत सव राज्य प्राप्त किया। राम माल्यवान पर्वतके ऊपर वर्षा ऋतु भर रहे।

(सभा पर्व ३१ वॉं अध्याय) राजा युधिष्ठिरके भ्राता सहदेवने दक्षिण देशमे किष्किन्धा नामक कन्दरेके निकट जाकर वन्दरनाथ मयन्द, और द्विविदसे युद्ध किया।

वाल्मीकि रामायण—(अरण्य काण्ड—६७ वॉ सर्ग) रामचन्द्रसे जटायुने कहा कि रावण सीताको लेगया है। तव वह सीताको ढूंढ़ते हुए वनमें चले। (७२ वाँ सर्ग) उनको भयङ्कर वनमे कवन्ध राक्षस मिला जव उन्होंने उस राक्षसको जलादिया, तव वह दिव्यरूप हो वोला कि हे राघव! सुग्रीव नामक वानर, जो अपने भाई वाली द्वारा घरसे निकाला गया है; ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। वह सीताके खोजमें तुम्हारी सहायता करेगा।

तुम जाकर शीघ्र सुग्रीवको अपना मित्र करो। वह इस समय सहायता चाहता है। ( ७३ वाँ सर्ग ) वन और पर्वतोंमें भ्रमण करते हुए तुम पम्पासरोवर पर पहुँचोगे। उसके पास महर्षि मतङ्ग अपने शिष्योंके सहित रहते थे। ऋषि लोग तो चले गये, परन्तु उनकी सेवा करनेवाली तपस्विनी शवरी अब तक उस आश्रममें देख पड़ती हैं। वह तुमको देखकर स्वर्गलोकको चली जायगी। तुम पंपाके पश्चिम तीर पर उस गुप्त स्थानको जो मतंग वन करके प्रसिद्ध है, देखना। ऋष्यमूक पर्वतपर शिलासे आच्छादित एक बडी भारी गुहा है। उसमे प्रवेश करना बडा कठिन है। उस गुहाके पूर्व द्वार पर एक बडा भारी सरोवर है। उसी गुहामें वानरोंके साथ सुग्रीव निवास करता है। और कभी कभी शृङ्ग पर भी जा बैठता है।

( ७४ वाँ सर्ग ) राम और लक्ष्मणने कबन्धके वचनके अनुसार वनमे चलते चलते एक पर्वतके निकट निवास किया और वहाँसे चलकर पम्पाके पश्चिम शवरीके रमणीय आश्रमको देखा। सिद्धा शवरी रामचन्द्र और लक्ष्मणको देख उठकर उनके चरणोंपर गिर पडी, उसके पश्चात् उसने दोनों भाइयोंका अतिथि सत्कार किया। तापसी शवरी, जो सिद्ध गणोंकी मान्य थी, बोली कि हे रामचन्द्र ! अब मै तुम्हारे प्रसादसे अच्छे लोकको प्राप्त करूँगी। जब तुम चित्रकूटमे आये तब मुनि लोग, जिनकी मै सेवा करती थी, दिव्य विमानोपर चढ़ कर स्वर्गको चले गये। मैंने तुम्हारे लिये पंपा वनके नाना वन्य पदार्थोंको इकट्ठाकर रक्खा है। रामचन्द्रने शबरीका ऐसा वचन सुन उसके दिये पदार्थोंको अङ्गीकार किया। इसके अनन्तर जटा धारिणी और कृष्ण मृगचर्मको धारण करनेवाली शवरी अग्निमे कूद पड़ी और अग्निके तुल्य रूप हो फिर उसमेंसे निकली। ब्रह्मलोकमे जहाँ मतंग आदि महात्मागण विहार करते थे, शबरी जा पहुँची। ( ७५ वाँ सर्ग ) उसके पश्चात् रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोले कि मैंने मुनियोंके सप्तसागर तीर्थमे पितृ तर्पण किया, अब हमलोग पंपासरोवरके तीर पर चलें, जहाँ ऋष्यमूक पर्वत भी पासही देख पड़ेगा, जिसपर सुग्रीव निवास करता है। ऐसा कह दोनो भाई पंपाके तीर पर आये।

( किष्किन्धा काण्ड—पहले सर्गसे पाँचवें सर्ग तक ) रामचन्द्र लक्ष्मणके साहित आगे चले। सुग्रीवने, जो ऋष्यमूक पर निवास करता था, इन दोनोंको देख त्रास युक्त हो हनूमानको भेजा। हनूमान ऋष्यमूक पर्वतसे कूदकर राम लक्ष्मणके पास आया और अनेक बातें करके दोनो भाइयोंको पीठ पर चढ़ाकर ऋष्यमूक पर होकर मलय पर्वत पर सुग्रीवके पास पहुँचा। वहाँ रामचन्द्रने सुग्रीवका हाथ पकडा। दोनों मित्रोंने अग्निकी प्रदक्षिणा करके दृढ़ मित्रता की।

( ६ ठा सर्ग ) सुग्रीव बोले, हे रामचन्द्र ! एक दिन मैंने देखा कि एक स्त्रीको एक राक्षस हरे लिये जाता था। वह राम और लक्ष्मण ऐसा पुकार रही थी। उसने हम पाँच वानरोंको इस पर्वत पर देख अपने वस्त्र और सुन्दर सुन्दर आभूषणोंको ऊपरसे गिरा दिया। रामचन्द्रके माँगने पर सुग्रीवने पर्वतकी कन्दरासे उन वस्तुओंको लाकर रामचन्द्रके समीप रखदिया, जिनको दोनो भाइयोंने पहचाना।

( ११ वाँ सर्ग ) सुग्रीव कहने लगा कि हे रामचन्द्र ! एक समय भैंसेका रूप दुन्दुभी असुर किष्किन्धाके द्वार पर आकर गर्जने लगा। बालीने दुन्दुभीके दोनो सींगोंको

पकड उसको दूर झोंक दिया । जब वह मरगया तब वालीने उसको अपने दोनों भुजोंसे उठाकर फेंक दिया । वह एक योजन पर मतंग ऋषिके आश्रम पर जा गिरा । मुनीश्वरने अपने तपोवलसे वानरका कर्म जानकर शाप दिया कि जिसने इस मृतकको मेरे आश्रममें फेंका है वह यदि अबसे इस आश्रममें प्रवेश करेगा तो मरजायगा । उस शापसे वाली ऋष्यमूक पर्वतकी ओर ऑख उठाकर देखभी नहीं सकता है । देखिये दुन्दुभीकी हड्डियोंका समूह पासहीमें देख पडता है और ये सात साखूके वृक्ष है, इनमेसे एक एकको वाली अपने पराक्रमसे हिलाकर विना पत्तेका कर सकता है, आप उसको कैसे मार सकेंगे । रामचन्द्रने खेलवाड़की नाई पैरके अंगूठेसे दुन्दुभीके सूखे शरीरको उठाकर दश योजन दूर फेंक दिया । ( १२ वॉ सर्ग ) और एक वाण साखूके वृक्षकी तरफ चलाया । वह वाण सातों वृक्षोंको और पर्वतको फोडकर रामचन्द्रके तर्कसमें आघुसा । तब सुग्रीव बोले कि हे प्रभो ! तुम वाणोंसे सम्पूर्ण देवताओंको मार सकते हो, वाली क्या पदार्थ है । उसके अनन्तर रामचन्द्र, सुग्रीव आदि सब उठे और शीघ्रतासे किष्किन्धामें पहुँचकर वृक्षकी आडमें खडे हुए । तब सुग्रीव बड़े वेगसे गर्जा, जिसको सुन वाली अत्यन्त क्रोध युक्त हो लपकके आया । दोनो भाइयोंका घोर युद्ध होने लगा । हाथमें धनुष लिये रामचन्द्र देखने लगे । परन्तु कौन सुग्रीव और कौन वाली है । यह भेद उनको न समुझ पडा इस लिये उन्होंने अपने वाणको नही छोडा । इतनेमें सुग्रीव वालीसे हारकर ऋष्यमूकपर भाग गया । तब रामचन्द्र लक्ष्मण और हनूमानको साथ ले सुग्रीवके पास गये । रामकी आज्ञासे लक्ष्मणने पुष्पित गजपुष्पाको उखाड सुग्रीवके गलेमें मालाके समान पहना दिया । ( १४ वॉ सर्ग ) रामचन्द्र सुग्रीव आदिके साथ किष्किन्धामे जाकर वृक्षोंके आड़में ठहरे । सुग्रीवने उच्चस्वरसे युद्धके लिये वालीको ललकारा । ( १६ वॉ सर्ग ) ताराके वचनका निरादरकर वाली अपने नगरसे वाहर निकल सुग्रीवसे लड़ने लगा । जब रामचन्द्रने देखा कि सुग्रीव क्षीण पराक्रम होगया; तब वालीकी छातीमें बाण मारा, जिससे वह भूमिपर गिर पडा । ( २२ वॉ सर्ग ) वालीने रामचन्द्रजीसे अनेक वाते करके अपने प्राणोको छोड़ दिया । ( २५ वॉ सर्ग ) लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्रने सुग्रीव, तारा और अंगदको समाश्वासन दिया । सुग्रीव और अङ्गदने वालीके शरीरको पालकीपर चढ़ाया । वानरोंने नदीके तीर पर चिता बनाई । तव अङ्गद और सुग्रीवने वालीको चिता पर स्थापन किया और विधिपूर्वक चितामें अग्नि देकर उलटी प्रदक्षिणा दी । इसके अनन्तर रामचन्द्रने, जो सुग्रीवहीके समान शोकयुक्त होगये थे, उसकी सम्पूर्ण प्रेत क्रिया करवायी ।

( २६ वॉ सर्ग ) उसके पश्चात् रामचन्द्र सुग्रीवसे बोले कि यह वर्षा ऋतुका पहिला महीना श्रावण है, उद्योगका समय नहीं है । जब कार्तिक लगे तब तुम रावणके वधका उद्योग करना । उसके पश्चात् सुग्रीवने किष्किन्धामें प्रवेश किया । वहॉ उनका अभिषेक हुआ । सुग्रीवने अङ्गदको यौवराज्यके आसनपर अभिषेक कराया ।

( २७ वॉ सर्ग ) रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित प्रस्रवण गिरिपर आये । दोनो भाइयोंने उस पर्वतके शृङ्गपर एक वडी लम्बी चौडी कन्दरा देखकर वहॉ निवास किया । रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोले कि देखो इस गुहाके अग्रभागमे यह पूर्व वाहनी नदी शोभा दे रही है । यहॉंसे किष्किन्धा दूरभी नहीं है । देखो यहॉंसे गीत और वाजोका घोष और गर्जते हुए वानरोंका शब्द सुन पडता है । ( २८ वॉ सर्ग ) उसके उपरान्त माल्यवान पर्वतपर निवास करते हुए रामचन्द्रने लक्ष्मणसे वर्षा ऋतुकी शोभा वर्णन की ।

( ३० वाँ सर्ग ) शरद कालके लगतेही रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो सुग्रीव सीताको खोजनेके लिये समयका नियम करकेभी चेत नही करता । वर्षा काल * के चारो महीने बीत गये । तुम किष्किन्धामे जाकर मेरे क्रोधका रूप उससे कह सुनाओ । ( ३१ वाँ सर्ग ) लक्ष्मणने प्रवर्षणसे चलकर पर्वतकी सन्धिमे बसी हुई सेनाओसे पूर्ण दुर्गम किष्किन्धा पुरीको देखा, जिसके बाहर भयंकर वानर घूम रहे थे । श्रेष्ठ वानरोने सुग्रीवके घर जाकर लक्ष्मणका क्रोधपूर्वक आगमन कह सुनाया, परन्तु सुग्रीवने, जो ताराके साथ कामासक्त होरहे थे, उनके वचनोकी ओर ध्यान नही दिया । उस समय सचिवोकी आज्ञा पाकर बड़े बडे वानर हाथोंमे वृक्षोंको लिये हुए खडे होगये । सम्पूर्ण किष्किन्धा वानरोंसे भर गई । उस कालमें अङ्गद, प्रज्वलित कालाग्निके सदृश लक्ष्मणको देखकर अत्यन्त त्रसित हो लक्ष्मणके पास गया । लक्ष्मणने अङ्गदको सुग्रीवके पास भेजा, परन्तु सुग्रीव निद्रासे ऐसे प्रमत्त थे कि अङ्गदके वचनको कुछ भी न सुन और न समझ सके । तब वानर लोग लक्ष्मणको क्रुद्ध देख उच्चस्वरसे किलकिला शब्द करने लगे, जिससे सुग्रीवकी निद्रा खुल गई । ( ३३ वाँ सर्ग ) लक्ष्मणने अङ्गदसे सन्देश पाकर किष्किन्धा गुहामें पहुँचकर वहाँ पुष्पित वन, राजमार्ग और विशाल विशाल अनेक खनवाले गृह देखे । सुग्रीव चापके शब्दसे लक्ष्मणका आगमन जानकर त्रासयुक्त हो अपने आसनसे विचलित हुए । उन्होने ताराको लक्ष्मणके पास भेजा । तारा लक्ष्मणका प्रबोध करके उनको सुग्रीवके पास लाई । ( ३६ वाँ सर्ग ) सुग्रीवकी प्रार्थनासे लक्ष्मण प्रसन्न हुए । ( ३७ वाँ सर्ग ) सुग्रीवकी आज्ञासे हनूमानने सब वानरोंको सब दिशाओंमे भेजा । उन्होने शीघ्र जाकर समुद्रों, पर्वतों, वनों और सरोवरोंके रहनेवाले वानरोंको राजाकी आज्ञा कह सुनाई । प्रधान वानर पृथ्वीके सब वानरोको सन्देश दे शीघ्र सुग्रीवके पास उपस्थित होकर बोले कि सब वानर आ पहुंचे हैं । ( ३८ वाँ सर्ग ) तब सुग्रीव लक्ष्मणके सहित सुवर्णकी पालकीपर चढ़ रामचन्द्रके निवास स्थानपर पहुँचे और रामचन्द्रके समीप हाथ जोडकर खडे होगये । ( ३९ वाँ सर्ग ) श्रीरामचन्द्र सुग्रीवसे बातकर रहे थे कि इतनेमें असंख्य वानरोंसे सम्पूर्ण भूमि आच्छादित होगई । ( ४० वें सर्गसे ४७ वें सर्ग तक ) सुग्रीवने सीताका पता लगानेके लिये लाखों वानरोको चारो दिशाओंमे भेजा । पूर्व, उत्तर और पश्चिम इन तीन दिशाओंसे वानरोने लौटकर सीताका पता न लगनेका समाचार कपिराजसे कह सुनाया ।

( सुन्दर काण्ड—६५ वाँ सर्ग ) दक्षिणके जानेवाले हनूमान आदि वानरोंने प्रस्रवण पर्वतपर आकर सीताका समाचार रामचन्द्रसे कहा और सीताकी दी हुई मणि उनको दी ।

( युद्ध काण्ड—४ था सर्ग ) श्रीरामचन्द्रने प्रस्रवण पर्वतसे दक्षिण दिशामे प्रस्थान किया । उनके पीछे बडी भारी वानरी सेना सुग्रीवसे अभिरक्षित होकर चली ।

( उत्तर काण्ड, ४० वाँ और ४१ वाँ सर्ग ) अगस्त्यजी श्रीरामचन्द्रसे हनूमानके जन्मकी कथा कहने लगे कि, हे रघुसत्तम ! सुमेरु पर्वतपर वानरोंका राजा केसरी रहता था उसकी स्त्रीका नाम अंजना था । वायुने अञ्जनामें हनूमानको उत्पन्न किया । जब अञ्जना

---

* वर्षाकालके आषाढ, श्रावण, भाद्र, अश्विन ये ४ महीने होते है, किंतु वर्षाऋतु श्रावण, भाद्र, दोही महीनोंकी नियत है ।

फलोंके लानेके लिये वनमे गई, तव हनूमान क्षुधासे पीडित हो रोदन करने लगे । उसी समय सूर्योदय हुआ । वालकने उडहुलके पुष्पके समान विम्व निकलते सूर्यमें देखा । तव उसने जाना कि यह कोई फल है । उस समय वह सूर्यको पकडनेकी इच्छासे उडकर मध्य आकाशमें पहुँचा । वायु अपने पुत्रके स्नेहसे सूर्यके दाहके भयसे उसको शीतलता देता हुआ उसके पीछे पीछे चला जाता था । सूर्यने ऐसा विचारकर कि, यह आगे वहुत कार्योंको करेगा उसको भस्म नहीं किया, उसी दिन सूर्य ग्रहण था । जव हनूमानने जाकर सूर्यको पकड़ लिया तव राहु डरकर वहाँसे हट गया । उसने इन्द्रलोकमें जाकर यह वृत्तान्त इन्द्रसे कह सुनाया इन्द्र हाथीपर चढ़कर सूर्यके पास पहुँचे राहु इन्द्रसे पहिलेही वहाँ पहुँच गया । हनूमान राहुको भी एक फल जानकर सूर्यको छोड उसीको पकडनेके लिये दौडे । राहु भागकर इन्द्रके शरणमे गया । उस समय हनूमान ऐरावत हाथीको वहुत वडा फल जानकर उसकी ओर दौडे । इन्द्रने उस वालकको आते देखकर साधारण क्रोध पूर्वक धीरेसे उनको वज्र मारा । हनूमान वज्रकी चोटसे पर्वतपर गिरपड़े और इनकी वाँई ठुड्डी भग्न होगई । तव वायु महा क्रोधकर प्रजाओंके अन्तर्गतके अपने प्रचारको रोक हनूमानको गोदमें ले गुहामें जाकर चुप चाप वैठ रहा । वायुके प्रकोपसे सवका श्वास रुक गया और सम्पूर्ण कर्म वन्द होगये । तव सव प्रजाओंकी पुकार सुनकर ब्रह्माजीने देवताओंके सहित वायुके पास जाकर हनूमानके शरीरपर हाथ फेरा, जिससे वह वालक जी गया । तव वायु प्रसन्न हो सव प्राणियोंमे संचार करने लगा । ब्रह्माकी आज्ञासे सव देवताओंने वालकको वर दिये । इन्द्रने कहा कि मेरे वज्रसे इस वालककी ठुड्डी, टेढी होगई है, इस लिये आजसे इसका नाम हनूमान होगा । जव ब्रह्मा आदि सव देवता चले गये, तव वायु अञ्जनाके पास हनूमानको रखकर चला गया । उसके पश्चात् हनूमान महावलसे गर्वित हो ऋषियोंके आश्रममें जाकर उपद्रव करने लगे । तव भृगु और अंगिराके वंशवाले महर्षियोंने उनको शाप दिया कि जिस वलके भरोसे तुम हमको वाधा देते हो वह वल तुमको वहुत काल पर स्मरण होगा और जव तुमको कोई स्मरण करावैगा तव तुम्हारा वल वढ़ेगा । किष्किन्धाके ऋक्षराजके मरने पर वाली राजा और सुग्रीव युवराज हुआ । वाल्यावस्थाहीसे सुग्रीवसे हनूमानकी भारी मित्रता थी । हनूमानने सूर्यके पास जाकर उनसे व्याकरण पढ़ा । ( यह कथा दूसरे शिवपुराण-७ वे खण्डके ३९ वें अध्यायसे ४३ वे अध्याय तक है ) ।

ब्रह्माण्डपुराण—( अध्यात्मरायायण-अरण्यकाण्ड, १० वाँ अध्याय ) कवन्ध राक्षसने कहा कि हे रामचन्द्र ! सन्मुखवर्त्ती आश्रममें शवरी नाम्नी तापसी निवास करती है । तुम उसके पास जाओ, वह सीताकी सव कथा तुमसे कहेगी । रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित उस वनको परित्याग करके शवरीके आश्रममें गये । उन्होने शवरीसे पूछा कि हे तापसी ! सीता कहाँ है । उसने कहा हे भगवन् ! रावण सीताको लंकामें लेगया है । यहांसे थोड़ी दूर पंपासरोवरके निकट ऋष्यमूक पर्वत है, जिस पर चार मन्त्रियोंके सहित सुग्रीव वानर निवास करता है । तुम वहाँ जाकर उससे मित्रता करो । वह तुम्हारा समस्त कार्य पूर्ण करेगा । ऐसा कह शवरीने अग्निमें प्रवेश करके मुक्ति लाभ की ।

( किष्किन्धाकाण्ड-प्रथम अध्याय ) रामचन्द्र पंपासरोवरके समीप गये । वह सरोवर एक कोश-विस्तीर्ण था । राम और लक्ष्मण वहाँसे चलकर ऋष्यमूकके कटान-

पहुँचे। सुग्रीव ४ वानरोंके सहित उस पर्वतके शिखर पर रहता था। उसने दोनों भाइयोंको देख भयभीत होकर हनूमानको उनके पास भेजा। हनूमान दोनों भाइयोंको अपने कन्धोंपर चढ़ाकर सुग्रीवके निकट ले आये। सुग्रीवने जानकीके सब भूषण, जिनको उसने गिराया था; रामचन्द्रको दिये। सुग्रीवने प्रतिज्ञा की कि मैं रावणको मार कर जानकीका उद्धार करूंगा। अग्निकी साक्षी देकर दोनों मित्र बने। सुग्रीवने दुन्दुभी दानवका पर्वताकार मस्तक रामचन्द्रको दिखलाया। रामचन्द्रने उसको अपने अँगूठेसे १० योजन दूर फेंक दिया। फिर सुग्रीवने तालके ७ वृक्षोंको दिखलाया, जिनको राघवने एकही बाणसे भेदन कर दिया। तब सुग्रीवको निश्चय और विश्वास हुआ कि यह बालीको मारेंगे। ( २ रा अध्याय ) रामचन्द्रकी आज्ञासे सुग्रीव किष्किन्धाके उपवनमें जाकर गर्जा। तब बाली आकर उससे लडने लगा। रामचन्द्रने दोनों वानरोंका एकही रूप देख-कर सुग्रीव वधकी शङ्कासे बालीको नहीं मारा। सुग्रीव बालीसे परास्त होकर भाग गया। तब लक्ष्मणने उसके गलेमें पुष्प माला पहना दी। सुग्रीवने फिर जाकर बालीको ललकारा। बाली ताराके वचनका निरादर करके आकर फिर सुग्रीवसे लडने लगा। रामचन्द्रने वृक्षके ओटमें बैठकर बालीके हृदयमे बाण मारा। बालीने शरीर छोडकर परमपद प्राप्त किया। ( ३ ) सुग्रीवने शास्त्रके अनुसार बालीका प्रेत कर्म किया। लक्ष्मणने रामकी आज्ञानुसार किष्किन्धामे जाकर सुग्रीवका अभिषेक करवाया। बालीका पुत्र अंगद युवराज बनाया गया। रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित प्रस्रवण पर्वतके अति विस्तृत उच्च शिखरपर गये और वहाँ सरोवरके निकट एक गुहामें निवास करने लगे। ( ४ ) सुग्रीवकी आज्ञासे हनूमानने सातों द्वीपोंके बानरोंको बुलानेके लिये १० सहस्र वानर भेजे। ( ५ ) कुछ दिनोंके पश्चात् रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो शरद्काल उपस्थित हुआ, परंतु सुग्रीव सीताके खोज-नेका उद्योग नहीं करता है। तुम जाकर उसको ले आवो। लक्ष्मण किष्किन्धामे जाकर सुग्रीवको ले आये। ( ६ ) सुग्रीवने दूसरी दिशाओंमे विविध वानरगणोंको भेज कर दक्षिण दिशामे अंगद, जाम्बवान, हनूमान, नल, सुषेण, शरभ, मयद, और द्विविधको भेजा।

( उत्तरकाण्ड—तीसरा अध्याय ) सुमेरुके शृङ्गपर ब्रह्माकी सभा है। एक समय जब ब्रह्माने योगावलंबन किया था, तब उनके दोनो नेत्रोंसे अश्रु गिरे। जब उन्होंने उसको हाथसे पोंछ कर भूमिमें गिरादिया, तब उससे एक महा वानर उत्पन्न होगया। वह ब्रह्मा-की आज्ञासे वहाँ निवास करने लगा। उसका नाम ऋक्षराज पडा। एक समय वह वानर उस पर्वतके एक सरोवरमें जल पीनेके लिये गया और उसके जलमे अपना प्रतिविम्ब देख उसको बानर जानकर जलमे कूद पडा। वह जलसे बाहर निकलनेपर सुन्दर स्त्री बनगया। इन्द्र ब्रह्माकी पूजाकर जब अपने गृहको जाने लगा, तब मार्गमें सुन्दर स्त्रीको देख कामातुर होगया। उसका अमोघ वीर्य उस स्त्रीके केशपर गिरकर भूमिमे पडगया, जिससे इन्द्रके तुल्य पराक्रमी बाली उत्पन्न हुआ। इन्द्र बालीको सुवर्ण—माला देकर अपने गृह चलागया। उसी समय सूर्य भी उस स्त्रीको देखकर कामवश होगया। उसने अपने अमोघ वीर्यको कन्याके ग्रीवा देशमें निक्षेप किया, जिससे उसी क्षण महाकाय सुग्रीव वानर उत्पन्न हुआ। सूर्य उसकी सहायताके लिये हनूमानको सौंपकर अपने स्थानको चलागया। वह स्त्री दोनो पुत्रोंको लेकर किसी स्थानपर सोगई। प्रातःकाल होनेपर उसने अपनेको पूर्ववत् वानर देखा।

ऋक्षराज वानर अपने दोनों पुत्रोंको लेकर ब्रह्माके समीप गया। इसके अनन्तर ब्रह्माने एक देवदूतसे कहा कि तुम ऋक्षराजके सहित विश्वकर्मा निर्मित किष्किन्धा नगरीमें जाओ और वहाँ उसको सिंहासनपर अभिषिक्त करके वानरोंका राजा बनाओ। सातों द्वीपोंके वानर इसके वशवर्ती होंगे। जब रामचन्द्रका अवतार होगा तब सम्पूर्ण वानर उनकी सहायता करेंगे। देवदूतने किष्किन्धामें जाकर ब्रह्माके कथनानुसार ऋक्षराजको वानरोंका राजा बनाया। तबसे किष्किन्धा वानरोंका आश्रय–स्थान हुआ। ( यह कथा वाल्मीकि रामायण––उत्तर काण्डके ४३ वे सर्गमें है )।

पद्मपुराण––( पातालखण्ड, ३६ वाँ अध्याय ) हनूमानने पूस वदी सप्तमीको लङ्कासे लौटकर रामचन्द्रसे सीताका सन्देश कहा और उनको सीताका चूडामणि दिया। अष्टमी तिथि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र विजय मुहूर्तमें मध्याह्न समय प्रस्त्रवण गिरिसे रामचन्द्रका प्रस्थान हुआ।

वामनपुराण–( १२ वाँ अध्याय ) सरोवरोंमें पंपासर श्रेष्ठ है।

भक्तमाल––लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजीने भक्तमाल नामक ग्रन्थ बनाया ( भक्तमालमें लिखा है कि जयपुरके महाराज मानसिंह नाभाजीके मठपर गये थे )। संवत् १७६९ में प्रियदासने भक्तमालकी टीका रची। टीकाके २७ अङ्कसे ३३ तक इस भांति शवरीकी कथा है,––शवरी वनमें रहती थी। वह नित्यही रात्रिके शेषमें चुपकेसे मतङ्गऋषिके आश्रममें लकडीके बोझे रख देती थी और कङ्कडोंको बहारकर मार्ग साफ कर देती थी। ऐसा देख ऋषिने अपने शिष्योंको आज्ञा दी कि कौन श्रद्धावान् मनुष्य ऐसा काम करता है, तुम लोग उसको पकडो। शिष्यलोग रात्रिमें सावधानीसे पहरा देकर शवरीको पकडकर ऋषिके पास लाये। वह कॉपने लगी दयालु मतङ्ग ऋषिने उसको बड़े स्नेहसे अपने आश्रममें वास कराया और उसका नाम श्रवणा रक्खा। ऐसा देख उस वनके सब ऋषियोंने क्रोध करके मतङ्गऋषिको पंक्तिसे बाहरकर दिया। कुछ दिनोंके पीछे महर्षि शवरीको रामचन्द्रके दर्शन करनेकी आज्ञा देकर परम धामको चले गये। गुरुके वियोगसे शवरीके हृदयमें दारुण शोक उत्पन्न हुआ, किन्तु श्रीरामचन्द्रके दर्शनकी आशासे वह जीवन धारण करती थी। ऋषियोंके स्नानके पहिलेही वह मार्गको बहारकर साफकर देती थी। यह देख वे लोग अप्रसन्न होते थे और उसके स्पर्श होनेपर उसपर क्रोध करते थे। जब ऋषि लोग स्नान करने जाते थे तब शवरी वहाँसे भागजाती थी। उस समय स्नानका जल रुधिर होगया और उसमें कीडे पड़गये। तब भी अभागे ऋषियोंने उसका कारण नहीं समझा। शवरी वनसे बेर लाकर चीख चीखके मीठे बैरोंको रामके लिये यत्नसे रखती थी और बाट जोहती थी कि कब श्रीरामचन्द्र आकर इन बैरोंको खायँगे। कुछ दिनोंके पीछे श्रीरामचन्द्र पूछते पूछते उसके स्थानमें आकर कहने लगे कि भगवती शवरी कहाँ है। शवरीने आकरके दूरहीसे उनको प्रणाम किया। रघुनन्दनने शीघ्रतासे उसको उठाया और उसके दिये हुए फलोंको बहुत प्रशंसा करके भोजन किया। ऋषि लोग विचार करते थे कि श्रीरामचन्द्र यहाँ आवेंगे तो हम लोग बिगडे हुए जलके सुधारका उपाय उनसे पूछेंगे। इतनेमें उन्होंने सुना कि वह शवरीके आश्रममें आगये हैं। तब उन्होंने अभिमानको परित्याग करके वहाँ जाकर

श्रीरामचन्द्रसे जब बिगडनेका कारण पूछा। रामचन्द्रने कहा कि शवरीके चरणका स्पर्श करनेसे (अर्थात् शवरी उसमे जब अपना चरण डालेगी तब) जल स्वच्छ हो जायगा।

---

# आठवाँ अध्याय।



## (बम्बई हातेमें) लकुण्डी, गदग जंक्शन, बादामी, और बीजापुर।

### लकुण्डी।

होसपेटसे ४१ मील (गुण्ठकल जंक्शनसे ११२ मील) पश्चिमोत्तर तरपालपुरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे करीब ४ मील दूर और गदग जंक्शनसे करीब ८ मील दक्षिण पूर्व बम्बई हातेमे लकुण्डी एक बस्ती है। एक समय इसका नाम लोकोकण्डी था। यहाँ बहुत पुराने मन्दिर हैं।

बस्तीके पश्चिमके दरवाजेके पास एक अच्छा मन्दिर है, जिससे चन्दगज दूर एक दूसरा मन्दिर है। काशीविश्वनाथके मन्दिरमें संगतराशीका उत्तम काम है। सब बातोंके मिलानेसे यह मन्दिर लकुण्डीमे देखने लायक है, परन्तु अब बहुत जर्जर होगया है। पश्चिम ओर सड़कके बगलपर एक तालावके उत्तर नन्दीश्वर शिवका मन्दिर है। उससे २०० गज दक्षिण उस तालाबके पूर्व बगलपर वासवका मन्दिर है। बस्तीके भीतर मल्लिकार्जुन शिवका मन्दिर है। उससे १०० गज पश्चिम ईश्वरका बहुत पुराना मन्दिर है, जिसकी छत गिर गई है। लगभग १०० गजका एक तंग रास्ता बावलीके पास गया है। वहाँ पत्थरकी बावली है। उसके तीन तरफ पानी तक सीढ़ियाँ है। पहली सीढ़ीके दोनों बगलेमें एक एक हाथी है। उससे लगभग २०० गज दूर टावरके पश्चिम बगलपर मणि केशव (कृष्ण) का मन्दिर है। मन्दिरके पास एक सुन्दर पत्थरका छोटा तालाव है, जिसमें पानीमे निकले हुए कई पुस्ते बने हैं। मन्दिरके दरवाजेके दोनो बगलोंमें चार चार काले स्तम्भ हैं। बाहरी दीवारका हिस्सा गिर रहा है।

### गदग।

हरपालपुरसे ११ मील और गुण्टकल जंक्शनसे १२३ मील पश्चिम कुछ उत्तर गदगमें रेलवेका जंक्शन है। वहाँसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है,—उत्तर हातगी जक्शनको, पश्चिम हुवली और लोडा जंक्शन होकर मोरमुगा बन्दरको और पूर्व कुछ दक्षिण गुण्टकल जंक्शनको बम्बई हातेमें दक्षिणी विभागके धारवाड जिलेमें (१५ अंश, २४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४० कला, पूर्व देशान्तरमें) सबडिवीजनका सदर स्थान गदग एक कसबा है।

कसबेके दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास कारवार कम्पनीकी रूईकी कोठी है। उसके पास गवर्नमेण्टके टेलीग्राफ आफिस और ममलुतदारकी कचहरी है। गदगमे सिविल स्टेशनके मामूली आफिस है। वहाँ रूई और रेशमकी बड़ी तिजारत होती है और साप्ताहिक बाजार लगता है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गदग कसबेमें २३८९९ मनुष्य थे, अर्थात् १८३६१ हिन्दू, ४८०६ मुसलमान, ५९६ क्रस्तान, ११७ जैन और १९ पारसी।

त्रिकूटेश्वरका मन्दिर—कसबेके दक्षिणके महल्लेमें त्रिकूटेश्वरका मन्दिर है। मन्दिरके पास ९ शिलालेख है, जिनमेंसे एकका सन् १०६२ ई० के मुताबिक होता है। प्रधान मन्दिरका पहला दरवाजा जगमोहनसे ३६ फीट दूर है। एक कमरेसे होकर मन्दिरमें जाना होता है। वहाँ दीवारमें मूरतोंके २ कतार हैं, जिनमेंसे नीचे वाले कत्तारमें १५६ और ऊपर वालेमें १०४ मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। पूर्व ओर ४ स्तम्भोंके बीचमें नन्दी है। मन्दिरके प्रधान हिस्सेके पीछे पश्चिमकी तरफ इमारत फैली है। हातेके दहिनेके हिस्सेमें सरस्वतीका मन्दिर है, जिसके जगमोहनमें १८ सतून और ६ सतूनची लगी हैं। चारो तरफ पुजारी और दर्शकोंके रहनेके लिये मकान है। पश्चिम एक दूसरा दरवाजा पेशगाहके साथ है। घेरेके भीतर पत्थरका एक उत्तम कूप है, जिसकी सीढियाँ पानी तक गई है। उस जगह बहुतेरे शिलालेख है, जिनमेंसे एकमें शाका ७९० (८६८ ई०) लिखा है।

दूसरे मन्दिर—कसबेके पश्चिमोत्तरके कोनेमें एक वैष्णव मन्दिर है। उसके दरवाजे पर ५० फीट ऊँचा चौमंजिला गोपुर बना हुआ है, जिसके प्रत्येक बगलमे १६ कतारोंमें मूर्तियाँ बनी है। गोपुर होकर एक हातेमें जाना होता है, जिसमे निहायत साधारण मन्दिर और एक कूप है।

उस मन्दिरसे ३०० गज दक्षिण-पश्चिम कारी देवका पत्थरका मन्दिर है, जिससे ३० गज दक्षिण एक छोटा जैन मन्दिर है।

## बादामी।

गदग जक्शनसे ४२ मील उत्तर बादामीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके बीजापुर जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान बादामी एक गाँव है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३०६० मनुष्य थे। गाँवके पूर्वोत्तर बादामीका किला और ऊँची भूमिपर चंद सुन्दर मन्दिर हैं। दक्षिण एक दूसरा चट्टानी किला एक पहाडीका मुकुट बना है, जिसके आगेके बगलमें ४ गुफामन्दिर हैं। ४०० फीट ऊँची दो पहाडियोंके बीचकी तंग जगहमें बादामीकी बस्ती है, जिसके पास एक उत्तम तालाब है। दोनों किले बहुत पुराने कदाचित् अङ्गरेजी सन्के शुरूके समयके हैं।

निचिले किलेके फाटकका मुख दक्षिण-पश्चिम है। उससे प्रवेश करने पर थोड़ेही आगे बायें तरफ हनूमानका मन्दिर मिलता है, जहाँसे १२० फीट ऊपर पत्थरका बना हुआ महादेवका मन्दिर है। मन्दिरसे ९० फीट ऊपर एक ऊँचा चट्टान है, जिसके किनारोंके चारो तरफ ऊपरवाले किलेकी दीवारका हिस्सा है। वह किला अब छोड़ दिया गया है। उसमें केवल १० फीट लम्बी एक लोहेकी तोप और दो तीन मन्दिर हैं।

दक्षिणवाली पहाडीके, जिसके ऊपर एक किला है, पश्चिम बगलमें छठी सदीके बने हुए हिन्दुओंके ३ गुफामन्दिर और जैनोंका एक गुफामन्दिर है जिनके कारण बादामी प्रसिद्ध है।

हिन्दुओंकी गुफायें— पहली गुफा भूमिसे लगभग ३० फीट ऊपर है, इसका मुख पश्चिम ओर है। इसके आगे ६ स्तम्भ बने हैं, जिनमेंसे दक्षिणवाले २ स्तम्भ बिजलीसे

टूट गये है, उसके स्थान पर अब लकडीके स्तम्भ लगे है। गुफाके बायें एक द्वारपाल और एक नन्दी है। द्वारपालके सामने ५ फीट ऊँची १८ भुजावाली शिवकी मूर्ति है। वहाँ गणपति और बाजेवाले गण भी बने है। अगवासके बाद ( पूर्व ) निकासका मकान है, जिसमे बायें चतुर्भुजी विष्णु, दहिने एक पार्षदके साथ लक्ष्मीजी और चबूतरे पर शिव, पार्वती और नन्दी, पिछली दीवारमे महिषासुरको मारती हुई ४ भुजावाली माहेश्वरी, दहिनेकी दीवारमें गणपति और बायेंकी दीवारमें स्कन्द है। निकासके बाद दो स्तम्भोके साथ एक कमरा है। भीतर स्तम्भोके २ कतार है।

पहले गुफा मन्दिरसे दूसरे गुफा मन्दिरको सीढ़ी गई हैं। अगवासमे उत्तर मुखकी ४ मेहरावी है। उसके आगे दो द्वारपाल और एक स्त्री है। वरंडेके पूर्व बगलमें सूरतोंका एक दल और भगवान् वामनजीकी बहुत बडी और वाराह भगवान्की साधारण मूर्त्ति है। वामनजी एक चरण पृथ्वी पर और दूसरा आकाशमें रक्खे हुए है। आगे गरुड़ पर चढ़े हुए चतुर्भुज विष्णु हैं। दीवारके शिरके पास शेषशायी विष्णुकी मूर्त्ति बनी है। वरंडेमे एक दरवाजा द्वारा कमरेमें प्रवेश करना होता है। कमरेकी छतके नीचे ८ स्तम्भ हैं। उसके भीतर मनुष्य, हाथी, इत्यादिकी बहुतेरी मूर्त्तियाँ बनी हैं।

दूसरी सीढीके शिरके पास तीसरी गुफाके आगे एक चबूतरा है। यह गुफा यहाँके सब गुफाओमें उत्तम है। इसका अगवास उत्तरसे दक्षिण तक ७२ फीट है, जिसमे १२$\frac{3}{4}$ फीट ऊँचे ८ स्तम्भ बने है। ११ सीढियाँ गुफाको गई है। यहाँ पत्थर निकाल कर अनेक गण, पुरुष स्त्री, अर्द्धनारीश्वर शिव, शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति बनी हुई हैं। वरंडेके पश्चिम अखीरमें ११ फीट ऊँची नृसिंहकी मूर्त्ति है। दक्षिणकी दीवारमें इतनीही उँचाईके शिव हैं। पूर्व अखीरके पास शेषके फणके नीचे नारायण हैं। इस सूरतके बायें वाराहजी और दहिने कनड़ी अक्षरमें एक शिलालेख है। भीतरका कमरा उत्तरसे दक्षिण तक २८ फीट लम्बा, पूर्वसे पश्चिम तक ३५ फीट चौडा और १६$\frac{1}{2}$ फीट ऊँचा है। गुफाके बायें चट्टानपर एक शिला लेख है। एक लेखमे शाका ५०० ( सन् ५७८ ईसवी ) लिखा है।

जैनगुफा–तीसरी गुफाके पूर्व ७ फीट ऊंची दीवार है, जो जैन गुफाको तीनों हिन्दू गुफाओसे जुदा करती है। दीवारके बाद चबूतरा या आँगन है। गुफाके आगे चट्टान काटकर बनी हुई चौड़ी ओरियानी है। अगवासमें मेहराबदार ६ स्तम्भ बने हैं। भीतरके बरण्डेके बायें एक जैन देवता और दहिने बुद्धकी मूर्त्ति है और आगे ४ स्तम्भ खडे है। इस बरण्डेमें मूर्त्तियोंकी ४ पंक्तियाँ और बरण्डेके मध्यमें बुद्ध देव हैं। उससे आगे आदितम् अर्थात् निज मन्दिरमें बुद्धकी मूर्त्ति है। बरण्डेसे सीढ़ियाँ किलेके दरवाजेको गई हैं।

झीलके शिरके पास चट्टानके एक हिस्सेके गिर जानेसे पाँचवीं गुफा बन गयी है। एक सुराख द्वारा रेंगकर आदमी भीतर जाता है। चट्टानके सन्मुख एक बड़ी और एक छोटी जैन मूर्त्ति हैं। इससे थोडा पश्चिमोत्तर चट्टानके सन्मुख एक छोटा स्थान बना है, जिसपर देवताओसे घेरे हुए विष्णु और शेषजी हैं। पश्चिमोत्तर और उत्तर बहुतसे दूसरे स्थान हैं।

पार्वतीका मन्दिर–बादामीसे करीब २ मील दूर मलपर्बा नदी और बादामीके बीच रास्तेके बनशंकर गाँवमें पार्वतीजीका मन्दिर है। पाहिले पत्थरका एक छोटा सायबान

मिलता है, जिससे २०० गज दूर ३६४ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक तालाब है, जिसके पश्चिम बगलपर स्तम्भोंके ४ कतारोंके साथ एक सायवान और पूर्व बगलपर पानी तक पत्थरकी सीढ़ियोंका घाट है। तालाबमें मछलियाँ बहुत हैं। तालाबके पास बहुतसे बड़े बड़े बन्दर रहते हैं और २६ फीट ऊंचा एक रथ रक्खा है, जिसकी बड़ी पहियोंका व्यास ७ फीट है। सायवानके पश्चिम बगलपर पार्वतीका मन्दिर है। वहाँ एक ऊँचे बुर्जपर कई कतारोंमें दीप रखनेकी जगह बनी है। मन्दिरके पास साफ पानीका १५ फीट चौडा एक सुन्दर नाला है, जो बडे बडे दरख्तोंके जङ्गल और झाडियोंमें होकर बहता है।

मलपर्वाके किनारेके मन्दिर—बादामीसे ५ मील दक्षिण पश्चिम मलपर्वा नदीके बॉयें किनारेपर सातवीं या आठवीं सदीके बने हुए द्राविडियन कारीगरीके नमूनेके हिन्दुओं और जैनोंके कई एक मन्दिर हैं। इनके सिवाय बस्तीमें बहुतेरे मन्दिर है। पापनाथका मन्दिर उत्तरी हिन्दुस्तानके मन्दिरके ढांचेका ९० फीट लम्बा, ४० फीट चौडा है। मन्दिरमें १६ स्तभ और भीतरीके कमरेमें ४ स्तम्भ हैं। मन्दिरके आगे जगमोहन बना हुआ है।

गुफा—बादामीके ५ मील पूर्वोत्तर ऐवल्लीके पास एक जैन गुफा और एक हिन्दू गुफा है।

इतिहास—सन् १७८६ में बादामी टीपू सुलतानके अधिकारमें थी। उस समय निजाम अली और पेशवा माधवरावकी फौजोंने उसपर आक्रमण किया। अन्तमें बादामीके किलेकी सेना परास्त होगई। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने किलेको लेलिया। बादामीके पहिलेका इतिहास बीजापुरके इतिहासमें लिखा गया है।

## बीजापुर।

बादामीके रेलवे स्टेशनसे ७३ मील ( गदगजंक्शनसे ११५ मील ) उत्तर और होतगी जंक्शनसे ५८ मील दक्षिण बीजापुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें ( १६ अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ४६ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान बीजापुर एक पुराना नगर है, जिसका नाम पहिले विजयपुर था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीजापुर कसबेमें १६७५९ मनुष्य थे, अर्थात् १२०७५ हिन्दू, ४५०९ मुसलमान, १०० जैन, ५० क्रूस्तान, १८ पारसी और ७ यहूदी।

रेलवे स्टेशनसे पश्चिम प्राय गोलाकार शकलमें बीजापुर कसबा है, जिसके बगलोंमें पत्थरकी दृढ़ दीवार, जिसकी परिधि लगभग ६ मीलके घेरेकी है, बनी हुई है। कोटमें स्थान स्थानपर सुन्दर पाये बने हैं। नगरके चारोंओर ७ फाटक हैं,—पश्चिमोत्तर शाहपुर फाटक; उसके दक्षिण कसबेके पश्चिम जोहरपुर फाटक, उससे २०० गज दक्षिण मक्का फाटक, जो स्कूल बननेके कारण अब बन्द रहता है; दक्षिणकी दीवारके मध्यमें फतह फाटक, कसबेके पूर्व बगलमें अलीपुर फाटक, उससे उत्तर रेलवे स्टेशनके पास बादशाहपुर फाटक और कसबेके उत्तरकी दीवारके मध्यमें बाहमनी फाटक।

नगरकी दीवारके भीतर ही किला है। बादशाही समयमें नगरही किला था और जिसको किला कहते हैं वह बादशाहका गढ़ था। नगरके भीतरका किला, जिसके चारोंओर दृढ़ दीवार है, पूर्वसे पश्चिम तक लगभग १९०० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण तक १६५०

फीट चौडा है। इसका नाम अर्क किला है। अब अच्छी अच्छी इमारत इसीमें देख पडती है। बीजापुरमें वहाँके मुसलमान बादशाहोंकी अनेक प्रकारकी कारीगरीसे बनी हुई बहुतसी इमारतें अब तक विद्यमान है और बहुतसी टूट फूटकर उजाड हो रही है। वहाँ अनगिनत मसजिदें मकबरे और कबरें है। इमारतोंके देखनेसे बीजापुरके बादशाही समयके ऐश्वर्य और विभवका अनुभव होता है। वहाँकी प्रधान इमारतोंको अच्छी तरहसे देखनेमें दो दिनसे कम नहीं लगेगा। किलेके बगलोंमे और उसके मध्यमें उत्तरसे दक्षिण तक चौडी खाई बनी हुई है। किलेके भीतर आनन्द महल, गगन महल, चीनमहल, सतमहला महल, ग्रेनरी, मक्का मसजिद, पुरानी मसजिद इत्यादि इमारतें बनी हुई है और गिरजा इत्यादि कई एक अङ्गरेजोंकी बनवाई हुई इमारतें है। किलेके पश्चिमोत्तर पोस्टआफिसके पश्चिम बुखारा मसजिद है। एक सडक बीजापुर नगरकी पूर्वी दीवारके बादशाहपुर फाटकके पाससे सीधी पश्चिम किलेके उत्तरके किनारेके निकट होकर सिरजा बुर्जको और दूसरी अलीपुर फाटकसे पश्चिम किलेके दक्षिणके किनारेके पास होकर गई है।

गोल गुम्बज—नगरके पूर्वकी दीवारके भीतर रेलवे स्टेशनके पास बीजापुरके ७ वें बादशाह महम्मद आदिलशाहका उत्तम मकबरा है, जो गोल गुम्बज कहलाता है। इतना बडा गुम्बज किसी देशमे नहीं है। २ फीट ऊँचे और ६०० फीट लम्बे तथा इतनेही चौड़े चबूतरेपर मकबरा है। उसके आगेका फाटक एक तरफसे ८८ फीट और दूसरी तरफसे ९४ फीट लम्बा है। मकबरेके बाहरका प्रत्येक बगल १९६ फीट लम्बा है और उसके प्रत्येक कोनेके पास एक सात मञ्जिला मीनार है। मकबरेके मध्यके बडे गुम्बजका व्यास १२४ फीट है और प्रत्येक बगलके मध्यमे एक चौड़ी और ऊँची मेहराबी है। मीनारोंके भीतर चक्करदार सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मीनारोंके शिरोभागपर चढनेसे चारोओर दूरदूरकी वस्तु देख पडती है। मकबरेके मध्यके गुम्बजके नीचेका बड़ा कमरा हर तरफसे १३५ फीट लम्बा और भीतरसे १७५ फीट और बाहरी १९८ फीट ऊँचा है।

गुम्बजके नीचेके बडे कमरेके मध्यमे अहम्मद आदिल शाहकी, पूर्व बगलपर उसकी छोटी स्त्री और आठवाँ बादशाह दूसरा अली आदिलशाहके लडकेकी और पश्चिम एक नाचनेवाली लडकी तथा महम्मद आदिलशाहकी सबसे बडी स्त्री और एक लडकीकी कबरें हैं। दक्षिणके द्वारके पास एक पत्थरपर फारसी अक्षरोंमे लिखा हुआ है कि सुलतान महम्मद आदिलशाहका देहान्त सन् १०७० हिजरी ( सन् १६५९ ई० ) में हुआ। मकबरेसे पश्चिम चबूतरेके किनारेपर एक मसजिद है, जिसमे अब मोसाफिर टिकते हैं।

जुमामसजिद—गोल गुम्बजसे $\frac{3}{4}$ मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम अलीपुर फाटकसे किलेके दक्षिण जानेवाली सडकके पास हिन्दुस्तानके उत्तम मसजिदोमेसे एक जुमा मसजिद है। दक्षिण हिन्दुस्तानमें उसकी जोडकी कोई मसजिद नही है। उत्तर बगलके एक फाटकसे चौखूटे आङ्गनमें प्रवेश किया जाता है, जिसके पूर्वकी दीवार तैयार नही है। उसके पश्चिम बगलमे खास मसजिद और दक्षिण बगलोंपर ३१ फीट चौडा मेहराबदार दालान है। आङ्गनके मध्यमें फौवारेका सूखा हुआ हौज है। मसजिदका काम पहला अली आदिलशाहने आरम्भ किया और उसके सब उत्तराधिकारियोंद्वारा उसका काम जारी रहा, परन्तु पूरे तौरसे मसजिद तैयार नहीं हुई। खास मसजिदकी लम्बाईमे ९ और

चौड़ाईमें ५ खन्दे हैं। वह बहुतसे मोरब्बे स्थानोंमें बंटी हुई है। प्रत्येक मोरब्बा स्थानोंके ऊपर एक चिपटा गुम्बज बना हुआ है। मध्यकी जगह, जिसपर बडा गुम्बज है, ७० फीट लम्बी और इतनी चौडी है, जो मोरब्बे स्थानों के १२ गुना होती है। मसजिदके फर्शपर हजारों जा निजाम अर्थात् निमाज पढनेकी क्यारियाँ बनाई हुई है। मेहराबोंपर फारसी शैर खोदे हुए है। मसजिदसे चौथाई मीलसे अधिक पश्चिम मेहतर महल है।

असरो शरीफका महल–भीतरीके गढ अर्थात् किलेके पूर्वकी दीवारके मध्यके पास उसकी खाईके बाहर तथा मेहतर महलसे उत्तर असरी शरीफका महल एक भारी इमारत है। ३६ फीट चौडा उसका पेशगाह है, जिसके पूर्व बगलपर ६० फीट ऊँचे टीक लकडीके ४ स्तम्भ लगे है। पेशगाहके भीतरकी छत चौखूटे लकडीसे बनी है और सुन्दर तरहसे रंगी हुई है। पेशगाहके पश्चिम बगलपर कई दो मञ्जिले कमरे हैं। ऊपरके ८१ फीट लम्बे और २७ फीट चौडे कमरेमें नीचेसे सीढ़ियाँ गई है। कमरेके भीतरकी छत और दीवारोंमें मोलम्मा हुआ है और उसके किवाडोंपर हाथीदांतके जडावका सुन्दर काम है। कमरेके उत्तर एक दूसरे कमरेमें महम्मद साहबके मूछोंके दो बाल रक्खे हुए हैं। वर्षमें केवल एक बार वह कमरा खुलता है। दक्षिणके दो कमरे खूबसूरतीसे रंगे हुए हैं। सम्पूर्ण कमरे मरहठोंकी आज्ञासे बदशकल किये गये थे और किवाडोंमें जडे हुए हाथीदांतके काम उखाड़ लिये गये थे। इस इमारतको करीब सन् १६४६ में महम्मद आदिल शाहने इनसाफकी कचहरीके लिये बनाया, इस लिये इसका नाम असरी सरीफ महल पडा। इसके आगे २५० फीट लम्बा और इतनाही चौडा एक तालाब है।

पुरानी मसजिद–किलेके भीतरके फाटकके पश्चिमोत्तर पुरानी मसजिद हैं, जो पहले जैन मन्दिर थी। उसका दो मञ्जिला मण्डपम् मसजिदका पेशगाह बना है। भीतरीका दरवाजा मुसलमानोंका बनवाया है। खास मसजिद हिन्दू या जैनोंके स्तम्भोंसे बनी है। मसजिदके मध्यके कतारके उत्तर बगलके पास नकाशीदार एक काले स्तम्भपर कनड़ी अक्षरोंमें शिलालेख है और अन्य कई स्तम्भोंपर चारों तरफ कई एक संस्कृतमें और चन्द कनड़ी अक्षरोंमें शिलालेख हैं। एक लेख सन् १३२० ई० के मोताबिक होता है।

आनन्द महल–यह किलेके मध्यमें गङ्गन महलसे पूर्व है। यहां महलकी स्त्रियाँ रहती थीं। इसको सन् १५८९ में दूसरा इब्राहिम आदिलशाहने बनवाया; लेकिन इसके अगवासका काम पूरा नहीं हुआ। उसमें एक उत्तम बड़ा कमरा है, जिसमें अब ऐसिस्टेन्ट कलक्टर रहता है।

दूसरी पुरानी मसजिद–गगन महलके उत्तर जैन मन्दिरके पत्थरोंसे बनवाई हुई पुरानी मसजिद है। इसकी लम्बाईमे १० और चौड़ाईमें ७ खम्भोंकी पंक्तियाँ है।

सतमहला महल–किलेके भीतर उसके पश्चिम किनारेके पास पाँच मञ्जिला टावर है, जो पहिले सात मञ्जिला था। उसके सिरेपर चढनेसे सम्पूर्ण नगर देखा जा सकता था।

चीनमहल–ग्रेनरीके दक्षिणके किनारेके पास १२८ फीट लम्बा एक उत्तम हाल अर्थात् बडा कमरा है। टूटे हुए चीनके बर्तन वहाँ मिलते हैं, इसी कारणसे उसका नाम चीनमहल पडा है। उसीमें अब जज मजिष्ट्रर और कलक्टरकी कचहरियाँ लगती हैं।

मक्का मसजिद—ग्रेनरी मकानके आगे सडकके मध्यमें एक छोटा सायवान है। वहाँसे १४० फीट लम्बा एक पुल द्वारा किलेके मध्यकी खाई लांघी जाती है, जिसकी औसत चौडाई १५० फीट है। किलेके भीतर उस खाईके फाटकसे पूर्वोत्तर मक्का मसजिद है। खास मसजिदकी लम्बाईमे ५ और चौडाईमे २ दर अर्थात् खाने हैं। मसजिदके ऊपर एक गुम्वज है। यह एक छोटीसी सुन्दर मसजिद है। लोग कहते हैं कि चौदहवीं सदीके आरम्भमे, जब बीजापुर हिन्दू राजाके अधिकारमे था, एक पीरने इस मसजिदको बनवाया।

दूसरा अली आदिलशाहका मकबरा—इसको अलीरोजा भी कहते है। यह एक अधबना मकबरा है। किलेके उत्तर १५ फीट ऊँचे और २१५ फीट लम्बे और इतनेही चौड़े चबूतरे पर एक स्केयरके प्रत्येक बगलो पर सात सात बडी मेहराबियाँ हैं घेरेके मध्यमे ७८ फीट लम्बा और इतनाही चौडा रौजा है। बादशाहके मरनेके सबबके इसका काम जो रुक न जाता और असली ख्वाहिशके मुताबिक मकबरा बनता तो यह बीजापुरकी दूसरी सब इमारतोंसे उमदगी और कदमें बढ़ जाता। यह मकबरा तय्यार होता तो इसके ऊपर एक गुम्वज बनता। स्केयरके समीपही दक्षिण पश्चिम बोखारा मसजिद है, जिसमें अब पोष्टआफिसका काम होता है।

इब्राहिम रौजा—नगरके पश्चिमके मक्का फाटकसे ४०० गज पश्चिम एक मजबूत दीवारसे घेरा हुआ एक ऊँचे चबूतरे पर बीजापुरके दूसरे इब्राहिम आदिलशाहका रौजा है, जिसमे इब्राहिम आदिलशाह, उसकी स्त्री ताज सुलताना और उसके खान्दानके दूसरे चार आदमियोकी कबरें है। रौजेके पश्चिम एक मसजिद और रौजे तथा मसजिदके बीचमें एक हौज़ और एक फौआरा है। रौजेके चारों तरफ सात सात मेहराबियोंके बरडे है भीतरकी छत कोरानके बैतोंके साथ नकाशी की हुई है। अरबी जुमिलोंके झँझरीदार कामके साथ खिडकियाँ बनी है। पत्थरके तख्तोंमें काटे हुए प्रति अक्षरोंके बीचकी जगहसे रोशनी आती है। इमारतके बाहर दोहरी मेहराबियोंके कतारोमें खूबसूरत कारनिस है। रौजेके प्रत्येक कोनेके पास एक चौमंजिला बडा मीनार और उनके बीच बीचमे ८ छोटे मीनार है। रौजेका प्रधान कमरा ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है जिसके ऊपर गुम्बजमे दूसरा कमरा है, जिसमें जानेके लिये दीवारकी मोटाईमे तंग सीढ़ियाँ बनी हुई है। उत्तरके दरवाजेके ऊपर पारसीमे शिलालेख है, जिसके अखीरकी सतरमें इब्राहिम आदिलशाहकी मृत्युका समय सन् १०३६ हिजरी ( १६२६ ई० ) लिखा है। दक्षिणके दरवाजेके ऊपर एक दूसरे लेखमे बादशाहकी प्रशंसा है। उसका हिजरी सन् १६३३ ई० के मुताबिक होता है। उसी दरवाजेके ऊपरके फारसी लेखसे जाहिर होता है कि मलिक सन्दाल द्वारा यह रौजा तय्यार हुआ और इसके बनवानेमें डेढ़ लाख नव सौ हुन्न अर्थात् ७०००० पाउंड खर्च पडा।

सिहबुर्ज—नगरके पश्चिमोत्तरके शाहपुर फाटकसे ५०० गज दक्षिण उसके पश्चिमकी दीवार और सिरजाबुर्जके पास सिंहबुर्ज है उसमे दो सिंहोंके शिर बननेके कारण वह सिंहबुर्ज कहलाता है। बुर्जकी सीढ़ियों पर चढने पर दहिने बगलमें एक लेख मिलता है, जिससे जान पड़ता है कि यह बुर्ज सन् १६७१ मे ५ महीनोंमे तय्यार हुआ। इसके ऊपर मालक मैदान नामक एक बडी तोप है, जिसके मुखके दोनों तरफ हाथीको निगलता हुआ

भूतका मुख बना है। तोपकी लम्बाई १४ फीट; घेरा १३½ फीट और गुराखका व्यास २ फीट ४ इंच है। इस तोपको महम्मद रूमीखाँने बनवाया था तोपके मुखके पास लिखा है कि खोदाके पैगम्बरके खान्दानका दास आबुलगजी निजामशाह, सन् ९५६ हिजरी। वहाँ यह भी लिखा है कि काफ़िरोको जीतनेवाले और मजहबको बचानेवाले बादशाह आलमगीरने अपने राज्यके ३० वें वर्ष सन् १०९७ हिजरी (१६८६ ई०) मे बीजापुरको जीता और शाहोके राज्यको अपने राज्यमे मिला लिया, तथा कामयाबी देखला कर मालक मैदानको ले लिया।

ऊपरीबुर्ज वा हैदरबुर्ज—सिरजाबुर्जके करीब १५० गज पूर्वोत्तर नगरके भीतर ६१ फीट ऊँचा हैदरबुर्ज है, जिसके बाहरसे ऊपरको सीढ़ियाँ गई है। ऊपरके रास्ते पर एक शिलालेख है, जिसमे सन् १५८३ ई० के मुताबिकका हिजरी सन् देख पड़ता है। बुर्जके ऊपर लोहेकी पट्टीसे इकट्ठी बाँधी हुई २ तोपें रक्खी हुई हैं, जिनमेकी बडी तोप, जो ३० फीट लम्बी है, लम्ब छड़ी कहलाती हैं। उसके मुखके पासका व्यास २ फीट ५ इञ्च पीछेका व्यास ३ फीट और मुखकी सुराखका व्यास १२ इंच है। दूसरी तोप १९ फीट १० इंच लम्बी है। उसके मुखके पासका व्यास १ फुट और पीछेका व्यास १½ फीट है। इनके सिवाय कई एक दूसरी बडी तोपें बीजापुरके आस पास पडी है।

ताजबावली—बीजापुरमें कई तालाब हैं, जिनमे नगरके पश्चिमके मक्का फाटकसे १०० गज पूर्वकी ताजबावली प्रधान है। उसके अगवासके पूर्वकी बाजू कुछ तबाह है और कुछ कनडी भाषाके स्कूलके काममे आता है और पश्चिमकी बाजू म्युनिसपल आफिस बना है। ताज बावली पानीके किनारेके पास २३० फीट लम्बी और इतनीही चौडी है। उसमे कुछ झरनेसे और कुछ नालेसे पानी आता है। सूखे मौसिमोमें उसमे करीब ३० फीट गहरा पानी रहता है। बावलीमें बहुतसी मछलियाँ हैं।

इनके अलावे बीजापुरमें सिकन्दर आदिलशाहका मकबरा, औरङ्गजेबकी एक बेगमका मकबरा, मोतीगुंबज, बारह पाँवकी गुंबज, मेहतर महल इत्यादि बहुतसी पुरानी इमारतें है।

बीजापुर जिला—बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमे बीजापुर जिला है। इसके उत्तर भीमानदी बाद शोलापुर जिला और अक्कलकोटका राज्य, पूर्व और पूर्व-दक्षिण हैदराबादका राज्य; दक्षिण मलपर्बा नदी बाद धारवाड जिला और रामदुर्ग देशीराज्य और पश्चिम मधोल जमखण्डी और जाठ राज्य है। जिलेमे भीमा, कृष्णा, घटपर्बा, मलपर्बा आदि नदियाँ बहती है। खेतोको पटानेके लिये ४५० से अधिक बाँध और ६००० से अधिक कूप है। पहाड़ियोंसे लोहा, स्लेट, तेलिया पत्थर और अन्य पत्थर निकाले जाते हैं जंगल नहीं हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि यह जिला दण्डकारण्यके अन्तर्गत है। इसमे दण्डकारण्यके ७ ऋषियोके ७ आश्रमके स्थान हैं—(१) बादामीमें एवल्ली, (२) इण्डीमें धुलखेड, (३) बादामी, (४) बगल कोट, (५) कालाडगीमें गलगली, (६) सीदगीमें हिपर्गी और (७) बादामीमें महाकूता।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय बीजापुर जिलेका क्षेत्रफल ५७५७ वर्गमील और इसकी मनुष्य–संख्या ६३८४९३ थी, अर्थात् ५६८०९६ हिन्दू, ६७०६६ मुसलमान, २६७९ जैन, ६२५ कृस्तान, २६ पारसी और १ बौद्ध। हिन्दुओमे ९४७८६ धाँगड,

२६८६५ पंचमशाली. ४४४३३ माँग और धेद, ३६९५२ तेली, २९०५५ रेडो, २६६३१ जंगम. २१२६२ विराध, २०३७४ ब्राह्मण, १६९९२ कुन्बी, १०१८७ कोली, ८०१०कोम्ती और शेषमें भण्डारी, राजपूत, लिङ्गायत इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीजापुर जिलेके क्रमसे बगलकोटमें १८०३४ बीजापुरमें १६७५९, कलाडगीमें १५४८१ और इलकालमें ११२१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् ईस्वीकी दूसरी सदीसे बीजापुर जिलेके अन्तरगत बादामी, इण्डी और कलकेरी ये ३ प्रसिद्ध स्थान थे, जिनमें सबसे पुराना स्थान बादामी पल्लव वंशके राजाओंकी राजधानी थी, जिनका बनवाया किला वहाँ अबतक देखनेमें आता है। छठी सदीके मध्य भागमें चालुक्य वंशके राजा पुलिकेसीने पल्लव वंशके राजासे बादामीको लेलिया। लगभग सन् ७६०में राष्ट्रकूता वंशके राजाने चालुक्योंसे जिला लेलिया, जिसके वंशधरोंसे सन् ९७३ ई० में पश्चिमके चालुक्योंने उसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह जिला क्रमसे कलचुरी और हैसलावल्लालके अधिकारमें गया। सन ११९० में देवगिरिके यादव वंशके राजाने इसपर अपना अधिकार जमाया। सन् १२९४ में, जब यादव वंशके राजाओंने बीजापुरको छोडकर अपना सदर स्थान देवगिरिको बनाया था, दिल्लीके अलाउद्दीनने यादव वंशके नवें राजा रामचन्द्रको परास्त करके देवगिरिको लूटा, रामचन्द्रका सब धन लेलिया और उसको अपने अधीन बनाया।

बीजापुरके आदिलशाही खानदानको कायम करनेवाला युसफ आदिल शाह एक तुर्क था। उसकी माताने उसके बचपनमें उसके जानकी रक्षा की। बीदरके बादशाहने बडा होनेपर उसको खरीदकर अपना अङ्गरक्षक बनाया। उसकी शीघ्रही तरक्की हुई। १५ वीं सदीके अन्तसे पहिले बीदर और गुलबर्गाकी बाहमनी खानदान निर्बल होगई। उस समय युसफ आदिलशाह नहीं होता तो हिन्दूलोग दक्षिणी हिन्दुस्तानमें अपने प्रथमका अधिकार मुसलमानोसे छीन लेते। सन् १४८९ में युसफ आदिलशाह स्वाधीन बन गया। उसने बीजापुरको अपनी राजधानी बनाया, बीजापुरके बड़े गढ़को बनवाया, अपने राज्यको समुद्रके किनारे तक फैलाया और पोर्चुगीजोसे गोआ छीन लिया। वह बीजापुरके किलेका काम अधूरा छोड़कर मरगया, किन्तु इब्राहिम आदिल शाहने उसको तैयार किया। सन् १५१० में उसके मरनेपर उसका पुत्र इस्माइल आदिलशाह राजगद्दीपर बैठा, जिसने कामयाबीके साथ राज्य किया। सन् १५३४ में इस्माइलकी मृत्यु होनेपर मल्लू आदिल शाहको राजगद्दी मिली, किन्तु केवल ६ मास राज्य करनेके पश्चात् वह गद्दीसे उतार दिया गया और अन्धा बनाया गया। तब उसका छोटा भाई इब्राहिम आदिलशाह राज्याधिकारी हुआ। सन् १५५७ में इब्राहिमके मरनेपर उसका पुत्र अली आदिलशाह उसका उत्तराधिकारी हुआ, जिसने बीजापुरकी दीवार, जामा मसजिद, अनेक जलाशय और कई एक अन्य कामोंको बनवाया और अहमदनगर तथा गोलकुण्डाके बादशाहोंके साथ मिलकर सन् १५६४ में तालीकोटके बड़े संग्राममें विजयानगरके हिन्दू राजा रामराजको परास्त किया। राजा मारागया। उसकी राजधानी मुसलमानोंने लेली। सन् १५८० में अली आदिलशाहका देहान्त होने पर उसका भतीजा, जो निरा बच्चा था, इब्राहिम आदिलशाह तख्तपर बैठा। मृत बादशाहकी विधवा चाँदबीबी, जो राज्य कार्यमें चतुर थी, राज्यका काम करने लगी।

सयाना होने पर इब्राहिमने होशियारीसे राज्य किया। सन् १६२६ मे दूसरा इब्राहिमकी मृत्यु होने पर महम्मद आदिलशाह बीजापुरका बादशाह् बना। उसके राज्यके समय महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुर राज्यके एक अफसर हुए थे और शिवाजीने सन् १६४६ और १६४८ के बीचमे बीजापुर राज्यके कई एक किलेको छीन लिया। थोडेही दिन बाद शिवाजीने कोकनके बडे भागपर अपना अधिकार करलिया। सन् १६५९ में महम्मद आदिलशाहके मरनेपर उसका पुत्र अली आदिलशाह उत्तराधिकारी बना। उसके राज्यके समय बीजापुर राज्य हीन दशामे था। सन् १६७२ मे उसकी मृत्यु होने पर उसका बच्चा पुत्र शिकन्दर आदिलशाह, बीजापुरका ९ वॉ बादशाह बना।

सन् १६८६ मे मुगल बादशाह औरंगजेबने बीजापुरको लेलिया। बीजापुरका अंतिम बादशाह शिकन्दर आदिलशाह चॉदीकी जजीरसे बॉधकर उनके पास लाया गया। मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय बीजापुर और उसके आस पासके देश महाराष्ट्रोके अधीन हुए। सन् १८१८ मे अङ्गरेजी सरकारने बीजापुरको पेशवासे लेकर सिताराके राजाको दिया, किन्तु सन् १८४८ में सिताराके राजाके निःसन्तान मरनेपर उसका राज्य बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे मिला लिया गया। अङ्गरेजी गवर्नमेन्ट बीजापुरकी प्रधान इमारतो और स्मारक वस्तुओंकी यथा साध्य मरम्मत करती है। बीजापुर कलाडगी जिलेमें था, किन्तु सन् १८८५ में जिलेका सादर स्थान बनाया गया और जिलेका नाम बीजापुर जिला पडा। बादामीसे पश्चिमोत्तरकी ओर घटपर्वा नदीके दहिने किनारेपर कलाडगी कसबा है।

---

# नवॉं अध्याय।



## (हैदराबादके राज्यमें) रायचुर, (मदरास हातेमें) अर्कोनी, गूटी, ताडपत्री, कडपा, रेणुगुंटा जंक्शन, कालहस्ती, वेंकटगिरि और नेल्लूर।

## रायचुर।

बीजापुरके रेलवे स्टेशनसे ५८ मील उत्तर सदर्न मरहटा और ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेका जंक्शन होतगीमें है। होतगीसे ८४ मील दक्षिण-पूर्व वाडी जंक्शन तकका वृत्तांत भारत-भ्रमणके इसी खण्डके ४ थे अध्यायमें लिखा है। मै वाडी जंक्शनसे हैदराबाद; बेजवाडा, गुन्टकल जंक्शन, बल्लारी, होसपेट, गदग जंक्शन, बीजापुर, होतगी जंक्शन इत्यादि स्थानोमें चक्कर देकर फिर वाडी जंक्शन पर पहुँचा और वाडीसे दक्षिण-पूर्वकी लाइनसे आगे चला।

वाडी जंक्शनसे ५१ मील (होतगी जंक्शनसे १३५ मील) दक्षिण-पूर्व हैदराबादके राज्यमें कृष्णानदीके बायें अर्थात् उत्तर किनारेके पास कृष्णा नामक रेलवे स्टेशन है। स्टेशनके निकट मारवाडी धर्मशाला और स्टेशनसे $\frac{1}{2}$ मील दूर कृष्णाके समीप एक दूसरी धर्मशाला है। दोनोंमे सदावर्त जारी है। बहुतेरे यात्री उस स्टेशनपर उतरकर कृष्णामे स्नान करते है।

कृष्णा नदीपर ३८५४ फीट लम्बा रेलका पुल बना हुआ है। उस स्थानपर सूखी ऋतुओंमें कृष्णा नदी बहुत चौडी नहीं रहती है।

कृष्णाके स्टेशनसे १० मील और वाडी जक्शनसे ६१ मील ( होतगी जक्शनसे १८५ मील ) दक्षिण-पूर्व रायचुरकी छावनीका रेलवे स्टेशन और उससे ६ मील दक्षिण-पश्चिम रायचुर कसबेका रेलवे स्टेशन है। उस जगह ग्रेटइन्डियन पेनिनसुला रेलवे मदरास रेलवेसे मिल गई है। हैदराबादके राज्यके ( १६ अंश, १२ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ३४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे ) जिलेका सदर स्थान रायचुर एक पुराना कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रायचुर कसवे और उसकी छावनीमे २३१७४ मनुष्य थे, अर्थात् १६८९२ हिन्दू, ५८२१ मुसलमान, ३०४ कृस्तान, १२० जैन, ३३ पारसी और ४ सिक्ख। मनुष्य-गणनाके अनुमार यह हैदराबादके राज्यमे ५ वॉ शहर है।

रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक दूर रायचुर एक सुन्दर कसवा है। इसमें अच्छी सडके वनी है। यह मिट्टीके वर्तन और स्लिपर ( जूता ) के लिये प्रसिद्ध है। रायचुर जिलेमें गाडवाल छावनी वड़ा कसवा है। सन् १८९१ को मनुष्य—गणनाके समय उसमे १६६७२ मनुष्य थे।

किला—रायचुर कसबेसे पश्चिम रेलवे स्टेशनसे १½ मील दूर रायचुरका सुन्दर किला है। उत्तरके फाटकके बगलेमें कई एक टावर और फाटकसे करीब ५० गज बाहर पत्थरका एक हाथी है। दूसरे फाटकका नाम कसबा दरवाजा है, जिसके बाहर एक टिउनलका दरवाजा है, जिससे होकर किलेकी फौज फाटकके पास आई और पीछे जमीनके भीतरके रास्तेसे किलेमें चली गई। किलेके पश्चिम सिकन्दरिया फाटकके पास पुराना महल है, जो अब जेलखाना बनाया गया है। मैदानसे २९० फीट ऊपर गढ है। बाये दरगाहको छोटी कोठरियोंका एक कत्तार और पूर्व अखीरमें पत्थरका एक सायबान है, जिसके पूर्व एक मसजिद है।

इतिहास—रायचुर सन् १३५७ मे वहमनी राजाओके राज्यका एक हिस्सा बना; पीछे यह बीजापुरके राज्यमे शामिल हुआ। सन् १४७८ मे ख्वाजा जेहन गवनने इसपर हुकूमत किया। जब बीजापुर स्वाधीन बादशाहत हुआ था, तब रायचुर इसकी दक्षिणी राजधानी था।

## अर्दोनी।

रायचुरसे १७ मील दक्षिण निजामके राज्य और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यकी सीमापर तुङ्गभद्रा नदी है। नदीपर रेलवे पुल बना है नदीके पास तुङ्गभद्रा नामक स्टेशन है।

तुङ्गभद्रा स्टेशनसे २६ मील ( रायचुरसे ४३ मील ) दक्षिण अर्दोनीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके बल्लारी जिलेमें तालुकका सदर स्थान अर्दोनी एक कसबा है।

कसवेमें तहसीलदार और डिपुटीकलक्टरकी कचहरीका मकान और एक अस्पताल है, कपड़े कालीन और रेशमी वस्त्र इत्यादि चीजें बनती हैं और रुईकी वडी तिजारत होती है। अर्दोनीसे अच्छी सडके गूटी, बल्लारी, करनूल आदि कसबोंको गई हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अर्दोनीमें २६२४३ मनुष्य थे अर्थात् १६३६९ हिन्दू, ९७५४ मुसलमान, ७० कृस्तान, और ५० जैन।

कसबेके उत्तर ५ पहाडियोंपर अर्दोनीके किले होन दशामें विद्यमान है, जिनमेंसे सबसे प्रसिद्ध बारा किला और तालीबन्दा है। दोनों मैदानसे ८०० फीट ऊपर है। आधे रास्तेमें चट्टानपर स्वच्छ पानीका एक उत्तम तालाब है। तालीबन्दाके शिरपर एक बटका पेड़ अकेले खडा है, जो चारोंओर बहुत दूरसे देख पडता है।

इतिहास—लोग कहते हैं कि लगभग ३००० वर्ष हुए कि बीदरके राजा भीमसिंहके राज्यके समय चन्द्रसेनने अर्दोनीको कायम किया। पीछे यह विजयानगरके अधिकारमें हुई। सन् १५६४ में तालीकोटके संग्राममें विजयानगरके राजाके परास्त होनेपर बीजापुरके सुलतानने एक ऐबिसिनियन मलिक रहमान खाँको यहाँका गवर्नर बनाया। ३९ वर्ष रहनेके पीछे वह यहाँही मर गया। तालीबन्दा पहाडीपर अबतक उसकी कबर है। उसका गोद लिया हुआ लडका सीदी मसाउद खाँ उसकी जगहपर कायम हुआ, जिसने निचले किले और जुमामसजिदको बनवाया। सन् १६९० में औरङ्गजेबके जनरलने सख्त रोकावटके पीछे अर्दोनीको ले लिया। बाद यह निजामके हाथमें आई। सलाबतजङ्गने इसको जागीरमें अपने छोटे भाई बसालतजङ्गको दे दिया, जिसने इसको अपनी राजधानी बनाई। वह सन् १७८२ में मरा और अर्दोनीमें दफन किया गया। उमदे मसजिद और मकबरा उसकी और उसकी माताके कब्रस्तानपर बनाये गये। सन् १७८६ में एक महीनेके महासरेके पीछे टीपू सुलतानने अर्दोनीके किलेको ले लिया। उसने किला बन्दियोंको ढाह दिया और तोप आदि युद्धकी वस्तुओंको यहाँसे गूटीमें ले गया। सन् १७९२ में अर्दोनी निजामको मिली। सन् १७९९ में निजामने इसके बदलेमें दूसरी जगहोंको लेकर इसको अङ्गरेजोंको दे दिया।

## गूटी।

अर्दोनीसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व मदरास हातेमें रेलवेका बड़ा केंद्र गुंटकल है, जिसका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके इसी खण्डके ७ वें अध्यायमें लिखा है। गुंटकल जंक्शनसे १८ मील दक्षिण पूर्व गूटीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके बल्लारी जिलेमें डिवीजनका सदर स्थान गूटी एक छोटा कसबा है। रेलवे स्टेशनके निकट बाजार, एक धर्मशाला और एक छोटी नदी है। सूखे मोसिमोंमें नदीमें बहुत छोटी धारा रह जाती है। गूटीमें मजीस्टर डिपुटी कलक्टर और मुनसफकी कचहरियाँ, एक छोटा जेलखाना, मकबरा और सर थामस मन्दरोके यादगारका कूप है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गूटीमें ५३७३ मनुष्य थे, अर्थात् ३७४९ हिन्दू, १५८७ मुसलमान और ३७ कृस्तान।

स्टेशनसे २ मील दक्षिण समुद्रके सतहसे २१०० फीट और मैदानसे ५९० फीट ऊपर पहाडीके शिरोभाग पर गूटीका अभेद्य पुराना किला है। पहाडीके ऊपर कई एक कूप और जलाशय तथा इमारतें विद्यमान हैं। किलेके एक पाये पर एक छोटी इमारत है, जिसको मुरारीरावका बैठक लोग कहते है।

गूटीसे ३२ मील दक्षिण अनन्तपुर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४९०७ मनुष्य थे। कसबेके पडोसमें एक बड़ा तालाब है, जो सन् १३६४ में एक नदीपर बांध बना कर बनाया गया।

इतिहास—गूटीका किला सोलहवीं सदीमें बना। प्रथम इस पर विजयानगरके राजवंशके अधीन एक मनुष्यका अधिकार था। पीछे मुगल राज्यका प्रसिद्ध जनरल मीर जुमलाने इसको जीता। उसके पश्चात् कडपा और सबनूरके पठानोंने गूटीपर अपना अधिकार जमाया, जिनसे सन् १७१४ में गौरीपुरके खानदानके महाराष्ट्रोंने गूटीको छीन लिया। किला मुरारीरावका गढ़ बना। सन् १७७६ में ९ महीनेके घेरा देनेके बाद जब किलेका पानी चुक गया तब हैदरअलीने इसको जीता। सन् १७९९ में अङ्गरेजी सरकारने हैदरअलीके पुत्र टीपूको परास्त करके किला लेलिया।

## ताड़पत्री।

गूटीसे ३० मील (गुंटकलसे ४८ मील) दक्षिण-पूर्व गूटीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके अनन्तपुर जिलेमें प्रधान कसबा ताडपत्री है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ताडपत्रीमें १०२८३ मनुष्य थे, अर्थात् ६७७२ हिन्दू, ३४८३ मुसलमान, २१ कृस्तान, ५ जैन और २ दूसरे।

करीब सन् १४८५ में विजयानगरके राजाओंके राज्यके समय ताडपत्री कसबा बसाया गया। उसमें अच्छे अच्छे मन्दिर बनाये गये। नदीके किनारेपर एक सुन्दर मन्दिर है, जिसका काम पूरा नहीं हुआ था।

## कड़पा।

ताडपत्रीसे ६६ मील (गुण्टकल जक्शनसे ११४ मील) दक्षिण-पूर्व कडपाका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके (१४ अंश, २८ कला, ४९ विकला उत्तर अक्षांश, और ७८ अंश, ५१ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमें) पनार नदीसे ६ मील दक्षिण पश्चिम जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा कड़पा है, जिसको अनेक लोग कडापा और द्राविडी लोग कडप्पै कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कडपा कसबेमें १७३७९ मनुष्य थे, अर्थात् ९४२२ हिन्दू, ७५७४ मुसलमान, ३६२ कृस्तान और २१ सिक्ख।

देशी कसबा मैला है। कसबेके मकान ऊँचे नहीं हैं। कसबेसे पूर्व श्रृंगवेलकुण्ड एक पवित्र वस्तु है। कड़पामें जिला जज, कलक्टर इत्यादि हाकिमोंकी कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल और स्कूल है। नील और रुई कड़पा कसबेसे दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती है। कसबेके तीन ओर बिना पौधेकी पहाडियाँ हैं, इस कारणसे वहाँ गरमी अधिक पडती है। वहाँ औसत वार्षिक वर्षा २७ इंच होती है। कसबेके पासके एक गाँवको लोग पुराना कडपा कहते हैं।

सन् १८९१ ई० के निवर्षणके समय कड़पाके कलक्टरने एक कल द्वारा वहाँ वर्षा बरसाई थी। पहाडीके ऊपरसे तोप द्वारा डिनामाइट बारूदका धुआँ आकाशमें भरा गया; जिससे वर्षा हुई। इसी भाँतिकी परीक्षा अजमेरमें पहाड़ीके ऊपरसे और मुजफ्फरपुरमें मचान बांधकर की गई। पीछे यह निश्चय किया गया कि जहाँ पहाडी नहीं है, वहां इस यत्नसे वर्षा नहीं होगी तथा वर्षा बरसानेमें लाभसे अधिक खर्च पड जायगा और जहाँ वर्षा बरसनेके तत्त्व एकत्र न होंगे वहाँ वृष्टि नहीं हो सकेगी।

कडपा जिला—इसके उत्तर करनूल जिला, पूर्व नेलूर जिला, दक्षिण उत्तरी आरकाट जिला और पश्चिम बल्लारी जिला है। पालकुण्डा और शेषाचलम् पहाडियोंका सिलसिला, जिसकी औसत ऊँचाई लगभग १५०० फीट है, कडपा जिलेको दो भागोंमें बाटता है। जिलेमें पनार, पापाग्नि, चित्रवती इत्यादि नदियाँ बहती है और जङ्गल बहुत है। खानोंसे सीसा, तांबा, लोहाका और स्लेट और पत्थर निकलते हैं। कडपा कसबेसे लगभग ७ मील दूर पनार नदीके दहिने किनारे चिनूरके आस पास कुछ सोना मिलता है। कडपा घाटीकी भूमि उपजाऊ है। ऊख बहुत अच्छी होती है। जिलेमे करीब ७५ मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कडपा जिलेके ८७४५ वर्गमील क्षेत्रफलमे ११२१०३८ मनुष्य थे. अर्थात् १०१७२११ हिन्दू, ९७७४९ मुसलमान, ६०६७ कृस्तान और ११ अन्य। हिन्दुओमे ४४२५२० वेल्लाल (जो खेती करते है, इनको उत्तरी भारतके लोग बलालाभी कहते है,) १४७७३३ परिया, जिनको दक्षिणके लोग परयन कहते है; ८६०९३ इडैगा, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है (भेड चराने वाले), ५२१६८ कैकोला, जिसका शुद्ध नाम कैक्कलर है (बिनाईके काम करनेवाले), ३५२५६ सेंबडवन् (मछुहा), ३४२६१ चेटी (व्यापार करने वाले), २८०४७ बनान (कपडा धोने वाले), २४२३६ ब्राह्मण, १६६५० क्षत्रिय, १४७०५ अम्बटन (नाई), १३६३८ कंभाडन (कारीगर), १३५१७ सतानी (दोगला), १०१३९ कुशवन (कुभार), ७४३५ सानान (ताडीके काम करने वाले) और बांकीमे दूसरी जातियोंके लोग थे। ब्राह्मणोमें अधिक लोग शैव और क्षत्रियोंमें अधिक लोग वैष्णव हैं। कई एक जातिके लोग, जिनकी संख्या जिलेमें कम है, एक स्थानपर सदा नहीं बसते है। वे लोग जङ्गली पैदावारसे अपना निर्वाह करते है। कड़पा जिलेमें कडपा सबसे बडा कसबा और बडवेल, मदनापल्ली इत्यादि कई छोटे कसबे है। इस जिलेमें कनड़ी और तैलङ्गी भाषा प्रचलित हैं।

कडपा जिलेके अथिरला स्थानमे एक नदीके किनारे पर एक पवित्र तालाब और मन्दिर है। उस देशके लोग कहते है कि परशुरामजी इसी पवित्र तालावमें स्नान करके मातृहत्याके दोषसे विमुक्त हुए थे। फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय ३ दिनों तक वहाँका तेह-वार होता है। हजारो यात्री आकर उस तालावमें स्नान करते है।

इतिहास—पहिले कडपा जिला विजयानगरके हिन्दू राजाओंके अधिकारमें था। सन् १५६४ मे कई मुसलमान बादशाहोंने मिलकर विजयानगरके राजाको तालीकोटमें परास्त किया। उसके पीछे गोलगुंडाके अधीनके कई मुसलमानोने कड़पा जिलेको बाँट-लिया। लगभग सन् १५७० में कडपाके फौजी लेफ्टिनेण्ट एक पठानने किलेको बनवाया। सत्रहवीं सदीके मध्य भागमें शिवाजीने कडपाको लूटा। अठारहवीं सदीके आरम्भमें अब-दुलनबीखाँ नामक पठानने निजामकी अधीनताको छोडकर कडपाका स्वाधीन नवाब बन-कर उसको अपनी राजधानी बनाया। लगभग सन् १७३२ में तीसरे नवाबके समय महा-राष्ट्रोंके बलकी बढती और उस खानदानकी घटती हुई। सन् १७६९ मे कडपाके नवाबने मैसूरके हैदरअलीको "राज्य कर" आदाय किया। जब नवाबने निजामके साथ मेल किया तब हैदरअलीने आक्रमण करके नवाबसे किलेको लेलिया। सन् १७९२ की सन्धिमें टीपू सुलतानने कड़पा जिला निजामको दे दिया। सन् १८०० में निजामने कड़पा जिला

अङ्गरेजोंको दिया सन् १८१७ में कडपा कसबा जिलेका सदर स्थान बनाया गया। सन् १८६८ तक कडपा कसबेमें फौज रहती थी।

## रेणुगुंटा जंक्शन ।

कडपासे २५ मील दक्षिण-पूर्व वाहूदा नदीपर रेलवेका पुल है। सूखे दिनोंमें नदीमें पानी नहीं बहता, लेकिन थोडेही बालू हटा देनेसे भूमिमें पानी मिल जाता है। महाभारत शान्ति पर्वके २३ में अध्यायमे लिखा है कि लिखित ऋषिने अपने बडे भ्राताके उपदेशसे बाहूदा नदीमे स्नान करके ज्योंही तर्पण करनेकी इच्छा की त्योंही अंगुलियोंसे युक्त उनके दोनों हाथ ( जो गिर गये थे ) प्रकट होगये।

कडपासे ७८ मील ( गुंटकलसे १९२ मील ) दक्षिण-पूर्व मदरास हातेमें रेणुगुंटाका रेलवे जंक्शन है। रेलवे स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनी हुई है। रेणुगुटासे रेलवे लाइन चार तरफ गई हैं। मदरास और कॉंची इत्यादिके जानेवाले लोग दक्षिण पूर्वके रेलवेसे जाते हैं। मैं पूर्वोत्तरकी लाइनसे पहिले कालहस्ती, वेंकटगिरि इत्यादि स्थानोंमें गया।

रेणुगुटा जंक्शनसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है।

( १ ) रेणुगुटासे पूर्वोत्तर साउथ इण्डियन रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है।

| मील | प्रसिद्ध स्टेशन । |
|---|---|
| १४ | कालहस्ती । |
| ३० | वेंकटगिरि । |
| ६२ | नेल्लूर ( मदरास रेलवे पर ) । |

( २ ) रेणुगुंटासे दक्षिणकी ओर "साउथ इण्डियन रेलवे"

| मील | प्रसिद्ध स्टेशन । |
|---|---|
| ६ | तिरुपदी ( पूर्व ) । |
| ७ | तिरुपदी ( पश्चिम ) । |
| १३ | चन्द्रगिरि । |
| ३२ | पकाला जंक्शन । |
| ५० | चित्तौर । |
| ७१ | कटपद्दी जंक्शन । |
| ७७ | वेलूर । |
| १३८ | तिरुवन्नामलई । |
| १७० | विलीपुरम् जंक्शन । |

पकाला जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १४२ मील धरमवरम् और २०५ मील गुंटकल जंक्शन।

कटपद्दी जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर मदरास रेलवे पर १५ मील आरकाट ३८ मील आरकोनम् जंक्शन ५५ मील तिरुवल्लूर और ८१ मील मदरास और दक्षिण-पश्चिम १५ मील कुडिआतम, ३३ मील अम्बूर, ५१ मील जालार-पेट जंक्शन, १३६ मील सेलम, १६३ मील ईरोड जंक्शन, २२१ मील पोडै-यनूर जंक्शन, २५५ मील पाल-घाट और ३३३ मील कली-कोट। जालार पेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ८७ मील बङ्गलोर। ईरोड जंक्शनसे पूर्व दक्षिण सौथ इण्डियन रेलवेपर ८५ मील त्रिचनापल्ली फोर्ट और ८८ मील त्रिचनापल्ली जंक्शन। पोडैयनूर जंक्शनसे उत्तर मद-

रास रेलवेपर ४ मील कोयम्बुत्तूर, और २६ मील मेट्टुपालयम् ( उत्तक मण्डके पास )।

विलीपुरम् जक्शनसे पूर्व साउथ इण्डियन रेलवेपर २४ मील पाण्डीचरी, उत्तर चिङ्गलपट होकर ९८ मील मदरास और दक्षिण थोडा पश्चिम कुम्भकोनम और तञ्जोर होकर १५१मील त्रिचनापल्ली जंक्शन है।

(३) रेणुगुंटासे दक्षिण-पूर्व मदरास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील १$\frac{3}{4}$ पाई है,—

मील प्रसिद्ध–स्टेशन।

२३ तिरुतानी।

४१ आरकोनम जक्शन।

५८ तिरुवल्लूर।

८४ मदरास।

आरकोलम् जक्शनसे दक्षिण-पूर्व १८ मील कॉचीपुरी और ४० मील चेंगलपट्ट जक्शन और चेङ्गलपट्टसे ६४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम विलीपुरम् जक्शन।

(४) रेणुगुटासे पश्चिमोत्तर मदरास रेलवे,—

मील प्रसिद्ध–स्टेशन।

७८ कडपा।

१४४ ताड़पत्री।

१७४ गूटी।

१९२ गुटकल जंक्शन। ( आगे गुटकलमे देखो )

# कालहस्ती।

रेणुगुटा जक्शनसे १४ मील पूर्वोत्तर कालहस्तीका रेलवे स्टेशन है मदरास हातेके (१३ अंश, ४५ कला, २ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४४ कला, २९ विकला पूर्व देशान्तरमे ) उत्तरी अर्काट जिलेमें सुवर्णमुखी नदीके दहिने किनारेपर ( सड़क द्वारा त्रिपतीसे १६ मील पूर्वोत्तर ) कालहस्ती एक कसबा और तीर्थ स्थान है, जिसको द्राविड़के बहुत लोग कालाश्री कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुस्य-गणनाके समय कालहस्तीमें ११७५४ मनुष्य थे, अर्थात् १०१५९ हिन्दू, १५०४ मुसलमान, और ९१ कृस्तान।

कालहस्तीमें सब मजीष्टर और एक जमीदार राजा रहते हैं; वडा बाजार है। तीर्थ स्थान होनेसे वहाँ बहुत यात्री जाते हैं। वहाँ गल्लेकी सौदागरी होती है। फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय वहाँ मेला होता है, जो लगभग १० दिनों तक रहता है।

राजा—कालहस्तीके राजा वेलमा जातिके हैं। इनकी जमीन्दारी उत्तरी अर्काट और नेल्लूर जिलेमें है। कहाजाता है, कि विजयानगरके राजाने १५ वी सदीमें इनके पुरुषेको यह मिलकियत दी। वह लडाईके मैदानमे ५००० सिपाही लासकते थे। सन् १७९२ मे यह जमींदारी अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमे हुई। राजा १९०००० रुपया पेसकस अर्थात् 'राजकर' अङ्गरेजी गवर्नमेंटको देते हैं। उनको राज्यसे वार्षिक चार पाँच लाख रुपये मालगुजारी आती है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यका क्षेत्रफल १०२७ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ११८०२२ थी। राज्यकी लगभग आधी भूमि जोती जाती है और उजाड़ जगलोंसे जलावनकी लकडी मदरास शहरमें भेजी जाती हैं।

कालहस्तीश्वर—द्रविड देशमे ५ तत्त्वोंसे ५ लिङ्ग प्रख्यात है,–( १ ) शिवकांचीमे एकाम्रेश्वर पृथ्वी लिङ्ग, ( २ ) त्रिचनापल्ली जिलेके श्रीरङ्गमके निकटका जम्बुकेश्वर जल लिङ्ग, दक्षिणी अर्काट जिलेके तिरुवन्नामलई कसबेके पासके अरुणाचलपर अग्निलिङ्ग, कालहस्तीमे कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और चिदम्बरमे नटेश आकाश लिङ्ग ऐसा प्रसिद्ध है कि काल अर्थात् सर्प और हस्तीने वहाँ तप करके महादेवजीसे वर माँगा था कि तुम हम लोगोंके नामसे प्रसिद्ध होओ। उन्ही दोनोके नामसे शिवजीका नाम कालहस्तीश्वर हुआ। वडे शिवलिङ्गपर सर्पके फण और हस्तीके दो दातके चिह्न है। लिङ्गके नीचे भूमिपर लिङ्गकी पूजा होती है।

दक्षिणकी पहाडीके पादमूलके निकट कालहस्तीश्वरका विशाल मन्दिर पत्थरसे बना हुआ है। वडे आंगनमे उसके पूर्वोत्तर पार्वतीजीका मन्दिर है। मन्दिरके चारो द्वारोपर चित्रोसे भूपित ४ विशाल गोपुर बने हुए है। मन्दिरकी दीवारोंमे तलङ्गी आदि अक्षरोंमे बहुतसे शिलालेख है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदोपपुराणीय शिवभक्त विलास—( २४ वॉ अध्याय ) एक समय नील और कणिश दो व्याध धनुप वाण लिये हुए सुवर्णमुखरी नदीके तटपर घूमते थे। नीलने कणिशसे पूछा कि इस पर्वतपर कैसा शब्द सुन पडता है। तब कणिशने कहा कि इस पर्वतके ऊपर कोई दिव्य देवता है, जिसके पूजनेके लिये देवता लोग आते है, उसी स्थानके गानका शब्द सुन पड़ता है। उसके उपरान्त दोनो व्याधोने पर्वतके ऊपर जाकर एक बिल्वके वृक्षके नीचे शान्तवैर वाले हजारों सर्पोंको और उसके पश्चात् अपने पीछे फूत्कार करता हुआ सर्पसे भूपित शिवलिङ्गको देखा, जिसके एक बार दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पाप छूट जाते है। वहॉ बिलका रहने वाला सर्प अपने मणिके तेजसे प्रकाश करता था और अपना केचुल शिव-को पहिनाता था। ऐसे अकाल मृत्युको हरने वाले कालहस्तीश्वरको देखकर वे प्रसन्न हुए नीलने कणिशसे कहा कि हमलोग वनवासियोके यह कुल देवता है हम कुछ दिनोंमे इनको अपना मित्र बनालेगे। ऐसा कह उसने बहुतसे मृगोंको मारकर अग्निमे पकाया और मासकी परीक्षा करके अपने मुखमे जल, माथेपर फूल और हाथमे मास लेकर वह शिवके पास पहुंचा। ( २५ वॉ अध्याय ) उसने महादेवके ऊपरका पुष्पादि उतारकर अपने मुखके जलकी धारासे शिवको स्नान कराया, फूल शिवपर चढ़ाया और मांसके दोनाओंको उनके आगे रक्खा। ऐसा कर उसने कहा कि हे महादेव! सुस्वादु मांसोको खाकर मेरे ऊपर कृपा करो, जबतक तुम नहीं भोजन करोगे तब तक मै कुछ न खाऊंगा। शिवजीने उसका चढ़ाया हुआ मांस ग्रहण किया। रात्रि हो जानेपर नीलने सर्पके मुखका मणि लेकर शिवको दीप दिखाया। सबेरा होने पर वह शिकारके लिये वनमे चला गया। पुजारी ब्राह्मणने आकर जब शिव-लिङ्गके ऊपर मासको देखा, तब रोता हुआ भूमिपर गिरपड़ा और चिल्लाता हुआ व्याधोंको गाली देने लगा। इसके उपरान्त वह शिवलिङ्गको पोंछकर नित्यके समान पूजा करके अपने घर चला गया। उसके पश्चात् व्याधने आकर पूर्ववत् शिवको मांस भोजन कराके बचा हुआ मांस आप भोजन किया। इसी भाँति पूजन करते हुए उसको एक मास बीतगया। ब्राह्मण पुजारी नित्य आकर शिवलिङ्गको धोता था और दुःखी हुआ करता था। नीलके पिता नागने अपने पुत्रको वनदेवतासे पकड़ा गया हुआ जानकर उसको धर लेजानेका अनेक

उद्योग किया, किन्तु जब वह नहीं गया तब निरास होकर अपने घर चला गया। महादेवको पूजन करने वाले लोग उस व्याधसे द्वेष करने लगे, तब महादेवने स्वप्नमे उस पुजारीसे कहा कि हे ब्राह्मण ! यह शवर हमारा परम भक्त है। जो उससे द्रोह करेगा वह हमरा द्वेषी होगा। यदि व्याधकी भक्ति देखना है तो तुम एक बार वहॉकी झाड़ीमे छिपकर देखो। दूसरे दिन पुजारी शिवलिङ्गके निकटके वट वृक्षकी शाखामे छिपकर बैठ रहा। दोपहरके समय व्याध बहुतसा मास और अपने मुखमें सुवर्णमुखरी नदीका जल लेकर वहां आया। उसने अपने पैरके अग्रभागसे शिवके ऊपरका फूल टारकर अपने मुखके जलसे शिवको स्नान कराया, अपने मस्तकका फूल उनपर चढ़ाया और मास उनको अर्पण किया। उसने जब देखा कि महादेव नित्यके समान भोजन नहीं करते है, किन्तु इनके बायें नेत्रसे रुधिर गिरता है, तब हाहाकार करके मूर्च्छाको प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् उसने विसल्यकर्णीका रस लेकर शिवकी ऑखमें लगाया और अनेक औषधी की। जब रोग दूर न हुआ तब उसने अपने बाणसे अपनी आंखको निकालकर महादेवकी आंखमें लगा दिया। जब महादेवकी आंख बन गई तब वह प्रसन्न होकर फिर उनके खानेके लिये मांस लाया। उस समय उसने देखा कि शिवकी दहिनी आंखसे भी रुधिर गिर रहा है, तब वह कहने लगा कि हे महादेव ! तुम्हारी ऑखमे रोग नहीं है; तुम हमारी भक्तिकी परीक्षा करते हो, ऐसा कह वह अपनी दूसरी ऑख निकालने लगा, तब शीघ्र महादेवजी प्रगट होगये। उनकी कृपासे नील व्याध त्रिनेत्र ( शिव ) होगया ! शिवजी कैलासमें चले गये।

शिवपुराण—( विद्येश्वर संहिता, १० वॉं अध्याय ) प्राणीगण ब्रह्मलोकसे च्युत होने पर महा पवित्र सुवर्णमुखी नदीके समीप जन्म लेते हैं। धन राशिके बृहस्पति और सूर्य होनेपर सुवर्णमुखीमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है।

## वेंकटगिरि।

कालहस्तीसे १६ मील ( रेणुगुंटा जंक्शनसे ३० मील ) पूर्वोत्तर वेङ्कटगिरिका रेलवे स्टेशन है। नेल्लूर जिलेके दक्षिण भागमे तालुकेका सदर स्थान वेङ्कटगिरि नामक एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वेङ्कटगिरि कसबेमें ७९८९ मनुष्य थे, अर्थात ६६१६ हिन्दू, ११४९ मुसलमान और २४ कृस्तान।

वेङ्कटगिरिमे एक जमीन्दार राजाका महल और डिपुटी तहसीलदारकी कचहरी है। कसबेसे लगभग ४ मील उत्तर वेङ्कटगिरि किलेमें महल आदि उत्तम इमारत बनी हुई है।

देवमन्दिर—यहॉ विशेष दर्शनीय स्थान काशी पेठमें काशीविश्वेश्वरका मन्दिर है। वहॉके राजाके पितामह काशीसे इस शिव लिङ्गको ले आये और काशी विशालाक्षी, अन्नपूर्णा, कालभैरव, सिद्धिविनायक, आदि देवताओं समेत काशीविश्वनाथकी स्थापना की। इसकी पूजा अर्चा बडी तय्यारीसे होती है। नित्य रुद्रगणिका वहॉ आरती लेकर नृत्य और गान करती हैं। विश्वनाथ लिङ्गके स्थापित होनेपर वहॉ काशी पेठ बसी। मन्दिरके पास कैवल्यनदी नामक नाला है। इनके अतिरिक्त वहॉ रामचन्द्र, हनूमान, चङ्गलराज स्वामी, वरदराज, आदिके मन्दिर हैं। राजाके महलके पासके बाजारमें ग्रामशक्ति, पोलेर अम्बा है, जिसको लोग बहुत बलिदान देते हैं।

राजा–वेङ्कटगिरिसे वेल्मा जातिके एक जमीन्दार राजा हैं। वर्तमान राजा सर गोपाल कृष्ण वहादुर के०सी० आई, ई० की उमर ३४ वर्षकी है, जो इस राजवंशके कायम करने वालेके सत्ताइसवीं पुश्तमें अपनेको कहते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस राजाकी जमीन्दारीका क्षेत्रफल २११७ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ३००८६५ थी।

## नेल्लूर।

वेङ्कटगिरिके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील ( रेणुगुंटा जंक्शनसे ६२ मील ) पूर्वोत्तर नेल्लूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमे ( १४ अंश, २६ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, २७ विकला पूर्व देशान्तरमे ) पनार नदीके दहिने किनारेपर उसके मुहानेसे ८ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा नेल्लूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नेल्लूर कसवेमें २९३३६ मनुष्य थे, अर्थात् १४३१० पुरुष और १५०२६ स्त्रियां। इनमे २२५५३ हिन्दू, ५६०८ मुसल्मान, १००२ कृस्तान, ८ जैन और १६५ अन्य थे।

नेल्लूरको चन्द सडकें अच्छी हैं, जिनके वगलोंमें धनी निवासियोंके मकान वने हुए हैं। कसवेके दक्षिण एक वडे तालावके निकट यूरोपियन लोगोकी कोठियाँ वनी हैं। तालावके दूसरे वगलपर एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर नरसिंहजीका मन्दिर वना हुआ है। पुराने किलेमें कलक्टरका आफिस और उसके सामने प्रथमके वारक ( अर्थात् सैनिकगृह ) मे पुलिसका आफिस है। उनके अलावे वहाँ एक गरीवखाना, एक गिरजा, एक पुराना वड़ा कवरगाह, एक अस्पताल, एक लडकियोंका स्कूल और वहुतसे लडकोंके स्कूल हैं। एक नहर और वेजवाडा वाली वडी सडक नेल्लूर कसवे होकर वहाँसे दक्षिण ओर मदरास शहरको गई है।

नेल्लूर कसवेसे १० मील पश्चिम वचीरेडीपालयम् लगभग ५००० आदिमियोंकी वस्ती है, जहाँ मकान और मन्दिरोंके कामके लिये पत्थरके स्तम्भ आदि सरंजाम वनते हैं। वहाँ कोदंडराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर है, जहाँ प्रतिवर्ष चैत्रमे मेला होता है। मेलेमें आठ दश हजार मनुष्य आते हैं। नेल्लूरके सौदागर आकर वहाँ वड़ी सौदागरी करते हैं। नेल्लूर जिलेमे दूसरा मेला कवाली तालुकके वित्रघण्टा गाँवमे प्रति वर्ष होता है। लगभग ४००० यात्री आकर वेंकटेश स्वामीका दर्शन करते हैं। नेल्लूर जिलेके भीमावरम् गाँवके पास एक पहाडी पर नृसिंहजीका पुराना मन्दिर है, जिसको अगस्त्य मलई मुनिका नियत किया लोग कहते हैं। पहाडी पर गुफामन्दिर है, जिसका दरवाजा पत्थरकी एक वडी प्रतिमासे वन्द है। वहाँ प्रति वर्ष चैत्रमें मेला होता है।

नेल्लूर जिला—सन् १८०१ मे यह जिला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमे होगया इसके पूर्व वंगालकी खाढी, दक्षिण उत्तरी आर्काट और चेंगलपट्ट जिला, पश्चिम ओर पहाड़ियाँ, जो कर्नूल और कडपा जिलेसे इसको अलग करती है और उत्तर कृष्णा जिला है। नेल्लूर जिलेकी भूमि वहुत उपजाऊ नहीं है। लगभग आधी भूमि जोती जाती है। जिलेके अधिक क्षेत्रफलमें पहाड़ी भूमि और घना जंगल है। पश्चिमकी सीमाके पास सूखी अर्थात् वीना जंगलकी पहाडियाँ हैं। कोई पहाडी ३१०० फीटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। वनोमें वनले जंतु कम हैं। पनार, सुवर्णमुखी आदि नदियाँ वहती है। नेल्लूर जिलेमें अच्छी मवेसियां होती हैं, उनके कारणसे वह जिला प्रसिद्ध है। आस पासके जिलोंके लोग उस जिलेसे

मवेसियोंको ले जाते हैं। वहांके उत्तम बैलका दाम ७० रुपयेसे २०० रुपये तक होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नेल्लूर जिलेका क्षेत्रफल ८७३९ वर्गमील और इसकी मनुष्य-सख्या १२२०२३६ थी, अर्थात् ११३८०३१ हिन्दू, ६१३४४ मुसलमान, २०७९४ कृस्तान और ६७ अन्य। इनमेसे हिन्दुओंमें ४१८०४९ वेलाल, जिसका शुद्ध नाम वल्लाल है, १०३०१६ इडैगा, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है, उस जातिके लोग भेड पालते हैं। ५८०५८ सेटी ( सौदागरी करनेवाले ), ५६९६५ ब्राह्मण, ३३०७० वनान ( कपडा धोनेवाले ), २७८९५ कैकोला याने कैकलर ( कपड़ा बिननेवाले ) २१४३५ कम्भालर ( कारीगर ), २०२२८ सेंबडवन ( मछुहा ), १७७०८ सतानी १५२६७ सनान और शेषमे कुशवन, अंबटन, छत्री, कनकन इत्यादि जातियोंके लोग थे। जङ्गली जातियोंमें अनाड़ी अधिक थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नेल्लूर जिलेके कसबे नेल्लूरमे २९३३६, और अंगोलमें १०८६० मनुष्य थे। इनके अलावे वेंकटगिरि इत्यादि कई छोटे कसबे है। नेल्लूर कसबेसे ७२ मील उत्तर अंगोल है ( नेल्लूर जिलेमें तेलुगू अर्थात् तैलंगी भाषा प्रचलित है

# दसवाँ अध्याय।



## ( मद्रास हातेमें ) तिरुपदी, बालाजी, चन्द्रगिरि, वेल्लूर, आरकाट, आरकोनम् जंक्शन, तिरुवल्लूर और भूतपुरी।

## तिरुपदी।

रेणुगुण्टा जंक्शनसे ६ मील पश्चिम तिरुपदीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके उत्तरी आरकाट जिलेमे ( १३ अंश, ३८ कला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २७ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें ) तिरुपदी एक कसबा है, जिसको उत्तरी भारतके बहुत लोग त्रिपदी कहते हैं।

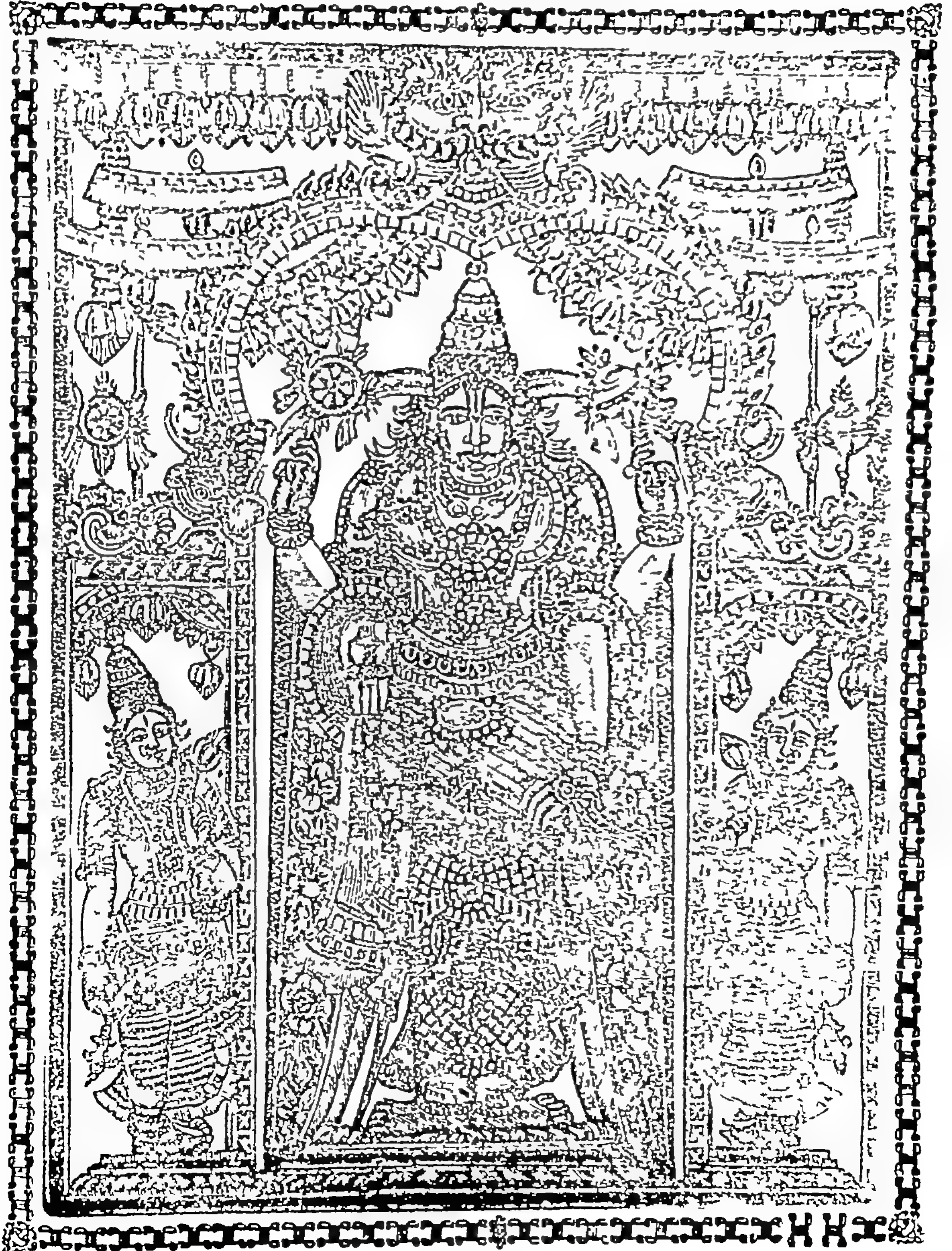
सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुपदीमें १४२४२ मनुष्य थे, अर्थात् १३५०७ हिन्दू, ६५५ मुसलमान, ७४ कृस्तान, ५ जैन और १ अन्य।

कसबेसे लगभग १ मील दक्षिण सुवर्णमुखी नदी वहती है। तिरुमला पहाड़ीके पादमूलके पास नीचेकी तिरुपदी और पहाडीके ऊपर, ऊपरकी तिरुपदी, जहाँ बालाजीका प्रसिद्ध मन्दिर है, बसी है। नीचेकी तिरुपदीमे बालाजीके यात्रियोंकी भीड रहती है। वहाँ धर्मशालायें बनी हैं और बाजारमें खाने पीनेकी सब वस्तु मिलती है। तिरुपदीमें कई देवताओंके मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें गोविन्दराजका मन्दिर प्रधान है। रामानुजस्वामीके संप्रदायकी पुस्तक प्रपन्नामृतके ५१ वें अध्यायमें लिखा है कि श्रीरामानुजस्वामीने वेंकटाचलके पास गोविन्दराजको स्थापित किया। गोविन्दराज भुजंगपर शयन किये हुए विष्णुकी मूर्त्ति हैं। गोविन्दराजके मन्दिरके पास श्रीभट्टनाथ दिव्य सूरिकी कन्या गोदादेवीका मन्दिर है, जिसको रामानुजस्वामीने स्थापित करवाया था। नदीके किनारेके पुराने मन्दिरके २ गोपुरोंकी दीवारोंमे सुन्दर संगतरासीका काम है।

# बालाजी।

तिरुमला पहाडीकी ७ चोटियाँ प्रधान हैं। सातवीं चोटी शेषाचलपर जिसको वेंकटाचल और वेंकटरमनाचलम्‌भी कहते है, दक्षिण भारतके उत्तम मन्दिरोंमेसे एक, प्रख्यात बालाजीका पुराना मन्दिर है। वेंकटाचलकी चोटी समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊंची है। उस पर जङ्गल नहीं है।

श्रीवेङ्कटेश्वरो विजयतेतराम्।



तिरुपदीसे ६ मील श्रीबालाजीका मन्दिर है; किन्तु कसवेसे लगभग १ मील दूरपर चढ़ाईके बाहरका फाटक मिल जाता है । रास्ता पहाडी है । चढ़ाई कडी है । तिरुपदीमे डेढ़ दो रुपयेमें सवारीके लिये डोली और चार आनेमें मजदूरा मिलता है ।

जूता पहनकर पहाड़के ऊपर कोई नही जाता है । यात्रीगण पहाड़ीके नीचे तिरुपदी-की धर्मशालामें अपना कुछ असवाव और जूता छोड़ जाते है । पहले मन्दिर वाली पहाडीपर कोई यूरोपियन नहीं चढ़ा था । सन् १८७० ई० मे महन्तके रुकावटके दरखास्त करनेपर भी एक मुजरिमके तलासनेके लिये पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ऊपर चला गया था । वडे गोपुरके पास तक यूरोपियन आदि अन्यधर्मी मनुष्य जासकते हैं, उससे आगे नही जाने पाते । चढ़ाईके रास्तेमें पहाडीके ऊपर कई जगह टिकने या विश्राम करनेके लिये जगह बनी हैं, जहाँ केला, नींबू, चना इत्यादि खानेकी वस्तु और पानी मिलता है और स्थानस्थान पर पानीके कुण्ड हैं ।

गोपुरके पाससे सीढ़ियाँ आरम्भ होती है। बालाजीका मन्दिर पत्थरकी तीन दीवारोंसे घेरा हुआ है, जिनके वगलोंपर सुन्दर गोपुर बने हुए है । मध्यमें गुम्वजदार मन्दिर है । मन्दिरका हाता ४१० फीट लम्वा और २६० फीट चौड़ा है । कई देवढ़ीके भीतर लगभग ७ फीट ऊंची, शंख, चक, गदा और पद्म धारण किये हुई बालाजीकी पाषाणमय चतुर्भुज मूर्त्ति पूर्वमुखसे खडी हैं । बालाजीको दक्षिणी भारतके लोग वेङ्कटेश वेंकटाचलपदी आदि नामोंसे पुकारते हैं, किन्तु उत्तरी भारतके अधिक लोग नको बालाजी कहते हैं । इनकी झांकी अतिमनोहर है । मन्दिरके चारो तरफ मकान बने हैं और आस पास वाराहजी आदि देवताओके अनेक मन्दिर हैं ।

यहाँ राजसी कारखाना है । भोग रागका खर्च बेहिसाब है । चौकठ किवाडोंमे चाँदी सोने जडे गये हैं । प्रति वर्ष दशहरेके दिन वडे धूमधामसे रथयात्रा होती है । बड़े तिहवारोके समय हजारो यात्री बालाजीके मन्दिरके पास एकत्रित होते हैं । नित्यही वेंकटेशगिरिपर यात्री चढ़ते है । प्रति वर्ष लगभग १२५००० यात्री श्रीवेंकटेश भगवान्का दर्शन करते हैं ।

मन्दिरके पास १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा स्वामिपुष्करणी नामक एक सरोवर है, जिसके चारो तरफ पत्थर काटकर सीढ़ियाँ बनाई हुई हैं। यात्री लोग उसीमे स्नान करके बालाजीका दर्शन करते हैं । सरोवरके पास "सहस्र स्तम्भ" मण्डपम् है । और श्रीवाराहस्वामी पूर्व मुखसे विराजमान हैं ।

वदरीनारायणके समान यहाँभी प्रसादमें छूत नहीं है । यहाँ यात्रियोंकी तरफसे अटका भी चढ़ाया जाता है । कितनी स्त्रियाँ पुत्रादि होनेके लिये बालाजीकी मानता करती हैं जगमोहनके पास वहुतसे नाई रहते हैं । वहुत लोग वहाँ अपने लडकोंका मुण्डन कराते है ।

मन्दिरके पास हुण्डी नामसे प्रसिद्ध एक तरहके हौजके समान एक पात्र बना है, जिसका मुख ऊपरसे वन्द है । रुपया, पैसा, गहना, चाँदी, सोना, धान्य, मसाला, केसर, फल, इत्यादि वस्तु, जो जिसके मनमें आता है, वह उस हुण्डीमें डाल देता है, जिनको नियत समय पर मन्दिरके अधिकारी निकाल लेते हैं । वहुतेरे व्यापारी या दूसरे लोग अपने घरमे बालाजीके निमित्त रुपये पैसे निकालते हैं, जिसको कानगी कहते हैं । मन्दिरकी वार्षिक आमदनी लगभग २ लाख रुपया है, खर्च भी भारी है ।

सन् १८४३ ई० तक मन्दिरकी आमदनी खर्चका प्रबन्ध अङ्गरेजी सरकार करती थी; पीछे महन्तके स्वाधीन कर दिया गया। कई वर्ष हुए तिरुपदीके प्रधान वासिन्दोंने वाइसरायके पास दरखास्त दिया कि मन्दिरका खजाना महन्त द्वारा बरबाद होरहा है। मुकदमा कायम होनेपर वहाँके महन्तको दण्ड मिला था। कालहस्तीके पासके रहनेवाले टोंडिमा चक्रवर्त्ती एक कमेटीकी रायसे बालाजीकी पूजा और खर्चका प्रबन्ध करते हैं।

यहाँ टिकनेके लिये धर्मशालायें हैं। बाजारमें खाने पीनेकी सब चीजें मिलती हैं। बालाजीकी उत्तम उत्तम तस्वीर बिकती है। एक अस्पताल और रामानुजस्वामीके सम्प्रदायकी एक गद्दी है। स्थान स्थान पर पहाडीके ऊपर १६ झरने हैं।

बालाजीसे ३ मील दूर पहाडीकी ऊँची नीची चढ़ाई उतराईके बाद पापनाशिनी गंगा मिलती है। दो पहाडियोंके बीचमें बहती हुई धारा दूरसे आई है और वहाँ पहाडीपर ऊपरसे नीचे गिरती है। यात्री लोग वहाँ स्नान करते हैं। बालाजीकी तरफ लौटते हुए रास्तेमें आकाशगंगाकी धारा मिलती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—( दशम स्कन्ध ७९ वाँ अध्याय ) बलदेवजी, श्रीशैल पर्वतसे चलनेके पश्चात् द्रविड़ देशमें परम पवित्र श्रीवेंकट पर्वतका दर्शन करके काञ्ची पुरीमें गये।

*श्रीवेंकटाचल इतिहासमाला नामक ७ स्तवक अर्थात् अध्यायकी संस्कृत पुस्तक है,* जिसको रामानुजस्वामीजीके शिष्य अनन्ताचार्यने, जिनका जन्म शाका ९७५ ( सन् १०५३ ई० ) में था, बनाया था। आचार्यजीने उस पुस्तकमें वेंकटेशजीका प्राचीन वृत्तान्त लिखा है, जिसका सारांश नीचे है,—सुवर्णमुखरीके तीर पर वेंकटाचल नामक पर्वत है जिसके ऊपर सिद्ध और मुनिगण तप करते हैं। इस पर चांडाल, यवन आदि वेदसे बाह्य लोग चढ़ नहीं सकते। शुक्र, भृगु, प्रहलाद, अंबरीष आदि महर्षि और राजर्षिगण पर्वतको विष्णुका अंश समझकर उसके ऊपर नहीं चढ़े, उन्होंने उसके निकट तप किया था पर्वतके ऊपर स्वामिपुष्करणीके पश्चिम किनारे पर पृथ्वीको अंकमें लिये हुए शूकर भगवान् स्थित है।

गरुडने वैकुण्ठसे वेंकटाचलको लाकर द्रविड़ देशमें सुवर्णमुखरी नदीके तटपर रक्खा और भगवान्की क्रीडावापी स्वामिपुष्करणीको भी लाकर उसपर स्थापित किया। वेंकटगिरिपर लक्ष्मीदेवी, पृथ्वीदेवी और नीलादेवीके सहित विष्णु भगवान् विराजने लगे।

विष्णु भगवान् वैवस्वत मन्वन्तरके प्रथम सत्ययुगमें वायुके तपसे प्रसन्न होकर गंगासे २०० योजन दक्षिण, ( द्राविड देशके ) पूर्वके समुद्रसे ५ योजन पश्चिम वेंकटगिरिके ऊपर स्वामिपुष्करणीके तटपर सूर्यमण्डलके तुल्य विमान ( मन्दिर ) में लक्ष्मी और देवताओंके सहित जा विराजे। वह कल्पके अन्त तक उस विमानमें निवास करेंगे। ( भगवान्की आज्ञासे शेषजीने पर्वतरूप अर्थात् वेंकटगिरि बनकर पृथ्वीपर निवास किया।

रामानुजस्वामीके उपदेशसे वेंकटाचलके राजा यादवने वेंकटेशके प्राचीन मन्दिरको सुधरवाया और उसके चारों ओर मन्दिरके अधिदेवता वाराह, नृसिंह, वैकुण्ठनाथ इत्यादिको स्थापित करवाया। राजाने उस स्थान पर शेषाशन, गरुड, द्वारपाल आदि बनवा दिये और पद्मावतीकी स्थापना करवा दी। पीछे वेंकटगिरि पर रामानुजस्वामीकी प्रतिमा भी प्रतिष्ठित हुई।

# चन्द्रगिरि ।

तिरुपदीके रेलवे स्टेशनसे ७ मील (रेणुगुण्टा जंक्शनसे १३ मील) दक्षिण-पश्चिम चन्द्रगिरिका रेलवे स्टेशन है। उत्तरी आरकाट जिलेमे चन्द्रगिरि एक छोटा कसवा है, जिसमे सन् १८८१ मे ४१९३ मनुष्य थे।

सन् १५६४ में तिलीकोटमे परास्त होनेके वाद विजयानगरके राजवंशका एक राजा चन्द्रगिरिमें रहने लगा। सन् १६३९ मे चन्द्रगिरिके राजाने ईस्ट इण्डियन कम्पनीको जमीनका एक टुकड़ा दिया, जिसपर मदरासके "फोर्टसेटजर्ज" (किला) वनाया गया। जिस महलमें वैठकर राजाने कम्पनीको भूमि दी, वह किलेमे अव तक विद्यमान है। सरकारने उसको मरम्मतसे रक्खा है। उसमें अफसर लोग ठहरते हैं। महलके पीछे एक पहाडी है।

# वेलूर।

चन्द्रगिरिसे ६४ मील (रेणुगुंटा जंक्शनसे ७७ मील) और कटपदी जक्शनसे ६ मील दक्षिण वेलूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमे (१२ अंश, ५५ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, १० कला, १७ विकला पूर्व देशान्तरमे) पलार नदीके किनारेपर उत्तरी आरकाट जिलेमें प्रधान कसवा वेलूर है। उसमे एक वडा मन्दिर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ वेलूरमे ४४९२५ मनुष्य थे; अर्थात् २१२८५ पुरुष और २३६४० स्त्रियाँ। इनमें ३१२२८ हिन्दू, १२२२० मुसलमान, १४७४ क्रुस्तान और ३ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ८९ वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १२ वाँ नगर है।

वेलूरमें सेटजनका गिरजा है, जिसके चारों तरफके मकानोंमें श्रीरङ्गपट्टम्के टीपू सुलतानके वंशके लोग सन् १८०२ ई० से रहते थे। उसके पास एक तालाव है, जो सन् १८७७ के अकालके समय ६० हजार रुपयेके खर्चसे वना। वेलूरका किला २०० फीट चौड़ी एक गहरी खाईसे घेरा हुआ है; उसमे वहुतसी दिलचस्प इमारतें हैं। उसके भीतर देशी पैदलकी एक रेजीमेण्ट रहती है। किलेसे ¾ मील पश्चिम टीपू सुलतानके वंशवालोंका कवरगाह है। वेलूरके आस पास कई पहाड़ी किले हैं। सिंगलदुर्ग नामक किलेसे लगभग २ मील दूर पुलिसकी लाइन और सेंट्रलजेल है। जेलमे कपडे और कालीन तैयार होते हैं। इनके अलावे वेलूरमें सवकलक्टर इत्यादि हाकिमोंकी कचहरियाँ, अस्पताल, स्कूल चन्दासाहवकी सुन्दर मसजिद और जलंधरेश्वर शिवका वडा मन्दिर है। वेलूरमे सुगन्ध फूलोंके वाग वहुत हैं। नित्य वहाँसे रेल द्वारा फूलोंकी वहुतसी गठरियाँ मदरास शहरको भेजी जाती हैं।

जलंधरेश्वर शिवका मन्दिर—यह भारत वर्षके वडे मन्दिरोंमेंसे एक है। इसका सात मञ्जिला गोपुर लगभग १०० फीट ऊँचा है। दरवाजा वहुत सुन्दर है, जिसके पास नील रङ्गके पत्थरके दो द्वारपाल खड़े हैं। गोपुरसे मन्दिरके घेरेमें प्रवेश करनेपर वायें तरफ पत्थरका कल्याण मण्डपम् मिलता है, जिसमे नफीस कारीगरीका सुन्दर काम वना हुआ है। पेशगाहके भीतरकी छतमें उत्तम नकाशीका काम और खम्भोंमें भिन्न भिन्न तरहकी नकाशी है। मण्डपम्के सामने एक कूप है। घेरेके चारों वगलोंमें दीवारके पास दालान,

जिनमे नक्काशीदार ९१ खम्भे लगे हैं, और घेरेके चारों कोनोंपर चार मण्डपम् हैं। गोपुरके सामने पत्थरकी इमारत है, अब उसमे ऐसा आन्धियारा रहता है कि बिना मसाल या दीपके कुछ नहीं देख पडता। वहाँके लोग कहते है कि सन् १३५० ई० में पेगगाह बना था।

तिरुवन्नामलई—वेलूरसे ५१ मील दक्षिण तिरुवन्नामलईका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें तालुकका सदर स्थान तिरुवन्नामलई एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२१५५ मनुष्य थे। कसबेसे दक्षिण ओर पण्डनी पहाडीपर सुब्रह्मण्य अर्थात् महादेवजीके पुत्र स्कन्दजीका सुन्दर मन्दिर है। वहाँ देवताके भोग रागमे बहुत रुपया खर्च होता है। कार्त्तिककी पूर्णिमाको वहाँ मेला होता है, उस समय वहाँ बहुतसे यात्री जाते है।

वेलूरका इतिहास—उस देशकी कहावतसे जान पड़ता है कि १३ वीं सदीके अन्तके भागमें भद्राचलम्के राजाने वेलूरके किलेको बनवाया। लगभग सन् १५०० में वह किला विजयानगरके राजा नरसिहको मिला। १७ वीं सदीके मध्य भागमे बीजापुरके सुलतानने वेलूरको अपने अधिकारमे कर लिया। सन् १६७६ में महाराष्ट्रोंने साढे चार महीनेके महासरेके बाद वेलूरको ले लिया। सन् १७०८ में मुसलमानोंने महाराष्ट्रोंको निकालकर किलेपर अपना अधिकार जमाया। सन् १७६० के चन्द वर्ष पीछे अङ्गरेजोंने वेलूर पर अपना अधिकार कर लिया। श्रीरंगपट्टमूकी लडाई में टीपू सुलतानके परास्त होने पर उसके वंशके लोग वेलूरमे रक्खे गये। सन् १८०६ में जब वेलूरके सिपाहियोंने बगावत करके वहाँके यूरोपियनोंको मार डाला तब मैसूरके लोग बङ्गालमें भेज दिये गये।

उत्तरी आरकाट जिला—इसके उत्तर कडपा और नेल्लूर जिला, पूर्व चेंगलपट्ट जिला दक्षिण सेलम और दक्षिणी आरकाट जिला और पश्चिम मैसूरका राज्य है। उत्तरी आरकाट जिलेका सदर स्थान वेलूरसे २७ मील उत्तर रेलवे स्टेशनके पास चित्तूर कसबा है। जिलेके उत्तरीय और पश्चिमीय भागमे पहाड़ियाँ हैं। चन्द पहाडियोंमें तांबा और लोहेके ओरे बहुत मिलते है और मकान बनाने लायक पत्थर बहुत हैं। जिलेकी प्रधान नदी पनार है। जङ्गलों और पहाड़ियोंमे कई जातिके पहाड़ी लोग रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी आरकाट जिलेका क्षेत्रफल ७२५६ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८१७८१४ थी, अर्थात् १७१७५९५ हिन्दू, ८२४३८ मुसलमान, १००१८ क्रस्तान, ७७६१ बौद्ध और २ अन्य थे। हिन्दुओमे ५०७९२८ वेल्लाल (खेती करते है); ३१६०२५ परिया, २६७७१० वनिया (जाति विशेष मजदूरी पेशेवाले) १२४४८७ इडैयन (भेड़ चराते हैं), ५६७११ कैक्केलर (कपड़ा बिनते हैं), ४९२९९ ब्राह्मण; ४७०३० कंभाडन, २९३९८ चेटी (सौदागरी करने वाले), २७६०९ वनान (कपडा धोते हैं), २६०४५ सतानी (दोमसला), २५९७६ सेंवड़वन (मछुहा), २४२०८ साना (ताड़ी बनाते है), २३५६३ छत्री; २०१९७ अंबटन (हजाम), १९८९५ कनक्कन (लिखनेका काम करते हैं), १५५७७ कुशवन (मट्टीका बर्तन बनाते हैं), और शेष १३५९३७ में अन्य जातियोंके लोग थे। उत्तरी आरकाट जिलेमें तामिल और तेलुगू अर्थात् तैलङ्गी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी आरकाट जिलेके कसवे वेल्लूरमें ४४९२५ कुडीआतमूमें १८७४७, तिरुपद्दीमे १४२४२, कालहस्तीमें ११७५४, आरकाटमें १०९२८, अंबूरमें १०५८६ और तिरुपदीमे १०४८५ मनुष्य थे। पूंगानूर और चित्तूर इनसे छोटे कसवे हैं। चन्द्रगिरि, रानीपट्ट, आरकोनम् इत्यादि वडी वस्तियां हैं।

उत्तरी आरकाट जिलेके वेल्लूर तालुकमे 'मदराससे वेल्लूर होकर वङ्गलोर जाने वाली सडकके पास मदरास शहरसे ९७ मील दूर पुलिकुण्डा एक वस्ती है। उसके समीप एक ऊंची पहाड़ीके पादमूलके पास पलार नदीके दाहिने आदिरङ्गम् नामक पवित्र स्थानमें प्रति वर्ष मेला होता है। वहाँ सुन्दर मन्दिर बना हुआ है।

उत्तरी आरकाट जिलेका इतिहास—पल्लव वंशके राजाओका प्रधान किला पुरलूरमे था। कांजीवरम् उनके राज्यका सबसे अधिक प्रसिद्ध कसवा हुआ। सातवी सदीमे पल्लव वंशके राजाओका वल वढ़ा हुआ था। आठवीं या नवी सदीमें चोला वंशके राजाओने पल्लव वंशके राजाओंको निर्वल कर दिया। उनकी राजधानी कांजीवरम् अर्थात् काञ्चीपुर हुआ, जिनका राज्य एक समय गोदावरी नदी तक फैला था। तलिङ्गाना और विजया-नगरके राजाके साथ कई वार लडाई होने पर चोला वंशके राजाका वल घट गया। सत्रहवीं सदीके मध्यमें महाराष्ट्र लोग आये। सन् १६९८ में औरंगजेवके जनरल जुलफकारखांने जींजी का किला लेलिया और दाउदखांको आरकाटका; जिस जिलेमें जींजी थी, गवर्नर वनाया। सन् १७१२ में सआदतुल्लाखांने, जो दिल्लीकी फौजका कमाण्डर था, नवावके खिताव पाकर आरकाट कसवेको अपनी राजधानी वनाया। उसके मरनेपर दोस्तअली उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७४० में भोंसलेकी महाराष्ट्री सेनाने जिलेमें उपद्रव मचाया। दोस्तअली मारागया। उसके पश्चात् सन् १७४२ में दोस्तअलीके उत्तराधिकारी सवदरअली-को और सन् १७४४ में सवदरअलीके उत्तराधिकारी सैयदमहम्मदको दुश्मनोंने मारडाला। सन् १७५१ में अङ्गरेजोंने वडी वहादुरीसे लड़कर आरकाटके किलेको मुसलमानोसे छीन लिया। सन् १७५८ मे वह किला फरासीसियोंके अधिकारमें होगया। सन् १७६० मे अङ्गरेजी सरकारने फरासीसियोसे किलेको छीनकर अपने मित्र नवाव महम्मदअलीको दिया। सन् १७८० मे श्रीरङ्गपट्टनमूके हैदरअलीने आरकाट पर अपना अधिकार करलिया और किलेवन्दीको मजवूत किया, किन्तु उसके पुत्र टीपूने सन् १७८३ मे उसको छोड़ दिया और दो वगलोंकी दीवारोंको तोडवा दिया। टीपूके परास्त होनेके पीछे सन् १८०३ में कर्नाटकके नवावके अन्य राज्योंके साथ आरकाट अङ्गरेजोके अधिकारमें होगया।

# आरकाट।

कटपद्दी जंक्शन से १५ मील दक्षिण पश्चिम रेलवे स्टेशन के पास उत्तरी आरकाट जिले में कुडीआतमू एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १८७४७ मनुष्य थे।

कटपद्दी जंक्शनसे १५ मील पूर्वोत्तर और आरकोनम् संक्शनसे २३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास रेलवे पर आरकाटका रेलवे स्टेशन है, जिससे ५ मील दक्षिण पलार नदीके दाहिने किनारेपर (१२ अंश, ५५ कला, २३ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश,

२४ कला, १४ विकला पूर्व देशान्तरमें ) उत्तरी आरकाट जिलेके आरकाट तालुकेका सदर स्थान आरकाट एक कसबा है। वह एक समय करनाटकके नवाबकी राजधानी थी। रानी पेटासिविल स्टेशन और यूरोपियनोंके रहनेकी जगह रेलवेसे ३ मील दूर है। द्राविडियन लोग आरकाटको आरकाड कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय आरकाट कसबेमें १०९२८ मनुष्य थे, अर्थात् ९०७१ हिन्दू, १७५७ मुसलमान, ९२ कृस्तान और २ जैन।

अब आरकाटका महल उजड़ गया है। वहाँके किलेकी निशानीमात्र रह गई है। कसबेके पास पहुँचकर नदीके किनारे किनारे जानेपर ½ मीलके बाद दिल्ली फाटक मिलता है। केवल यही बिना नुकसानीका रहगया है, जिसके देखनेसे ख्यालमें ले आना सम्भव है कि कैसी किलाबन्दी थी। खाँईके बहुत हिस्सोंमें अब धान बोया जाता है। तालुकदारकी कचहरीके पूर्व एक चोडी खाई लाँघना होता है, जो गढको घेरती है। अब उसमें वृक्ष जमगये हैं। वहाँ २ छोटे हौज हैं, जिनके पास एकही घेरेमें नवाब सभादतुल्लाखांका मकबरा और जुमा मसजिद है। मकबरेके दरवाजेके ऊपरके लेखसे जान पडता है कि सन् १७३३ में नवाब मरा। इनके अलावे आरकाटमें मातहत मजिस्टरकी कचहरी, मातहत जेलखाना, गवर्नमेण्ट स्कूल, बहुतसे दरगाह, बहुतेरी कबरें और चोला राजाओंके बनवाये हुए कई मन्दिर हैं। जुमा मसजिदके पश्चिम एक टीलेपर कर्नाटकके नवाबोंका तबाह महल है, जिसके पास एक झील है। आरकाटका इतिहास वेल्लूरके इतिहासमें देखिये।

## आरकोनम् जंक्शन।

आरकाटसे २३ मील पूर्वोत्तर और रेणुगुण्टा जंक्शनसे ४१ मील दक्षिण-पूर्व, उत्तरी आरकाट जिलेके आरकोनम् बस्तीमें रेलवेका जंक्शन है। जहाँसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है। आरकोनम् बस्तीमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३२२० मनुष्य थे।

जिनको मदरास देखनेकी जरूरत नहीं है, वे आरकोनम्से काञ्चीपुर, चेंगलपट्ट जंक्शन, चिदम्बरम्, कुम्भकोणम्, तञ्जोर जंक्शन, तिरुचनापल्ली जंक्शन और मदुरा होकर रामेश्वर, तुतीकुडी इत्यादि नगरोंमे जाते है। आरकोनम्से तिरुचनापल्ली जानेके लिये रेलवेके ३ मार्ग हैं,—आरकोनम्से कांचीपुरी, चेङ्गलपट्ट, विलीपुरम्, मायावरम् और तञ्जोर होकर २५४ मील, कटपद्दी जंक्शन, विलीपुरम् जंक्शन, मायावरम् जंक्शन और तञ्जोर जंक्शन होकर २८७ मील और कटपद्दी जंक्शन, जालारपेट जंक्शन और ईरोड जंक्शन होकर २८९ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन है।

आरकोनम्से ८ मील पश्चिमोत्तर तिरुत्तनीका रेलवे स्टेशन है। तिरुत्तनी बस्तीमें स्कन्दजीका मन्दिर है, जहाँ बहुतसे यात्री आते हैं और प्रति महीनेमे तेहवार होता है।

## तिरुवलूर।

आरकोनम् जंक्शनसे १७ मील ( रेणुगुंटा जंक्शनसे ५८ मील ) पूर्व और मदरास शहरसे २६ मील पश्चिम तिरुवलूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके चेङ्गलपट्ट जिलेमें ( १३ अंश, ८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश, और ७९ अंश, ५७ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें ) तालुकका सदर स्थान तिरुवलूर एक छोटा कसबा है, जिसमें मदरास हातेके सबसे बड़े मन्दिरोंमेंसे एक मन्दिर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुवलूरमें ७६५ मकान और ४९२१ मनुष्य थे, अर्थात् ४४६५ हिन्दू, ४४५ मुसलमान और ११ कृस्तान।

तिरुवलूरमें मुनसफकी कचहरी, पुलिस स्टेशन, पोष्ट आफिस और टेलीग्राफ आफिस है।

वरदराजका मन्दिर—तीन कोट ( अर्थात् घेरे ) के भीतर वरदराजका निज मन्दिर है। पहिले घेरेकी लम्बाई १९० फीट और चौडाई १५५ फीट दूसरेकी लम्बाई ४७० फीट और चौडाई भी ४७० फीट और तीसरे की लंबाई ९४० फीट और चौडाई ७०० फीट है। पहिले घेरेके चारों वगलोमे दालान और मध्यमें वरदराजका, जिनको श्रीवीरराघवास्वामी भी लोग कहते है, मन्दिर है। कई देवढ़ीके भीतर वरदराजकी विशाल मूर्त्ति भुजङ्गपर शयन करती है। उस मन्दिरके वगलमे शिवजीका मन्दिर है। उस मन्दिरमें भी कई देवढ़ीके भीतर शिव हैं। दोनो मन्दिरोके आगे जगमोहन है। घेरेके आगेकी दीवारमे एक गोपुर है। दूसरे कोटके भीतर, जो पीछेका वना हुआ है, वहुतसे छोटे स्थान और दालान और वगलोंपर पहिले घेरेके गोपुरसे ऊँचे दो गोपुर हैं और तीसरे घेरके भीतर जो पीछेका वना है, ६६८ खम्भोंका एक मण्डपम् तथा कई एक मन्दिर तथा स्थान और वगलोंपर ५ गोपुर है, जिनमें आगे और पीछेके २ वहुत वड़े है। मन्दिरके घेरेके फाटकके ऊपरकी इमारतको गोपुर कहते है। द्राविडी मन्दिरोंमे वे वहुत वनते है। उनकी ऊँचाई वडे वड़े मन्दिरोंके समान होती है। वे ११ खन तक वने है। मन्दिरके पास एक तालाव है, जिसमे उत्सवोंके समय भोग मूर्तियोंको लोग जलकेलि कराते हैं।

प्रति अमावास्याको तिरुवलूरके आसपासके यात्री वहाँ देवदर्शनके लिये जाते हैं; उत्सवोंके समय वहाँ यात्रियोंकी वडी भीड होती है।

## भूतपुरी।

तिरुवलूरके रेलवे स्टेशनसे १२ मील दक्षिण श्रीरामानुज स्वामीजीका जन्मस्थान, भूतपुरी एक वस्ती है। भूतपुरीमें अनन्तसरोवर नामक तालाबके पास रामानुज स्वामीजीका वडा मन्दिर वना हुआ है। रामानुजस्वामी दक्षिणमुखसे विराजमान है। वहाँ केशव भगवान्का मन्दिर वना है। इनके अतिरिक्त वहाँ अनेक स्थान और वड़े वड़े स्तम्भ लगे हुए कई मण्डपम् वने हुए हैं।

उत्सवोंके समय वहुतसे यात्री विशेष करके रामानुजीय संप्रदायके आचारी लोग भूतपुरीमें जाते है।

भूतपुरी माहात्म्य, जिसमें लिखा है कि यह स्कन्दपुराणका है, ४ अध्यायकी संस्कृत पुस्तक है। उसमे लिखा है कि सूर्यवंशी राजा मान्धाताके पौत्र और राजा युवनाश्वके पुत्र हरित थे। युवनाश्व हरितको राज्य सौंपकर तप करनेके लिये वनमें चले गये। एक समय राजा हरित शिकारके लिये वनमें गये। उन्होने वहाँ सिंहसे एक गऊको वचानेके अर्थसे सिंहके ऊपर अपना वाण छोडा, किन्तु वह वाण उस गऊको लग गया, जिससे वह तत्कालही मर गई। राजाने अपने घर आकर वशिष्ठजीसे पूछा कि इस पापसे किस भांति मेरा छुटकारा होगा। महर्षिने कहा कि हे राजन्! तुम भूतपुरीमे जाकर अनन्तसरोवरमे स्नान करके तप करोगे, तव इस पापसे छूट जाओगे। वेङ्कटगिरिसे ३ योजन दक्षिण ७ योजन लम्वा और इतनाही

चौडा सत्यव्रत नामक तीर्थ है, जिसके भीतर अनेक तीर्थस्थान और कांची नगरी है। कांचीसे २ योजन पूर्वोत्तर विदेह वन है। उसके कुछ पश्चिम अरुणारण्य और अरुणारण्यके दक्षिण भूतपुरी नगरी है जिसमे निर्मल जलसे पूर्ण अनन्तसर नामक तालाव सुशोभित है। भूतपुरीकी उत्पत्तिकी कथा मै तुमसे कहता हूँ—सृष्टिके आरम्भमें, जब रुद्र भगवान् अपने सर्वांगमें भस्म लगाये हुए और जटा फटकारे हुए नृत्य करने लगे, तब उनके साथके भूतगण परस्पर हँसने लगे। रुद्र भगवान्ने उनकी ऐसी ढिठाई देखकर उनको शाप दिया कि तुम लोग अब हमसे अलग रहोगे। भूतगणोंने ब्रह्माके पास जाकर उनसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब ब्रह्माने कहा कि भारतवर्षमे वेंकटगिरिसे दक्षिण सत्यव्रत तीर्थ है। तुम लोग वहाँ जाकर केशव भगवान्की आराधना करो। जब भूतगणोंने उस तीर्थमें जाकर सहस्र वर्ष तक केशव भगवान्का ध्यान किया तब विमानपर चढे हुए भगवान्ने उनको दर्शन दिया। उनके साथमें अनन्त अर्थात् शेष आदि बहुत देवता थे। भूतगणोंने उनसे विनय किया कि हे भगवन्! आप ऐसा उद्योग करें कि जिससे हम लोग फिर रुद्र भगवान्के गण बने। तब विष्णु भगवान्ने महादेवका ध्यान किया। महादेवजी वहाँ प्रकट हुए। विष्णुने उनसे कहा कि हे शंकर! इस तीर्थमे निवास करनेसे भूतगणोंका पाप छूट गया, अब तुम दया करके इनको अपना गण बना लो। महादेवजीने विष्णुका वचन स्वीकार किया। उसके पश्चात् विष्णुकी आज्ञासे अनन्तने उस स्थानमें एक सरोवर बनाया। भूतगणोंने उस सरोवरमें स्नान करके शिवकी प्रदक्षिणा की। शिवने उनको अपना गण बना लिया। उसके पश्चात् महादेवजीने विष्णुसे कहा कि तुम वर्तमान कालके स्वारोचिष मन्वन्तर तक इस स्थानमें निवास करो। उस समय भूतगणोंने केशव अर्थात् विष्णुके उत्सव करनेके लिये उस स्थानमें २ योजन लम्बी और इतनीही चौडी एक पुरी बनाई, जिसमें देवताओं राजाओ और अन्य मनुष्योंके रहने योग्य बडे बड़े गृह और प्राकार थे। वैशाख सुदी द्वादशीके हस्त नक्षत्रमें रुद्रके सहित भूतगणोंने वहाँ विष्णुका बडा उत्सव किया। भूतगणोंने देवताओंके चले जानेपर उस नगरीमे ब्राह्मण आदि चारो वर्णोंको बसाया। विष्णुने कहा कि जो मनुष्य इस तिथिमे यहाँके अनन्तसरमें स्नान करके मेरा पूजन करेगा उसको हम सम्पूर्ण वांछित फल देंगे। महादेवजी भूतगणोंके सहित वहाँसे अपने स्थानको चले गये। भूतोंने उस पुरीका निर्माण किया इसी कारणसे उसका भूतपुरी नाम पडा। राजा हरित महर्षि वशिष्ठके मुखसे इस कथाको सुन अपने राज्यका भार उनको सौंपकर भूतपुरीमे गये। उन्होंने वहाँ पुराने नगरके विविध मकान, मन्दिर, तालाब और प्राकारोंका खण्डहर देखा और अनन्तसरोवरमें स्नान करके तप आरम्भ किया। एक सौ वर्ष तपस्या करनेके उपरान्त वहाँ विष्णु प्रकट हुए। उन्होंने कहा कि हे राजन्! हमारे दर्शन करनेसे तुम्हारा गोवधका पाप छूट गया। तुम इसी शरीरसे अब ब्राह्मण हो-जाओगे। तुम्हारेही वंशमें हमारे अंश शेषजी ( अर्थात् रामानुजस्वामी ) अवतार लेंगे। तुम्हारे वंशवालोंको मनोवांछित देनेके लिये वैवस्वत मन्वंतरके अन्त तक हम यहाँ निवास करेंगे। भूतगणोंने स्वारोचिष मन्वंतरमें इस पुरीको बनाया था। उस मन्वंतरके अन्तमें यह पुरी उजड गई। तुम इस नगरीको पूर्ववत् बना दो और अनन्तसरके पूर्व किनारेपर हमारा स्थान बनाओ। आज चैत्र मासके शुक्लपक्षकी सप्तमी है; आजही उत्सव आरम्भ करके पूर्णिमाके दिन तुम हमारी स्थापना करदो और तुम अपने पुत्र और पौत्रके सहित इसी पुरीमे निवास

करो। राजा हरितने विष्णुकी आज्ञानुसार भूतपुरीको पूर्ववत् बना दिया और उत्तम मन्दिर बनाकर उसमे विमानके साथ विष्णुका स्थापन कर दिया। उस दिनसे प्रति वर्ष वहाँ उत्सव होने लगा। कुछ कालके पश्चात् राजा हरित कालधर्मको प्राप्त हुए। उनके वंशके ब्राह्मण अबतक भूतपुरीमें केशव भगवान्की पूजा करते हैं। वैशाख सुदी द्वादशी और चतुर्थीके मृगशिरा नक्षत्रमे तथा चैत्र सुदी सप्तमी और पूर्णिमाको अनन्तसरोवरमें स्नान करनेसे अनेक फल लाभ होते है।

श्रीरामानुजस्वामीकी संप्रदायकी (११७ अध्यायकी) प्रपन्नामृत नामक पुस्तक है; उसमें लिखा है कि दक्षिण देशके पूर्वके समुद्रके तटसे १२ कोस दूर तुण्डीर देशमें भूतपुरी नामक सुन्दर नगरी है। उसमे हारित गोत्र * के केशव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी स्त्रीका नाम कान्तिमती था। चैत्र सुदी ५ को, जब मेष राशिपर सूर्य थे, गुरुवारको आर्द्रा नक्षत्रमें मध्याह्नके समय कान्तिमतीके गर्भसे शेषजीके अंश श्रीरामानुजजीका जन्म हुआ। पिताने आठवे वर्षमे उनको विद्यारम्भ कराया और १६ वर्षकी अवस्थामें रक्षकांबा नामक कन्यासे उनका विवाह करदिया। कुछ कालके पीछे केशवजीका देहान्त होगया। तब रामानुज स्वामीजी अपनी माता और पत्नी के साथ भूतपुरीको छोड़कर कांचीपुरीमें चले गये और वहाँ यादव प्रकाश नामक प्रसिद्ध पण्डितसे विद्या पढ़ने लगे। उसी समय कांचीपुरके राजाकी कन्याको ब्रह्मपिशाचकी बाधा हुई। तब राजाने पिशाचको दूर करनेके लिये यादव पण्डितको बुलाया। यादवजी, रामानुज आदिक अपने शिष्योंके सहित वहाँ गये। उनके अनेक यत्न करनेपर पिशाच नहीं हटा, तब रामानुजस्वामीने कन्याको अपना चरण छुला कर उसकी पिशाचबाधा दूर करदी। राजाने प्रसन्न होकर रामानुजस्वामीको बहुत द्रव्य दिया और उनका बड़ा सत्कार किया। यह देख कर यादव पण्डितने अपना अपमान समझा। स्वामीका मौसेरा भाई गोविन्दार्य कांचीपुरमें आकर स्वामीके सहित विद्या पढ़ने लगा। रङ्गपुर अर्थात् श्रीरङ्गम्में यामुनाचार्य नामक एक त्रिदण्डी संन्यासी थे। उन्होने अपने शिष्योंके मुखसे रामानुजजीकी प्रशंसा सुनकर उनको शिष्य करनेकी इच्छा की और कांचीमें आकर उनको देख उनकी बडी प्रशंसा की। एक दिन स्वामीजी अपने गुरु यादव पण्डितकी सेवा कर रहे थे; उस समय यादवने श्रुतिके एक शब्दका कुछ अशुद्ध अर्थ किया; तब स्वामीने उनका छोड़ा। उस समय यादव उनसे शास्त्रार्थ करने लगे, किन्तु परास्त होगये। तब उन्होंने क्रोध करके रामानुजजीको निकाल दिया। तब वे कांचीपुरके हस्तगिरिपर चले गये। रङ्गपुरके यामुनाचार्यने अपने शिष्य पूर्णाचार्यको स्वामीको बुलानेके लिये वहाँ भेजा। रामानुजजी यामुनाचार्यसे मिलनेके लिये रङ्गपुर चले। यामुनाचार्य स्वामीका आगमन सुनकर आगेसे उनको लेने चले; किन्तु कावेरी नदीके किनारेके निकट पहुँचने पर उनका देहान्त होगया। स्वामीजीने शीघ्रतासे उनके पास पहुँच कर देखा कि आचार्य शरीर छोडकर अपनी ३ अंगुली उठाये हुए हैं। उसका आशय यह था कि (१) बोधायन मतानुसार ब्रह्मसूत्रादिका भाष्य बनाओ, (२) दिल्लीके बादशाहसे श्रीरामकी

---

* भूतपुरी माहात्म्यमे लिखा है कि विष्णुने सूर्यवंशी राजा युवनाश्वके पुत्र राजा हरितको वर दिया कि तुम इसी शरीरसे ब्राह्मण हो जाओगे। तुम्हारेही वंशमें हमारे अंश शेषजी (रामानुज स्वामी) जन्म लेंगे।

मूर्त्तिका उद्धार करो और ( ३ ) दिग्विजय करके विशिष्टाद्वैत मतका प्रचार करो । स्वामीने प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूंगा। उसके अनन्तर स्वामीजी कांचीपुरीमें आये । कुछ समयके पश्चात् उन्होने कांचीपूर्णके उपदेशानुसार रङ्गपुरमें जाकर पूर्णाचार्यसे वैष्णवोंके पंच संस्कार ( ऊर्द्धपुण्ड्र, मुद्रा, माला, मंत्र और विचार ) से दीक्षित होकर विद्या पढी । कुछ कालके पीछे कूपसे जल भरनेके समय पूर्णाचार्यकी स्त्री और रामानुजस्वामीकी पत्नीसे कुछ कलह होगई । रक्षकांबाके झगडालू स्वभावसे पहिलेहीसे स्वामीका मन उसकी ओरसे खिच गया था । उस समय उन्होंने उससे उदास होकर उसको नैहर भेज दिया और अपने धन, गृह आदि संपत्तिको छोडकर त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण किया । कांचीपूर्णने प्रसन्न होकर उनको 'यतिराज' की पदवी दी । एक समय यादव पण्डितने स्वामीका कलेवर शंख चक्रसे चिह्नित देख कर बडा आक्षेप किया । उस समय श्रीरामानुजजीके विद्यार्थी कुरेशने शास्त्रार्थमें अपने मतको स्थापन करके यादवको परास्त किया । तब यादव पण्डितने ज्ञान पाकर गृहस्थाश्रम परित्याग कर रामानुज मतको ग्रहण किया। उस समयसे उनका नाम गोविन्ददास पडा जिन्होंने 'यतिधर्म समुच्चय' नामक ग्रन्थ बनाया। कुछ समयके पीछे यामुनाचार्यके पुत्र वररङ्गस्वामीने रामानुजस्वामीको लाकर रङ्गनाथजीको समर्पण करदिया । स्वामीने अपने संप्रदायके मालाधार नामक पण्डितसे शठकोपाचार्यकृत सहस्रगीतिकाका व्याख्यान सुना । उसके पश्चात् रामानुजस्वामी देशाटनको निकले और वेंकटगिरि होते हुए उत्तरको चले। वह दिल्ली, वदरिकाश्रम इत्यादि स्थानोमें होकर अष्टसहस्र नामक गाँवमें आये । उन्होने वहाँ वरदाचार्य और यज्ञेश नामक अपने दो शिष्योंको मठाधिपति नियुक्त किया और हस्तिगिरिमे पूर्णाचार्यादिसे मिलनेके पश्चात् कापिल तीर्थमें जाकर उस देशके राजा विट्ठलदेवको अपना शिष्य बनाया । राजाने तोण्डीरमण्डल आदि अनेक गाँव उनको दिये वहाँसे वह रङ्गनगर लौट आये । रामानुजस्वामीने वेदान्त सूत्रपर श्रीभाष्य, वेदान्तदीप, वेदान्तसार और वेदान्तसंग्रह और गीताभाष्यादि बहुतसे ग्रन्थ बनाये । उसके पीछे उन्होंने बहुतसे शिष्योंके साथ चोलमण्डल, पाण्ड्यमण्डल, कुरुङ्ग इत्यादि देशोंमें जाकर वैष्णव धर्मका प्रचार किया और कुरुङ्ग देशके राजाको दीक्षित करके केरल देश अर्थात् मलेवारके पण्डितोको जीता । वहाँसे वह क्रमसे द्वारिका, मथुरा, काशी, अयोध्या, वदरिकाश्रम, नैमिषारण्य, वृन्दावन आदि तीर्थोंमे होकर फिर द्वारका आये और वहाँसे पुरुषोत्तम क्षेत्रमें पहुँचकर वौद्धोंको परास्त करके वहाँ रामानुजमठमें रहने लगे पीछे वह वहाँसे वेङ्कटगिरि आये । चोलदेशके क्रिमिकण्ठ नामक राजाने, जो शैव था, शास्त्रार्थके लिये स्वामीको बुलाया। वह कुछ दिनों तक मार्गके भक्तनगरमे रह गये । उन्होंने स्वप्नसे जानकर शाका १०१२ ( सन् १०९० ईस्वी ) में पौष शुक्ला चौदसको पुनर्वसु नक्षत्रमें यादवाचलकी छिपी हुई भगवन्मूर्त्तिको निकाला और उसकी वहाँ प्रतिष्ठा करदी । अन्त समयमें रामानुजस्वामीने अपने शिष्योसे कहा कि अब चार दिनमें मैं परम धामको जाऊँगा। ऐसा सुन शिष्यगण व्याकुल हो पृथ्वीमें गिर गये और अपने शरीरके त्याग करनेका विचार करने लगे । तब स्वामीजीने उनको शपथ धराया कि तुम लोग हमारे वचनका निरादर करके हमारे वियोगसे शरीर परित्याग करोगे तो तुमको पाप लगेगा । तब शिष्योंने कहा कि हम लोग जिस प्रकारसे तुम्हारे वियोगसे शरीर धारण करें, उसका

उद्योग आप करदे। ऐसा सुन स्वामीजीने अपने विग्रहका निर्माण किया और भूतपुरीमे केशव भगवान्के निकट उसकी स्थापना करवा दी। रामानुजस्वामीके अनेक विग्रह देश देशान्तरमे स्थापित हुए। जिनमें भूतपुरी, यादवगिरि और रङ्गस्थल ये तीन स्थानकी प्रतिमा मुख्य हैं, इनमे भूतपुरीका विग्रह सर्वप्रधान है। चैत्रमासके आर्द्रा नक्षत्रमें उसके अभिषेक करानेसे मनुष्यको विष्णुलोक मिलता है। उसके पश्चात् माघ सुदी दशमी शनिवारको मध्याह्नके समयमें श्रीरामानुज स्वामीजीने १२० वर्षकी अवस्थामे रङ्गपुरीमें अपना शरीर छोड़कर विष्णुलोकको प्रस्थान किया।

दानपत्रादिकोंसे और दक्षिणके राजाओके घरके लेखोंसे निश्चय होता है कि सन् ईस्वीके ११ वें शतकके प्रथम चरणके किसी सन्में रामानुजस्वामीका जन्म हुआ था और १२ वीं सदीमें वह थे। रामानुजस्वामीके शिष्य अनन्ताचार्यकी बनाई हुई श्रीवेङ्कटाचल इतिहासमाला नामक संस्कृतकी पुस्तक है। उसके प्रथम स्तवकमें लिखा है कि रामानुजस्वामीने शाका ९३९ ( सन् १०१७ ई० ) में तुण्डीर मण्डलकी भूतपुरीमें जन्म लिया। पीछे वह रङ्गनगरमे निवास करने लगे। प्रपन्नामृतमें लिखा है कि १२० वर्षकी अवस्थामें उनका देहान्त हुआ, इस लेखसे सन् ११३७ ई० में उनका देहान्त होना सिद्ध होता है।

रामानुजस्वामीने विष्णुके एक ईश्वर होनेका उपदेश दिया और वैष्णव मतके बहुतसे ग्रन्थ बनाये। उनके पश्चात् दाशरथी, पूर्णाचार्य, गोविन्दाचार्य, और कुरुक ये ४ शाखाप्रवर्त्तक हुए।

रामानुजीय संप्रदायके प्रथम आचार्य शठकोपाचार्य थे, जिनका जन्म पाण्ड्य देशमें ताम्रपर्णी नदीके किनारेके कुरगा नगरीमें हुआ था। उनके पिताका नाम कारी और माताका नाम नाथनायकी था। इस संप्रदायमें रामानुजस्वामीसे पहिले नाथार्य, पंकजाक्ष, राममिश्र, यामुनाचार्य, गोष्ठिपूर्ण, महापूर्ण ( अर्थात् पूर्णाचार्य ), मालाधारगुरु, श्रीशैलपूर्ण, वररङ्ग और कांचीपूर्ण ये १० आचार्य हुए; जिनको पूर्वाचार्य कहते हैं। उनके अतिरिक्त इस संप्रदायमें कासार, भूत, महन्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह और चतुष्कवीन्द्र ये १० सूरि हुए। इनमें भट्टनाथकी कन्या गोदादेवी और रामानुजस्वामीको मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहे जाते हैं। कोई कोई गोदादेवीको छोडकर मधुर कविको मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहते हैं। ऊर्द्धलिखित १० पूर्वाचार्य और १२ सूरियोंने अपने अपने नामके ग्रन्थ बनाये और जगत्में अपने धर्मका विस्तार किया।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि भक्तमालको नाभाजीने बनाया था। उसके ३६ वें ३७ वें और ३८ वें छप्पैमें लिखा है कि श्रीरामानुजजीकी पद्धतिका प्रताप पृथ्वीपर अमृतके समान फैला। रामानुजस्वामीके पीछे उनकी गद्दीपर देवाचार्य, देवाचार्यके पश्चात् हरियानन्द, हरियानन्दके बाद राघवानन्द और राघवानन्दके पीछे रामानन्द हुए। रामानन्दजीने संसारसागरके तरनेके लिये पुल बाँध दिया। उनके अनन्तानंद, कबीरजी, सुखानन्द, सुरेश्वरानन्द, पद्मावत, नरहरी, पीपा (राजा), भावानन्द, रैदास ( चमार ), धना (जाट), सेन ( हजाम ), और एक दूसरा ( ये १२ ) प्रसिद्ध शिष्य थे। अनन्तानंदके चरणका स्पर्श करके योगानन्द, गयेश, कर्मचन्द, अल्ह, पयहारी, रामदास, श्रीरङ्ग इत्यादि लोग लोकपालके समान होगये। उनके गुणकी महिमाकी भारी अवधि हुई इत्यादि।

रामानन्दजीने चौदहवीं सदीमें श्रीसंप्रदायका अपना दूसरा पन्थ चलाया, जिस मतके लोग रामानन्दी वैष्णव कहलाते हैं और सब जातिके (वैरागी) लोग एकही पंक्तिमें भोजन करते हैं। उनके मतमें हिन्दू जातिके सब लोग ईश्वरके भजन करनेको एक समान अधिकारी हैं। रामानन्दजीके शिष्योंमें कबीरजीसे कबीरपन्थी मत नियत हुआ, जिसमें कबीरजीके पश्चात् सुरतगोपाली, तरुसरी, नूलपन्थी, योगीपन्थी, जीवपन्थी, नामकबीर; ज्ञानीपन्थी, दूवनपंथी, समपथी, वंशघराना, नारायणपंथी, कमालपंथी इत्यादि १३ पन्थ हुए। कमालपंथीको आधापन्थ कहनेसे १२॥ पन्थ होते हैं।

रामानंदजीके पश्चात् अनंतानन्द, कृष्णदास, किल्हदास, अग्रदास, नारायणदास (अर्थात् भक्तमालके बनाने वाले नाभाजी) और गोविंददास आदि जयपुर राज्यके रामगढ़ और गलिता गद्दीमें हुए थे। भक्तमालके ४२ वें, छप्पेमें लिखा है कि अग्रदासका ऐसा मत है कि सर्वदा हरिभजन करना उचित है। उसके तिलकमें, जिसको संवत् १७६९ में प्रियादासने बनाया था; लिखा है कि महाराज मानसिंह अग्रदासके दर्शनके लिये उनकी कुटी (अर्थात् गलिता गद्दी) में आये। अग्रदास, जो पत्तोंको फेंकनेके लिये बाहर गये थे, भीड़ देखकर आम्र वृक्षके नीचे बैठगये। नाभाजीने अग्रदासको आये हुए देखकर उनको साष्टांग प्रणाम किया। इस लेखसे जान पड़ता है कि अग्रदासजी और नाभाजी सोलहवीं सदीके अन्तमें थे, क्योंकि ऑबेरके राजा मानसिंह मुगल बादशाह अकबरके सूबेदार थे, जिन्होंने सन् १५९० ईस्वीमें मथुरा जिलेके वृंदावनमें गोविंददेवजीका मन्दिर बनवाया।

रामानुज संप्रदायके लोग आचारी कहे जाते हैं। इनका मत विशिष्टाद्वैत अर्थात् मायाविशिष्ट ब्रह्म और उपास्य देव साकार ब्रह्म नारायण हैं। ये लोग अपनी भुजाओंपर तप्त शंख चक्रकी छाप लेते हैं और ललाटपर चौड़े ऊर्ध्वपुण्ड्र चढ़ाते है, जिसके मध्यमें पीत वर्णकी श्री और उसके दोनो तरफ शुक्लवर्णकी मोटी लकीरें रहती हैं। आचारी लोग द्राविड़ देशकी रीत्यनुसार पर्देके भीतर भोजन करते हैं। इस मतकी दो शाखा अर्थात् वड़गल और तिंगल बहुत प्रसिद्ध है, पीछे रामानन्द इत्यादि इसकी अनेक शाखा हुई। इस मतके लोग भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें देख पडते हैं, किन्तु मद्रास हातेके तैलङ्ग, कर्नाटक, मलेवार आदि अङ्गरेजी राज्योंमे तथा मैसूर और तिरुवांकूर आदि देशी राज्योंमें ये लोग बहुत हैं। उन देशोंमें स्थान स्थानपर मन्दिर और मकानोंके बाहर रामानुज संप्रदायके तिलक लिखे हुए अथवा खोदे हुए देख पडते हैं। उनके दोनों ओर शंख चक्रका चिह्न भी रहता है। द्रविड़में आचारी लोगोंकी ८ गद्दी हैं:—उनमेसे तोताद्री, मैलकोटा और बालाजी अर्थात् वेंकटाचल, ये ३ गद्दी विरक्त आचारीकी और विष्णुकांची, श्रीरंगम् इत्यादिकी ५ गद्दी गृहस्थ आचारीकी है। सम्पूर्ण गद्दियोंमें तोताद्रीकी गद्दी मुख्य है जिसको लोग मूलगद्दी कहते हैं।

द्रविड़ देशमें शैव और आचारी वैष्णवोंका परस्पर द्वेष चला आता है। शैव लोग विष्णुका नहीं; किन्तु आचारीके मत और उनके तिलक तथा छापकी निन्दा करते हैं, परन्तु आचारी लोग शिव और शैव दोनोंसे द्वेष रखते हैं। उनमेंसे बहुतेरे लोग बदरिकाश्रममें जाकर केदारनाथको छोड़ देते हैं, रामेश्वरपुरीमें जाकर रामेश्वर शिवका दर्शन नहीं करते, समुद्रमे स्नान और रामझरोखेमें रामका दर्शन करके चले आते हैं तथा काशीजीमें जाकर

मणिकर्णिकामें स्नान करके विना विश्वनाथके दर्शन किये हुए अपने घर लौट जाते हैं। इस सम्प्रदायसे बहुत लोग संस्कृतके पढ़नेवाले है। शैव लोग आचारी लोगोंके तिलक छापको अप्रमाणिक कहते है, किन्तु, पद्मपुराणमें इसके प्रमाण देख पडते है, जो नीचे लिखी हुई प्राचीन कथासे ज्ञात होगे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—( भूमिखण्ड, ७६ वॉ अध्याय ) राजा ययातिकी आज्ञासे सम्पूर्ण भूमण्डलके सब मनुष्य भागवत होकर विष्णुके ध्यानमें परायण हुए। सबके मन्दिर पताकाओ और शंख, चक्र तथा गदाओंसे युक्त हुए। ब्राह्मण आदिक सम्पूर्ण वर्णके लोग शंख चक्र तथा बाणादिकोंसे अंकित होगये, तथा पद्मादिकोसे भी चिहित होकर प्रकाशित होने लगे। सबके गृहोके द्वारोपर शंख पद्म इत्यादिके चिह्न विद्यमान हुए। नारियोंने अपने अपने गृहके द्वारोपर शंखादिकोके चित्र बना दिये। ( स्वर्गखण्ड ७० वॉ अध्याय ) शालग्राम और चक्रांकित ब्राह्मणके समीप श्राद्ध करनेका उत्तम स्थान है।

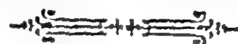
( पातालखण्ड, ७९ वा अध्याय ) चांडाल भी ऊर्ध्वरेखासे युक्त ऊर्ध्वपुंड्र अपने ललाटपर देनेसे निःसन्देह शुद्धात्मा होजाता है, और पूजा करनेके योग्य होता है।

( उत्तरखण्ड, ७५ वॉ अध्याय ) गंडकी नदीके पास, जहाँ शालग्राम शिला उत्पन्न होतीहै, नारायण नित्य स्थित रहते है। जो मनुष्य शंख और चक्रका चिह्न धारण करके उनके समीप निवास करता है, वह मरनेपर चतुर्भुज होकर विष्णुलोकमे चला जाता है। प्रति वर्षके आषाढ़ मासमे शिवजी वहाँ जाकर निवास करते है। श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको उचित है कि आषाढ मासमे वहॉ जाकर शख चक्रादिकोंके चिह्नोको धारण करें। उनको बाये हाथमें शंख और दहिने हाथमें चक्रका चिह्न धारण करना चाहिये, इससे उनकी मुक्ति होती है।

( २२४ वॉ अध्याय ) शिवजीने पार्वतीजीसे कहा कि विष्णुजीकी १६ प्रकारकी भक्ति है;—(१) शंख चक्रका चिह्न धारण करना, (२) ऊर्ध्वपुण्ड्रोंका धारण, ( ३ ) उनके मन्त्रोंका परिग्रह, ( ४ ) अर्चन, ( ५ ) जप, (६) ध्यान, (७) नामका स्मरण; ( ८ ) कीर्त्तन, ( ९ ) श्रवण, (१०) वन्दन, ( ११ ) चरणसेवन, ( १२ ) विष्णुके चरणके जलकी सेवा, ( १३ ) उनका प्रसाद भोजन, ( १४ ) उनके भक्तोंकी सेवा, ( १५ ) द्वादशी व्रत करना और ( १६ वॉ ) तुलसी वृक्षका लगाना। ब्राह्मणोको उचित है कि अपनी भुजाओ पर अग्निसे तपा कर शख और चक्रका चिह्न धारण करें। वे लोग चक्र वा शंख चक्र अथवा शंखादिक पांचों आयुध धारण करके ब्राह्मणके कर्मका विधिपूर्वक आरम्भ करे। ऐसा करनेसे उनको विष्णुका परमपद मिलता है तथा मोक्ष प्राप्त होता है। चक्रसे चिह्नित भुजावाले ब्राह्मणोंको गऊ पृथ्वी और सोना आदिक वस्तु दान देना उचित है। ब्राह्मणोंको तपे हुए शंख चक्र और स्त्रियो तथा शूद्रोको सुगंधित चन्दनमे शंख चक्र अपनी भुजाओंपर धारण करना चाहिये। वर्णसे बाह्य भी वैष्णव त्रिभुवनको पवित्र करता है। ब्राह्मण बाई भुजामें शंख और दाहिनीमें चक्र धारण करें। इस भॉति महोपनिषद तथा साम और यजुर्वेदमें चक्र आदि धारणका विधान कहा है। जिनके कण्ठमें तुलसी और रुद्राक्षकी माला, भुजाओपर शंख चक्रका चिह्न और ललाटपर ऊर्ध्वपुण्ड्र रहता है वे लोकको पवित्र करते है। वैष्णवोंको उचित है कि अपने स्त्री, पुत्र, नौकर, पशु आदिकोको भी शंख चक्रादिकोंके चिह्नोंसे चिह्नित करावें।

( २२५ वाँ अध्याय ) ऊर्ध्वपुण्ड्रके मध्यमें लक्ष्मीजीके सहित जनार्दन भगवान् बैठे रहते है, इस कारणसे जिसके शरीरमें ऊर्ध्वपुण्ड्र रहता है, उसका शरीर भगवान्का निर्मल मन्दिर है। ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करनेवालेको देखकर मनुष्य सब पापोंसे छूट जाते हैं। ब्राह्मणोंका तिलक ऊर्ध्वपुण्ड्र, क्षत्रियोंका पट्टाकार और वैश्यों तथा शूद्रोंका त्रिपुण्ड्र है क्षत्रिय आदिक वैष्णव भी ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण कर सकते हैं, किन्तु ब्राह्मणोंको त्रिपुण्ड्र धारण करना नहीं चाहिये।

# ग्यारहवां अध्याय।



## ( मदरास हातेमें ) मदरास और महाबलीपुरके गुफामन्दिर।

## मदरास।

तिरुवल्लूरसे २६ मील ( आरकोनम् जंक्शनसे ४३ मील ) पूर्व और बम्बईसे रेलवे द्वारा ७९४ मील दक्षिण पूर्व मदरास शहरका रेलवे स्टेशन है। समुद्रके मार्गसे मदरास शहरसे ७३० मील पूर्वोत्तर कलकत्ता है। रेलवेके रास्तेसे मदरास शहरसे गुंटकल जंक्शन, रायचुर जंक्शन, मनमार जंक्शन, भुसावल जंक्शन, नागपुर जंक्शन, आसनसोल जंक्शन और हवड़ा होकर २१९२ मील कलकत्ता शहर है, किन्तु गुंटकल जंक्शन, बेजवाड़ा जंक्शन, कटक, खड्गपुर जंक्शन, उलवड़िया और हवड़ा होकर केवल १३११ मील दूर है *।

मदरास शहरसे रेलवे लाइन २ तरफ गई है।

( १ ) मदरास शहरसे दक्षिण-कुछ पश्चिम "सौथ इण्डियन रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील२पाई लगता है;—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

५ सैदापेट।
३४ चेंगलपट्ट जंक्शन।
७५ टिण्डीवरम्।
९८ विलीपुरम् जंक्शन।
११० पनरूटी।
१२५ कडलूर नया।
१२७ कडलूर पुराना।
१४४ पोर्टोनोवे।
१५१ चिदम्बरम्।
१६१ सियाली।
१७४ मायावरम् जंक्शन।

चेङ्गलपट्ट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २२ मील कांचीपुर और ४० मील आरकोनम् जंक्शन।

विलीपुरम् जंक्शनसे रेलवेके स्टेशनोंका फासिला विलीपुरम्के वृत्तान्तमें देखिये।

( २ ) मदरास शहरसे पश्चिमोत्तर "मदरास रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील $1\frac{1}{2}$ पाई लगता है;—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

२६ तिरुवल्लूर।

---

* हालमें एक नई लाइन निकल जानेसे अब मदरास शहरसे कलकत्ता केवल १०२३ मील पडता है,–मदराससे पूर्वोत्तर नेल्लूर और अगोल होकर २६७ मील बेजवाडा जंक्शन, ७७० मील कटक और १०२३ मील कलकत्तेके पास हवडाका रेलवे स्टेशन है।

४३ आरकोनम् जंक्शन।
५१ तिरुतानी।
८४ रेणुगुन्टा जंक्शन।
१६२ कडपा।
२२८ ताड़पत्री।
२५८ गूटी
२७६ गुण्टकल जंक्शन।
३०८ अर्दोनी।
३३४ तुङ्गभद्रा।
३५१ रायचुर।

आरकोनम् जंक्शनसे पूर्व दक्षिण १८ मील कांचीपुर और ४० मील चेङ्गलपट्ट जंक्शन।

रेणुगुण्टा जंक्शन और गुण्टकल जंक्शनसे रेलवेके स्टेशनोका फासिला उनके वृत्तान्तमे देखिये।

(२) *

मदरास शहरसे उत्तर ओर एक नहर गोदावरी जिलेको और दक्षिण ओर दूसरी नहर दक्षिणी आरकाट जिलेको गई है। मदरास शहरसे पूर्वोत्तर एक सड़क अङ्गोल, बेजवाड़ा, राजमहेन्द्री, विजयानगरम्, ब्रह्मपुर, गञ्जाम, कटक, भद्रक, बलेश्वर, मेदनीपुर, होकर कलकत्तेको, दूसरी सडक दक्षिण-पश्चिम विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियार्ची होकर कन्याकुमारीको और तीसरी सड़क पश्चिम ओर कटपड़ी जंक्शन और जालारपेट जंक्शनके पाससे होकर बङ्गलोर शहरको गई है।

पूर्वीघाट अर्थात् कारोमण्डलके किनारेपर (१३ अंश, ४ कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १७ कला, २२ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेकी राजधानी और उस हातेमें प्रधान शहर मदरास है, जिसको द्रविडियन लोग चेनापट्टनम् कहते हैं। वह शहर अपनी शहरतलियो अर्थात् उपपुरोंके सहित समुद्रके किनारेपर एक म्युनिसिपल्टीके भीतर ९ मील लम्बा और लगभग ३½ मील चौड़ा २७ वर्गमीलके क्षेत्रफलमे फैला हुआ है, जिसके भीतर खास शहरके अलावे १४ गाँवभी हैं। क्षेत्रफलके भीतर किले, देशी कसबे और शहरतलियोके आसपास जोती हुई भूमिभी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय किलेके साथ मदरास शहरमें ४५२५१८ मनुष्य थे, अर्थात् २२५८१७ पुरुष और २२६७०१ स्त्रियाँ। इनमें ३५८९९८ हिन्दू, ५३१८४ मुसलमान, ३९७४२ कृस्तान, २८१ जैन, १२९ बौद्ध, ४५ पारसी, ४ यहूदी और १३५ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें तीसरा और मदरास हातेमें पहिला शहर है।

मदरास शहरके समयके मुताबिक भारतवर्षकी सम्पूर्ण रेलवेकी घड़ियाँ रहती हैं। जब मदरास शहरकी लोकल घडीमें ६ बजता है, उस समय कलकत्तेमें ६ बजके ३३ मिनट, इलाहाबादमें ६ बजके ७ मिनट, आगरामें ५ बजके ५० मिनट, दिल्लीमें ५ बजके ४७ मिनट, और बम्बईमें ५ बजके ३० मिनट; रहता है, अर्थात् मदरास शहरके सूर्योदयसे ३३ मिनट पहिले कलकत्तामें, ७ मिनट पहिले इलाहाबादमें, १० मिनट पीछे आगरामें, १३ मिनट पीछे दिल्लीमें और ३० मिनट पीछे बम्बईमें सूर्योदय होता है।

---

* मदरास रेलवेकी एक लाइन मदरास शहरसे उत्तर बेजवाडा जंक्शनसे जा मिली है,–उसपर मदरास से ८५ मील गूडूर, १०९ मील नेल्लूर, १८१ मील अंगोल और २६७ मील बेजवाडा जंक्शन है।

यद्यपि मद्रास शहर देखनेमें बहुत सुन्दर नहीं है और उसमें अत्युत्तम सडकें नहीं बनी हैं, तथापि उत्तम कारीगरीकी बहुतसी इमारतें और ऐतिहासिक दिलचस्पीकी बहुतसी जगहें हैं। दूरसे किले, सौदागरोंके अनेक आफिसों; चन्द मीनारों, और सरकारी आफिसोंके सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं।

शहरमें छोटी बडी चार पाँच धर्मशालायें हैं, जिनमेंसे एक सौथइण्डियन रेलवेके स्टेशनसे शहरमें जानेवाली सडकके पास और दूसरी स्टेशनसे २ मील दूर शहरके भीतर मारवाडी धर्मशाला है।

मद्रासके बन्दरगाहके पास तथा उससे दक्षिण कष्टमहौस, टेलीग्राफ आफिस, बङ्क, कमसरियटका स्तवल, मद्रास मेल आफिस, पोष्टआफिस, हाईकोर्ट तथा कारोबारके अन्य मकान समुद्रके किनारेपर फैले हुए हैं, उनके पश्चिम देशी लोगोंकी बनी बस्ती है, जिसमें एक बडी सडकके बगलोंमे बडीबडी दूकानें, मदरासबङ्क और कई गिरजे हैं। देशी बस्तीसे दक्षिण समुद्रके किनारेपर लगभग २ मील लम्बे और ¾ मील चौडे मैदानमें किला, कूउम नदीका टापू, परेडकी भूमि, गवर्नमेंट हाउस और कई एक दूसरी सुन्दर इमारतें हैं। उस भागके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण तिरुवलेश्वरम्, पेट, पदूपाक, रायपेटम्, कृष्णम्पेट इत्यादि महल्ले हैं। उस भागके पश्चिम पुरूपेट और एक दूसरे महल्लेमे खासकर यूरोपियन लोग बसते हैं। इनके अलावे अन्य कई महल्लों और शहरतलियोंमे बहुतसे यूरोपियन बसे हुए हैं। मद्रासकी प्रधान सडक माउटरोड है, जो किलेसे दक्षिण-पश्चिम सेंटथमस माउटतक चली गई है। उसके बगलोंमें सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं, परन्तु उसके किनारोंपर अच्छे मकान बहुत नहीं हैं। इसके अलावे कैथेड्रलरोड, जो माउटरोडको काटता हुआ निकला है; और मउब्रेरोडभी अच्छी सडक है। कूउम नामक एक छोटी नदी किलेसे आधा मील दक्षिण, म्युनिसिपल्टीके हदके भीतर समुद्रमे गिरती है, जिससे बनी हुई टापूके दक्षिण-पश्चिम मद्रासके गवर्नरकी कोठी, जिसका दरवाजा माउटरोडके पास है, खडी है। किलेसे मांउट-रोडको जाने वाली सड़कके मध्यमे नदीके टापूके भीतर सरटीमनरोकी धातकी प्रतिमा बनी हुई है, जो चन्देके ९०००० रुपयेके खर्चसे सन् १८३९ मे तैयार हुई। किलेसे पश्चिमोत्तर खास शहरके पश्चिम एक बडे क्षेत्रफलमें कई एक बडे तालाब, दो पार्क और अनेक बागान हैं, जहाँ टहलनेके लिये बहुत लोग जाते है। उसके दक्षिण टाउन हाल है। सौथइन्डियन रेलवेके स्टेशनसे आधा मीलसे अधिक पश्चिम "इसपरटक" नामक टेढा तालाब है।

मद्रासकी इमारतोंमे हाईकोर्ट, गवर्नरकी कोठी 'केथेड्रल, ममोरियल हाल, सिनेटहाउस' कालिज, सेंट्रल रेलवेका स्टेशन, टेलीग्राफ आफिस, पोष्टआफिस, अजायबखाना, अबजरवे-टरी, बड़ी लाइब्रेरी, अनेक अस्पताल, अधिक खियालके लायक हैं। किलेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम मद्रास क्लब बडी इमारत है। मद्रासकी लाइब्रेरियोंमेसे 'रायल एसियाटिक सोसा-इटी' की शाखा और 'लिटरेरी सोसाइटी' मे लगभग १७००० किताब रक्खी हैं।

सन् १८०८ का कायम हुआ एक गरीबखाना है, जिसका निर्वाह साधारण चन्दे और सरकारके खर्चसे होता है, उसमें गरीब, निर्बल तथा अनाथ लोगोंको भोजन और वस्त्र मिलता है और लगभग ४०० पुरुष और स्त्रियोंके रहनेका स्थान बना हुआ है। मद्रासमें साधारण लोगोंके लिये एक उत्तम अस्पताल है, जिसमे रोगियोंके लिये ३०० से अधिक चारपाइयां रक्खी हुई हैं।

सन् १८८२-१८८३ में मद्रासके ५ कालिजोंमे ७८७ विद्यार्थी ३ कालिजोंमें, जा पेशे सिखलानेके लिये है, २१७ विद्यार्थी १४ अङ्गरेजी हाईस्कूलोंमे १२६३ विद्यार्थी ५५ अङ्गरेजीके मिडिल स्कूलोंमे ३४६१ विद्यार्थी थे । इनके अलावे देशी भाषाके बहुतसे मिडिल स्कूल थे ।

खास शहरके उत्तर भागमें दिवानीका जेलखाना, रोमनकैथोलिक चर्च, शिल्पकारीका स्कूल, कई अन्य स्कूल और अस्पताल है ।

किलेसे पश्चिम जनरल अस्पताल और मेडिकल कालिज है। कूइम नदीसे बना हुआ टापूके पश्चिम नेपियरपार्क, एक गिरजा और स्कूल और दक्षिण ओर समुद्रके पास सेनेटहाउस, इञ्जनियरिंग कालिज, प्रेसीडेन्सी कालिज, हिन्दुओंका श्मशान, पुलिस इन्स्पेक्टर जनरलका आफिस, सेण्टहोमका चर्च और यतीमखाना है ।

मद्रासमे बडी फौजीछावनी है जिसमें २००० से अधिक सैनिक लोग जिनमे लगभग ११०० यूरोपियन हैं, रहते है । बहुतसे गिरजे है। जलकल सर्वत्र लगी है। सड़कों पर रात्रिमें लालटेनोंकी रोशनी होती है । सवारीके लिये ताँगे घोड़े गाडी और बैलगाड़ी मिलती हैं ।

खास शहरके, जिसमें देशी लोगोकी घनी वस्ती है, पूर्वके बन्दरगाहमे ४० फीट चौडा एक पुश्ता बना है, जो किनारेसे पानीके भीतर १ हजार फीट लम्बा है। उस पर जहाजके मुसाफिर उतरते है। सब देशोंके जहाज बन्दरगाहमे आते है और सब देशोंमें जानेके लिये बन्दरगाहसे खुलते है। गल्ला, रुई, काफी, नील, तेलहन, रङ्ग, चीनी, चमड़ा, सींग, इत्यादि वस्तु मद्राससे दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं और लोहा इत्यादि धातु खुर्दा चीजे और यूरोपियन कारीगरीकी विविध भाँतिकी चीजे दूसरे देशोंसे मद्रासमे आती हैं ।

उस देशकी रीतिके अनुसार मद्रास शहरके पायखानोंमें पर्दे नहीं है। बड़े पायखानोंके बाहर बीड़ी बिकती है। उस देशके लोग मलत्याग करते समय बीडी पीते हैं और जोर सोरसे परस्पर बातें करते हैं उत्तरी भारतवर्षकी स्त्रियोंके समान वे लोग मलत्यागके समय परस्पर लज्जा नहीं करते। अत्रिस्मृतिके ३१९ वे और ३२० वे श्लोकमें लिखा है कि मलत्यागने, लघुशका करने और होम करनेके समय मौन धारण करना उचित है।

नई हाईकोर्ट—खास शहरके दक्षिण पोष्टआफिस और पोष्ट आफिससे दक्षिण समुद्रके किनारेसे कई सौ गज पश्चिम १ लाख वर्गफीट भूमि पर नई हाईकोर्ट बनी है। दूरसे उसकी दो मञ्जिली ३ मञ्जिली इमारतोंके सुनहरे कलशोंके साथ वीसहाँ गुम्बजोंका मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। उसके भीतरकी लकड़ीकी नकाशी और रङ्गोकी आरास्तगी देखने लायक है। उसमें जज लोगोंके ४ इजलास हैं। सन् १८८८ मे हाईकोर्टका काम आरम्भ हुआ और सन् १८९२ में इमारत तैयार होकर उसमें कचहरियोंका काम होने लगा।

किला—हाईकोर्टसे दक्षिण "फोर्टसेण्टजर्ज" नामक किला है। किलेके आगे अर्थात् पूर्व ओर समुद्रके किनारे पर चौडी सडक बनी हुई हैं। किलेके पूर्वका अगवास सीधा है, लेकिन पश्चिमका अगवास अर्द्धचन्द्राकार बना हुआ है । किलेकी दीवारके पास जगह जगह तोपोंके बुर्ज है। किलेके बाहर गहरी खाई और भीतर बहुतसे फौजी आफिस यूरोपियन

बारक अर्थात सैनिक गृह. तोपखाना, चद गवर्नमेण्ट आफिस और सेंटमेरीका चर्च है, जो सन् १६७८से १६८० तक बना था। उसमे कई एक अङ्गरेजी अफसर दफन किये गये है। किलेके भीतरकी प्राय सब इमारते दो और तीन मञ्जिलकी है। किला आम लोगोके लिये खुला रहता है। किलेके बुर्जसे समुद्र और जहाजोंका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। किलेसे ½ मील पश्चिम जेलखाना है।

गवर्नमेण्ट हाउस–किलेसे करीब ½ मील दक्षिण-पश्चिम गवर्नमेण्ट हाउस है; इसका प्रधान दरवाजा उत्तरको है। पत्थरकी चौडी सीढ़ियों द्वारा उसके निकट पहुँचना होता है। श्रिरङ्ग-पट्टनमके फतेहकी यादगारमे इसका हाल ( बडा कमरा ) बना। भीतर चारों तरफकी दीवारोंमे टीपूसुलतान, महारानी विक्टोरिया, बहुतेरे वाइसराय, बहुतेरे लार्ड और बहुतेरे सरीफ अङ्गरेज अफसरोंकी तस्वीरे हैं। दूसरे कमरेमें अनेक शरीफ अङ्गरेज और हिन्दुस्तानके बहुतेरे नवाबोकी तस्वीरे देखनेमें आती है।

अजायबखाना–अजायबखानेका अङ्गरेजी नाम मिउजियम, पारसी नाम अजायबखाना और हिन्दी नाम जादोघर है। किलेसे करीब २ मील पश्चिम कुछ दक्षिण पाथियन रोडके पास दो मञ्जिला अजायबखाना है, जो ६॥ बजे सुबहसे ५ बजे शाम तक खुला रहता है। सालमें करीब ४ लाख आदमी इसको देखते हैं।

सन् १८४६ मे इसकी चीजोंके बटोरका काम आरम्भ हुआ। प्रथम इसके असबाब कालेज हालमें रक्खे गये थे; किन्तु सन् १८५७ में वर्तमान मकानोंमे लाये गये, तबसे इसमें रखनेके असबाबोंके बटोरका काम जारी है। अब इस मिउजियममे उत्तम नमूनोंका जमाव होगया है। जो अब तक बिना जाने हुए जानवर थे, उनमेंसे बहुतेरे तलाश करके इसमें रक्खे गये हैं, जिसमे यह मिउजियम मशहूर हुआ है।

इसमें तरह तरहके जल थलके मरे हुए जानवर अर्थात् मछली, घडियाल, शख, घोंघे, सीप, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि- सामुद्रिक चीजें अर्थात् फेन, जलकी लकडी, लतर आदि, जङ्गलकी किसिम किसिमकी लकड़ियाँ; देश देशके गहने, कपडे, बर्तन, पत्थर और पीतलकी मूर्त्तियाँ, बाजा, मसाला, रेशम, नकली फल, और खानिक चीजोंके नमूने हैं। एक मगरकी हड्डी ४८ फीट लम्बी है। एक लोहेका बखतर ( सनाह ) है। एक जगह सोने चांदी और ताम्बेके सैकडो तरहके हजारो सिक्के रक्खे हुए है। एक जगह तञ्जोरके भांति-भांतिके बहुतसे हथियार, हाथी दाँतकी बनी हुई तञ्जोरके राजाकी सभा और तञ्जोरके बडे शिव मन्दिरका नमूना है। अजायबखानेमे बहुतेरी ऐसी चीजें हैं, जिनको देखनेसे अङ्गरेजी तथा हिन्दुस्तानी कारीगरी और तरीकों तथा देशकी पुरानी वस्तुओंका भली भांति परिज्ञान होता है। अजायबखानेसे लगा हुआ एक पढ़नेका कमरा और एक साधारण लोगोका पुस्तकालय है, जिसमें विविध प्रकारकी किताबोंके लगभग ८००० जिल्दे रक्खी हुई हैं।

बोटैनिकल गार्डन–( पौधा सम्बन्धी बाग ) यह कैथेड्रलके पास २२ एकड़ जमीनपर बहुत सुन्दर तरीकेमें लगाया गया है। इसमें भांति भांतिके दुर्लभ वृक्ष और झार लगे हैं, दो सुन्दर छोटे तालाब है और एक लाइब्रेरी बनी हुई है। डाक्टर राइटके उद्योगसे सन् १८३६ में यह बाग कायम हुआ।

रानी वाग—यह सेंट्रल रेलवे स्टेशनके पास १०६ एकड़ भूमिपर है। इसके भीतरकी कुल सडक ५ $\frac{3}{5}$ मील लम्बी है। इसमें वनाई हुई वहुतेरी झील, एक पवालिक हम्माम, गेंद खेलनेको जगह, वाजा वजानेका स्थान और एक चिडिया खाना ( पशुशाला ) ये हैं। एक घेरेके भीतर पशुशालामे अनेक वाघ, गेंडे, भालू आदि जंगली जानवर है। उनके देखनेवालेको आध आना महसूल देना पडता है। घेरेके वाहरके वागमे पशु पक्षियोंके देखनेमें कुछ नहीं देना पडता है वागके दक्षिणके किनारेपर सडकके पास विक्टोरिया टाउन हाल है, जो सन् १८८३ से १८८८ तक चन्देके खर्चसे वनकर तैयार हुआ।

अवजर बेटरी—मिउजियमसे करीब १ मील पश्चिम छोटी खानगी अवजर बेटरी है, जिसका काम सन् १७८७ मे आरम्भ और सन् १७९३ में समाप्त हुआ। उसमें उत्तम यंत्र हैं। वह वहुतेरे शरीफ आदमियोंके चार्जमे रक्खी गई है।

चर्च–मदरासमें १०-१२ चर्च है, जिनमेसे एक "सौथ इण्डियन रेलवे" के स्टेशनके सामने है, जो सन् १८१८ से १८२० तक २००००० रुपयेके खर्चसे वनकर तैयार हुआ था। उसका मीनार १६६ फीट ऊँचा है।

जनरल हस्पिटल—( याने आम अस्पताल ) यह सेंट्रल रेलवे स्टेशनके सामने है। उसमें २८० विस्तर है और यूरोपियन तथा हिन्दुस्तानी रोगी रहते है।

गवर्नरकी देहाती कोठी–यह गवर्नमेंट हाउससे करीव ५ मील दूर गिंडीके पास एक उत्तम इमारत है, जिसके दक्षिण ८$\frac{3}{5}$ एकडमें फूलोका सुन्दर बाग लगा है।

मदरास हाता–यह भारतवर्षके दक्षिणी भागमें है। इसके उत्तर सूबे उड़ीसा, मध्यदेश, हैदरावादका राज्य और वम्बई हातेके जिले हैं। बाकी तीन तरफ समुद्र है। इसके भीतर मदरासके गवर्नरके अधीनके अनेक देशी राज्य और मैसूरका राज्य है। शास्त्रमें इस देशका नाम द्राविड़ लिखा है। यह त्रिभुजाकारसे दक्षिण समुद्रके भीतर चलागया है। इसकी सवसे अधिक लम्वाई पूर्वोत्तरसे पश्चिम-दक्षिणका लगभग ९५० मील और सवसे अधिक चौड़ाई ( हैदरावादके राज्यसे दक्षिणको ) पूर्वसे पश्चिम तक ४५० मील है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १४११८९ वर्गमील, देशी राज्योंका क्षेत्रफल ९६०९ वर्गमील और मैसूर राज्यका क्षेत्रफल २७९३६ वर्गमील था, जो तीनों मिलकर १७८७३४ वर्गमील होता है। मदरास हातेका सदर स्थान मदरास शहर है, जिसमें इस हातेके गवर्नर रहते है। हातेके पूर्वके किनारेकी पूर्वी घाट और कारोमण्डल और पश्चिमके किनारेको पश्चिमीघाट तथा मलेवारका किनारा कहते है। पूर्वी घाटके पासकी पहाडियोकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे केवल १५०० फीट है, किन्तु पश्चिमी घाटकी चन्द पहाडियोंकी ऊँचाई ८००० फीटसेभी अधिक है, अर्थात् नीलगिरिकी एक चोटी समुद्रके जलसे ८७६० फीट, और आनामलई पहाडीकी एक चोटी ८८६० फीट ऊँची है। मदरास हातेकी नदियोमे गोदावरी, कृष्णा और कावेरी ये तीन नदियाँ प्रधान हैं, जो पश्चिमी घाटसे निकलकर पूर्वी घाटके वङ्गालेकी खाड़ीमे गिरती हैं। इनके अतिरिक्त मदरास हातेमें पिनाकिनी, पनार, वैगा, वेल्लर, ताम्रपर्णी, तुङ्गभद्रा इत्यादि नदियाँ वहती हैं। देशमें ७० प्रकारके सांप हैं, किन्तु उनमेंसे केवल १२ प्रकारके सर्प विषधर होते है।

मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें २२ जिले हैं,—गञ्जाम, विजगापट्टन, गोदावरी, कृष्णा, करनूल, वल्लारी, अनन्तपुर, कडपा, नेल्लूर, चेंगलपट्ट, मदरास, उत्तरी आरकाट, दक्षिणी आरकाट, तंजोर, तिरुचनापल्ली, मदुरा, तिरुनलवेली, सैलम, कोयम्बुतूर, नील-गिरि, मलेवार और दक्षिणी किनारा जिला ।

मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ३५६३०४४० मनुष्य थे, अर्थात् १७६१९३९५ पुरुष और १८०११०४५ स्त्रियाँ । इनमें ३१९९८३०९ हिन्दू, ३२५०३८६ मुसलमान, ८६५५२८ क्रुस्तान, ४७२८०८ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियोंके लोग, २७४२५ जैन, १०३६ बौद्ध, २४६ पारसी, १२८ सिक्ख, ४२ यहूदी, १४५०३ जिनका कोई मजहब नहीं लिखागया था और २९ छोटे छोटे मजहब वाले थे, जिनमें सैकडे पीछे ३९$\frac{1}{2}$ तामिल भापा बोलने वाले, ३८$\frac{1}{2}$ तैलङ्गी भापावाले, ७$\frac{1}{2}$ मलेयालम् भापावाले, ४ कनडी अर्थात् करनाटकी भापावाले, ३$\frac{3}{4}$ उडिया भापावाले, २$\frac{1}{2}$ ऊर्दू भापावाले, १$\frac{1}{2}$ तुलु भापावाले, और ३$\frac{1}{2}$ इनसे अन्य भापावाले थे ।

द्राविड देशमें तामिल, जिसको द्रविड भी कहते हैं, तेलुगु ( अर्थात् तैलङ्गी ) मले-यालम्, कनडी और तुलू ये ५ भापा प्रचलित हैं । तामिल भापा बोलनेवाले लोग करनाट-कमें अर्थात् पूर्वी किनारेके पासके मदरास शहरसे कन्याकुमारी तकके, मदरास, उत्तरी आर-काट, दक्षिणी आरकाट, चेङ्गलपट्ट, तञ्जोर, तिरुचनापल्ली, मदुरा, तिरुनलवेली इत्यादि जिलोंमें और तिरुवांकूरके राज्यमे, तेलुगू बोलनेवाले, पूर्वी किनारेके समीप मदरास शहरसे उत्तरके नेल्लूर, करनूल, कृष्णा, गोदावरी, विजगापट्टन आदि जिलोंमें, मलेयालम् बोलनेवाले खास करके मलेवार जिलेमें और दक्षिणी किनारा जिले तथा तिरुवांकूर और कोचीनके राज्यमे, कनडी बोलनेवाले खास करके मैसूरके राज्यमे और उसके आसपासके अङ्गरेजी जिलओमे तथा दक्षिणी किनारा जिलेमें ( कडपा, अनन्तपुर, वल्लारी जिलेमे कनडी और तेलुगू दोनों हैं ) और तुलु बोलनेवाले लोग दक्षिण किनारा जिलेके एक भागमें बसते हैं । उडिया बोलनेवाले लोग गञ्जाम जिलेके उत्तरीय भागमे हैं । इनके अलावे द्राविडमें खासकर पहाड़ी कोमोंमे कोडागू अर्थात् कुर्गी, कोटा इत्यादि भापा प्रचलित हैं । ( भारतभ्रमणके पहिले खण्डमें भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरणके २७ वें पृष्ठमें देखिये ) ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यको छोड़ करके मदरास हातेमें नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे,—प्रति हजारमें ७८६ यूरेशियन पुरुप, ७२० यूरेशियन स्त्रियाँ; ७२२ ब्राह्मण, ३७ ब्राह्मणी, ६५८ कणक्कन पुरुप, २१ कणक्कन जातिकी स्त्रियाँ, ६०५ कोमटी पुरुप, ९ कोमटी जातिकी स्त्रियाँ, ५८७ करनाम पुरुष १३ करनाम जातिकी स्त्रियाँ; ४९० नायर पुरुप, १२५ नायर जातिकी स्त्रियाँ २१८ देशी क्रुस्तान, ७६ देशी क्रुस्तानोंकी स्त्रियाँ इत्यादि ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदरास हातेमें खेती करनेवाली जातियोंके ७७६७४६७ मनुष्य थे । इनमें ऊँचे दरजेकी जातियोंमें तैलङ्ग देशमें बेलमा, तामिल बोलने-वालोंके जिलोंमे वेल्लाल, मलेवारमे नायर इत्यादि अधिक हैं । नायर लोग मदरास हातेमें ३३५३२० और कुर्गमें ९०७ थे । भेड़ी रखनेवाली जातिके लोग, जिनको तामिलमें इडैयन् और तेलिगूमें गोला कहते हैं, १५८०००० थे, ये लोग वल्लारी और करनूल जिलेमे अधिक

## तामिल वर्णमाला

| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| அ | ஆ | இ | ஈ | உ | ஊ | எ | ஐ | ஒ | ஔ |

| क | ङ | च | ञ | ट | ण |
|---|---|---|---|---|---|
| க | ங | ச | ஞ | ட | ண |

| त | न | प | म | य | र | ल | व |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| த | ந | ப | ம | ய | ர | ல | வ |

| ऱ | ळ | ऩ | का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ | कं | कः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ழ | ள | ன | கா | கி | கீ | கு | கூ | கெ | கை | கொ | கௌ | க் | கஃ |

# द्राविडवर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

𑌅 𑌆 𑌇 𑌈 𑌉 𑌊 𑌋 𑍠 𑌌 𑍡 𑌏 𑌐 𑌓 𑌔

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त

𑌕 𑌖 𑌗 𑌘 𑌙 𑌚 𑌛 𑌜 𑌝 𑌞 𑌟 𑌠 𑌡 𑌢 𑌣 𑌤

थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ

𑌥 𑌦 𑌧 𑌨 𑌪 𑌫 𑌬 𑌭 𑌮 𑌯 𑌰 𑌲 𑌵 𑌶 𑌷 𑌸 𑌹 𑌳

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

𑌕𑌾 𑌕𑌿 𑌕𑍀 𑌕𑍁 𑌕𑍂 𑌕𑍇 𑌕𑍈 𑌕𑍋 𑌕𑍌 𑌕𑌂 𑌕𑌃 ௧ ௨ ௩ ௪ ௫ ௬ ௭ ௮ ௯

है, उनमेंसे वहुतेरे अपना भेड रखनेका पेशा छोड दिये हैं। सौदागरी करनेवाली जातियोंके लोग ६४००४७ थे, जिनमें ३६५७१५ सेटी और कोमठी थे। इनके अलावे ९२८५२० ब्राह्मण, १९३५५० क्षत्रिय और शेषमे अन्य सब जातियोके लोग थे। उस ( मनुष्य-गणनाके ) समय मदरास हातेमे १'५३९९६८६ शैव मतके लोग, १०४९४४ ०८ वैष्णव और ६४५८० लिङ्गायत थे। इनके अतिरिक्त लिंगायत लोग ४७०२६९ मैसूरके राज्यमे और ३६९००४ वम्बई हातेमें थे। लिङ्गायत लोग शैव होते है। वे जाति भेद नही मानते, स्त्रियोंका वहुत सम्मान रखते है। मैसूरके पाश्चिमके लोग वहुत है, जो इनका खास तिजारतका स्थान है। इसके अलावे वे लोग मदरास हाते और वम्बई हातेके दाक्षिणके जिलाओमें अपना कारोवार करते है। भारतवर्षके दूसरे भागोकी अपेक्षा मदरास हातेमें कृस्तान वहुत है।

मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसवे, जिनमे सन् १८९१ की जन-संख्याके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

| नं० | नाम शहर | नाम जिले | जन-संख्या | नं० | नाम शहर | नाम जिले | जन-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मदरास | मदरास | ४५२५१८ | २४ | तलीचेरी | मलेवार | २७१९६ |
| २ | तिरुचनापल्ली | तिरुचनापल्ली | ९०६०९ | २५ | अर्दोनी | वल्लारी | २६२४३ |
| ३ | मदुरा | मदुरा | ८७४२८ | २६ | ब्रह्मपुर | गञ्जाम | २५६५३ |
| ४ | सेलम | सेलम | ६७७१० | २७ | तुतुकुडी | तिरुनलवेली | २५१०७ |
| ५ | कालीकोट | मलेवार | ६६०७८ | २८ | तिरुनलवेली | तिरुनलवेली | २४७६८ |
| ६ | वल्लारी | वल्लारी | ५९४६७ | २९ | करनूल | करनूल | २४३७६ |
| ७ | नागपट्टनम् | तञ्जौर | ५९२२१ | ३० | मायावरम् | तञ्जौर | २३७६५ |
| ८ | तञ्जौर | तञ्जौर | ५४३९० | ३१ | गुंटूर | कृष्णा | २३३५९ |
| ९ | कुम्भकोणम् | तञ्जौर | ५४३०७ | ३२ | श्रीरङ्गम् | त्रिचनापल्ली | २१६३२ |
| १० | कडालूर | दक्षिणी अर्काट | ४७३५५ | ३३ | श्रीवल्लीपुतूर | तिरुनलवेली | २१४४८ |
| ११ | कोयम्वुतूर | कोयम्वुतूर | ४६३८३ | ३४ | वेजवाडा | कृष्णा | २०७४१ |
| १२ | वेलूर | उत्तरी अर्काट | ४४९२५ | ३५ | मनारगुडी | तञ्जौर | २०३९५ |
| १३ | कांजीवरम् | चेङ्गलपट्ट | ४२५४८ | ३६ | दीण्डीगल | मदुरा | २०२०३ |
| १४ | मङ्गलूर | दक्षिणी किनारा | ४०९२२ | ३७ | कुडीआतम | उत्तरी आर्काट | १८७४७ |
| १५ | काकिनाडा | गोदावरी | ४०५५३ | ३८ | पालमकोटा | तिरुनल वेली | १८६८६ |
| १६ | पालघाट | मलेवार | ३९४८१ | ३९ | चिदम्वरम् | दक्षिणी—आर्काट | १८६४० |
| १७ | मछलीपट्टन | कृष्णा | ३८८०९ | ४० | चिकाकोल | गंजाम | १८२४१ |
| १८ | विजिगापट्टन | विजिगापट्टन | ३४४८७ | ४१ | कोचीन | मलेवार | १७६०१ |
| १९ | विजियानगरम् | विजिगापट्टनम् | ३०८८१ | ४२ | कड़पा | कडपा | १७३७९ |
| २० | एलूर | गोदावरी | २९३८२ | ४३ | अनकापल्ली | विजिगापट्टनम् | १७०१० |
| २१ | नेल्लूर | नेल्लूर | २९३३६ | ४४ | पलनी | मदुरा | १६९४० |
| २२ | राजमहेन्द्री | गोदावरी | २८३९७ | ४५ | तिरुपतूर | सेलम | १६४९९ |
| २३ | कननूर | मलेवार | २७४१८ | ४६ | पर्लाखेमडी | गञ्जाम | १६३९० |

| नं० | नाम शहर | नाम जिले | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| ४७ | पेरियाकुलम् | मदुरा | १६३६३ |
| ४८ | कुलसेखरन्पटनम् | तिरुनलवेली | १५९२४ |
| ४९ | वाणियम्वाडी | सेलम | १५८३८ |
| ५० | उतकमण्ड | नीलगिर | १५०५३ |
| ५१ | पोरयार | तंजौर | १४४६८ |
| ५२ | वोविली | विजिगापट्टन | १४४६८ |
| ५३ | तिरुपदी | उत्तरी आरकाट | १४२४२ |
| ५४ | विरुदुपट्टी | तिरुनलवेली | १४०७५ |
| ५५ | पोर्टोनोवे | दक्षिणी आरकाट | १४०६१ |
| ५६ | विलवनूर | तिरुनलवेली | १३९५१ |
| ५७ | पीठापुरम् | गोदावरी | १३७३१ |
| ५८ | पेडापुरम् | गोदावरी | १३६५८ |
| ५९ | रामनाद | मदुरा | १३६१९ |
| ६० | वेदारण्यम् | तञ्जौर | १३४३८ |
| ६१ | समरलाकोटा | गोदावरी | १३४०९ |
| ६२ | सैदामङ्गलम् | सेलम | १३३५४ |
| ६३ | राजापालयम् | तिरुनलवेली | १३३०१ |
| ६४ | सेंटथ मसमाँउड | चेंगलपट्ट | १३१३७ |
| ६५ | तिरुवालूर | तञ्जौर | १२९३४ |
| ६६ | सालूर | विजिगापट्टन | १२९१७ |
| ६७ | होसपेट | वल्लारी | १२८७८ |
| ६८ | तेन्काशी | तिरुनलवेली | १२८६१ |
| ६९ | अरुपुकोटई | मदुरा | १२६७३ |
| ७० | किलकराय | मदुरा | १२३९२ |
| ७१ | ईरोड | कोयम्वुतूर | १२३३० |
| ७२ | शिवकाशी | तिरुनलवेली | १२१८४ |
| ७३ | तिरुवन्नामलई | दक्षिणी आर्काट | १२१५५ |
| ७४ | कालहस्ती | उत्तरीआर्काट | ११७५४ |
| ७५ | कायरपटनम् | तिरुनलवेली | ११४६५ |
| ७६ | कलडैकुरुची | तिरुनलवेली | ११०९६ |
| ७७ | आर्काट | उत्तरी आर्काट | १०९२८ |
| ७८ | आङ्गोल | नेल्लूर | १०८६० |
| ७९ | करूर | कोयम्वुतूर | १०७५० |
| ८० | अधिरामपट्टनम् | तञ्जौर | १०७४८ |
| ८१ | नंद्याल | करनूल | १०७३७ |
| ८२ | अम्वूर | उत्तरी आर्काट | १०५८६ |
| ८३ | चिरला | कृष्णा | १०५८१ |
| ८४ | रासिपुर | सेलम | १०५३९ |
| ८५ | काम्पती | वल्लारी | १०५२९ |
| ८६ | धवलेश्वरम् | गोदावरी | १०४९२ |
| ८७ | वालाजी | उत्तरी आर्काट | १०४८५ |
| ८८ | रायदुर्ग | वल्लारी | १०३८२ |
| ८९ | पालकोंडा | विजिगापट्टन | १०३६७ |
| ९० | ताडपत्री | अनन्तपुर | १०२८३ |
| ९१ | पार्वतीपुर | विजिगापट्टन | १००५३ |
| ९२ | परमकुडी | मदुरा | १००० |

मदरास हातेमें ( मैसूर राज्यको छोड कर ) ५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन राज्योंके ९६०९ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३७००६२२ मनुष्य थे; अर्थात् १८५३९७६ पुरुष और १८४६६४६ स्त्रियाँ। इनमे २७५९२११ हिन्दू, ७१४६५१ कृस्तान, २२५४७८ मुसलमान, १२६७ यहूदी, १० जैन, १ पारसी, और ४ अन्य थे, जिनमें सैकडे पीछे ७३½ मलेयालम भाषा बोलने वाले, २३ तामिल भाषावाले, १½ तेलुगू अर्थात् तैलङ्गी भाषावाले और २ दूसरी भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

मदरासहातेके गवर्नमेन्टके अधीनके ५ देशी राज्योका त्रिज,—

| नम्बर | देशी राज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | कसबा गॉव | मालगुजारी मकान | मनुष्य-संख्या सन् १८८१ | मालगुजारी रु० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | तिरुवबॉकूर | ६७३० | ३७१९ | ५२४९५० | २४०११५८ | ६६०००००० |
| २ | कोचीन | १३६१ | ६५५ | १२५२९७ | ६००२७८ | १६०००००० |
| ३ | पुदुकोटा | ११०१ | ५९७ | ७४०८४ | ३०२१२७ | ५७५१०० |
| ४ | वङ्गनापल्ली | २५३ | ६४ | ८७३५ | ३०७५४ | |
| ५ | सण्डूर | १६४ | २३ | २६८६ | १०५३२ | |
| | जोड | ९६०९ | ५०५८ | ७३५७५२ | ३३४४८४९ | |

मदरास गवर्नमेन्टके अधीनके देशी राज्योंके कसबे जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे, नीचे है;—तिरुबांकूर राज्यके तिरुवनन्दम्मे २७८८७, अलोपीमें २२७६८, कीलनमें १५३७५ और नागरकोयलमें १११८७, कोचीन राज्यके मतन चेर्रमे १७३५४ और तिरुचुरमे १२९४५ और पुदुकोटा राज्यके पुदुकोटामे १६६८५।

महाभारतमें चोल, पाड्य, माहिषक, केरल, कालगिरीय, अंध्र, कलिङ्ग, विदर्भ इत्यादि दक्षिणके देशोका नाम लिखा है। चोल देशमें तंजोर, कुम्भकोणम् आदि, पांड्य देशमें मदुरा इत्यादि, माहिषक देशमें मैसूर, वङ्गलोर, श्रीरंगपट्टनम् आदि, केरल देशमें मलेवार, कालगिरीय देशमें नीलगिरि आदि, अंध्र देशमें गोदावरी जिला और उसके दाक्षिणके जिले, कलिग देशमें विजिगापट्टम् जिला और उससे उत्तरके जिले तथा उडीसा देश और मध्य देशका कुछ हिस्सा, और विदर्भ देशमें वीदरके आस पासके देश है, किन्तु इन देशोकी ठीक सीमा कोई नियत नही है।

द्राविडी लोग पञ्जाव, राजपूताना, पश्चिमोत्तर, वङ्गाल आदि नर्मदाके उत्तरके प्रदेशोको हिन्दुस्तान और इनके निवासियोको हिन्दुस्तानी कहते है। उनमे प्राय. सव लोग काले और सांवरे होते है। वहॉ वालोके मुख्य वस्त्र साफा, छोटी पगडी, अंगरखा, कोट और धोती है। वडे जातिके हाकिम, अमले और वकीलभी प्राय: इसी ठाटसे रहते है। कोई कोई रंगीन वडा रूमाल सिरपर वांधता है। वहुतेरे लोग लंगोटके ऊपर ५ हाथका डोरिया वस्त्र कमरपर लपेटते हैं। आड़ियोके समान द्राविडके वहुतेरे लोग वडे घेरेकी शिखा रखते है और अपनी मूछ मुडवाते हैं। मलेवारके लोग ललाटसे ऊपर शिखा रखकर उसको आगेकी ओर लटकाये रहते हैं। स्थान स्थानपर रामानुज संप्रदायवाले (आचारी) वहुत देख पड़ते हैं। द्राविडी लोगोंके जूते चर्पारे होते है, जिनमें अगूठे घुसानेके लिये चमड़ेकी नथुनी रहती है।

गर्म मुल्क होनेके कारण वहाँके लोगोंमें रूईदार कपड़े पहनने और चारपाई रखनेकी चाल बहुत कम है। साधारण लोग विना विस्तरकी भूमिपर बैठते हैं। सर्व साधारणका भोजन भाजी और उसिना चावलका भात है। उत्तम वर्णके लोग नीच वर्णोंकी दृष्टि बचा करके एकान्तमें भोजन करते हैं। धनी गरीब सब लोग पान खाते हैं। दूसरे देशोंकी स्त्रियोंकी समान पुरुष, पुरुषसे लज्जा नहीं मानता। पायखानोंके भीतर पर्दे नहीं हैं। वहाँके बहुतेरे लोग पायखानेमें परस्पर बातचीत करते हैं। समुद्रके समीपके देशोंमें हाथीपांवकी बीमारी होती है।

मदरास हातेमें काफी ( कहवा ) और तम्बाकू बहुत उत्पन्न होते हैं। कुछ कुछ चायभी होता है। नमक तयार किया जाता है। ज्वार बाजरेकी फसिल बहुत होती है। धान, अरहर, तिल, बरेंभी उत्पन्न होते है। ताड़, नारियल, इमली, खजूर, बबूरके वृक्ष बहुत हैं। मदरास प्रान्तमें मूँगफली बहुत उत्पन्न होती है, करीब लाख एकड़ भूमिपर इसकी खेती हुआ करती है। नागफनी, सीज और केतकी जगह जगह रेलवेके बगलोंमें घेरेकी जगह लगाई गई है। बहुतेरे छाता, पानी भरनेके डोल और अनेक मकानोंके छप्पर ताड़के पत्तोंसे और अनेक मकानोंके छप्पर नारियलके पत्तोंसे बनाये जाते हैं।

द्राविडके बहुतेरे देवमन्दिर दूसरे देशोंके मन्दिरोंसे बहुत बडे है। बहुत मन्दिरोंमें बड़े बडे गोपुर और बडे बड़े मण्डप बने हैं। वहाँके मन्दिरोंमें देवताओंका दर्शन अलगसे होता है। पूजा पुजारीद्वारा चढ़ाई जाती है। देवताओंके निज मन्दिरको आदितम वा विमान कहते हैं और जिस सरोवरमें बेड़ेपर चढ़ाकर देवता घुमाये जाते हैं, उसको तेप्प-कुलम् कहते हैं। शिवमन्दिरोंकी दीवारों और छतों पर नन्दीकी अनेक मूर्त्ति रहती हैं। पत्थरकी दीवारों और स्तम्भोंके ऊपर गचका काम भी होता है। प्राय. सब तीर्थस्थान और शहरोंमे धर्मशालायें और सदावर्त है। किसी किसी जगह ब्राह्मणोंके टिकनेके लिये खास धर्म-शाला बनी हैं। प्रायः सम्पूर्ण तीर्थोंमे शिव और विष्णु दोनो देवताओंके मन्दिर बने है। पद्मपुराण, स्वर्गखण्डके ५ वे अध्यायमें लिखा है कि ब्रह्माजीने शिव और विष्णुसे कहा कि पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं, उन सबोंमें आप दोनोंकी समान पूजा होगी, विना आप दोनोंके निवास किये किसी तीर्थकी पवित्रता न समझी जायगी।

आटा और घी प्रसिद्ध जगहोंपर मिलता है। शहरो और बडे स्टेशनोंपर महंगी मिठाई, केले और नारंगीभी मिलती हैं। कच्ची रसोईका सामान सर्वत्र मिलता है। तरकारी बहुत प्रकारकी बिकती है। मदरास हातेके दक्षिणीय भागमे प्रसिद्ध जगहोंपर विना समयके आम और कटहलके फल बिकते है। कई जगहोंमे केवल २४ रुपये भरका सेर बाजारमें चलता है।

मदरास हातेमें गर्मी बहुत पड़ती है। पूर्वके जिलोमें गर्मीकी ऋतुओंकी अपेक्षा जाड़ेमे वृष्टि अधिक होती है। मदरासमें औसत सालाना ५० इञ्च वर्षा होती है, जिसमेंसे लगभग आधा पानी केवल नवम्बर महीनेमे गिरता है। यद्यपि अगहन, पूस और माघमें जाड़ा पड़ता है, किन्तु वास्तवमे मदरासके मैदानोंमें प्रायः जाड़ा नहीं है। समुद्रका ज्वार तीन चार फीटसे अधिक ऊँचा नहीं होता। समुद्रके किनारोपर बार बार तोफान आया करता है। कोई बन्दरगाह तूफानोसे सर्वदा जहाजोंको नहीं बचा सकता है।

ऊपर लिखे हुए तामिल आदि द्राविडी भाषावोंको आर्यावर्त अर्थात् नर्मदाके उत्तरके पञ्जाब, पश्चिमोत्तर, वङ्गाल इत्यादिके लोग कुछ नही समझ सक्ते है; किन्तु जगह जगह विशेष करके तीर्थ स्थानों और बड़े बड़े शहरोंमें द्रविडियन दुभाषिया मिल जाते है । जिन तीर्थों अथवा शहरोंमे आर्यावर्त्तके बहुत यात्री जाते हैं, वहाँके पण्डाओं और दुकानदारोंमेंसे अनेक लोग कुछ हिन्दी समझते है । उर्दूके समान वहाँक मुसलमानोंकी एक तुलुक्कु भाषा हैं; उस भाषाको जाननेवाले मुसलमान लोग कुछ हिन्दी बोल सकते है। यात्रियोंके कामकी चीजोंके तैलंगी और तामिल भाषाके नाम नीचे है—

| हिन्दी | तेलङ्गी | तामिल | हिन्दी | तेलङ्गी | तामिल |
|---|---|---|---|---|---|
| चावल | वियम | अर्सी | गोइँठा | पिडिक्को | एरंटे |
| दाल | पपू | पपू | धर्मशाला | क्षेत्रम् | क्षत्रम् |
| आटा | पिण्डी | माऊ | मकान | इलो | उंडू |
| गेंहू | गोदम | गोदमे | कोठरी | इलो | उंडू |
| नमक | ऊपू | | पायखाना | पेलों | कक्कुस |
| घी | नइये | | चटाई | चापा | पाई |
| दही | पेरगू | तयेरू | लोटा | टमलेर | चम्बू |
| दूध | पालू | पाल | थारी | तट्ट | |
| मक्खन | वेना | वेने | कपडा | वट्टलो | तुनी |
| गुड | वेलम् | वेलम् | कम्बल | कमडी | कम्ली |
| चीनी | सकरा | चक्के | गाड़ी | वण्डी | वण्डी |
| तेल | नुना | एने | जूता | जोड़ो | चर्पो |
| इमली | चिन्तपुण्ड | पुली | खड़ाऊं | | पादकोरडो |
| मिर्चा | मिरपकाय | मलगा | पुस्तक | पुस्तकम् | बुको |
| नारियल | तेंकाई | तेङ्गा | दीप | दीपम् | |
| कपूर | कर्पूरम् | | धोती | धोती | धोती |
| तम्बाकू | पोगाको | पोगले | उपल | दंचकुडी | ओडके |
| पानी | निल्लो | तन्नी | शिलवट | | अमी |
| कुआँ | वाई | कंनरो | आग | नीपो | निर्पो |
| लकडी | कटलो | वेरगू | | | |

तामिल भाषामें १ को ओरू, २ को रेंड, ३ को मुण्ड, ४ को नाल, ५ को अंचू, ६ को आर, ७ को एँड्ड, ८ को एट्ट, ९ को ओवज और १० को पत्तू कहते है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( सभापर्व ५१ वाँ अध्याय ) चोलनाथ और पाड्यनाथने राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय इन्द्रप्रस्थमे आकर मलयगिरिके चन्दनरसके वडे राजाको दिये । ( भीष्म पर्व, ४७ वाँ अध्याय ) कुरुक्षेत्रके संग्रामके दूसरे दिन राजा युधिष्ठिरकी ओर क्रौंचारुण व्यूह बनाया गया, जिसमें तङ्गन, परतङ्गन, चोल, पाँड्य आदि देशोंके वीरगण व्यूहके पक्ष स्थानमें स्थित हुए। ( ५२ वाँ अध्याय ) कौरवोंकी ओरके गरुड़ व्यूहके दहिने पार्श्वमें कलिङ्ग आदि देशोंके योद्धागण खडे हुए। (द्रोणपर्व,

१९ वाँ अध्याय ) बारहवे दिनके संग्राममे कौरवोंने गरुड व्यूह रचा, जिसमे व्यूहकी ग्रीवाके स्थानपर कलिंग और सिंहल आदि देशोंके योद्धागण स्थित हुए। ( १५३ वाँ अध्याय )भीमसेनने कलिङ्ग देशके राजाके पुत्रको मारडाला। ( कर्णपर्व, २० वाँ अध्याय ) पांड्य देशका राजा मलयध्वज कौरव दलके असंख्य योद्धाओंको मारकर अश्वत्थामाके हाथसे मारा गया। ( अश्वमेधपर्व, ८३ वाँ अध्याय ) राजा युधिष्ठिरके विजय होनेके पश्चात् यज्ञका सामान हुआ। अर्जुनकी रक्षामें यज्ञ अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देशके राजाओंको परास्त करते हुए दक्षिणके समुद्रकी ओर गये। उन्होंने उस तरफके द्राविड, अंध्र, माहिषक, ( मैसूर वाले ), कालगिरीय ( नीलागिरि वाले ), आदि वीरोंको संग्राममे परास्त करके सुराष्ट्रकी ओर गमन किया।

आदि ब्रह्मपुराण—( १३ वाँ अध्याय ) राजा संवर्तके पुत्र दुष्यन्त हुए। राजा ययातिके शापसे तुर्वसुका वंश पौरव वंशमें मिल गया। दुष्यन्तके पुत्र करुत्थाम, करुत्थामके पुत्र अथाक्रीड़ और अथाक्रीड़के ४ पुत्र हुए, अर्थात् पाँड्य केरल, कोल और चोल, जिनके नामसे पांड्य, केरल अर्थात् मलेवार,कोल और चोल देश विख्यात हुए। ( २६ वाँ अध्याय ) भारतवर्षके दाक्षिणीय भागमे कुमार, वासक, महाराष्ट्र, माहिषक, कलिङ्ग, आभीर, पुलिन्द, मैलेय, वैदर्भ, दण्डक, कौलक, कुन्तल आदि देश हैं।

वामनपुराण–( १३ वाँ अध्याय )भारतवर्षके दक्षिणके भागमे चोल, मुषिकाथ, महाराष्ट्र, कलिङ्ग, आभीर, शवर, नल, अंध्र इत्यादि देश हैं।

मत्स्यपुराण–( ११३ वाँ अध्याय ) भारतवर्षके दक्षिणीय भागमे पांड्य, केरल, चोल, नवराष्ट्र, कलिङ्ग, कारुप, शवर, पुलिंद, विंध्य, विदर्भ, दण्डक इत्यादि देश है।

गरुड़पुराण—( पूर्वार्द्ध ५५ वाँ अध्याय ) भारतवर्षके दक्षिणके भागमे अन्ध्र देश है।

इतिहास—किसी किसीके मतसे मदरसा शब्दसे मदरास नाम हुआ है। द्राविडियन लोग मदरास शहरको चेनापट्टनम् कहते है। शहरके कायम होनेके समय उस देशके नायक ( अर्थात् राजा ) के भाईका नाम चेनापप्पा था, जिसके नामसे शहरका नाम चेनापट्टनम् हुआ। जान पड़ता है कि प्रायः उसी समयसे लोग इसका मदरास नामभी कहते हैं।

मदरास हाता पहिले छोटे छोटे वहुतसे देशी राज्योंमें विभक्त था, जिनके वंशधरोंके राज्य थोडेही दिनोंमें समाप्त होजाते थे। मदरास हातेके दक्षिणीय भागमे पांड्य, चोला और चेरा ये ३ बादशाह राज्य करते थे। सिरियाके बादशाह सेल्युकसका वकील मेगस्थनीज सन् ईस्वीके आरम्भसे ३०६ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें ( चन्द्रगुप्तके दरवारमे ) आया था। उसके लिखनेके अनुसार उस समय पांड्य, कलिङ्ग और अंध्र ये तीन वंशोके राजाओंके राज्य थे। पांड्य वंशके राजा दक्षिणके भागमें, और कलिङ्ग तथा अंध्र वंशके राजा वर्तमान मदरास हातेके उत्तरीय भागमें राज्य करते थे. उनमेंसे कलिङ्ग वंशवाले समुद्रके किनारेके आसपास और अंध्र वंशके राजा किनारेसे दूर थे। ऐसा जान पडता है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग २५० वर्ष पहिले राजा अशोकके राज्यके समय चोला और केरल अर्थात् चेरा वंशके राजा भी राज्य करते थे। सन् ईस्वीके आरम्भके ५०० वर्ष पहिले भी पांड्य, चोला और चेरा वंशके राजाओंके राज्य विद्यमान थे। लगभग सन् ईस्वीकी छठवीं सदीमें पल्लववंशके राजाने अपना दृढ़ राज्य नियत किया,जिसकी राजधानी मदरासके पास थी; परन्तु

शीघ्रही उस वंशके कई आदमियोंने अपने अपने राज्य अलग अलग कर लिये । वे लोग पूर्वी किनारेके पास ऊड़ीसे तक हुकूमत करते थे। कलिङ्ग और अंध्र वंशके राजाओंने पल्लव वंशके राजाओंकी आधीनता स्वीकार की, उसके पश्चात् पश्चिमके चालुक्य वंशके राजाने चोला और पल्लव वंशके राजाओंसे संग्राम किया, किन्तु सर्वदाके लिये उनका मनोरथ पूर्ण नही हुआ। सातवी सदीमें चालुक्य वंशके राजाने पल्लव वशके राजाको जीता । वे लोग पूर्वी चालुक्य वंशके नामसे वहुत काल तक राज्य करते रहे । ११ वी सदीमें पल्लव वंश वालोंने चालुक्य वंशवालोंको कांचीपुरीके दक्षिण परास्त किया। दक्षिणके पल्लव वंश वाले फिर वलवान् हुए। चालुक्य लोग निकाले गये । ११ वी सदीमें चोला वंशके राजा बहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कुछ दिनोके लिये सिलोन अर्थात् लङ्काके वादशाह, गङ्गावंशके राजा और दक्षिणके पांड्य वंशके राजाको जीता और पल्लव वंशके तथा पूर्वी चालुक्योंके राज्यको उड़ीसेकी सीमा तक अपने राज्यमें मिला लिया।

चालुक्योंका फैला हुआ राज्य धीरे धीरे अनेक टुकडोंमें वॅट गया। १२ वीं सदीके अन्तमें कई एक राजाओंने चोला वंशके राजासे मदरास हातेके उत्तरीय भागको छीन लिया। पांड्य देशका अधिकार भी उनके हाथसे निकल गया। हैसलाबल्लाल वंशके राजाने चोला वंशके राजाको मैसूर और गङ्गावंशके देशसे निकाल बाहर किया । १४ वीं सदीके आरम्भतक पांड्य वशके राजा दक्षिणमें वलवान् थे। चोला वंशके राजाके अधिकारमें तञ्जोर और मद्रास था ।

१४ वीं सदीके आरम्भमे दिल्लीके खिलजी खानदानके बादशाह अलाउद्दीन और उसका जनरल मलिक काफूरने डेकान ( दक्षिण ) को जीता उन्होने हैसलावल्लालके राज्यका विनाश किया, मदुराके पांडय वंशका नाश करके कन्याकुमारी तकके देशोंका विध्वंस कर दिया, तथा पूर्वी किनारेके प्रधानोको जीता ।

द्राविड़ देशके पांड्य, चोला और चेरा इन ३ राजाओंमे पांडय राज्य सबसे सभ्य था। उस वंशमें क्रमसे ११६ राजा हुए, उनकी राजधानी मदुरा थी । चोला वंशके राजाओंकी राजधानी पहिले कांबेकोनम् अर्थात् कुम्भकोणम् और पीछे तञ्जोर था, उस वंशमें क्रमसे ६६ राजा हुए। चेरा राज्यकी राजधानी मैसूर राज्यका तालकद शहर था, जो अव कावेरीके बालूमें ढक गया है, उस वंशके ५० राजाओंने राज्य किया था। पांडय, चोला और चेरा वंश वालोंका किसी तरहसे थोडा वहुत राज्य सोलहवीं सदी तक था ।

मुसलमानी फौजोंके चले जानेपर विजयानगरका राज्य आरम्भ हुआ, लगभग सन् १३३६ में तुङ्गभद्रा नदीके पास हांपी, विजयानगरके हिन्दू राजाकी राजधानी वनी। उनका राज्य धीरे धीरे पूर्वी किनारासे पश्चिमी किनारा तक फैला। उन्होंने दक्षिणी भारतके प्रथमके राजाओंका विनाश करके उनके सम्पूर्ण देशोंपर हुकूमत की। सन् १५६४ में बीजापुर, गोलकुण्डा आदिके ४ मुसलमान वादशाहोंने मिलकर विजयानगरके हिन्दू राजाको परास्त किया। सोलहवी और सत्रहवीं सदीमें नायक वंश वालोंने मदुराके राज्यकी हुकूमत की ।

सत्रहवीं सदीमें वादशाह औरङ्गजेवने वराय नामके अपने राज्यको दक्षिणमें कन्याकुमारी तक फैलाया था, परन्तु वास्तवमे दक्षिणके अनेक राजा लोग सर्वदा उसके अधीन नहीं रहते थे। शिवाजीके परिवारका एक राजा तञ्जोरके मैदानमे हुकूमत करता था। उसके

नाद करनाटकके नव्वाव, जिसकी राजधानी आरकाट थी, और हैदरावादके निजाम स्वतन्त्र हुए।

सन् १४९८ में पोर्चुगल राज्यके वासकोडिगामाने कलीकोटके किनारेपर अपने जहाजका लङ्गर डाला। सन् १६०० ई० तक पोर्चुगीज लोग हिन्दुस्तानमे खास करके पश्चिमी किनारेके पास तिजारत करते रहे। सत्रहवीं सदीके आरम्भमें हालेण्ड वाले और उनके तुरन्तही बाद अङ्गरेज लोग दक्षिणी हिन्दमे आये। अङ्गरेजोने पहिले सन् १६११ में पूर्वी किनारेके मछलीपट्टनमे और उसके पीछे सन १६१६ में कलीकोट और कननूरमें अपनी कोठी कायम की। सन् १६८३ में तलीचेरी जो सूरतकी कोठीकी शाखा थी, पश्चिमी किनारेपर अङ्गरेजी तिजारतका प्रधान स्थान हुई, जो सन् १७०८ में सर्वदाके लिये अङ्गरेजोंको मिल गई। अन्तमें पोर्चुगीज लोग गोवाको और हालेंडवाले एक टापूको चले गये।

सन् १६३९ के मार्चमें ईष्टइण्डियन कम्पनीने चन्द्रगिरिके राजा श्रीरंगरायलसे, जो विजयानगर राजवंशके थे, उस भूमिको पाया, जिसपर वर्तमान मद्रास शहर है। उस कम्पनीने शीघ्रही वहाँ "फोर्टसेंटजर्ज" नामक किलेके बनानेका काम प्रारम्भ किया। पहिले एक दीवारके भीतर, जिसमें ४०० गज लम्बी और १०० गज चौड़ी भूमि थी, एक कोठी और अन्य इमारतें थीं। सन् १६४३ में उसका काम बढ़ाया गया और हिफाजतके लिये वहाँ १०० सैनिक रक्खे गये। सन् १६७० और १६८० के बीचमें किला बढ़ाया गया। कोठी बननेके पीछे उसके बगलोंमें धीरे धीरे देशी लोग बसने लगे सन् १६७२ में फरासीसियोंने उस जगहको जहां पाण्डीचरी है, खरीदा। उसके २ वर्षके पीछे वहां फरासीसी आवादी कायम हुई। सन् १७०२ में मुगल बादशाह औरङ्गजेबके जनरल दाउदखांने चन्द सप्ताह तक मद्रास शहरपर घेरा डाला, किन्तु पीछे विफलमनोरथ होकर वह लौट गया। सन् १७२३ में किलेके भीतर टकशाल घर बनाया गया। सन् १७४१ में महाराष्ट्र लोगभी मद्रासके किलेपर आक्रमण करके लौट गये। सन् १७४३ में वह किला फिर बढ़ाया गया और मजबूत किया गया। उस समय मद्रास शहर दक्षिणी भारतमें सब शहरोसे बडा होगया था। सन् १७४६ में फरासीसियोंने अङ्गरेजोसे मद्रासका किला छीन लिया। उसी सन्के अकतूबरमें एक भयंकर तोफान आया, जिससे मद्रासके समुद्रमें १२०० मनुष्योंके साथ ३ जहाज डूब गये और दूसरे २ जहाज भीतर चले गये। उनके अलावे २० जहाज़ोमेसे, जो उस समय मद्रासमे थे, एक भी नहीं बचा। फरासीसियोंने दो वर्षके पीछे एक सन्धि होने पर अङ्गरेजोंको मद्रास लौटा दिया, तब अङ्गरेजोने फिर किलेको बढ़ाया और उसको दृढ़ किया। सन् १७५८ में फरासीसियोंने शहरपर अपना अधिकार करके किलेपर घेरा डाला। उस समय किलेका काम पूरा नहीं हुआ था, परन्तु वह हिफाजत करने लायक होगया था। दो मास तक उनका घेरा रहा, किन्तु अङ्गरेजी बहरके पहुंचनेपर उन्होंने अपना घेरा उठा लिया। महासरेके बाद किलेका काम फिर जारी हुआ। सन् १७८७ में किला पूरे तौरसे तैयार होगया, जैसा अब विद्यमान है। सन् १७६० में अङ्गरेजोने फरासीसी अफसर लैलीको परास्त किया।

सन् १७६५ में मुगल बादशाह औरंगजेबने ईष्टइण्डिया कम्पनीको, उत्तरी सरकारोंको जिसमें गञ्जाम्, विजगापट्टन, गोदावरी और कृष्णा जिले हैं, दिया। जिसपर सन् १८८३ में अङ्गरेज सरकारका पूरा अधिकार होगया।

सन् १७६९ में मद्रासकी दीवारके पास अङ्गरेज हैदरअलीके साथ लड़े। वह लड़ाई सन्धि होजानेसे खतम हुई। दूसरी लड़ाईमें कभी अङ्गरेज लोग कभी हैदरअलीका विजय हुआ। सन १७८२ में हैदरअली मरगया। सन् १७९१ की तीसरी लड़ाईमें अङ्गरेजोंने हैदरअलीके पुत्र टीपूसे बङ्गलोरका किला छीन लिया, किन्तु दूसरे वर्ष टीपूने अङ्गरेजोंसे सन्धि करके अपनी राजधानीको बचाया। उस समय अङ्गरेजोंको बारमहाल, जो अब सालेम जिलेका एक भाग है, मालाबार, दिण्डीगल और पलनी, जो मदुरा जिलेके तालुक हैं, और कुंगुड़ी, जो उत्तरी आरकाट जिलेका तालुक है, मिल गये। सन् १७९९ में अङ्गरेजोंने टीपूसुलतानके साथ चौथी लड़ाई आरम्भ की। उस लड़ाईमें सुलतान मारागया, श्रीरङ्गपट्टनम् (राजधानी) अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगया, कोयम्बुतूर नीलगिरि, सालेम जिलेका शेष भाग, और दक्षिण किनारा जिलेका हिस्सा अङ्गरेजोंको मिला। उन्नीसवीं सदीके शुरूसे मद्रासमें कोई लड़ाई नहीं हुई, किन्तु कई वार बगावतें हुईं, जो सहजमें दबादी गई। सन् १८०० में हैदराबादके निजामने अनन्तपुर, बल्लारी, करनूल और कड़पा इन जिलोंको अङ्गरेजोंको दे दिया। उसके दूसरे वर्ष करनाटकके नवाबका देश, जो पूर्वी किनारेके पास नेल्लूरसे तिरुनलवेली तक फैला था, अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें होगया। करनाटकका अंतिम नवाब, जो सन् १८५५में मरा, वराय नामका नवाब था। सन् १८११ के तूफानके समय मद्रासमें ३ जहाज डूब गये और ९० अपने लङ्गड़ोंके पास नीचे चले गये। सन् १८३९ में करनूलके नवाब गद्दीसे उतार दिये गये उनका राज्य अङ्गरेजी राज्यमे मिल गया। सन् १८७२ में एक बड़ा तूफान आया, जिससे मद्रासमें ९ यूरोपियन जहाज और २० देशी जहाज डूब गये। उसके बाद सन् १८८१ में भी एक बडा तूफान आया था, जिससे बन्दरगाहकी बड़ी हानि हुई थी।

मैसूरके राज्यको, जो टीपूसुलतानके परास्त होनेपर मैसूरके हिन्दू राजाको फिर मिला था, सन् १८३१ में अङ्गरेज महाराजने अपने प्रबन्धमे करालिया था, किन्तु सन् १८८१ में वह राज्य वहाँके राजाको लौटा दिया गया। मद्रासके गवर्नमेण्टके अधीन मद्रास हातेमें तिरवांकूर, कोचीन, पुडुकोटा, वगनापल्ली और संडूर ये ५ देशी राज्य हैं।

## महाबली पुरके गुफामन्दिर।

मद्रास शहरसे करीब ३५ मील दक्षिण चेङ्गलपट्टके जिलेमें महाबलीपुरके गुफा-मन्दिर हैं। मद्राससे ६ मील दूर बाकिंघम नहरके पास गिंडी पुलतक घोड़ा गाड़ीकी सड़क है, उससे आगे नहरकी डोंगी द्वारा बारह चौदह घण्टेमें आदमी वहाँ पहुँच जाता है।

वलिपीठम् नामक एक छोटे गाँवके सामने नावसे उतरना चाहिये। नहरसे पूर्व, नहर और समुद्रके बीचमें बहुतसे चट्टानी गुफा मन्दिर और चट्टान काटकर बनी हुई मूर्तियाँ हैं, जिनके होनेके कारण महाबलीपुर प्रसिद्ध हुआ है। वहाँके सम्पूर्ण मन्दिर तथा मूर्त्तियाँ उन्हीं जगहोंके पत्थरमें पत्थर काट करके बनाई गई थीं। इनके बननेका सन् निश्चय नहीं है, किन्तु वे बहुत पुरानी हैं। वलिपीठम्से करीब १½ मील उत्तर सलुवन कुपन नामक गाँव, जहाँ आश्चर्य व्याघ्र गुफा है और दक्षिण महाबलीपुर नामक बडा गाँव हैं। नहर और समुद्रके बीचमें १½ मीलका फासिला है। सलुवन कुपनके १ मील दक्षिणसे उसके ४ मील दक्षिणतक महाबलीपुरके गुफा मन्दिर फैले हुए हैं।

बलिपीठम्के सामने उतरकर सीधे रास्तेसे ¾ मील जाने पर एक बस्ती मिलती है, जहाँ पत्थर काटकर लंगूरके कदके बन्दरोंका एक झुण्ड बना है। समुद्रकी तरफ जानेपर ३०० गज आगे बाई तरफ एक धर्मशाला मिलती है। इससे करीब ३० गज दूर दुर्गा-देवीकी एक मूर्त्ति है, जिसके बाये ४ और दाहिने ३ स्त्रियोंकी मूर्त्तियाँ है। उस स्थानसे १० गज दूर ४½ फीट ऊंचा आश्चर्य नक्काशीसे बना हुआ नीलवर्णका शिवलिङ्ग है। उससे ५ गज दूर एक नन्दी है। उस स्थानसे आगे जानेपर बालूपर दहिने बहुत सी झोपडियाँ और बाये मछुहोंका एक गाँव मिलता है। इसी तरह १½ मील जाने पर समुद्रके किनारेका मन्दिर मिल जाता है।

यह पहले महाबली चक्रवर्त्तीका मन्दिर था, और पीछे शिवमन्दिर हुआ। एक टूटे हुए हातेके भीतर मन्दिर है। मन्दिरके पास जगमोहन बना हुआ है। दरवाजेके सामने चट्टान काट करके शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति बनी हुई है। पूर्वकी दीवारके मध्य हिस्सेमें एक अष्टभुजी सूरत है। भीतरके हिस्सेमें एक गिरा हुआ लिङ्गम् ( शिवलिङ्ग ) है। मन्दिर १७ फीट ऊँचा, ९ फीट लम्बा और इतनाही चौडा है। मन्दिरका दरवाजा समुद्रके किनारे पर पानीसे करीब १० फीट ऊपर है, जिसके आगे दहिनी तरफ ७५ फीट दूर समुद्रके भीतर एक चट्टान पर १८ फीट ऊँचा पत्थरका टूटा हुआ ध्वजास्तम्भ है, जो पहिले इससे दूना ऊँचा रहा होगा। स्तम्भके पास पहुँचना कठिन है। मन्दिरके पश्चिम बगलके पास एक देवढ़ीमें करीब ११ फीट लम्बी विष्णुकी सूरत है।

किनारेके मन्दिरसे लगभग ६०० गज पश्चिम विष्णुका एक सादा मण्डपम् है, जिसके १२ गज दक्षिण एक सुन्दर तालाब है, जिसके चारो तरफ पानी तक पत्थरकी सीढ़ियां बनी हुई है। तालाबके मध्यमे एक छोटा मण्डपम् और उसके पास ब्राह्मणोंकी एक बस्ती तथा बहुतेरे वृक्ष है।

उस स्थानसे पश्चिमोत्तर बलिपीठम् गाँवसे ⅞ मील दक्षिण बाराहस्वामीका मण्डपम् है, जिसके आगे ४ स्तम्भ लगे है। मण्डपम्के दोनो बगलोंमे द्वारपाल बनाये गये हैं और मध्यमे हिरण्याक्ष दैत्यके ऊपर अपने दहिने चरणको रक्खे हुए बाराहजी खड़े हैं। सामनेकी दीवारमें वामन भगवान्‌की बहुत बडी मूर्त्ति पत्थर काटकर बनाई हुई है, उनका एक चरण नीचे और दूसरा ऊपर है। दोनों चरणोके पास पूजने वाले बने हुए हैं। दहिनेकी दीवारमें एक स्त्रीकी बड़ी मूर्ति है, जिसके दहिने व्याघ्र और बायें घडियाल बने हैं और बायेंकी दीवारमे लक्ष्मी बैठी है, जिनके ऊपर सूंडोंसे पानी गिराते हुए हाथी बने है। इनके अतिरिक्त उस मण्डपम्में विष्णु और दूसरे देवताओंकी कई सूरत बनी है। बाराह स्वामीके मण्डपम्से करीब ३० गज उत्तर गणेशजीका गुफामन्दिर है।

उस स्थानसे दक्षिण–पूर्वको फिरनेपर काट करके बनाया हुआ ३७ फीट ऊँचा एक चट्टान मिलता है, जिसको लोग अर्जुनका तपस्थान कहते हैं। देखने वालेके दहिनेके कमरेमें १३½ फीट ऊँचे हाथीके ऊपर पुरुष, स्त्री, और बानरोंकी ५७ मूर्त्तियाँ और ६½ फीट ऊँचे हाथीके नीचे हाथीके ३ बच्चे हैं। बायेंके कमरेमे ६१ मूर्त्तियाँ है, जिनमे अर्जुन सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। वह अपने हाथको अपने शिरके ऊपर रक्खे हुए बायें चरणकी एक

अंगुलीपर खड़े है। उनका शरीर बहुत दुबला है। अर्जुनके नीचे उसी प्रकारसे खडे हुए लम्बे कान वाले एक राक्षसकी मूर्त्ति है, उसके दहिने शिवकी वड़ी मूर्त्ति है।

उस चट्टानसे लगा हुआ देखनेवालेके बायें ४९ फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा एक गुफामन्दिर है। उसके भीतरके स्तम्भोंके ऊपरके भागमे सुन्दर नकाशीदार तीन तीन सिंह बने है। उसी दिशामे ४८ फीट लम्बा और २९ फीट चौड़ा एक दूसरा गुफामन्दिर है, जिसके भीतर बहुतसे स्तम्भ बनाये गये है; पीछेकी दीवारमे गोप, गोपियों और गौओका झुण्ड बना है, दहिने गोवर्द्धन पहाडीको अपने बायें हाथपर थांभे हुए कृष्ण खड़े है और मध्यमे एक पुरुष गाय दुहता है, जिसके साथमे एक बछडा है।

उससे करीव १५ गज दूर विष्णुका एक वडा मन्दिर है, जिसमे ब्राह्मण लोग पूजा करते है। वह मन्दिर पीछेसे आगे तक १६५ फीट लम्बा है। उसका गोपुर करीव ४४ फीट ऊँचा है। मन्दिरके पास हीन दशामे एक छोटा मन्दिर और उसके आगे विष्णुकी एक मूर्त्ति है। उससे पूर्व थोडी चढ़ाईपर रमणजीका मन्दिर मिलता है, जिसके अगवासमे ४ स्तम्भ बने हुए है। उस जगह पुराना संस्कृत अक्षरमें एक शिला लेख है।

उससे १½ मील दूर समुद्रकी तरफ मन्दिरोका एक झुण्ड है, जिसको लोग विमान कहते हैं। सडक बालूदार है। पहिले पत्थरमे बने हुए एक सिंह और एक हाथी मिलता है। वहाँ द्रौपदी, अर्जुन, भीम और धर्मराजके मन्दिर है।

पौन मील पश्चिमोत्तर एक चट्टानपर दुर्गाका मन्दिर है, जिसके ५६ फीट ऊपर एक छोटा मन्दिर है, जहाँ चढ़ना कठिन है। नीचेके मन्दिरसे महिषासुरको मारती हुई सिंहपर चढ़ी हुई दुर्गाजी और विष्णुकी मूर्त्ति है।

---

# बारहवाँ अध्याय।



## (मदरास हातेमें) चेंगलपट्ट, पक्षीतीर्थ, कांची, जिंजीका किला, विलीपुरम् जंक्शन, पाण्डीचरी, कड़ालूर, चिदम्बरम्, मायावरम् और नागपट्टनम्।

### चेंगलपट्ट।

मदरास शहरके रेलवे स्टेशनसे ३४ मील दक्षिण–पश्चिम और आरकोनम् जंक्शनसे ४० मील (कांचीवरम्मे २२ मील) दक्षिण-पूर्व चेंगलपट्टका रेलवे जंक्शन है। मदरास हातेके (१२ अंश, ४२ कला, १ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, १३ विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके किनारेके निकट चेंगलपट्ट जिलेके चेंगलपट्ट तालुकका सदर स्थान चेंगलपट्ट कसबा है, जिसको द्राविडियन लोग सेङ्गलपट्ट कहते हैं।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चेंगलपट्टमें ५६१७ मनुष्य थे, अर्थात् ५२८६ हिन्दू २३५ मुसलमान, ९५ कृस्तान और १ दूसरा।

चेंगलपट्टके किलेके एक भागमे होकर रेलवे निकली है और उसके भीतरही मुनसफी आदि सरकारी कचहरियां तथा मुजरिम लडकोका चरित्र सुधारनेके लिये एक सरकारी कैदखाना है। इनके अलावे चेगलपट्टमें क्षत्रम् अर्थात् धर्मशाला बङ्गला अस्पताल इत्यादि इमारत है। किलेके एक बगलमे दोहरी किलावन्दी और तीन बगलोंमें एक झील और दलदल है।

चेगलपट्ट जिला—इसके उत्तर नेल्लूर जिला, पूर्व बङ्गालकी खाडी, दक्षिण ओर दक्षिण आरकाट जिला और पश्चिम ओर उत्तर आरकाट जिला है। साधारण प्रकारसे इस जिलेकी भूमि समतल है। बहुतेरे स्थानोंमें समुद्रके निकटकी भूमि समुद्रके जलसे नीची है। भीतरकी ओरके मैदानोंमे जगह जगह नारियर और इमलीके वृक्षोके कुञ्जोंमे बस्तियाँ देख पडती है। पत्थरीली और ऊसर जमीनपर खजूरके वृक्ष और कटैली झाडियाँ लगी हुई हैं। जिलेके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास पहाडी सिलसिला है जिसकी सबसे ऊंची चोटी समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊची है। अनेक नदियाँ है, किन्तु सर्वदा नाव चलने लायक कोई नही है। जिलेकी झीलोमे पलीकाट झील प्रधान है, उसकी सबसे अधिक लम्बाई ३५ मील चौडाई तीन मीलसे ११ मील तक, तथा सबसे अधिक गहराई १६ फीट तक है। मदरास हातेके दूसरे भागोंकी अपेक्षा चेगलपट्ट जिलेमे सांप अधिक हैं। यह जिला मदरास हातेके स्वास्थकर जिलोमेसे एक है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चेंगलपट्ट जिलेके २८४२ वर्गमील क्षेत्रफलमे ९८१३८१ मनुष्य थे, अर्थात् ९३९३१४ हिन्दू, २५०३४ मुसलमान, १६७७४ क्रस्तान, ३२९ जैन तथा बौद्ध और ३० अन्य। हिन्दुओंमे शैव और वैष्णव दोनो प्रायः बराबर थे। क्रस्तानोंमें केवल २८५७ यूरोपिन और युरेशियन थे, बाकी सब देशी क्रस्तान थे। हिन्दुओं-में २४३५९७ परिया, जिसको परयनभी कहते है, १९०८७६ बनिया (जातिविशेष), १८१३१६ वेल्लाल, ५५२७१ इडैयन (भेड़िहर), ३५६६२ कैक्कलर (कपड़ा बिननेवाले) ३३०२६ ब्राह्मण, २१८०५ कुंभाडन (कारीगर), १८३९० सानान, १६८३५ सेट्टी (सौदागर), १६०२५ सेंवड़वन (मछुहा), १५०५९ कणक्कन (लिखनेवाले) और बाकीमें सतानी, बनान, अम्बटन कुसवन इत्यादि जातियोके लोग थे। इनमे क्षत्रिय केवल ६४३५ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चेगलपट्ट जिलेके कसबे कांजीवरम् अर्थात् कांचीमें ४२५४८ और सेंटथमसमांउट नामक फौजी छावनीमे १३१३७ मनुष्य थे। इनके अलावे जिलेमे तिरुवतपुर, तिरुवल्लूर, चेगलपट्ट और सैदापेट छोटे कसबे हैं। मदरास शहरके रेलवे स्टेशनसे ५ मील दक्षिण चेगलपट्ट जिलेका सदर स्थान सैदापेटका रेलवे स्टेशन है। चेंगलपट्ट जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—चेगलपट्ट जिला विजयानगरके राज्यका एक भाग था। सोलहवीं सदीके अन्तमें विजयानगरके एक राजाने चेगलपट्टके किलेको बनाया। लगभग सन् १६४४ में गोलकुण्डाके बादशाहने किलेपर अपना अधिकार जमाया। उसके बाद आरकाटके नवावने किलेको लेलिया। सन् १७५१ में किला चन्दासाहबके अधिकारमें हुआ था, किन्तु पीछे नवाबने इसको फिर लेलिया। सन् १७६० में आरकाटके नवाब महम्मदअलीने "ईष्टइण्डियन

कम्पनी" को २० वर्षके लिये इस जिलेको ठीका दिया। प्रथम इस जिलेकी भूमि कई जिलोंमें बँटी थी, किन्तु सन् १७९३ में एक जिलेमें कायम हुई। सन् १८०१ में आस पासकी भूमि इसमें जोड़ी गई।

## पक्षीतीर्थ।

चेगलपट्टके रेलवे स्टेशनसे ९ मील दूर एक पहाडीके ऊपर पक्षीतीर्थ है। स्टेशनसे उस पहाड़ीके पादमूल तक बैलगाडीकी सडक है। स्टेशनके पास सवारीके लिये बहुतसी गाड़ी तैयार रहती है। चेगलपट्ट होकर दक्षिण जानेवाले यात्रियोंमेंसे बहुत लोग पक्षीतीर्थ जाते है। पहाडीके नीचे धर्मशालाये बनी हुई है। सबेरेसे यात्रीलोग उस पहाडीपर एकत्र होते है। पण्डे लोग पक्षियोके खानेके लिये भोजन * तैयार करते है। नियमित समय मध्याह्न कालमे ( पाली हुई ) दो सफेद चील्ह ( कभी कभी एकही ) वहां आकर भोजन करके चली जाती है। यात्रीगण उनका दर्शन करते है। सफेद चील्हको क्षेमकरी और कोई २ दोनोंको लक्ष्मीनारायणभी कहते है उनका दर्शन मङ्गल सूचक है।

## कांची।

चेगलपट्ट जंक्शनसे २२ मील पश्चिमोत्तर और आरकोनम् जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पूर्व "सौथ इण्डियन रेलवे" पर कांचीवरम् अर्थात् कांचीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके चेगलपट्ट जिलेमें ( १२ अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४५ कला पूर्व देशान्तरमें ) कांचीवरम् तालुकका सदर स्थान कांचीवरम् कसबा है। यह मदरास हातेमें एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान और पवित्र सप्तपुरियोंमेंसे एक पुरी है। कांचीवरम् से पूर्वोत्तर मदरास शहर सड़क द्वारा ४६ मील और रेलवे द्वारा चेगलपट्ट जंक्शन होकर ५६ मील तथा आरकोनम् जंक्शन होकर ६१ मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कांचीवरम् में ४२५४८ मनुष्य थे, अर्थात् २०६१५ पुरुष और २१९३३ स्त्रियां। इनमे ४१०९२ हिन्दू, १३११ मुसलमान, ७६ क्रस्तान, ६८ जैन और १ अन्य थे। मनुष्य संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ९५ वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १३ वॉ शहर है।

रेलवे लाइनसे पश्चिम काचीवरम् कसवा है। रेलवेके स्टेशनसे १½ मील दूर बड़ा काचीवरम् अर्थात् शिवकाची और शिवकांचीसे लगभग २ मील दक्षिण-पूर्व तथा रेलवे स्टेशनसे लगभग २ मील दूर छोटा कांचीवरम् अर्थात् विष्णुकांची है। दोनों कांचीके बीचमे सड़कके बगलोमे प्राय लगातार मकान है। कांचीमें मामूली कचहरियॉ, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल इत्यादि सरकारी इमारतें बनी हुई हैं। वहाँ तामिल और कुछ तैलङ्गी भाषा प्रचलित है। शिवकाचीमे शैवलोग और विष्णुकाचीमें रामानुज संप्रदायके वैष्णव रहते हैं।

शिवकांची—शिवकाचीमे एकाम्रेश्वर शिवका बडा मन्दिर है। मन्दिरके २ बड़े घेरे है, जिनमेंसे पश्चिमके घेरेके मध्य भागमे शिवका निज मन्दिर है। उस गुम्बजदार छोटे मन्दिरकी तीन देवढीके भीतर एकाम्रेश्वर शिवलिङ्ग है। द्राविडके पॉच लिङ्गोंमेसे यह पृथ्वी लिङ्ग है। श्रीरङ्गमके पास जंबुकेश्वर जललिङ्ग, दक्षिणी आरकाट जिलेके तिरुवन्नामलईके पासकी

* भोजन एकमें खीर दूसरेमें घी दिया जाता है।

अरुणाचल नामक पहाड़ीपर अग्निलिङ्ग, कालहस्तीमें कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और चिदंवरम् में नटेश आकाशलिङ्ग है ) । एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ाया जाता वहांके पण्डे यात्रियोंसे दक्षिणा पानेपर उनकी तरफसे शिवके ऊपर फूल और बेलपत्र चढ़ाते है। यात्री लोग दरवाजेके बाहरसे शिवका दर्शन करते है । नियमित समय पर मन्दिरके आगे लड़कियाँ नृत्य करती है । मन्दिरके पीछे आम्रका एक पुराना वृक्ष है, जिसके नीचेके चबूतरे पर एक छोटे पत्थरमे "तपस्या कामाक्षी" की प्रतिमा खोदी हुई है, उसके पास एक मन्दिरमे कामाक्षीकी ताम्रमयी उत्सव मूर्त्ति है, निज मन्दिरके पास "सहस्र स्तंभ मण्डपम्" नामक विशाल मण्डप है, जिसमे २७ स्तम्भोंके २० पंक्तियोंमे ५४० स्तम्भ लगे हैं । मण्डपकी मरम्मत हो रही है ।

निज मन्दिरसे पश्चिम-दक्षिण और घेरेके पश्चिमकी दीवारके समीप एक छोटे मन्दिरमें शिवकी उत्सव मूर्त्ति धातुविग्रह है; जिसके सिंहासन, छत्र, मुकुट आदि सामान सुनहरे बने हुए हैं । उत्सवोंके समय इस प्रतिमाकी यात्रा होती है । जगमोहनमे ६४ योगिनियाँ खड़ी है । उस मन्दिरसे थोड़ी दूर एक मन्दिरमें बहुमूल्य वस्त्र भूषणोंसे सुसज्जित पार्वतीकी मूर्त्ति है । पश्चिमवाले गोपुरके पास पंक्तिमे १०८ शिव लिङ्ग है । पश्चिमवाले घेरेके पूर्व वाले गोपुरके निकट चिदंवर शिव और नन्दीकी सुनहरी विशाल मूर्त्ति है । इनके अतिरिक्त उस घेरेमें नवग्रह आदिके बहुतेरे मन्दिर और दीवारके नीचे बहुतेरे शिवलिङ्ग तथा उसके ऊपर पंक्तिसे बहुतसे नन्दी बैल है। दक्षिणकी दीवारमे एक बड़ा गोपुर है ।

उस घेरेके पूर्व उसमें लगा हुआ दूसरा घेरा है, जिसके पश्चिमोत्तरके भागमे तेपकुलम् नामक सरोवर है, जिसमे एक सुन्दर नाव रहती है । जेठ मासके प्रधान उत्सवमें शिव और पार्वतीकी उत्सव मूर्त्तियाँ इसीपर चढके जलक्रीड़ा करती हैं। उस समय वहाँ बडा मेला होता है, जिसमे लगभग ५० हजार यात्री आते हैं । घेरेके दक्षिणके बगलपर १० मञ्जिलका १८८ फीट ऊँचा एक विशाल गोपुर है । वह बाहरकी नेवके पास करीब १०० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है । उसके शिखरपर पंक्तिसे ११ कलश बने हुए है । उसके फाटकका चौकठ करीब ३५ फीट ऊँचा है, जिससे ऊपर चारो तरफ पत्थर खोदकर नीचेसे ऊपर तक मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। उसके सिरे पर चढ़नेसे चारो तरफका देश देख पडता है। द्रविडियन मन्दिरोंके घेरेके फाटकोंके ऊपर बडे बडे मन्दिरोंके समान शुंडाकार इमारत बनाई जाती है, उनको गोपुर कहदेते हैं । उनमें ग्यारह, नव, सात या इनसे कम मंजिलें होती है । ऐसाही गोपुर कांचीवरममे है ।

घेरेके बाहर बड़े गोपुरके सामने दक्षिण लगभग ७५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा एक उत्तम मण्डपम् है । उसके चारो बगलोमे १२ और मध्यमें ४ नकाशीदार बड़े बड़े स्तम्भ लगे है । उनकी नकाशीमें निकाल कर मूर्त्तियाँ बनाई हुई हैं । मण्डपम्के पास काष्ठका ऊँचा रथ रक्खा है, जिसके नीचेका भाग सुन्दर चित्रोंसे भूषित और ऊपरका शिखर नारियलके पत्तोंसे छाया हुआ है । रथयात्राके समय अचल देवताओंकी प्रतिनिधि चल मूर्त्तियाँ उस रथपर बैठाकर घुमाई जाती हैं ।

शिवकांचीमें सर्वतीर्थ नामक एक बड़ा सरोवर है, उसके चारो बगलोमे पानी तक सीढियां, मध्यमे एक छोटा मन्दिर और चारो तरफ जगह जगह शिवलिङ्ग और छोटे छोटे

मन्दिर है । यात्रीलोग सर्वतीर्थमें स्नान करके शिवका दर्शन करते हैं । अनेक यात्री सरोवरके किनारेपर पितरोंका तर्पण और पिण्डदान करते हैं । इसके अतिरिक्त शिवकांचीमें कई एक धर्मशाला और कई सदाव्रत हैं । बस्तीके पूर्व देवीका मन्दिर और बस्तीसे २½ मील दक्षिण पनार नदी है ।

विष्णुकांची—शिवकांचीसे २ मील दक्षिण-पूर्व और रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर विष्णुकांची है । विष्णुकांचीमें * वरदराज विष्णुका विशाल मन्दिर पत्थरका बना हुआ है । । वहाँ रामानुजीय सम्प्रदायके प्रतिवादि भयंकरकी गद्दी है और पुजारी, पण्डे सब लोग आचारी हैं । श्रीरामानुजस्वामी कुछ समय तक कांचीपुरीमें रहे थे ( १० वें अध्यायमें भूतपुरीकी कथामें देखिये ) ।

वरदराजके मन्दिरका घेरा लगभग ११०० फीट लम्बा और ७०० फीट चौड़ा है, जिसके भीतरकी भूमि २८ बीघेसे कुछ अधिक होती है । घेरेके बाहरकी दीवार लगभग २० फीट ऊँची है । घेरेके पूर्व बगलमें ११ खनका और पश्चिम बगलमें ९ खनका गोपुर देख पडता है, किन्तु गोपुरोंके भीतर इनसे बहुत कम तह हैं । पूर्ववाला गोपुर, जो विष्णुकांचीके सब गोपुरोंसे बडा है, नेवके पास लगभग १०० फीट लम्बा और ६० फीट चौडा है । फाटकोंके ऊपर गोपुरोंके चारो बगलोंपर नीचेसे ऊपर तक पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ तथा कारीगरीकी वस्तुयें बनाई हुई हैं । हातेकी दीवारोंपर तामिल अक्षरोंमें शिला-लेख हैं, जिनको लोग इमारत बनानेवालोंके निशान कहते हैं । पश्चिमवाले गोपुरसे बाहर एक सुन्दर रथ रक्खा है, जिसपर वैशाखके उत्सवके समय भगवान्की प्रतिनिधि चल मूर्त्ति बैठाकर घुमाई जाती है ।

( १ ) पश्चिमके गोपुरके फाटकके दोनों बगलोंमें तामिल अक्षरोंमें संस्कृत लेख है, जिसको लोग ग्रन्थी कहते हैं । उस फाटकसे प्रवेश करनेपर फाटकके पास बाईं ओर नीले पत्थरोंसे बना हुआ उत्तम मण्डपम् देख पडता है, जो कांचीपुरीमें उत्तम बनावटका काम है । मण्डपम् चारों ओरसे खुला हुआ है । उसमें १२ स्तम्भोंके ८ कतारोंसे ९६ पायादार स्तम्भ बने हुए हैं, जिनके नीचेके भागोंमें पूरे कदके बहुतसे अपूर्व घोडे और परदार घोड़े, जिन पर सवार बैठे हैं, सिंह, शार्दूल, बाज, मनुष्य इत्यादि पत्थरमें निकाल करके बने हुए हैं । मण्डपम्के मध्यमें पत्थरका सिंहासन है, जिसपर गर्मीके उत्सवके समय भगवान्की चल मूर्त्ति बैठाई जाती है । उस मण्डपम्के उत्तर एक छोटा मण्डप और कोटितीर्थ नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारों बगलोंमें नीचे तक पत्थरकी सीढ़ियाँ और मध्यमें एक छोटा मण्डप बना हुआ है । यात्रीगण सरोवरमें स्नान करते हैं । पश्चिमवाले गोपुरके सामने पूर्व, वरदराजके निज मन्दिरके घेरेका गोपुर, पूर्वके गोपुरके भीतर उसके पश्चिमोत्तर एक बड़ा सरोवर है और बडे घेरेके भीतर जगह जगह मकान, मण्डपम् तथा ताड़, खजूरके वृक्ष हैं ।

( २ ) भीतरका दूसरा घेरा पूर्वसे पश्चिमको लगभग ३७५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको २५० फीट चौडा है । उसके पश्चिमकी दीवारमें एक छोटा गोपुर है जिसके सामने बाहर एक बुर्ज ( जिसपर उत्सवोंके समय सैकड़ों दीप जलाये जाते हैं ) और सुनहरा गरुड़

* विष्णुकांचीके रहनेवाले सुप्रसिद्ध बादशाह शाहजहांके पण्डितराज जगन्नाथके प्रतिवादी अप्पय्य दीक्षितने वरदराजस्तव बनाया है ।

# विष्णुकांची के मंदिर का नक्शा.

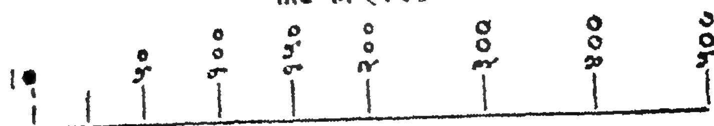
उत्तर

मडप

कोटितीर्थ

पोखरा

फीट का स्केल.



स्तम्भ खड़ा है। उस घेरेके भीतर चारोंओर मकान, दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास लक्ष्मीजीका मन्दिर और पश्चिमोत्तरके कोनेके पास भगवान्के वाहनोंके मकान है, जिनमें हनूमान, हस्ती, घोड़ा, गरुड़, बन्दी, मयूर, व्याघ्र, सिंह और शरभकी प्रतिमायें रक्खी हुई है। इनमेंसे कई वाहनोंपर चाँदी तथा सोनेका मुलम्मा है। शरभ कौन जानवर है, यह बात बहुत लोग नहीं जानते है। लिङ्गपुराणके ५८ वे अध्यायमें लिखा है कि शरभ सिंहोंका स्वामी है, और ९६ वाँ अध्यायमें है कि वीरभद्रने शरभका रूप धारण किया उसका आधा शरीर मृगका और आधा पक्षीका और बडे बड़े पंख, तीखी चोंच और ४ पाद थे, वैशाख मासके आरम्भसे एकादशी तक भगवान्की प्रतिनिधिरूप उत्सवमूर्त्ति प्रतिदिन एक एक वाहनके सिंहासनपर बैठकर इधर उधर निकलती है। उस समय विष्णुकांचीमें यात्रियोंकी बड़ी भीड़ होती है।

(३) तीसरे घेरेके पश्चिमकी दीवारमें फाटक है, जिसके सामने पूर्व वरदराजके निज मन्दिरके चबूतरेमें लगा हुआ योगनृसिंहका छोटा मन्दिर है। उस घेरेके चारों बगलोंमें मकान, दक्षिणपूर्वके कोनेके पास भगवान्की पाकशाला, पूर्वोत्तर एक कूप, उत्तर तरफ असबाव रखनेका गृह और मध्यमें हस्तीगिरि नामक ऊँचे चबूतरेपर वरदराजका मन्दिर है।

एकसौ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा हस्तगिरि नामक चबूतरा है, जिसपर चढ़नेके लिये दक्षिण–पूर्वके कोनेके पास २४ सीढ़ियाँ बनी हुई है। चबूतरेके ऊपर उसके पूर्वके किनारेके पास वरदराजका विमान अर्थात् निज मन्दिर पूर्व मुखसे खडा है। चारों तरफ मन्दिरके आगे जगमोहन और चारोंओर छतके नीचे परिक्रमाकी जगह है। परिक्रमामे विमानसे पूर्वोत्तर पत्थरका एक सिंहासन है।

विमानकी तीन देवढ़ीके भीतर ४ हाथसे अधिक ऊँची वरदराज भगवान्की श्यामल चतुर्भुज मूर्ति खडी है। भगवान्के गलेमें बहुमूल्य अनेक सुवर्ण भूषण और चमकीले शालग्रामोंकी माला, शिरपर सुनहरे मुकुट और अङ्गमें बेशकीमती भूषण वस्त्र लगे हैं। उनके समीपकी उत्सव मूर्त्तियाँ भी बहुमूल्य भूषण वस्त्रोंसे सज्जित हैं। नियत समयपर दूसरी देवढ़ीसे यात्रियोंको दर्शन मिलता है। वहाँका पुजारी एक रुपया पानेपर यात्रीकी तरफसे भगवान्को पुष्प और तुलसीपत्र चढ़ाकर उनकी आरती करदेता है। जो नहीं रुपया देता है वह दर्शन करके चला जाता है।

विष्णुकांचीके मन्दिरके खजानेमें वहाँके देवताओंके बहुमूल्य भूषण रक्खे हुए है। उनमें सोनेके ५ कुण्डा और किरीटोमे बहुतेरे पन्ना. हीरा और लाल जड़े हुए हैं, जिनमेसे प्रत्येकका दाम ५००० से १०००० रुपये तक लगा है। लक्ष्मीके बाल बाँधनेके लिये डेढ़ इञ्च चौडा रत्न जड़ा हुआ नागसेन नामक एक सिरबन्द अर्थात् पट्टी, लाल मोती और पन्नेसे बने हुए अनेक प्रकारके हार और बहुतसी गलेमें पहननेकी सोनेकी सिकरी है। प्रत्येकका दाम ८०० से १००० रुपये तक कहा जाता है। एक आचारीका दिया हुआ७००० रुपयेका मकर कंठा है। रत्न जडे हुए सोनेके पायताबे और एक मकर कंठा अर्थात् गलेका भूषण ८९०० रुपयेका है। लोग कहते हैं कि इसको लार्ड क्लाइवने दिया था। इनके अतिरिक्त और भी कई बहुमूल्य भूषण है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—(कर्णपर्व १२ वाँ अध्याय) काचीके क्षत्रियगण कुरुक्षेत्रके संग्राममे पाण्डवोंकी ओर होकर कौरवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे।

वामनपुराण—( १२ वाँ अध्याय ) नगरोंमे श्रेष्ठ काचीनगर और पुरियोंमें श्रेष्ठ द्वारिकापुरी है।

देवीभागवत—( सातवा स्कंध, ३८ वां अध्याय ) कांचीपुरमें भीमादेवी और विमलादेवीका स्थान है।

श्रीमद्भागवत–(दशमस्कन्ध, ७९ वाँ अध्याय) बलदेवजी श्रीशैल और वेंकटेश पर्वतका दर्शन करके काचीपुरीमे गये।

गरुडपुराण–( पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय ) कांचीपुरी एक उत्तम स्थान है। ( प्रेतकल्प २७ वाँ अध्याय ) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका और द्वारिका ये ७ पुरियां मोक्ष देनेवाली हैं।

पद्मपुराण–( स्वर्गखण्ड, ५७ वाँ अध्याय ) विराट्पुरुषके सात धातुओंसे सातों पुरियां है। ( सृष्टिखण्ड, १४ वां अध्याय ) महादेवजी सब प्रदेशोंमें पर्यटन करते हुए कांचीपुरीमें गये। ( पातालखण्ड, १७ वें अध्यायसे २२ वें अध्याय तक ) लोकमें प्रसिद्ध कांची नामक पुरी है। उसमें रत्नग्रीव नामक राजा राज्य करता था। वह अपने पुत्रको राज्य देकर पुरुषोत्तमजीके दर्शनको चला और गङ्गासागर संगमके निकट नीलपर्वतपर पुरुषोत्तमजीका दर्शन करके विमानमें बैठ वैकुण्ठको चला गया।

शिवभक्तविलास–( दूसरा अध्याय ) दक्षिण देशमे ब्रह्मा, विष्णु और मुनियोको सिद्धि देने वाली कांची नामक नगरी है, जहां जगत्को उत्पन्न करनेवाली कामाक्षी देवी विराजती है। वहाँ एकाम्र वृक्षके नीचे तप करने पर शिव भगवान्का दर्शन होता है और मुनि लोग कामाक्षीनाथ महादेवकी आराधना करके शीघ्रही तपकी सिद्धि प्राप्त करते हैं। ( ५० वाँ अध्याय ) हरदत्त ब्राह्मणने कांचीपुरमें जाकर एकाम्र वृक्षके मूलमें स्थित देवीकी स्तुति की।

इतिहास–चीनका रहनेवाला हायनशांग सन् ६२९ से ६४५ ईस्वी तक हिन्दुस्तानमें रहा था, उसने लिखा है कि कांचीवरम् बौद्धोंके अधीन द्राविडकी राजधानी एक प्रसिद्ध नगर है। पल्लव वंशके राजाओके राज्यका प्रसिद्ध कसबा कांचीवरम् हुआ था। उनका प्रधान किला पुरल्लूरमें था। ७ वीं सदीमें पल्लव वंशके राजाओंका प्रताप बढा चढ़ा था। ८ वी अथवा ९ वीं सदीमें चोला वंशके राजाओंने पल्लव वंशके राजाओंको निर्बल करदिया और कांचीपुरीको अपनी राजधानी बनाया। १४ वीं सदीमें यह विजयानगरके राजाके अधिकारमें हुआ। १६ वी सदीके आरम्भमें विजयानगरके राजा कृष्णरायने कांचीवरम्के दो बड़े मन्दिरोंको, जो द्राविड़के सबसे बड़े मन्दिरोंमेंसे हैं, बनवाया और दक्षिणीय भारतके बड़े मन्दिरोंमेंसे अनेकको सुधरवाया तथा बढ़वाया। ऐसा प्रसिद्ध है कि कांचीवरम्, चिदंबरम् और श्रीरंगम्के बडे गोपुरोंको इन्हींने बनवाया था। पीछे उनके वंशके लोगोंने वहाँके छोटे मन्दिरोंको बनवाया। सन् १६४४ में विजयानगरके राज्यकी घटतीके समय कांचीवरम् गोलकुण्डाके मुसलमान बादशाहके अधिकारमें था। पीछे एक समय यह आरकाट राज्यके अधीन हुआ था। सन् १७५१ में ईष्टइण्डियन कम्पनीके गवर्नर लार्ड क्लाइवने आरकाटसे लौटती समय फरासीसियोंसे कांचीवरम्को छीन लिया।

# जिंजीका किला।

चेंगलपट्ट जंक्शनसे कई मील दक्षिण पनार नदीपर रेलवे पुल और ४१ मील दक्षिण पश्चिम टिंडीवरम्का रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे १८ मील पश्चिम मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें जिंजीका प्रसिद्ध पहाडी किला है।

किलेमें मजबूतीके साथ किलाबन्दी कीहुई ३ पहाड़ियां हैं, जिनमें सबसे अधिक ऊँची और प्रसिद्ध राजगिरि नामक पहाड़ी है। यह आस पासकी भूमिसे पांच छः सौ फीट ऊँची होगी। किलेके भीतर उत्तम इमारतोके कई एक खण्डहर हैं, जिनमेंसे कल्यान महलमें मोरव्वा आँगनके बगलोंमे सुन्दर कमरे बने हुए है। यह गवर्नरकी स्त्रियोके रहनेके लिये बना था। मध्यमे आठ मञ्जिला टावर है। राजगिरिके ऊपर एक बडी तोप पडी है, जिसकी नक्काशीमें ७५६० सूरते बनी हुई है।

इतिहास—पन्द्रहवी सदीके अन्तमे, जब बिजयानगरका प्रताप चमका था, तब यह किला उसके अधिकारमे था। सन् १५६४ में डेकानके मुसलमान बादशाहोने विजयानगरके राजाको परास्त करके किलेको ले लिया।

सन् १६७७ में यह किला शिवाजीके हाथमे आया और ३१ वर्ष तक मरहटोंके अधिकारमें रहा। सन् १६९८ में औरङ्गजेबने किलेको ले लिया। सन् १७५० मे फरासी-सियोंने रातमें अकस्मात् आक्रमण करके किलेको ले लिया और ११ वर्ष तक यह उनके अधीन रहा। अन्तमे किला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमें होगया।

# विलीपुरम् जंक्शन।

टिण्डीवरम्के स्टेशनसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम विलीपुरम्का रेलवे स्टेशन है। मद-रास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें विलीपुरम् एक कसवा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ८२४१ मनुष्य थे। विलीपुरम् जंक्शनसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है,—

(१) विलीपुरम् जंक्शनसे उत्तर "साउथ इण्डियन रेलवे" जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४२ तिरुवन्नामलई।

९३ वेल्लूर।

९९ कटपड़ी जंक्शन।

१३८ पकाला जंक्शन।

१५७ चन्द्रगिरि।

१६४ तिरुपदी।

१७८ रेणुगुण्टा जंक्शन।

(२) पूर्व सौथ इण्डियन रेलवे पर १० मील कन्दमङ्गलम् और २४ मील पांडीचरी।

(३) विलीपुरम्से दक्षिणकी ओर सौथ इण्डियन रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ पनरुटी।

२७ कडलूर नया।

२९ कडलूर पुराना।

४६ पोर्टो नोवे।

५३ चिदंवरम्।

६३ सियाली।

६८ स्वर्णकोइल।

७६ मायावरम् जंक्शन।

९५ कुम्भकोणम्।
१२० तञ्जोर जंक्शन।

मायावरम जंक्शनसे दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुट्टूपेटै। तिरुवालूरसे पूर्व १५ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३५ मील तञ्जोर जंक्शन और ६६ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन।

(४) विलीपुरम् जंक्शनसे पूर्वोत्तर सौथ इण्डियन रेलवे,—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
२३ टिण्डीवरम्।
६४ चेङ्गलपट्ट जंक्शन।
९३ सैदापेट।
९८ मदरास शहर।

चेंगलपट्ट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २२ मील कांची और ४० मील आरकोनम् जंक्शन है।

## पांडीचरी।

विलीपुरम् जंक्शनसे २४ मील पूर्व पांडीचरीका रेलवे स्टेशन है। फरासीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी राजधानी पांडीचरी एक शहर है जिसको पट्टूचारी भी कहते हैं।

गोराकी वस्ती, जिसमें अच्छी अच्छी इमारतें हैं, समुद्रके पास है। शहरकी एक तरफ गोरावस्ती और दूसरी तरफ देशी वस्ती है। उत्तर वगलके पास समुद्रसे ३०० गजसे कम फासिले पर गवर्नमेण्ट हाउस एक खूबसूरत इमारत है। पांडीचरीमें एक लाइटहाउस है, जिसकी रोशनी समुद्रसे ८९ फीटकी ऊँचाई पर होती है। हाईकोर्ट एक खूबसूरत इमारत है। अस्पतालके उत्तर मिशनरियोंका चर्च, फिर उसके उत्तर ४५० विद्यार्थियोंका स्कूल है। कैदखानेमे साधारण प्रकारसे ३३० कैदी रहते हैं। उसके सामने घड़ीका टावर है। पवलिक वाग भी देखने लायक है।, इनके अलावे पांडीचरीमें नया वाजार, वारक, टाउनहाल, एक कालिज, एक लाइब्रेरी और २ देवमन्दिर हैं। जहाजोंसे उतरनेके स्थानके पास एसप्लानेडमे फरासीसियोके गवर्नर डुप्लेकी सुन्दर प्रतिमा खड़ी है।

फरासीसियोका राज्य—फरासीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यका क्षेत्रफल १७८ वर्गमील है। जिसमें सन् १८९१ में २८४५६८ मनुष्य थे पांडीचरीके हाकिमके अधीन पाण्डीचरीके सिवाय मद्रास हातेके तञ्जोर जिलेमें ट्रंकूवारके दक्षिण कारीकाल, गोदावरी जिलेमें अनाम और मलेवार जिलेमे माही और वङ्गाल हातेके हुगली जिलेमें चन्दरनगर है।

खास पाण्डीचरी राज्यका क्षेत्रफल ११५ वर्गमील है, जिसमे ९३ बड़े और १४१छोटे गाँव बसे हुए हैं, जिनमे सन् १८८२ में १४१००० मनुष्य थे। पाण्डीचरी राज्यके वगलोंमें दक्षिणी आरकाट जिलेका कड़ालूर तालुक है। पाण्डीचरीका गवर्नर १६००) रुपये, एटरनी जनरल २००) रुपये और ४ सिनियर जज चार चार सौ रुपये मासिक तनखाह पाते हैं। सन् १८८३ में फरासीसी सरकारको पाण्डीचरी राज्यसे लगभग ५७५००० रुपया मालगुजारी मिली थी।

इतिहास—सन् १६७२ ई० में फरासीसियोंने हिन्दुस्तानमे अपने आनेके ७१ वर्ष पीछे विजयानगरके राजासे पांडीचरी एक छोटा गाँव खरीदा। सन् १६७४ में कसवा कायम हुआ। सन् १६९३ में हालेण्ड वालोंने पाण्डीचरीको छीन लिया था; किन्तु सन्

१६९७ में एक सुलह नामेके मुताबिक तरकी की, किलाबन्दियोंके साथ उसने फरासीसियोंको वापस दिया। सन् १७४८ में अङ्गरेजी अफसरने ६००० फौजके साथ इसपर महासरा किया; लेकिन ४१ दिनोंके पीछे १०६५ यूरोपियनोके मारे जानेपर उसने अपना घेरा उठा लिया।

सन् १७६० की जुलाईके आरम्भमे अङ्गरेजी अफसर कर्नेल कूटने २००० यूरोपियन और ६००० देशी सेनाओंके साथ पाण्डीचरीका महासरा किया और ता० ९ सितम्बरको अङ्गरेजी मदद पहुँचनेपर सरहदी झाड़ी और किलेबन्दीके ४ हिस्सोंमेंसे ३ को लेलिया। ता० २७ नवम्बरको फरासीसियोंका अफसर मिष्टर लैलीने रसद और गल्लेकी कमती देखकर शहरके निवासियोको, जो १४०० थे, निकाल दिया। उन्होंने अङ्गरेजो द्वारा खदेरे जानेपर फिर किलेमें प्रवेश करनेकी कोशिश की; किन्तु फरासीसियोने चन्दूको गोलीसे मार कर उनको जाने नहीं दिया। वे लोग ८ दिनों तक दोनों फौजोकी लाइनोंके बीचमें भटकते फिरे, अन्तमें अङ्गरेजोंने उनको बाहर जानेका हुक्म दे दिया। सिलोन और मदरासमे अङ्गरेजोके लडाईके अनेक जहाज आ जानेपर फरांसीसियोको छुटकारा होनेकी आशा जाती रही। तारीख १६ दिसंम्बर को, जब उनके पास केवल २ दिनके भोजनकी सामग्री थी, फरांसीसी लोग परास्त हुए। सन् १७६३ में अङ्गरेजोने फरांसीसियोंको पाण्डीचरी छोड़ दी।

सन् १७७८ के ९ अगस्तको अङ्गरेजी अफसर सर हेक्टर मनरोने १०५०० फौजके साथ, जिनमे १५०० यूरोपियन थे, पाण्डीचरीपर फिर महासरा किया। सख्त रुकावटके बाद अकतूबरके बीचमें पाण्डीचरीके फरांसीसियोकी हार हुई। सन् १७८३ में वह फिर फरांसीसियोको दी गई। सन् १७९३ के २३ अगस्तको अङ्गरेजोने पाण्डीचरीको लेलिया; किन्तु सन् १८०२ के सुलहनामेसे वह असली मालिकको फिर लौटा दी गई। सन् १८०३ में अङ्गरेजी सरकारने फरांसीसियोंसे पाण्डीचरीको छीनकर अपने आरकाटके राज्यमें मिला लिया, उससे वार्षिक ४५०००० रुपया वसूल होने लगा। पीछे एक सन्धि होनेपर अङ्गरेजोने सन् १८१७ में फरांसीसियोको पाण्डीचरी लौटा दी, तबसे वह उनके अधिकारमें चली आती है।

## कड़ालूर।

विलीपुरम् जक्शनसे दक्षिण-पूर्व २७ मील नया कडालूर और २९ मील पुराना कड़ालूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें पाण्डीचरी कसबेसे १६ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर कड़ालूर तालुकमें दक्षिणी आरकाट जिलेका सदर स्थान कडालूर एक कसबा है, जिसको द्रविडियन लोग कड़लूर कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कड़ालूरमें ४७३५५ मनुष्य थे; अर्थात् २३१९७ पुरुष और २४१५८ स्त्रियाँ। इनमें ४३३८९ हिन्दू, २१०४ मुसलमान, १७८५ कृस्तान और ७७ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ८० वाँ और मदरास हातेमे १० वाँ शहर है।

कडालूरमें जिलेकी सदर कचहरियाँ, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारतें हैं। कड़ालूरका पुराना कसबा, जिसमें देशी लोग बसते हैं, यूरोपियन लोगोंकी बस्ती अर्थात् नया

कडालूरसे २ मील दक्षिण नीची भूमिपर है, जिसमें बहुतसे सुन्दर मकान बने हुए हैं। उसमें जेलखाना, गिरजा, रेलवेका कारखाना, बारक ( अब खाली पड़ा है, ) तथा समुद्र संबंधी बहुतसे तिजारती आफिस है। यूरोपियन लोगोंकी बस्ती ऊंची जमीनपर बसी है। वहां बड़े मैदानमें जगह जगह सरकारी आफिस बने हुए हैं और सडकोंके बगलोंमें वृक्ष लगे है। कडालूरके पास एक नदीके बायें किनारेपर सेंट डेविडका किला उजाड़ पडा है। किलेकी खाई प्राय भर गई है; बहुतेरे स्थानोंमे किलेकी दीवारें गिर गई है। नया कडालूरके स्टेशनसे उतरकर किलेको देखना चाहिये । कडालूरमें तेल, चीनी और नील तैयार होते है, इनकी वहा बडी सौदागरी होती है। नदीके मुहानेके पास मट्टी पड़ जानेके कारण केवल देशी नाव कसबेके पास तक आती हैं।

दक्षिणी आरकाट जिला—इसके उत्तर चेंगलपट्ट और "उत्तर आरकाट" जिला, पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण तिरुचनापल्ली और तञ्जोर जिला और पश्चिम सेलम जिला हैं। दक्षिणी आरकाट जिलेकी सीमाके भीतर फरासीसियोंके पाण्डीचरीका राज्य है। जिलेमें नाव चलने लायक ३ छोटी नदियां है। जिलेके जङ्गलोंमें कुछ कुछ हाथी, बाघ और भालू तथा बहुतसे तेंदुये, सुअर इत्यादि बनैले जन्तु हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी आरकाट जिलेके ४८७३ वर्गमील क्षेत्रफलमें १८१४७३८ मनुष्य थे, अर्थात् १७२१६१४ हिन्दू, ४८२८९ मुसलमान, ३९५७१ कृस्तान; ५२६१ जैन और बौद्ध और ३ अन्य । हिन्दुओंमे ५९२३८० वनिया ( जाति-विशेष मजदूरी पेशे वाले ) ४२७७४५ परिया ( परयन् ), २४५०४४ वेल्लाल ( खेतिहर ) ९९८०९ इडैयन, ४४४१९ कैकलर ( कपड़ा बिनने वाले ), ४१६६९ कम्भाडन (कारीगर) ३४५५५ ब्राह्मण ३२७१४ चेटी ( सौदागर ) २०००५ बनान ( धोबी ), १९२१७ अम्बा-टन ( नाई ), १९१७९ सेवड़वन ( मछुहा ), १५०५९ सानान ( मदक ), १३११८ सतानी, ११३४२ कुसवन ( कुम्भार ), १०४३४ कणक्कन ( लिखनेवाले ), ३५४२ क्षत्रिय और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। हिन्दुओंमें सैकड़े पीछे ५३ शैव, ४५ वैष्णव और २ अन्य मतके लोग थे। दक्षिणी आरकाट जिलेके ब्राह्मण जमींदारी और सरकारी नोकरी करते हैं। चेटी जातिके लोगोंमे बहुत धनी है, कोरवा जातिके लोग जो चोरीका पेशा करते हैं। सूअरोंके झुण्डके साथ घूमा फिरा करते है और दौरी बनाते है। पहाडी देशोंमे मलयाली, इरुला और विलियर जाति बसते है। इस जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी आरकाट जिलेके कसबे कड़ालूरमें ४७३५५, चिदंबरम्में १८६४०, पोर्टोनोवेमे १४०६१ और तिरुवन्नामलईमे १२१५५ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त पनरुटी, विलीपुरम्, वृद्धाचलम् आदि कई कसबे है।

पुराना कड़ालूरके रेलवे स्टेशनसे १७ मील दक्षिण पोर्टोनोवेका रेलवे स्टेशन है। समुद्रके किनारेपर एक नदीके मुहानेके पास पोर्टोनोवे एक बन्दरगाहका कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४०६१ मनुष्य थे। कसबेमें चटाई बहुत बनती हैं और बन्दरगाह द्वारा सौदागरी होती है।

तिरुवन्नामलई कसबेके पास तिरुवन्नामलई नामक पहाड़ी है, जिसको अरुणाचलम्भी कहते हैं। उसी पहाडीके नामसे कसबेका नाम तिरुवन्नामलई पड़ा है। उसी पहाड़ीके ऊपर द्राविड़ देशके ५ प्रसिद्ध शिवलिङ्गोंमेसे अग्नि लिङ्गका मन्दिर है।

इतिहास—सन् १६८३ में ईस्टइण्डियन कम्पनीने जीजीके खांसे इजाजत लेकर कड़ालूरमें अपनी कोठी बनाई और उसके दूसरे साल बन्दरगाह और किला बनानेके लिये भूमिका ठेका लिया। सन् १६८७ में कम्पनीने महाराष्ट्रोंसे "फोर्टसेट डेविड" की भूमि और उसके पडोसकी बस्तियोंको खरीदा। कोठी बनानेके १० वर्षके भीतर, जब सौदागरी की बडी तरक्की हुई कम्पनीने अपनी रक्षाके लिये कडालूरमें सेंटडेविड नामक किला बनवाया और अपनी कोठियोंको फैलाया। मदरास शहरके निर्बल होनेपर हातेका सदरस्थान कड़ालूर बना था। सन् १७५२ में फिर मदरास शहर सदर स्थान हुआ। सन् १७५८ में फरांसीसियोंने अङ्गरेजों से कडालूरको छीनकर वहाके किलेका विनाश करदिया। सन् १७६० मे कडालूर फिर अङ्गरेजोके अधिकारमें हुआ। सन् १७८२ में टीपू सुलतान और फरांसीसियोंने कडालूरपर अपना अधिकार करलिया। और आक्रमणोके रोकनेके लिये किलेको दुरुस्त करवाया। १७८५ में अङ्गरेजोने एक लडाईमे फरांसीसियोको परास्त करके कड़ालूर और किलेको छीन लिया। सन् १८०१ मे जब करनाटक अङ्गरेजोके अधिकारमे होगया, तब दक्षिणी आरकाट एक जिला बनाया गया।

# चिदम्बरम्।

पुराने कडालूरके रेलवे स्टेशनसे २४ मील विलीपुरम् जंक्शनसे ५३ मील और मदरास शहरसे १५१ मील दक्षिण चिदम्बरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें (११ अंश, २४ कला, ९ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४४ कला, ७ विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके पूर्वी किनारेसे ७ मील पश्चिम चिदम्बरम् तालुकका सदर मुकाम तथा एक पवित्र स्थान चिदम्बरम् है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चिदम्बरम् कसबेमें १८६४०मनुष्य थे, अर्थात् ९०७९ पुरुष और ९५६१ स्त्रियाँ। इनमें १७४२२ हिन्दू, ११०२ मुसलमान, १०७ क्रस्तान और ९ जैन थे।

रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर चिदम्बरम् कसबा है। कसबेमें सरकारी कचहरियाँ, पोस्ट आफिस, मोदियोंकी दूकानें और अनेक धर्मशालायें है। रेलवेकी ओर एक छोटी नदी बहती है। निवासियोंमेंसे चौथाई लोगसे अधिक कपडे और रेशमी वस्त्र बिननेका काम करते हैं। चिदम्बरमें एक बडा मेला होता है, जिसमें ५०००० से ६०००० तक यात्री तथा सौदागर आते है।

नटेश शिवका मन्दिर—चिदम्बरम् कसबेके उत्तर ३९ बीघे भूमिपर नटेश शिवका मन्दिर है। ३० फीट ऊँची २ दीवारोंके घेरेके भीतर नटेशके निज मन्दिरका घेरा, पार्वतीका मन्दिर, शिवगङ्गा नामक सरोवर और अनेक मण्डप तथा मन्दिर हैं। बाहरकी दीवारके भीतरकी भूमिकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक करीब १८०० फीट और चौडाई पूर्वसे पश्चिम तक १५०० फीट है। बाहरकी दीवारमें चारों दिशाओंमें एक एक छोटे गोपुर हैं।

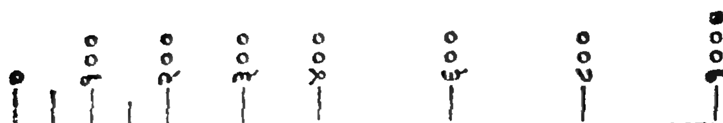
## नटेश के मंदिर का नक्शा

० ५ ६ ७ ८

क ख ग घ ८

१ २ ५

फीट का स्केल



भीतरवाली दीवारके अन्तरकी भूमि लगभग १२०० फीट लम्बी और ७२५ फीट चौडी है। उस घेरेके चारों बगलोंपर करीब ११० फीट लम्बे ७५ फीट चौड़े और १२२ फीट ऊँचे एक एक नव मंजिले गोपुर है। चारों गोपुर प्रतिमाओंसे पूर्ण और चित्रोंसे चित्रित हैं। उनके नीचे ४० फीट ऊँचे ५ फीट मोटे ताम्बेके पत्तर जड़े हुए पत्थरके चौकठ लगे हैं। दीवारके भीतर चारों तरफ दो मञ्जिले मकान और दालान और मध्यमें नटेशके निज मन्दिरका घेरा और शिवगङ्गा सरोवर तथा बहुतसे मन्दिर, मण्डप है, जिनका वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है, नीचेके नम्बरके अङ्कोको नकशेसे मिलाकर देखिये। उस घेरेके भीतर जूता पहनकर कोई नही जाता है।

(१) दक्षिणके बडे गोपुरसे प्रवेश करना होता है, बायें तरफ दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास एक मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्ति है।

(२) गोपुरके सामने उत्तर एक छोटे मन्दिरमें बडा नन्दी है, जिसके पास एक अन्य देवताका स्थान है।

(३) कोई वाहन है।

(४) शिवका खास मान्दिर भी दो दीवारोंसे घेरा हुआ है। उस घेरेके बाहरकी दीवारके भीतर करीब ३३० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी भूमि है। घेरेके चारोंओरकी दीवारके ऊपर लगभग १०० नन्दी बैल और दीवारके भीतरके चारों बगलोके ओसारोंपर भी बहुतसे नन्दी है। घेरेके पूर्व और पश्चिम एक एक दरवाजा है। उस घेरेके अन्दरकी दीवारके भीतर चारों बगलोंपर ओसारे और कई एक मन्दिर और मण्डप; पूर्व ओर एक द्वार; दक्षिण-पश्चिम कोनेमें पार्वतीका एक मन्दिर, दक्षिण बगलके मध्यमें नाट्येश्वरकी एक मूर्त्ति और मध्य भागमें नटेशका प्रधान मान्दिर, मण्डप और अन्य अनेक मन्दिर है।

(क) नटेश शिवके निज मन्दिरकी दीवारपर चांदीका और गुम्बजपर सोनेका मुलम्मा है। दो डेवढीके भीतर नृत्य करते हुए नटेश शिव खड़े है। शिवके पासमें कई देवमूर्त्तियाँ है। वहाँके देवताओके शृङ्गार मनोहर हैं। मन्दिरका पुजारी यात्रियोंसे दक्षिणा लेकर उनको पहिली डेवढ़ीके भीतर लेजाकर दर्शन कराता है। जो दक्षिणा नहीं देता, वह मन्दिरके बाहरसे दर्शन करता है।

(ख) सुन्दर मण्डपके साथ एक मन्दिर है, जिसका गुम्बज विना मुलम्मेके ताम्बेके पत्तरोंसे छाया हुआ है।

(ग) मन्दिरमें तीन डेवढ़ीके भीतर सोनहुले भूषण और कौस्तुभ मणिमाल पहने हुए श्यामल स्वरूप मनुष्यसे अधिक लम्बे गोविन्दराज भगवान् भुजङ्गपर शयन किये हुए हैं। इनके पायतावे, दस्ताने और मुकुट सुवर्णके हैं। भगवानके पास लक्ष्मी आदि कई देवमूर्त्तियाँ सुशोभित है। मन्दिरके आगे दूरतक मण्डप है।

(घ) एक मन्दिर है, जिसके आगे एक बडा स्तम्भ खड़ा है। स्तम्भपर नीचेसे ऊपर तक सोनेका मुलम्मा किया हुआ है।

(५) पार्वतीका मन्दिर शिवगङ्गा सरोवरके पश्चिम है। घेरेके पश्चिम हिस्सेमें तीन ड्योढ़ीके भीतर पार्वतीजी खड़ी है। इनके पायतावे, दस्ताने और मुकट सुनहरे हैं। मन्दिरका जगमोहन विचित्र है. जिसके आगे पूर्वके दरवाजे तक उत्तम मण्डप बना हुआ है।

मण्डप और दरवाजेके बीचमें सोनेका मुलम्मा किया हुआ एक बडा स्तम्भ है। आँगनके चारो बगलोंपर दीवारोंके पास दो मञ्जिले दालान है।

(६) पार्वतीके मन्दिरसे लगा हुआ उसके दक्षिण सुब्रह्मण्य (कार्त्तिकेय) का मन्दिर है जिसके घेरेके भीतर २०५ फीट लम्बी और २५० फीट चौड़ी भूमि है। आँगनके आगे ४ स्तम्भोका पेशगाह है, जिसके बाहर एक मयूर और दो हाथीकी प्रतिमा बनी हुई है

(७) पार्वतीके मन्दिरके पूर्व और उत्तरके बडे गोपुरके सामने दक्षिण ३१५ फीट लम्बा १७५ फीट चौडा शिवगङ्गा तथा हेमपुष्करणी नामक उत्तम तालाब है जिसके चारों तरफ पानीतक सीढ़ियाँ है और चारो बगलोंपर दालान बने हुए है।

(८) तालाबके पूर्व ३४० फीट लम्बा और १९० फीट चौड़ा पुराना मण्डप है, जिसको सहस्रस्तम्भमण्डपम् कहते है, लेकिन इसमें ९८४ पायोंसे अधिक नहीं है। मण्डपके चारो बगलोमें दीवार है, भीतर अँधियारेमें चमगादुर बहुत रहते है।

ऊपर कहे हुए आठ नम्बरोके अतिरिक्त उस घेरेमे जगह जगह अनेक पुराने मन्दिर और मण्डप है, जिनमेसे कई मरम्मत होरहे है। वहाँ ४ कूप हैं, जिनमेंसे एक अपूर्व बनावटका है। बड़े बड़े पत्थरोंके बीचमेंसे चाकके समान गोलाकार पत्थर निकाल करके उन्हीं पत्थरोंको नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरा ऐसाही साज कर कूप बनाया गया है। उस मन्दिरमें ४० फीट ऊंचे बहुतेरे पत्थर लगे है और हजारहाँ स्तम्भ, जिनमे जोड़ नहीं है, २६ फीटसे अधिक ऊँचे हैं। वहाँ बहुतसे क्षत्रम् हैं, उनमे जो सबसे बडा है, उसमे आठ नव सौ आदमी रह सकते है।

मन्दिरके अधिकारी दिक्षतर ब्राह्मण करीब २५० है, जिनमेंसे २० दिन तक २० आदमी मन्दिरमें काम करते है। मन्दिरके कामसे छुट्टी रहने पर वे लोग दक्षिण हिन्दुस्तानमें घूमकर याचना करते हैं विवाह होजाने पर वे लोग मन्दिरकी पूजाके द्रव्य पाने और मन्दिरके प्रबन्ध करनेके पूरे हिस्सेदार होजाते है, इस कारणसे ५ वर्षकी अवस्था होनेके शीघ्रही बाद वे लोग अपने लड़कोंका ब्याह कर डालते है। उनकी पारीके समय जो द्रव्य या अन्न पूजा चढ़ता है, उसको वे लोग ले लेते है, किन्तु किसी मेले या पर्वके समय जब पूजा बहुत अधिक चढ़ती है, तब सब हिस्सेदार बराबर भाग बाँट लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(सेतुबन्ध खण्ड, ५२ वाँ अध्याय) चिदंबर, कुम्भकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरंग, शेषाद्रि, वेकटाद्रि, कांचीपुर, ब्रह्मपुर इत्यादि क्षेत्रोंमें एक वर्ष निवास करनेसे जो फल लाभ होता है वह सेतुबन्धके धनुष्कोटिमे माघ भर बसनेसे मिल जाता है।

शिवभक्तविलास—(१४ वाँ अध्याय) चिदम्बर नामक उत्तम क्षेत्रके दर्शन करनेसे मुक्ति लाभ होती है, जहाँ महर्षि व्याघ्रपाद और पतञ्जलि स्वर्ण-सभाके मध्यमे भगवान् शंकरको नृत्य करते हुए देखकर संसारबन्धनसे मुक्त होगये। उस नगरीका एक कुम्भार नित्यही शिवगङ्गामें स्नान करके शिवकी कथा सुनता था और शिवभक्तोंको नित्य नवीन भांड तथा भोजनकी सामग्री देकर उनकी सेवा करता था। उसकी पतिव्रता स्त्री भी शिवभक्त थी। उस कुम्भारने चिदंबर क्षेत्रके नटेश शिवकी प्रतिमामें अपने चित्तको अच्छी प्रकारसे लगाया। जब उसने

नीलकण्ठ महादेवके कंठनालमें प्रीति की, तब वहाँके लोगोंने उसका नाम नीलकण्ठ रक्खा। बहुत कालके पश्चात् एक समय सन्ध्याकालमें वर्षासे भीजता हुआ शीतसे व्याकुल होकर वह मार्गमे एक वेश्याके गृहसे चलागया। वेश्याने उसको सूखा वस्त्र पहनाया और लेप देकर उसका ठण्ढापन दूर किया। नीलकण्ठ वर्षा छूट जानेपर अंगरागसे भूपित अपने गृह गया। उसने स्त्रीके पूछनेपर सत्य सत्य सब वृत्तान्त कह सुनाया। स्त्रीने नीलकण्ठके विषयमे सन्देह करके उससे कहा कि आजसे तुम मुझको मत छूना। नीलकण्ठने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी तुझको नहीं छूऊँगा। पतिव्रता स्त्री पतिको शान्त करने लगी, किन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ी। ऐसा देख नटेश शिव उनको मुक्ति देनेकी इच्छासे मुनिका वेप धरकर उनके गृह आये। नीलकण्ठने मुनिका सत्कार करके उनसे पूछा कि किस कार्यके लिये तुम आये हो। मुनि बोले कि एक दुर्लभ पात्र मैं तुम्हारे घर धरोहर रखता हूँ, तुम इसको यत्नसे रक्खो। ऐसा कह नीलकण्ठको पात्र देकर वह चले गये। नीलकण्ठ बड़े यत्नसे पात्रकी रक्षा करने लगा। कुछ दिनोके पश्चात् महादेवजीने उस पात्रको अपनी मायासे अन्तर्द्धान कर दिया और वहाँ आकर नीलकण्ठसे पात्र मांगा। नीलकण्ठने जब अपने गृहमे पात्रको नहीं पाया तब मुनिसे कहा कि पात्र नहीं मिलता है, उसके समान दूसरा पात्र तुम लो। मुनिने कहा कि वैसा पात्र दूसरा नही मिलेगा, तुमने उसको चोराया है, तुम अपनी स्त्रीका हाथ पकडकर शिवगङ्गामे स्नान करके नटेशके निकट शपथ करो कि मैने पात्र नहीं लिया है। नीलकण्ठने अपनी प्रतिज्ञा पर ध्यान देकर अपनी स्त्रीका हाथ पकड़ना स्वीकार नहीं किया। मुनिने उसको नटेशके पास लाकर वहाँके पुजारियोंसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। पुजारियोंके युक्तिके अनुसार एक बाँसके एक छोरको नीलकण्ठने और दूसरे छोरको उसकी स्त्रीने पकडकर शपथ करनेके लिये शिवगङ्गामें स्नान किया। दोनोने गोता मारकर पानीसे ऊपर होनेपर नन्दीपर चढ़े हुए नटेश शिवको देखा। नटेश भगवान् प्रसन्न हो उनको वाञ्छित मुक्ति देकर दोनोके सहित अपने धाम चिदाकाश (चैतन्याकाश) में चले गये।

इतिहास—चिदंबरमूका मन्दिर दक्षिणी भारतमें अधिक पुराना है। दक्षिण-भारत और सिलोनके लोग उसका बडा मान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि हिरण्यवर्ण चक्रवर्ती मन्दिरके पासके सरोवरमे स्नान करनेसे कुष्ठ-रोगसे मुक्त होगया तब उसने मन्दिरके पहले भागको अच्छे प्रकारसे बनवा दिया। यह नाम काश्मीरके एक राजाका भी था, जिसने सिलोन अर्थात् लङ्काको जीता था। चन्द आदमियोंने लिखा है कि सन् ईस्वीकी पाचवी सदीमे उसी राजाने चिदंबरमूके मन्दिरको बनवाया था। लोग कहते है कि वह उत्तरसे अपने साथमें ३००० ब्राह्मणोंको लाया, जिसके कुलके ब्राह्मण अबतक मन्दिरके अधिकारी है। बहुतेरे लोग कहते हैं कि वीर चोला राजाने (सन् ९२७–९७७ ईस्वी) नृत्य करते हुए शिवको पार्वतीके सहित समुद्रके किनारेपर देखा, जिनके स्मरणार्थ उसने नटेश्वर शिवका कनकसभा अर्थात् सुनहरा मन्दिर बनवाया। दशवीं और सत्रहवीं सदीके बीचमें चोला और चेरा वंशके राजाओ तथा उनके घरवालोंने चिदंबरमूके मन्दिरको कई बार बढाया। सत्रहवीं सदीके अन्तमे अथवा अठारहवीं सदीके आरम्भमे सुब्रह्मण्यका मन्दिर बना।

## मायावरम्।

चिदंबरम्के रेलवे स्टेशनसे ४ मील दक्षिण कोलरम् नदीपर रेलवेका पुल और १४ मील दक्षिण स्वर्णकोइल स्टेशनके पास एक मन्दिरके चारोओर ४ बडे गोपुर देख पडते है। चिदंबरम्से २३ मील और विलीपुरम् जंक्शनसे ७६ मील दक्षिण और मदरास शहरसे १७४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम मायावरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तञ्जौर जिलेमें रेलवेके स्टेशनसे ३ मील दूर कावेरी नदीके किनारे पर मायावरम् एक कसबा तथा यात्राका स्थान है, जो पूर्व समयमें चोल देशके अन्तर्गत था। कसबेमें १ अस्पताल और कई एक स्कूल हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मायावरम्में २३७६५ मनुष्य थे, अर्थात् २२४२७ हिन्दू, ८१८ कृस्तान और ५२० मुसलमान।

शिवमन्दिर—मायावरम्में एक प्रसिद्ध शिवमन्दिर है। मन्दिरमें एक बडा और एक छोटा गोपुर है। बडा गोपुर १० मञ्जिला है, जो बाहरके हातेके दक्षिण बगलपर खडा है। इसके पश्चिम एक सरोवर है। उत्तर ६ मञ्जिलका छोटा गोपुर है। वहाँ कार्त्तिकमें यात्राका मेला होता है।

रेलवे—मायावरम् जंक्शनसे दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुट्टूपेटे और तिरुवालूर जंक्शनसे पूर्व १५ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३५ मील तञ्जोर है। मायावरम्से कुम्भकोणम् होकर केवल ४४ मील दक्षिण-पश्चिम तञ्जोरका रेलवे स्टेशन है।

## नागपट्टनम्।

मायावरम् जंक्शनसे २३ मील दक्षिण तिरुवालूरमें रेलवेका जंक्शन है। मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें तिरुवालूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १३९३४ मनुष्य थे। तिरुवालूरसे १५ मील (तञ्जोर शहरसे ५० मील) पूर्व नागपट्टनम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें (१० अंश ४५ कला ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५३ कला २८ विकला पूर्व देशान्तरमें) नागपट्टनम् एक कसबा तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पासके नागर बन्दरगाहके साथ नागपट्टनम्में ५९२२१ मनुष्य थे, अर्थात् २७०४१ पुरुष और ३२१८० स्त्रियाँ। इनमें ३९०११ हिन्दू, १४३४१ मुसलमान, ५८६३ कृस्तान, ३ जैन, १ बौद्ध और २ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मदरास हातेके अंगरेजी राज्यमें सातवाँ और भारतवर्षमें ६२ वाँ शहर है।

रेलवे स्टेशनके पास कृस्तानोंका गिरजा और स्टेशन और बन्दरगाहसे २ मील दूर एक धर्मशाला है। स्टेशनसे थोड़ी दूर पर रेलवेका बड़ा कल कारखाना है, जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं। शहरमें कई हिन्दू होटल है, जिनमें ब्राह्मण लोग रसोई बनाकर बेचते है। इनके अतिरिक्त नागपट्टनम्में एक कालिज, एक अस्पताल, नमककी सरकारी कोठी, २ देवमन्दिर, लाइट हाउस, तथा सदराला, मुनसिफ, एसिस्टण्ट कलक्टर और तहसीलदारकी कचहरियाँ है। बाजारमें केला बहुत बिकता है। कसबेसे कई मील उत्तर कावेरी नदी है।

बन्दरगाहमे ब्रह्मा, सिलोन अर्थात् लंका और दूसरे देशोंके माल उतरते हैं और बन्दरगाहसे उन देशोंमे माल रवाना होते है। सन् १८८३—१८८४ में नागपट्टनम्‌के बन्दरगाहमे लगभग ३४ लाख रुपयेका माल आया और, बन्दरगाहसे करीब ५७ लाख रुपयेका माल रवाना हुआ।

मन्दिर—शहरके बाहर एक शिवमन्दिर है। खास मन्दिर १८० फीट लम्बा और १२० फीट चौड़ा है, जिसकी छतके ऊपर तीन तरफ शिवके वाहन नन्दी बैल पंक्तिसे बनाये गये है। उनके बीच बीचमे एक एक मूर्त्ति बैठी है। मन्दिरके पूर्वोत्तर पार्वतीका मन्दिर और पूर्व ६ मञ्जिला गोपुर है। नागपट्टनम्‌में दूसरा मन्दिर सुन्दरराज भगवान्‌का है। भगवान् पूर्व मुखसे स्थित है।

रामेश्वरको रास्ता—रामेश्वरके कुछ यात्री आगबोट द्वारा नागपट्टनम्‌से रामेश्वरकी टापूमे पाम्बन जाते है, या पाम्बनसे नागपट्टनम्‌में आते है। महसूल तीन रुपया लगता है। पाम्बनसे ७ मील पूर्व रामेश्वर पुरी है। सिलोन अर्थात् लंकाके आगबोट सप्ताहमे दो बार पाम्बन, नागपट्टनम् आदि बन्दरगाहोंमे होकर मदरासकी ओर जाते है और मदरासकी ओरसे नागपट्टनम्, पाम्बन इत्यादि होकर सिलोनके कोलम्बो शहरको जाते है।

इतिहास—नागपट्टनम् आरम्भके पोर्चुगाल वालोंकी आबादियोंमेंसे एक है। सन् १६६० में हालेण्ड वालोंने उसपर अपना अधिकार जमाया। १७८१ में अङ्गरेजोंने उसको ले लिया। सन् १७९९ से १८४५ तक तञ्जोरके कलक्टर नागपट्टनम्‌में रहते थे।

# तेरहवाँ अध्याय।



## (मदरास हातेमें) कुम्भकोणम्, तञ्जोर, तिरुचनापल्ली, श्रीरंगम्, जम्बुकेश्वर, पुदुकोटा, दिण्डीगल और मदुरा।

### कुम्भकोणम्।

मायावरम् जंक्शनसे १९ मील (मदरास शहरसे १९३ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम कुम्भकोणम्‌का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें (१० अंश, ५८ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) ताल्लुकका सदर स्थान और मदरास हातेके पवित्र जगहोंमेंसे एक कुम्भकोणम् कसबा है, जिसको काम्बेकोणम् भी कहते हैं। यह पूर्व कालमे चोल देशकी राजधानी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुम्भकोणम्‌मे ५४३०७ मनुष्य थे; अर्थात् २६४७१ पुरुष और २७८३६ स्त्रियाँ। इनमे ५१८७७ हिन्दू, १२९४ मुसलमान; १०६७ क्रस्तान और ६९ जैन थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ९ वा और भारतवर्षमे ७८ वाँ शहर है।

कुम्भकोणम्‌मे एक उत्तम कालिज, मजिष्टरकी कचहरी, और कुम्भेश्वर शिवका प्रसिद्ध मन्दिर है। यहाँ अच्छी सौदागारी होती है तथा यात्री बहुत आते हैं।

मन्दिर—स्टेशनसे करीब १ मील शहरके भीतर मन्दिर है। विष्णुके मन्दिरका ११ मंजिलवाला बडा गोपुर लगभग १६० फीट ऊंचा है, जिसके भीतरकी सीढियाँ जगह जगह टूटी हुई और फिसलहट वाली हैं।

३३० फीट लम्बी और १५ फीट चौडी एक मेहराबदार सडकसे जिसके दोनों बगलों पर दुकान है,कुम्भेश्वर शिवके मन्दिरमें जाना होता है। वहाँके मन्दिर मरम्मतहैं। मन्दिरोंके राग भोगके खर्चके लिये बडी आमदनी है।

मन्दिरोंसे चौथाई मील दक्षिण-पूर्व महामोहन तालाब है, जिसके किनारोंपर जगह जगह १६ मन्दिर बने हुए है। प्रधान मन्दिर तालाबके उत्तर बगलपर है। इस स्थानमें १२ वर्षपर महामाघम्का प्रसिद्ध मेला होता है। उस समय एक दिन उस सरोवरमें गङ्गाजी आती हैं। उसमें स्नान करनेके लिये दूर दूरसे वहुतसे यात्री आते हैं। इसके अलावे अन्य समयोंमें भी कुम्भकोणम्में मेले हुआ करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—( सेतुबन्ध खण्ड, ५२ वाँ अध्याय ) कुम्भकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरङ्गम्, चिदम्बरम्, वेङ्कटाद्रि, कांचीपुर आदि क्षेत्रोंमें एक वर्ष निवास करनेसे जो फल लाभ होता है वह माघ मास भर धनुष्कोटिमें बसनेसे मिल जाता है। कुम्भकोण, सेतुमूल, दण्डकारण्य, विरूपाक्ष, वेङ्कट, प्रयाग, काची, पद्मनाभ, गोकर्ण, नैमिष, अयोध्या, द्वारावती, मथुरा, काशी आदि तीर्थोंमें मुण्डन और उपवास अवश्य करना चाहिये।

शिवभक्तिविलास—( ५४ वाँ अध्याय ) क्षीरिणी नामक नदीके तटपर ब्राह्मणोंसे भूपित अरण्य नामक पुर है। उसमें शिवभक्तोंकी सेवा करनेवाला एक शूद्र रहता था। महादेवजीने उसपर प्रसन्न होकर उसकी परीक्षाके लिये उसका गृह और सब समान अग्निसे जला दिया और दूसरे दिन तपस्वीका वेष धारणकर उससे अन्न और वस्त्र माँगा। शूद्रके पास छाया भी नहीं थी। जब वह अतिथिके सत्कारके विषयमें अपनी स्त्रीसे बात करने लगा,तब तपस्वीरूपी शिव बोले कि मुझको धूपमें खडा कराकर तुम स्त्रीसे बात करते हो; मैं कुम्भकोणमें जहाँ तुम्हारे समान बहुत भक्त हैं, चला जाता हूँ; ऐसा कहकर वह अन्तर्द्धान होगये। शूद्रने समझ लिया कि यह तपस्वी साक्षात् महादेव है। उसने कुम्भकोणमें जाकर ७ रात्रि शिवके निकट उपवास किया। तब शिवजीने स्वप्नमें उससे कहा कि तुम इसी स्थानमें वसकर हमारे भक्तोंका पालन करते रहो। जब शूद्रको शिवभक्तोका पालन करनेके किसी उपायसे धन संग्रह नहीं होसका, तब वह कुम्भकोणके जुआड़ियोंसे जुयेमें धन जीत कर नित्य शिवभक्तोंका पालन करने लगा। अन्तकालमे शिवजीके प्रतापसे उसकी मुक्ति होगई।

इतिहास—कुम्भकोणम् एक समय चोला राज्यकी राजधानी था। वह मदरास हातेके पुराने तथा पवित्र नगरोंमेंसे एक है। वहाँ विद्याका बडा प्रचार है। वहाँके पण्डित प्रसिद्ध हैं।

## तञ्जौर।

कुम्भकोणम्से २५ मील और मदराससे २१८ मील दक्षिण-पश्चिम तञ्जौरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें कावेरी नदीसे दक्षिण जिलेका सदरस्थान तञ्जौर एक छोटा शहर

है। तञ्जौर हुनरकी दस्तकारियोंके लिये मशहूर है, जिनमें रेशमी, कालीन, भूषन और ताम्बेके वर्तन सामिल है।

रेलवे स्टेशनसे आधा मील दूर शहरकी तरफ सडकके किनारेपर एक धर्मशाला है, जिससे आगे शहरके पास किलेकी खाईपर करीब १०० फीट चौड़ा ईटोंका पुल वना हुआ है।

तञ्जौरमें दो किले हैं, जिनकी दीवारके वाहर खाई हैं। बडा किला उत्तर और छोटा किला, जिसमें वडा मन्दिर है, पश्चिम है। पश्चिमोत्तरके कोनेके पास दोनो मिल गये हैं। वडा किला वहुत जगह उजड गया है। तञ्जौरमे जज, कलक्टर और अन्य हाकिमोंकी कचहरियाँ और वहुतेरी सरकारी इमारतें है। वडे किलेके भीतर शहरका प्रधान भाग और तञ्जौरके राजाका महल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तञ्जौर कसवेमें ५४३९० मनुष्य थे; अर्थात् २५९४५ पुरुष और २८४४५ स्त्रियाँ। इनमे ४६४०४ हिन्दू, ४३८९ कृस्तान, ३४१० मुसलमान और १८७ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ८ वाँ और भारतवर्षमें ७१ वाँ शहर है।

वड़े किलेकी पूर्वकी दीवारके पास २३ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पड़ी है, जिसके मुखका व्यास ३$\frac{3}{8}$ फीट है। किलेके वाहर पूर्व ओर गल्ले और कपडेका वाजार है।

छोटे किलेमें वड़े मन्दिरसे उत्तर शिवगङ्गा नामक सरोवर है, जिसके पास एक गिरजा वना है, जिसके फाटकके ऊपर सन् १७७७ लिखा है। शिवमन्दिरसे पूर्वके मैदानमें दीवानी कचहरियाँ है।

तञ्जौरके राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे करीव पौन मील उत्तर वड़े किलेके भीतर सड़कके पश्चिम किनारेपर राजाका उत्तम महल है, जिसका पहला हिस्सा करीव सन् १५५० में वना था। कई मकान वनारसकी इमारतोंके ढाचेके वने हुए हैं। महलके आगे उत्तर तरफ वड़ा चौगान (आंगन) है, जिसके चारो वगलोंमे मकान वने हैं। वहाँ कई एक हाथी और पाले हुए वाघ रहते है। चौगानके पूर्व और उत्तर एक एक दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके वाहर नित्य वाजार लगता है।

चौगानसे महलमें प्रवेश करनेपर सीधा दक्षिण कई डेवढ़ीके भीतर महाराष्ट्रोंका राजदरवार सून सान मिलता है। वहां आंगनके पूर्व वगलमें राजसी सामानोसे सजा हुआ दालान है, जिसकी दीवारमे महाराष्ट्रकुल भूषण महाराजा शिवाजी और तञ्जौरके महाराष्ट्र राजाओंकी सुन्दर तस्वीरे वनी हुई है। उनके पास उनके नाम लिखे हुए हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं,—

| नाम राजाओंके | राज्यका सन् | नाम राजाओंके | राज्यका सन् |
|---|---|---|---|
| शिवाजी (पहिला) | ० | सुजानवाई . . ... . . | ० |
| एकोजी ... . .. .. | १६७६ | प्रतापसिंह ... .... ... | १७४४ |
| शाहजी . ... .. . . | १६८४ | तुलजाजी .... ... ... | ० |
| सरभोजी (पहिला) ... ... | १७१३ | सरभोजी (दूसरा) ... | १७९४ |
| तुकाजी .. ... ... . | १७३१ | शिवाजी (दूसरा) ... | १८३२ |
| [illegible] .. . . ... | ० | सैदमावाई ... .. ... | ० |

मन्दिर—स्टेशनसे करीब १ मील शहरके भीतर मन्दिर हैं। विष्णुके मन्दिरका ११ खनवाला बड़ा गोपुर लगभग १६० फीट ऊंचा है, जिसके भीतरकी सीढ़ियाँ जगह जगह टूटी हुई और फिसलहट वाली हैं।

३३० फीट लम्बी और १५ फीट चौड़ी एक मेहरावदार सड़कसे जिसके दोनों बगलों पर दुकान हैं,कुम्भेश्वर शिवके मन्दिरमें जाना होता है। वहाँके मन्दिर मरम्मत हैं। मन्दिरोंके राग भोगके खर्चके लिये बड़ी आमदनी है।

मन्दिरोंसे चौथाई मील दक्षिण-पूर्व महामोहन तालाव है, जिसके किनारोंपर जगह जगह १६ मन्दिर बने हुए हैं। प्रधान मन्दिर तालावके उत्तर बगलपर है। इस स्थानमें १२ वर्षपर महामाघम्का प्रसिद्ध मेला होता है। उस समय एक दिन उस सरोवरमें गङ्गाजी आती हैं। उसमें स्नान करनेके लिये दूर दूरसे बहुतसे यात्री आते हैं। इसके अलावे अन्य समयोंमें भी कुम्भकोणम्में मेले हुआ करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—( सेतुबन्ध खण्ड, ५२ वाँ अध्याय ) कुम्भकोण, वदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरङ्गम्, चिदम्बरम्, वेङ्कटाद्रि, कांचीपुर आदि क्षेत्रोंमें एक वर्ष निवास करनेसे जो फल लाभ होता है वह माघ मास भर धनुष्कोटिमें वसनेसे मिल जाता है। कुम्भकोण, सेतुमूल, दण्डकारण्य, विरूपाक्ष, वेङ्कट, प्रयाग, कांची, पद्मनाभ, गोकर्ण, नैमिष, अयोध्या, द्वारावती, मथुरा, काशी आदि तीर्थोंमें मुण्डन और उपवास अवश्य करना चाहिये।

शिवभक्तिविलास—( ५४ वाँ अध्याय ) क्षीरिणी नामक नदीके तटपर ब्राह्मणोंसे भूषित अरण्य नामक पुर है। उसमें शिवभक्तोंकी सेवा करनेवाला एक शूद्र रहता था। महादेवजीने उसपर प्रसन्न होकर उसकी परीक्षाके लिये उसका गृह और सब समान अग्निसे जला दिया और दूसरे दिन तपस्वीका वेष धारणकर उससे अन्न और वस्त्र माँगा। शूद्रके पास छाया भी नहीं थी। जब वह अतिथिके सत्कारके विषयमें अपनी स्त्रीसे बात करने लगा,तब तपस्वीरूपी शिव बोले कि मुझको धूपमें खड़ा कराकर तुम स्त्रीसे बात करते हो; मैं कुम्भकोणमें जहाँ तुम्हारे समान बहुत भक्त हैं, चला जाता हूँ, ऐसा कहकर वह अन्तर्द्धान होगये। शूद्रने समझ लिया कि यह तपस्वी साक्षात् महादेव है। उसने कुम्भकोणमें जाकर ७ रात्रि शिवके निकट उपवास किया। तब शिवजीने स्वप्नमें उससे कहा कि तुम इसी स्थानमें वसकर हमारे भक्तोंका पालन करते रहो। जब शूद्रको शिवभक्तोका पालन करनेके किसी उपायसे धन संग्रह नहीं होसका, तब वह कुम्भकोणके जुआड़ियोंसे जुयेमें धन जीत कर नित्य शिवभक्तोंका पालन करने लगा। अन्तकालमें शिवजीके प्रतापसे उसकी मुक्ति होगई।

इतिहास—कुम्भकोणम् एक समय चोला राज्यकी राजधानी था। वह मदरास हातेके पुराने तथा पवित्र नगरोंमेंसे एक है। वहाँ विद्याका बड़ा प्रचार है। वहाँके पण्डित प्रसिद्ध हैं।

## तञ्जौर।

कुम्भकोणम्से २५ मील और मदराससे २१८ मील दक्षिण-पश्चिम तञ्जौरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें कावेरी नदीसे दक्षिण जिलेका सदरस्थान तञ्जौर एक छोटा शहर

है। तञ्जौर हुनरकी दस्तकारियोंके लिये मशहूर है, जिनमें रेशमी, कालीन, भूषन और ताम्बेके वर्तन सामिल है।

रेलवे स्टेशनसे आधा मील दूर शहरकी तरफ सडकके किनारेपर एक धर्मशाला है; जिससे आगे शहरके पास किलेकी खाईपर करीव १०० फीट चौडा ईटोंका पुल वना हुआ है।

तञ्जौरमें दो किले हैं, जिनकी दीवारके वाहर खाई है। वडा किला उत्तर और छोटा किला, जिसमें वडा मन्दिर है, पश्चिम है। पश्चिमोत्तरके कोनेके पास दोनो मिल गये है। वडा किला वहुत जगह उजड गया है। तञ्जौरमे जज, कलक्टर और अन्य हाकिमोंकी कचहरियाँ और वहुतेरी सरकारी इमारतें है। वडे किलेके भीतर शहरका प्रधान भाग और तञ्जौरके राजाका महल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तञ्जौर कसवेमें ५४३९० मनुष्य थे; अर्थात् २५९४५ पुरुष और २८४४५ स्त्रियाँ। इनमे ४६४०४ हिन्दू, ४३८९ कृस्तान, ३४१० मुसलमान और १८७ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ८ वाँ और भारतवर्षमे ७१ वाँ शहर है।

वड़े किलेकी पूर्वकी दीवारके पास २३ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पड़ी है, जिसके मुखका व्यास ३$\frac{3}{4}$ फीट है। किलेके वाहर पूर्व ओर गल्ले और कपडेका वाजार है।

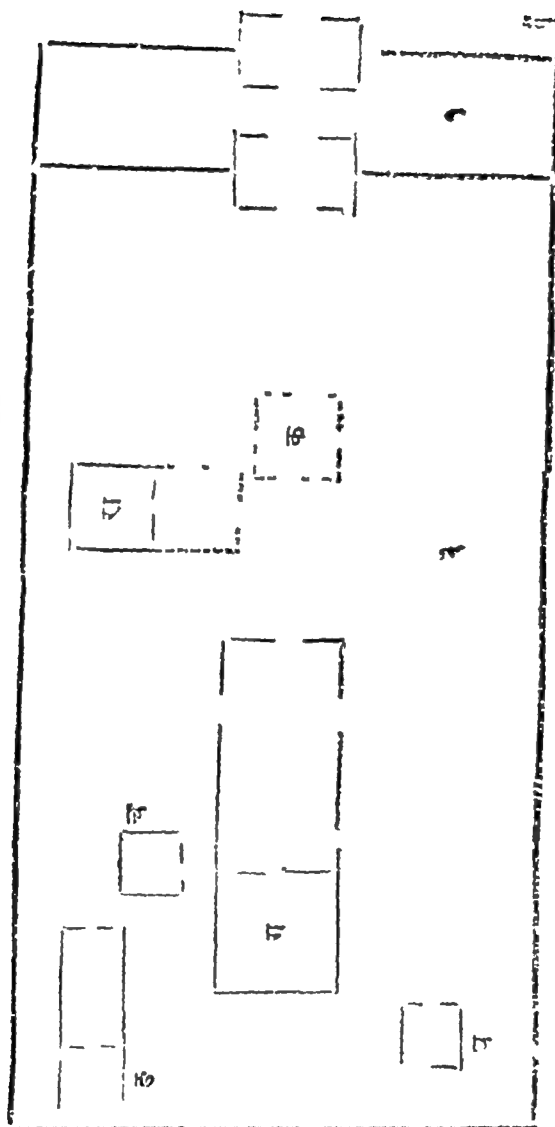
छोटे किलेमें वड़े मन्दिरसे उत्तर शिवगङ्गा नामक सरोवर है, जिसके पास एक गिरजा वना है, जिसके फाटकके ऊपर सन् १७७७ लिखा है। शिवमन्दिरसे पूर्वके मैदानमें दीवानी कचहरियाँ है।

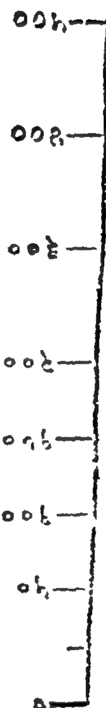
तञ्जौरके राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे करीव पौन मील उत्तर वड़े किलेके भीतर सडकके पश्चिम किनारेपर राजाका उत्तम महल है, जिसका पहला हिस्सा करीव सन् १५५० में वना था। कई मकान वनारसकी इमारतोके ढाचेके वने हुए हैं। महलके आगे उत्तर तरफ वड़ा चौगान (आंगन) है, जिसके चारो वगलोंमे मकान वने हैं। वहाँ कई एक हाथी और पाले हुए वाघ रहते है। चौगानके पूर्व और उत्तर एक एक दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके वाहर नित्य वाजार लगता है।

चौगानसे महलमें प्रवेश करनेपर सीधा दक्षिण कई डेवढ़ीके भीतर महाराष्ट्रोंका राजदरवार सून सान मिलता है। वहां आंगनके पूर्व वगलमें राजसी सामानोंसे सजा हुआ दालान है, जिसकी दीवारमे महाराष्ट्रकुल भूषण महाराजा शिवाजी और तञ्जौरके महाराष्ट्र राजाओकी सुन्दर तस्वीरें वनी हुई हैं। उनके पास उनके नाम लिखे हुए हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं,—

| नाम राजाओके | राज्यका सन् | नाम राजाओके | राज्यका सन् |
|---|---|---|---|
| शिवाजी (पहिला) | ० | सुजानवाई ... ... ... | ० |
| वंकाजी ... . ... ... | १६७६ | प्रतापसिह ... .... ... | १७४४ |
| शाहजी ... ... ... ... | १६८४ | तुलजाजी .... .... ... | ० |
| सरभोजी (पहिला) ... ... | १७१२ | सरभोजी (दूसरा) ... | १७९४ |
| तूकाजी ... ... ... ... | १७३१ | शिवाजी (दूसरा) ... | १८३२ |
| वावासाहव ... ... ... | ० | सैदमांवाई ... ... ... | ० |

तंजौर के शिव मंदिर का नक्शा

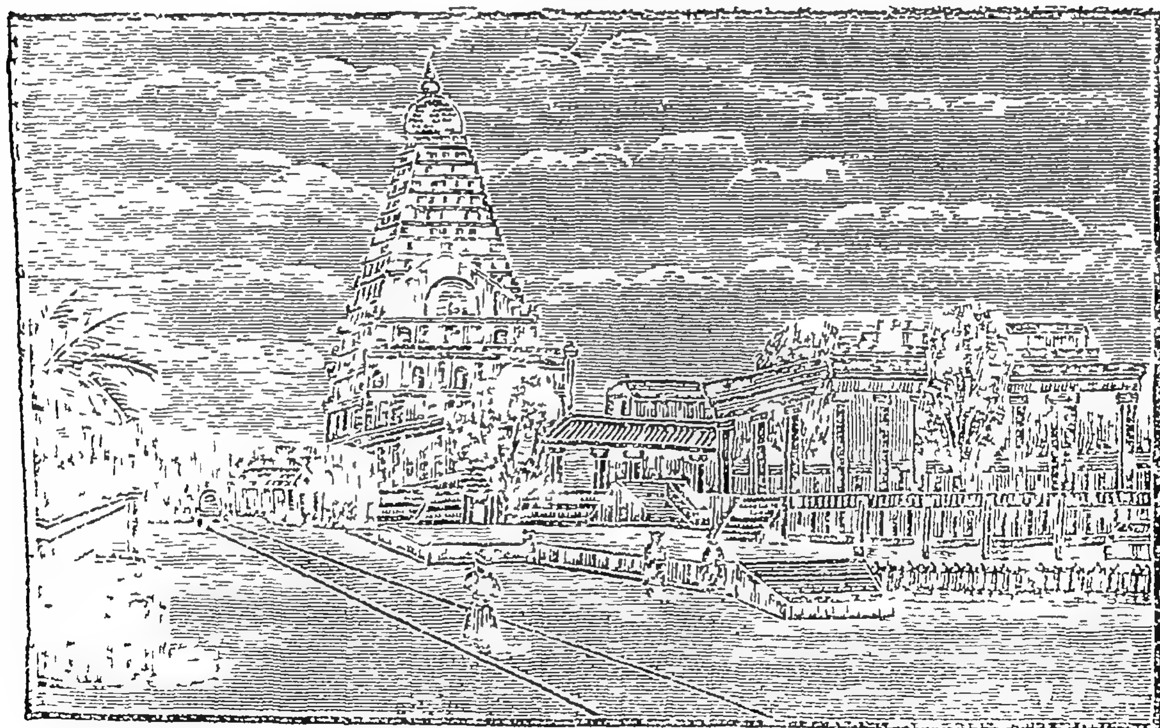




दूसरा शिवाजीके दहिने उनके चीफ सेक्रेटरी और वायें दीवानकी तस्वीर है।

राजदरवारसे पश्चिम एक दूसरे ऑगनके पश्चिम बगलपर पूर्व समयके नायकका दरवार कमरा है, जिसका फर्स मार्बुलका बना हुआ है। कमरेमें दूसरा शरभोजीकी सफेद मरमरकी प्रतिमा तीन कोनेकी नोकदार टोपी पहनी हुई खडी है। दीवारमे लार्ड पिगटकी तस्वीर है। ऑगनके दक्षिण बगलपर ९० फीट ऊँची आठ मञ्जिली इमारत है, जिसमें एक समय हथियार रक्खे जाते थे। पूर्व बगलपर सरस्वतीभवन नामक पुस्तकालय है। जिसमें १८००० सस्कृत एम एस. एस की पुस्तकें हे। जिनमेसे ८००० पुस्तके तारके पत्रोंपर लिखी हुई है। इसके समान संस्कृतका पुस्तकालय हिन्दुस्तानमे दूसरा नहीं है। यह सोल-हवी सदीके अन्त या सत्रहवी सदीके आरम्भमें नियत हुआ था। आंगनके पश्चिमोत्तरके बगलपर दूरकी चीजें देखनेके लिये एक वहुत ऊँची इमारत बनी हुई है।

शिवमन्दिर—राजाके महलसे आधा मील पश्चिम-दक्षिण छोटे किलेमें दक्षिण तरफ तञ्जौरका वडा मन्दिर है। मन्दिरके तीन बगलोपर किलेकी दीवार और खाई और उत्तर मैदान है। मन्दिरके बाहरकी दीवारके भीतर लगभग १३ बीघा भूमि है। मन्दिरके नकशेके नम्बरोसे मन्दिरके स्थान देखिये।



शिवमंदीर

( १ ) मन्दिरके दो चौगान ( कच्छा ) हें। पूर्व वाला चौगान उत्तरसे दक्षिण करीव ३७५ फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिम १७५ फीट चौडा है। उसमें कोई चीज नहीं है। उसके पूर्व वगलपर ९० फीट ऊँचा वाहरका गोपुर और पश्चिम ६० फीट ऊंचा दूसरे चौगानका गोपुर है, जिसके दोनो वगलोंपर तामिल अक्षरमें लम्बा लेख है।

( २ ) पश्चिम वाला चौगान पूर्वसे पश्चिम तक करीब ७५० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण तक ३७५ फीट चौडा है। उसके चारो बगलोंपर दोहरी दालान और मकान बने हुए है। चारो तरफकी दीवारोंके ऊपर शिवके वाहन नन्दी बैलकी पंक्ति और नीचेके दालानोंमें शिवलिङ्गकी पंक्ति है। चौगानके भीतर जगह जगह नीचे लिखे हुए देवमन्दिर, कई एक कूप और बहुतसे वृक्ष है।

( क ) शिव मन्दिर और छोटे गोपुरके मध्य भागमे एक चौखूटा मण्डपम् है, जिसमे १२ फीट ऊंचा १६ फीट लम्बा और ७ फीट चौडा काले पत्थरका विशाल नन्दी है, जो ४०० मील दूरसे लाया गया था। उसपर सर्वदा तेल लगाया जाता है।

( ख ) वडे नन्दीसे उत्तर पार्वतीका मन्दिर है, जिसमे आगे सुन्दर चौड़ा जगमोहन बना है।

( ग ) वडे नन्दीके सामने पश्चिम शिवमन्दिरका जगमोहन है, जिसमें खम्भाओंकी ३ पंक्तियां लगी है। जगमोहनके पश्चिम ७५ फीट लम्बे और ७० फीट चौडे क्रमसे २ अन्धियारे कमरे है, जिनमें बहुतसे चमगादुर रहते हैं। कमरेंसे पश्चिम बड़ा शिवमन्दिर है। जगमोहनसे मन्दिर तक कमरोंके मध्य होकर अन्धियारी राह है। खास शिवमन्दिर लगभग ९० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा तथा २०० फीट ऊंचा है। मन्दिरका शिखर, इस किसिमके हिन्दुस्तानके मन्दिरोंके सब शिखरोंसे उत्तम है। मन्दिर हिन्दुस्तानके अखीर दक्षिणके सम्पूर्ण मन्दिरोमे सबसे अधिक मनोहर है। मन्दिर और उसके पासके कमरोंकी नेवपर पुराने तामिल अक्षरोंमें बहुतसे शिला लेख हैं। मन्दिरका शिखर समय समयपर कई बार मरम्मत हुआ है। ऊपरका हिस्सा, जो देव और दैत्योंकी मूर्त्तियोंसे पूर्ण है, अब केवल रेखताका है। मन्दिरके पश्चिम हिस्सेमें शिवलिङ्ग है, जहाँ दिनमे भी दीपकसे प्रकाश रहता है।

( घ ) मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम गणेशजीका मन्दिर है।

( ङ ) मन्दिरके पश्चिमोत्तर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिवके पुत्र कार्तिकेयका उत्तम बनावटका मन्दिर है। उसकी नकाशी लकडीपरकी नकाशीके नकल की है। वह मन्दिर ५५ फीट ऊंचा है; उसकी नेव हर तरफसे ४५ फीट लम्बी है। मन्दिरमे ६ मुखवाले कार्तिकेय हैं। खास मन्दिरके आगे कमरा और जगमोहन है। कमरेकी दीवारमें तञ्जौरके महाराष्ट्र राजागण और रानियोकी १२ चित्र मूर्त्तियाँ है, जिनके नाम ऊपर लिखे गये हैं।

( च ) मन्दिरके पूर्वोत्तर चण्डीका मन्दिर है, जिसके पास पूर्व तरफ नारियलका सुन्दर छोटा बाग लगा है।

तञ्जौर जिला—इसके उत्तर कोलेरून नदी अर्थात् कावेरीकी उत्तरी शाखा, जो तिरुचनापल्ली और दक्षिणी आरकाट जिलेसे इसको अलग करती है, पूर्व और पूर्व-दक्षिण बङ्गालकी खाडी; दक्षिण-पश्चिम मदुरा जिला और पश्चिम मदुरा तथा तिरुचनापल्ली जिला और पुदुकोटाका राज्य है। तञ्जौर जिलेकी भूमि समतल है, उसमे कोई पहाड़ी नहीं है। सदर स्थान तञ्जौर कसवा है।

मदरास हातेके जिलोंमे तंजौर जिलेकी आवादी वडी घनी है। यह जिला उपजके लिये प्रसिद्ध है और दक्षिणी हिन्दुस्तानका बाग कहा जाता है। इस जिलेमे बड़ी तिजारत

होता है। इसमे ३००० से अधिक देवमन्दिर है, जिनमेसे बडे मन्दिरोमेसे बहुतेरे मन्दिरोकी उत्तम बनावट है और उनके खर्चके लिये बहुत भूमि निकाली हुई है। जिलेके भिन्न भिन्न प्रांतोंमे अनेक मन्दिरोके पास बडे मेले होते है। तञ्जौर जिलेके बने हुए धातुके बर्तन, रेशमी वस्त्र, कालीन इत्यादि वस्तु प्रसिद्ध है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तञ्जौर जिलेके ३६५४ वर्गमील क्षेत्रफलमें २१३०३८३ मनुष्य थे, अर्थात् १९३९४२१ हिन्दू, ११३०५८ मुसलमान, ७८२५८ कृस्तान, ६२५ जैन, २ बौद्ध और १९ अन्य। हिन्दुओमे ६०९७३३ वनिया ( मजूरी करनेवाले ), ३७२४०९ वेल्लाल ( खेतिहर ), २९७९२१ परयन् ( परिया ), १३४५८४ ब्राह्मण १२३२०६ सेवडवन ( मल्लुहा ), ७०८०५ इडैयन ( भेड़िहर ), ६०६८६ कम्भाड़न ( कारीगर ), ५९२५२ कैक्कलर ( कपडा विननेवाले ), ४२९५५ सतानी ( दो मसला ) ३७८६४ सानान ( मदक ), २५३८१ सेट्टी ( व्यापारी ), २२९९१ अंवटन ( नाई ), १५८३५ वनान ( धोबी ), ११६७७ कुसवन ( कुम्भार ), ५१५८ क्षत्रिय, और बाकी ४८९६४ मे अन्य जातियोके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तंजौर जिलेके कसबे नागपट्टनम्में ५९२२१, तञ्जौरसें ५४३९०, कुम्भकोणम्में ५४३०७ मायावरम्मे २३७६५, मनारगुडीमे २०३९५ पोरयारसें १४४६८, वेदारण्यम्मे १३४३८, तिरुवाल्लरमें १२९३४ और अधिरामपट्टनम्में १०७४८ मनुष्य थे। तञ्जौर जिलेमे तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास–चोला वंशके राजाओंके राज्यके समय तञ्जौर जिला और उसके आसपासके देश उनके अधिकारमे थे, इस लिये उस प्रदेशको चोलदेश कहते है और संस्कृत पुस्तकोमे भी उसका नाम चोल देश लिखा है। सन् ईस्वीकी दूसरी सदीमें तिरुचनापल्लीके निकटका वोरैयर नामक नगर उनकी राजधानी था। पीछे क्रम क्रमसे कुम्भकोणम्, गङ्गाईकुण्डा, सोरापुरम् और तञ्जौर उनकी राजधानी हुए। सन् १३०३से १३१० तक मुसलमानोने आक्रमण किया। दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनके सिपहसालार मलिक काफूरने चोला राज्यको निर्बल कर दिया। १६ वी सदीमें विजयानगरके राजाका अधिकार हुआ। उसके सूबेदार नायक वंशवाले नाममात्र विजयानगरके अधीन रह कर दक्षिणमें स्वतन्त्र हुकूमत करने लगे। उस समयसे चोला वंशके राजाओंके विषयमे कुछ नही सुना जाता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि चोला वंशमें सिलसिलेसे ६६ राजा हुए थे। क्रमसे ४ नायकोंने तञ्जौर पर हुकूमत की। सन् १६७४ मे मदुराके नायकने आक्रमण करके तंजौरके किलेपर घेरा डाला। तंजौरके नायकने जब अपने बचनेका कोई उपाय नहीं देखा, तब अपने महलको गोलोंसे उडाकर अपने पुत्रके साथ तलवार लेकर शत्रुओंकी सेनामें घुसकर अपने प्राणका विसर्जन किया। एक बचे हुए लड़केने मुसलमानोसे मेल किया। मुसलमानोने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीके भाई वंकाजीके अधीन एक फौज भेज कर मदुरावालोको खदेर उस लडकेको तंजौरका प्रधान बना दिया, किन्तु २ वर्ष पीछे वंकाजी स्वाधीन बन गये। उनकी राजधानी तंजौर शहर था। उनके वंशवालोने सन् १७९९ तक तंजौरमें स्वाधीन राज्य किया।

सन् १७४९ मे तंजौरके राजा प्रतापसिंहको गद्दीपर बैठानेके लिये अंगरेजी सेना तंजौरमे आई, किन्तु उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। सन् १७५८ में फरासीसी लोग तंजौर

पर आक्रमण करके महाराष्ट्रोंसे बहुत धन ले गये। आरकाटका नवाब महमदअली मदरासके गवर्नमेण्टकी सहायतासे तंजोरके राजाको दबा कर उनसे 'राजकर' लेने लगा। सन् १७७३ मे अङ्गरेजोंने तंजोरके किलेको ले लिया; किन्तु सन १७७५ मे तंजोरके राजा तुलजाजीको लौटा दिया। सन् १७७६ में अङ्गरेजोंने फिर किलेको छीन लिया। सन् १७९९ में राजा दूसरे शरभोजीने एक सन्धि करके अपना स्वाधीन राज्य अङ्गरेजोंके अधीन कर दिया। अङ्गरेजोंने उनके राज्यकी मालगुजारीका पाँचवां भाग और तजोरके मन्दिरके खर्चके लिये १ लाख रुपया सालाना राजाके देनेको स्वीकार किया और तंजोरका किला तथा शहरके आसपासके चन्द गाँव उनको छोड दिये। सन् १८३२ मे शरभोजीका देहान्त होने पर उनके पुत्र दूसरे शिवाजी उत्तराधिकारी हुए। सन् १८५५ मे शिवाजी मर गये। उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये उनका बचा हुआ राज्य भी अंगरेज महाराजके अधिकारमे होगया। सैदमाबाई इत्यादि शिवाजीकी ८ स्त्रियां है। उनको सरकारकी ओरसे योग्य पेंशन मिलती है और खानगी जायदाद उनको छोड़ दी गई है। तंजौर जिलेका सदरस्थान प्रथम नागपट्टनम्मे था। सन् १८४५ मे ट्राकुवारमे और सन् १८५५ मे शिवाजीकी मृत्यु होनेपर तंजौरमे नियत हुआ।

तंजोरके बड़े मन्दिरका काम एक समयका बना हुआ नहीं है। मन्दिरके सबसे पुराने हिस्सोंमेसे मन्दिरका गोपुर है, जिसको सन् १३३० ईस्वीमें कांचीवरम्के राजाने बनवाया था। दूसरे काम १५ वीं सदीके पहिलेके नहीं हैं, किन्तु बडा नन्दी बहुत पुराना है। सुब्रह्मण्यका मन्दिर सोलहवीं सदीसे पहिलेका नहीं होगा।

## तिरुचनापल्ली।

तंजौर शहरसे ३१ मील पश्चिम ( मदरास शहरसे २४९ मील दक्षिण-पश्चिम ) और मदुरा शहरसे ९६ मील पूर्वोत्तर तिरुचनापल्लीका रेलवे जक्शन है। जंक्शन पर पहुँचनेके ६ मील पहिलेसे तिरुचनापल्ली शहरके टीले पर गणेशका मन्दिर देख पडता है। तिरुचनापल्ली जंक्शनसे सौथ इण्डियन रेलवेकी लाइने तीन ओर गई हैं, जिनके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

(१) तिरुचनापल्लीसे दक्षिण कुछ पश्चिम, बाद दक्षिण,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५८ दिण्डीगल।

९६ मदुरा।

१६० कुमारपुर।

१७७ मनियार्ची जक्शन।

मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण पश्चिम तिरुनलवेली और १८ मील पूर्व तुतीकुडी।

(२) तिरुचनापल्लीसे पश्चिमोत्तर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ तिरुचनापल्ली-फोर्ट।

४८ करूर।

६८ अंजालूर।

८८ ईरोड जक्शन।

ईरोड जंक्शनसे पश्चिम ओर मदरास रेलवे पर ५८ मील पोडैयनूर जंक्शन ९२ मील पालघाट और १५० मील कलीकोट। पोडैयनूर जंक्शनसे उत्तर ४ मील कोयंबुतूर और २६ मील मेट्टुपालयम् है।

ईरोड जंक्शनसे उत्तर पूर्व मदरास रेलवे पर ३७

मील सेलम, ११२ मील जाला-रपेट जंक्शन, १३१ मील अम्बूर, १४८ मील कुड़ीआतम्, १६३ मील कटपडी जंक्शन, १७८ मील आरकाट २०१ मील आरकोनम् जंक्शन और २४४ मील मदरास शहर है।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ४४½ मील कोलार रोड और ८७ मील बंगलोर जंक्शन।

कटपडी जंक्शनसे दक्षिणकी ओर ६ मील वेलूर ५७ मील तिरुबन्नामलई और ९९ मील विलीपुरम् जंक्शन और उत्तरकी ओर सौथ इण्डियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जंक्शन, ६५ मील तिरुपदी और ७१ मील रेणुगुण्टा जन्क्शन।

पकाला जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १४२ मील धरमवरम और २०५ मील गुंटकल जंक्शन है।

(३) तिरुचनापल्ली जंक्शनसे उत्तरकी ओर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३१ तञ्जौर जंक्शन।
५६ कुम्भकोणम्।
७५ मायावरम् जंक्शन।
८३ स्वर्णकोइल।
९८ चिदम्बरम्।
१०५ पोर्टोनोवे।
१२४ कड़ालूर नया।
१५१ विलीपुरम् जंक्शन।

तञ्जौर जंक्शनसे पूर्व ३५ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५० मील नागपट्टनम्।

मायावरम् जं०से दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुदूपेटै है।

मदरास शहरसे एक बड़ी सडक विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियार्ची होकर कन्याकुमारीके पास तक गई है। कुछ यात्री जिनके पास खर्चका रुपया कम है, मदुरा नहीं जाकर तिरुचनापल्लीसे सीधा दक्षिण देहाती मार्गसे रामेश्वर जाते हैं।

तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ३ मील उत्तर तिरुचनापल्ली फोर्टका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमे कावेरी नदीके १ मील दक्षिण (१० अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८अंश,४४ कला, २१ विकला पूर्व देशान्तरमे)समुद्रसे लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर तथा रेलवेके स्टेशनसे १॥ मील पूर्व जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा तिरुचनापल्ली है, जिसकी म्युनिसीपल्टीके भीतर फौजी छावनी और छोटे वड़े १७ गाँव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुचनापल्लीके म्युनिसिपल्टीमें ९०६०९ मनुष्य थे; अर्थात् ४४०८० पुरुष और ४६५२९ स्त्रियाँ। इनमें ६७२४८ हिन्दू, १२३४१ क्रस्तान, ११०१७ मुसलमान,२ बौद्ध और १ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ३० वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें दूसरा शहर है।

तिरुचनापल्लीका किला १ मील लम्बा और ½ मील चौड़ा समकोण शकलका है। यह पहिले दीवार और खाईसे घेरा हुआ था; किन्तु अब उसकी खाई भर दी गई है। इसमें घनी

आबादी होगई है. उसके भीतरही तिरुचनापल्लीका चट्टान है, जिसपर शिवजी और गणेशजीका मन्दिर बना हुआ है। उस चट्टानसे चन्द सौ गज दक्षिण नव्वाबका महल है, जिसको सत्रहवीं सदीमें चोका नायकने बनवाया था और सन् १८७३ में गवर्नमेण्टने लगभग ३७००० रुपयेके खर्चसे मरम्मत करवाया। उसमें अब सरकारी कचहरियोंके इजलास और आफिसोंके काम होते हैं। चट्टान और किलेके प्रधान फाटकके बीचमें एक सुन्दर तेपकुलम् अर्थात् नावका सरोवर है. जिसमें देवताकी चल मूर्त्तियाँ नावमें बैठाकर जलमें घुमाई जाती हैं। सरोवरके चारों तरफके मकानोंमें एक समय यूरोपियन अफसर रहते थे। तिरुचनापल्लीमें एक अवजरवेटरी, २ जेलखाने, कई एक गिरजे, जिनमेंसे २ बडे हैं एक कालिज, कई स्कूल और कई एक अस्पताल हैं। किलेसे १½ मील पश्चिम फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८४ में देशी पैदलकी दो रेजीमेंट थीं। रात्रिमें शहरकी सडकोंपर लालटेनोंकी रोशनी होती है। दक्षिण वाले सुनहले चट्टानके पश्चिम मदरास हातेके बडे जिलोंमेंसे एक सेण्ट्रल जेल है। शहरमें सोनेके सुन्दर भूषण और चुरट बहुत तयार होते हैं। शहरमें सोनार बहुत हैं। यह जिलेमें सौदागरीका प्रधान स्थान है।

चट्टानके ऊपरके मन्दिर—शहरकी बस्तीके पास २३५ फीट ऊँचा पत्थरका छोटा टीला है, जिसके ऊपरकी सब जगहोंपर मन्दिर बने हुए हैं और दक्षिण ओर नीचेसे ऊपर तक पत्थरकी सीढ़ियां है। रास्तेके बगलोंपर कई हाथी और बहुतेरे ऊँचे स्तम्भ हैं। ३०४ सीढ़ियोंके ऊपरसे बायें और दहिने दोनों ओर अलग अलग सीढ़ियाँ ऊपरको गई हैं। बायें ८६ सीढ़ियोंके ऊपर बडा शिवमन्दिर और दहिने २०८ सीढ़ियोंके ऊपर गणेशजीका छोटा मन्दिर है। शिवके मन्दिरके पास कई एक मन्दिर और मण्डपोमें शिव, पार्वती, गणेश, सुब्रह्मण्य अर्थात् स्कन्द आदि देवताओंकी मूर्त्तियां और चाँदीके पत्तरोंसे मढ़ा हुआ एक बड़ा नन्दी है। गणेशजीके मन्दिरसे चारोओरके सुन्दर दृश्य देखनेमें आते हैं। प्रति वर्षके भादोंमें गणेश उत्सवके समय वहां दर्शनका बड़ा मेला होता है। सन् १८४९ के मेलेके समय एक आकस्मिक भयसे घबड़ा कर उतरनेके समय वहाँ लगभग २५० यात्री कुचलकर मरगये।

तिरुचनापल्ली जिला—इस जिलेके पश्चिमोत्तर और उत्तर सेलम जिला, उत्तर और पूर्वोत्तर 'दक्षिण आरकाट' जिला; पूर्व और दक्षिणपूर्व तञ्जौर जिला, दक्षिण पुदुकोटाका राज्य और मदुरा जिला और पश्चिम कोयंबुत्तूर जिला है। जिलेका सदर स्थान तिरुचनापल्ली शहर है। जिलेकी भूमि समतल है, किन्तु स्थान स्थानपर चट्टानी टीले देखनेमें आते हैं। केवल लगभग २५०० फीट ऊँचा पचैमलई नामक एक पहाड़ी है। जिलेकी प्रसिद्ध नदी कावेरी और उसकी शाखा कोलरून है। कावेरी नदी जिलेकी पश्चिमी सीमासे जिलेमें प्रवेश करके पूर्वको बहती है। उसका वृत्तान्त श्रीरङ्गम्के वृत्तान्तमें देखिये। जिलेकी उत्तरीय सीमापर कुछ दूर तक वेलार नदी बहती है। तिरुचनापल्ली और कोयम्बुतूर जिलेके मध्यमें अमरावती नदी है। जिलेमें मकान बनानेके कामका पत्थर और लोहेके ओर होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुचनापल्ली जिलेके ३५६१ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२१५०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ११११९४३३ हिन्दू, ६१४४० कृस्तान, ३४१०४ मुसलमान, ३३ बौद्ध, ६ जैन और १६ अन्य। हिन्दुओंमें ३७८४४२ वनिया ( जाति

विशेष ) १९३००१ वेल्लाल ( खेतिहर ), १३९१६२ सतानी ( दो मसला ), १३३६१३ परियन् ( नीच ), ६३८४० इडैयन ( भेड़िहर ), ३५३२८ कैक्कळर ( कपड़ा विननेवाले ), ३४११० ब्राह्मण, २९५६६ कंभाड़न ( लोहार ), १७८७२ सेट्टी ( सौदागर ), १३८८४ अम्बंटन ( नाई ), १२३१० वनान ( धोबी ), १०८३२ सेम्बड़वन ( मछुहा ), ५९९६ कुसवन ( कुम्भार ), ५६०० सानान ( मदक ), २०५७ क्षत्री, २४७ कणक्कन ( लिखने वाले ) और ४३६०४ अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुचनापल्ली जिलेके कसबे तिरुचनापल्लीमें ९०६०९ और श्रीरङ्गम्मे २१६३२ मनुष्य थे। तिरुचनापल्ली जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास–दक्षिणका देश, जिसका एक भाग तिरुचनापल्ली जिला है, चोला, चेरा और पांड्य वंशके राज्योंमे विभक्त था। उनके राज्यके आरम्भका समय ठीक नहीं जाना जाता है; किन्तु अनुमानसे जान पडता है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे ५०० वर्ष पहिले उनके राज्य विद्यमान थे। उनके राज्य कई एक शकलमें सोलहवी सदी तक थे। उनके राज्योंमे तिरुचनापल्ली चोला राज्यका एक भाग था, जिसकी राजधानी एक समय वोरैयर नामक नगर था, जो वर्तमान तिरुचनापल्ली शहरका एक शहरतली है। कहते हैं कि सन् १३० ईस्वीमें वोरैयर नगर विद्यमान था। सोलहवीं सदीके अन्तसे पहिले यह सम्पूर्ण देश नायकोंके अधिकारमे हुआ। उस राजवंशको कायम करनेवाला विजयानगरके राजाके एक अफसरका पुत्र विश्वनाथ नायक था, जो सन् १५५९ में मदुराका हुकूमत करनेवाला बना और थोडही समयके पश्चात् तिरुचनापल्लीको अपने अधिकारमे कर लिया। उसके राज्यके समय तिरुचनापल्ली शहर सँवारा गया और किलेका बडा भाग दुरुस्त किया गया। सन् १५७३ में विश्वनाथकी मृत्यु हुई। नायक वंशके लोगोंने सन् १५५९ से १७४० तक तिरुचनापल्ली और मदुरामें हुकूमत की। उनमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक था, जिसका देहान्त सन् १६५९ में हुआ। उसके पोता चोका नायकने मदुराको छोड कर तिरुचनापल्लीको अपनी राजधानी बनाया। उसकी बनाई हुई इमारत अवतक तिरुचनापल्लीमें नवाबके महल करके प्रसिद्ध है। सन् १६८२ में चोका नायकका देहान्त हुआ।

सन् १७४० में आरकाटके नवाबके रिस्तेदार चन्दासाहबने तिरुचनापल्लीके नायककी विधवा मीनाक्षीको धोखा देकर तिरुचनापल्लीको लेलिया। सन् १७४९ और १७६२ के बीचमें जब अङ्गरेज और फरासीसी दक्षिणमें लड़ते रहे, अङ्गरेज महम्मदअलीके और फरासीसी चन्दासाहबके सहायक थे। प्रधान लडाइयां श्रीरङ्गम्के टापूमे हुईं। सन् १७६३ की पेरिसकी सन्धि द्वारा महम्मदअली कर्नाटकका नवाब बनाया गया। हैदरअली और टीपू सुलतानसे अङ्गरेजोंकी लडाइयोंके समय तिरुचनापल्ली जिला उजाड होगया। किन्तु इसमें कोई प्रसिद्ध लडाई नहीं हुई। पीछे यह अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें आगया। तिरुचनापल्ली शहरमे सन् १८६६ मे म्युनिसिपल्टी कायम हुई और सन् १८६८ मे म्युनिस्पल बाजार बनाया गया। पहिले सरकारी फौज किलेमें रहती थी, उसके पीछे वोरैयर शहरतलीमें हटाई गई, अब वर्तमान लाइनमें है।

राजा शिवप्रसादने अपने हस्तामलकमें लिखा है कि सेलम, आरकाट, तिरुचनापल्ली, तञ्जौर, मदुरा, तिरुनलवेली और कोयम्बुतूर ये सातों जिले ( स्थान ) द्राविड देशमें गिने जाते हैं ।

## श्रीरंगम् ।

तिरुचनापल्लीके रेलवे स्टेशनसे एक मील पूर्वसे दो सडक दो तरफ गई है,—एक आगे पूर्व ओर तिरुचनापल्ली शहरको और दूसरी उत्तर ओर श्रीरङ्गम्के टापूको । स्टेशनपर सवारीके लिये एके और बैलगाडी मिलती है । रेलवेके स्टेशनसे ३ मील और तिरुचनापल्ली शहरसे लगभग २ मील उत्तर मदरास हातेके तिरुचनापल्ली जिलेमें कावेरी नदीके श्रीरङ्गम् टापूके भीतर श्रीरङ्गम् कसबा तथा श्रीरङ्गम्का प्रसिद्ध मन्दिर है । कावेरी नदीपर ३२ मेहराबीका पुल बना है, जिससे उत्तर मन्दिरके निकट कावेरीकी छोटी धारापर छोटा पुल है । लगभग १७ मील लम्बा और १½ मील चौडा श्रीरङ्गम टापू है । श्रीरङ्गजीके मन्दिरसे पांच छः मील पश्चिम टापूकी पश्चिमी सीमा है, जिस स्थानसे कावेरी नदीकी दो शाखा हो गई है, उनमेंसे उत्तरकी शाखा कोलरुन तथा कोलडन और दक्षिणकी शाखा कावेरी करके प्रसिद्ध है । दोनों शाखा श्रीरङ्गमके मन्दिरसे ग्यारह बारह मील पूर्व जाकर प्रायः मिल गई हैं । जब देखा गया कि क्रम क्रमसे कोलरुन अधिक गहरी और कावेरी कम गहरी होती जाती है, इससे तञ्जौर जिलेके खेतोंकी सिचाईके काममें बाधा पडेगी तब सन् १८३६ ईस्वीमें कोलरुनके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक एक बांध बना दिया गया । कावेरी नदी कोलरुनसे अलग होनेके बाद कई शाखाओंमें होकर तञ्जौर जिलेको पटाती है, जिनमेंसे प्रधान धाराका नाम वेनार है। तिरुचनापल्लीके रेलवे स्टेशनसे श्रीरङ्गजीके मन्दिरको जानेमें कावेरीकी दो धाराके दो पुल मिलते हैं और मन्दिरसे उत्तर कावेरीकी कोलरुन नामक धारा है ।

कावेरी नदी कुर्गकी पहाडियोंसे निकलकर मैसूरके राज्य और कर्नाटकमें बहती हुई ४७२ मील दक्षिण पूर्व बहनेके पश्चात् तञ्जौरसे पूर्व ओर समुद्रके पूर्वी घाटमें मिल गई है । श्रीरङ्गपट्टनम्, शिवसमुद्रम्, श्रीरङ्गम्, तिरुचनापल्ली, तञ्जौर इत्यादि नगर इसके किनारेके पास हैं । कावेरीके भीतर ३ प्रसिद्ध टापू हैं;—( १ ) मैसूर राज्यमें मैसूर राजधानीके पासका श्रीरङ्गपट्टनम् आदिरङ्गम्, ( २ ) मैसूर राज्यमें शिवसमुद्रम् नामक टापू मध्यरङ्गम् और ( ३ ) तिरुचनापल्लीके पास श्रीरंगम्का टापू अन्तरगम् । महाभारत—वनपर्वके ८५वें अध्यायमें लिखा है कि कावेरी नदीमें स्नान करनेसे हजार गोदानका फल मिलता है। शिवपुराण—विद्येश्वर संहिताके १० वें अध्यायमें है कि पवित्र कावेरी नदी सह्य पर्वतसे निकली है; तुला राशिपर बृहस्पति और सूर्यके होनेपर कावेरीमें स्नान करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होता है और कूर्मपुराण—उपरिभागके ३६ वे अध्यायमें लिखा है कि पवित्र कावेरी नदीमें स्नान और तर्पण करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होता है। इनके अलावे पुराणोंमें स्थान स्थानपर कावेरीका माहात्म्य और उसका नाम मिलता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय श्रीरंगम् कसबेमें २१६३२ मनुष्य थे, अर्थात् १०२३८ पुरुष और ११३९४ स्त्रियां। इनमें २१३७३ हिन्दू, २१२ क्रस्तान और ४७ मुसलमान थे । श्रीरंगजीके मन्दिरके घेरेके भीतरही प्रायः सम्पूर्ण कसबा है । उसके भीतरही

बाजार, पण्डाओं और सर्वसाधारण लोगोंके मकान और कई धर्मशालाये है। बाजारमें खाने पीनेकी वस्तु सर्वदा तैयार रहती है। धनी यात्रियोंको पण्डे लोग अपने मकानोंमे टिकाते है। वहाँ रामानुज संप्रदायके आचारी लोगोंकी प्रबलता तथा आधिक्यता है। इनकी मूलगद्दी तोताद्रीमें है, किन्तु श्रीरंगम् भी उनके मुख्य स्थानहीके समान है। वहाँ रामानुज सम्प्रदायकी २ गद्दी है; आनन्दस्वामीकी और भट्टरस्वामीकी। मन्दिरके एक भागमे रामानुजस्वामीका मन्दिर है।

पूस सुदी १ से ११ तक श्रीरङ्गम्में वैकुण्ठ एकादशीका बडा मेला होता है। उस समय एक बडा पण्डाल बनता है। और उसमे बांसकी कमाचियोंपर कागज साटकर और अन्य प्रकारसे भी देव देवियों तथा हाकिम, सिपाहियों, कैदियो इत्यादिकी विचित्र मूर्त्तियाँ बनाकर रक्खी जाती है। पण्डाल और प्रतिमाओंके बनानेमे तीन चार हजार रुपया खर्च पडता है।

श्रीरङ्गजीका मन्दिर—श्रीरङ्गजीका मन्दिर, जिसके भीतर श्रीरङ्गम् कसबाका बड़ा हिस्सा है, उत्तरसे दक्षिण तक लगभग २९०० फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिमको २५०० फीट चौडा है, अर्थात् वह २६६ बीघे भूमिपर फैला हुआ है। उसका विस्तार दिल्लीके किलेसे करीब डेवढा है। इतना बडा देवमन्दिर किसी स्थानमे नहीं है। सात दीवारोंके भीतर श्रीरङ्गजीका निज मन्दिर है। स्थान स्थानपर चारोंओरकी दीवारोंमें छोटे बडे १८ गोपुर बने हुए है, जिनमे २ बहुत बडे है। इनके अतिरिक्त अनेक दरवाजे भी है। नीचेके नम्बरोंसे नकशेके नम्बरोंसे मिलाकर मन्दिरके स्थानोंको देखिये। नीचे लिखे हुए मन्दिर और मण्डपोंके अलावे मन्दिरके घेरेके भीतर बहुतसे मन्दिर, मण्डप तथा स्थान है।

(नंबर १) बाहरवाली चारोंओरकी दीवारोंके मध्य भागमे एकही समान एक एक बडा फाटक है, जो गोपुरोंकी नेव जान पडते है। अगर इनके ऊपर शुडाकार गोपुर बनकर तयार होते तो उनकी ऊँचाई लगभग ३०० फीट होजाती। इनमेसे तिरुचनापल्लीकी ओरके दक्षिणके फाटकके भीतरकी ऊँचाई ४३ फीट, लम्बाई (दहिने बांये) १३० फीट और गहराई अर्थात् आगे पीछे १०० फीट है। फाटकमे बडे बडे पत्थर खडे है, जिनमेंसे चन्द पत्थर ४० फीटसे अधिक ऊँचे हैं। दक्षिणके फाटकसे यात्री लोग मन्दिरके सातवे कोटमें प्रवेश करते है, जहा एक अस्पताल है और नित्य बाजार लगता है। इस कोटके मध्यमें चारो तरफ पक्की सडक बनी है, जिसके बगलोंमे सर्व साधारण लोगोंकी बस्ती है। दक्षिण वाले फाटकसे चार पाँच सौ गज दक्षिण, कावेरी नदीकी दक्षिणी शाखाओंमेकी छोटी शाखा है, जिसमे यात्रीगण स्नान और दान करते है। कावेरीकी उत्तरी शाखा, जिसको कोलरुन कहते हैं, मन्दिरके उत्तरके फाटकसे आधे मीलसे अधिक उत्तर है।

(नंबर २) छठवे कोटमे तीन ओर छोटे छोटे और दक्षिण ओर सात खनवाला बड़ा गोपुर है। कोटके भीतर चारोंओर सडकके बगलोंमें ब्राह्मण और पण्डोंकी बस्ती तथा दक्षिण ओर दुकानें है। चारो बगलोंकी दीवार लगभग २० फीट ऊची है।

(नंबर ३) पाचवें कोटमें चारों तरफ एक एक छोटे गोपुर और कोटके भीतर चारों ओर सडकके बगलोमे ब्राह्मण और पण्डोंके मकान है।

(नंबर ४) चौथे कोटमें दक्षिण और उत्तर एक एक छोटा गोपुर और पूर्व ओर १५२ फीट ऊँचा एक बडा गोपुर है, उसके ऊपरका भाग पूरा नहीं हुआ है, अगर पूरा

उत्तर

## श्रीरंगजीके मंदिरका नक्शा.

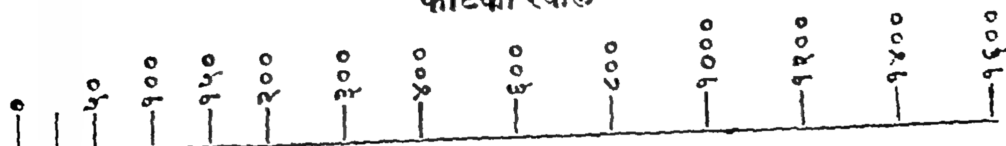
७

६

५

४

फीटका स्केल



होता तो वह २०० फीटसे अधिक ऊँचा होजाता । उसके नीचेका फाटक ४४ फीट ऊँचा है, इस कोटमें कई एक बड़े बड़े मण्डप बने हुए है, जिनमेंसे लगभग ४५० फीट लम्बा और १३० फीट चौड़ा "सहस्र स्तम्भ मण्डपम्" है, जिसमें १६ स्तम्भोंके ६०, पंक्तियोंमें १८ फीट ऊँचे ९६० स्तम्भ लगे हुए है। इस कोटके पूर्व वाले वडे गोपुरके पश्चिम अपूर्व चित्रकारीका एक सुन्दर मण्डप है । उसके स्तम्भोंमें भांति भांतिके घोड़े घोडसवार इत्यादिके पूरे स्वरूप बने हुए है । कोटके दक्षिणके मण्डपमें श्रीरङ्गजी आदि देवताओंके चित्रपट विकते है। कोटके पश्चिमके भागमें एक वावली और केला, नारियलका छोटा वाग है।



श्रीरंगक्षेत्रस्य राजस्थाने ( कोट ) अथाः।

( ५ ) तीसरे कोटमें दक्षिण और उत्तर एक एक गोपुर और पूर्व एक खिडिकी है। दक्षिणके गोपुरके सामने उत्तर गरुड़मण्डपम नवीन रंगसे रंजित बहुत बडी गरुडकी मूर्त्ति है, जिससे उत्तर एक चबूतरेके पास सोनेका मोलम्मा किया हुआ गरुडस्तम्भ है।

कोटके ईशान कोनेमें चन्द्रपुष्करणी नामक एक गोलाकार सुन्दर सरोवर है, जिसमें यात्रीलोग स्नान या मार्जन करते हैं। उसके पास महालक्ष्मीका विशाल मन्दिर, कल्पवृक्ष नामक पेड, श्रीरामचन्द्रकी मूर्त्ति और वैकुण्ठनाथ भगवान्का प्राचीन स्थान है। वहा कितने देवता और ऋषियोंकी प्रतिमा है।

( ६ ) दूसरा कोट ९९० फीट लम्बा और इतनाही चौडा है, जिसके पश्चिम बगलमें एक दरवाजा और दक्षिण हिस्सेमें दालान और मण्डपम है।

( ७ ) पहले कोटका दरवाजा दक्षिण है। कोटके उत्तर हिस्सेमें साधारण कदका श्रीरङ्गजीका निज मन्दिर है, जिसके नीचेका भाग पीछेकी ओर अर्थात् उत्तर गोलाकार है और ऊपरके शिखरपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है। मन्दिरके पीछेकी छतमें देवतोंकी चित्र मूर्त्ति है। श्रीरङ्गजीके निज मन्दिरके पीछे एक कूप और एक मन्दिर है, जिसके पीछे पीतलका एक पत्तर भूमिमें गडा है। वहाँसे श्रीरङ्गजीके निज मन्दिरके शिखरका दर्शन होता है। शिखरपर चार वेदोंके स्थानपर चार सुवर्ण कलश है। थोडी दूर आगे एक ऊचे दालानमें भी वैसाही एक पत्तर है, जहासे मन्दिरके शिखरपर पीतलमयी श्रीवासुदेवकी मूर्त्ति देख पड़ती है।

श्रीरंगजीकी कृष्णपाषाणमय ६ फीटसे अधिक लम्बी चतुर्भुज मूर्त्ति शेषपर शयन करती है। उनका किरीट, मुकुट, चरण, हाथ सब सुनहरे है। वह बहुमूल्य भूषण पहरे हुए है। उनके निकट श्रीलक्ष्मीजी और विभीषण बैठे है और श्रीदेवी, भूदेवी इत्यादि ताम्रमयी ३ उत्सवमूर्त्तियाँ खडी है। मन्दिरका पुजारी एक रुपया लेकर यात्रीकी ओरसे श्रीरङ्गजीकी पूजा और कर्पूरकी आरती कर देता है। जो यात्री रुपया नहीं देता है, वह दर्शनमात्र करके चलाजाता है। मन्दिरमें दर्शकोंकी भीड रहती है। खास मन्दिर एक कोठरीके समान छोटा है। कोई कोई यात्री वहाँ अटका चढाते है। मन्दिरके खजानेमें सोना, चाँदी, पन्ना, हीरा, लाल इत्यादि रत्नोंसे बने हुए लाखों रुपयेके देवभूषण और पात्र है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—( दशम स्कन्ध, ७९ वाँ अध्याय ) श्रीबलदेवजी कावेरी नदीमें स्नान कर श्रीरङ्ग नामक विख्यात स्थानमें गये, जहा श्रीहरि नित्य निवास करते है।

मत्स्यपुराण—( २२ वाँ अध्याय ) श्रीरंग नामक तीर्थमें श्राद्ध करनेसे मनुष्योंको अनन्त फल लाभ होता है।

पद्मपुराण—( पाताल खण्ड उत्तरार्द्ध, प्रथम अध्याय ) द्रविड देशके मनुष्योंने विभीषणको जंजीरसे बाँध लिया। श्रीरामचन्द्र अयोध्यामें दूतोंके मुखसे यह समाचार सुनकर मुनिगण और वानरोंको संग ले विभीषणको ढूँढ़ते हुए श्रीरङ्ग नामक नगरमें पहुँचे। वहाँके उपस्थित राजाओंने उनकी पूजा की। रामचन्द्रने बहुत खोजनेके पश्चात् बहुत जजीरोंसे बँधा हुआ भूगर्भमें विभीषणको पाया। उनके पूछनेपर वहाँके ब्राह्मणोंने कहा कि एक वृद्ध धार्मिक, ब्राह्मण ध्यानमें मग्न बैठा था। विभीषणने उसको अपने चरणसे ऐसा मारा कि वह

मरगया। तब हम लोगोंने इस ब्रह्मघातीको बहुत मारा, परंतु यह नही मरा। इसको
डालना उचित है। रामचन्द्र बोले कि मैने इसको कल्प पर्यन्त राज्य करनेको कहा है;
लोग इसके बदलेमें मेरा दण्ड कीजिये। तब वहाँके ब्राह्मणोने विभीषणसे प्रायश्चित्त
करा उसको शुद्ध कर दिया। रामचन्द्र अयोध्यामे आये।

वाल्मीकि रामायण—( उत्तर कांड, १२१ वां सर्ग ) श्रीरामचन्द्रजीके परम
जानेके समय सुग्रीव आदि वानर और विभीषण आदिक राक्षस उनके साथ जानेके
अयोध्यामें आये। उस समय रामचन्द्रने विभीषणसे कहा कि हे राक्षसेन्द्र ! जब तक
प्रजागण है, तब तक तुम लंकामे राज्य करो और इक्ष्वाकु वंशके इष्टदेव इन श्रीजगन्नाथ
जो इन्द्रादि देवताओंके पूज्य है, आराधन करते रहो। विभीषणने रामचन्द्रका
स्वीकार किया।

श्रीरङ्गमाहात्म्य—( प्रथम अध्याय ) चन्द्रपुष्करणीके तटपर श्रीरङ्ग क्षेत्र है, जि
जानेसे मनुष्यको नर्कवास नहीं होता। चन्द्रपुष्करणीमे स्नान करके रंग मन्दिरका
करनेसे सम्पूर्ण पदार्थ मिलता है। कावेरी नदीमे स्नान करके पितरोको तिलांजलि
उनका उद्धार होजाता है। कन्या राशिके सूर्य होनेपर कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको रङ्गध
पितरकर्म करना उत्तम है। माघके महीनेमे कावेरी नदी और चन्द्रपुष्करणीका स्नान
रंगक्षेत्रका निवास अति दुर्लभ है।

( दूसरा अध्याय )प्रलयके अन्तमे भगवान् नारायणने प्रलयके समुद्रमें शेषके
शयन किया। उनकी नाभिकी नालसे ब्रह्माजी प्रकट हुए। ( तीसरा अध्याय ) एक
ब्रह्माजीने क्षीर समुद्रमे विष्णुका तप किया। विष्णु भगवान् कूर्मरूपसे प्रकट हुए। ब्र
कहा कि हे भगवन् ! तुम मुझको अपना दिव्य रूप दिखाओ। विष्णुने कहा कि “ ओं
नारायणाय” इन अष्टाक्षर मन्त्रसे तुम फिर तप करो, तब हमारा परम रूप देखोगे
जब ब्रह्माने एक हजार वर्षतक फिर तप किया, तब क्षीर सागरसे श्रीरंगम् ना
परम धाम प्रकट हुआ। ब्रह्माने श्रीरंगका दिव्य विमान देखकर उसको प्रणाम किया। वि
भगवान् उस आलयमे सोते थे। ( चौथा अध्याय ) ब्रह्माने धामके द्वारके एक ओर जय
और दूसरी ओर विजयको और धामके भीतर शेषशायी भगवान्को देखा। वह अ
भुजाओंको तकिये बनाये और अपना एक हाथ फैलाये हुए थे। उनके निकट लक्ष्मीजी
थीं इत्यादि। ( पांचवा अध्याय ) ब्रह्माने वर मागा कि मै तुम्हारे इसी भांतिके विग्र
तुम्हारा पूजन करना चाहता हूँ। भगवान् बोले कि तुम्हारी इच्छासे मैने तुमको विमा
साथ अपना साकार रूप दिखलाया है, तुम इसी प्रकारकी हमारी प्रतिमा स्थापन क

( ६ छठा अध्याय ) ब्रह्माने सत्यलोकमे जाकर विरजा नदीके पार विष्णुका
बनवाकर तुला राशिके सूर्यमे भगवान्की स्थापना करवाई और देवताओको आज्ञा दी
तुमलोग श्रीरङ्गशायी भगवान्की पूजा करो। बहुत काल तक सूर्य और उनके पश्चात्
समय तक सूर्यके पुत्र वैवस्वतमनु सत्यलोकमे श्रीरङ्गशायी भगवान्की पूजा करते
मनुने अपने पुत्र इक्ष्वाकुको वैष्णव धर्मका उपदेश दिया। इक्ष्वाकुने बड़ा तप करके ब्रह्माज
श्रीरङ्गको पाया और उनको अपनी राजधानी अयोध्यामे लाकर स्थापित किया। तबसे श्री
इक्ष्वाकु वंशियोके इष्टदेव हुए। ( ८ वॉ अध्याय ) त्रेतायुगमें अयोध्याके राजा दशर

अर्जुन गङ्गके समय चोल देशके राजा धर्म्मवर्म्माको बुलाया । धर्मवर्म्माने देखा कि श्रीरङ्गके प्रभावसे अयोध्याका वैभव अत्यन्त बढ़ गया है । उसके पश्चात् वह अपने देशमे चन्द्रपुष्करणीके तटपर जाकर रङ्गधामके पानेके लिये तप करने लगा । तब मुनियोने कहा कि भगवान्‌ने हम लोगोंको वर दिया है कि थोडे दिनोके पश्चात् कावेरीमे चन्द्रपुष्करणीके तटपर हमारा रङ्गधाम आवेगा । राजा धर्मवर्म्मा मुनियोंके वचन सुनकर कावेरीके दक्षिण तीरके निचुला नामक अपनी पुरीमे चला गया । उसके पश्चात राजा दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रने लङ्काके राजा विभीषणको श्रीरङ्गधाम दे दिया । विभीषणने राक्षसोके सहित श्रीरङ्गधामको लेकर अयोध्यासे प्रस्थान किया और दक्षिण देशमे पहुच चन्द्रपुष्करणीके तटके अनन्त पीठपर उसको रक्खा । राजा धर्मवर्म्माने विभीषणका अतिथि सत्कार किया । विभीषण वहाँसे चलनेके समय जब श्रीरङ्गके विमान अर्थात् मन्दिरको उठाने लगा तब किसी प्रकारसे वह नहीं उठा । उस समय वह दुःखी होकर रंगजीके चरणोपर गिरपडा । श्रीरङ्गजी बोले कि हे विभीषण ! कावेरी नदी और चन्द्रपुष्करणीके निकट यह मनोहर तथा पवित्र देश है, यहाँका राजा धर्मवर्म्मा हमारा परम भक्त है और मैंने पूर्व कालमे कावेरीको वर दिया था कि तुम्हारे मध्यमे हमारा रगधाम बसेगा इस लिये तुम लङ्कामे चले जाओ, हम तुम्हारी ओर मुख करके सोवेंगे । तब विभीषण लङ्काको चला गया ।

इतिहास—ग्यारहवीं सदीमे श्रीरङ्गम्‌के यामुनाचार्यके पुत्र वररङ्गस्वामीने श्रीरङ्गपुरीमें श्रीरामानुजस्वामीको लाकर श्रीरङ्गनाथका कार्य समर्पण करदिया, तबसे रामानुजस्वामी वहाँही रहकर भारतवर्षमे अपने मतका प्रचार और उपदेश करने लगे । सन् ११३७ ईस्वीमें श्रीरगनगर अर्थात् श्रीरंगम्‌मे उनका देहान्त हुआ, उस समय उनकी अवस्था १२० वर्षकी थी । ( भारतभ्रमणके १० वे अध्यायकी भूतपुरीके वृत्तान्तमे देखिये ) श्रीरङ्गजीका वर्तमान मन्दिर सत्रहवीं और अठारहवीं सदीका बना हुआ है । सम्पूर्ण मन्दिर एकही समयमें नहीं बना था, वह क्रम क्रमसे समय समय पर बढ़ाया गया । सन् १८७१ में श्रीरङ्गम्‌में म्युनिसिपल्टी नियत हुई ।

## जम्बुकेश्वर ।

श्रीरङ्गम्‌के मन्दिरसे १ मील पूर्व श्रीरङ्गम्‌के टापूके भीतर मदरास हातेके तिरुचनापल्ली जिलेमें ( १० अंश ५१ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४४ कला, पूर्व देशान्तरमे ) जम्बुकेश्वरका प्रसिद्ध मन्दिर है । वह मन्दिर शिल्पकारी और मनोज्ञतामे श्रीरंगजीके बड़े मन्दिरका मुकाबला कर रहा है । मन्दिरका विस्तार १०० बीघेसे अधिक होगा । मन्दिरके ३ चौगान हैं ।

पहले घेरेके फाटकका रास्ता, जिससे मन्दिरके पहिले आँगनमे प्रवेश करना होता है, ४०० स्तम्भ वाले मण्डपम्‌को सीधा चला गया है । फाटकके दहिने ४ फीट ऊँचे पत्थरपर तामिल अक्षरका लम्बा लेख है । आँगनमें दहिनी ओर अर्थात् दक्षिण एक तेप्पाकुलम् नामक प्रसिद्ध सरोवर है, जिसमे झरनेका पानी गिरता है । सरोवरके मध्यमें एक मण्डप और दक्षिण पूर्व तथा उत्तर बगलमें दो मञ्जिला दालान बना हुआ है । आँगनमें बाई ओर एक अधबना बड़ा मण्डपम् है । उससे आगे मन्दिरके दूसरे आँगनमे ७९६ स्तम्भोंका

मण्डप और एक छोटा सरोवर है, जिसके वगलोंमे स्तम्भ लगे है । आँगनके दो तरफ दो गोपुर है ।

मन्दिरके ५ घेरे हैं,—भीतरी वाला पहला घेरा, जिसमे विमान अर्थात् जम्बुकेश्वरका निज मन्दिर है, लगभग १२५ फीट लम्बा और इतनाही चौडा है । उसके चारोंओरकी दीवार ३० फीट ऊँची है । दूसरा घेरा ३०० फीट लम्बा और २०० फीट चौड़ा है । उसकी दीवार ३५ फीट ऊँची है, जिसमे ६५ फीट ऊँचा एक गोपुर वना हुआ है । उस घेरेमें कई एक छोटे मण्डपम् हैं । तीसरा घेरा ७५० फीट लम्बा है । उसकी दीवार ३० फीट ऊँची है, जिसमें २ गोपुर वने हुए है, जिनमसे एक १०० फीट और दूसरा ७३ फीट ऊँचा है । चौथा घेरा २४५० फीट लम्बा और १५०० फीट चौड़ा है । उसकी दीवार ३५ फीट ऊँची और ६ फीट मोटी है । उस घेरेमे एक छोटा सरोवर और मन्दिर है । उस स्थानपर प्रति वर्ष श्रीरंगजीके मन्दिरसे उत्सव मूर्त्तियोंकी सवारी आती हैं । पांचवे घेरेमें, जिसके पश्चिम वगल पर एक छोटा गोपुर है, मकानोके ४ सड़कें है ।

मन्दिरके ३ गोपुर लाँघ जानेपर तीसरे ऑगनमे अन्धियारे मण्डपमूसे चलकर जम्बुकेश्वरके पास पहुँचना होता है । मन्दिरके प्राय. आधे भागमें जलहीमें चलना होता है । जम्बुकेश्वर शिवलिङ्गके पास एक हाथसे अधिक गहरा जल है । शिवलिंगके ऊपरका भाग पानीके ऊपर देख पडता है । मन्दिरका पानी मोरी द्वारा वाहर निकला करता है । जम्बुकेश्वरके पीछे चवूतरेपर जम्बुका वृक्ष है ।

दक्षिणके ५ प्रसिद्ध लिंगोंमेंसे जम्बुकेश्वर शिवलिङ्ग है । पांच लिङ्ग ये हैं,—(१) शिवकांचीमें एकाम्रेश्वर पृथ्वीलिङ्ग, (२) जम्बुकेश्वर जल लिङ्ग, (३) दक्षिणी आरकाट जिलेमें तिरुवन्नामलई कसवेके पासकी पहाड़ीपर अग्निलिङ्ग; (४) कालहस्तीमे कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और (५) चिदम्बरमे नटेश आकाश लिंग ।

इतिहास——जम्बुकेश्वरके मन्दिरके भीतरका भाग वहुत पुराना है । श्रीरंगम्के वर्तमान मन्दिरके काम आरम्भ होनेसे पहिले वह तैयार हो गया होगा, किन्तु वाहरका भाग श्रीरंगम्के मन्दिरके काम आरम्भ होनेके वादका अर्थात् सत्रहवीं सदीके आरम्भका वना हुआ ज्ञात होता है । मन्दिरके कई एक भागोमें कई एक शिला लेख है, जिनमेंका एक लेख सन् १४८० ईस्वीका लिखा हुआ है ।

जम्बुकेश्वरके मन्दिरके खर्चके लिये सन् १७५० में ६४ गाँव थे, किन्तु सन् १८२० में केवल १५ गाँव रह गये थे । सन् १८५१ से इन गाँवोके वदलेमें मन्दिरके खर्चके लिये लगभग १०००० रुपया वार्षिक मिलता है ।

## पुदुकोटा ।

तिरुचनापल्ली शहरसे लगभग ७० मील दक्षिण कुछ पूर्व ( १० अंश, २३ कला, उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५१ कला, ५१ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मद्रास हातेमें देशी राज्यकी राजधानी पुदुकोटा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुदुकोटा कसवेमें १६८८५ मनुष्य थे, अर्थात् १५३५३ हिन्दू, ११२९ मुसलमान और ४०३ क्रस्तान ।

पुदुकोटा कसबा अत्यन्त साफ और अच्छा बनावटका है। उसमें राजाका सुन्दर महल, एक जेलखाना, एक बीमारखाना और एक कालिज है। जिसमें सन् १८८२-१८८३ में ३३७ विद्यार्थी पढ़ते थे।

पुदुकोटाका राज्य—यह राज्य मदरास हातेके तंजौर, तिरुचनापल्ली और मदुरा इन तीनों अङ्गरेजी जिलोंसे घेरा हुआ है। देश प्राय समतल है। जगह जगह छोटी पहाड़ियाँ है, जिनमेसे चन्दपर पुराने किले देखनेमें आते है। राज्यके दक्षिण-पश्चिमके भागमें पहाड़ियाँ और जङ्गल है किन्तु अन्य भागमें उपजाऊ भूमि है। राज्यमें लगभग ३००० तालाब बने हुए है, जिनमेंसे कई एक बहुत बडे है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पुदुकोटा राज्यका क्षेत्रफल ११०१ वर्गमील था, जिसमें एक कसबा और ५९६ गाँव और ३०२१२७ मनुष्य थे, अर्थात् २८१८०९ हिन्दू, ११३७२ क्रस्तान, और ८९४६ मुसलमान। हिन्दुओंमे ८०९५४ वनिया ( जाति विशेष ), ५३९६१ मेवडवन ( मछुहा ), ३०१३९ वेल्लाल ( खेतिहर ), २३५३८ परयन २६१५८ उडैयन ( भेडिहर ) और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

पुदुकोटाके राजा कलाल है। उनके राज्यमें ५७५००० रुपया मालगुजारी आती है किन्तु जमीनकी बहुत आमदनी राजाके परिवारके लोगोंके पिशिनमें और मन्दिरोंके खर्च तथा अन्य धर्मार्थ काममे खर्च होजाती है। सन् १८८२—१८८३ मे राजाको राज्यसे ४००००० रुपया मालगुजारी मिली थी। राजा रामचन्द्र तोंडमान् बहादुरके पश्चात् पुदुकोटाके वर्त्तमान नरेश राजा मार्तंडभैरव तोंडमान् बहादुर जिनकी अवस्था १४ वर्षकी है; पुदुकोटाके सिंहासनपर बैठे।

इतिहास—सन १७५३ मे पुदुकोटाके राजासे अङ्गरेज सरकारका सबंध हुआ। पीछे राजाने लडाइयोंमे अंगरेजोंकी सहायता की। सन् १८०३ मे अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने राजाको किलानेली जिला और किला दे दिया, जिनको तंजौरके राजा प्रतापसिंह और उसके बाद अङ्गरेजी अफसरोंने उनको दिया था। पुदुकोटाके राजाका राज्य तोंडमानका राज्य भी कहलाता है। तामिल भाषामे तोंडमानका अर्थ हुकूमत करनेवाला है।

## दिण्डीगल।

तिरुचनापल्ली जक्शनसे ५८ मील दक्षिण-पश्चिम दिण्डीगलका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके मदुरा जिलेमें समुद्रके जलसे ८८० फीट ऊपर तालुकका सदर स्थान दिण्डीगल एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दिण्डीगल कसबेमें २०२०३ मनुष्य थे; अर्थात् १४५८९ हिन्दू, ३३६३ क्रस्तान और २२५१ मुसलमान।

दिण्डीगलमें सरकारी कचहरियाँ, पुलिसका स्टेशन, स्कूल, अस्पताल, बँगला और २ गिरजा हैं, तंबाकू, कहवा और चमडेकी बडी तिजारत होती है। दिण्डीगलका जल वायु मदुराके जल वायुसे अधिक ठण्ढी और स्वास्थ्यकर है। कसबेसे पश्चिम आसे पासके मैदानसे २८० फीट ऊँची पहाडीपर दिण्डीगलका किला है, जिसको नायक वंशके राजाने बनवाया था।

इतिहास—दिण्डीगल पहिले मदुरा राज्यके ( बराय नामके ) अधीन एक स्वाधीन देशकी राजधानी था। उसके पश्चात् दिण्डीगलका किला क्रमसे चन्दा साहब, महाराष्ट्र

लोगो और मैसूरके अधिकारमें रहा। उसके बीच बीचमें देशी प्रधान लोगोंके अधीनमें रहता था। सन् १७५५ में मैसूरके हैदरअलीने किलेमें अपनी फौज रक्खी। सन् १७८१ में अङ्गरेजोंने हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलतानसे किला ले लिया, किन्तु सन् १७८४ में टीपूको मिल गया था। सन १७९२ में एक सन्धि द्वारा वह किला फिर अङ्गरेजी सरकारको मिल गया।

## मदुरा।

दिण्डीगलके रेलवे स्टेशनसे ३८ मील दक्षिण-पूर्व (तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ९६ मील और मदरास शहरसे ३४५ मील दक्षिण-पश्चिम) मदुराका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें (९ अंश, ५५ कला, १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ९ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) पांड्य मण्डलके अन्तर्गत वैगा नदीके दक्षिण किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा मदुरा है, जिसका नाम संस्कृत पुस्तकमें मथुरा लिखा हुआ है। वैगा नदी मदुरा कसबेसे दक्षिण-पूर्व रामेश्वरके टापूके पास जाकर समुद्रमें मिल गई है। वह नदी स्थान स्थानपर गुप्त होगई है। उसके बालू खोदनेपर पानी मिल जाता है।

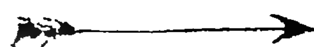
सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा कसबेमें ८७४२८ मनुष्य थे, अर्थात् ४३८८० पुरुष और ४३५४८ स्त्रियां। इनमें ७७४३३ हिन्दू, ७०६५ मुसलमान, २९१९ कृस्तान, ९ जैन और २ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ३१ वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें तीसरा शहर है।

वैगा नदीके पास लालाक्षत्रम् नामक धर्मशाला है, जिसमें रामेश्वरके यात्री टिकते हैं और गाडी भाडा करते हैं। इसके अतिरिक्त उसके आस पास कई अन्य धर्मशालायें हैं। जज साहबकी कोठीके हातेमें एक सरोवरके पास वटका एक बडा वृक्ष है, उसकी जडका घेरा ७० फीट और सायाका व्यास १८० फीट है। मदुरामें चौडी सडकोंके किनारोंपर दूकानें बनी हुई हैं और बडा मन्दिर, जेलखाना, सरकारी कचहरियाँ, अनेक अस्पताल, स्कूल तथा गिरजे हैं।

मदुरा शहरमें सुन्दर पगडियाँ, जिनके किनारोंपर सुनहला काम बनता है और एक प्रकारके अजीब लाल कपडे तैयार होते हैं। रामेश्वरके यात्री मदुरामें रेलसे उतरकर वहाँसे पैदल अथवा बैलगाडीपर समुद्रके तीर पहुंचते हैं। मार्गमें अच्छी जिनिस नहीं मिलती है इस लिये कोई कोई मदुरामें अपनी गाडीपर ले जाते हैं।

एक अच्छी सडक मदुरा कसबेसे पूर्वोत्तर तिरुचनापल्ली और विलीपुरम् होकर मदरास शहरको और दक्षिण-पश्चिम मनियाची होकर कन्याकुमारीके पास तक गई है।

मीनाक्षीदेवी और सुन्दरेश्वर शिवका मन्दिर—रेलवे स्टेशनसे करीब १ मील पश्चिम ८४५ फीट लम्बा और ७२५ फीट चौडा अर्थात् लगभग २२ बीघेमें यह मन्दिर है। बाहरकी दीवार करीब २१ फीट ऊँची है। उसके चारो बगलोंपर प्रतिमाओंसे पूर्ण रङ्गोंसे चित्रित ग्यारह मञ्जिला ग्यारह कलशवाला एकही समान एक एक गोपुर है। उनमेंसे एक गोपुर १५२ फीट ऊँचा, १०५ फीट लम्बा और ६६ फीट चौडा, उसके अतिरिक्त मन्दिरमें स्थान स्थानपर ५ छोटे गोपुर बने हुए हैं।



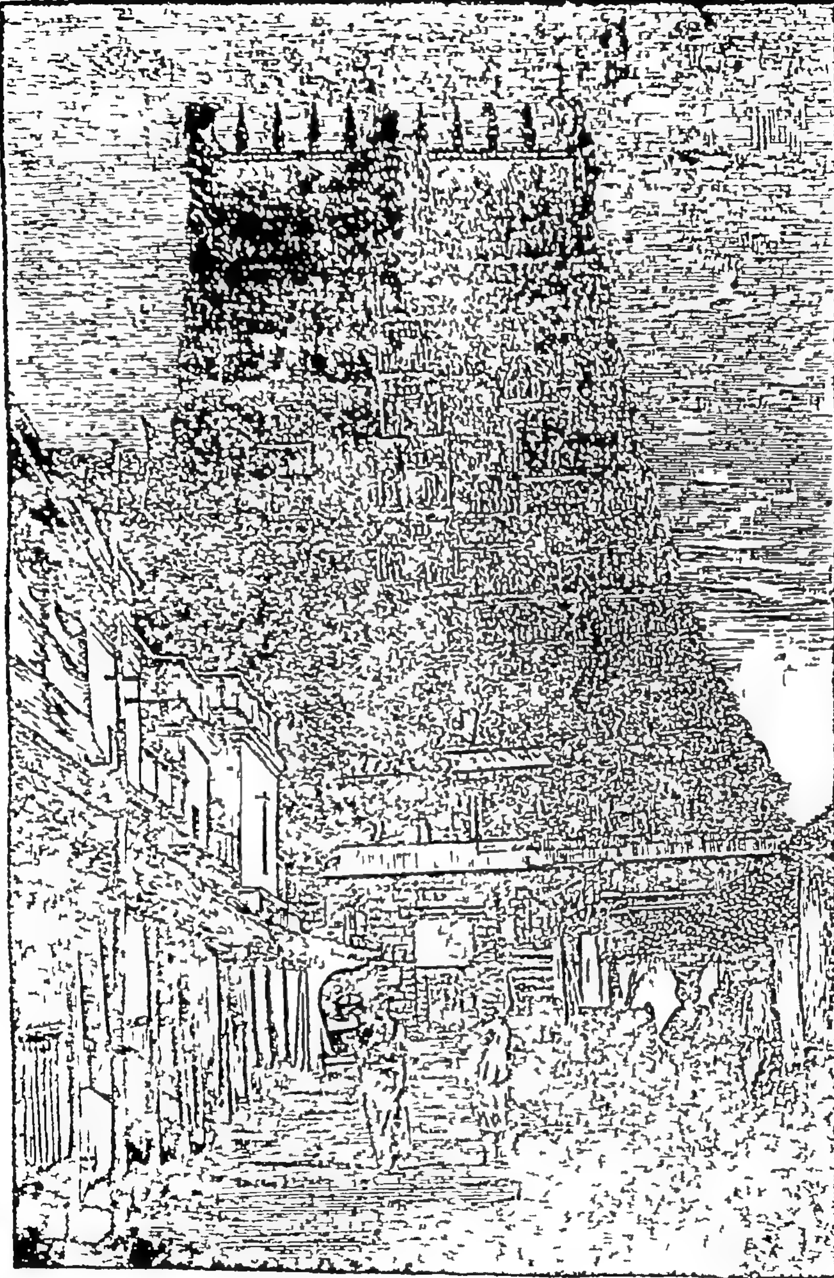

# मीनाक्षी देवी और सुंदरेश्वर शिव के मंदिर का नक्शा



फीटका स्केल



## मधुरायां श्रीमीनाक्षीदेव्या मंदिरस्य दक्षिणदिग्द्वारगोपुरम्।



मन्दिरके २ भाग है,—दक्षिणके भागमें मीनाक्षी देवीका और उत्तरके भागमें सुन्दरेश्वर शिवका मन्दिर पत्थरका है, जिसमें सगतराशीका उत्तम काम बना हुआ है। यहां मन्दिरके नकशेके नम्बरोंसे मन्दिरके स्थान जान पड़ेगे।

( नं० १ ) मीनाक्षीके मन्दिरके फाटकसे अष्टलक्ष्मी मण्डपम् होकर रास्ता गया है। दोनो तरफ छतको थांभती हुई लक्ष्मीकी ८ प्रतिमा हैं, इससे उसका नाम 'अष्टलक्ष्मी मण्डपम्' पड़ा है। वह ३० फीट लम्बा है। फाटकके रास्तेके दहिने सुब्रह्मण्य ( स्कन्द ) की और बायें गणेशजीकी मूर्ति है। फाटकका रास्ता 'मीनाक्षी नायक मण्डपम' को गया है। उससे रास्तेके दोनो बगलोंमे स्तम्भोंके कतार हैं। मण्डपोंमेंसे एक मण्डप १६६ फीट लम्बा है, जिसके अखीरके पास पीतल जड़ा हुआ बड़ा दरवाजा है, जहाँ रातमें बहुतसे दीप जलते हैं। एक अन्धियारा मण्डपम छोटे गोपुरके नीचेसे प्रकाश वाले स्थानको गया है, जहां दोनों तरफ तीन तीन मूर्ति हैं। उसके पासके आंगनमें स्वर्णपुष्करणी नामक सुन्दर तालाब है, जिसमें उत्सव मूर्त्तियाँ बेड़ेमे बैठाकर घुमाई जाती है। वहाँ रानी मङ्गमलका बनवाया हुआ एक छोटा कमरा है, वह रानी सन १७०६ में पर पुरुषके साथ कुव्यवहार करनेके कारण अपनी प्रजाओं द्वारा मारी गई। तालाबके चारोंओर महराबदार मण्डपम और पश्चिमोत्तर बगलपर घण्टाघर है। छतके नीचे रास्तेके दोनो बगलोंमें दिलेर नक्काशीके साथ १२ स्तम्भ हैं, जिनमेंसे ६ दक्षिणी सिंह हैं, उनके बीच बीचमे पांचों पाण्डवोंकी प्रतिमा है,—पहिले दहिने युधिष्ठिर और उसके सामने बायें अपने प्रसिद्ध धनुषके साथ अर्जुन, तब दहिने सहदेव और बायें नकुल उसके बाद दहिनी ओर भीमसेन अपनी गदाके साथ देख पड़ते हैं। उसके सामने बायें देवीका स्थान और द्वारपाल हैं। उस घेरेके पश्चिम भागमें दक्षिण वाले बड़े गोपुरसे पश्चिमोत्तर मीनाक्षीका निज मन्दिर है। कई देवढ़ीके भीतर मीनाक्षीकी श्यामवर्ण सुन्दर मूर्त्ति पूर्व मुखसे खड़ी है। मन्दिरमें कई देवमूर्त्तियाँ हैं और प्रकाशके लिये सर्वदा दीप जलते हैं। मन्दिरके आगे सोनेका मुलम्मा किया हुआ एक बड़ा स्तम्भ है।

( नम्बर २ ) सोनहले स्तम्भसे उत्तर सुन्दरेश्वर शिवके मन्दिरके घेरेका छोटा गोपुर है। उस मन्दिरके बगलके मन्दिरमें देवताओं और ऋषियोंकी बहुतसी मूर्त्तियाँ हैं। उस मन्दिरके पासके कमरोंमे मीनाक्षी और सुन्दरेश्वरके वाहन रक्खे हुए हैं, उनमेंसे २ सुनहली पालकीका मूल्य दश दश हजार रुपया और २ चांदीका मूल्य, जिनके बेश कीमती चोप हैं, बारह बारह हजार रुपया है। वहाँ चाँदीसे मढ़ा हुआ एक हंस और एक नन्दी बैल है। पूर्व वाले बड़े गोपुरसे लगभग ५० गज दूरपर सहस्र स्तम्भोंका मण्डपम् है, जिसमेंके बहुतेरे स्तम्भ देखनेमें नहीं आते, क्योंकि कई जगह स्तम्भोंके बीचमें ईंटे जोड़कर गृह बनाये गये है। उसकी संगतरासी बहुत उत्तम है। उस मण्डपम्को विश्वनाथ नायकका मन्त्री आर्यनायक मुदलीने बनवाया, जिसकी घोड़ेपर चढ़ी हुई प्रतिमा दरवाजेके बायें बनी है। उसके पीछेकी पंक्तिमें स्त्रियों और पुरुषोंकी चन्द दिलेर मूर्त्तियाँ बनी हुई है। पश्चिम वाले गोपुरके पूर्व सुन्दरेश्वर शिवका निज मन्दिर है। कई डेवढ़ीके भीतर उस मन्दिरके पश्चिम भागमें बड़े अर्घेके ऊपर सुन्दरेश्वर शिवलिङ्ग है, जिनके पास दिन रात बहुतसे दीप जलते हैं। मन्दिरमें कई अन्य देवता हैं। मन्दिरके द्वारपर एक बड़ा सुनहला स्तम्भ है।

बड़े मन्दिरसे पूर्व तिरुमलई नायकका बनवाया हुआ ३३३ फीट लम्बा और १०५ फीट चौड़ा एक उत्तम मण्डपम् है। उसके छतके नीचे ४ कत्तारोंमें भिन्न भिन्न तरहकी सङ्गतराशीके १२० स्तम्भ लगे है, जिनमेंसे मध्यके २ कत्तारोंमे दोनो तरफ पांच पांच स्तम्भोंमें नायक वंशके राजाओंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं, जिनमें तिरुमला नायककी मूर्त्तिके ऊपर

चान्दनी बनी हुई है। उसके पीछे दो सूरतहै बायेंकी सूरत तञ्जौरकी शाहजादी तिरुमलई नायककी स्त्री की है। दरवाजेके पास शिकार खेलने वालो और शिकारोंका झुण्ड है। कहा जाता है कि उसके बनानेमें १०००००० इस्टर्लिङ्ग खर्च पडा था। उसके बगलोंमें दीवार है, उसके भीतर मनिहारी आदिकी दुकाने रहती है।

तिरुमलई नायकका महल—रेलवे स्टेशनसे १½ मील पश्चिम मदुराके तिरुमलई नायकका महल है। अब वह सरकारी आफिसोंके काममें आता है। उसका दरवाजा पूर्व बगल पर है। पूर्व बगलके प्रत्येक कोनेके पास एक एक नीचा टावर है। नेपियर फाटक होकर २५२ फीट लम्बा और १५१ फीट चौडा चौगानमें जाना होता है, जिसके चारों बगलोंपर दालान है। महलके पश्चिम बगलमें ६७ फीट चौडी दोहरी दालान और ऊँचा हाल है। उसके बाद एक बडे गुम्बजके नीचे एक दूसरी इमारत मिलती है, जो तख्तका कमरा थी। उसका व्यास ६१ फीट और ऊँचाई ७३ फीट है। गुम्बजके चारोओर बालाखाना है। तिरुमलई नायकके राज्यके समय उसमें स्त्रियाँ बैठकर राज्यके स्वागतोंको देखती थीं। बडे गुम्बजके पश्चिम, उत्तर और दक्षिण एक एक गुम्बजदार कमरा है, जिनमेंसे दक्षिण वाला अनेक प्रकारसे दुरुस्त किया गया है। उत्तरको जाते हुए उसके पश्चिम ५४ फीट ऊँचा एक कमरा मिलता है, जिसमे तिरुमलई नायकका विस्तर रहता था। सीढी घरके पासके दरवाजेसे मजिष्ट्रेटकी कचहरीमें जाना होता है। वह महलका सबसे उत्तम हिस्सा है और अच्छी तरहसे मरम्मत किया गया है।

वैगा नदीके पुलसे करीब १ मील दूर उस नदीके किनारेपर कलक्टरका मकान है, जिसको तिरुमलई नायकने जङ्गली जानवरोंकी लडाई देखनेके लिये बनवाया था।

तेप्पकुलम्—तेप्पकुलम्का अर्थ तामिल भाषामें बेडाका तालाब है। जिस तालावमें मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियाँ नावमें बैठाकर फिराई जाती है। उसको लोग तेप्पकुलम् कहते है। मदुराके रेलवे स्टेशनसे ३ मील पूर्व रामेश्वरके मार्गमें वैगा नदीके उत्तर १२०० गज लम्बा और इतनाही चौडा तेप्पकुलम् तालाव है। उसके चारों तरफ पत्थरके घाट, तथा सडक, मध्यमे मोरब्बा टापूपर एक शिखरदार बड़ा मंदिर और प्रत्येक कोनेपर एक छोटा मंदिर है। टापूपर सुन्दर वाटिका लगी है। तालावमें सर्वदा पानी रहता है। प्रति वर्ष उत्सवके समय उस तालावके किनारे एक लाख दीप जलाये जाते है। उसी समय मदुराके बड़े मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियोंको मंदिरसे ले जाकर तालावमें बेडेपर घुमाते है।

मदुरा जिला—इसके उत्तर कोयम्बुतूर, तिरुचनापल्ली और तञ्जौर जिला, पूर्व और पूर्व-दक्षिण समुद्रकी खाडी, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम तिरुनलवेली जिला और पश्चिम तिरुवांकूरका राज्य है। जिलेका सदर स्थान मदुरा कसबा है। जिलेके दक्षिण-पूर्वकी सीमापर पश्चिमी घाटका सिलसिला, जो वहाँ तिरुवांकूरकी पहाडी कहलाता है, तिरुवांकूरके राज्यसे मदुरा जिलेको जुदा करता है। मदुरा जिलाकी भूमि प्रायः समतल है, किन्तु जगह जगह छोटी पहाडियाँ है और जमीन दक्षिण-पूर्वको ढालू होती गई है। सबसे बडी पहाडीकी चोटी समुद्रके जलसे लगभग ८००० फीट ऊँची है। मदुरा कसबेके आस पास डिण्डीगल आदि ३ पहाडियाँ हैं। जिलेकी प्रधान नदी वैगा है, जो जिलेके मध्य होकर दक्षिण-पूर्वको बहती है। मैदानोंमें वृक्ष प्राय नहीं है। पश्चिमकी पहाडियोंमें अब तक

हाथी, भालू, बाघ और तेंदुए मिलते हैं। जिलेके सब भागोंमें लोहाके ओर मिलते हैं। चन्द नदियोंके बालू धोकर सोना निकाला जाता है। मदुरा जिलेमें ६ तालुका और रामनाद तथा शिवगंगा २ जमींन्दारी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा जिलेके ८४०१ वर्गमीलमें २१६८६८० मनुष्य थे, अर्थात् १९४२८२० हिन्दू, १४०९४८ मुसलमान, ८४९०० कृस्तान, ९ बौद्ध और जैन और ३ अन्य। इनमें १५९२१५३ शैव और ३३२६१६ वैष्णव थे। हिन्दुओंमें ४९८०१४ वेल्लाल ( खेतिहर ), ४७८५९५ बनियाँ ( जाति विशेष मजदूरी पेशे वाले ), १४४२८३ इडैयन ( भेडिहर ), ११८६५९ संवडवन ( मल्लुहा ), ८६२६८ सानान ( मदक ), ७५९७१ कम्भाडन ( लोहार ), ५०२६१ कैकलर ( बिननेवाले ), ५००८३ सेटी ( सौदागर ), ४२५५५ ब्राह्मण. ३३६७५ अंबटन ( नाई ), ३३५०८ सतानी ( दोगला ), २८३०० बनान ( धोबी ), २५५४१ कुमवन ( कुम्भार ), ४१२३ छत्री और २३७६६६ अन्य मनुष्य थे, जिनका कोई खास पेशा नहीं था। कृस्तानोंमें १७६ यूरोपियन, ३७७ यूरेशियन ८४३४७ देशी कृस्तान थे। मदुरा जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा जिलेके कसबे मदुरामें ८७४२८, दिण्डीगलमें २०२०२, पलनीमें १९९४०, पेरियाकुलमूमें १६३६३ रामनादमें १३६१९, किलकरायमें १२३९३, अरुपुकोटईमें १२६७३ और परमकुडीमें १०००१ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त देवीकोट, शिवगंगा और तिरुमङ्गलम् छोटे कसबे हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( सभा पर्व, ५१ वाँ अध्याय ) चोलनाथ और पाण्ड्यनाथ राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय इन्द्रप्रस्थमें आये। वे लोग राजाको भेट देनेके लिये सुवर्णके घड़ोंमें मलयगिरिसे सुगन्धयुक्त चन्दन रस दर्दुर पर्वतसे चन्दन और अगरका ढेर; चमकीले मणि, रत्न तथा सुवर्णके तुल्य सुन्दर पतले चीर लाये थे। ( वनपर्व, ८८ वाँ अध्याय ) पाण्डय देशमें अगस्त्य तीर्थ और वरुण तीर्थ है, उसी देशमें ताम्रपर्णी नदी बहती है। ( कर्णपर्व, २० वाँ अध्याय ) पाण्ड्य देशके राजा मलयध्वज कुरुक्षेत्रके संग्राममें राजा युधिष्ठिरकी ओर लड़ते थे। वे कौरवोंकी असंख्य सेनाके विनाश करनेके पश्चात् अश्वत्थामाके हाथसे मारे गये।

बाल्मीकिरामायण—( किष्किन्धा काण्ड, ४१ वाँ सर्ग ) सुग्रीवने श्रीजानकीजीको खोजनेके लिये अङ्गद, हनूमान, आदि वानरोंको दक्षिण-दिशामें भेजा और उनसे कहा कि तुम दक्षिणमें जाकर पांड्योंके नगरमें प्राकारका द्वार देखोगे जिसका सुवर्णमय किवाड मुक्तामणिसे खचित है, उसके पश्चात् तुम लोगोंको समुद्र मिलैगा, तब उसके पार जानेका उद्योग तुम लोगोंको करना चाहिये।

आदि ब्रह्मपुराण—( १३ वाँ अध्याय ) चन्द्रवंशी राजा ययातिका पुत्र तुर्वसु, तुर्वसुका वह्नि, वह्निका गोभानु, गोभानुका त्रैसानु, त्रैसानुका करंधम और करंधमका पुत्र मरुत्त हुआ। राजा मरुतकी केवल सम्मता नामक एक कन्या थी। वह राजा संवर्तको दी गई। उस पुत्रासे दुष्यन्त पुत्र जन्मा। इस भांति राजा ययातिके शापसे तुर्वसुका वंश पौरव वंशमें मिल गया। उसके पश्चात् दुष्यन्तका पुत्र कुरुत्थाम, कुरुत्थामका पुत्र अथाक्रीड और अथा-

क्रीडके ४ पुत्र हुए, अर्थात् पाण्ड्य, केरल, कोल और चोल, जिनके नामसे पाण्ड्य, केरल, कोल और चोल ये ४ देश निख्यात हुए है।

शिवभक्तविलास—( ३० वॉ अध्याय ) दक्षिण दिशाके मधुरा नामक नगरमे मीनाक्षी नाम्नी देवी और पाण्ड्य राजाओसे पूजित परमेश्वर विराजमान है। मीन अर्थात् मछली-के समान सुन्दर नेत्र होनेके कारण देवीका नाम मीनाक्षी पडा है। वह मलयध्वजकी कन्या है। पाण्ड्य वशके राजा लोग ताम्रपर्णी नदीसे उत्पन्न मोतियोसे देवीकी नित्यही पूजा करते है।

मधुरामे मूर्त्तिनाथ नामक एक धनी वैश्य वडा शिवभक्त था। वह हालासनाथ शिवका पूजन किया करता था। अन्ध्र देशका जैन राजा मधुराके पाण्ड्य राजाको निकालकर वहाका राजा वन गया। उसने ब्राह्मण और देवताओका पूजन बन्द करवा दिया। मूर्त्ति-नाथके अतिरिक्त सव लोग जैन मतावलम्बी होगये। जव जैन राजाके निषेध करने परभी मूर्त्तिनाथने शिवकी पूजाका त्याग नहीं किया तब जैन राजाने ढिंढोरा फिरवाकर चन्दनका विकना वन्द करदिया मूर्त्तिनाथ अपने गृहके सञ्चित चन्दनसे शिवकी पूजा करने लगा। जब घरका चन्दन चुक गया। तब उसने सुवर्णपुष्करिणीमें स्नान करके अपना हाथ काट डालनेका उद्योग किया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे मूर्त्तिनाथ! तुम ऐसा काम मत करो, जैन राजा शत्रुके हाथसे मारा जावेगा, तुम पाण्ड्य देशके राजा होकर वैदिक धर्म स्थापित करोगे। मूर्त्तिनाथ हालासनाथके पास चला गया। गजेश्वर राजाने मधुरापर आक्रमण करके जैन राजा अन्ध्रनाथको मारडाला और मूर्त्तिनाथको मधुराके सिंहासनपर बैठा दिया। जैन लोग मारे गये और वैदिक धर्म स्थापित हुआ। एक सौ वर्षके पश्चात् मूर्त्तिनाथकी मुक्ति हुई।

( ४८ वॉ अध्याय ) द्रोणीपुरके हरदत्त ब्राह्मणने मधुरामे जाकर वहॉके जैन राजाके मन्त्रीसे पूछा कि मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर, जिसको हलासनाथ कहते है, कितनी दूर है। मन्त्रीने उनको दिखला दिया। हरदत्तने मणिके कुम्भोंसे शोभित गोपुरको देखकर वेगवती नदीमे स्नान करके शिव और पार्वतीका पूजन किया और मलयध्वज पाण्ड्यकी कन्या मीनाक्षीदेवी तथा उनके पति हलासनाथकी प्रदक्षिणा करके अपने स्थानपर चला गया। हरदत्तके तेजसे वहॉके जैन राजाको ज्वर लग गया। मन्त्री लोग हरदत्तको राजमहलमें लेगये। उसने भस्म डालकर राजाको आरोग्य करदिया। तब जैन राजाने जैनोको निकाल कर शैव मत ग्रहण किया।

इतिहास—मदुरा हिन्दुस्तानके वहुत पुराने शहरोमेसे है। वह पुराने समयसे हिन्दुस्तानके दक्षिणीय भागकी राजधानी था और वहॉके पण्डित प्रसिद्ध होते थे। भारतवर्षके राज्योंमे कोई राज्य ऐसा नहीं है, जिसका राजवंश इतनी वडी मुद्दत तक वरावर कायम रहा हो। सन् ईस्वीके आरम्भसे चार पॉच सौ वर्ष पहिले पाण्ड्य वंशके राजाका राज्य नियमान था। कई एक शिलालेखो और तावेके दानपत्रोपर, जो अवतक विद्यमान है, पाण्ड्य वंशके कई राजाओंके नाम देख पडते हैं। मधुरस्थलपुराण नामक एक संस्कृतकी

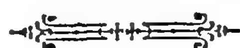
पुस्तकमें पाण्डय राजाओंके चन्द ऐतिहासिक विषय है। उनमें लिखे हुए उसवंशके अंतिम राजा सुन्दर पाण्डयने जैनोंका नाश किया और अपने पडोसके चोला राज्यको जीता, किन्तु ११ वीं सदीके अन्तमें उत्तरसे आक्रमण करने वालेने, जो कदाचित मुसलमान था, सुन्दर पाण्डयको परास्त किया। १४ वीं सदीके पहिले भागमें दिल्लीके बादशाहके सेनापति मलिक काफूरने मदुरापर अधिकार किया। मुसलमानोंने मदुरा शहरको लूटा और बडे मन्दिरके बाहरकी दीवारको, जिसमें १४ बुर्ज थे, और बाहरकी इमारतोंको गिरवा दिया, किन्तु भीतरके दोनों मन्दिर बच गये। उसके पश्चात् हिन्दुओंने मुसलमानोंको निकाल बाहर किया। बाहर वाले वर्तमान बडे गोपुर फिर बनवाये गये। ऐसा प्रसिद्ध है कि पांड्य वंशमें सिलसिलेसे ११६ राजा हुए थे।

सोलहवीं सदीके मध्यमें विजयानगरके राजाने विश्वनाथ नायकको हुकूमत करनेके लिये मदुरामें भेजा। उसके साथ प्रसिद्ध जनरल आर्य नायक मुठली गया। सन् १५५९ में मदुरा जिला विजयानगरके राज्यका एक भाग बना। विश्वनाथ नायकने मदुराके नायक वंशको नियत किया। सन् १५७३ में विश्वनाथका देहान्त हुआ। उसका जीता हुआ राज्य उसके संतानोंके अधिकारमें चला आया। उसके वंशमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक हुआ, जिसका राज्य सन् १६२३ से १६५९ तक था। उसने बहुतेरी इमारतोंसे मदुरा शहरको संवारा। उसका महल अब तक विद्यमान है। उसने अपने राज्यको तिरुवांकूर, कोयम्बुतूर, सेलम, तिरुचनापल्ली, तिरुनलवेली जिलोंपर फैलाया। उसके पुरुखे नाम मात्र विजयानगर राज्यके अधिकारमें थे, परन्तु वह स्वाधीन बन गया, इस लिये बीजापुरके मुसलमान बादशाहने जो विजयानगरके राज्यको अपने अधिकारमें लाया था, मदुरापर आक्रमण किया। तिरुमलई नायकने कर देनेको स्वीकार किया। तिरुमलई नायककी मृत्यु होनेपर मदुरा राज्यके कई एक मालिक हुए। सन् १७४० में कर्नाटकके चन्दासाहबने मदुराको अपने अधिकारमें कर लिया। नायक वंशके राज्यका अन्त होगया। उसके पीछे २० वर्ष तक महाराष्ट्र और मुसलमान लोग मदुरापर आक्रमण करते रहे। सन् १७६२ में कर्नाटकके नव्वाब वालाजाहके लिये अङ्गरेजी अफसर अमानतदार होकर मदुरा जिलेके अधिकारी हुए। सन् १७९० में अङ्गरेजोंने मैसूरके टीपूसे दिण्डीगल तालुक ले लिया। सन् १८०१ में कर्नाटकके नव्वाबने अपना स्वत्त्व ईष्ट इण्डियन कम्पनीको देदिया। सन् १८६५ में मदुरा कसबेमें म्युनिसिपल्टी कायम हुई।

मदुराके मीनाक्षी और सुन्दरेश्वरके वर्तमान मंदिरोंको लगभग सन् १५६० में विश्वनाथ नायकने; सहस्र स्तम्भ मण्डपमको विश्वनाथनायकके मंत्री आर्यनायक मुठलीने, मीनाक्षी नायक नामक मण्डपको तिरुमलई नायकसे पहिलेके राजाके दीवान मीनाक्षी नायकने, बडे मन्दिरके अन्य अनेक सुन्दर हिस्सोंको और बड़े मन्दिरसे पूर्व वाले बडे मण्डपको १७ वीं सदीमें तिरुमलई नायकने बनवाया। तेप्पकुलम् सरोवर भी तिरुमलई नायकके राज्यके समय बना।

---

# चौदहवां अध्याय।



## ( मद्रास हातेमें ) रामनाद, रामेश्वर, देवीपत्तन और दर्भशयन।

## रामनाद।

रामेश्वरके यात्री मदुरामें रेलगाडीसे उतरकर रामेश्वर जाते है। मदुरासे ९० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके किनारेके हरवोलाकी खाडी तक सडक है। सड़कके बगलमें मीलके पत्थर लगे हैं। नित्य सैकडों यात्री पैदल और बैलगाडीपर मदुरासे रामेश्वरके लिये प्रस्थान करते हैं। हरवोलाकी खाडी तकका बैलगाडीका भाड़ा सात आठ रुपया लगता है। रामनादपुर तक ६७ मील अच्छी सड़क है; किन्तु उससे आगे बालूदार मार्ग है, जिसमें कई यात्रियोंकी गाडी उलट जाती हैं। रामनादपुर तक बैलगाड़ी और घोड़े गाडीकी डाक जाती है। कोई कोई यात्री डाकगाड़ीमें जाते हैं, किन्तु घोड़े गाड़ी वाले असवाब नहीं लादते है। नाव द्वारा खाड़ी पार होकर पांबनसे ७ मील पूर्व सडकद्वारा रामेश्वर पहुँचना होता है। ( कुछ लोग नागपट्टनमें रेलगाडीसे उतर आगबोटपर चढ़कर पांबनमें उतरते हैं।

मदुरासे रामेश्वरका फासिला इस भांति है,—

| मील—मोकाम। | मील—मोकाम। |
|---|---|
| २ तेप्पकुलम्। | ४४ दिवानीकचहरी। |
| २$\frac{3}{4}$ छोटीवस्ती। | ४४$\frac{1}{2}$ परमगुडी। |
| ७$\frac{3}{4}$ छोटीवस्ती। | ५७$\frac{3}{4}$ पूलुरक्षेत्र। |
| १२ त्रिभुवन चट्टी। | ६७ रामनादपुर। |
| १८$\frac{3}{4}$ वड़ी वस्ती और चट्टी। | ६८ धर्मशाला। |
| २२$\frac{3}{4}$ भूतनन्दन चट्टी। | ८१ ऊँचीपल्ली। |
| २९ वस्ती और मन्दिर। | ९० हरवोलाकी खाड़ी। |
| २९$\frac{3}{4}$ मानामदुरा। | ९३ पांबन। |
| ३८ झुदुकोटा वस्ती। | १०० रामेश्वरपुरी। |

त्रिभुवनचट्टीपर धर्मशाला, १८॥ मीलके पासकी वडी चट्टीपर छोटी धर्मशाला, भूतनन्दन चट्टीपर धर्मशाला, २९ मीलके पास वैगा नदीके पास एक गिरजा; माना मदुरामें धर्मशाला, झुदुकोटामें धर्मशाला, ४१$\frac{3}{4}$ मीलपर नदीका वालू, परमगुड़ी वड़ी वस्तीमें धर्मशाला. पुलुर क्षेत्रमे धर्मशाला, रामनादपुरमें राजा और धर्मशाला, ऊँचीपल्लीमें धर्मशाला और पांबनमें कचहरी तथा धर्मशाला है। परमगुडी चट्टीसे देवीपत्तन तीर्थका मार्ग गया है। वहाँसे लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व समुद्रके पास देवीपत्तन है। दश बारह घण्टेमें बैलगाडी वहाँ पहुँच जाती है।

रामेश्वरके मार्गमें मदुरा कसबेसे ६७ मील दक्षिण-पूर्व ( ९ अंश, २२ कला, १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५२ कला, ९ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके मदुरा जिलेमें वैगा नदीके दहिने सेतुपति राजाओंकी राजधानी रामनाद कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामनादमें १३६१९ मनुष्य थे, अर्थात् ११०३८ हिन्दू, १९९६ मुसलमान और ५५५ कृस्तान।

रामनाद कसबेमें राजाका महल, १ मिशन, ३ गिरजे और कई धर्मशालायें हैं। किलेकी जगहके भीतर खास कर मारवार और वेल्लाल जातिके लोग, जो महल सम्बन्धी काम करते हैं और बाहर चेटी तथा लबाई जातिके लोग बसे हैं। कसबेसे १ मील दूर रामेश्वरके मार्गहीपर राजाकी एक धर्मशालामें सदावर्त जारी है।

*राजाकी जमींदारी*—इसके उत्तर शिवगंगाकी जमीन्दारी और तिरुमङ्गलम् तालुक पूर्व तञ्जौर जिला; दक्षिण मनारकी खाडी और पश्चिम तिन्नलवेली जिला है। देश प्राय. समतल है। राजाकी जमीन्दारीमें ताड और खजूरके बहुत वृक्ष और लगभग २००० तालाब हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजाकी जमींदारीका क्षेत्रफल लगभग २११२ वर्ग मील था। उस समय उसमें ४३२५४२ मनुष्य थे, अर्थात ३४४१८८ हिन्दू, ६०४३६ मुसलमान, २७९१० कृस्तान और ८ अन्य। राज्यसे ७४१००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ३१४००० रुपया सरकारको राजकर दिया जाता है।

इतिहास—रामनादका राजवंश मारवार जातिका है। वहाँके राजा सेतुपति करके प्रसिद्ध हैं। उनके पूर्वज लोग पहिले रामनादसे १० मील पश्चिमोत्तर मदुराकी सड़कके पास एक छोटे गाँवमें रहते थे। १८ वीं सदीके आरम्भमें रामनाद राजधानी बना। वहाँ किला बनाया गया, जो अब नष्ट होगया है। किलेकी चारो ओर खाई थी, जो अब भर गई है। किलेके मध्य भागमे राजाका महल है। १८ वीं सदीके मध्य भागमें झगड़ेके कारण देश उजाड होगया। सन् १७२९ में राज्यके ५ भागोंमेंसे २ भाग बागी प्रजाको दे दिया गया, जिनके वंशधर शिवसागरके राजा हैं। सन् १७७२ में अङ्गरेजी अफसरने रामनादको ले लिया और राजा अङ्गरेजोंके अधीन हुए। सन् १७९५ में अङ्गरेज महाराजने बगावत करनेके कारण रामनादके राजाको गद्दीसे उतार कर मदरास शहरमें कैद रक्खा। सन् १८०३ में सरकारने उस राजाकी बड़ी बहिनको रामनादकी जमीन्दारी दे दी। सन् १८८९ में रामनादके वर्तमान राजा बालिग होनेपर राज्यके अधिकारी हुए।

## रामेश्वर।

रामनाद कसबसे २३ मील और मदुरा कसबेसे ९० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके पास हुम्बोलाकी खाड़ी है, जिसको वेताल मण्डपम् कहते है। उससे पूर्व ( ९ अंश १७कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ३१ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके मदुरा जिलेके रामनादकी जमीन्दारीके अन्तर्गत मनारकी खाड़ीमें रामेश्वर नामक टापू है, जिसका नाम सेतुबन्ध खण्डमें गन्धमादन पर्वत लिखा हुआ है। टापू उत्तरसे दक्षिनकी लगभग ११ मील लम्बा और पूर्वसे पश्चिमको ७ मील चौड़ा है। उस बालूदार टापूमें बबूल ताड़ और नारियलके अनेक बाग तथा बहुतसे वृक्ष लगे हुए है। टापूके निवासी, जिनमें

खास करके ब्राह्मण तथा उनके नौकर है, रामेश्वरके मन्दिरकी आमदनीसे अपना निर्वाह करते है। टापूके उत्तरीय भागके पश्चिमके किनारेपर पांबन सबडिवीजन और पूर्वके किनारे की ऊँची भूमिपर रामेश्वरपुरी है, जिसके बडे मन्दिरसे दक्षिण ओर ३ मील घेरेकी मीठे पानीकी झील है।

हरवेल्लाम्मी खाड़ीसे ३ मील पूर्वोत्तर रामेश्वरके टापूमे पांबन वस्ती है, जिसमे सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४८३३ मनुष्य थे। वहाँके निवासी खास करके माझी, डुबुआ और अन्य सामुद्रिक पेशे वाले हैं। यात्री लोग खाड़ीमें नावोंमें बैठकर पांबन उतरते हैं। प्रत्येक आदमीको नावका भाडा चार आना लगता है। समुद्रके नावोंके पाल, त्रिभुजाकार होते हे। पवन किसी तरफ चलता हो पालके सहारेसे नाव सब दिशाओंमें जाती है। पांबनमे लगभग १०० फीट ऊँचा लाइटहाउस,सरकारी कचहरी, धर्मशाला और (धर्मशालेके पास) भैरवजीका एक छोटा मन्दिर है। वहाँ समुद्रके तीरपर भांति भांतिकी सामुद्रिक वस्तु दखनेमें आती है। पांबनमे गल्लेकी तिजारत होती है और वर्षमें ६ मास सिलोनकी गवर्नमेण्टकी तरफसे कुली ले जानेके लिये एमीग्रेशन डेपोट कायम रहता है। पांबनके आमने सामने मनारकी खाड़ीके पश्चिम किनारेपर हनूमानजीका मन्दिर है। पांबनके पाससे मन्दिरके निकट तक खाडीके आर पार जलके ऊपर बाँधके समान पत्थरकी एक लकीर है। पानीमे थोडी दूरतक लकीर नहीं है, उसी मार्गसे समुद्रकी नाव और आगबोट जाते आते हैं। सिलोन अर्थात् लङ्कासे आनेवाले तथा लंका जानेवाले आगबोट पांबनमे मुसाफिरोंको चढ़ाते उतारते है। पांबनसे लङ्का जानेका महसूल प्रति आदमीका दो तीन रुपया लगता है। रामेश्वरके यात्रियोंमेंसे कोई कोई पांबनके पास आगबोटमें चढ़कर उससे पूर्वोत्तर नागपट्टनम्में उतरकर रेलगाडीमें चढते हैं और कोई कोई नागपट्टनम्में रेलगाडीसे उतरकर आगबोट द्वारा पांबन जाते हैं। प्रति मनुष्यका महसूल तीन रुपया लगता है। आगबोटपर चढ़ाने अथवा उससे उतारनेवाली नावका भाडा अलग है। आगबोटमें चढ़ने तथा उससे उतरनेके समय अथवा उसके हिलनेसे क्लेश होता है, इस लिये रामेश्वरके प्रायः सब यात्री मदुरा होकर पांबन जाते है। कोई कोई यात्री रामेश्वरसे लौटनेपर पांबनसे लगभग ८० मील दक्षिण-पश्चिम नाव द्वारा तुतिकुडीमें जाकर रेलगाडीमें चढते हैं। पांबनसे तुतिकुडीका नाव भाडा प्रत्येक आदमीका लगभग एक रुपया लगता है। मार्गमें देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ मिलता है।

पांबनसे ७ मील पूर्व रामेश्वर टापूके पूर्व किनारेपर भारतवर्षके प्रसिद्ध ४ धामोंमेंसे दक्षिणका धाम रामेश्वर नामक वस्ती है। पांबनसे वहाँ तक तांगे और बैलगाडीकी सडक बनी हुई है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रामेश्वर वस्तीमें ४१६ मकान और ६११९ मनुष्य थे, अर्थात् ५४६७ हिन्दू, ४१६ कृस्तान और २३६ मुसलमान।

वस्तीके वाजारमें वनियों और हलवाइयोंकी दुकानोंपर खाने पीनेकी सब वस्तु मिलती है, पर महंगी। बाजारमें फल और तरकारी सर्वदा रहती है। वहाँके ६ पैसेका एक आना होता है। वहाँ रामनादके राजाका एक मकान, कई धर्मशालायें और सदावर्त हैं। मै चुरू वाले राजा शिवबक्श वागलाकी धर्मशालामें टिका था। वहाँ नारियलके पत्तल और जल भरनेके लिये ताडके डोल दर्शनीय होते हैं, जो वीनकरके अथवा सी करके बनाये जाते है।

नारियल और ताडके पत्तोसे मकानभी छाये जाते है। रामेश्वरमें यात्री सर्वदा जाते हैं, इस कारणसे वहाँके पण्डे तथा दुकानदार लोग सबकी भाषा समझते हैं। वहाँके पण्डाओंने यात्रियोंको लानेके लिये उत्तरीय भारतके बहुत लोगोंको गुमाश्ता तथा नौकर रक्खा है। वे लोग सैकडों कोसोंसे यात्रियोंको लेजाते है।

लक्ष्मण तीर्थ–रामेश्वरके मन्दिरसे पौन मील पश्चिम पाम्बनकी सडकके दक्षिण बगल लक्ष्मण तीर्थमें लक्ष्मण कुण्ड नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारों बगलोंपर पानीतक पत्थरकी सीढ़िया और सीढ़ियोंके शिरेपर दीवार है। सरोवरके उत्तर बगलपर एक मण्डप और ईशान कोणके पास एक मन्दिरमें लक्ष्मणेश्वर शिव हैं। रामेश्वरके यात्री प्रथम लक्ष्मणकुण्डमें स्नान करके लक्ष्मणेश्वरको तीर्थ भेंट देते है। जिसका पिता मरगया है, वह वहां मुण्डन कराकर पिण्डदान करता है। पितरजीवी पुरुष मुण्डन करवाकर स्नान दर्शन करते हैं।

रामतीर्थ–लक्ष्मण कुण्डसे पूर्व उसी सडकके दक्षिण रामतीर्थमे रामकुण्ड नामक पक्का सरोवर है, उसमे यात्री लोग स्नान वा मार्जन कर लेते है।

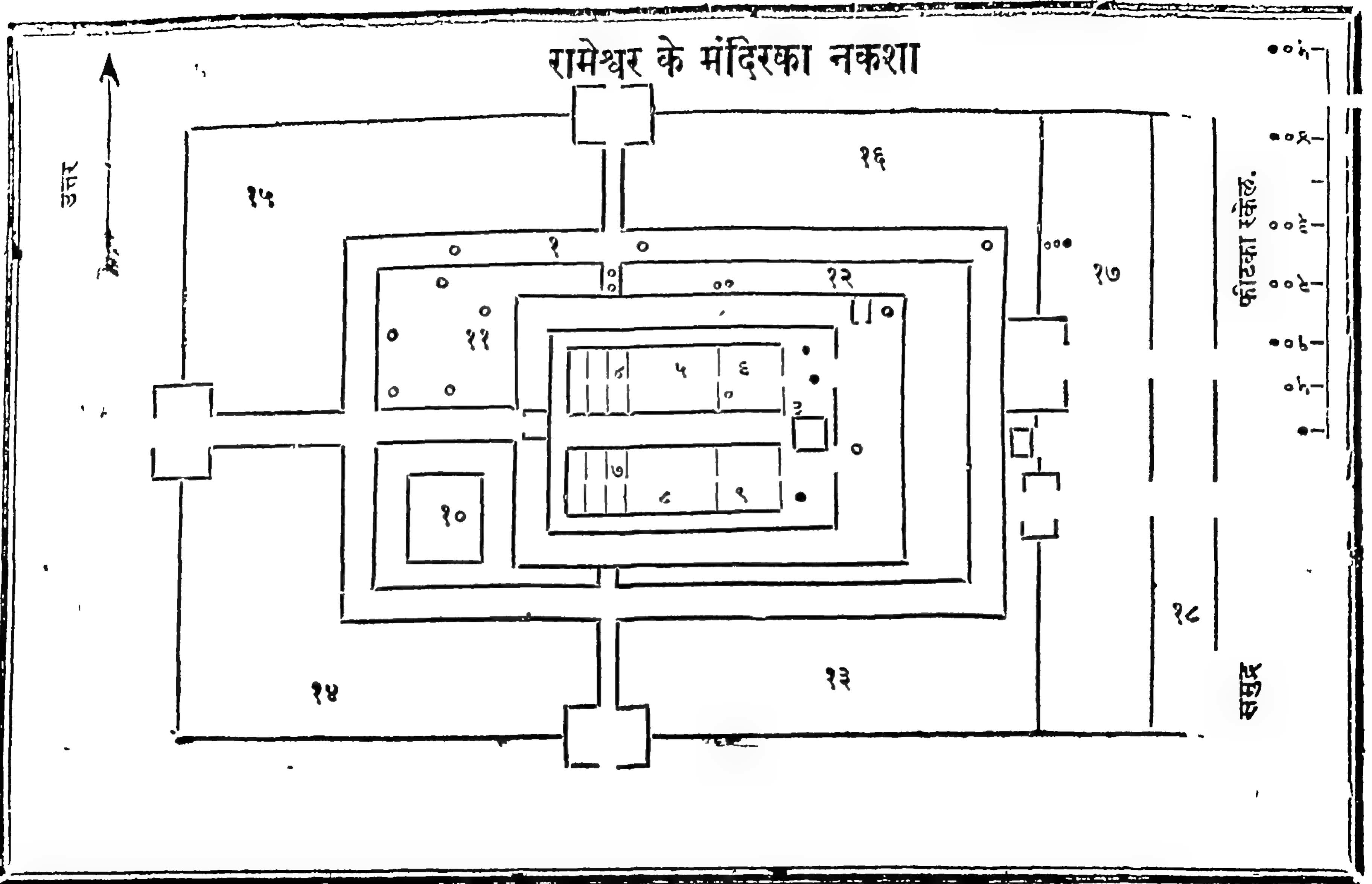
रामझरोखा–रामेश्वरके मन्दिरसे १ मील उत्तर रामझरोखा एक स्थान है। यात्रीगण वालूके मार्गसे पैदलही वहाँ जाते है। वहॉ एक टीलेपर दो मञ्जिला छोटा दालान है, जिसमे रामचन्द्रजीके चरणचिह्नकी पूजा होती है। वहाँसे धनुष तीर्थ और तीन तरफ समुद्र देख पडते है। टीलेके उत्तर एक छोटे कुण्डमें थोडा जल रहता है।

सुग्रीवतीर्थ–रामेश्वरके मन्दिर और रामझरोखेके बीचमें सुग्रीवकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनारेपर एक छोटे मन्दिरमें सुग्रीवकी छोटी मूर्त्ति है। सरोवरमें थोडा पानी है। मन्दिरमें कोई रहता नहीं।

ब्रह्मकुण्ड–रामेश्वरपुरीकी परिक्रमा ५ मीलकी है। उस परिक्रमामे हनूमानकुण्ड और उसके पश्चात् समुद्रकी रेतीमें ब्रह्मकुण्ड मिलता है। वहॉ स्वाभाविक विभूति ( भस्म ) होती है, जिसको यात्री लोग अपने घर लेजाते है। ब्रह्मकुण्डके पास महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है। विजया दशमीके दिन गणेश, रामेश्वर और स्कन्दकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियां रामेश्वरके मन्दिरसे विमानोमे बैठाकर ब्रह्मकुण्डपर जाती है। वहॉ शमी वृक्षकी पूजा होती है।

सीताकोटि–रामेश्वरपुरीसे चार पॉच मील दूर समुद्रके किनारेपर सीताकोटि नामक तीर्थ है। वहाँके कूपका जल बहुत मीठा है।

धनुष्कोटि तीर्थ–यह स्थान रामेश्वरपुरीसे करीब १२ मील दक्षिण धनुष तीर्थ करके प्रसिद्ध है। तीन चार रुपयेमें आती जाती दोनो तरफके लिये बैलगाड़ी किराया होती है। अनेक यात्री रामेश्वरपुरीसे समुद्रकी नाव द्वारा धनुष तीर्थ जाते है। खुश्की रास्तेसे रामेश्वर पुरीसे ७ मील दक्षिण जानेपर एक छोटी धर्मशाला मिलती है, जिससे २ मील आगे एक सेठकी बड़ी धर्मशाला है, जहां सदावर्त लगा है और बनियोंकी दूकानें हैं। उससे ३ मील आगे धनुष तीर्थ है। वहॉ जमीनकी नोक पानीके भीतर चली गई है। उसके एक बगलके समुद्रको महोदधि और दूसरे बगलके समुद्रको रत्नाकर लोग कहते है। बीचमें वालूका मैदान है। यात्रीगण समुद्रमें स्नान करके अपने पण्डेके सुनहरे छोटे धनुषको जो वह अपने पास लेजाते है, पूजन करके सेतुकी प्रार्थना करते है। ग्रहण आदि पर्वोंमे वहॉ स्नानका मेला होता है।



रामेश्वर के मंदिरका नकशा
उत्तर
फीटका स्केल.
समुद्र
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८

रामेश्वरका मन्दिर—रामेश्वर बस्तीके पूर्व समुद्रके किनारेपर लगभग ९०० फीट लम्बा और ६०० फीट चौडा अर्थात् २० बीघे भूमिपर रामेश्वरका पत्थरका मन्दिर है। मन्दिरके चारोओर २२ फीट ऊंची दीवार है, जिसमें तीन ओर एक एक और पूर्व ओर २ गोपुर हैं, जिनमेंसे केवल पश्चिमवाला सात मञ्जिला गोपुर, जो लगभग १०० फीट ऊंचा है, तैयार हुआ है। उत्तर और दक्षिण वाला गोपुर, जो तैयार नहीं है, दीवारसे थोडेही ऊँचा है। गोपुरों और भीतरकी दीवारोंमें नकाशीका विचित्र काम और बहुतसी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। पश्चिमवाले गोपुरके फाटकके भीतर रामेश्वरजीके चित्रपट और रुद्राक्षकी माला बिकती है। मन्दिरके भीतरकी पाटी हुई सडकें, जो लगभग ४००० फीट लंबी और २० फीटसे ३० फीट तक चौडी हैं, दर्शकोंके मनको चकित करती हैं और मन्दिरके विभवको जनाती हैं। जमीनसे ३० फीट ऊपर सडकोंकी छत है। दरवाजेके रास्ते और छतोंमें ४० फीट लम्बे पत्थर लगे हैं। रात्रिमें सडकोंकी छतोंमें सैकडों लालटेन बरती हैं। नीचे लिखे हुए नम्बरोंसे मन्दिरका नकशा देखिये।

नम्बर १—यह मन्दिरके घेरेके भीतर प्रधान स्थानों और नम्बर २ की सडकको घेरती हुई मन्दिरकी प्रधान सडक है। पश्चिम; उत्तर और दक्षिणके गोपुरोंसे एक एक सडक उस प्रधान सडकको काटती हुई भीतरको गई है। नम्बर १ की सडकके दोनों तरफ ४ फीटकी ऊँचाई पर दोहरी दालान है, जिनमें बडे बडे खम्भे लगे हुए हैं। उनमें मनुष्यों और सिंह आदि जानवरोंकी बडी बडी मूर्त्तियाँ सुन्दर रीतिसे बनी हुई है। द्वारसे भीतर एक जगह दहिनेके खम्भोंपर राजा सेतुपति और उनके परिवारके कई आदमियोंके चित्र खोदे हुए हैं। उत्सवके समय जब रामेश्वरजीकी प्रतिनिधि मूर्त्ति मन्दिरकी परिक्रमा करती है तब वह इस स्थानपर ठहरती है। उस समय राजाकी ओरसे उनकी आरती उतारी जाती है और माला तथा ताम्बूल आदि वहाँ राजाके चित्रको प्रसाद मिलता है। उत्तरकी सड़कमें पश्चिम ओर ब्रह्महत्याविमोचन नामक कूप, मध्यमे गंगातीर्थ और यमुनातीर्थ २ कूप और इनसे पूर्व गयातीर्थ एक कूप है। सडकके पूर्व छोरपर दक्षिण मुखके मन्दिरमे स्कन्द आदिकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियाँ रहती है। इनके अतिरिक्त इस नम्बरकी सडकमें कई देव मन्दिरोंके द्वार हैं। इस सडकसे रामेश्वर और पार्वतीके निज मन्दिरोंकी तीसरी परिक्रमा होती है।

नम्बर २—यह सडक रामेश्वर और पार्वतीके मन्दिरोकी दूसरी परिक्रमाकी जगह है। सड़कके दोनों बगलोंमे खम्भाओंकी कतार और ऊपर छत है। पश्चिमके गोपुरकी सडकसे प्रवेश करनेपर सामने छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी विशाल मूर्त्तिका दर्शन होता है। ईशान कोणपर छोटे मन्दिरमें शिव और पार्वतीकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियां है, जिसके पूर्व शंखतीर्थ एक कूप है। पूर्वकी सड़कपर चक्रतीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ३—यह रामेश्वर और पार्वतीके मन्दिरोंकी पहिली परिक्रमा है। पूर्व तरफ रामेश्वरजीके निज मन्दिरके सामने सोनेका मुलम्मा किया हुआ बड़ा स्तम्भ है, जिसके पास १३ फीट ऊँचा ८ फीट लम्बा और ९ फीट चौड़ा बडा नन्दी ( बैल ) बैठा है, जो भारतके सब नन्दियोंसे बड़ा होगा। नन्दीके सामने रत्नाकर और महोदधि दोनो समुद्रोंकी और दरबोलाकी खाड़ीकी प्रतिमा हैं। नन्दीके वाम पार्श्वके मण्डपमे बाल हनुमानकी मूर्त्ति है।

नन्दीसे उत्तर कोटितीर्थ नामक कूप और दक्षिण शिवतीर्थ नामक छोटा तालाव है, जिसके दक्षिण अमृततीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ४–श्रीरामेश्वरजीका निज मन्दिर १२० फीट ऊँचा है। तीन डेवढीके भीतर शिवके प्रख्यात बारह ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक रामेश्वर शिवलिङ्ग है। उनके ऊपर शेषजी अपनी फणासे छाया करते है। मन्दिरमें सर्व साधारण यात्री नहीं जा सकता, तथापि जगमोहनसे अरघा समेत श्रीरामेश्वरजीका अत्युत्तम रीतिसे दर्शन होता है। रात्रिमें पचासो दीप जलते हैं और आरती होती रहती है, जिसके प्रकाशसे रामेश्वरजी देख पड़ते है। फूल माला और बिल्वपत्रकी माला मन्दिरके अर्चक लोग यात्रीकी तरफसे रामेश्वरपर चढ़ा देते हैं। १॥=) देनेपर गङ्गाजल चढ़ानेका टिकट मिलता है और ।=) आना ऊपरसे लगता है । गङ्गाजल मन्दिरके अर्चकद्वारा चढ़ाया जाता है। जिसके पास गङ्गाजल नहीं रहता वह उसको अपने पण्डेसे खरीद लेता है। वहाँकी रीतीके अनुसार किसी यात्रीको मन्दिरमें जाकर निज हाथसे रामेश्वरपर जल चढ़ानेका अधिकार नहीं है, परन्तु कोई कोई धनी लोग वहाँके अर्चक और पण्डोंको प्रसन्न करके रामेश्वरपर निज हाथसे गंगाजल चढ़ाते हैं।

नम्बर ५–रामेश्वरका बडा जगमोहन है, जिसमे खड़े होकर यात्रीगण रामेश्वरजीका दर्शन करते हैं। जगमोहनमे कई देव मूर्त्तियां हैं।

जगमोहनसे उत्तर काशीविश्वेश्वरका मन्दिर है । वहां अन्नपूर्णाजीकी भी मूर्ति है और भोगरागका अच्छा प्रबंध है।

काशीविश्वेश्वर शिव लिङ्गको हनूमानने स्थापित किया । आगे स्कन्द पुराणके सेतुबन्ध खण्डके ४४ वे से ४६ वें अध्याय तक देखो। वहां लिखा है कि हनुमान कैलाशसे शिवलिंग लाया और रामेश्वरके उत्तर पार्श्वमें स्थापित किया। रामचन्द्रने कहा कि यह लिंग हनुमानके नामसे प्रसिद्ध होगा। रामचन्द्रकी आज्ञा है कि हनुमानके लाये हुए लिंग ( काशी-विश्वेश्वर ) का दर्शन करके तब रामेश्वरका दर्शन करना चाहिये । वहां ऐसाही होता है।

नम्बर ६—जगमोहनके पूर्व नीची भूमिपर आंगन है, जिसके नैर्ऋत्य कोणके पास सर्वतीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ७–पार्वतीजीका मन्दिर है–तीन डेवढ़ीके भीतर बहुमूल्य वस्त्र और भूषणोंसे सुशोभित पार्वतीजीकी सुन्दर मूर्ति है। रात्रिमें पचासों और दिनमे भी कई दीप मन्दिरमे जलते हैं। मन्दिरका पुजारी दक्षिणा पाने पर यात्रीकी ओरसे पार्वतीजीकी आरती करता है। फूल माला तथा बिल्वपत्रकी माला विना दक्षिणा लिये वह चढा देता है। मन्दिरके भीतर सर्व साधारण लोग नहीं जाने पाते, परन्तु वहांका पुजारी कुछ दक्षिणा लेकर दूसरी डेवढीसे यात्रीको पार्वतीका दर्शन कराता है।

नम्बर ८–पार्वतीके मन्दिरका बडा जगमोहन है,–जिसमें खडे होकर यात्रीगण श्रीपार्वतीजीका दर्शन करते हैं। जगमोहनके उत्तर भागमें एक घेरेके भीतर सोनहुले झूलन-पर पार्वतीकी सोनेकी छोटी मूर्ति है । झूलनके चारों चोब चान्दीके बने हैं । पार्वतीके पासमें चन्दनका चँवर रक्खा है। जगमोहनके दूसरे हिस्सेमें कई देव मूर्त्तियाँ हैं।

नम्बर ९—जगमोहनके पूर्वके आँगनमें एक मण्डपम् और एक ऊँचा स्तम्भ है। स्तम्भ पर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है।

नम्बर १०–माधवतीर्थ—नामक सरोवर है, जिसके चारों बगलोंपर पानी तक पत्थरकी सीढ़ियाँ और ऊपर तीन तरफ बडे बडे खम्भे लगे हुए दोहरी दालान और पूर्व ओर फर्शके बाद दीवार है। दालानके पीछे चौडी सडक बनी हुई है। माधव तीर्थके पास सेतुमाधव-जीकी मूर्त्ति है।

नम्बर ११–में गवयतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ और गन्धमादनतीर्थ–नामक ५ कूप क्रमसे मिलते हैं और पाँच छ देवमन्दिर है।

नम्बर १२—के उत्तरके भागमें छोटे दरवाजेके पास सूर्य्यतीर्थ और चन्द्रतीर्थ—दो कूप हैं।

नम्बर १३–में कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

नम्बर १४–में नारियल आदिके बहुत वृक्ष हैं और उसके पश्चिम भागमें एक शिखर-दार मन्दिर है।

नम्बर १५–में नारियल आदिके बहुत वृक्ष है। उसके पश्चिम हिस्सेमें सडकके पास शिखरदार शिव मन्दिर है।

नम्बर १६–में मकान और अनेक वृक्ष है।

नम्बर १७–के उत्तर हिस्सेमें सरस्वतीतीर्थ, सावित्रीतीर्थ और गायत्रीतीर्थ नामके ३ कूप और दूसरी जगहोंमें कई मण्डपम् है दोनों गोपुरोंके मध्यमें लक्ष्मीतीर्थ नामक एक बावली है।

नम्बर १८–में दोनो गोपुरोंके सामने दो दरवाजे हैं, उसका दक्षिण भाग उजाड है।

रामेश्वरजीके बृहत् मन्दिरमें ऊर्द्ध लिखित देवताओंके अतिरिक्त स्थान स्थानमें श्रीरा-मचन्द्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, साक्षीगोपाल, जनार्दन,वेङ्कटेश,कोटि देवता, कोटेश्वर महादेव, गणेश,कार्त्तवीर्य, महावीर, नवग्रह आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ,रामेश्वरजीका भण्डार, महसूलका दफ्तर और मन्दिरके अधिकारियोंके अनेक मकान हैं।

अग्नितीर्थ–रामेश्वरजीके मन्दिरके पूर्वके समुद्रके एक घाटको अग्नितीर्थ कहते है। यात्रीलोग उस जगह समुद्रमें स्नान करते है।

अगस्त्यतीर्थ–मन्दिरके ईशान दिशामे उससे चार पाँच सौ गज दूर अगस्त्यतीर्थ नामक बावली है।

चौबीसतीर्थ–स्कन्द पुराणके सेतुबन्ध खण्डमे रामेश्वरपुरीसे देवीपत्तनतक २४ तीर्थ लिखे हुए है, उनमेंसे बहुतेरे तीर्थ ऊपर लिखे हुए २४ तीर्थोंमे नही है, उनके बदलेमें कई एक दूसरे नामके तीर्थ हैं। वहाँ नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रसिद्ध है, जिनके जलसे यात्री लोग स्नान करते हैं।

( नम्बर १० में ) १ माधवतीर्थ, ( नम्बर ११ में ) २ गवयतीर्थ, ३ गवाक्षतीर्थ, ४ नलतीर्थ, ५ नीलतीर्थ, ६ गन्धमादनतीर्थ, ( नम्बर १ में ) ७ ब्रह्महत्याविमोचनतीर्थ, ८ गङ्गातीर्थ, ९ यमुनातीर्थ, १० गयातीर्थ, ( नम्बर १२ में ) ११ सूर्य्यतीर्थ, १२ चन्द्रतीर्थ, ( नम्बर २ में ) १३ शंखतीर्थ १४ चक्रतीर्थ ( नम्बर ३ में ) १५ अमृततीर्थ, १६ शिवतीर्थ ( नम्बर ६ में ) १७ सर्वतीर्थ, ( नम्बर १७ में )१८ सरस्वतीतीर्थ, १९ सावित्री तीर्थ, २० गायत्रीतीर्थ, २१ लक्ष्मीतीर्थ, ( समुद्रमें ) २२ अग्नितीर्थ, ( मन्दिरसे ईशान दिशामें ) २३ अगस्त्यतीर्थ और ( नम्बर ३ में ) २४ वाँ कोटितीर्थ है।

इनमे माधवतीर्थ और शिवतीर्थ तालाव, लक्ष्मीतीर्थ और अगस्त्यतीर्थ बावली; अग्नितीर्थ समुद्र और बाकी १९ तीर्थ १९ कूप हैं। २२ तीर्थ मन्दिरके भीतर और २ तीर्थ उसके बाहर है। २३ तीर्थोंके जलसे एकही समयमें और कोटितीर्थके जलसे पुरीसे चलनेके समय यात्री लोग स्नान करते है।

मन्दिरका उत्सव–मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियाँ फाल्गुनकी शिवरात्रिके दिन ६ विमानोमें सिंहासनारूढ गाजे बाजेके समारम्भसे निकलती है। प्रत्येक विमानमे ४ कहार लगते हैं। पहले विमानमें शिव, दूसरेमे पार्वती, तीसरेमें गणेश, और चौथेमे कार्तवीर्य्य, पाँचवेमें हनूमान् और छठेमे एक अन्य देवता रहते है। श्रावण मासमे शिव पार्वतीके विवाहका उत्सव होता है। उस समय आसपासके प्रदेशोके बहुत यात्री आते हैं। इनके अलावे समय समयपर रामेश्वरपुरीमें उत्सव हुआ करता है। भारतके सैकड़ो यात्री नित्य रामेश्वरपुरीमे पहुँचते है।

मन्दिरका प्रबन्ध–पहिले रामनादके राजा, रामेश्वरके मन्दिरका प्रबन्ध करते थे, किन्तु इस समय अङ्गरेज महाराजने उसको मदुराके जगमबाबाके अधीन किया है। मन्दिरके खर्चके लिये रामनादके राजाके दिये हुए ५७ गाँव है, जिनसे वार्षिक ४५००० रुपया मालगुजारी आती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–पराशरस्मृति–( १२ वाँ अध्याय ) समुद्रके सेतुके दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है। ब्रह्महत्या करनेवाले मनुष्यको उचित है कि वह सेतुबन्ध यात्राके मार्गमें चारो वर्णोंसे भिक्षा मांगे। श्रीरामचन्द्रकी आज्ञासे नल वानरने १०० योजन लम्बा और १० योजन चौड़ा सेतु बांधा था, उसके दर्शन मात्रसे उसके ब्रह्महत्या पापका नाश होजाता है। उसको उचित है कि सेतुके दर्शनसे विशुद्ध होकर सागरमे स्नान करे।

वाल्मीकिरामायण–( लंकाकाण्ड, १२४ और १२५ वाँ सर्ग ) श्रीरामचन्द्रने रावणको जीतकर लक्ष्मण, सीता, विभीषण आदि राक्षस और सुग्रीव आदि वानरोके सहित पुष्पक विमानपर चढ़ लंकासे प्रस्थान किया। विमान आकाश मार्गसे चला। श्रीरामचन्द्र जानकीजीको स्थानोंको दिखाने लगे, वह बोले कि हे सीते! देखो यह सेना टिकनेका स्थान है; यहाँ सेतुबाधनेके पहले शिवजी मेरे ऊपर प्रसन्न हुए थे, यह समुद्रका घाट सेतुबन्ध नामसे प्रसिद्ध तीनो लोकोंमें पूजित हुआ है, यह पवित्र स्थान पापोका नाश करने वाला है।

ब्रह्माण्डपुराण–अध्यात्मरामायण–( लङ्काकाण्ड, ४ था अध्याय ) सेतु आरम्भके समय श्रीरामचन्द्रने लोकके हितके लिये वहां रामेश्वर शिवको स्थापित किया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति सेतुबन्धका दर्शन करके रामेश्वर शिवको प्रणाम करेगा, उसका ब्रह्महत्यादि पाप छूट जायगा। जो प्राणी सेतुबन्धमे स्नान और रामेश्वरके दर्शन करके वाराणसीके गङ्गाजलसे रामेश्वरको स्नान करावेगा और जलकी कांवर समुद्रमें डाल देगा उसको निःसन्देह ब्रह्मलोक मिलेगा।

शिवपुराण–( ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय ) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं, (१) सौराष्ट्र देशमे सोमनाथ, ( २ ) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, ( ३ ) उज्जैनमें महाकालेश्वर, ( ४ ) ओंकारमे अमरेश्वर, ( ५ ) हिमालयमे केदारेश्वर, ( ६ ) डाकिनीमे भीमशंकर, (७) वाराणसीमें

शिखरपर, ( ८ ) गोदावरीके तटपर त्र्यम्बक, ( ९ ) चिता भूमिपर वैद्यनाथ, ( १० ) दारुका वनमें नागेश, ( ११ ) सेतुवन्धमें रामेश्वर और ( १२ वां ) शिवालयमें घुश्मेश्वर।

( ५७ वां अध्याय ) रामचन्द्रजी लक्ष्मण तथा सुग्रीव आदि १८ पद्म सेनाओंके सहित सीताको छुडानेके लिये दक्षिण समुद्रके पास पहुंचे। उनको जल पीनेके समय स्मरण हुआ कि आज हमने शिवजीका दर्शन नहीं किया, बिना दर्शन किये हम जल कैसे पियेंगे। ऐसा विचार कर उन्होंने वानरोंसे मृत्तिका मँगाकर मृत्तिकाका शिवलिङ्ग बनाया और आवाहन तथा पूजन करके उनसे विनय किया कि हे शंकर! आपकी कृपासे रावण दुर्जेय हुआ है, आप मेरा सहाय कीजिये। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे रामचन्द्र! तुम्हारा मंगल होगा। उसके पश्चात् श्रीरामचन्द्रने शिवजीकी जलधारासे जल पान करके शिवजीसे विनय किया कि हे शंकर! आर्य लोगोंके हितके लिये आप इस स्थानपर निवास कीजिये। शिवजीने रामचन्द्रके वचनसे प्रसन्न होकर वहां लिंग रूपसे निवास किया, उसी लिंगको रामेश्वर कहते हैं। रामेश्वर शिवके स्मरण करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होजाता है।

गरुडपुराण–( पूर्वार्द्ध, ८१ वां अध्याय ) सेतुबन्धरामेश्वर एक उत्तम तीर्थ है।

मत्स्यपुराण–( २२ वाँ अध्याय ) रामेश्वरतीर्थ श्राद्धके लिये श्रेष्ठ है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण–( कृष्ण जन्म खण्ड, ७६ वाँ अध्याय ) आषाढ़की पूर्णिमाको सेतुबन्ध रामेश्वरके दर्शन और पूजन करनेसे प्राणीका फिर जन्म नहीं होता है। रातमें महादेवजीके दर्शनके लिये वहां विभीषण आते हैं।

स्कन्दपुराण—( सेतुबन्ध खण्ड, पहिला अध्याय ) श्रीरामचन्द्रके बाँधे हुए सेतुके समीप सब क्षेत्रोंमें उत्तम रामेश्वर क्षेत्र है। ( दूसरा अध्याय ) श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे वानरगण सहस्रों पर्वतोंके शृङ्ग, वृक्ष, वेलि, तृण आदि लाये। नलने समुद्रके ऊपर १० योजन चौडा और १०० योजन लम्बा सेतु बाँधा। जहाँ रामचन्द्रजीने कुश शय्यापर शयन किया, और सेतु बाँधा वेही स्थान प्रसिद्ध तीर्थ होगया। सेतुबन्धके समीपके तीर्थोंमें नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रधान हैं;–१ चक्रतीर्थ ( जो देवीपत्तनमें है ), २ वेतालवरद ( देवीपत्तनकी ओर ), ३ पापविनाशन, ४ सीतासर, ५ वाँ मंगलतीर्थ, ६ अमृतवापिका, ७ वाँ ब्रह्मकुण्ड, ८ वाँ हनुमत्कुण्ड, ९ वाँ अगस्त्यतीर्थ, १० वाँ रामतीर्थ, ११ लक्ष्मणतीर्थ, १२ जटातीर्थ, १३ लक्ष्मीतीर्थ १४ अग्नितीर्थ, १५ चक्रतीर्थ, १६ शिवतीर्थ, १७ शंखतीर्थ, १८ यमुनातीर्थ, १९ गङ्गातीर्थ, २० गयातीर्थ, २१ कोटितीर्थ २२ साध्यामृततीर्थ, २३ मानसतीर्थ और २४ वां धनुष्कोटितीर्थ।

( तीसरा अध्याय ) सेतुमूलके समीप चक्रतीर्थ है। धर्मने दक्षिणके समुद्रके तटपर बहुत कालतक तप किया और स्नानके लिये वहाँ एक पुष्करिणी बनाया, जिसका नाम धर्मपुष्करिणी पडा। धर्म शिवजीको प्रसन्न करके उनका वाहन वृष बन गया। उसके पश्चात् ध्यान करते हुए गालव मुनिको एक राक्षसने जा पकडा। उस समय मुनि विष्णुको पुकारने लगे। विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शन चक्रने वहाँ जाकर उस राक्षसका शिर काट लिया। उसके उपरान्त वह चक्र धर्मपुष्करिणीमें प्रवेश कर गया, तभीसे धर्मपुष्करिणीका नाम चक्रतीर्थ होगया।

( ८ वां अध्याय ) चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें वेताल वरद तीर्थ है। ( ९ वाँ अध्याय ) एक ऋषिके आदेशानुसार कपालस्फोट नामक दैत्य दक्षिण–समुद्रके तटपर पवित्र तीर्थमें

पहुँचा। पवनके वेगसे उस तीर्थके जलकण उडकर उस दैत्यके शरीरपर गिरे। जलकणोंके स्पर्शसे उसने अपना वेताल रूप छोडकर पूर्व रूप धारण कर लिया। पूर्व जन्ममें वह विजयदत्त नामक ब्राह्मण था, किन्तु गालव मुनिके शापसे वेताल हुआ था। उसके पश्चात् वह उस तीर्थमें स्नान करके मनुष्य देह छोडकर दिव्य रूप हो स्वर्गमें चला गया। उसी दिनसे उस तीर्थका नाम वेताल वरद हुआ।

(१० वाँ अध्याय) वेतालवरद तीर्थमें स्नान कर गन्धमादन पर्वतको, जो सेतुरूपसे समुद्रमें स्थित है, जाना चाहिये। उसके ऊपर लोकमें प्रसिद्ध पापविनाशन तीर्थ है। सुमति नामक ब्राह्मण करोडों वर्ष नरक भोगकर ब्राह्मणके गृह जन्मा, परन्तु उसको ब्रह्मराक्षसका आवेश होगया। तब अगस्त्यमुनिके उपदेशसे उसके पिताने गन्धमादन पर्वतके पापविनाशन तीर्थमें उसको सकल्प पूर्वक तीन दिन स्नान कराया, जिससे ब्राह्मणका पुत्र आरोग्य होगया और अन्तमें मुक्ति पाया। पापोके नाश करनेसे उस तीर्थका नाम पापविनाशन पडा है।

(११ वाँ अध्याय) गङ्गा आदि तीर्थ सीता सरोवरमें निवास करते है। इसी तीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्महत्याने इन्द्रको छोडा। रामचन्द्रजीके संदेह निवृत्त करनेके लिये सीताने अग्निमें प्रवेश किया और अग्निसे निकल अपने नामका यह तीर्थ बनाया। तभीसे उसका नाम सीतासरोवर हुआ।

(१२ वाँ अध्याय) सीताकुण्डमे स्नान कर मङ्गलतीर्थको जाना चाहिये, जिसमे लक्ष्मीजी निवास करती हैं। इन्द्रादि देवता अलक्ष्मीके नाशके लिये नित्य उस तीर्थमे स्नान करते है। सेतुवन्धके बीच गन्धमादन पर्वतपर मङ्गलतीर्थ है। उसमें सीता और रामचन्द्र सदा सन्निहित रहते है।

(१३ वाँ अध्याय) रामनाथ क्षेत्रमे अमृत वापिका है, जिसमे स्नान करने वाले मनुष्य अजर अमर होजाते हैं। मङ्गल तीर्थके पासके तीर्थमे अगस्त्य मुनिके भ्राताकी मुक्ति हुई, इसीसे उस तीर्थका नाम अमृतवापी हुआ, क्योंकि मोक्षको अमृत कहते है।

(१४ वाँ अध्याय) अमृतवापीमे स्नान कर ब्रह्मकुण्ड तीर्थको जाना चाहिये। ब्रह्मकुण्डसे स्नान करनेवाले मनुष्यको यज्ञ, तप, दान, तीर्थ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है। जो मनुष्य ब्रह्मकुण्डसे निकली विभूतिको धारण करता है, उसके समीप ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी सदा निवास करते है। एक समय ब्रह्मा और विष्णुका परस्पर विवाद हुआ। दोनों अपनेको बडा कहने लगे। उसी समय मध्यमें एक लिङ्ग प्रकट हुआ। उसके अनन्तर यह निश्चय हुआ कि दोनोंमेंसे जो इस लिङ्गके आदि अन्तको निश्चय करे वही सबसे बडा और लोकका कर्त्ता गिना जाय। ब्रह्मा हंसका रूप धर ऊपरको उडे और विष्णु वाराह रूप धर नीचे चले। १००० वर्षके पीछे विष्णुजीने लौटकर देवताओसे कहा कि हमको लिङ्गका अन्त न मिला। इतनेमें ब्रह्मा भी आ पहुँचे। असत्य वोले कि हम इस लिङ्गके अग्रको देख आये हैं। तब शिवजीने कहा कि हे ब्रह्मा! तुमने हमारे सन्मुख झूठ कहा इसलिये जगतमें कोई तुम्हारी पूजा न करेगा। पीछे ब्रह्माकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर शिवजी वोले कि हमारा वचन तो मिथ्या नहीं होसकता, परन्तु तुम गन्धमादन पर्वतपर जाकर यज्ञ करो जिससे तुम्हारे शापका दोष निवृत्त होजायगा। श्रुतिमें तुम्हारी पूजा न होगी, किन्तु श्रौत स्मार्त

कर्मोंमे तुम्हारा पूजन होगा। ब्रह्माजीने गन्धमादन पर्वतपर जाकर ८८ हजार वर्ष पर्यंत कई यज्ञ किये। तब शिवजीने प्रकट होकर यह वरदान दिया कि अब श्रौत स्मार्त कर्मोंमे तुम्हारा पूजन हुआ करेगा और तुम्हारा यह यज्ञका स्थान ब्रह्मकुण्डके नामसे जगत्में प्रसिद्ध होगा। जो एक बारभी इस ब्रह्मकुण्डमें स्नान करेगा उसके लिये मुक्तिका द्वार खुलजायगा। जो इस कुण्डके भस्मको धारण करेगा, वह आवागमनसे रहित होजायगा।

(१५ वां अध्याय) ब्रह्मकुण्डमें स्नान कर हनुमत्कुण्डमे जाना चाहिये। जब रामचन्द्र रावणको मार कर लौटे और गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे, तब हनूमान्ने अपने नामसे उत्तम तीर्थ बनाया। साक्षात् रुद्र उस तीर्थका सेवन करते हैं। धर्मसख राजाने उस तीर्थमें स्नान कर दीर्घायु १०० पुत्र पाये। जो स्त्री उस तीर्थमे स्नान करती है, उसके अवश्य पुत्र उत्पन्न होता है।

(१६ वाँ अध्याय) हनुमत्कुण्डके पश्चात् अगस्त्यतीर्थको जाना चाहिये उस तीर्थको साक्षात् अगस्त्यजीने बनाया है। पूर्व कालमें सुमेरु और विन्ध्यपर्वतका परस्पर विवाद हुआ, तब विन्ध्याचल इतना बढ़ा कि सब जीवोंका श्वास रुक गया, उस समय शिवजीकी आज्ञासे अगस्त्यजीने उस पर्वतको अपने पैरसे ऐसा दबाया कि वह भूमिके समान होगया। फिर अगस्त्यजी वहाँसे चले और दक्षिण दिशामे विचरते हुए गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे। वहा उन्होंने अपने नामसे तीर्थ बनाया, जिसमे वह अपनी भार्य्या लोपामुद्राके साथ आज तक निवास करते हैं। दीर्घतपा मुनिके पुत्र कक्षीवान्ने उस तीर्थके प्रभावसे स्वनयकी कन्यासे विवाह किया।

(१८ वाँ अध्याय) बाद रामकुण्डको जाना चाहिये। उस सरोवरके तीरपर अल्प दक्षिणाके भी यज्ञ करनेसे सम्पूर्ण फल मिलता है। अगस्त्य मुनिके शिष्य सुतीक्ष्ण मुनिने उस सरोवरके तीरपर बहुत काल तक तप किया। राजा युधिष्ठिर उस तीर्थमे स्नान और शिवलिङ्गका दर्शन करके असत्य भाषणके महादोषसे छूट गये।

(१९ वाँ अध्याय) बाद लक्ष्मणतीर्थको जाकर उसमे स्नान करना चाहिये। उस तीर्थके तटपर लक्ष्मणजीने शिवलिङ्ग स्थापन किया है। बलदेवजी लक्ष्मणतीर्थमे स्नान और लक्ष्मणेश्वरका सेवन कर ब्रह्महत्यासे छूट गये।

(२० वाँ अध्याय) पूर्व कालमे शिवजीने गन्धमादन पर्वतमें सबके उपकारके अर्थ एक तीर्थ बनाया। रामचन्द्रजीने रावणको मारनेके पश्चात् उस तीर्थमे जटा धोई थी, इससे उस तीर्थका नाम जटातीर्थ पडा।

(२१ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने कृष्णचन्द्रकी प्रेरणासे इन्द्रप्रस्थसे जाकर लक्ष्मीतीर्थमे स्नान किया, जिससे उन्होने बडा ऐश्वर्य्य पाया।

(२२ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें श्रीरामचन्द्रजी रावणको मार सीता और लक्ष्मणके सहित जानकीकी शुद्धिके लिये सेतु मार्गसे गन्धमादनपर पहुँचे। उन्होंने वहाँ लक्ष्मीतीर्थके तटपर स्थिर हो अग्निका आवाहन किया। अग्नि समुद्रसे निकलकर कहने लगी कि हे रामचन्द्रजी! जानकीके पातिव्रत्य धर्मके प्रभावसे आपने रावणको जीता है, आप इनको ग्रहण कीजिये। तब रामचन्द्रजीने सीताको ग्रहण किया। रामचन्द्रके आवाहन करनेसे जहां अग्नि प्रकट हुई, वहाँही अग्नितीर्थ हुआ। पूर्व कालमे पाटलिपुत्र नामक नगरके रहने-

वाले पशुमान नामक वैश्यका पुत्र दुष्पण्य उस तीर्थके जलके स्पर्शसे पिशाच योनिसे मुक्त हो स्वर्गको गया।

(२३ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें आहिर्बुध नामक ऋषि गन्धमादन पर्वतमे सुदर्शन चक्रकी उपासना करते थे। उस समय राक्षस आकर उनको पीडा देने लगे, तव सुदर्शन-चक्रने आकर सब राक्षसोको मारडाला और मुनिकी प्रार्थनासे उस तीर्थमें निवास किया। उस दिनसे उस तीर्थका नाम चक्रतीर्थ पड़ा। पूर्वकालमें जब सूर्य्य भगवान्ने उस तीर्थमें स्नान किया, तब उनके कटे हुए हाथ पहिलेकी भाँति पूर्ण होगये।

(२४ वाँ अध्याय) कालभैरव शिवतीर्थमें स्नान करके ब्रह्महत्यासे छूटे। ब्रह्माने कहा कि हे महादेव! तू मेरे ललाटसे उत्पन्न हुआ, इसलिये मेरा पुत्र है। ब्रह्माका अहंकार युक्त वचन सुन शिवजीने कालभैरवको भेजा, भैरवने ब्रह्माका पाचवां शिर काट लिया। पीछे शिवजी ब्रह्मापर प्रसन्न होकर कालभैरवसे बोले कि लोककी मर्य्यादा रखनेके लिये तुम प्रायश्चित्त करो। कालभैरव ब्रह्माका शिर हाथमें लिये हुए पुण्यतीर्थोंमें स्नान करते हुए काशीमें पहुँचे। ब्रह्महत्या भयंकर स्त्रीके रूपसे उनके साथ २ फिरती थी। काशीमे पहुँचने पर भैरवकी ३ भाग ब्रह्महत्या नष्ट होगई; किन्तु एक भाग रह गई तब कालभैरवने गन्धमादन पर्वतमे पहुँच शिवतीर्थमे स्नान किया, जिससे सम्पूर्ण हत्या दूर होगई।

(२५ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें शंख मुनिने विष्णुकी प्रसन्नताके लिये गन्धमादन पर्वतमे तप किया और अपने नामसे शंखतीर्थ भी बनाया। उस तीर्थमे स्नान करनेसे कृतघ्न पुरुषभी शुद्ध होजाता है।

(२६ वाँ अध्याय) शंखतीर्थमें स्नान कर गगातीर्थ यमुनातीर्थ और गयातीर्थको क्रमसे जाना चाहिये। उन तीर्थोंमे स्नान कर जासश्रुति नामक राजाने रैक्व मुनिसे दिव्य ज्ञान पाया। पूर्वकालमें रैक्व मुनि गन्धमादन पर्वतमें तप करते थे। वह जन्मके पंगु थे, इस लिये दूरके तीर्थोंमे नहीं जा सकते, किन्तु गन्धमादनके तीर्थोंमे गाड़ीपर बैठकर जाया करते थे। एक समय गगा, यमुना और गया तीर्थोंके स्नान करनेकी मुनिकी इच्छा हुई, तब मुनिने पूर्वाभिमुख बैठ मन्त्रवलसे तीनों तीर्थोंका आवाहन किया। उस समय भूमिको भेदन कर गया, और यमुनाकी धारा पातालसे निकली। मुनिने तीनों तीर्थोंसे प्रार्थना की कि तुम तीनों इस पर्वतमें निवास करो। उस दिनसे तीनों तीर्थ गन्धमादनमें रहगये। उनमें स्नान करनेसे प्रारब्ध कर्मका नाश होता है।

(२७ वाँ अध्याय) कोटि तीर्थको रामचन्द्रजीने अपने धनुपकी कोटि अर्थात् अग्रभागमें बनाया है। रामचन्द्रजीने रावणके मारनेके उपरान्त ब्रह्महत्याके निवृत्तिके लिये गन्धमादन पर्वतमें रामेश्वर शिवलिङ्ग स्थापन किया। जब लिङ्गके स्नानके लिये जल नहीं मिला, तब उन्होने गङ्गाका स्मरण कर धनुपकी कोटिसे भूमिको भेदन किया, जिससे गङ्गाकी धारा निकली। तब रामचन्द्रने उस दिव्य जलसे शिवलिङ्गको स्नान कराया। धनुपकी कोटिसे यह तीर्थ बना; इस लिये इसका नाम कोटितीर्थ पड़ा। गन्धमादनके सब तीर्थोंमें स्नानकर शेष पापकी निवृत्तिके लिये कोटितीर्थमें स्नान करना चाहिये। उसमें स्नान करनेके पश्चात् गन्धमादन पर्वतमें क्षणमात्र भी न रहना चाहिये। उसमें साक्षात् गङ्गा निवास करती है। श्रीकृष्णजी कोटितीर्थमे स्नान करके अपने मातुल कंसकी हत्याके पापसे छूटे थे।

(२८ वाँ अध्याय) जबतक साध्यामृततीर्थमें अस्थि पडी रहती है, तब तक वह जीव शिवलोकमें निवास करता है। राजा पुरूरवा उस तीर्थमें स्नान कर तुम्बुरुके शापसे छूटा और फिर उर्वशीसे उसका समागम हुआ। उस तीर्थमें स्नान करनेवालोंको अमृत अर्थात् मोक्ष साध्य है. (असाध्य नहीं है) इस लिये उसका नाम साध्यामृत हुआ है।

(२९ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें भृगुवंशमें सुचरित मुनि हुआ। वह जन्मसेही अन्धा था। उसने जन्मभर तप किया। वृद्धावस्थामें उसकी इच्छा हुई कि सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करना चाहिये, परन्तु तीर्थोंमें जानेकी उसकी सामर्थ्य न थी, इस लिये वह गन्धमादन पर्वतमें शिवजीका तप करने लगा। शिवजी प्रकट हुए। मुनि बोले कि हे नाथ! मुझको इसी स्थानपर सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करनेका फल प्राप्त हो। तब शिवजीने एक स्थानमें सब तीर्थोंका आवाहन किया, उसके उपरान्त उन्होंने कहा कि इस स्थानपर हमने सब तीर्थोंका आवाहन किया, इस लिये यह तीर्थ सर्वतीर्थ नामसे प्रसिद्ध होगा और हमने मनसे यहां तीर्थोंका आकर्षण किया है इस लिये उसका नाम मानसतीर्थभी होगा।

(३० वाँ अध्याय) सर्वतीर्थके पश्चात धनुष्कोटितीर्थको जाना चाहिये। जो पुरुष धनुष्कोटिका दर्शन करते है, वे अट्ठाईस प्रकारके महानरकोंको नहीं देखते। रामचन्द्र रावणको मारनेके पश्चात विभीषण और सुग्रीव आदि वानरोंके साथ गन्धमादन पर्वतमें पहुचे, उस समय विभीषणने प्रार्थना की कि महाराज! आपके बांधे हुए सेतुके मार्गसे प्रतापी राजा लोग आकर मेरी पुरी लङ्काको पीडा देंगे। तब रामचन्द्रने अपने धनुषकी कोटि अर्थात् अग्रभागसे सेतुको तोड दिया, वहाँही धनुष्कोटितीर्थ हुआ। जो पुरुष धनुष करके कीहुई रेखा देखता है वह गर्भवासका दुःख नहीं भोगता, रामचन्द्रने धनुष्कोटिसे समुद्रमें रेखा की है। जो पुरुष माघमास मकरके सूर्यमें धनुष्कोटिमें स्नान करता है, उसका पुण्य-वर्णन नहीं होसकता। अर्द्धोदय योगमें वहाँ स्नान करनेसे सब पाप नष्ट होते है। चन्द्र और सूर्यके ग्रहणोंमें वहाँ स्नान करनेवालेके पुण्य फलको शेषजीभी नहीं गिनसकते। वहाँ पिण्डदान करनेसे पितर कल्पभर तृप्त रहते हैं। रामचन्द्रजीने पितरोंकी तृप्तिके लिये तीन स्थान बनाये है, सेतुमूल, धनुष्कोटि और गन्धमादन पर्वत। (आगे ३७ वे अध्याय तक धनुष्कोटिका माहात्म्य है) (यहाँ तक २४ तीर्थोंकी कथा है)

(४० वाँ अध्याय) गायत्रीतीर्थ और सरस्वतीतीर्थमें स्नान करनेसे गर्भवासका दुःख कभी नहीं होता। गन्धमादन पर्वतमें ब्रह्मपत्नी गायत्री और सरस्वतीके सन्निधानसे २ तीर्थ हैं। शिवजी ब्रह्माका दुराचार देख व्याधका रूप धर हरिण रूप धारी ब्रह्माके पीछे दौडे। उन्होंने एक बाण ऐसा मारा कि हरिण रूप ब्रह्मा मरगये। तब गायत्री और सरस्वती अति शोकातुर हो ब्रह्माजीके जीवनके लिये गन्धमादन पर्वतमें जाकर तप करने लगी। उन्होंने स्नानके लिये अपने अपने नामसे एक एक तीर्थ बनाया और त्रिकाल उन तीर्थोंमें स्नान करके बहुत काल तक वहाँ उग्रतप किया। तब महादेवजी प्रकट हुए। उन्होंने गायत्री और सरस्वतीकी प्रार्थनासे प्रसन्न हो अपने गणोंसे ब्रह्माका शरीर वहाँ मँगवाया और शिरको धडमें जोडकर ब्रह्माको जिला दिया। शिवजीने गायत्री और सरस्वतीसे कहा कि इन दोनो कुण्डोमें स्नान करनेवाले पुरुषोंकी मुक्ति होगी, तुम दोनोंके नामसे दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे।

( ४२ वाँ अध्याय ) गन्धमादन पर्वतपर ऋणमोचनतीर्थ, पंचपांडवतीर्थ, देवतीर्थ, सुग्रीवतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, अङ्गदतीर्थ, गजतीर्थ, गवयतीर्थ, शरभतीर्थ, कुमुदतीर्थ, पनसतीर्थ और विभीषणतीर्थ है।

( ४३ वाँ अध्याय ) रामेश्वरके दर्शन करनेवालेकी तुल्यता चारों वेदोंको जाननेवाला ब्राह्मण भी नहीं कर सकता। वेदवेत्ता ब्राह्मणको छोड कर रामेश्वरके भक्त चाण्डालको सब दान देना उचित है। रामेश्वरके दर्शन करनेवाले पुरुषोंको वेद, शास्त्र, तीर्थ, यज्ञ आदिसे कुछ प्रयोजन नहीं है जो पुरुष चन्दन, केसर, कस्तूरी, गुग्गुल, राल आदि रामेश्वरको अर्पण करता है, वह धनाढ्य और वेद शास्त्रका जाननेवाला होता है। जो गङ्गाजलसे रामनाथको स्नान कराता है, उसका सत्कार शिवजी भी करते हैं।

( ४४ वाँ अध्याय ) रामचन्द्र रावणको मार सबके साथ विमानमें चढ़ गन्धमादन पर्वत मे पहुँचे। उन्होने वहाँ अग्निमे सीताका शोधन किया। उस समय वहाँ अगस्त्य मुनिके साथ दण्डकारण्यके सब मुनि आये। रामचन्द्रने मुनियोसे पूछा कि पुलस्त्य मुनिके पौत्र रावणके वधके पापका प्रायश्चित्त क्या है, मुनि बोले कि हे रामचन्द्र! आप इस गन्धमादन पर्वतमे शिवलिङ्ग स्थापन कीजिये। इनके दर्शनका फल काशीविश्वनाथके दर्शनके फलसे कोटि गुणित होगा और आपके नामसे यह लिङ्ग प्रसिद्ध होगा। तब रामचन्द्रने हनूमान्‌को आज्ञा दी कि तुम शीघ्रही कैलासमें जाकर एक उत्तम शिवलिङ्ग लाओ। हनूमान् क्षणमात्रमें कैलास पर्वतपर पहुँचे, परन्तु जब वहाँ लिङ्गरूप महादेव न मिले, तब वह वहाँ तप करने लगे। कुछ कालके अनन्तर शिवजीने एक उत्तम शिवलिङ्ग हनूमान्‌को दिया। यहाँ हनूमान्‌के आनेमे विलम्ब होनेपर मुनियोने रामचन्द्रसे कहा कि मुहूर्त काल आगया, किन्तु शिवलिङ्ग नहीं आया, इस लिये सीताजीने लीला करके जो बालूका शिवलिङ्ग बनाया है, उसको आप स्थापन कीजिये। तब सीताके सहित रामचन्द्रने ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण और वृषके सूर्यमें रामेश्वर लिङ्गको और रामेश्वरके आगे नन्दिकेश्वरको स्थापित किया।

( ४५ वाँ अध्याय ) उसी अवसरमें हनूमान्‌जी भी शिवलिङ्ग लेकर आ पहुँचे। उन्होने जब देखा कि रामचन्द्रजीने शिवलिंग स्थापन करदिया, तब वह बहुत विलाप करने लगे उस समय रामचन्द्र बोले कि हे हनूमान्! कैलाससे लाये हुए लिंगको तुम स्थापन करो; यह लिंग तेरे नामसे प्रसिद्ध होगा, सब मनुष्य तेरे स्थापित लिंगका प्रथम दर्शन करके तब रामेश्वरका दर्शन करेंगे। हमने, सीताने, लक्ष्मणने, तुमने, सुग्रीवने, नलने, नीलने, जाम्बवानने, विभीषणने, इन्द्रादि देवताओंने, शेष नागादिकोने, जो लिंग स्थापन किये हैं, इन ११ लिंगोंमे शिवजी सदा निवास करेंगे, अगर तू रामेश्वर लिंगको उखाड सके तो हम तेरे लाये हुए लिंगको स्थापन करें। तब हनूमानने अपने दोनों हाथोंसे रामेश्वर लिंगको पकड़कर उखाडनेके लिये बहुत बल किया। जब वह लिंग न हिला, तब उसको पूंछमें लपेटकर दोनों हाथोंको भूमिपर रख आकाशको उछला, परन्तु लिंग नहीं उखडा। उस समय हनूमान्‌का पूंछ लिंगमें छूट गया, वह एक कोस दूर जा गिरे और उनके आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियोंसे रुधिर गिरने लगा, जिससे रक्तकुण्ड बन गया। रामचन्द्र लक्ष्मण आदि अपने साथियोंके साथ वहाँ जाकर विलाप करने लगे। पीछे हनूमान् मूर्च्छासे जागे। ( ४६ वाँ

अध्याय ) रामचन्द्र बोले कि हे वायुपुत्र ! आजसे यह कुण्ड तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा, इसमें स्नान करनेसे महा पातकोका नाश होगा। हनूमान्‌जीने रामचन्द्रकी आज्ञासे रामेश्वरके उत्तर भागमें अपना लाया हुआ शिवलिंग स्थापन किया।

( ४७ वाँ अध्याय ) जहाँ रामचन्द्रकी ब्रह्महत्या निवृत्त हुई, वहाँ ब्रह्महत्याविमोचन-तीर्थ हुआ। उसके आगे एक नागलोकका बिल है, जिसमे रामचन्द्रने ब्रह्महत्याका प्रवेश करा दिया। और बिलके ऊपर मण्डप बनाकर वहाँ भैरवको स्थापन किया। रामेश्वर लिंगके दक्षिण भागमे पार्वतीजी और दोनों ओर सूर्य्य और चन्द्र हैं और सन्मुख भागमें अग्नि निवास करता है। गणपति, कार्त्तिकेय और वीरभद्र आदि गण रामेश्वरके पासमें विद्यमान हैं।

( ५० वाँ अध्याय ) पूर्वकालमे मथुरापुरीमे पुण्यनिधि नामक चन्द्रवंशी राजा था, वह अपने पुत्रको राज्य सौप चतुरङ्गिणी सेना सहित रामसेतुमें जाकर रामेश्वरका सेवन करने लगा। कुछ कालके अनन्तर लक्ष्मीजी विष्णु भगवान्‌से रुष्ट होकर ८ वर्षकी कन्या बन धनुष्कोटितीर्थपर जाकर स्थित होगई। राजा पुण्यनिधिने उस कन्यासे पूछा कि तुम कौन हो ? कन्या बोली कि मैं अनाथ हू, आपकी पुत्री होकर आपके गृहमे रहना चाहती हू, जो कोई हठसे मुझको आकर्षण करे उसको आप दण्ड दीजिये। राजाने स्वीकार किया और कन्याको पुत्रीकी भांति अपनी रनिवासमे रक्खा। विष्णुभगवान् ब्राह्मण रूपसे लक्ष्मीको ढूंढते हुए रामसेतुके उपवनमें पहुँचे। वहाँ पुष्प बिनती हुई कन्यारूपिणी लक्ष्मी मिली। जब विष्णुने उस कन्याको हाथ पकड कर खींचा तब वह पुकारने लगी। उसकी पुकार सुनकर राजा पुण्यनिधि दौड़कर वहाँ आया और उसने ब्राह्मणरूपी विष्णुको पकड़ हथकड़ी बेडी पहनाय रामनाथके समीप एक मण्डपमे कैद करदिया। रात्रिके समय राजाने स्वप्नमें देखा कि वह ब्राह्मण शंख, चक्र, गदा, पद्म और भांति २ के भूषण धारण कर शेषशय्या पर शयन करता है, नारद, गरुड, विष्वक्सेन आदि पार्षद उसकी सेवामे खड़े है और वह कन्या हाथमे कमल लिये हुए कमलपर बैठी है। राजाने उठकर कन्याके घरमे जाकर देखा कि वह उसी रूपमे बैठी है, जैसा उसको स्वप्नमे देखा था। प्रभात होतेही उसने उस कन्याके साथ मण्डपमे जाकर उस ब्राह्मणको जैसा स्वप्नमे देखा था वैसाही चतुर्भुज तथा शेषशायी देखा। तब वह राजा विष्णुभगवान्‌को पहचान स्तुति करने लगा। विष्णुभगवान्‌ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजन् ! तुमने जिस प्रकारसे हमको निगडसे बांधा है, अब हम इसी रूपसे यहाँ निवास करेंगे। हमने सेतु बाँधा है; इसकी रक्षाके लिये हम सेतुमाधव नामसे यहाँ रहेंगे। जो मनुष्य सेतुमाधवके बिना सेवा किये हुए रामेश्वरकी सेवा करेगा, उसकी सेवाका फल व्यर्थ होजायगा।

( ५१ वाँ अध्याय ) कण्ठसे ऊपर वपन अर्थात् क्षौरकर्म करवा कर लक्ष्मणतीर्थमे स्नान करना चाहिये। ( ५२ वाँ अध्याय ) किसी तीर्थमें स्नान करनेसे कृतघ्नका उद्धार नही होता किन्तु सेतुबन्धमें स्नान करनेसे उसकी भी सद्गति होजाती है।

इतिहास–रामेश्वरजीका निज मन्दिर बहुत पुराना है। ऐसा प्रसिद्ध है कि मदुराके एक नायकने बड़े मन्दिरके भीतरका भाग बनवाया उसके चारों ओरके मन्दिर, दीवार, गोपुर इत्यादि इमारतोंको १७ वीं सदीमें रामनादके सेतुपति राजाओंने बनवाया, उसी समय तिरुमलई नायक मदुराका बड़ा मन्दिर बनवा रहा था। उस समय सेतुपति स्वाधीन थे

और उनका प्रताप चमका था। मन्दिरके गोपुरोंका काम १८ वीं सदीतक बना होगा। जब १८ वीं सदीके आरम्भमे मुसलमानों, महाराष्ट्रों और अन्य आक्रमण करनेवालोंने उस टापूमे जाकर लूटपाट की तब मन्दिर बननेका काम रुक गया।

## देवीपत्तन।

रामेश्वरके टापूके पश्चिमके हरबोलाकी खाड़ीसे लगभग २० मील पश्चिम समुद्रके तीर सेतुमूलके पास देवीपत्तन एक तीर्थ है। कोई कोई यात्री पांबनसे समुद्रकी नाव द्वारा देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ होकर तुतिकुडीमें जाकर रेलगाडीमे चढ़ते है। पांबनसे लगभग १२ घण्टेमे समुद्रकी नाव तुतीकुडी पहुँच जाती है। एक आदमीका नाव भाडा लगभग एक रुपया लगता है। कुछ लोग मदुरा कसबे और हरबोलाकी खाड़ीके बीचके परमगुडीके चट्टीसे देवीपत्तन जाते हैं। वहाँसे लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व देवीपत्तन ह। दश बारह घण्टेमें बैलगाडी देवीपत्तनमें पहुँच जाती है।

देवीपत्तनसे सेतुबन्ध रामेश्वरका क्षेत्र माना जाता है। वहाँ सुन्दरी देवी और तिलकेश्वर महादेवका मन्दिर है। देवीपत्तनके पूर्वोत्तर समुद्रकी खाडीमे नव पाषाण अर्थात् नवग्रह हैं, जिनको श्रीरामचन्द्रजीने सेतु बांधनेके समय स्थापन किया। उनमें ग्रहोंके कुछ आकार नहीं हैं इस लिये लोग उनको नव पाषाण कहते है। उनके पास समुद्रके जलमें रामचन्द्रका चरण पादुका, किनारेपर चक्रतीर्थ और वेङ्कटेशकी चतुर्भुज मूर्त्ति है। यात्रीगण चक्रतीर्थमें स्नान करके वहाँके देवताओंका दर्शन करते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(सेतुबधखण्ड, तीसरा अध्याय) सेतुमूलके समीप चक्रतीर्थ है, जो पहिले धर्मतीर्थ तथा धर्मपुष्करिणी नामसे प्रसिद्ध था। पूर्वकालमें धर्मने दक्षिण-समुद्रके तटपर बहुत काल तक महादेवजीका तप किया और स्नान करनेके लिये एक पुष्करिणी रची। शिवजी प्रगट होकर बोले कि हे धर्म! तुम इच्छित वर माँगो। धर्म बोले कि हे नाथ! मैं यही चाहता हूँ कि आपका वाहन होऊँ। शिवजीने धर्मको अपना वाहन (अर्थात् नन्दी बैल) बना लिया। उसके पश्चात् महादेवजी बोले कि हे धर्म! तुम्हारा बनाया हुआ तीर्थ आजसे धर्मपुष्करिणी नामसे प्रसिद्ध होगा। कुछ समयके पश्चात् महर्षि गालव धर्मपुष्करिणीके तीरपर विष्णु भगवान्का ध्यान करने लगे। उस समय एक राक्षसने आकर मुनिको पकडा। मुनि विष्णुको पुकारने लगे। विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने वहाँ आकर उस राक्षसका शिर काट लिया। उसके पश्चात् वह धर्मपुष्करिणीमें प्रवेश करगया। चक्रके निवास करनेके कारण धर्मपुष्करिणीका नाम चक्रतीर्थ होगया।

(सातवाँ अध्याय) महिषासुरके संग्राममे जगदम्बाने उस असुरको एक मूका मारा। वह व्याकुल होकर भागा और दक्षिण समुद्रके तटपर जाकर दश योजन लम्बी चौडी धर्मपुष्करिणीके जलमे गुप्त होगया। भगवतीके जानेपर वहाँ आकाश वाणी हुई कि दैत्य धर्मपुष्करिणीके जलमे छिपा है। उस समय जगदम्बाकी आज्ञासे उनके वाहन सिंहने पुष्करिणीके सब जलको पीलिया। तब भगवतीने महिषासुरका शिर काट लिया और दक्षिण समुद्रके तटपर अपने नामसे नगर बसाया, वही देवीपुर और देवीपत्तन नामसे प्रसिद्ध हुआ।

श्रीरामचन्द्रजीने शिवजीकी आज्ञासे देवीपत्तनके समीप अपने हाथसे नव शिला स्थापन किये। देवीपत्तनसे लङ्का तक १०० योजन लम्बा और १० योजन चौडा सेतु पांच दिनमें

प्रा हुआ। देवीपत्तनसे सेतुका आरम्भ हुआ, इस लिये देवीपत्तन सेतुमूल कहाया। सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तन है। प्रथम नव पाषाणके समीप समुद्रमें स्नान करके चक्रतीर्थमें श्राद्ध करना चाहिये।

( ८ वां अध्याय ) चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें वेतालवरद नामक तीर्थ है। ( ९ वाँ अध्याय ) एक ऋषिके वचनके अनुसार सुकर्ण नामक दैत्य अपने भाई कपालस्फोटके साथ दक्षिण समुद्रके तटपर तीर्थमें पहुंचा। इतनेमें पवन चला, जिससे तीर्थके जल कण उडकर कपालस्फोटके शरीरपर गिरे। जल कणोंके गिरतेही वह गालव मुनिके शापसे निवृत्त हो वेताल रूप छोड अपना पूर्व रूप अर्थात् ब्राह्मण-पुत्र विजयदत्त होगया। फिर जब उसने उस तीर्थमें स्नान किया तब मनुष्य देह छोडकर दिव्य स्वरूप हो स्वर्गमें चला गया। उस दिनसे उस तीर्थका नाम वेतालवरद हुआ।

( ३७ वाँ अध्याय ) देवीपत्तनसे पश्चिम दिशामें थोडी दूरपर पुलग्राम नामक पुण्य क्षेत्र है, जहाँसे रामचन्द्रने सेतुका आरम्भ किया। उसी स्थानमें क्षीर कुण्ड है। पूर्व कालमें जब मुद्गल मुनिने पुलग्राममें यज्ञ किया, तब विष्णु भगवान्ने प्रकट होकर वहाँ क्षीरकुण्ड बनादिया।

## दर्भशयन।

देवीपत्तनसे लगभग २५ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और पांबनसे लगभग पचास मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके किनारेसे ३ मील दूर दर्भशयन तीर्थ है। कोई कोई यात्री पांबनमें समुद्रकी नावपर सवार हो देवीपत्तन और दर्भशयन होकर तुतीकुडीमें जाकर रेलगाडीपर चढते हैं। प्रति आदमीका भाडा लगभग एक रुपया लगता है। दर्भशयनके पास समुद्रके किनारेपर एक धर्मशाला है।

दर्भशयनमें एक धर्मशाला है और खानेकी वस्तु मिलती है। वहाँके मुख्य देवता शेष- शायी चतुर्भुज भगवान् हैं। उनकी मूर्त्ति मनुष्यके समान बडी है। मन्दिरके भीतरकी परिक्रमामें कोदण्डरामस्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्र, कल्याण जगन्नाथ और नृसिंहजी हैं। श्रीरामचन्द्रने लङ्कापर आक्रमण करनेके समय समुद्रसे मार्ग पानेके लिये उसी स्थानपर ३ दिनों तक दर्भ अर्थात् कुशके आसनपर शयन किया, इस कारणसे उस स्थानका नाम दर्भ- शयन पडा। दर्भशयन तीर्थ सेतुमूलका पश्चिम छोर है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—( लङ्काकाण्ड, २१ वाँ सर्ग ) श्रीरामचन्द्र समुद्रके तीर अपने बाहुको तकिया बनाकर मौन हो कुशासनपर लेट गये। इस भांति उनको ३ रात बीतगई, किन्तु सागर प्रकट नहीं हुआ, तब वह महाक्रुद्ध हो इन्द्रवज्रके समान बाणोंको छोडने लगे। जब वायुसे युक्त समुद्रके जलका महावेग उत्पन्न हुआ ( २२वाँ सर्ग ) तब समुद्र मूर्तिमान होकर जलसे प्रकट हुआ और रामचन्द्रसे बोला कि हे महाराज! विश्वकर्माके पुत्र नल बानर तुम्हारी सेनामें है। विश्वकर्माने उनको वरदान दिया है, वह मेरे जलके ऊपर सेतु बनावें। ऐसा समुद्रका वचन सुन नल आदि बानरोंने सेतु बनाया। सब सेना सेतुद्वारा समुद्र पार हुई।

स्कन्दपुराण—( सेतुबंधखण्ड ७ वाँ अध्याय ) सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तनतीर्थ है।

---

# पन्द्रहवाँ अध्याय।



## ( मदरास हातेमें ) तुतिकुड़ी, ( समुद्रमें ) सिलोन, ( मद्रास हातेमें ) तिरुचेंदूर, तिरुनलवेली, पालमकोटा, पापना-शनतीर्थ, तोताद्री, कुमारीतीर्थ, तिरुवंद्रम्, कोचीन और राजाका कोचीन।

## तुतिकुड़ी।

दर्भशयन तीर्थसे लगभग ४० मील ( पांवनसे लगभग ९० मील ) दक्षिण-पश्चिम तुतिकुडीका वन्दरगाह है, जिससे ८ मील दूर तुतिकुडीका रेलवे स्टेशन है। मदुराके रेलवे स्टेशनसे ८१ मील दक्षिण मनियार्चीका रेलवे जंक्शन और मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण पूर्व तुतिकुडीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें (८ अंश, ४८ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, २७ विकला पूर्व देशान्तरमें ) तुतिकुडी वन्दरगाहके पास तुतिकुडी कसबा है, जिसको द्रविड़ियन लोग तुतुगुडी और अङ्गरेजी लोग तूतीकोरिन कहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तुतिकुड़ीमें २५१०७ मनुष्य थे, अर्थात् १३७१३ पुरुप और ११३९४ स्त्रियाँ। इनमे १४८९९ हिन्दू, ७५९१ क्रस्तान, २५८७ मुसलमान, २८ बौद्ध और २ अन्य थे।

तुतिकुडीमे मातहत कलक्टर रहते हैं। वहाँ कई एक गिरजे हैं। तुतिकुडी विदेशी सौदागरीके विषयमें मदरास हातेमें दूसरा और भारतवर्षमें ६ ठा कसवा है। वहाँसे रूई, काफी, मंजसी इत्यादि वस्तु अन्य स्थानोमें और चावल, मवेसी, घोडे, भेड, मुर्गे खासकर सिलोनमें भेजे जाते है। वहाँ वहुतसे अङ्गरेज सौदागर और रूई दवानेके लिये धूँयेकी कल हैं। कसवेके कूपका पानी खारा है, ताम्रपर्णी नदीसे पानी लाया जाता है। कसबेके आस पासकी भूमि अच्छी नही है, उसपर वृक्ष और पौधे प्रायः नहीं होते।

तुतिकुडीके वन्दरगाहका पानी केवल ८ फीट गहरा है, इस लिये किनारेसे २½ मील भीतर समुद्रमें लंगर पर जहाज तथा आगवोट ठहरते हैं। २० टन वाली नावोंपर जहाजोका माल किनारे लाया जाता है। हालमें हेयर टापूपर एक लाइटहाउस वना है। तुतिकुडीके पासके समुद्रमें मोती वाले सीप और शंख निकाले जाते हैं। तिरुनलवेली और मदुरा जिलेसे वहुतमे कुली काफी रोपने और अन्य काम करनेके लिये सिलोन भेजे जाते है।

इतिहास—पहिले तुतिकुडी वहुत प्रसिद्ध स्थान था। लोग कहते हैं कि सन् १७०० में उसमें ५० हजार मनुष्य वसते थे। १७ वीं सदीमें हालेण्ड वालोंने पोर्चुगीजोंसे इसको लेलिया। सन् १७८१ में जव अङ्गरेज और हालेण्ड वालोंसे लडाई आरम्भ हुई तब तुतिकुड़ी हालेण्ड वालोंके अधिकारसे निकल गई।

पूरा हुआ। देवीपत्तनसे सेतुका आरम्भ हुआ, इस लिये देवीपत्तन सेतुमूल कहाया। सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तन है। प्रथम नव पाषाणके समीप समुद्रमें स्नान करके चक्रतीर्थमें श्राद्ध करना चाहिये।

( ८ वाँ अध्याय ) चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें वेतालवरद नामक तीर्थ है। ( ९ वाँ अध्याय ) एक ऋषिके वचनके अनुसार सुकर्ण नामक दैत्य अपने भाई कपालस्फोटके साथ दक्षिण समुद्रके तटपर तीर्थमें पहुँचा। इतनेमें पवन चला, जिससे तीर्थके जल कण उडकर कपालस्फोटके शरीरपर गिरे। जल कणोंके गिरतेही वह गालव मुनिके शापसे निवृत्त हो वेताल रूप छोड अपना पूर्व रूप अर्थात् ब्राह्मण-पुत्र विजयदत्त होगया। फिर जब उसने उस तीर्थमें स्नान किया तब मनुष्य देह छोडकर दिव्य स्वरूप हो स्वर्गमें चला गया। उस दिनसे उस तीर्थका नाम वेतालवरद हुआ।

( ३७ वाँ अध्याय ) देवीपत्तनसे पश्चिम दिशामें थोडी दूरपर पुलग्राम नामक पुण्य क्षेत्र है, जहाँसे रामचन्द्रने सेतुका आरम्भ किया। उसी स्थानमें क्षीर कुण्ड है। पूर्व कालमें जब मुद्गल मुनिने पुलग्राममें यज्ञ किया, तब विष्णु भगवान्ने प्रकट होकर वहाँ क्षीरकुण्ड बनादिया।

## दर्भशयन।

देवीपत्तनसे लगभग २५ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और पांबनसे लगभग पचास मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके किनारेसे ३ मील दूर दर्भशयन तीर्थ है। कोई कोई यात्री पांबनमें समुद्रकी नावपर सवार हो देवीपत्तन और दर्भशयन होकर तुतीकुडीमें जाकर रेलगाड़ीपर चढ़ते हैं। प्रति आदमीका भाड़ा लगभग एक रुपया लगता है। दर्भशयनके पास समुद्रके किनारेपर एक धर्मशाला है।

दर्भशयनमें एक धर्मशाला है और खानेकी वस्तु मिलती है। वहाँके मुख्य देवता शेष-शायी चतुर्भुज भगवान् हैं। उनकी मूर्त्ति मनुष्यके समान बडी है। मन्दिरके भीतरकी परिक्रमामें कोदण्डरामस्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्र, कल्याण जगन्नाथ और नृसिंहजी हैं। श्रीरामचन्द्रने लङ्कापर आक्रमण करनेके समय समुद्रसे मार्ग पानेके लिये उसी स्थानपर ३ दिनों तक दर्भ अर्थात् कुशके आसनपर शयन किया, इस कारणसे उस स्थानका नाम दर्भ-शयन पड़ा। दर्भशयन तीर्थ सेतुमूलका पश्चिम छोर है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—( लङ्काकाण्ड, २१ वाँ सर्ग ) श्रीरामचन्द्र समुद्रके तीर अपने बाहुको तकिया बनाकर मौन हो कुशासनपर लेट गये। इस भांति उनको ३ रात वीतगईं, किन्तु सागर प्रकट नहीं हुआ, तब वह महाक्रुद्ध हो इन्द्रवज्रके समान बाणोंको छोडने लगे। जब वायुसे युक्त समुद्रके जलका महावेग उत्पन्न हुआ ( २२वाँ सर्ग ) तब समुद्र मूर्तिमान होकर जलसे प्रकट हुआ और रामचन्द्रसे बोला कि हे महाराज! विश्वकर्माके पुत्र नल बानर तुम्हारी सेनामें हैं। विश्वकर्माने उनको वरदान दिया है, वह मेरे जलके ऊपर सेतु बनावें। ऐसा समुद्रका वचन सुन नल आदि वानरोंने सेतु बनाया। सब सेना सेतुद्वारा समुद्र पार हुई।

स्कन्दपुराण—( सेतुबंधखण्ड ७ वाँ अध्याय ) सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तनतीर्थ है।

---

# पन्द्रहवाँ अध्याय।



## ( मदरास हातेमें ) तुतिकुड़ी, ( समुद्रमें ) सिलोन, ( मदरास हातेमें ) तिरुचेंदूर, तिरुनलवेली, पालमकोटा, पापनाशनतीर्थ, तोताद्री, कुमारीतीर्थ, तिरुवंद्रम्, कोचीन और राजाका कोचीन।

## तुतिकुड़ी।

दर्भशयन तीर्थसे लगभग ४० मील ( पांबनसे लगभग ९० मील ) दक्षिण-पश्चिम तुतिकुडीका बन्दरगाह है, जिससे ८ मील दूर तुतिकुड़ीका रेलवे स्टेशन है। मदुराके रेलवे स्टेशनसे ८१ मील दक्षिण मनियार्चीका रेलवे जंक्शन और मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण पूर्व तुतिकुडीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें (८ अंश, ४८ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, २७ विकला पूर्व देशान्तरमें ) तुतिकुडी बन्दरगाहके पास तुतिकुडी कसबा है, जिसको द्रविड़ियन लोग तुतुगुडी और अङ्गरेजी लोग तूतीकोरिन कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तुतिकुड़ीमें २५१०७ मनुष्य थे, अर्थात् १३७१३ पुरुष और ११३९४ स्त्रियाँ। इनमें १४८९९ हिन्दू, ७५९१ कृस्तान, २५८७ मुसलमान, २८ बौद्ध और २ अन्य थे।

तुतिकुडीमें मातहत कलक्टर रहते हैं। वहाँ कई एक गिरजे हैं। तुतिकुडी विदेशी सौदागरीके विषयमें मदरास हातेमें दूसरा और भारतवर्षमें ६ ठा कसवा है। वहाँसे रूई, काफी, मवेसी इत्यादि वस्तु अन्य स्थानोंमें और चावल, मवेसी, घोडे, भेड़, मुर्गे खासकर सिलोनमें भेजे जाते हैं। वहाँ बहुतसे अङ्गरेज सौदागर और रूई दवानेके लिये धूँयेकी कल हैं। कसवेके कूपका पानी खारा है, ताम्रपर्णी नदीसे पानी लाया जाता है। कसबेके आस पासकी भूमि अच्छी नहीं है, उसपर वृक्ष और पौधे प्रायः नहीं होते।

तुतिकुडीके बन्दरगाहका पानी केवल ८ फीट गहरा है, इस लिये किनारेसे २½ मील भीतर समुद्रमें लंगर पर जहाज तथा आगबोट ठहरते हैं। २० टन वाली नावोंपर जहाजोंका माल किनारे लाया जाता है। हालमें हेयर टापूपर एक लाइटहाउस बना है। तुतिकुडीके पासके समुद्रमें मोती वाले सीप और शंख निकाले जाते हैं। तिरुनलवेली और मदुरा जिलेसे बहुतसे कुली काफी रोपने और अन्य काम करनेके लिये सिलोन भेजे जाते हैं।

इतिहास—पहिले तुतिकुड़ी बहुत प्रसिद्ध स्थान था। लोग कहते हैं कि सन् १७०० में उसमें ५० हजार मनुष्य बसते थे। १७ वीं सदीमें हालेण्ड वालोंने पोर्चुगीजोंसे इसको लेलिया। सन् १७८१ में जब अङ्गरेज और हालेण्ड वालोंसे लड़ाई आरम्भ हुई तब तुतिकुड़ी हालेण्ड वालोंके अधिकारसे निकल गई।

## सिलोन ।

तुतिकुडीके बंदरगाहसे लगभग २०० मील दक्षिण–पूर्व सिलोनअर्थात् लंका टापूका सदर स्थान कोलंबो शहर है । सप्ताहिक आगवोट तुतिकुडीसे कोलम्बोको जाता है और कोलंबोसे तुतिकुडी आता है और प्रति सप्ताहमें दो अथवा तीन वार छोटे जहाज जाते है ।

सिलोनका नाम सिहलद्वीप–सुरद्वीप और लंका है । वहांके निवासी जो बौद्धमतके हैं, सिंहाली कहलाते है । सिलोन टापू उत्तरसे दक्षिण तक २७० मील लंबा और पूर्वसे पश्चिम तक अधिकसे अधिक १४० मील चौड़ा अर्थात् लगभग २५००० वर्गमीलमें है । उस टापूमें ३० लाखसे अधिक मनुष्य वसते हैं, जिनमें २० लाखसे अधिक वहांके निवासी सिहाली लगभग ८ लाख तामिल और ६ हजारसे कम खालिस युरोपिन है ।

उस टापूके मध्य भागकी भूमि समतल है, किन्तु समुद्रके पासकी पृथ्वी नीची है । तीन चार प्रसिद्ध पर्वत हैं । टापूमे महावलीगङ्गा कल्यानीगङ्गा, कालूगङ्गा और वेलवेगङ्गा प्रसिद्ध नदी है । सिलोन एक गवर्नरके अधीन ७ भागोमे विभक्त है । उसमें कोलम्बो, निङ्गपू , जाफना, कलतूरा, त्रिकामली, कांडी, अनिरुद्धपुर इत्यादि १० प्रसिद्ध कसबे है । कोलम्बो सदरस्थान है, जिसमे लगभग १ लाख मनुष्य वसते हैं । जाफनामे बहुत नमक तैयार होता है । वहॉसे नमक मदरास और कलकत्तेमें भेजा जाता है । पूर्व समयमे कांडी कसबा कांडी वंशेक राजाओंकी राजधानी था । एक समय अनिरुद्धपुर सिलोनकी राजधानी था । सिलोनकी खानोसे अकीक, लाल, पोखराज, और संगशब जवाहिरात निकलते हैं । टापूमे दारचीनी, नारियल, कहवा, सुपारी आदि वहुत होती हैं । चौपाया जानवरोंमें हाथी बहुत होते है । मनारकी खाडीमें मोती निकलते है ।

इतिहास–सन् १५०५ ईस्वीमें पोर्चुगलवाले पोर्चुगीज लोग सिलोनमें उतरे, उन्होने शीघ्रही कोलम्बोमें एक कोठी बनाई । वे लोग देशियोंके साथ वरावर लडते रहे, तथा कई वार परास्त हुए । सन् १६०२ में हालेण्ड वाले सिलोनमे आये । उन्होंने सन् १६३८ में देशियोंमें मिलकर पोर्चुगीजोंसे लड़ाई आरम्भ की । सन् १६५८ में लड़ाई खतम हुई । हालेण्ड वाले वहॉके मालिक रह गये । उन्होने कोलम्बोमें किला बनाया, जिसके कई एक बैटरी अब तक समुद्रके किनारेपर विद्यमान है । सन् १७९६ मे अङ्गरेजोंने हालिण्डवालोंको निकाल कर सिलोनको अपने अधिकारमें कर लिया, तबसे वह अङ्गरेजी गवर्नमेटके अधीन है ।

## तिरुचेंदूर ।

तुतिकुडी कसबेसे १८ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर तिरुनलवेली जिलेमें तिरुचेदूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय ७५८२ मनुष्य थे, अर्थात् ६३८६ हिन्दू, ९८४ कृस्तान और २१२ मुसलमान । तिरुचेदूरमें समुद्रके किनारेपर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिवजीके पुत्र स्कन्दजीका वडा मन्दिर है । मन्दिरमें सुन्दर शिलालेख है, वहाँ यात्री बहुत आते हैं । मदरास हातेमे स्कन्दके ५ मन्दिर प्रधान हैं,–( १ ) बल्लारी जिलेमे बल्लारी और हुसपेटके बीचमें, ( २ ) दक्षिणी आरकाट जिलेके तिरुवन्नामलईमे, ( ३ ) उत्तरी आरकाट जिलेके तिरुत्तनीमें ( आरकोनम् जंक्शनसे ८ मील पश्चिमोत्तर ) ( ४ )तिरुनलवेली जिलेके तिरुचेदूरमें और ( ५ ) मइलममें । पॉचों स्थानोंमे तिरुचेन्दूर अधिक प्रख्यात है ।

वहाँ मन्दिरके खर्चके लिये भारी आमदनी है; प्रति वर्ष एक बडा मेला होता है, जिसमें बहुतसी मवेशियाँ विकनेके लिये आती है।

## तिरुनलवेली।

तुतिकुडीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील पश्चिमोत्तर ( मदुरासे ८१ मील दक्षिण ) मनियार्चीका रेलवे जंक्शन और मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण-पश्चिम तिरुनलवेलीका रेलवे स्टेशन है। ताम्रपर्णी नदीके बाये किनारेसे १½ मील ( ८ अंश, ४३ कला, ४७ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४३ कला, ४९ विकला पूर्व देशान्तरमे ) मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें तिरुनलवेली कसवा है, जिसको तीन्नेवेली भी कहते है। ताम्रपर्णीनदीपर ११ मेहरावियोंका पुल वना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली कसबेमें २४७६८ मनुष्य थे; अर्थात् २२९४८ हिन्दू, १५०४ मुसलमान और ३१६ कृस्तान।

तिरुनलवेली कसबेमे एक कालिज, एक बड़ा अस्पताल, एक मिशन और एक बड़ा शिवमन्दिर है। कसबेसे ३ मील पूर्व ताम्रपर्णीके दहिने तिरुनलवेली जिलेका सदर स्थान पालमकोटा है।

बडा शिवमन्दिर—तिरुनलवेलीका शिवमन्दिर ७५० फीट लम्बा और ५८० फीट चौडा अर्थात् १६ बीघेमें है। वह मन्दिर मदुराके बड़े मन्दिरके समान दो भागोंमें बँटा हुआ है। दक्षिणके आधे भागमे पार्वतीका और उत्तरके भागमे शिवका मन्दिर है। दोनोंमें तीन तीन गोपुर बने हुए हैं, जिनमेंसे पूर्ववाले गोपुर प्रधान है, उनके बाहर पेशगाह बने हुए है। भीतर जानेपर एक बड़ा पेशगाह मिलता है, जिसके दहिने तेप्पकुलम् अर्थात् नाव चलनेका सरोवर, जिसमे उत्सवोंके समय मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियाँ नौकापर चढ़ाकर फिराई जाती है और बाये सहस्रस्तम्भ मण्डपम् है। वह मण्डपम् उस घेरेकी सम्पूर्ण चौडाईमें लम्बा और ६४ फीट चौड़ा है। उसमें १०० स्तम्भोंकी १० पांक्तियाँ है। मन्दिर दर्शनीय है।

इतिहास—मदुराके नायकोकी हुकूमतके समय उनके सूवेदार तिरुनलवेली कसबेमें रहते थे। लगभग सन् १५६० में मदुराके विश्वनाथ नायकने तिरुनलवेली कसबेको सुधारा और अनेक मन्दिर तथा अन्य इमारतोंको वनाया।

## पालमकोटा।

मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें तिरुनलवेली कसबेसे लगभग ३ मील पूर्व ताम्रपर्णी नदीके दहिने किनारेसे १ मील दूर तिरुनलवेलीके रेलवे स्टेशनके पास तिरुनलवेली जिलेका सदर स्थान पालमकोटा एक कसवा है। तिरुनलवेली कसबेसे पालमकोटा तक उत्तम सडक वनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालमकोटामें १८६८६ मनुष्य थे, अर्थात् १५७९३ हिन्दू, २१८४ कृस्तान और ७०९ मुसलमान।

पालमकोटामे सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। वहाँका पुराना किला तोड दिया गया है। ताम्रपर्णीनदी और किलेके वीचमें ११० फीट

ऊँचा एक गिरजा है। तिरुनलवेली कसबेके बहुत अफसर पालमकोटामें रहते है। पालमकोटा स्वास्थ्यकर स्थान है।

तिरुनलवेली जिला—इसके उत्तर और पूर्वोत्तर मदुरा जिला, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मनारकी खाडी और पश्चिम तिरुवांकूरका राज्य है। जिलेकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको १२२ मील और सबसे अधिक चौडाई पूर्वसे पश्चिमको ७४ मील है। तिरुनलवेली जिलेमें बडा मैदान है। जिलेकी पश्चिमी सीमाके पासकी भूमि मैदानसे ४००० फीट ऊँची है। ६०० से अधिक वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ऊँची भूमि और पहाडियॉ है। लगभग ३०० वर्गमीलमे जङ्गल लगे हैं। जिलेकी ३४ नदियोंमे ताम्रपर्णी नदी प्रधान है, जो तिरुनलवेली और पालमकोटा कसबेके बीच होकर गई है। जिलेके उत्तरी भागमे वृक्ष कम हैं। नदियोंके आस पास धान इत्यादिके खेत और विविध भांतिके वृक्ष है। समुद्रके पास बहुतसे चट्टान, रेती और नमकदार दलदल हैं, वस्ती बहुत कम हैं।

तिरुनलवेली जिलेमें हिन्दू लोगोंके ३ पवित्र स्थान हैं;—( १ ) समुद्रके पास तिरुचेन्दूर, ( २ ) ताम्रपर्णी नदीके पास पापनाशनतीर्थ और ( ३ ) ताम्रपर्णीकी सहायक चिट्टारनदीके पास कुट्टालम्। पापनाशन और कुट्टालम्के पासकी पहाड़ियोंके पादमूलके निकट सुन्दर जल प्रपात है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली जिलेके ५३८१ वर्गमील क्षेत्रफलमे १६९९७४७ मनुष्य थे, अर्थात् १४६८९७७ हिन्दू, १४०९४६ कृस्तान, ८९७६७ मुसलमान और ५७ अन्य। हिन्दुओमे ३६२३२५ वेल्लाल ( खेतिहर जाति ), ३३१३९४ वनिया (जाति विशेष), २३२४५७ सानान (मदक), १२३९२५ परिया (परयन) ९०११२ इडैयन (भेड़िहर), ६७९३८ कम्भाड़न (लोहार), ५९१०२ ब्राह्मण, ४३७५८ कैक्कलर ( कपडे विननेवाले ), २४३९७ सतानी ( दोमसला ), २०७८९ अंबटन ( नाई ), २०६५४ वन्नान ( धोबी ), १५१९७ सेट्टी ( सौदागर ), १०७२४ कुसवन ( कुम्भार ), ५८१४ क्षत्री, ५५७३ सेंवड़वन ( मछुहा ), १००८ कणक्कन ( लिखनेवाले ) वाकीमें अन्य लोग थे। कृस्तानोंमे ५६६ यूरेशियन, १२५ यूरोपियन और अमेरिकन थे। इस जिलेके समान हिन्दुस्तानके किसी जिलेमें कृस्तान नहीं है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली जिलेके कसबे तुतिकुडीमें २५१०७ तिरुनलवेलीमें २४७६८, श्रीवल्लीपुत्तूरमें २१४४८, पालमकोटामें १८६८६, कुलसेखरन् पट्टनम्में १५९२४, विरुदुपट्टीमे १४०७५, तेन्काशीमें १२८६१, शिवकाशीमें १२१८४, वीरवनल्लूरमें १३९५१, राजापालयम्में १३३०१, कायरपट्टनम्में ११४६५ और कलडैकुरचीमें ११०९६ मनुष्य थे। तिरुनलवेली जिलेके लगभग ४० कसबेमें ५०० से अधिक मनुष्य हैं। इस जिलेकी प्रधान भाषा तामिल है, कुछ लोग तैलङ्गी बोलते है। जिलेमें तुतिकुडी प्रसिद्ध वन्दरगाह है। समुद्रसे शंख और मोतीके सीप निकाले जाते हैं।

तेन्काशी—तिरुनलवेली कसबेसे २५ मील पश्चिमोत्तर तिरुनलवेली जिलेमें तालुकका सदर स्थान तेन्काशी एक पवित्र कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२८६१ मनुष्य थे। एक सड़क तिरुनलवेलीसे तेन्काशी होकर कीलन कसबेको गई है। तेन्काशीमे आस पासके देशोंसे तिजारत होती है। तामिल भाषामें तेन्का अर्थ दक्षिण है।

उस स्थानको अधिक पवित्र समझकर वहाके लोगोंने तेन्‌काशी अर्थात् दक्षिणकी काशी उसका नाम रक्खा था। तेन्‌काशीमें तिरुवांकूर जानेवाली सडकके निकट एक सुन्दर मन्दिर है, जिसका लोग बड़ा मान करते हैं।

कुट्टालम्—पालमकोटा कसबेसे ३५ मील दूर तेन्‌काशीके तालुकमें चित्तार नदीके पास कुट्टलम् एक पवित्र गॉव और जलप्रपातोंके होनेके कारण प्रसिद्ध है। वहॉके छोटे जलप्रपातके नीचे ( जो१००फीट ऊँचा है ) एक सुन्दर कुण्ड और एक मन्दिर है। यात्री लोग जलप्रपातके कुण्डमें स्नान करके मन्दिरमें देव दर्शन करते है। जलप्रपातोंका दृश्य आश्चर्यजनक है। उनके आस पास अनेक बङ्गले बने हुए हैं, जिनमे यूरोपियन लोग पालमकोटा और तिरुवन्द्रम्‌से आकर जूनसे अकतूबर तक रहते हैं।

श्रीवल्लीपुतूर—मदुराके रेलवे स्टेशनसे ४४ मील दक्षिण सातूरका रेलवे स्टेशन है जिससे लगभग २५ मील पश्चिम ओर तिरुनलवेली जिलेमें तालुकका सदर स्थान श्रीवल्लीपुतूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ में २१४४८ मनुष्य थे। वहाँ रङ्गमन्दार भगवान्‌का बडा मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीलक्ष्मीजी और गरुडके सहित रङ्गमन्दार भगवान् विराजते हैं। वहां वटपत्रपर भगवान् शयन करते है। मन्दिरके पश्चिमोत्तर पहाडीके ऊपर श्रीनिवास भगवान् है और मन्दिरके निकट एक सरोवर है। श्रीवल्लीपुतूरमें प्रति वर्ष रथयात्राका मेला होता है। मेलेमें लगभग १०००० मनुष्य एकत्र होते है।

इतिहास—तामिल लोगोंकी कहावतके अनुसार चेरा, चोला और पांड्य वंश वाले ये तीनों राजा ताम्रपर्णी नदीके पास कोलकाई नगरमें रहकर हुकूमत करते थे। पीछे पांड्यवंशके राजा वहाही रहगये और चेरा तथा चोला वंशके राजाओंने उत्तर और पश्चिम जाकर अपना अपना खास राज्य नियत किया। पीछे पांड्य वंशके राजाओंकी राजधानी मदुरा हुआ। कोलकाईके पास समुद्रसे मोती वाली सीप निकलती थी। वह जगह अब समुद्रसे लगभग ३ मील दूर है। जब कोलकाईसे समुद्र हटगया, तब कायल बन्दरगाह हुआ। कुछ समयके बाद कायल भी समुद्रसे दूर होगया। उसके पश्चात् पोर्चुगीजोंने तुतिकुडीको, जो एक छोटा गॉव था, प्रसिद्ध बन्दरगाह बनाया।

ऐतिहासिक समयके आरम्भसे सन् १०६४ तक तिरुनलवेली जिला पांड्य वंशके राजाओंके अधिकारमे था। सन् १०६४ में राजेन्द्र चोलाने, जो सुन्दर पांड्यके नामसे मशहूर हुआ, पांड्य वंशके राजाको जीता। उसके पश्चात् २५० वर्ष तक जिलेमें गड़बड था। सन् १३१० में मुसलमानोंने इस जिलेपर आक्रमण किया। उसके बाद फिर पांड्य वंशके राजाका अधिकार हुआ। तबसे मुसलमान लोग, पाण्ड्य वंश वाले और उस देशके अन्य लोग राज्यके लिये झगडा करते रहे। सन् १५६५ में मदुराके नायककी हुकूमत कायम हुई। पाण्ड्य वंशके राजाओंके राज्यकी घटतीके समय तिरुनलवेली मदुराके नायकके अधिकारमे हुई। लगभग सन् १७४४ में तिरुनलवेली आरकाटके नवाबके अधिकारमे हुई, किन्तु वास्तवमे वह कई एक स्वाधीन प्रधानोंके अधीन रही। जिलेमें लूट पाट और मार काट होती रही।

सन् १७८१ में आरकाटके नवाबने ईष्टइण्डियन कम्पनीको तिरुनलवेली जिलेकी मालगुजारीका अधिकार सौंपा। सन् १७८२ में एक अङ्गरेजी अफसरने जिलेके २ किलोंको

जीता और चन्द पालेगारोंको अपने अख्तियारमें करलिया । सन् १७९९ में जब पालेगार बागी हुए तब उनसे हथियार छीनलिये गये और उनके किले नाकाम करादिये गये । सन् १८०१ में फिर बलवा हुआ, जो दबाया गया। उसी साल तिरुनलवेलीके साथ सम्पूर्ण कर्नाटक अङ्गरेजी अधिकारमें होगया।

## पापनाशनतीर्थ।

पालमकोटा कसबेसे २९ मील ( ८ अंश, ४८ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २४ कला, पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेके अम्बासमुद्रम् नामक तालुकमें अम्बासमुद्रम् गाँवसे लगभग ६ मील पश्चिम ताम्रपर्णी नदीके अन्त वाले जलप्रपातके पास पापनाशन नामक पवित्र गाँव है। वहाँ ताम्रपर्णी नदी पहाड़ीके ऊपरसे नीचे गिरती है। बड़े जलप्रपात ( बड़े झरने ) की बड़ी चौडी धारा पहाडीसे ८० फीट नीचे देशके सतहपर जोर शोरसे गिरती है। जलप्रपातके निकट एक पूज्य मन्दिर है। वहाँ ब्राह्मण लोग मछलियोंको खिलाते है और बहुतसे यात्री जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शिवपुराण–( विद्येश्वरसंहिता, १० वाँ अध्याय ताम्रपर्णी नदीमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक मिलता है, उसके किनारेपर स्वर्ग देने वाले बहुतसे क्षेत्र विद्यमान हैं।

कूर्मपुराण—( उपरिभाग, ३६ वाँ अध्याय ) तीनो लोकोंमें विख्यात ताम्रपर्णी नदीके जलमें तर्पण करनेसे पितर लोगोंके सम्पूर्ण पाप नाश होकर उनकी मुक्ति होजाती है।

## तोताद्री।

तिरुनलवेलीके रेलवे स्टेशनसे लगभग ४० मील दूर श्रीरामानुजस्वामीके संप्रदायकी मूलगद्दीका स्थान तोताद्री है। तिरुनलवेलीसे बैलगाड़ी तोताद्री जाती है। वहाँ तोताद्रीनाथ भगवान्‌का बड़ा मन्दिर क्षीराब्धिपुष्करिणी नामक सरोवर और रामानुजीय संप्रदायकी मूलगद्दी है। द्रविड़ देशमें रामानुजीय संप्रदाय अर्थात् आचारी लोगोंकी ८ गद्दी है,–उनमेसे तोताद्री, मैलकोटा और वेंकटाचल इन ३ गद्दियोंपर विरक्त आचारी और विष्णुकांची, श्रीरङ्गम् आदि ५ गद्दियोंपर गृहस्थ आचारी रहते है। सम्पूर्ण गद्दियोंमें तोताद्रीकी गद्दी मुख्य है, इस लिये वह मूलगद्दी कहलाती है। वहाँ बहुतसे आचारी यात्री जाते है। रामानुजीय संप्रदायका वृत्तान्त भारतभ्रमणके इसी खण्डमें भूतपुरीके बयानमे लिखा है।

## कुमारीतीर्थ।

तिरुनलवेली ( तिनेवेली ) के रेलवे स्टेशनसे साठ सत्तर मील दक्षिण हिन्दुस्तानके अन्तमे उसके दक्षिणके नोकके भीतर ( ८ अंश ४ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ३६ कला, पूर्व देशान्तरमें ) तिरुवांकूर राज्यके कुमारी अन्तरीपमें समुद्रके निकट कुमारी नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २२४७ मनुष्य थे। कुमारी गाँवमें कुमारीदेवीका बड़ा मन्दिर बना हुआ है। देवीके भोगरागमे बडा खर्च होता है। उनके बहुमूल्य भूषण हैं। वहाँ तिहवारोंके समय बहुतसे यात्री जाते है। इसी कुमारीदेवीके नामसे उस अन्तरीपका नाम कुमारी अन्तरीप पडा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत–( वनपर्व, ८३ वाँ अध्याय ) कन्यातीर्थमे ३ दिन व्रत करनेसे १०० दिव्य कन्या मिलती है और स्वर्ग लोकमे निवास होता है। ( ८५ वाँ अध्याय ) यात्रियोंको उचित है कि कावेरीनदीमे स्नान करनेसे पश्चात् समुद्रके किनारेपर जाकर कन्यातीर्थका स्पर्श करे, जिससे उसका सम्पूर्ण पाप विनाश होजायगा।

मत्स्यपुराण––( १९२ वाँ अध्याय ) जो पुरुष कन्यातीर्थके सङ्गमपर स्नान करता है, उसको देवी पार्वतीजीका स्थान प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत––( दशम स्कंध, ७९ वाँ अध्याय ) बलदेवजीके सेतुबंध रामेश्वरके दर्शन करनेके पश्चात् कृतमाला और ताम्रपर्णीनदीमें स्नान करके मलयाचल और कुलाचल पर्वतमे जाकर अगस्त्य मुनिकी स्तुति की। उसके अनन्तर उन्होंने दक्षिणके समुद्रके तटपर जाकर कन्या नामक देवीका दर्शन किया।

## तिरुवन्द्रम्।

तिरुनलवेली ( तिन्नेवेली ) के रेलवे स्टेशनसे साठ सत्तर मील पश्चिम कुछ दक्षिण पश्चिमी घाटके समुद्रसे २ मील दूर ( ८ अंश २९ कला, ३ विकला, उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५९ कला, ९ विकला, पूर्व देशान्तरमे ) मद्रास हातेके तिरुवांकूर राज्यके तिरुवद्रम् तालुकमे तिरुवांकूरके महाराजकी राजधानी तिरुवंद्रम् कसबा है, जिसको द्रविडियन् लोग तिरुवन्दनपुरम् कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुवंद्रम्मे २७८८७ मनुष्य थे, अर्थात् १४७०७ पुरुष और १३१८० स्त्रियाँ। इनमे २४८०४ हिन्दू, १६१० मुसलमान और १४७३ कृस्तान थे।

तिरुवन्द्रम् कसबेके नीचेका भाग रोगवर्द्धक है। पानीके निकासका मार्ग अच्छा नहीं है नारियल आदिके वन वृक्षोंके रहनेके कारण स्वच्छ पवनका आवागमन कम रहता है। किले और कसवेका एक वडा भाग नीची भूमिपर है। कसवेमे वहुत सी अच्छी सडके वनी हुई हैं।

तिरुवद्रम्में १ डाक्टरीका स्कूल, १ लडकियोंका स्कूल, १ हाई स्कूल, ५ दवाखाना, ४ बीमारखाने, १ किला, वहुतेरे आफिस, अङ्गरेजी रेजीडेण्टकी कोठी, महाराज कालिज, एक अवजरवेटरी, २ जेलखाने और कई धर्मशालाये हैं। पवलिक वागमे देखने लायक नेपियर मिउजियम, वना है। कसवेसे उत्तर फौजी छावनी है, जिसमे हथियारखाना, अस्पताल और फौजी अफसरोंकी कोठियाँ वनी हुई हैं। एक पहाडीपर एक सुन्दर महल वना है, जिसमे कभी कभी महाराज रहते हैं। तिरुवंद्रम्के आस पासका दृश्य सुन्दर है।

ऊंची दीवारसे घेरा हुआ तिरुवंद्रम्का किला है। किलेके भीतर पद्मनाभका वड़ा मन्दिर और महाराज तथा राजघरानेके अनेक राजकुमारो और राजकुमारियोंके दर्शनीय महल वने हुए हे। इनके अतिरिक्त किलेके भीतर एक टकशाल और चन्द आफिस हैं।

पद्मनाभका मन्दिर–तिरुवद्रम्के किलेके भीतर पद्मनाभ नारायणका विशाल कोइल अर्थात् मन्दिर है। मन्दिरके वगलोमे दीवार और अनेक गोपुर वने हुए हैं। विमान अर्थात् निज मन्दिरके भीतर पद्मनाभ भगवान्की विशाल मूर्त्ति सिंहासन पर शयन करती है। यात्री लोग मन्दिरके एक द्वारसे भगवानके मुखमण्डलका, दूसरे द्वारसे नाभिका और तीसरे द्वारसे चरणका दर्शन करते है। पद्मनाभका मन्दिर तिरुवंद्रम्से पहिलेका वना हुआ वहुत

पुराना है। महाराजकी ओरसे मन्दिरकी मरम्मत पर बडा ध्यान रहता है। मन्दिरके खर्चके लिये ७५ हजार रुपये आमदनीकी भूमि है। भगवान्‌के भोगरागकी बडी तयारी रहती हैं। यात्री लोग वहाँका प्रसाद खाते है। तिरुवांकूर राजघरानेके राजकुमारोंके बहुतेरे मजहबी रसम पद्मनाभके पास होते हैं।

महाभारत—वनपर्वके ८३ वें अध्यायमें लिखा है कि तीर्थसेवी पुरुषको पार्वतीके स्थानका दर्शन करके पद्मनाभ नारायणका दर्शन करना चाहिये। उनके दर्शन करनेवाला पुरुष प्रकाशमान होकर विष्णुलोकमें जाता है।

पद्मनाभसे दश बारह मील पूर्व केशव भगवान्‌का विशाल मन्दिर है। पद्मनाभके समान केशव भगवान् भी शयन करते हैं। एक द्वारसे उनके मुखमण्डलका, दूसरे द्वारसे नाभिका और तीसरे द्वारसे चरणका दर्शन होता है।

पद्मनाभसे लगभग ३० मील उत्तर जनार्दन भगवान्‌का मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान्‌की विशाल मूर्ति खडी है।

तिरुवांकूरका राज्य—यह राज्य हिन्दुस्तानके दक्षिणप्रान्तमें मदरास हातेके पश्चिमी किनारेपर कन्याकुमारीसे कोचीन तक फैला है। इसके उत्तर कोचीनका राज्य; पूर्व मदुरा और तिरुनलवेली जिला और दक्षिण तथा पश्चिम हिन्दका समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १७४ मील और सबसे अधिक चौडाई ७५ मील तथा इसका क्षेत्रफल ६७३० वर्गमील है। इस राज्यसे महाराजको लगभग ६६००००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेज सरकारको ८००००० रुपया दिया जाता है। इस राज्यमें ३१ तालुक है। राज्यका प्रधान कसवा तिरुवन्द्रम् है, जिसमे महाराज रहते है। राज्यमें ४ जेलखाने हैं—दो तिरुवन्द्रममें, एक कोलन छावनीमें और एक अल्लेपीमें। महाराजका सैनिक बल—४ तोप, ३० गोलंदाज, ६० सवार और १३६० पैदल है।

तिरुवांकूरका राज्य दक्षिण भारतके सबसे अधिक सुन्दर भागोंमेसे एक है। इसके पूर्व सीमाकी पहाड़ियाँ, जो चन्द स्थानोंमें समुद्रके जलसे लगभग ८००० फीट ऊँची हैं, सुन्दर जंगल तथा पौधोंसे हरी भरी है। पहाडी देश फैला हुआ है। उत्तरकी पहाडियाँ ८००० फीट तक ऊँची हैं। चन्द स्थान अगम हैं। पहाडियोंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध अनामलई पहाडीका भाग है। दक्षिण ओर अगस्त्येश्वरमलई नामक पवित्र चोटी है, जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है। तिरुवांकूरकी पहाडियोंसे एक पहाडी समुद्रके जलसे ८८४० फीट ऊँची है। इतनी ऊँची कोई पहाड़ी हिमालयसे दक्षिण नहीं है।

समुद्रके आस पास बहुत वस्तियाँ, धानके खेत और नारियल तथा ताडके सुन्दर जङ्गल है। समुद्रके पास चाह और काफी रोपे जाते हैं, धान, नारियल, ताड, मिर्च, एरका फल इत्यादि बहुत पैदा होते है और वेशकीमती लकड़ी होती है। समुद्रके किनारेपर नदियोंके फैलनेसे अनेक झील बन गई हैं। नदियोंसे स्थान स्थानमें नहर निकाली गई है। पहाड़ियोंसे बहुतसी छोटी नदियाँ निकली है। कोई प्रसिद्ध खान नहीं है, किन्तु लोहा बहुत होता है। फिटकरी, गन्धक इत्यादि धातुओंकी खानि हैं, परंतु किसीमें काम नहीं होता है। हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू तथा अनेक भांतिकी हरिन आदि बहुत वनजंतु होते हैं। हाथीके दांतोंसे महाराजको बड़ी आमदनी है।

तिरुवांकूर राज्यमें एरिया ५६ नामक पवित्र स्थान है, जहाँ एक बडा मंदिर है और बहुत धर्मशालायें बनी हुई हैं। महाराजकी ओरसे उस मंदिरके खर्चके लिये प्रति वर्ष बहुत रुपया दिया जाता है।

तिरुवांकूर राज्यमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय २५५७८४० और १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २४०११५८ मनुष्य थे, अर्थात् १७५५६१० हिंदू ४९८५४२ कृस्तान, १४६९०९ मुसलमान और ९७ यहूदी। हिंदुओंमे ४६४२३९ नायर, १२८६०० सानान, ९२५७८ कम्भाडन (लोहार), ६६४५४ परयन्, ४५५८३ वेल्लाल (खेतिहर), ३७१३८ ब्राह्मण, २२५२६ बनिया (जाति विशेष), २१८५२ सेट्टी (सौदागर), १४५७८ अम्बटन (नाई), ११११५२ वन्नान (धोबी), बाकीमे, अन्य जातियोंके लोग थे। राजपूत केवल २४४० थे। कोचीनके समान तिरुवांकूर राज्यमें भी बहुत कृस्तान है

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय तिरुवांकूर राज्यके कसबे तिरुवन्द्रम्मे २७८८७, अल्लेपीमे २२७६८, कोलनमें १५३७५ और नागर कोयलमे ११११८७ मनुष्य थे,। इनके अलावे कोटायल इत्यादि कई अन्य कसबे है। इनमे कोलनमें महाराजकी फौज रहती है, अल्लेपी, कोलन, मनारगुडी इत्यादि बन्दरगाह है।

मनुष्य-सख्याके ५ हिस्सोमेसे लगभग ४ हिस्से लोग मलेयालम् और १ हिस्सा लोग तामिलभाषा बोलते है। मलेवारके लोगोंकी चाल विचित्र है। नम्बूरी ब्राह्मणोंमे केवल बड़ा लडका विवाह करता है और अपने पिताके सम्पूर्ण धन सम्पत्ति और मिलकियतका वारिस होता है, अन्य पुत्रोंको अपने पिताकी किसी चीजपर दावा नहीं है। नम्बूरी ब्राह्मण लोग अपनी पुत्रियोंका विवाह वडी अवस्था होजानेपर भी जल्दी नहीं करते। उनके मतमें मरनेके समय तक पुत्रियोंको कुमारी रहना चाहिये। कितनी पुत्री मरनेके समय तक विन व्याही हुई रह जाती हैं। यह चाल पूर्व समयसे उन लोगोंमे चली आती है। महाभारत-वनपर्वके ८८ वे अध्यायमे लिखा है कि पाण्ड्य देशमें वहुतसी पवित्र स्त्रियाँ ऐसी है जो अपना व्याहही नहीं करती, उसी देशमे ताम्रपर्णी नदी वहती है।

नायर लोगोंकी लडकियाँ लडकपनमें व्याही जाती है, किन्तु युवा होनेपर किसी ब्राह्मण अथवा अपनी जातिके पुरुषको वे अपना पति बनाकर उसके साथ रह सकती हैं। इसमें उसका विवाहित पति कुछ दावा नही कर सकता है। युवा युवतीको एक सारी और कुछ गहने तथा खिलौने दे देवे तो दोनोंमे व्याह सिद्ध होजाता है। युवा युवतीको अथवा युवती युवाको अपनी इच्छानुसार छोड सकती है। एक युवतीको एकही समयमें कई पति होना नाजायज नहीं है, किन्तु यह रीति अव बहुत घट गई है। मलेवारकी रीतिके अनुसार नायरोंमें वहिनके वशवाले धन जायदादके वारिस होते है। जिसके वहिन अथवा वहिनकी सतान नहीं है, वह अपनी खानदानी वारिस कायम रखनेके लिये किसी लडकीको गोद लेकर उसको वहिन वनाता है। तिरुवांकूरके महाराज यद्यपि अपनेको क्षत्रिय मानते है, किन्तु तिरुवांकूरकी राजगद्दीके वारिस होनेकी यही रीति चली आती है। राजाकी वहिनही रानी कहलाती है और वहिनका पुत्र युवराज होता है। वहिनका पुत्र नहीं हो तो वह किसी लडकेको गोद लेती है, वही राजसिंहासनका अधिकारी होता है। नायरका लडका अपने मामाका वारिस होता है। और उसके मरनेपर वही उसका श्राद्ध कर्म करता है।

नायर शूद्र हैं और खास करके खेती तथा सरकारी नोकरी करते है। नम्बूरी ब्राह्मण और नायर बड़े पवित्र रहते हैं, वे दिनमें कई वार स्नान करते हैं। ब्राह्मण अपने मुर्दोंको जलाते हैं; किन्तु नायर लोगोंमें कुछ लोग अपने मुर्दोंको जलाते है और कुछ लोग अपने वंश परंपराके अनुसार भूमिमें गाड देते हैं। सब लोग अपने वागके किसी कोनेमे मुर्दोंको जलाते है, अथवा गाड देते हैं। सब हिन्दू लोग अपनी शिखाको पीछे लटकाते है, किन्तु वहाँके लोग अपनी शिखाको आगेकी ओर अपने ललाटपर लटकाये रहते है। मलेवार देशमें ब्राह्मणोंकी प्रधानता वहुत है। मलेवारमे ब्राह्मण और शूद्र वहुत है।

तिरुवांकूर राज्यकी प्रधान फसिल धान और नारियल, उसके वाद मिर्च, अंगूर, काफी, इलायची इत्यादि हैं। सूखा और हरा नारियल, नारियलका तेल, अदरक, मिर्च, खजूर, लकड़ी, काफी, इलायची, मधुमक्खियोंका मोम इत्यादि वस्तु दूसरे देशोंमे भेजी जाती हैं और तम्बाकू, चावल, कपडा, रूई, तांवा और अङ्गरेजी चीजें दूसरे देशोंसे वहाँ आती हैं।

तिरुवांकूर राज्यमें शिक्षाकी उन्नती है। तिरुवंद्रम् हाई स्कूल और कालिजमें लगभग १७०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। वहाँ लडकियोंका भी एक स्कूल है। इनके अलावे राज्यमें २५ जिला स्कूल, २४४ सरकारी वर्नाकुलर स्कूल और ४४० एडेड स्कूल है। ऊपर लिखे हुए स्कूलोंमें लगभग ३६००० विद्यार्थी पढ़ते हैं; इनके अतिरिक्त लण्डनमिशन और रोमन कैथोलिक मिशनकी ओरसे वहुत स्कूल हैं, जिनमें लगभग १६००० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। प्रधानोंके लड़कोंकी शिक्षाके लिये एक खास स्कूल है। राज्यमे क्रुस्तानोके वहुत गिरजे हैं।

तिरुवांकूरके राजा वडे धर्मात्मा होते हैं। महाराजकी ओरसे तिरुवांकूरके राज्यमें ४५ सदावर्त लगे है, जिनमे देश देशसे आये हुए ब्राह्मण साधु भोजन पाते है। वहुतेरे लोग तिरुवांकूर राज्यको रामराज्य और वहाँके राजाओंको रामराजा कहते है। प्रतिवर्ष परमार्थ कामोंमे महाराजका आठ दस लाख रुपया खर्च होता है। तिरुवांकूरके राजा सोनेकी गाय अथवा सोनेके कमलमें होकर निकलनेसे द्विजाति समझे जाते है। और उनको भोजन करते हुए ब्राह्मणोंको देखनेका अधिकार होता है। हिरण्यगर्भ दानकी विधिमें महाराजके तुल्य वजनकी सुवर्णकी गाय बनाई जाती है। उसके गर्भसे वह निकलते है। पीछे उस गौके सोनेको ब्राह्मण लोग वांट लेते है। हिरण्यगर्भ दानका विधान भविष्यपुराण-उत्तरार्द्धके १५५ वें अध्यायमें और महाभारतमें लिखा हुआ है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि जमदग्निके पुत्र परशुरामजीने २१ वार क्षत्रियोंका विनाश करनेके पश्चात् विचार किया कि मैंने वडा पाप किया, इसके प्रायश्चित्तके लिये भूमिदान करना चाहिये। उस समय उन्होंने वरुणजीसे भूमि मांगी। वरुणजीने समुद्रको आज्ञा दी कि तुम हट जाओ। समुद्र कुछ दूर हट गया। परशुरामजी वही समुद्रकी छोड़ी हुई भूमि लेकर नंबूरी ब्राह्मणोको दान दे निपाप हुए। वही भूमि मालावार देश है। परशुरामका सन् खास मालावार और तिरुवांकूरके राज्यमें कन्याकुमारी अन्तरीप तक जारी है। नम्बूरी ब्राह्मणोंने दान पाई हुई भूमिपर देश वसाया। उनकी हुकूमत वहुत कालके पश्चात् सन् ईस्वीके आरम्भसे ६८ वर्ष पहिले खतम हुई। उसके पीछे ब्राह्मण लोग प्रति १२ वर्षपर हुकूमत करनेके लिये एक क्षत्रियको राजा चुनते थे; अर्थात् १२ वर्ष तक एक

क्षत्री हुकूमत करता था। उन राजाओमे सबसे पिछला राजा चेरा राजाका दिपोटी 'चेरमान पेरुमाल' सबसे अधिक प्रतापी हुआ। उसने अन्तमे अपने राज्यको अपने अधीनक अफसरोको बॉट दिया। उनमेसे सबसे बड़े हिस्सा पानेवालेको दक्षिणका भाग मिला, जिसकी राजधानी तिरुवांगोंड, जो अब छोटा गॉव है,बना था। चेरमान पेरुमालका वृत्तान्त मालावार जिलेमें देखिये।

तिरुवांकूर राज्यके २३ राजाओने ३०० वर्पसे अधिक राज्य किया। वे लोग अपने पड़ोसके राजाओसे लगातार लड़ते रहे। २४ वॉ राजा ( सन् १६८९–१७१७) 'एरुमा वर्मा पेरुमाल' था। उसके और उसके२उत्तराधिकारियोंके राज्यके समय घरऊ लडाई होती रही। वांचीमार्तण्ड पेरुमाल' ने, जिसका राज्य सन् १७२९से सन्१७४६तक था, सन् १७४२ में एल्लाएदत्तुन्दको और सन् १७४५ में कायंकुलमूको परास्त किया। उसके बाद 'वांचीवाला पेरुमाल' का राज्य हुआ, जिसने अपने राज्यको बहुत बढ़ाया। जब मैसूरके टीपूसुलताननें मलेवारपर आक्रमण किया, तब तिरुवांकूरके राजाने उससे डरकर सन् १७८८ मे अङ्गरेजोंके साथ सन्धि की। सन् १७८९ में टीपूने तिरुवांकूरपर हमला किया, किन्तु परास्त होकर चला गया। उसके २००० सैनिक मारे गये। दूसरे साल टीपू फिर आक्रमण करके विमुख लौट गया। सन् १७९५ मे तिरुवांकूरके राजा बलराम बर्माने ईष्ट इण्डियन कम्पनीके साथ एक दूसरी सन्धि की, जिसके अनुसार वह विना कम्पनीकी रायसे किसी यूरोपियनके साथ नहीं सम्बन्ध रखनेका और आवश्यकता पडनेपर अपनी सेनासे कम्पनीकी सहायता करनेके पावन्द हुए। थोडेही दिनोंके वाद राजा बलराम वर्मा मर गये। उनके भाजे जिनका नाम भी वलराम वर्मा था, उत्तराधिकारी हुए। जिसके साथ सन् १८०५ में अङ्गरेजोंकी तीसरी संधि हुई, जिससे कई शर्त वदले गये। सन् १८११ में राजा वलराम वर्माकी मृत्यु होनेपर लक्ष्मी रानी उत्तराधिकारी हुई, जिसने अङ्गरेजी रेजीडेण्ट कर्नल मनरोको राज्यका प्रवन्ध सौंप दिया। सन् १८१४ मे लक्ष्मी रानीके मरनेपर उसकी वहिन पार्वती रानीने उसके शिशुपुत्र रामवर्माके वालकपनमें राजकार्यका निर्वाह किया लक्ष्मी रानीके पुत्र ७ वर्ष राज्य करनेके पश्चात् मरगये। सन् १८४६ मे उनके छोटे भाई महाराज मार्तण्ड वर्मा उत्तराधिकारी वने। मार्तण्ड वर्माके पश्चात् लक्ष्मीरानीकी पुत्री लड़के महाराज वाची वलराम वर्मा सन् १८६० में राजगद्दीपर बैठे। सन् १८८० मे महाराज वाची बलराम वर्माकी मृत्यु होनेपर उनके भाई महाराज सर बलराम वर्मा, जी० सी० एस० आई०, जिनका जन्म सन् १८३७ में हुआ था, तिरुवांकूरके राज सिंहासन पर बैठे। सन् १८६२ में भारतवर्षके गवर्नर जनरलने तिरुवांकूरके महाराजको एक सनद दी, जिसके अनुसार उनको अपने वंश कायम रखनेके लिये अपनी वहिनकी पुत्रीको गोद लेनेका अधिकार होगया।

## कोचीन।

तिरुवन्द्रम् कसबेसे १०० मीलसे अधिक पश्चिमोत्तर (९ अंश, ५८ कला, ७ विकला उत्तर अक्षांश, और ७६ अंश, १५ कला, पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके वन्दरगाहके पास मदरास हातेके मालावार जिलेमे कोचीन तालुकका स्थान कोचीन कसवा है। कोचीनके वन्दरगाहसे नसाटिक आगबोट सिलोनके कोलम्बोको जाते हैं। किनारेसे १½ मील दूर जहाजके

बन्दरका स्थान है । रेलवेके स्टेशन तुतिकुडीसे अथवा कलीकोटसे समुद्रके आगबोट द्वारा कोचीन जाना चाहिये ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीन कसबेमें १७६०१ मनुष्य थे, अर्थात् ९७६८ क्रस्तान, ४७१६ हिन्दू, ३०९० मुसलमान और २७ यहूदी ।

समुद्रके पास उत्तरसे दक्षिण तक १२ मील लम्बी और १ मीलसे १½ मील तक चौडी भूमि समुद्रके खाल और धाराकी खाडियोंसे बनी है । उसके उत्तरके किनारेके पास कोचीन कसबा है । उसके उत्तर एक टापू है । पहिले कोचीन कसबा कोचीनके राज्यकी राजधानी था । किन्तु अब अङ्गरेजी जिले मालाबारमें है । इसके निवासियोंमें आधेसे अधिक क्रस्तान हैं ।

कोचीन कसबेमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, अनेक आफिस, बहुतेरे स्कूल तथा गिरजे और हालेंड वालोंकी बहुतसी पुरानी इमारतें है । अङ्गरेजी कोचीन और देशी राज्यके कोचीनकी सीमाके भीतर कष्टमहौस है । पुराने किलेकी अब कोई निशानी नहीं है । उसकी जगह पर लाइटहाउस बना है । उसके पास यूरोपियन लोगोंके बङ्गले हैं । बन्दरगाहमें जहाज बनाये जाते हैं ।

कोचीन कसबेसे १½ मील दक्षिण कोचीन राज्यका कोचीन कसबा है,जिसका वृत्तान्त नीचे लिखा है ।

इतिहास—कहावतसे विदित होता है कि सन् ५२ ईस्वीमें सेण्टथामसने कोचीनमें जाकर उन क्रस्तानोंको बसाया, जो नसरानी मापिला कहलाते हैं । ऐसा भी प्रसिद्ध है कि यहूदी लोग सन् ईस्वीके पहिले वर्षमें उस जगह बसे जिस जगहपर वर्तमान समयमें उनकी बस्ती है । पीछे उन्होंने क्रम क्रम अन्य स्थानोंमें अपने मुकाम कायम किये । तांबेके पत्रोंके लेखोंसे जान पडता है कि ८ वीं सदीमें यहूदी और सिरियन कोचीनमें बसे थे ।

सन्१५००में पोर्चुगलको पोर्चुगीज लोग कलीकोटपर गोले चलानेके पश्चात् कोचीनमे उतरे और जहाजपर मिर्च लादकर पोर्चुगलको फिर गये । सन् १५०२ में पोर्चुगलके वास्कोडी-गामा अपनी दूसरी यात्रामें कोचीनमें आया । उसने वहाँ एक कोठी नियत की । सन् १५०३ में अलबुकर्क कोचीनमे पहुँचा, जिसने वहाँके किलेको बनवाया । वह हिन्दुस्तानमे पहिले पहिल यूरोपियन किला बना । कलीकोटके राजा जमोरिनने कोचीनके देशपर आक्रमण किया किन्तु पोर्चुगल वालोंने उनको खदेरा । सन् १५२५ में वह किला बढ़ाया गया सन् १५७७ में पहिले पहिल कोचीनमें किताब छापी गई, उससे पहिले भारतवर्षमें कोई किताब नहीं छपी थी । सन् १६१६ के कई वर्ष बाद पोर्चुगीजोंकी रायसे कोचीनमें अङ्गरेजी कोठी बनी । सन् १६६३ मे हालेण्ड वालोंने पोर्चुगीजोंसे कोचीन कसबा और किला छीन लिया । अङ्गरेज लोग दूसरी जगह चले गये । हालेण्ड वालोंने कोचीनमें यूरोपियन तरीकेपर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाईं । उन्होंने वहाँ सौदागरीकी बड़ी उन्नति की । सन् १७७८ में उन्होने फिरसे किलेको बनवाया और किलेके बगलोंमें खाई बनवाई । सन् १७९५ मे अङ्गरेजी अफसर मेजर पेट्रीने आक्रमण करके हालेण्ड वालोंसे कोचीन लेलिया । सन् १८०६ में अङ्गरेजोंने कैथेड्रलको तोपसे उडाकर किले और उत्तम इमारतोंका विनाश कर दिया । सन् १८१४ की सन्धिके अनुसार अङ्गरेजोंको कोचीन मिल गया, तबसे वह इन्हींके अधिकारमें है ।

# राजाका कोचीन ।

कोचीन कसवेसे १½ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर ( ९ अंश, ५८ कला, ७ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १७ कला, पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके कोचीन राज्यके कोचीन सब डिवीजनमें कोचीन एक कसबा है, जिसमें ४ गाँव शामिल है । वहाँसे कोचीन राज्यके कसबे तिरुचर तक नहर बनी हुई है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मतनचेररमें १७२५४ मनुष्य थे, अर्थात् ८४६१ हिन्दू, ४८२१ कृस्तान, ३५०४ मुसलमान और ४६८ यहूदी ।

कोचीन कसवेसे २ मील पूर्व ( ९ अंश, ५८ कला, ५'५ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १९ कला, २१ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके कोचीन राज्यकी राजधानी एरनाकोलम् एक कसवा है ।

कसवेमें कोचीन राज्यके प्रधान अफसर रहते है । वहाँ कई एक सड़के पक्की वनी है, महाराजका एक महल, एक हाईस्कूल, कई एक आफिस, कई कचहरियाँ, २ गिरजे और कई अन्य सुन्दर इमारते है । उसके पासके गाँवमे एक सुन्दर बाजार वना है । वहाँ यहूदी और कुङ्कानी लोग वड़ी सौदागरी करते है ।

वर्तमान कोचीन नरेश "राजा सर वीर केरल वर्मा के० सी० आई० ई०" ४४ वर्ष अवस्थाके क्षत्रिय हैं । महाराज न्यायशास्त्रके पूरे पण्डित हे और उनको शास्त्रार्थकी वड़ी शौक है ।

कोचीनका राज्य–कोचीनको मालावारके लोग कोची कहते हैं । इसके दक्षिण तिरुवांकूरका राज्य, पश्चिम मालावारका समुद्र और उत्तर पूर्वोत्तर और पूर्व मालावार जिला है । यह राज्य कोचीन, कननूर, तिरुचुर, कांगनूर इत्यादि ७ भागोंमे विभक्त है । इस राज्यमें १३३ मील अच्छी सडके वनी है । इस देशमे ( कम गहरी ) झीले वहुत है, जिसमें पश्चिमी घाट पहाडियोंसे वहुत धारायें गिरती हैं । राज्यमें अनेक छोटी नदियाँ है । दलदल भूमिके पास कई टापू हैं । जङ्गलोंमें वेश कीमती लकडी होती है । प्रति वर्ष महाराजको जङ्गलोंसे पचासों हजार रुपयेकी आमदनी होती है । एक समय खानोंसे लोहा और सोना निकाला जाता था, किन्तु अब खानोंमें काम नहीं होता है । पहाडियोंमे अनेक भाँतिकी दवा, रङ्ग तथा गोंद और वहुत हिस्सोंमे इलायची होती है । जंगलोंमे वहुत हाथी, भालू, सांभर, वाघ, तेंदुए और भाँति भाँतिके हरिन रहते हैं। राज्यसे १६१८००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेसे २०००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेंटको 'राज कर' दिया जाता है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीन राज्यके १३६१ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६००२७८ मनुष्य थे, अर्थात् ४२९३२४ हिन्दू १३६३६१ कृस्तान, ३३३४४ मुसलमान और १२४९ यहूदी । कोचीनके राज्यमे मलेयालम् भाषा प्रचलित है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीनके राज्यमे ७१५८७० मनुष्य और कोचीन राज्यके कसबे मतनचेररमें १७२५४ और तिरुचरमें १२०४५ मनुष्य थे । कोचीन कसबेके पास आरनाकोलम राजधानी है । राज्यके उत्तर भागमे तिरुचुर एक कसबा है, जिसमे सन् १८९१ में ६८८४ हिन्दू, ५२०३ कृस्तान और ८५८ मुसलमान थे । तिरुचुरमें

कोचीनके राजाका एक छोटा महल, स्कूल, एक सुन्दर मन्दिर, राजाकी कचहरी और जेल-खाना है। पालघाट और कोचीनके साथ बड़ी सौदागरी होती है। द्राविडियन लोग कोचीनके राज्यको कोचीका राज्य और कोचीनके राजाको कोचीका राजा कहते हैं।

इतिहास—९ वीं सदीमें चेरा वंशके राजाका डिपुटी प्रसिद्ध चेरमान् पेरुमाल चेरा अर्थात् केरलके सम्पूर्ण देशका, जिसमें तिरुवांकूर और कोचीनका राज्य तथा मालावार जिला है, सूबेदार था। पीछे वह स्वतन्त्र हुकूमत करने वाला बनगया। अन्तमे उसने अपने राज्यको कई आदमियोको बाँट दिया। उसीमेंसे एक कोचीन राज्य है। कोचीनके राजा अपनेको चेरमान् पेरुमालका वंशधर कहते हैं।

सन् १५०३ में पोर्चुगल वालोने कोचीनमें एक किला बनाया। सन् १६६३ में हालेंड वालोने पोर्चुगीजोसे कोचीन कसबेको छीन लिया। उसके लगभग १०० वर्ष पीछे कली-कोटके जमोरिन वंशके राजाने कोचीन राज्यपर आक्रमण किया। तिरुवांकूरके राजाने उसको निकाल बाहर किया। इस कामकी कृतज्ञतामें कोचीनके राजाने तिरुवांकूरके राजाको अपने राज्यका एक भाग दे दिया।

सन् १७७६ में मैसूरके हैदरअलीने और सन् १७९० मे हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलता-नने उक्त देशको लूटा। देश नाम मात्रके लिये टीपूके अधीन बना। पहिले कोचीन राज्यकी राजधानी कोचीन कसबा था, इसलिये उस राज्यका कोचीन नाम पडा। सन् १७९५ में जब अङ्गरेजोने हालेंड वालोसे कोचीन कसबेको छीन लिया, तबसे वह मालाबार जिलेके भीतर अङ्गरेजी अधिकारमें है। सन् १७९८ में कोचीनके राजाने एक सधिपत्रमे अङ्गरेजी अधीनता स्वीकार की और वार्षिक १००००० रुपया 'राजकर' देनेको कबूल किया। सन् १७९९ मे अङ्गरेजोने टीपूको परास्त करके दूसरे देशोके साथ कोचीन राज्यको लेलिया। तबसे कोचीनके राजा अङ्गरेजी सरकारकी रक्षामे हुए।

सन् १८०९ मे अङ्गरेजी रेजीडेण्टके मारनेके लिये बगावत हुई। उस बगावतके दबाये जानेके पीछे कोचीन राज्यका 'राजकर' २७०००० रुपया नियत किया गया, किन्तु अङ्ग-रेजी सरकारने सन् १८१९ मे उसको घटाकर २४०००० रुपया और उसके पश्चात् केवल २००००० रुपया कर दिया।

## सोलहवां अध्याय।



### ( मदरास हातेमें ) करूर, ईरोड, कोयमबुतूर, उत्त-कमन्द, पालघाट, कलीकोट तलीचेरी, माही, कननूर, ( कुर्गदेशमें ) मरकाड़ ( मदरास हातेमें ) मङ्गलूर और सेलम।

### करूर।

तिरुनलवेली अर्थात् तिन्नेवेलीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील पूर्वोत्तर मनियार्ची जंक्शन और मनियार्चीसे उत्तर कुछ पूर्व ८१ मील मदुरा और १७७ मील तिरुचनापल्लीका रेलवे जंक्शन है। तिरुचनापल्लीसे ४८ मील पश्चिम कुछ उत्तर करूरका रेलवे स्टेशन है। मद-

रास हातेके कोयम्बुतूर जिलेमें अमरावती नदीके बायें किनारेपर ( १० अंश, ५७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ७ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तरमें ) तालुकका सदर स्थान करूर एक कसबा है, जिसके पास अमरावती नदी कावेरीमें मिल गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय करूरमें १०७५० मनुष्य थे, अर्थात् ९६९३ हिन्दू, ७३७ मुसलमान और ३२० क्रस्तान।

करूरमें एक उजडा पुजडा किला, जिसमें एक पुराना जर्जर मन्दिर है और सरकारी कचहरी है। बाजारमें बहुत माल बिकता है। कई एक सडकें आकर करूरमें मिल गई हैं।

इतिहास—पूर्वकालमें करूर चेरा राज्यकी राजधानी था। चेरा, चोला और पांड्य वंशके राजाओंके परस्पर झगडेके समय कई बार इसके मालिक बदले थे। नायकोंकी बढ़तीके समय यह मदुराके राज्यके अधीन था। १७ वीं सदीके अन्तमें यह मैसूर राज्यमें मिला लिया गया। कई बार अङ्गरेजोंने इसपर अधिकार किया था किन्तु सन् १७९९ में टीपूसुलतानके मारे जानेपर यह सर्नदाके लिये अङ्गरेजोंके अधीन होगया। सन् १८०१ में करूरके किलेसे फौज उठा ली गई।

## ईरोड।

करूरसे ४० मील ( तिरुचनापल्ली जक्शनसे ८८ मील ) पश्चिमोत्तर ईरोडका रेलवे जक्शन है। मदरास हातेके कोयम्बुतूर जिलेमें कावेरीनदीके पास ( ११ अंश, २० कला, २९ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४६ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें ) तालुकका सदर स्थान ईरोड कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ईरोडमें १२३३० मनुष्य थे, अर्थात् १०४८१ हिन्दू १३९३ मुसलमान ४५२ क्रस्तान और २ जैन।

ईरोडमें पुलिस स्टेशन स्कूल, मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियाँ हैं। कसबेसे १ मीलसे अधिक पूर्व कावेरीनदीपर १५३५ फीट लम्बा जिसमें २२ मेहराबियाँ हैं, पुल बना है। इसके बनानेमें ४०८५५० रुपया खर्च पडा था। कसबा सुन्दर है। वहाँसे रुई, चावल, सोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती हैं। ईरोडमें करूर और सत्यमंगलको सड़क गई है।

ईरोड जक्शनसे रेलवे लाइन २ ओर गई हैं।

(१) ईरोडसे पश्चिम कुछ दक्षिण मदरास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है —

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५८ पोडैयनूर जक्शन।

९२ पालघाट।

१५० कलीकोट।

पोडैयनूर जक्शनसे उत्तर ४ मील कोयम्बुतूर और २६ मील मेटुपालयम्।

(२) ईरोड जक्शनसे पूर्वोत्तर मदरास रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३७ सेलम्।

११२ जालारपेट जक्शन।

१३१ अम्बूर।

१४८ कुडिआतम्।

१६३ कटपड़ी जंक्शन।

१७८ आरकाट।

२०१ आरकोनम् जंक्शन।

२१८ तिरुवल्लूर।
२४४ मदरास शहर।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ४४ मील कोलार रोड, ८४ मील बङ्गलोर छावनी और ८७ मील बङ्गलोर शहर है।

कटपट्टी जंक्शनसे उत्तर सौथ इण्डियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जंक्शन, ५८ मील चन्द्रगिरि, ६५ मील तिरुपट्टी और ७१ मील रेणुगुण्टा जंक्शन है। ( रेणुगुण्टामें देखिये )

(३) ईरोड जंक्शनसे पूर्व सौथ इण्डियन रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल ३ पाई लगता है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३० ऊँजलूर।
४० कन्नूर।
८५ तिरुचनापल्ली फोर्ट।
८८ तिरुचथापल्ली जंक्शन।

# कोयम्बुतूर।

ईरोड़ जंक्शनसे ५८ मील पश्चिम-दक्षिण पौंडैयनूर जक्शन और पौंडैयनूरसे ४ मील उत्तर, नीलगिरिके पास, उत्तकमन्दसे लगभग ५० मील दूर कोयम्बुतूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेसे ( १० अंश, ५९ कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५९ कला, ४६ विकला पूर्व देशान्तरमे ) समुद्रके जलसे १४३७ फीट ऊपर एक छोटी नदीके बायें किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा कोयम्बुतूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर कसबेमें ४६३८३ मनुष्य थे; अर्थात् २२२३८ पुरुष और २४१४५ स्त्रियाँ। इनमे ४०१०६ हिन्दू, ३४१४ मुसलमान, २८२१ क्रस्तान और ४२ जैन थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ८४ वॉ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमे ११ वॉ शहर है।

कोयम्बुतूरमें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, स्कूल, रेलवे स्टेशनसे १ मील पश्चिमोत्तर बडा जेलखाना और ½ मील पूर्वोत्तर गिरजा है। कसबेकी सडक चौडी है। कसबेके निकटकी पहाडीसे मकानके कामके लिये पत्थर निकाले जाते हैं।

मेल चिदम्बरम्का मन्दिर—कोयम्बुतूर कसबेसे ३ मील दूर पेरूर गांवमे मेलाचिदम्बरम्का सुन्दर मन्दिर है, शिवको पेरूर सभापति अर्थात् पेरूरका शिव भी कहते है। दक्षिण आरकाट जिलेके चिदम्बरम्को किल चिदम्बरम् और पेरूरके चिदम्बरम्को मेलचिदम्बरम् लोग कहते हैं। मन्दिरके आगे ३५ फीट ऊँचा पत्थरका ध्वजा स्तम्भ और मन्दिरके पास पाटेश्वरका छोटा मन्दिर है। वे दोनो मन्दिर मदुराके तिरुमलई नायकके राज्यके समय बने थे। वहाँ ५५ फीट ऊंचा पञ्चमञ्जिला गोपुर और ७२ स्तम्भोका एक मण्डपम् है। मन्दिरके स्तम्भोमे ताण्डव नृत्य करते हुए शिव, गजासुरको मारते हुए शिव, शत्रुओंको मारते हुए वीरभद्रकी प्रतिमा और सिहोंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई है।

त्रिमूर्त्ति कोइल—कोयम्बुतूर जिलेमे त्रिमूर्त्तिकोइल नामक गांवमें एक पुराना मन्दिर है। वहाँ पहाड़ीमे पत्थर काटकर मन्दिर बना हुआ है और हजार स्तम्भोंका एक पुराना जर्जर

मण्डपम् है। वहाँ पासकी पहाडीसे गिरा हुआ एक पत्थरका बडा टुकडा, जिसपर बहुतसे चरणचिह्न है, पडा है, जिसको लोग पवित्र समझते है। उस स्थानपर प्रति रविवारको यात्री लोग दर्शनको जाते हैं और प्रतिवर्ष एक बडा मेला होता है।

कोयम्बुतूर जिला—इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर मैसूरका राज्य, पूर्व सेलम और तिरुचनापल्ली जिला; दक्षिण मदुरा जिला और तिरुबांकूरका राज्य और पश्चिम नीलगिरि और मालावार जिला तथा कोचीनका राज्य है। इस जिलेमें १० तालुक है। जिलेकी भूमि ऊँची नीची है। पश्चिमके भागमें नीलगिरि और दक्षिण अनामलई पहाडीका सिलसिला है। लगभग ३००० वर्गमील भूमिमे जङ्गल है, जिनमें वेश कीमती लकडी होती है और बहुतसे बनैले हाथी रहते हैं। जङ्गलो और पहाडियोंमें बहुतसे हाथी, भालू, सूअर, बाघ, तेंदुए, भेडिया और भांति भांतिकी हरिन रहती है। जिलेमें सांप बहुत है। प्रतिवर्ष लगभग १०० आदमी सांपके काटनेसे मर जाते है। हिंसक जानवरोंके मारनेके लिये प्रतिवर्ष लगभग २००० रुपया सरकार खर्च करती है। जिलेकी प्रधान नदी कावेरी उत्तरी सीमापर बहती है, जिसमें अमरावती, भवानी और नोइल नदीकी धारा गिरती है। कावेरीकी धारा बडी तेज है, क्योंकि १२० मीलमें उसकी धारा लगभग १००० फीट नीचे होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर जिलेके ७८४२ वर्गमील क्षेत्रफलमे १६५७६९० मनुष्य थे, अर्थात् १६०६३४३ हिन्दू, ३७८५५ मुसलमान, १३३२६ कृस्तान, ६८ जैन, ६३ बौद्ध, ४ पारसी और ३१ अन्य। हिन्दुओंमे ६९०४०२ वेल्लाल (खेतिहर), २१६२७० परियन्, १०७४८० वनिया (जाति विशेष), ८१६४१ कैक्कलर (बिनाईके काम करने वाले), ६६०६८ सतानी (दोगला), ५५५१७ सानान (मदक), ५५१३६ चेटी (सौदागर), ४३४५८ कम्भाड्न (शिल्पकार), ४२४३२ इडैयन (भेड़िहर) २९७०२ ब्राह्मण, २५००४ सेवड्वन (मछुहा), २३३१७ वन्नान (धोबी), २००६२ अवटन (नाई), १६३९४ कुसवन (कुम्भार), ३०३९ छत्री, १०६२ कणक्कन (लिखाईके काम करने वाले) और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर जिलेके कसबे कोयम्बुतूरमे ४६३८३, ईरोडमें १२३३० और करूरमे १०५५० मनुष्य थे। इनके अलावे कई छोटे कसबे है। कोयम्बुतूर जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—कोयम्बुतूर जिला चेरा राज्यके अधिकारमे था। ९ वीं सदीमें चोला वंशके राजाने चेराके देशको जीता। लगभग २०० वर्षके बाद पाण्ड्य राज्यके साथ मिलकर दोनो एक राज्य होगया। १६ वीं सदीमें कोयम्बतूर जिलेका पूर्वी भाग और कोयम्बुतूर कसबा नाम मात्रके लिये मदुराके नायकके अधिकारमें हुआ। १७ वीं सदीसे सन १७७३ तक मैसूर वालोंने इस जिलेपर बहुत बार आक्रमण किया। सन् १७७३ में यह जिला मैसूर राज्यमें मिला लिया गया। कई बार कोयम्बतूर कसबेके मालिक बदले। कई बार अङ्गरेजोंने इसको लिया, किन्तु उनको छोड़ देना पडा, परन्तु सन् १७९९ में टीपू सुलतानके मारेजाने पर यह जिला अङ्गरेजी अधिकारमें होगया।

# उत्तकमन्द ।

कोयम्बुतूरके रेलवे स्टेशनसे २२ मील ( पोडैयनूर जंक्शनसे २६ मील ) उत्तर मद्रास रेलवेकी शाखाका अंतिम स्टेशन मेडुपालयम् है। मेडुपालयम्से ९ मीलकी अच्छी सडक भवानी नदीको लाघकर कोलारको गई है, जहां पहाडीकी चढाई आरम्भ होती है। कोलारसे पुरानी सडक द्वारा ९ मील और नई सडकसे १६ मील दूर कुनूर गॉव है, जहां यूरोपियन लोग हवा खानेके लिये रहते हैं। पुरानी सडक चढ़ाईकी है, किन्तु नई सडकसे घोडा गाडी जा सकती है। मेडुपालयम्से कुनूर वेलिंटन तथा उत्तकमन्दको टागे जाते है। अब कुनूर तक तङ्ग लाइनकी रेलवे बनती है। कुनूरके वेलिंटन बारकसे ९ मील दूर उत्तकमन्द है। कुनूर गॉवसे उत्तकमन्द तक १२ मील पक्की सड़क बनी है।

मद्रास हातेमे ( ११ अंश, २४ कला, उत्तर कक्षांश और ७६ अंश, ४४ कला, पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रके जलसे ७२२८ फीट ऊपर ऊंची पहाडियोंसे घेरी हुई घाटीमें नीलगिरि पहाडी जिलेका सदर स्थान उत्तकमन्द नामक स्वास्थ्यकर स्थान है, जिसको उस देशके लोग उदकमण्डलम् कहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय उत्तकमन्दमे १५०५३ मनुष्य थे, अर्थात ७९१२ पुरुष और ७१४१ स्त्रियाँ। इनमे ९०७१ हिन्दू, ४१६४ क्रस्तान, १७९० मुसलमान, २१ पारसी, ३ बौद्ध और ४ अन्य थे।

वास्तवमे उत्तकमन्द कसवा नही है; वहॉकी पहाडियोंपर मकान तथा अङ्गरेजोंकी कोठियॉ इत्यादि इमारते छितराई हुई है। मद्रास हातेके यूरोपियन लोगोंके गर्मीकी ऋतुओंमें रहनेके लिये उत्तकमन्द प्रधान स्थान है। गर्मीकी ऋतुओंमें मद्रासके गवर्नर वहॉ रहते है। वहॉ जिलेका कलक्टर, डिपोटी कलक्टर, सबजज इत्यादि हाकिम सर्वदा रहते है। बहुत यूरोपियन लोग वहॉ जाकर मार्चसे जून तक निवास करते है। नवम्बरसे फरवरी तक केवल वहॉंके निवासी रह जाते है। वहॉ औसतमें सालाना वर्षा ४५ इंच होती है।

पहाड़ियोंके बीचमे समुद्रके जलसे ७२२० फीट ऊपर पूर्वसे पश्चिम तक १$\frac{1}{2}$ मील लम्बी झील है, जो बांध बांधकर बनाई गई थी। पूर्वी और पश्चिमी घाटसे बने हुए कोनमें नीलगिरि पहाडी है। कसबेमे झीलके चारोओर गाडी दौड़नेके लिये सुन्दर सड़क बनी हुई है। पासकी पहाडीपर यूरोपियन लोगोकी कोठियॉ है।

झीलके पूर्व बगलपर बाजार, पश्चिमोत्तरके बगलपर जेलखाना और दक्षिणके बगलपर सेंटथामसका चर्च है। प्रधान दूकानोंके पास पोष्टआफिस, पबलिक लाइब्रेरी और प्रधान चर्च है। पहाडीके पादमूलके पास उसके बगलमें सीढी नामा चबूतरोंपर खूबसूरतीके साथ नबाती बाग लगा हुआ है, जो चंदेके खर्चसे बना था। उसमे उद्यान विद्याकी उन्नतिके लिये भांति भांतिके विदेशी वृक्ष लगाये गये हैं।

पोष्टआफिससे ५ मील दूर यतीमखाना है, जिसका टावर ७० फीट ऊँचा है। उसमें ३०० लडकोंके भोजन करनेके लायक एक बडा कमरा बना है। वहॉ यतीम अर्थात् विना माता पिताके लडकोंको खानेको मिलता है और उनको टेलीग्राफ, सौदागरी इत्यादिका काम सिखलाया जाता है। उनमेंसे कई लड़के पल्टनमें भरती किये जाते हैं। नारङ्गीघाटीमे

जङ्गली नारङ्गी होती है। इनके अतिरिक्त उत्तकमन्दमें कई एक स्कूल, अनेक अस्पताल और कई होटल है।

इतिहास–सन् १८१९ में दो सिविलियन अफसरोने तम्बाकूकी चूङ्गीके चोरोंका पीछा करते हुए उत्तकमन्दको पाया। सन् १८२१ में जिलेके कलक्टरने उत्तकमन्दमें पहिले पहिल कोठी बनाई। कुछ दिनोमे वहाँ कसबा बस गया। सन् १८४२—१८४३ में नबाती बाग बना। सन् १८५८ में लारंस यतीमखाना कायम हुआ। सन् १८५९ में पबलिक लाइब्रेरी नियत हुई। सन् १८६६ में वहाँ म्युनिसिपल्टी कायम हुई।

नीलगिरि जिला–यह मदरास हातेमे पहाडियोका जिला है। इसमे प्रायः सर्वत्र पहाडियोके सिलसिले है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ३६ मील और पूर्वसे पश्चिम तक ४८ मील है। जिलेका क्षेत्र फल केवल ९५७ वर्गमील है। इसके उत्तर मैसूरका राज्य, पूर्व और पूर्व–दक्षिण कोयम्बुतूर जिला, दक्षिण कोयम्बुतूर जिला और मालाबार जिलेका एक भाग और पश्चिम मालाबार जिला है। जिलेका सदर स्थान उतकमन्द है। इस जिलेमे ५ सबडिवीजन है।

नीलगिरि जिलेकी पहाड़ियां खडी है, सबसे ऊँची दोदाबेटी नामक पहाड़ी समुद्रके जलसे ८७६० फीट ऊँची है। उत्तकमन्द पहाडी ७३६१ फीट और कुनूर पहाडी ५८८२ फीट ऊँची है। इनके अतिरिक्त बहुतसी पहाडियाँ है।

अनेक छोटी नदियाँ है। जिलेमें पहिले बाघ तथा भालू बहुत थे, किन्तु शिकारियोंने मारकर इनको बहुत कम कर दिया है।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय नीलगिरि जिलेमे ९१०३४ मनुष्य थे, अर्थात् ७८९७० हिन्दू, ८४८८ कृस्तान, ३५३१ मुसलमान, ३४ पारसी और ११ अन्य। हिन्दुओमें २०३९७ परिया ( परयन ), १०५८८ वेल्लाल (खेतिहर ), ३४६३ इडैयर ( भेडिहर), ३८२७ सेटी ( सौदागर ), २६०९ वनिया ( जाति विशेष ), १७६० कम्भाडन (शिल्पकार), ८४९ सतानी, ५४७ वन्नान ( धोबी ), ४४० ब्राह्मण, ४१९ कैक्कलर, ३८७ कुसवन ( कुम्भार ), २४७ अवटन ( नाई ), २९१ सेंबडवन ( मल्लुहा ), १६५ सानान ( मदक ), १५३ कणक्कन ( लिखने वाले ), १०७ क्षत्रिय और बाकी ३३७२१ में अन्य जातियोंके लोग थे।

नीलगिरि जिलेमे तामिल, कनडी और अङ्गरेजी भाषा प्रचलित हैं और अन्य कई पहाडी भाषा भी है। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नीलगिरि जिलेके कसबे उत्तकमन्दमे १५०५३ और सन् १८८१ मे उत्तकमन्दमें १८१२६ मेकनादमे १२७४० और तोटानादमे ११५५७ मनुष्य थे।

नीलगिरिपर उत्तम स्वाभाविक जङ्गल है, जिनमे भाति भातिके वनजन्तु तथा चिडियायें रहती है, जिनमें जङ्गली भेड. बनैले कुत्ते तथा शाही बाघभी होते है। वहाँ रङ्गस्वामीका मन्दिर और गगनचुक्कीका किला है। कुपालट्टीके निकट और सिगुरघाटके ऊपर कई जलप्रपात है। नीलगिरि जिलेमे गेहूं, जव, मटर, लहसुन, प्याज, सरसों, रेडी, आलू, कार्णी, चाय, कॉफी कुनाइन इत्यादि पैदा होती है, नारंगी, सेव, नासपाती आदि बहुत प्रकारके फलभी होते है। नीलगिरिकी पहाडियोंमे अकाल कभी नहीं पड़ा. किन्तु मैदानोंमें

महँगी पडजानेपर वहाँ भी उसका असर पहुँच जाता है। नीलगिरि जिलेमें लगभग ३०० मील गाडी चलने लायक सडक है।

नीलगिरि जिलेमें ठोडा, वडगा, कोटा, कोरवा और इरुला ये ५ पहाडी जातियां हैं। इनमे कोरवा और इरुला, जो आलसी है, गरीब है, किन्तु दूसरे पहाडी लोग अच्छी हालतमें हैं। वडगा, जो परिश्रमी है, तेजीसे धनी होते जाते हैं।

ठोडा जातिके लोग अच्छे बनावटके बलवान् होते है। उनमे पुरुष तथा स्त्रियां नीचेसे ऊपर तक केवल एकही वस्त्र रखते है। स्त्रियां अपने कांखेसे नीचे ठेहुने तक एकही कपड़ा लपेटती है। एक स्त्रीके कई पति होते हैं। सब भाई मिलकर एक स्त्रीसे विवाह करते है। वे लोग तामिल और कनडी मिली हुई एक प्रकारकी भाषा बोलते हैं। इनकी झोपडियाँ साधारण तरहसे १८ फीट लम्बी, ९ फीट चौडी तथा १० फीट ऊंची होती हैं। दरवाजे ३ फीटसे कम ऊँचे और १½ फीट चौडे होते हैं, जो ½ फीट मोटी लकडीके टुकडेसे बन्द किये जाते है। झोपडियोंकी दीवारे बाँसकी और छप्पर फूस या घासके बनते है। एक झोपडीके भीतर एक तरफ २ फीट ऊँचा मिट्टीका एक चबूतरा, जिसपर हरिन अथवा भैंसेका चमडा या एक चटाई रहती है, बना रहता है, उस पर वे लोग शयन करते है। उसके सामनेके बगलपर थोड़ी ऊँची जगह रहती है, जिसपर रसोईके वर्त्तन रक्खे जाते है और आग रखनेका स्थान होता है। दूध रखनेका घर कुछ अधिक बडा रहता है, जिसमें घेरकर दो भाग बनाये जाते है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नीलगिरि जिलेमें ६७५ ठोडा थे।

वडगा जातिके लोग जङ्गली जातियोंमें सभ्य हैं। इनमे पुरुष मैदानके देशी लोगोंके समान कमरमें कपडा पहनते हैं, शिरपर मुरेठा बांधते है और देहपर चादर ओढते है। स्त्रियां उजले कपड़े कांखसे ठेहुने तक पहनती हैं, उसको एक रस्सीसे बांध देती हैं। वडगा जातिके लोग पीतल, लोहा या चाँदीके कुछ गहनेभी पहनते हैं। वे लोग पुरानी कनडी भाषा बोलते है। इनके प्रधान देवता रंगस्वामी है, जिनका मन्दिर नीलगिरिके पूर्वी छोरके पास रंगस्वामी नामक चोटी पर बना हुआ है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २४१३० वडगा थे।

कोटा जातिके लोग अच्छे बनावटके होते हैं। उनके शिरका लम्बा बाल खुला हुआ रहता है। वे लोग खेती करते हैं, बोझे ढोते है, तथा ठोडा और वडगाओंकी नोकरी करते है। इनकी भाषा कनडीकी पुरानी तथा मोटी बोली है। कोटा लोगोंकी ७ बस्तियाँ है। प्रत्येक गाँवमें ३० से ६० तक झोपडियाँ है, जिनकी दीवार मिट्टीकी और छप्पर फूसके हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १०६५ कोटा थे।

कोरवा ( भेडिहर ) जातिके लोग पाँचों पहाडी जातियोंमें अधिक असभ्य है। वे कदमें छोटे होते हैं। इनका कठोर शरीर, मलीन मुखमण्डल, बड़ा पेट, बडा मुख, मोटे होठ और वडे बड़े दांत होते है। शिरके बालोमे जटा बंधा रहता है। स्त्रियोंके नाक छोटे तथा बन्दरके नाकोंके समान होते हैं। वे कांखोंसे नीचे ठेहुनों तक कपडेका टुकडा पहनती है। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों अपनी गले, बांह, कान और अंगुरियोंमे पीतल, लोहा, ताँबा, सीसा और अनेक प्रकारके बीजोंके भूषण पहिनते हैं। इनकी बस्तियाँ पहाड़ियोंके दरारोंमें तथा जङ्गलोंमें हैं। इनके घर ३० फीटसे ५० फीट तक लम्बे और ५ फीटसे कम ऊँचे

होते हैं, जिनकी दीवार झाड़ियों तथा बांसोसे और छप्पर फूससे बने हुए है । उनमें आठ दश फीट मोरब्बे, अनेक कोठरियाँ रहती है । उनकी भाषा तामिळ भाषाका अपभ्रंश है । वे विना हलकी थोडी खेती करते है और वनोंमें अनेक भांतिके अन्न, फल, रङ्गके छाल, जानवर, मछली, जड, मधु, मोम इत्यादि एकत्र करते है और मैदानोंमे जाकर इनके बद-लेमें अन्न तथा वस्त्र खरीदते हैं । सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१८५ कोरवा जातिके लोग थे ।

इरुला जातिके लोग नीलगिरिकी नेवसे मैदानोतक फैले हुए नीचेकी ढालूपर और जङ्गलोंमें रहते है, किन्तु वास्तवमें वे लोग पहाडियोके निवासी नहीं हैं । वे वलवान् होते है, उनकी स्त्रियाँ वहुत मजबूत होती है । उनमें प्रायः सब काले रङ्गकी है । वे अपने कमरसे ठेहुने तक कपड़ा दोहरा लपेटती है । उनकी कमरसे ऊपरका भाग नङ्गा रहता है । वे सफेद और लाल गुरियोंके हार और बांह, कान तथा नाकोंमे पतले तारके भूषण पहनती है । इरुला जातिके लोगोंकी भाषा कनडी और मलेयालम् शब्दोंसे मिला हुआ मोटा तामिल है । सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वे ९४६ थे ।

इतिहास—जान पड़ता है कि सत्रहवीं सदीमें नीलगिरि जिलेकी पहाडियोंपर ३ प्रधान हुकूमत करते थे । १८ वीं सदीमें मैसूरके हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुलतानने कुछ पहाड़ी लोगोंको अपने अधिकारमें किया था । सन् १८३१ तक नीलगिरि पहाड़ी कोयम्बुतूर जिलेका भाग था । उस समय उसका वडा भाग मालावार जिलेमे कर दिया गया । सन् १८४३ मे वह हिस्सा फिर कोयम्बुतूर जिलेमे आया । सन् १८६८ में नील-गिरि नामक जिला कायम हुआ । हाल तक नीलगिरि जिला, जिसकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे लगभग ६५०० फीट है, ७२५ वर्गमीलमें था, किन्तु सन् १८७३ मे अकटर-लोनी घाटी जोड करके और सन् १८७७ में ३००० फीट औसत ऊँचाईका देश जोड़कर जिला वढाया गया ।

## पालघाट ।

पोडैयनूर जंक्शनसे ३४ मील (ईरोड जंक्शनसे ९२ मील) पश्चिम कुछ दक्षिण पालघाटका रेलवे स्टेशन है । मदरास हातेके मालावार जिलेमें तालुकका सदर स्थान पाला-घाट एक कसवा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालघाटमें ३९४८१ मनुष्य थे, अर्थात् १९१२८ पुरुष और २०३५३ स्त्रियाँ । इनमे ३२८५८ हिन्दू, ५५२७ मुसलमान, १०८३ क्रस्तान और १३ जैन थे ।

पालघाटमें सरकारी कचहरियाँ, अस्पताल, स्कूल और एक पुराना किला है, किन्तु उसमें अब कोई सैनिक नहीं रहता है ।

इतिहास—पूर्व समयमें पालघाट वहुत प्रसिद्ध था । सन् १७६८ में अङ्गरेजोंने उसको ले लिया, किन्तु चन्द महीनोंके बाद मैसूरके हैदरअलीने सम्पूर्ण दूसरे किलोंके साथ पाल-घाटके किलेको अङ्गरेजोंसे छीन लिया । हैदरअलीके मरनेके पश्चात् सन् १७९० मे अङ्ग-रेजोंने टीपू सुलतानसे पालघाटके किलेको ले लिया ।

# कलीकोट।

पालघाटसे ७८ मील और ईरोड जंक्शनसे १७० मील पश्चिम कलीकोटका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें पश्चिमी घाट अर्थात् मालावारके किनारेपर ( ११ अंश, १५ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४९ कला पूर्व देशान्तरमें ) मालावार जिले और कलीकोट तालुकका सदर स्थान कलीकोट एक वडा कसवा है। मदरास रेलवेकी दक्षिण-पश्चिमकी शाखा कलीकोट तक गई है। कलीकोटका शुद्ध नाम कोलीकोड्र अर्थात् ( मालावार भाषाकी ) मुर्गाकी बोली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कलीकोट कसवेमें ६६०७८ मनुष्य थे; अर्थात् ३४५०७ पुरुष और ३१५७१ स्त्रियाँ। इनमें ३७७३३ हिन्दू, २४५४५ मुसलमान, ३७०३ क्रस्तान, ६७ पारसी २७ जैन, २ वौद्ध और १ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ५४ वॉ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ५ वॉ शहर है।

देशी लोगोंकी वस्ती समुद्रके जलसे थोडी ऊँची है, जिसमें एक लम्बा बाजार वना है। दक्षिण ओर दहिने ' ली हुई मपिला मुसलमानोंकी वस्ती आदि, पश्चिमोत्तर पोर्चुगीजोंकी वस्ती, देशी पैदल सेनाके एक भागकी लाइनें, परेडकी भूमि और कलक्टरकी कचहरी है। पोर्चुगीजोंकी वस्तीमें जेलखाना है।

कष्टमहौस, क्लब और यूरोपियन शरीफोंकी कोठियोंके मुख समुद्रकी ओर है। समुद्रके पास लाइटहाउस वना हुआ है। एक मीठे पानीके सुन्दर सरोवरके चारों ओर अनेक सरकारी आफिस और वहुतसी प्रसिद्ध इमारतें वनी हुई है। कसवेसे २ मील उत्तर एक पहाडी पर छावनी और कलक्टरकी कोठी है। इनके अतिरिक्त कलीकोटमे जिलेकी प्रधान कचहरियॉ, पागलखाना, दवाखाना, अस्पताल, वंगला, वेङ्क, अनेक स्कूल और कई एक गिरजे हैं। कलीकोटका पवन पानी साधारण तरहसे स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमें १२० इञ्च सालाना वर्षा होती है। कलीकोट ६ एकड भूमिके साथ फरांसीसियोंका एक मकान है, अर्थात् ६ एकड भूमि उनके अधिकारमें अब तक है।

वेपुर—कलीकोटसे ६ मील दक्षिण एक नदीके मुहानेके पास वेपुर वस्ती है। कलीकोट और वेपुरके वीचमें शहरतलियोंके गॉव फैले हैं। गॉवोंके चारों ओर ताड़, आम और कटहलके वृक्षोंके कुंज लगे हैं। वेपुरके पडोसमें लोहेके ओर होते हैं। पूर्वी घाटकी टीककी लकडियॉ पानीमें वहाकर वेपुरमें लाई जाती हैं और वहॉसे दूसरे देशोंमें भेजी जाती है। मालावार जिला—इसके उत्तर दक्षिणी किनारा जिला, पूर्व कुर्ग, मैसूरका राज्य, नीलगिरि और कोयम्बुतूर जिला, दक्षिण कोचीनका राज्य और पश्चिमीघाटका समुद्र है। जिलेका सदर स्थान कलीकोट है। यह जिला उत्तरी मालावार ओर दक्षिणी मालावार नामसे २ भाग होकर २ जजोंके अधिकारमें है।

मालावार जिला समुद्रके किनारे पर १४५ मील फैला हुआ है। इसकी चौडाई २५ मीलसे ७० मील तक है। पश्चिमी घाटकी पहाडियॉ ३००० फीटसे ७००० फीट तक ऊँची हैं। जिलेमें वहुतेरी अप्रसिद्ध नदियाँ और धारायें हैं। मालावारके किनारेके समानांतरमें खारे पानीकी झीलोंका लगातार जंजीर है। लगभग १७०००० रुपयेकी नमकदार मछलियॉ प्रतिसाल माला-

वार जिलेसे सिलोनमें भेजी जाती है । मालावारका फैला हुआ जङ्गल वेशकीमत है। जङ्गलों और पहाडियोंमे हाथी, सांभर, वाघ, तेंदुये, सूअर, भालू, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मालावार जिलेके ५७६५ वर्गमील क्षेत्रफलमे २३६५०३५ मनुष्य थे, अर्थात् १६६९२७१ हिन्दू, ६५२१९८ मुसलमान, ४३१९६ कृस्तान, १५७ जैन, ५४ वौद्ध, ४६ पारसी, ३० यहूदी और ८३ अन्य। हिन्दुओंमे ५७२२३१ सानान ( मदक ), ३४८१६९ वेल्लाल ( खेतिहर ), ९००५१ कम्भाडन (शिल्पकार ), ५०६२४ वनियां ( जाति विशेष ), ४७६८३ ब्राह्मण, ४२६०६ कैक्कलर ( बिनाईके काम करनेवाले ), ३७५५६ बन्नान ( धोवी ), २२०४४ संटी ( सौदागर ), १६१९१ सेवडवन ( मछुहा ), १३१०२ अवंटन ( नाई ), ११७७० कुसवन ( कुम्भार ), ७६२७ सतानी ( ढुमसला ), ४९९१ इडैयर ( भेडिहर ), १५०९ क्षत्रिय और वाकीमे अन्य जातियोंके लोग थे। मलेवार जिलेमें मलेयालम् भाषा प्रचलित है, किन्तु तलीचेरी, कननूर आदि कई स्थानोंमे तुलु भाषा वोलनेवाले लोग वहुत है ।

मालावारके नायरोंमे, शूद्र है, एक स्त्रीके अनेक पति होते थे, किन्तु वहाँ अव यह रीति नहीं है, परन्तु मालावारके दक्षिण भागमें और तिरुवॉकूर तथा कोचीनके राज्यके कई भागमें अब तक भी कुछ कुछ ऐसा होता है । उसमे एक स्त्रीकी जितनी सन्तान होती है वे एक खानदानकी कहलाती है । स्त्री अपनी जाति अथवा अपनेसे वडी जातिके किसी पुरुषको अपना पति वना लेती है । अङ्गरेजी राज्यके मालावारमे दो भाई एक स्त्रीके साथ अथवा कोई पुरुष अपनी विधवा भौजाईके साथ विवाह नही करता है। मालावारके उत्तरीय भागमेकी स्त्रियॉ सर्वदा अपने पतिके घर रहती है और दक्षिणीय भागकी निर्धन पुरुषोंकी स्त्रियॉ वर्षमे ६ मास अपने पतिके घर और ६ मास अपने पिताके गृहमे निवास करती है। प्रधानोंकी स्त्रियां सर्वदा अपने पिताके घर रहती है, उनके पति वहाँही जाते है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मालावार जिलेके कसवे कलीकोटमें ६६०७८, पालघाटमें ३९४८१, कननूरमे २७४१८, तलीचेरीमे २७१९६ और कोचीनमें १७६०१ मनुष्य थे। कलीकोट मालावारकी राजधानी, कननूर और तलीचेरी वन्दरगाह और कननूर फौजी छावनी है। जिलेकी सौदागरी खास करके कननूर, तलीचेरी, पालघाट, कलीकोट और कोचीनमे होती है ।

कलीकोटका इतिहास—ऐसी कहावत है कि मालावारके मालिक "चेरमान पेरुमाल ने नवीं सदीमे कलीकोटको वसाया । उसने मक्का जानेके समय अपना मान, विक्रम और कलीकोट जमोरिनको दे दिया । जमोरिनने मोपला लोगोंकी सहायतासे, जो अरवके सौदागरोंकी सन्तान थे, अपने राज्यको दक्षिण और पूर्व फैलाया । कलीकोटका वर्तमान कसवा १३ वीं सदीका है ।

## तुलुबर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स

ह ळ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

पहिले यूरोप वालोंको समुद्रकी राहसे हिन्दुस्तानमें पहुँचनेका मार्ग मालुम न था। सन् १४८६ मे पोर्चुगलका कोविलहम कलीकोटमे उतरा था। उसके पश्चात् कुछ जहाज वस्कोडीगामाके अधीन पोर्चुगलके लिज्वो शहरसे रवाने हुए। १० महीने और २ दिनके बाद सन् १४९८ की ११ मईको वास्कोडीगामा कलीकोटमे पहुँचा। उस समय कलीकोटमे एक बडा देवमन्दिर और बहुतसी उत्तम इमारते थीं। वहाँका जमोरिन नामक हिन्दू राजा एक फैले हुए राज्यपर राज्य करता था, जिसके वंश वाले अब तक सरकारसे पिंशन पाते है। राजाने वास्कोडीगामाका स्वागत किया। वास्कोडीगामा ६ मास तक मालाबारके किनारेपर रहकर यूरोपको लौट गया। सन् १५०१ में पोर्चुगलकी एक कोठी कलीकोटमे कायम हुई। थोड़ेही दिनोंके बाद मोगलाओने उस कोठीको तोड फोड दिया और पोर्चुगीजोके ५० आदमियोंको मारडाला। सन् १५०२ में वास्कोडीगामा बदला लेनेके लिये २० जहाजोके साथ आपहुँचा। उसने कोचीन और कननूरके राजाओंसे मेल किया और जमोरिनके महलपर गोला चलाया। सन् १५१० में पोर्चुगीजोंके गवर्नर अलबुकर्कने कलीकोटपर आक्रमण करके जमोरिनके महलको जलाया और कसबेको बरबाद किया; किन्तु देशियोंने उसको वहाँसे कोचीनमें भगादिया। उस समय कलीकोटपर उसका अधिकार नहीं हुआ, परन्तु गोवा उसके अधिकारमे होगया, जो अब तक पोर्चुगल वालोंके हिन्दुस्तानके राज्यका सदर स्थान बना हुआ है। सन् १५१३ में कलीकोटके राजाने पोर्चुगीजोके साथ मेल किया। राजाके हुक्मसे पोर्चुगीजोने एक किलाबन्दी कोठी बनाई।

सन् १६१६ मे कलीकोटमे अङ्गरेजी कोठी कायम हुई। सन् १७२२ से फरासीसी लोग कलीकोटमें बसने लगे, जिस समयसे अङ्गरेजोने ३ बार कलीकोटको जीता। सन् १७५२ में हालिण्डवालोंकी कोठी कलीकोटमें बनी, जिसका भाग सन् १७८४ में बरबाद किया गया और उसके थोडेही पीछे वह कोठी अङ्गरेजी आबादीमे मिलाली गई। सन् १७६६में मैसूरके हैदरअलीने कलीकोटके देशपर आक्रमण किया। राजा अपने महलमें आग लगाकर अपने घरके लोगोंके साथ जल मरा, किन्तु मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार नहीं की। उस समय हैदरअलीको आरकाटकी लडाईमें जानेकी आवश्यकता हुई, इस लिये कलीकोट उसके अधिकारमें नहीं हो सका, किन्तु सन् १७७३ में मैसूर वालोने फिर कलीकोटको जीत लिया। सन् १७८२ मे अङ्गरेजोने मैसूर वालोंको कलीकोटसे निकाल दिया। सन् १७८९ मे मैसूरके टीपूसुलतानने कलीकोटके देशको बरबाद किया। उस समय शहर प्राय उजाड होगया। टीपूने ६ मील दक्षिण-पूर्व फर्रुक्खाबाद नामक नया शहर बसाया और वहाँ किला बनानेका काम आरम्भ किया। सन् १७९० में अङ्गरेजोने टीपूके जनरलको परास्त किया और फर्रुक्खाबादको लेलिया। सन् १७९२ में कलीकोटका सम्पूर्ण देश अङ्गरेजोके अधिकारसे होगया। उस समयसे धीरे धीरे देश आबाद होने लगा। सन् १८४९ मे यूरोपियन सेनाका एक टुकडा कलीकोटमें रक्खा गया। सन् १८५१ में फौज वहाँसे हटा दी गई थी, किन्तु सन् १८५५ में वहाँके कलक्टरके मारे जाने पर कलीकोटमे फिर सेना रक्खी गई।

कलीकोटके राजाके महलके, जिसमें वास्कोडीगामाका स्वागत हुआ था, [illegible] अब तक [illegible] है। उसके [illegible] निशानियांभी देखनेमें आती है। कलीकोटमे अब तक [illegible] है।

मालावार जिलेका इतिहास—पूर्वकालमें तिरुवाकूर और कोचीन राज्यके देशके साथ मालावारका नाम केरल और चेरा देश था। पुराणोंमे उस देशका नाम केरल देश लिखा हुआ है। वम्बईके वृत्तान्तमें देखिये। कहावतके अनुसार चेरा राज्यका पिछला राजा 'चेरमान पेरुमाल' था। वह अपने राज्यको अपने अधीनके लोगोंको बांटकर मुसलमान हो मक्का चला गया। चेरमान पेरुमालके रहनेके समयके विषयमें अनेक मतभेद हैं। साधारण प्रकारसे कहा जाता है कि वह चौथी सद्दीके मध्यमें था, किन्तु अरवके समुद्रके किनारेपर सफाईमें उसकी कवर विद्यमान है। उसके ऊपरके लेखसे विदित होता है कि सन् २१२ हिजरी ( सन् ८२७ ईस्वी ) में चेरमान पेरुमाल वहाँ पहुँचा और सन् २१६ हिजरी ( सन् ८३१ ईस्वी ) में वहाँ मरगया। चेरमान पेमारुलके पश्चात् चेराद्देश वहुतसे छोटे राजाओंके अधिकारमें बंट गया।

सन् १४९८ में पोर्चुगलका वास्कोडीगामा मालावारमे आया। उसके थोड़ेही दिन वाद उसके उत्तराधिकारियोंने कलीकोट, कोचीन और कननूरमे रहना आरम्भ किया। सन् १६५६ में हालेंडवाले हिन्दुस्तानमे आये। उन्होंने पहिले कननूरको जीता और उसके पश्चात् सन् १६६३ में कोचीनके किले और तङ्गाचेरीको ले लिया। सन् १७१७ में हालेंडवालोंने जमोरिनसे चेटवाई नामक टापू छीन लिया, किन्तु उसके लगभग ५० वर्ष पीछेसे उनका वल घटने लगा। उन्होंने कननूरके राजाके वंशधरोंके हाथ कननूर वेंच दिया। सन् १७७६ में मैसूरके हैदरअलीने चेटवाई टापूको और सन् १७९५ में अङ्गरेजोंने कोचीनको जीत लिया।

सन् १७२० में फरासीसी लोग पहले पहल माहीमें वसे। सन् १७५२ में वे लोग कलीकोटमे आये, उन्होंने सन् १७५४ में माउंटडेली और उत्तरके कई स्थानोंपर अपना अधिकार कर लिया, जिनको अङ्गरेजोंने सन् १७६१ में ले लिया। अङ्गरेज लोग सन् १६१६ मे कलीकोटमे, सन १६८३ में तलीचेरीमे और सन् १७१४ में चेटवाईमें अपनी कोठियाँ कायम कर चुके थे। उसके वाद मैसूरके हैदरअली और टीपूसुलतानके साथ अङ्गरेजोंको मालावारमे कई वार लड़ना पड़ा। सन् १७९२ में टीपूसे ईष्टइंडियन कम्पनीकी सन्धि हुई, जिसके अनुसार मालावार कम्पनीके अधिकारमें होगया।

## तलीचेरी।

कलीकोटके वन्दरगाहसे ३९ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके किनारेपर ( ११ अंश, ४४ कला, ५३ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अश, ३१ कला, ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मदरास हातेके मालावार जिलेमें तलीचेरी वन्दरगाह तथा कसवा है। कलीकोटसे तलीचेरी होकर आगवोट जाते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तलीचेरीमें २७१९६ मनुष्य थे; अर्थात १३४०३ पुरुष और १३७९३ स्त्रियां। इनमे १५,१५२ हिन्दू, १०२८२ मुसलमान, १७४७ क्रस्तान, ८ पारसी, ५ जैन और २ अन्य थे।

तलीचेरीमे उत्तरी मालावार जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, जेलखाना, कष्टमहौस, गिरजा और वहुतसे सरकारी तथा तिजारती लोगोंके आफिस हैं। घने वृक्षोंसे युक्त सुन्दर स्वास्थ्यकर

पहाडियों पर, जो समुद्रकी ओर ढालू हैं, तलीचेरी कसवा वसा है। कसवेके उत्तर समुद्रके किनारे पर ४० फीट ऊपर किला है। किले के पश्चिमोत्तरके संपूर्ण बगल पर ऊंची इमारतें बनी हुई है, ऊपर के भागमे जजकी कचहरी और अनेक सरकारी आफिस तथा नीचेके भाग में जेलखाना है। देशी लोगोंका कसवा दक्षिण ओर है। बाजारके साथ प्रधान सड़क समुद्रके किनारेके समानान्तर मे एक मील लम्बी है।

तलीचेरीसे वहुत इलायची और काफी दूसरे देशोमें भेजी जाती है। वहाँकी इलायची सब देशोंकी इलायचीमें उत्तम होती है। वहाँसे उत्तम चन्दन की लकडी दूसरे कसवोमे जाती हैं।

इतिहास—सन् १६८३ में ईष्टइन्डियन कम्पनीने तलीचेरीमें मिर्च और इलायचीके लिये एक कोठी नियत की। सन् १७०८ मे चेरिकल राजाने ईष्टइन्डियन कम्पनीको तलीचेरीका किला इनाम दे दिया। सन् १७६६ मे वहाँकी कोठी रेजीडेंसी बनाई गई। सन् १७८२ मे मैसूरके हैदरअलीने तलीचेरी पर आक्रमण किया, किंतु वम्बई से अंगरेजी फौज आने पर उसने अपना घेरा उठा लिया।

# माही।

तलीचेरी कसवे से ५ मील दक्षिण मदरास हातेके मालावार जिलेकी सीमाके भीतर, माही नदी के मुहाने से दक्षिण, समुद्र के किनारे पर, फरांसीसियोंके राज्य मे माही एक कसवा तथा बंदरगाह है। पश्चिमी किनारे पर केवल यही २ वर्गमील भूमि फरांसीसियोंके अधिकारमें है. जिसमे लगभग ८००० मनुष्य वसते है। वन्दरगाहमे ७० टन बोझेका जहाज आ सकता है। किनारेकी सडक वेपुरके रेलवे स्टेशनसे माही होकर कननूरके फौजी स्टेशनको गई है।

एक ऊँची भूमिपर माही वस्ती है। वस्तीका अगवास माही नदीकी ओर है। वहाँ फरासीसियोंकी कोठी, स्कूल, गिरजा ओर अङ्गरेजी पोष्ट आफिस है।

इतिहास—फरासीसी लोग मिर्चकी सौदागरी करनेके लिये पहिले पहल माहीमे बसे। सन्१७२२ में उन्होंने वहाँके राजासे कोठीके लिये भूमि प्राप्त की। उसके पश्चात उन्होंने सन् १७५२ मे नीलेश्वरम् आदि कई वन्दरगाहोको और सन् १७५४ में मांउटडेलीको खरीदा। सन् १७६१ मे अङ्गरेजोंने माही तथा खरीदी हुई भूमिको उनसे छीन लिया। अङ्गरेजोंने सन् १७६५ मे माही फरांसीसियोंको लौटा दी, फिर सन् १७७९ में उनसे छीन ली फिर सन् १७८५ में उनको लौटा दी, फिर सन् १७९३ मे तीसरी वार छीन ली, किन्तु सन् १८१६ मे फिर उनको लौटा दी, तवसे वह उनके अधिकारमें है। माही पहिले वहुत मशहूर तथा वडी सौदागरीकी जगह थी, किन्तु सन् १७८२ मे सम्पूर्ण कसवा जला दिया गया और वहाँकी किलावदी तोड दी गई। उसकी दिन पर दिन घटती होती जाती है। सन् १८८३ में लगभग १८००० रुपया उसमें मालगुजारी आई थी।

# कननूर।

तलीचेरीके वन्दरगाहसे १२ मील पश्चिमोत्तर कननूरका वन्दरगाह है। मदरास हातेके मलेवार जिलेमें ( ११ अंश, ५१ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश,

२४ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रके किनारेपर एक तालुकका सदर स्थान और फौजी स्टेशन कननूर है। लङ्गरकी जगह किनारेसे २ मील दूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ कननूर कसबेमें २७४१८ मनुष्य थे, अर्थात् १३२७३ पुरुष और १४१४५ स्त्रियाँ। इनमें १२५६८ मुसलमान, ११७०७ हिन्दू, ३११० क्रूस्तान, ३० पारसी, और ३ जैन थे।

कननूरके चारों ओर पहाडियाँ और तङ्ग घाटियां और जगह जगह नारियलके वृक्षोंके झुण्ड हैं। एक अन्तरीपपर किला है, जो अङ्गरेजी अमलदारी होनेके पीछे मजबूत किया गया। ३० फीटसे ५० फीट तक ऊँची एक खडी पहाड़ीके किनारोंपर अङ्गरेजी अफसरोंके बहुतसे बँगले बने हैं। कननूरमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, कस्टमहौस, बहुतसे आफिस बहुतेरी मसजिदें ( जिनमें २ प्रसिद्ध हैं ) और अनेक मिशन हैं। छावनीमें यूरोपियन और एक देशी पैदलकी रेजीमेंट अर्थात् पल्टन रहती है। कननूरका पवन पानी मोलायम, एक रस तथा स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा ९७ इञ्च होती है। कननूरमें एक राजा हैं।

इतिहास—सन १४९८ में पोर्चुगलका वास्कोडीगामा कननूरमें आया। उसके ७ वर्ष पीछे उसने वहाँ एक कोठी बनाई। सन् १६५६ मे हालेण्डवाले कननूरमें बसे, उन्होंने अपनी रक्षाके लिये कननूरके वर्तमान किलेको बनवाया। सन् १७६६ मे मैसूरके हैदरअलीने हालेण्ड वालोंसे कननूरका किला छीन लिया। सन् १७८४ में अङ्गरेजोंने कननूरको ले लिया और वहाँका राजा ईष्टइण्डियन कम्पनीके अधीन हुआ। उसके ७ वर्ष बाद अङ्गरेजोंने फिर कननूरको लेकर अपने राज्यमे मिला लिया।

## मरकाड़।

कननूर बन्दरगाहसे ७२ मील पूर्वोत्तर, मङ्गलूर बन्दरगाहसे ८६ मील पूर्व-दक्षिण, मैसूर शहरसे लगभग ८० मील पश्चिम ( १२ अंश, २६ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४६ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमे ) समुद्रके जलसे ३८०० फीट ऊपर कुर्गदेशके मध्य भागमें कुर्गदेशमें प्रधान कसबा और उसकी राजधानी मरकाड़ है। मार्ग पहाड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मरकाड कसबेमें ७०३४ मनुष्य थे; अर्थात् ३९०४ पुरुष और ३१३० स्त्रियाँ। इनमें ४९४१ हिन्दू, १४७१ मुसलमान, ५९१ क्रूस्तान और ३१ पारसी थे।

मरकाड़में छः पहला एक किला है। उसकी चारोओर पत्थरकी दीवार और खाई बनी हुई है और उत्तर ओर एक पुस्ता है। किलेके भीतर राजाका महल, अङ्गरेजोंका गिरजा और हथियारखाना है। किलेमें पूर्व वाले फाटकके पास कमिश्नरसाहबकी कोठी और अनेक सरकारी आफिस हैं। किलेके भीतरका महल ईटोका दो मञ्जिला है। उसके मध्य भागमें ऑगन है। महलके अधिक हिस्सेमें अब सरकारी काम होता है।

देशी लोगोंके महल्लेमें एक ऊँचे बाँधके भीतर दोदावीर राजेन्द्र, लिङ्गराजेन्द्र और दोनोंकी रानियोके समाधि मन्दिर हैं, उनके मध्यमें गुंबज और कोनोंपर मीनार बने हुए हैं।

समाधिके पास सर्वदा दीप जलता है। प्रति दिन समाधिपर फूल और एक शुद्ध वस्त्र चढ़ाया जाता है। वहाँके लिङ्गायत पुजारियोंको सरकारसे वार्षिक २००० रुपये मिलते हैं।

हिन्दू-मन्दिरोंमें उमेश्वरका मन्दिर प्रधान है, जो ऊपर लिखे हुए समाधि मन्दिरोंके ढाचेका बना हुआ है। उस मन्दिरके ब्राह्मण पुजारीको वार्षिक ४८५० रुपये मिलते हैं। इनके अलावे मरकाडमें अस्पताल, स्कूल और जनाना स्कूल है। वहाँका जल वायु सर्द तथा रोगवर्द्धक है। वहाँ औसतमें सालाना १३९ इञ्च वर्षा होती है। मरकाडमें फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१५६ मनुष्य थे। कुर्गके राजाके वंशधर मरकाड़में रहते हैं।

इतिहास—लोग कहते हैं कि मधु राजा नामक कुर्गके पहिले राजाने सन् १६८१ में मरकाड़को बसाया। 'राजेन्द्रनामा' में कुर्गके राजाओंका इतिहास लिखा हुआ है। सन् १७८२ में मैसूरकी सेना मरकाडसे निकाल बाहर की गई। सन् १७९० में मैसूरके टीपूने मरकाडके राजा दोदावीर राजेन्द्रसे मेल किया। टीपूने किलेकी पत्थरकी दीवारको बनवाया। सन् १८१२ में मरकाडके राजा लिंगराजेन्द्र वोडियरने किलेके भीतरके महलको बनवाया। वह महल हालमें मरम्मत किया गया है। सन् १८३४ में अङ्गरेजोंने बिना मुकाबिलाके मरकाडपर अधिकार करके वहाँके राजाको गद्दीसे उतार दिया और कुर्गदेशको अपने राज्यमें मिला लिया।

कुर्गदेश—दक्षिण हिन्दुस्तानमें एक चीफ कमिश्नरके अधीन, जो मैसूरके रेजीडेण्ट भी है, कुर्ग एक देश है, जिसको उस देशके लोग कोडगु कहते हैं। इसके उत्तर कुमारधारा और हेमवती नदी, जो मैसूरकी ऊँची भूमिसे इसको अलग करती है, पूर्व मैसूरका राज्य और पश्चिम पश्चिमीघाटकी पहाड़ियाँ, जो मालावार और दक्षिण किनारा जिलेसे इसको जुदा करती है, फैली हुई है। पूर्वकी सीमापर थोडी दूर तक कावेरी नदी बहती है। इसके देशकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ६० मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ४० मील है।

सम्पूर्ण कुर्गदेशमें वन और बाससे पूर्ण पहाडियाँ फैली हुई हैं। केवल चन्द घाटियोंमें खेती होती है। जिलेमें सबसे ऊँची पहाडीका शिखर समुद्रके जलसे ५७२९ फीट ऊँचा और पुष्पगिरीका शिखर ५५४८ फीट ऊँचा है। खानोंमें मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है। लोहाकी खानें हैं, किन्तु किसी खानसे लोहा नहीं निकाला जाता। किसी किसी स्थानमें कुछ कुछ सोना मिलता है। जङ्गल बहुत है। जङ्गलोंमें भालू, बाघ, तेंदुए, हाथी इत्यादि वनैले जन्तु रहते हैं। हाथी अब कम होगये हैं। गवर्नमेंटने अब शिकारियोंको हाथी मारनेके लिये निषेध किया है। कावेरी नदी और उसकी सहायक लक्ष्मणतीर्थ, हेमवती तथा सुवर्णवती नदी कुर्गदेशकी प्रधान नदियाँ हैं, उनमेंसे कोई नदी नाव चलने लायक नहीं है। ये सब घाटियोंमें सघन जङ्गल होकर बहती हैं। कावेरी नदी कुर्गकी पहाडियोंसे निकली है। कुर्गमें बहुत परिश्रमसे थोड़ी खेती होती है। परन्तु बहुत किसान और कुलीजाति अपने आप [illegible] हैं। मजदूरी बहुत लगती है, इस कारणसे यहाँ कलवालोंका काम नहीं होता। देशके वासकी प्राय सम्पूर्ण वस्तु बाहरसे आती है।

कुर्गके हेरुमाल गाँवमे तथा उसके पासके एरपो गाँवके निकट फाल्गुनकी शिवरात्रिको मेला होता है। कुर्गके उत्तरीय सीमापर सुब्रह्मण्य नामक पहाडीके पादमूलके पास प्रति वर्ष अगहनमे मेला होता है। मेलेमें बहुत यात्री आते है और धातुके वर्तन, मूर्त्तियाँ तथा बहुत मवेसियाँ बिकती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुर्गदेशका क्षेत्रफल १५८३ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १७३०५५ थी, अर्थात् ९५९०७ पुरुष और ७७१४८ स्त्रियाँ। इनमें १५६८४५ हिन्दू, १२६६५ मुसलमान, ३३९२ क्रुस्तान, ११४ जैन और ३९ पारसी थे, जिनमें सैकडे पीछे ४४ कनडी भाषावाले, २०३/४ कोडगू भाषावाले, ९१/८ तामिल भाषावाले, ७ तुलु भाषावाले, ६३/४ मलेयालम् भाषावाले, ४ उर्दू भाषावाले, २ तेलगू भाषावाले, और ६३/८ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। कुर्गमें ३ हजारसे अधिक आबादीके केवल २ कसबे है, जिनमेसे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मरकाडमें ७०३४ और वीरराजेन्द्र पेटमें ४४४७ मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कुर्गके हिन्दुओंमे ७४४५ ब्राह्मण, जो खास करके शैव हैं, क्षत्रियोंमें ३५१ राजपूत और १२९ पीछेके हुकूमत करनेवालेके वंशधर राजपिडि; वैश्योंमें २२५ कोमटी और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। कुर्गके कोड़ागू, जो एक समय उस देशके राजा थे, सन् १८८१ मे केवल २७०३३ थे। वे लोग अपनी पुस्तैनी भूमिको जोतते है और स्वतन्त्र भावसे हथियार बांधते है।

मर्यादा पर हस्तक्षेप नही करनेका एकरार किया, तब उन्होंने अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार कर ली।

सन् १८३४ में कुर्गके राजाके कुप्रबन्धके कारणसे एक छोटी, किन्तु सख्त लडाई हुई। तब राजा नजरबंद करके काशीमें भेजा गया और उसका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया।

## मङ्गलूर।

कननूरके बन्दरगाहसे ७७ मील (कलीकोटके बन्दरगाहसे १२९ मील) पश्चिमोत्तर मङ्गलूरका बन्दरगाह है। मदरास हातेके दक्षिणी किनारा जिलेमें (१२ अंश, ५१ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५२ कला, ३६ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान तथा जिलेमें प्रधान कसबा मङ्गलूर है। कननूरसे मङ्गलूर होकर आगबोट जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मङ्गलूर कसबेमें ४०९२२ मनुष्य थे, अर्थात् २१३५७ पुरुष और १९५६५ स्त्रियॉ। इनमे २३४३८ हिन्दू, ९८४५ कृस्तान, ७५८४ मुसलमान, ३६ जैन, १५ पारसी, और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत-वर्षमें ९८ वा और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १४ वॉ शहर है।

मङ्गलूर कसबेके दक्षिण-पूर्व मङ्गला देवीका मन्दिर है, उसी देवीके नामसे कसबेका नाम मङ्गलूर पडा था। मङ्गलूर कसबा उन्नतिपर है। अच्छी सडकोंके किनारोंपर देशी लोगोंके मकान बने है। यूरोपियन लोगोकी बस्ती मनोरम है। नारियल तथा ताड़के वृक्षोंमें कसबा बसा है। कसबेके पास नेत्रवती और गुरुपुर नदीके मुहानेसे बनी हुई एक झील है। बन्दरगाहमे बडे जहाज नहीं जा सकते है। मङ्गलूरसे कुर्ग और मैसूरकी बहुत काफी दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती है। समुद्र द्वारा वहॉ बडी सौदागरी होती है। बन्दरगाहमें लाइट हाउस बना है।

मङ्गलूरमें सरकारी कचहरियॉ, कष्टमहौस, गिरजा और फौजी छावनी है। छावनीमें देशी पैदलकी एक रेजीमेण्ट अर्थात् पलटन रहती है।

मङ्गलूरमें यूरोपियन, पोर्चुगीज, बङ्गाली, पारसी, मुगल, अरबवाले, सीदी, मपिला, मनारी, यहूदी और कोकानी इत्यादि लोग देखनेमें आते है। वहाका जर्मनमिशन देखने लायक है। वहा छापने जिल्द बांधने, कपडा बनाने, लकडीकी चीज बनानेके काम सिख-लाये जाते है। यहां मदरासकी युनीवरसिटीके अधीन २ कालिज है। तलीचेरी, कननूर और मङ्गलूरके साधारण लोगोकी भाषा तुलु है, जिसको तुलुवङ्कु भी कहते है। तुलु भाषा [illegible]की तरहपर बनी है, इसको मुसलमान लोग अधिक बोलते है।

मङ्गलूरके इलाकेमें मिर्च, अदरक, दारचीनी और सुपारी बहुत होती है। वहां नफीस और [illegible] मोमजामे बनते है। लौग, जटामासी आदि मसाले और रेशम, कपडा, सोना, [illegible] आदि चीजें दूसरे स्थानोंसे मङ्गलूरमे आती है।

दक्षिणी किनारा जिला—यह जिला मदरास हातेके पश्चिम किनारेपर है। इसके उत्तर [illegible] उत्तर किनारा जिला पूर्व मैसूरका राज्य और कुर्ग दक्षिण मलावार जिला और पश्चिम समुद्र है। जिलेका सदर स्थान मङ्गलोर है। भूमि नीची ऊँची है। ३००० से ६०००

फीट तक ऊँची पहाडियां है। १०० मीलसे अधिक लम्बी कोई नदी नहीं है। नदियोंमें नेत्रवती, गुरुपुर और चन्द्रागिरि नामक नदी प्रधान हैं। जिलेकी खानोंमें कुछ कुछ सोना और याकूत होते है। जिलेमें जङ्गल बहुत है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी किनारा जिलेके ३९०२ वर्गमील क्षेत्रफलमे ९५९५१४ मनुष्य थे; अर्थात् ७९७४३० हिन्दू, ९३६५२ मुसलमान, ५८२१५ कृस्तान, १००४४ जैन. १६ पारसी और १५७ अन्य थे। हिन्दुओंमें १३६१४६ इडैयन ( जिनको इडैगा भी कहते है ), १२०००० परयन, १०६४१५ ब्राह्मण, ९४४६४ बालिजा, ४१३३८ गौढ़ा, ३६०९९ वलयन, २४८८३ कुसवन, २२५१३ कम्भाडन, १०९१८ वनियन्, २८७ राजपूत और वाकीमे अन्य जातियोंके लोग थे। जिलेमें केवल मंगलूर बड़ा कसबा है। दक्षिणी किनारा जिलेकी प्रधान भाषा मलेयालम है।

इतिहास--सन् १२५२ में उस देशमें पाड्य वंशके राजाका अधिकार था, जिसके उत्तराधिकारीने ( सन् १३३६में ) विजयानगरके राजाको जगह दी। सन् १५६४ मे विजयानगरके राजाके परास्त होनेपर वेदनूरके गवर्नरने अपनी स्वाधीनताको छोड दिया। उसी राज्यमें पीछे कनारा जोडा गया। १६ वीं सदीमे पोर्चुगीजोने मंगलूरको २ वार लूटा था। सन् १७६३ में मैसूरके हैदरअलीने वेदनूरको जीता। वहाँके राजा उसके अधीन हुए। उसके पश्चात् उसने पश्चिम किनारेको जीतनेके लिये अपनी फौज भेजी। राजधानीपर अधिकार होनेके चन्द महीनोंके भीतर मंगलूर और बसरूर, मैसूर वालोंके आधीन हो गये। सन् १७६८ मे बम्बईकी अङ्गरेजी फोजने हैदरअलीके जहाजको छीन लिया और कुछ दिनो तक मंगलोरपर अपना अधिकार किया। हैदरअलीके समय मगलूर प्रधान बन्दरगाह था। टीपू सुलताननें किनाराके कृस्तानोंमेंसे बहुतेरोंको मुसलमान बनाया। सन् १७९१ मे टीपूने दक्षिणी किनारा अङ्गरेजोको दे दिया। १७९९ में मगलूर अङ्गरेजी अधिकारमें हो गया। सन् १८६० मे देश दक्षिण किनारा और उत्तर किनारा नामसे दो जिलोमे तकसीम हुआ। सन् १८६२ मे उत्तर किनारा जिला बम्बई हातेमें कर दिया गया।

## सेलम।

कलीकोटके रेलवे स्टेशनसे १७० मील पूर्व पूर्वकथित ईरोड जंक्शन है। ईरोडके रेलवे स्टेशनसे ३७ मील पूर्वोत्तर सुरमङ्गलमके पास सेलमका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें ( ११ अंश, ३९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमे ) रेलवेके स्टेशनसे ४ मील दूर समुद्रके जलसे ९०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसबा सेलम है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सेलम कसबेमे ६७७१० मनुष्य थे, अर्थात् ३२८६० पुरुष और ३४८५० स्त्रियाँ। इनमे ६०८८० हिन्दू, ५३९३ मुसलमान और १४३७ कृस्तान थे। मनुष्य-सख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ५२ वा और मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमे चौथा शहर है।

सेलममें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, जेलखाना, कई एक स्कूल, २ गिरजा, और कई अस्पताल हैं। देशी कसबेके बीचमे होकर एक छोटी नदी निकली है। यूरोपियन लोग एक

शहरतलीमें रहते है। खास सेलममें बहुतसे तिजारती लोग और अफसर लोग रहते हैं। शिवपेटमें प्रति बृहस्पतिवारको मेला होता है। सेलमका किला अब नहीं है। उसके पास बहुत सरकारी इमारतें बनी हैं। सेलममें बडी सौदागरी होती है और बहुत कपडे तैयार होते है।

सुरमंगलम् बस्तीसे ७ मील दूर शिवराय नामक पहाडियोंपर बहुतसी काफी उत्पन्न होती है। वहाँ एक एकड भूमिपर एक टन काफी तैयार होती है। काफीके वृक्ष ३० वर्ष तक रहते है, ३ वर्षके पश्चात् फलने लगते हैं और ६ वर्षके बाद पूरे तौरसे फलते है।

सेलम जिला—इसके उत्तर मैसूरका राज्य और उत्तरी आरकाट जिला, पूर्व तिरुचनापल्ली, दक्षिणी आरकाट और उत्तरी आरकाट जिला, दक्षिण तिरुचनापल्ली और कोयम्बुतूर जिलेका भाग और पश्चिम कोयम्बुतूर जिला और मैसूरका राज्य है। सदर स्थान सेलम कसबा है। जिलेके दक्षिण भागको छोडकर जिलेके सब हिस्सोंमे पहाडियाँ है। पहाडियोंके सिलसिलेके बीचमें बीचमें बडे बडे मैदान है। जिलेकी प्रधान नदी कावेरी है। जंगलोंमे बेशकीमत लकडी होती है। चन्दनकी लकडी भी पाई जाती है। बनैले जानवर दिन दिन घटते जाते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण पहाडी लोग बन्दूक रखते है और अपने खानेके लिये सर्वदा जंगली जानवरोंको मारते हैं। पहाडियोंमे भालू और तेंदुए बहुत हैं। कभी कभी हाथी भी देख पडते है। उस जिलेमें इस्पात बहुत होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सेलम जिलेके ७६५३ वर्गमील क्षेत्रफलमें १५९९५९६ मनुष्य थे, अर्थात् १५३१८५५ हिन्दू, ५१०९२ मुसलमान, १६५६७ क्रस्तान, ४६ जैन, १८ बौद्ध और १८ अन्य। हिन्दुओंमें ९९८८५३ शैव और ५०६९४५ वैष्णव थे। हिन्दूकी जातियोंमे ३९१२८७ वनिया (जाति विशेष, जो मजूरी करते है), ३७६२२१ वेल्लाल (खेतिहर), २११८५६ परिया, ७७९९४ कैकलर (बिनाईके काम करनेवाले); ५५५२० इडैयन् (मेडिहर), ४५१५७ सानान (मद्यक), ४३३४३ कम्भाड़न (शिल्पकार), ४०३३५ सतानी (दोमसला), २८३९३ ब्राह्मण, २२५१२ सेटी (सौदागर), २०१४२ वन्नान (धोबी), १७०८६ अंबटन (नाई), १४९५० सेंयडवन् (मछुहा), ११९४९ कुसवन (कुम्भार), ३१७५ क्षत्रिय, २५२९ कणकन और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। सेलम जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सेलम जिलेके कसबे सेलममें ६७७१०, तिरुपत्तूरमें १६४९९, वाणियमबाडीमें १५८३८, सेंदामगलम्में १३३५४, और रासिपुरममें १०५३९ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त कृष्णागिरि, अत्तूर, धर्मपुरी, अम्बापेट इत्यादि छोटे कसबे है।

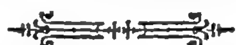
इतिहास—सेलम जिलेके उत्तरीय और दक्षिणीय भागका पुराना इतिहास अलग अलग है, क्योंकि वे भिन्न भिन्न राज्योंके अधिकारमें थे। उत्तरीय भाग पल्लव वंशके राजाओंके राज्यमें शामिल था। वह राज्य पाँचवीं सदीमें उन्नति पर था। एक समय उसका राज्य उत्तरमें नर्मदा नदी और उडीसाकी सीमासे दक्षिणमें दक्षिणी पेनार तक और पश्चिममें पश्चिमीघाटसे उत्तरी अर्काटसे पूर्वमें बङ्गालकी खाडी तक फैला था। उस समय कांचीवरम् उसकी राजधानी था। ९ वीं सदीमें जब तञ्जौरके चोला वंशके राजाने पल्लव वंशके

राजाका राज्य छीन लिया, तब उनके राज्यका केवल यही भाग उनके अधिकारमें रह गया। सेलम् जिलेका दक्षिणी भाग पूर्व कालमें कोंगा देशके राज्यका हिस्सा था। कोंगाके गङ्गा वंशके तीसरे राजा हरीवर्माने लगभग सन् २९० में अपनी राजधानी स्कन्दपुरको छोड़कर तलकाईको राजधानी बनाया।

कुछ कालके पीछे चोला वंशके राजाने और लगभग सन् १०६९ में बल्लाला वंशके राजाने दूसरे देशोंके साथ वर्तमान सेलम जिलेको लेलिया। लगभग २०० वर्षतक दोनों वंशके राजाओंके अधिकारमें वह राज्य था। लगभग सन १३५० में विजयानगरके राजाओं के अधीन था और सन १५६५ तक उनके राज्यका एक भाग बना रहा उसके पीछेभी विजयानगरके राज्यके दक्षिणका सम्पूर्ण भाग पुराने राजाओंके हाथमें रहा।

१७ वीं सदीके आरम्भमें सेलम जिला मदुराके अधीन था। सन् १७६० में मैसूरके हैदरअलीने बारहमहालको छीन लिया। सन् १७९२ की सन्धिमें हैदरअलीके पुत्र टीपूने सेलम जिलेके होसुर तालुकको छोड़कर अन्य देशोंके साथ सेलम जिला अङ्गरेजोंको देदिया। सन् १७९९ में टीपूके मारे जाने पर होसुर तालुक भी अङ्गरेजी अधिकारमें होगया।

# सत्रहवां अध्याय।



## ( मैसूरके राज्यमें ) कोलार, बंगलोर, सोमनाथपुर, शिवसमुद्रम्, श्रीरंगपट्टनम्, मैसूर और नंजनगुड़ी।

### कोलार।

सेलमके रेलवे स्टेशनसे ३७ मील ( ईरोड जंक्शनसे ११२ मील ) पूर्वोत्तर और कारकोनम् जंक्शनसे ८९ मील ( मदरास शहरसे १३२ मील ) पश्चिम-दक्षिण जालारपेटका रेलवे जंक्शन है। जालारपेटसे ४४ मील पश्चिमोत्तर ओरीपेटका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे एक रेलवे शाखा मैसूर राज्यके कोलारकी सोनाकी खानोंको गई है। ओरीपेटसे ६ मील बालाघाट माइन् अर्थात् बालाघाटकी खानका और १० मील मरकूपम्का रेलवे स्टेशन है।

ओरीपेट जंक्शनसे लगभग १० मील उत्तर ( बङ्गलोर शहरसे सड़क द्वारा ४३ मील ) पूर्व थोड़ा उत्तर ( १३ अंश, ८ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, १० कला, १८ विकला पूर्व देशान्तरमें ) मैसूर राज्यके कोलार जिलेका सदर स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसबा तथा सोनेकी खानोंके लिये प्रसिद्ध "कोलार" है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोलार कसबेमें १२१४८ मनुष्य थे, अर्थात् ९२०७ हिन्दू, २५३४ मुसलमान, ३८९ क्रस्तान और १८ जैन।

कोलार कसबेमें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ तथा अनेक आफिस और जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, हैदरअलीके पिता फतहमहम्मदखांका मकबरा तथा अनेक बारक अर्थात् सैनिकगृह हैं। वहाँ रेशमके कीड़ोंके पालनेके लिये तूतकी खेती होती है और मोटे कम्बल बनते हैं।

मैसूर राज्यमें ( विशेष करके कोलारमें ) ८ वर्गमील भूमिसे सोना निकाला जाता है। अब प्रति वर्ष करोडो रुपयेका सोना निकलता है। पचासो हजार कुली उस काममें लगे हैं।

## बंगलोर।

ओरीपेटके रेलवे स्टेशनसे ४३ मील ( जालारपेट जंक्शनसे ८७ मील ) और मद्रास शहरसे २१९ मील पश्चिम बङ्गलोर शहरका रेलवे स्टेशन है। शहरके स्टेशनसे ३ मील पूर्व फौजी छावनीका रेलवे स्टेशन मिलता है। मैसूरके राज्यमें समुद्रके जलसे ३१०० फीट ऊपर बङ्गलोर जिले तथा तालुकका सदर स्थान और मैसूर राज्यका सदर स्थान तथा प्रधान कसबा बङ्गलोर है। यह १२ अंश, ५७ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४६ कला, ५६ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बङ्गलोर शहरमे १८०३६६ मनुष्य थे, अर्थात् ९१०६२ पुरुष और ८९३०४ स्त्रियाँ। इनमे १२५२५८ हिन्दू, ३४३६४ मुसलमान, २०३२७ कृस्तान, ४०२ जैन, ६ पारसी, ५ बौद्ध, २ सिक्ख और ३ अन्य थे। मनुष्य–संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २० वाँ और मैसूरके राज्यमें पहिला शहर है।

बङ्गलोर शहर दो भागोंमे विभक्त है,—एक भाग पेटा। ( अर्थात् किलेके सहित पुरानी देशी वस्ती ) और दूसरा भाग छावनी है। दोनो १३½ वर्गमीलमे फैले हैं, अर्थात् २½ वर्गमीलमे पेटा और ११ वर्गमीलमे छावनी। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६२३१७ मनुष्य पेटामे और ९३५४० मनुष्य छावनीमे थे।

बङ्गलोरमें मैसूरके महाराजका एक सुन्दर महल है, जिसको खास आज्ञा होनेपर आदमी देख सकता है। समय समय महाराज उस महलमें रहते है। उससे ३½ मील दक्षिण कोरामङ्गल नामक सरोवरके दक्षिणका किनारा है और बङ्गलोरके पेटा अर्थात् पुरानी बस्तीके पश्चिम बगलसे लगभग ३½ मील पूर्व सैपर्स—प्रेक्टिस ग्राउण्ड है। इन्हीके मध्यमें शहरके दोनो भाग अर्थात् पेटा और छावनी फैलती है।

दक्षिण-पश्चिमके अन्तमे किला और किलाके उत्तर पेटा अर्थात् पुरानी देशी वस्ती है। उससे पूर्वोत्तर छावनी फैली है। देशी बस्तियोके बीचके मैदानमें घोडदौड़की सड़क, पार्क, परेडकी भूमि, यूरोपियनोके मकान और बहुतसे प्रधान सरकारी आफिस हैं। उत्तर भागमें रेलवे स्टेशन है। बङ्गलोरमे ८ गिरजा, बहुतसी मसजिदं और बहुत देवमन्दिर हैं। पेटा तथा छावनी दोनोंमे रवनकदार बाजार है। देशी कसबेमें मैसूर फाटक और किलेके बीचमें पबलिक बाजार है, किन्तु कारोबार सर्वत्र होता है। यूरोपियन लोगोंकी अधिक दुकान छावनीके बाजारमें है।

पेटा अर्थात् पुराने देशी शहरमे घनी आबादी है। उसकी सडके तङ्ग और नादुरुस्त है और जगह जगह सुन्दर मकान बने हुए है। पेटामें खास करके गल्ले और रूईकी सौदागरी होती है। पहिले पेटाके चारो ओर गहिरी खाई और सघन झाटी थी।

पेटामें उत्तर जेलखाना और जेलखानेसे पूर्व-दक्षिण कालिज और लगभग १ मील पूर्वोत्तर गवर्नमेंट हाउस है।

रेलवे स्टेशनसे ३०० गज दक्षिण मिलरका तालाव और उस तालावसे १ मील पूर्व हलसुर तालाव है। एक छोटी धारा दोनोंमें मिली है। दोनों तालावोंके बीचमें छावनीका बाजार, बाजारके दक्षिण–पश्चिम सिपाहियों की लाइनें, लाइनोंके थोडा पूर्व सिविल अस्पताल, लन्दन मिशन और एक गिरजा है। इनके अलावे वहाँ पैदल और सवार सेनाओंके बारक अर्थात् सैनिक गृह बने हैं। गवर्नमेंट हाउसमें मैसूरके रेजीडेंट रहते हैं। सेंट्रल जेलके चारोंओर बडा मैदान है। सेण्ट्रल कालिजमें एक बडा कमरा है, जिसमें एकही पत्थरके ३५ फीट ऊँचे स्तम्भ लगे हुए हैं। गवर्नमेंट हौससे $\frac{1}{8}$ मील दक्षिण ५२५ फीट लम्बा सरकारी आफिस है। बङ्गलोरकी छावनी दक्षिण भारतमें बड़ी छावनी है।

बङ्गलोर मैसूर राज्यका प्रधान तिजारती शहर है। आसपासकी खानोंके पत्थरसे उसमें बहुत सुन्दर मकान बने है। अनेक बडे सरोवरोंसे बङ्गलोरमें पानी आता है शहर स्वास्थ्यकर होनेके कारण शहरतलियोंमें बहुतसे यूरोपियन बसे हैं। बङ्गलोरका रेशम बहुत मजबूत और सुन्दर होता है। वहाँ रेशमी किनारोंके साथ सूतके सुन्दर कपडे बहुत तैयार होते है। गलीचेकी दस्तकारीके लिये बङ्गलोर शहर प्रसिद्ध है, वहाँके जेलखानेमें परसियन और तुर्कीचालके गलीचे, जिनको अङ्गरेज लोग भी चाहते है, बहुत बनते है। सोने और चाँदीके लैस भी अच्छे तैयार होते हैं। बङ्गलोर बंक सन् १८६८ से कायम है। सन् १८५८ में सेण्ट्रल कालिज, सन् १८६१ में १ नार्मल स्कूल और उसके दूसरे वर्ष १ इञ्जिनियारिंग स्कूल बङ्गलोरमें कायम हुआ।

किला—पेटाके दक्षिण अण्डाकार शकलमें बङ्गलोरका किला है। उसकी लंबाई उत्तरसे दक्षिणको २४०० फीट और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम को १८०० फीट है। किलेके उत्तर बगलमें पेटाकी ओर पत्थरका बना हुआ दिल्ली फाटक और दक्षिण बगलमें मैसूर फाटक है। किलेकी दीवारोंमें स्थान स्थान पर पुस्ते बने हुए हैं। किलेमें तोपखाना है और टीपूसुलतानके महलकी चंद निशानियां देखनेमें आती है। मैसूर फाटकके निकट एक छोटा मन्दिर है।

लालबाग—किलेसे लगभग १ मील पूर्व मैसूरके हैदरअलीके समयका लालबाग नामक मनोरम उद्यान है। बागमें देश देशके वृक्ष लगे हुए है, जो पासके तालावसे सींचे जाते हैं। उसमें चंद बनैले जानवर रक्खे हुए हैं। वहाँ समय समय पर फूल और फलोंकी नुमाइश होती है और साप्ताहिक नियत समयमें अङ्गरेजी बाजा बजते हैं। उस समय बहुत यूरोपियन तथा देशी लोग वहाँ देखने जाते हैं।

अजायबखाना—पेटासे १ मीलसे अधिक पूर्वोत्तर कैथोलिक कैथेड्रलके १०० गज दक्षिण "कुब्बनपार्क" में जहाँ शामको बहुत लोग टहलनेके लिये जाते है, बङ्गलोरका अजायबखाना है। देवढीमें जैन देवताकी सुन्दर प्रतिमा है। नीचेके बडे कमरेमें खानिक वस्तुएँ इत्यादिके बहुतसे नमूने और ऊपरके मञ्जिलमें भांति भांतिके मृतक जानवर तथा मछलियाँ; अनेक प्रकारके देशी भूषण तथा पोशाक इत्यादि वस्तुएँ रक्खी हुई हैं।

इतिहास—सन् १५३७ मे एक देशी सरदारने बङ्गलोरमें मिट्टीका किला बनाया। सन् १६३८ में बीजापुरके आदिलशाही बादशाहके जनरलने बङ्गलोरको ले लिया। उसके पश्चात् सुप्रसिद्ध महाराज शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुरके दक्षिणके नये राज्यके डिपोटी गवर्नर हुए उनको अन्य भूमिके साथ बङ्गलोर जागीरमें मिला। उसके बाद वह जागीर

शाहजीके पुत्र वंकाजीके हाथमें आई। पीछे वंकाजीने तंजोरकी गद्दी पाने पर मैसूरके वाडियरके हाथ बङ्गलोरको बेंच दिया। उसके उपरान्त मुगल बादशाह औरंगजेबका जनरल कासिमखां कुछ दिनों तक बङ्गलोरके किलेमें था, जिसने सन् १६८७ में बङ्गलोरको ३ लाख रुपये पर मैसूरके राजाके हाथ बेंच दिया। सन् १७३८ में मैसूरके राजाने चारों तरफके जिलेके साथ बङ्गलोरका किला हैदरअलीको जागीरमे दे दिया। हैदरअलीने उसको अपना फौजी सदर स्थान बनाया। उसने अपने स्वाधीन होनेके पहले वर्ष सन् १७६१ में मिट्टीके किलेके बढ़ानेका काम आरम्भ किया और पीछे पत्थरके पुश्तोंके साथ किलेकी दीवारको बनवाया। यद्यपि हैदरअली और उसके टीपूके राज्यके समय श्रीरङ्गपट्टनम् राजधानी था, तथापि बादशाही खानदानके लोग बङ्गलोरके किलेके महलमें बहुधा रहा करते थे।

सन् १७९१ की ७ वीं मार्चको भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसने भारी फौज लेकर बङ्गलोरपर आक्रमण किया। उन्होंने टीपूसुलतानके दिलेरीके साथ रुकावट करनेपर भी बङ्गलोरके पेटाको ले लिया। तारीख २१ मार्चको लार्ड कर्नवालिसने रातमें ११ बजेके समय किलेपर आक्रमण किया। उस समय किलेके रक्षक बहादुरखांके अधीन ८००० आदमी और शहरमें २००० पैदल तथा ५००० नये भरती किये हुए लोग थे। इनके अलावे टीपू सुलतान बड़ी भारी फौजके साथ, जो कर्नवालिसकी सेनासे अधिक थी, अङ्गरेजोंकी गफलतका समय देखता था, किन्तु किलेके किसी भागमें उसके बगलका पूरा बचाव नहीं था। उस समयकी लड़ाईमें अङ्गरेजोंके १३१ आदमी मरे तथा घायल हुए और मैसूरकी सेनाके २००० आदमीसे अधिक हत तथा आहत हुए। किलादार मारागया। किला अङ्गरेजोंके हाथमें होगया। उस रातमें टीपूसुलतानका कम्प किलेसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम जिगनीके पास था, किन्तु राति गिरनेपर वह किलेके १½ मील दूर तक आया था।

बङ्गलोरसे ३६ मील उत्तर समुद्रके जलसे ४८५६ फीट ऊपर नंदीदुर्ग नामक एक मजबूत पहाड़ी किला है, जिसको टीपू सुलतान दुर्गम समझता था, क्योंकि पश्चिमके अतिरिक्त उस पर चढ़नेका मार्ग नहीं था और पश्चिम ओर मजबूतीके साथ किलाबन्दी किया हुआ था, परन्तु सन १७९१ की तारीख १९ अक्टूबरको अङ्गरेजी जनरल मिष्टर मेडोजने उसको ले लिया।

सन् १७९९ मे श्रीरंगपट्टनम्के युद्धमें टीपूके मारे जानेपर अङ्गरेजी सरकारने मैसूरके पुराने हिन्दू राजाके वंशधरको मैसूरका राज्य लौटा दिया और श्रीरङ्गपट्टनम्में एक अङ्गरेजी फौज रक्खी। सन १८११ में श्रीरङ्गपट्टनम् रोगवर्द्धक समझकर वहाँकी सेना बङ्गलोरमें रक्खी गई और सन् १८२३ मे किलेमें हथियारखाने बने, जो अब तक हैं।

सन १८३१ में जब अङ्गरेजी गवर्नमेंटने मैसूरके राज्यको अपने प्रबन्धके अधीन किया तब प्रधान सरकारी दफ्तर बङ्गलोरके किलेके भीतरके महलमें लाये गये। सन १८६८ में [illegible] नये आफिस बनाये गये।

रेलवे—बङ्गलोर शहरमें रेलवे [illegible] हैं, जिनमें [illegible] दूसरा महसूल [illegible] पाई लगता है।

रेलके स्टेशनसे ३०० गज दक्षिण मिलरका तालाब और उस तालावसे १ मील पूर्व हलसुर तालाब है। एक छोटी धारा दोनोमें मिली है। दोनों तालावोंके बीचमें छावनीका बाजार, बाजारके दक्षिण–पश्चिम सिपाहियों की लाइनें, लाइनोंके थोडा पूर्व सिविल अस्पताल, लन्डन मिशन और एक गिरजा है। इनके अलावे वहाँ पैदल और सवार सेनाओंके बारक अर्थात् सैनिक गृह बने हैं। गवर्नमेंट हाउसमें मैसूरके रेजीडेंट रहते हैं। सेंट्रल जेलके चारोओर बडा मैदान है। सेण्ट्रल कालिजमें एक बडा कमरा है, जिसमें एकही पत्थरके ३५ फीट ऊंचे स्तम्भ लगे हुए है। गवर्नमेंट हौससे ½ मील दक्षिण ५२५ फीट लम्बा सरकारी आफिस है। बङ्गलोरकी छावनी दक्षिण भारतमें बडी छावनी है।

बङ्गलोर मैसूर राज्यका प्रधान तिजारती शहर है। आसपासकी खानोंके पत्थरसे उसमें बहुत सुन्दर मकान बने है। अनेक वडे सरोवरोंसे बङ्गलोरमें पानी आता है शहर स्वास्थ्यकर होनेके कारण शहरतलियोंमें बहुतसे यूरोपियन बसे हैं। बङ्गलोरका रेशम बहुत मजबूत और सुन्दर होता है। वहाँ रेशमी किनारोंके साथ सूतके सुन्दर कपडे बहुत तैयार होते है। गलीचेकी दस्तकारीके लिये बङ्गलोर शहर प्रसिद्ध है, वहाँके जेलखानेमें परसियन और तुर्की चालके गलीचे, जिनको अङ्गरेज लोग भी चाहते है, बहुत बनते है। सोने और चाँदीके लैम्प भी अच्छे तैयार होते है। बङ्गलोर बंक सन् १८६८ से कायम है। सन् १८५८ में सेण्ट्रल कालिज, सन् १८६१ में १ नार्मल स्कूल और उसके दूसरे वर्ष १ इञ्जिनियरिंग स्कूल बङ्गलोरमें कायम हुआ।

किला—पेटाके दक्षिण अण्डाकार शकलमें बङ्गलोरका किला है। उसकी लंबाई उत्तरसे दक्षिणको २४०० फीट और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम को १८०० फीट है। किलेके उत्तर बगलमें पेटाकी ओर पत्थरका बना हुआ दिल्ली फाटक और दक्षिण बगलमें मैसूर फाटक है। किलेकी दीवारोंमें स्थान स्थान पर पुस्ते बने हुए हैं। किलेमें तोपखाना है और टीपूसुलतानके महलकी चंद निशानियां देखनेमें आती है। मैसूर फाटकके निकट एक छोटा मन्दिर है।

लालबाग —किलेसे लगभग १ मील पूर्व मैसूरके हैदरअलीके समयका लालबाग नामक मनोरम उद्यान है। बागमें देश देशके वृक्ष लगे हुए हैं, जो पासके तालाबसे सींचे जाते है। उसमें चंद बनैले जानवर रक्खे हुए हैं। वहाँ समय समय पर फूल और फलोंकी नुमाइश होती है और सप्ताहिक नियत समयमें अङ्गरेजी बाजा बजते हैं। उस समय बहुत यूरोपियन तथा देशी लोग वहाँ देखने जाते हैं।

अजायबखाना—पेटासे १ मीलसे अधिक पूर्वोत्तर कैथोलिक कैथेड्रलके १०० गज दक्षिण "कुब्बनपार्क" में जहाँ शामको बहुत लोग टहलनेके लिये जाते है, बङ्गलोरका अजायबखाना है। देवढ़ीमें जैन देवताकी सुन्दर प्रतिमा है। नीचेके वडे कमरेमें खानिक वस्तुएँ इत्यादिके बहुतसे नमूने और ऊपरके मञ्जिलमें भांति भांतिके मृतक जानवर तथा मछलियाँ; अनेक प्रकारके देशी भूषण तथा पोशाक इत्यादि वस्तुएँ रक्खी हुई हैं।

इतिहास—सन् १५३७ में एक देशी सरदारने बङ्गलोरमें मिट्टीका किला बनाया। सन् १६३८ में बीजापुरके आदिलशाही बादशाहके जनरलने बङ्गलोरको ले लिया। उसके पश्चात् सुप्रसिद्ध महाराज शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुरके दक्षिणके नये राज्यके डिपोटी गवर्नर हुए उनको अन्य भूमिके साथ बङ्गलोर जागीरमें मिला। इसके बाद वह जागीर

शाहजीके पुत्र वंकाजीके हाथमें आई। पीछे वंकाजीने तंजोरकी गद्दी पाने पर मैसूरके वाडियरके हाथ बङ्गलोरको बेंच दिया। उसके उपरान्त मुगल बादशाह औरंगजेबका जनरल कासिमखां कुछ दिनों तक बङ्गलोरके किलेमें था, जिसने सन् १६८७ मे बङ्गलोरको ३ लाख रुपये पर मैसूरके राजाके हाथ बेच दिया। सन् १७३८ में मैसूरके राजाने चारो तरफके जिलेके साथ बङ्गलोरका किला हैदरअलीको जागीरमे दे दिया। हैदरअलीने उसको अपना फौजी सदर स्थान बनाया। उसने अपने स्वाधीन होनेके पहले वर्ष सन् १७६१ में मिट्टीके किलेके बढानेका काम आरम्भ किया और पीछे पत्थरके पुश्तोके साथ किलेकी दीवारको बनवाया। यद्यपि हैदरअली और उसके टीपूके राज्यके समय श्रीरङ्गपट्टनम् राजधानी था, तथापि बादशाही खानदानके लोग बङ्गलोरके किलेके महलमें बहुधा रहा करते थे।

सन् १७९१ की ७ वीं मार्चको भारतवर्णके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसने भारी फौज लेकर बङ्गलोरपर आक्रमण किया। उन्होने टीपूसुलतानके दिलेरीके साथ रुकावट करनेपर भी बङ्गलोरके पेटाको ले लिया। तारीख २१ मार्चको लार्ड कर्नवालिसने रातमे ११ बजेके समय किलेपर आक्रमण किया। उस समय किलेके रक्षक बहादुरखांके अधीन ८००० आदमी और शहरमे २००० पैदल तथा ५००० नये भरती किये हुए लोग थे। इनके अलावे टीपू सुलतान बडी भारी फौजके साथ, जो कर्नवालिसकी सेनासे अधिक थी, अङ्गरेजोकी गफलतका समय देखता था, किन्तु किलेके किसी भागमे उसके बगलका पूरा बचाव नहीं था। उस समयकी लडाईमें अङ्गरेजोके १३१ आदमी मरे तथा घायल हुए और मैसूरकी सेनाके २००० आदमीसे अधिक हत तथा आहत हुए। किलादार मारागया। किला अङ्गरेजोंके हाथमें होगया। उस रातमे टीपूसुलतानका कम्प किलेसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम जिगनीके पास था, किन्तु राति गिरनेपर वह किलेके १½ मील दूर तक आया था।

बङ्गलोरसे ३६ मील उत्तर समुद्रके जलसे ४८५६ फीट ऊपर नंदीदुर्ग नामक एक मजबूत पहाड़ी किला है, जिसको टीपू सुलतान दुर्गम समझता था, क्योंकि पश्चिमके अतिरिक्त उस पर चढ़नेका मार्ग नहीं था और पश्चिम ओर मजबूतीके साथ किलाबन्दी किया हुआ था, परन्तु सन् १७९१ की तारीख १९ अक्टूबरको अङ्गरेजी जनरल मिष्टर मेडोजने उसको ले लिया।

सन् १७९९ में श्रीरंगपट्टनम्के युद्धमें टीपूके मारे जानेपर अङ्गरेजी सरकारने मैसूरके पुराने हिन्दू राजाके वंशधरको मैसूरका राज्य लौटा दिया और श्रीरङ्गपट्टनम्मे एक अङ्गरेजी फौज रक्खी। सन १८११ में श्रीरङ्गपट्टनम् रोगवर्द्धक समझकर वहॉकी सेना बङ्गलोरमें रक्खी गई और सन् १८२३ में किलेमें हथियारखाने बने, जो अब तक हैं।

सन् १८३१ में जब अङ्गरेजी गवर्नमेंटने मैसूरके राज्यको अपने प्रबन्धके अधीन किया तब प्रधान सरकारी महकमे बङ्गलोरके किलेके भीतरके महलमें लाये गये। सन् १८६८ में छावनीमें नये आफिस बनाये गये।

रेलवे—बङ्गलोर शहरसे रेलवे लाइन ४ ओर गई है, जिनके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २ पाई लगता है।

(१) बङ्गलोरसे पश्चिम-दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
४६ मद्दूर ।
७४ फ्रेंचरक्स ।
७७ श्रीरङ्गपट्टनम् ।
८६ मैसूर ।
१०१ नञ्जनगुडी ।

(२) बङ्गलोर शहरसे पश्चिमोत्तर सदर्न मरहटा रेलवे है, लोंडा जंक्शनसे आगे लाइन उत्तर गई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
४० तमकूर ।
१०० आर्सीकेर ।
११० बानावार ।
१२८ बिरूर ।
१५८ रामगिरि ।
२०७ हरिहर ।
२८८ हुबली जंक्शन।
३०० धारवाड़ ।
३४४ लोंडा ।
३७७ बेलगांव जंक्शन ।
४१३ गोकाकरोड ।
४६२ मिराज जंक्शन ।
५४४ सितारारोड ।
५५३ बाथर ।
६२२ पूना जंक्शन ।

हुबली जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ३६ मील गदग जंक्शन, ७८ मील होसपेट, १२९मील बल्लारी, और १५९ मील गुन्टकल जंक्शन। गदग जंक्शनसे उत्तर ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन ।

लोंडा जंक्शनसे पश्चिम १५ मील कैसिलरक ६६ मील गोआ ।

मिराज जंक्शनसे पश्चिम २९ मील कोलापुर ।

(३) बङ्गलोर शहरसे उत्तर सदर्न मरहटा रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
६२ हिन्दूपुरम् ।
१११ धरमवरम् जंक्शन ।
१७४ गुंटकल जंक्शन ।

धरमवरम् जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन, पकाला जंक्शनसे पूर्वोत्तर १९ मील चन्द्रगिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुंटा जंक्शन, पकाला जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ३९ मील कटपदी जंक्शन, ४५ मील वेलूर और १३८ मील विल्लुपुरम् जंक्शन ।

(४) बङ्गलोर शहरसे पूर्व-दक्षिण मदरास रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
३ बङ्गलोर छावनी ।
४३ ओरीपेट जंक्शन ।
८७ जालारपेट जंक्शन ।

ओरीपेट जंक्शनसे पूर्वोत्तर ७ मील बालाघाट और १० मील मरकूपम ।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण ७५ मील सेलम और ११२ मील ईरोड जंक्शन और जालारपेटसे पूर्वोत्तर ५१ मील कटपदी जंक्शन, ६६ मील आरकाट, ८९ मील आरकानम जंक्शन और १३२ मील मदरास शहर ।

बङ्गलोर शहरसे एक सडक पूर्व ओर जालारपेट और कटपदी जंक्शनके पाससे होकर मदरास शहरको, दूसरी सडक पश्चिम कुछ दक्षिण श्रीरङ्गपट्टनम होकर कननूरको, तीसरी सड़क पश्चिम ओर हसन कसबे होकर मङ्गलूरको और चौथी सडक पश्चिमोत्तर तमकूर, हरि-हर, हुबली और बेलगांवं होकर कोल्हापुर तथा पूनाको गई है।

# सोमनाथपुर।

बङ्गलोर शहरके रेलवे स्टेशनसे ४६ मील दक्षिण-पश्चिम मद्दूरका रेलवे स्टेशन है। मद्दूरके पास शिवसा नदीपर, जिसको कदंवनदीभी कहते है, ७ मेहराबियोंका एक पुल और योगनृसिंह स्वामी तथा वरदराजके दो बडे मन्दिर है। मद्दूरसे १२ मील दूर रामगिरि नामक पहाडके ऊपर कोदण्डराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्रका मन्दिर है । ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थानमें सुग्रीका मधुवन था। मद्दूरके स्टेशनसे १७ मील दक्षिण, बङ्गलोरसे श्रीरग-पट्टनम् होकर कननूर जाने वाली सडकके पास मैसूर राज्यमें तालुकका सदर स्थान मडवल्ली नामक प्रसिद्ध गाँव है, जिसको हैदरअलीने अपने पुत्र टीपूको दिया था। मडवल्लीसे १२ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूरके राज्यमें सोमनाथपुर गाँव प्रसन्नचन्द केशवके मन्दिर होनेके कारण प्रसिद्ध है।

प्रसन्नचन्द केशवका मन्दिर-सोमनाथपुरमें एकही स्थानपर शिखरदार ३ बड़े मन्दिर हैं,-मध्यमे प्रसन्नचन्द केशवका, दक्षिण गोपालजीका और उत्तर जनार्दन भगवान्का। मन्दिरोंमे नीचेसे ऊपर तक शिल्पकारीका सुन्दर काम बना हुआ है। चारोओरके बाहरकी नेंवोपर महाभारत, रामायण तथा भागवतकी बहुतसी कथाओंकी घटनाओके चित्र पत्थरो-की नकाशीमे अलग अलग बने हुए है। मन्दिरके चारोओर बहुतसी टूटी फूटी पुरानी प्रतिमा पडी है । ऐसा प्रसिद्ध है कि हौसला वल्लाल राजाओके प्रसिद्ध शिल्पकार और इमारतकी विद्यामें प्रख्यात कारीगर डंकनाचारीने बारहवीं सदीमें इन मन्दिरोंको बनाया था । दरवाजेके पासके शिलालेखसे जान पड़ता है कि हौसला वल्लाल वंशके सोमनाथने, जो राज्यका बडा अफसर भी था, सन् १२७० ईस्वीमे उक्त मन्दिरोंको बनवाया था। सोमनाथपुरमें उजडा पुजडा एक पुराना बड़ा शिवमन्दिर है।

# शिवसमुद्रम्।

मद्दूरके रेलवे स्टेशनसे १७ मील दक्षिण मडवल्ली-गॉव और मडवल्लीसे १२½ मील दक्षिण शिवसमुद्रम्के जलप्रपात है। मैं मद्दूरके रेलवे स्टेशनके पास किरायेकी बैलगाडीपर सवार हो शिवसमुद्रम् गया। वहाँ कावेरी नदी दो धारा होकर उत्तरको बहती है। दोनो धाराओंसे दक्षिणसे उत्तर तक लगभग ३ मील लम्बा और ¾ मील चौडा ( शिवसमुद्रम् नामक ) टापू बन गया है, जिसको कनडी भाषामें हगुरा कहते हैं। कावेरीके पश्चिमवाली धारा मैसूरके राज्य और कोयम्बुतूर जिलेकी सीमा बनती है। शिवसमुद्रम् टापू कोयम्बुतूर जिलेमें है। दोनो धाराये टापूके उत्तरी छोरके पास ऊपरसे लगभग २०० फीट नीचे गिर-कर एकमें मिल जाती हैं। उन्हींको जलप्रपात कहते हैं। धाराओके अलग होनेके स्थानसे उनके मिलजानेका स्थान लगभग ३०० फीट नीचा है। दोनों धाराओंमे पश्चिमवाली धारा बड़ी है, जिसमें एक दूसरा छोटा टापू बन गया है । कावेरीकी दोनो धाराओपर पुल

बने हैं। वर्षा कालमें धारा बडी तेज होजाती है। उस समय वे विना पुलके पार होने योग्य नहीं रहतीं।

श्रीरङ्गनाथका मन्दिर—कावेरीनदीमें श्रीरङ्गमके ३ टापू हैं—सेरिंगापट्टम शहरके पास श्रीरङ्गपट्टनमके टापूमें आदिरङ्गम्, शिवसमुद्रम्के टापूको मध्यरंगम और तिरूचनापल्लीके पासके श्रीरङ्गम टापूको अन्तरंगम् कहते है। शिवसमुद्रम्के टापूमें श्रीरंगनाथ भगवान्का मन्दिर है। विमान अर्थात् खास मन्दिरमें भगवान् पूर्व मुख करके भुजंगपर शयन करते हैं।

शिवसमुद्रम्से दक्षिण बिड़िगिरि रंग नामक पर्वतके ऊपर चम्पकारण्य नामक क्षेत्रमें श्रीनिवास भगवान्का मन्दिर और भार्गवनदी तीर्थ है। वहाँ चम्पकका एक बहुत पुराना बडा वृक्ष है, जिसमें सर्वदा फूल फूलता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि परशुरामजीने अपनी मातृ-हत्याकी निवृत्तिके लिये उस स्थानमें तप किया था।

कावेरीका जलप्रपात—शिवसमुद्रम् टापूके उत्तरके छोरपर कावेरीनदीकी दोनों धारा लगभग २०० फीट ऊपरसे विशाल शब्द करती हुई नीचे गिरती हैं। उनमेंसे पश्चिमी शाखाकी धाराके जलप्रपातको गगनचुकी तथा गगनच्युत तीर्थ कहते हैं उसका पानी एक छोटे टापूके चारो ओर चक्कर लगा कर बडे गर्जके साथ नीचेकी चट्टान पर गिरता है। गगनचुकीसे लगभग १ मील पूर्व ओर कावेरीकी पूर्वी शाखासे बना हुआ बडचुकी नामक जलप्रपातका बड़ा फैलाव है, वह वर्षा कालमें ¼ मीलकी चौडाईकी विना टूटी हुई एक धारा होकर बडे शब्दके साथ ऊपरसे नीचे गिरता है; किन्तु ग्रीष्मकालकी ऋतुओंमें वह अनेक धारा होकर नीचे गिरता है, इसलिये उसको लोग सप्तधारा तीर्थ कहते हैं। कभी कभी उसकी १४ धारा तक होजाती है, ( उसके पास बहुत सुगमतासे आदमी जा सकता है ) पीछे जल-प्रपातका पानी एक सकीर्ण स्थानमें इकट्ठा होकर ३० फीट नीचे एक कुण्डमें तेजीके साथ गिरता है। दोनो जलप्रपातोंका जल नीचे गिरनेके उपरान्त सकीर्ण मार्ग होकर आगे रेलता है और शिवसमुद्रम् टापूके पूर्वोत्तर जाकर एक धारा होकर पूर्वको वहता है, अर्थात् वहाँ कावेरीकी दोनों शाखा एकमें फिर मिल जाती हैं। जलप्रपातोंको देखनेका वर्षाकाल सबसे अच्छा समय है।

इतिहास—कहावतके अनुसार विजयानगरके राजाके सबन्धी गगा राजाने १६ वीं सदीके आरम्भमें कावेरीके टापूमें शिवसमुद्रम् नामक नगर बसाया, जिसकी चन्द निशा-नियाँ चारों ओर देखनेमें आती हैं। उसी नगरके नामसे टापूका नाम शिवसमुद्रम् करके प्रसिद्ध है। टापूका पुराना नाम हेगूरा है। गंगा राजाके वंशधर केवल ९ पुस्त तक थे।

सन् १७९१ में जब लार्ड कर्नवालिसकी सेनाने श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण किया, तब टीपू सुलताननें चारो ओरके देशको वरबाद करके सम्पूर्ण निवासी और पशुओंको शिवसमुद्रम्के टापूमें खदेर दिया। उसके पीछे सम्पूर्ण टापूमें जंगल लग गया, जंगली जान-वर होगये और नदीके ऊपरके पत्थरके पुल टूट फूट गये। सन् १८२५ में मैसूरके रेजी-डेण्टके कर्मचारी रामस्वामी मुदलेयारने कावेरीकी दोनों धाराओंके ऊपरके पुलोंको और टापूके भीतरके मन्दिरको वहुतसा रुपया खर्च करके दुरुस्त करवा दिया। उसने एक डाक बँगला बनवाया, जिसमें यूरोपियन दर्शक लोग ठहरते हैं।

# श्रीरंगपट्टनम् ।

मद्दूरके रेलवे स्टेशनसे ३१ मील ( वंगलोर शहरसे ७७ मील ) दक्षिण-पश्चिम और मैसूर शहरसे ९ मील पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनम्का रेलवे स्टेशन है । मैसूर राज्यमें ( १२ अंश, २५ कला, ३३ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४३ कला, ८ विकला पूर्व देशान्तरमें ) कावेरीनदीके श्रीरंगपट्टनम् नामक टापू पर श्रीरंगपट्टनम् कसवा तथा पवित्र स्थान है, जिसको बहुत लोग सेरंगापट्टम् भी कहते हैं । श्रीरङ्गम् नामक विष्णुकी मूर्त्तिके नामसे उस टापू तथा कसवेका ऐसा नाम पडा है । श्रीरंगपट्टनम्से एक छोटी सडक दक्षिण-पश्चिम मैसूर शहरको और दूसरी सड़क पूर्वोत्तर वंगलोर शहरको और पश्चिम कुछ दक्षिण कननूर बन्दरगाहको गई है । मैसूरकी ओर कावेरी पर पुल बना है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गञ्जाम शहरतलीके साथ श्रीरंगपट्टनम्में १२५५१ मनुष्य थे, अर्थात् १०५८७ हिन्दू, १७८४ मुसलमान, १७८ कृस्तान और २ जैन । मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मैसूरके राज्यमें तीसरा कसवा हैं ।

श्रीरंगपट्टनम्का टापू पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ३ मील लंबा ओर १ मील चौडा है । टापूके पश्चिम किनारेपर कावेरीके पास किला और पूर्व किनारेके पास गंजाम नामक शहरतलीके निकट लालवाग है । लालवाग और दरियादौलत वागके बीचमें गंजाम शहरतली है । टापूमें धान और ऊखकी फसिल होती है । टापूका जल वायु रोगवर्द्धक है, वहाँ मलेरिया बुखार बहुत होता है । गञ्जाम रवनकदार वस्ती है, उसमे प्रतिवर्ष ३ मेले होते हैं ।

लालवाग—टापूके पूर्व किनारेके पास लालवाग है, जिसमे टीपूसुलतानका बनवाया हुआ हैदरअलीका सुन्दर मकवरा बना हुआ है । मकवरेके ऊपर मध्यमें एक गुम्वज तथा चारो कोनोंपर एक एक मीनार और चारो बगलोमें काले पत्थरके स्तम्भ लगे हुए सायवान है । मकवरेमें हाथीदाँत जडे हुए दोहरे किवाड लगे है, जिनको मार्किस डलहोसीने, जो सन् १८४८ से १८५६ तक भारतवर्षके गवर्नर जनरल थे, दिया था । मकवरेमें हैदरअलीकी कवरके वगलमें टीपूसुलतानकी कब्र है । टीपूकी कवरपर उसकी मृत्युका समय सन् १२१३ हिजरी ( सन् १७९९ ई० ) लिखा हुआ है ।

किला—टापूके पश्चिमके किनारेपर टीपूसुलतानका वनवाया हुआ पंच पहला शकलका किला है । उसकी सवसे अधिक लवाई १$\frac{1}{3}$ मील और चौडाई १ मील है । किलेकें उत्तरका वगल, जो सवसे वड़ा है, लगभग १ मील लम्बा है । किलेकी गहरी खाई पत्थर काटकर वनी थी ।

किलेके भीतर पहिलेके हिन्दू राजाओंके महलकी चन्द निशानियाँ, टीपूसुलतानके महलका खण्डहर, जो चन्दनकी लकडीका गोदाम बना है, टीपूसुलतानकी बनवाई हुई एक बड़ी जामामसजिद, जिसकी मीनारोके ऊपर चढनेसे श्रीरङ्गपट्टनम् और आस पासका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है, और रंगनाथस्वामीका पुराना मन्दिर है । किलेके भीतरके बहुत मकान गिरगये हैं । जो वचे हैं वह हीन दशामें है ।

किलेके वाहर उसकी दीवारके पास दरियादौलतवाग नामक एक उत्तम इमारत है, जिसको टीपूने गरमीके दिनोमें अपने रहनेके लिये वनवाया था । इमारतमे लडाईको जाहिर

करते हुए सुन्दर चित्र बने हैं। वह इमारत श्रीरङ्गपट्टनम् पर आक्रमण होनेसे पहिलेही बद्-शकल होचुकी थी, किन्तु अङ्गरजी अफसर वेलस्ली उसको मरम्मत करवा कर उसमें ३ वर्ष रहा था।

श्रीरंगनाथका मन्दिर—कावेरीनदीमें रङ्गम्के ३ टापू हैं। इस टापूको आदिरंगम्, शिवसमुद्रम्के टापूको मध्यरङ्गम् और तिरुचनापल्लीके पासके टापूको अन्तरङ्गम् कहते हैं, क्योंकि कावेरीमें पहिले श्रीरंगपट्टनम्, उसके बाद शिवसमुद्रम् और उसके पीछे श्रीरंगम् मिलता है।

श्रीरंगपट्टनम्के किलेमें श्रीरंगनाथस्वामीका पुराना बड़ा मन्दिर, जो श्रीरंगपट्टनम् शहरसे पहिले बना था, खडा है। मन्दिरमें श्रीरंगनाथस्वामीकी विशाल चतुर्भुज मूर्त्ति शेष-नागपर शयन करती है।

श्रीरंगपट्टनम्से पूर्व करिगट्टे नामक पहाड़ीके ऊपर श्रीनिवास भगवान्का मन्दिर है। श्रीरंगपट्टनम्से २४ मील पूर्व-दक्षिण कावेरी और कपिलाके संगमके निकट तिरुमकूल नरसी-पुरसे गुञ्जानरसिंहका मन्दिर है।

इतिहास—देशी कहावतसे जान पडता है कि गौतम ऋषिने कावेरीके टापूमें रङ्गनाथ-स्वामीका पूजन किया और उस स्थानका नाम श्रीरङ्गपट्टनम् रक्खा। तामिल भाषाकी एक पुस्तकमें लिखा है कि श्रीरङ्गपट्टनम् टापूमें जङ्गल लग गया था। शाका ८१६ (सन् ८९४ ईस्वी) के वैशाख सुदी सप्तमीके दिन गङ्गा वंशके अन्तिम राजाके राज्यके समय तिरुमल-यन्ने टापूके पश्चिम भागमें रङ्गनाथस्वामी बनवाया।

सन् ११३३ में सुप्रसिद्ध रामानुजस्वामीने बल्लाल वंशके राजा हयशालको जैन धर्मसे वैष्णव धर्ममें प्रवृत्त किया। राजाने रामानुजस्वामीको अष्टग्रामके सूबेके साथ श्रीरंगपट्टनम् टापूको दे दिया। रामानुजस्वामीने उनके प्रबन्धके लिये अनेक कर्मचारी नियुक्त किये। ऐसा प्रसिद्ध है कि रामानुजके कर्मचारियोंके वंशधरोंमेसे एकने विजयानगरके राजासे इजाजत लेकर सन् १४५४ में श्रीरंगपट्टनम्मे मिट्टीका किला बनवाया और कलशवाड़ीके पासके, जो ३ मील दूर था, बहुतसे जैन मन्दिरोंके असबाबोंसे श्रीरंगनाथस्वामीके मन्दिरको बढ़ाया।

इतिहासोंसे विदित होता है कि पीछे विजयानगरके राजाने श्रीरंगरायलकी पदवी देकर श्रीरंगपट्टनम्में एक राजप्रतिनिधि कायम किया, जिसके उत्तराधिकारी श्रीरंगरायलके खिताबके साथ श्रीरंगपट्टनम्में हुकूमत करते चले आये। सन् १६१० में मैसूरके राजा वोडियरने तिरुमलई नामक श्रीरंगरायलको परास्त किया। तिरुमलई मैसूरके अधीन हुआ। उसके पश्चात् मैसूरके हिन्दू राजा तथा हैदरअली और टीपूसुलतानके राज्यके समय श्रीरंगपट्टनम् सर्वदा राज्यका सदर स्थान बना रहा। हैदरअली और टीपूके राज्यके समय वह मैसूर राज्यकी राजधानी था। टीपूके राज्यके समय श्रीरंगपट्टनम्में लगभग १५०००० मनुष्य बसे थे। टीपूने किलेकी वर्तमान किलाबन्दियोंको बनवाया। लोग कहते हैं कि उसीने गञ्जाम शहरतलीको बसाया था।

सन् १७९१ में हिन्दके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिस स्वयं सेनापति बनकर भारी सेनाके साथ श्रीरंगपट्टनम्के पास आये, किन्तु रसदकी कमीके कारण वहाँसे वह लौट गये।

सन् १७९२ की ५ फरवरीको लार्ड कर्नवालिसके मातहत १०००० गोरे, २७००० देशी फौज, जिनके साथ मददके लिये ४५००० महाराष्ट्र और हैदरावादके वहुतसे घोड सवार थे, ४०० तोपोंके साथ टीपू सुलतानके किलावन्दी कम्पके सामने आये। किलेके वाहर कावेरी नदीके उत्तरकी झाडीमें टीपूका कम्प था। उसकी फौजमे ५००० सवार और ४०००० से अधिक पैदल सिपाही थे। ता० ६ फरवरीकी रातमे अङ्गरेजी कम्पके ९००० आदमियोंने ३ दल होकर झाडीमे रेल दिया। टीपूकी फौज हटकर किले और पेटा (शहर) में चली गई। कावेरी लांघनेके समय अङ्गरेजी फौजके वहुतेरे आदमी डूव गये। अङ्गरेजोने दुश्मनके कम्पको ले लिया। ता० १६ फरवरीको जव वम्बई हातेमे ९००० आदमियोंकी फौज पहुँच गई, तव ता० २४ फरवरीको टीपूने सुलहका पयगाम किया, जिसके अनुसार टीपूने अपने राज्यका आधा भाग अङ्गरेजो और उनके मददगारोको छोड दिया और लड़ाईके खर्चका ३ करोड रुपया उनको दिया।

सन् १७९९ में गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज्ली मुहिमके वन्दोवस्तके लिये शाही शानसे मद्रासमें दाखिल हुए। वहाना यह था कि टीपूने अङ्गरेजोके विरुद्ध फरासीसियोंसे साजिश की है। अङ्गरेजोकी एक फौज निजामकी फौजके साथ मदरासमे मैसूरको रवाना हुई और दूसरी फौज पश्चिमी किनारेसे उतरी। टीपू लडाईके मैदानमें थोड़ा मोकाविला करके श्रीरङ्गपट्टनको लौट गया। जव उसकी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् पर हमला हुआ, तव वडी वहादुरीसे लडकर वह मारा गया। उसके पश्चात् लार्ड वेलेज्लीने मैसूरके पुराने हिन्दू राजाओंके घरानेके एक लडके को टीपूके राज्यके मध्य भाग को, जो मैसूर का पुराना राज्य था, देकर मसनद पर वैठाया और वाकी राज्यको निज़ाम, मरहठो और अंगरेजोंने वॉट लिया। लार्ड वेलेज्लीने टीपूके वेटोंके लिये निहायत अच्छी पेंशन मुकर्रर की। वे पहले वेलूर मे रहते थे, पीछे कलकत्तेमे रहने लगे। उस खांदानका शाहजादा गुलाम महम्मद कलकत्तेका वडा रईस था, जो सन् १८७७ में मरगया।

टीपूकी मृत्यु के वाद मैसूर शहर, उस राज्यकी राजधानी हुआ, तबसे श्रीरंगपट्टनम् की घटती तेजीसे होने लगी। सन् १८११ में श्रीरंगपट्टनम् के जलवायु रोगवर्द्धक होनेके कारण वहांकी अंगरेजी फौज वंगलोरमे हटा दी गई।

## मैसूर।

श्रीरंगपट्टनम् से ९ मील और वंगलोर शहरसे ८६ मील दक्षिण–पश्चिम (मदरास शहरसे ३०५ मील पश्चिम) मैसूर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्यमे चामुण्डा पहाड़ीके पश्चिमोत्तरकी नेवके पास मैसूर राज्यके दक्षिण भागमें (१२ अंश १८ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४१ कला, ४८ विकला पूर्व देशांतरमे) मैसूरके महाराजकी राजधानी मैसूर एक शहर है। महिषासुर शब्दका अपभ्रंश मैसूर शब्द है, महिषासुर शब्दसे महिसुर और महिसुरसे मैसूर हो गया है। (महिषासुरकी कथा भारत-भ्रमण–५ वें खण्ड के धामाकोटीके वृत्तांत में है) मैसूर शहरसे १ सड़क पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनमूको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ मैसूर शहरमें ७४०४८ मनुष्य थे, अर्थात् ३६६९१ पुरुष और ३७३५७ स्त्रियाँ। इनमें ५६८१६ हिन्दू, १५३०७ मुसलमान,

१६४० क्रस्तान, २३६ जैन, २७ सिक्ख, १७ पारसी और ५ यहूदी थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्षमें ४३ वां और मैसूरके राज्यमे दूसरा शहर है।

मैसूर शहरमे सुन्दर चौडी सड़कें बनी हुई हैं। बहुतसे दो मंजिले तीन मंजिले सुन्दर मकान बने हैं और बहुतेरे कपडे पोश हैं। शहर साफ है। वर्षाकालमें शहरका पानी बडी तेजीके साथ दक्षिण ओर जाकर देवराज नामक बडे जलाशयमें और किलेका पानी देवराज जलाशयसे ४ मील दक्षिण एक दूसरे बडे जलाशयमें गिरता है।

शहरके दक्षिण किला, किलेके भीतर मैसूरके महाराजका महल, किलेके बाहर उसके पश्चिम वाले फाटकके सामने जगमोहन महल नामक उत्तम मकान ( जिसको यूरोपियन अफसरोंके रहनेके लिये महाराजने बनवाया है ), शहरके पूर्व यूरोपियन लोगोंकी बहुत सी कोठियाँ, किलेसे लगभग ६०० गज पूर्व महाराजका ग्रीष्म महल और किलेसे $\frac{3}{4}$ मील दक्षिण शहरके पूर्वी भागमे ऊँची भूमिपर रेजीडेंसी है। पुरानी रेजीडेंसीमे शेशनकी कचहरी होती है और महाराजके यूरोपियन मेहमान रहते हैं। दीवानके महलको ड्यूक आफ वेलिंटनने अपने रहनेके लिये बनवाया था।

इनके अलावे मैसूर शहरमे महाराजका कालिज, वेस्लियन मिशन कालिज और श्वेत-वाराह, लक्ष्मीनारायण, अष्टभुजी इत्यादि देवताओंके मन्दिर तथा किलेके महलके एक भागमें स्त्रियोका बड़ा स्कूल है, जिसमें लगभग ६०० स्त्रियाँ पढती है।

किला और महाराजका महल–शहरके दक्षिण चतुर्भुज शकलका किला है। किलेके तीन बगलकी पत्थरकी दीवारें प्रत्येक ४५० गज लम्बी और दक्षिणकी दीवार उससे कुछ अधिक लम्बी है। किलेके उत्तर, दक्षिण और पश्चिम फाटक, चारोंओर खाई और पूर्व तरफ देवराज तालाब है। किलेकी बनावट अच्छी नहीं है। किलेके भीतर महाराज तथा राज वंशके लोगो और महलके कर्मचारियोके मकान हैं। सडकें तंग और टेढ़ी हैं। सामने पश्चिम जेलखाना है।

किलेके भीतर महाराजका अत्युत्तम महल है। उसका अगवास पूर्व ओर है। महलके भीतर और उसके अगवासमें चित्रकारीका काम है। महलके प्रधान फाटकसे एक रास्ता एक आंगनमे गया है, जिसके पश्चिम बगलके दरवाजेसे एक मार्ग महलके पश्चिम भागमे स्त्रियोंके कमरोंमे गया है। उत्तर बगलमें हथियारखाना, लाइब्रेरी और कई एक आफिस हैं। ऊपरके अम्बाविलास नामक उत्तम कमरेमें मैसूरके सम्बन्धी अफसरोंकी तस्वीरे है। किवाड़ोमें चाँदी और हाथीदांत जड़े हुए है।

महलके एक भागके विशाल कमरेमें महाराजका राजसिंहासन है। सिंहासन अंजीर की लकड़ीका बना हुआ है, जिसपर हाथीदांत तथा सोने चाँदीके जड़ावका सुन्दर काम बना है। लोग कहते हैं कि मुगल बादशाह औरंगजेबने सन् १६९९ में चिका देवराजको यह सिंहासन दिया था। उसके पीछे उसपर सोना चाँदी लगाया गया। मैसूरके सब राजाओको इसी सिंहासनपर राज तिलक होता है और प्रधान उत्सवोके समय महाराज उस पर बैठते हैं। महलके आगे मैदान और अन्य बगलोमे गरीब लोगोंके मकान है।

चामुण्डादेवी—मैसूरके किलेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके जलसे लगभग ३५०० फीट ऊंची चामुण्डा नामक पहाड़ी है। पहाड़ीके ऊपर चामुण्डादेवीका, जिसको महिषमर्दिनी

भी कहते है, मन्दिर बना हुआ है। नीचेसे पहाडीके शिखरतक ५३ मीलकी अच्छी सडक बनी है। दो तिहाई मार्गके ऊपर पहाड़ीके चट्टानमे नन्दीकी बहुत बड़ी प्रतिमा बनी हुई है। बहुत लोग चामुण्डाके दर्शनको जाते है।

मैसूर राज्य—यह राज्य डेकानके दक्षिण हिस्सेमें अङ्गरेजी जिलोसे घेरा हुआ २७९३६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें फैला है। हैदराबादके राज्यके अतिरिक्त भारतवर्षके किसी देशी राज्यकी मनुष्य-संख्या मैसूर राज्यके मनुष्य-संख्याकी बराबर नहीं है। इसमे ६ जिले है, बङ्गलोर, कोलार, तुमकूर, मैसूर, शिमोगा और कदूर। राज्यसे महाराजको लगभग १०६००००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्यका सदर स्थान बङ्गलोर और राजधानी मैसूर शहर है। बङ्गलोरकी छावनी अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें है।

मैसूर राज्यके मैदानकी साधारण ऊँचाई समुद्रके जलसे २००० फीटसे ३००० फीट तक है। देशकी भूमि नीची ऊँची है। पश्चिम घाटकी ओर अधिक पहाडियाँ हैं। पहाड़ियो के बहुत सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको गये हैं; जिनमेंसे ८ पहाडियाँ समुद्रके जलसे ५००० फीटसे ६३०० फीट तक ऊँची हैं। राज्यमे स्थान स्थानपर नन्दीदुर्ग आदि बहुत चट्टान हैं, जिनमेंसे कई एक समुद्रके जलसे लगभग ४००० तथा ५००० फीट ऊँचे हैं, और बहुतेरेके शिखर पर मीठे पानीके कुण्ड है। पूर्व समयमें वे दुर्गम चट्टान किलेका काम देते थे। राज्यका बड़ा भाग मैदान है, जिसपर बहुतसे गाँव और कसबे बसे हुए है। सन् १८८१ में मैसूर राज्यके २४७२३ वर्गमील क्षेत्रफलमें लगभग ७०५५ वर्गमील भूमि जोती गई, ५७१७ वर्गमील जोतनेके लायक परती थी और बाकी ११९५१ वर्गमील जोतनेके लायक नहीं थी।

मैसूर राज्यके जङ्गलों और पहाड़ियोमें जगह जगह बाघ, तेंदुए, भालू, सूअर, सांभर, बनैली भेड, हरिन इत्यादि बहुत बनजन्तु रहते है। मैसूर जिलेके जङ्गलोंमें बनैले हाथी बहुत हैं, जो कभी कभी खेतोकी हानि करते है। सन् १८७४ में खेदा वालोंने ५५ हाथियोंको, जिनमें १३ दन्तैले थे, पकडा था। इसके अलावे मैसूर राज्यके शिमोगा, कदूर आदि जिलोंमे कभी कभी हाथी देख पडते हैं। दक्षिण हिस्सेमे कावेरी नदी बहती है। पलार और उत्तरी और दक्षिणी दोनो पनार नदी पूर्व भागमे हैं। राज्यके पश्चिमोत्तर भागमे तुंगभद्रा नदी है। तुग और भद्रा नदी पश्चिमीघाटसे निकलकर तुंगभद्रामे मिली हैं। हेमवती लोकपावनी, शिमशा और अर्कवती नदी कावेरीमें गिरती हैं। मैसूर राज्यकी कोई नदी नाव चलने लायक नहीं है। देशमे लगभग ३८००० तालाब हैं, जिनमें सबसे बड़ा सुलकर नामक तालावका घेरा ४० मील है। राज्यके दक्षिण भागमें काली भूमिके मैदानोंमें रुई और मिलेट बहुत उपजते है। दक्षिण और पश्चिमके देशमे, जो नदियोकी नहरोसे पटाये जाते ह, ऊख और धान होते है। पूर्वकी लाल जमीनके देशोंमे रागी और दूसरी सूखी सिल होती है। जगली लोग तसरके कीडोंको लाकर बेंचते है।

सन् १८८५ ईस्वीमें मैसूर राज्यमें रागी ३३२९००० एकडमे और दूसरी सूखी फसिल, ५९७००० एकडमे धान, १६४००० में तेल निकलनेवाली फसिले, १३२००० एकड़मे नारियल और एरकाका सख्त फल, १४२००० एकडमे काफी, २७००० मे तरकारियाँ, २१००० एकड़मे रुई, २४००० में ऊख, २०००० मे गेंहू और ६००० एकड़में तम्बाकू थी।

रागी वहाँका प्रधान खोराक है । जंगलमे चन्दनकी लकडी बहुत होती हैं । मालाबारके किनारे और उसके आस पास श्वेत चन्दन होता है, परन्तु मैसूर राज्य, कुर्ग आदि देशोंमें आपसे आप बहुत श्वेत चन्दनके वृक्ष उपजते है । मैसूर राज्यमे चन्दनके पेडसे विशेष आय होती है । सालाना १० लाखसे १४ लाख तक चन्दनका बीज लगाया जाता है । २० वर्षसे लेकर ४०-५० वर्षमे पेड़ पुष्ट होता है । दस्तकारी मशहूर नही है, क्योंकि खास करके बहुत लोग खेतिहर है । कोलारके पास कई खानोमे सोना निकलता है । गल्ले, एरकाका फल, काफी, चीनी और पान वहाँसे दूसरे देशोंमे जाते हैं ।

सन् १८८३–-१८८४ मे मैसूर राज्यसे १ करोड ६ लाख रुपये मालगुजारी आई थी, अर्थात् जमीनसे ७३०००००, महसूलसे १२०००००, जंगलसे ६०००००, स्टाम्पसे ४५००००, विदेशी मालके महसूलसे ३००००० और तिकटसे ३००००० रुपये, बाकीमें अन्य आमदनी थी ।

सन् १८८४ में राज्यमें ८६ म्युनिसिपलटी थीं । ३०२९ मील सडक हैं । राज्यकी तरफसे ६३५०००० रुपयेके खर्चसे १४० मील रेलवे बनी है । सन् १८८४ मे ६३४९० विद्यार्थियोंके साथ २३८८ स्कूल थे, जिनमे ५९६६२ लडके और ३८२८ लड़कियाँ पढ़ती थीं । इनके अलावे १ पागलखाना, १ कोढ़ीका दवाखाना, ३ साधारण दवाखाने और १७ मरीजखाने है ।

मैसूर राज्यकी दस्तकारी बहुत प्रसिद्ध नहीं है, क्योंकि सर्व साधारण लोग खेती करते है । राज्यके अनेक हिस्सोकी खानियोसे खास कर बगलोर जिलेमें लोहा निकाला जाता है । लगभग ३८००० मन लोहा प्रतिवर्ष निकलता है, बंगलोर जिलेके पश्चिमोत्तर कोलार जिलेमें खानोसे बहुत सोना निकलता है । तमकूर जिलेकी चन्द पहाड़ी धाराओंमे कुछ कुछ सोना मिलता है । कच्चा रेशम पहिले बहुत होता था, किन्तु अब कम होता है, क्योंकि रेशमके बहुत कीडे बीमारीसे मर जाते हैं । हरिहर कसबेके बने हुए लाल चमड़े, चितलदुर्गके कम्बल और बंगलोरके भूषण तथा कालीन प्रशंसनीय होते हैं । राज्यमें चन्दनकी लकड़ी बहुत होती है, उससे मैसूर राज्यको औसत सालाना लगभग १५०००० रुपयेकी आमदनी है ।

मैसूरके राज्यमें मेले बहुत होते हैं;––मैसूर जिलेमे कावेरीनदीपर चुंचनकटा नामक बाँध है, जिसमें ७० फीट ऊपरसे पानी गिरता है । रामसमुद्रम् नामक एक नाला बाँधसे निकल कर २६ मील गया है, जिससे खेत पटाये जाते हैं । बाँध और नाला दोनोको सन् १६७२-१७०४ में मैसूरके राजा चिकादेव वोडियरने बनवाया । प्रतिवर्ष बाँधके पास लगभग १ मास मेला होता है । वहाँ माघमें लगभग २०००० आदमी जाते हैं ।

मैसूर जिलेके अष्टग्राम सबडिवीजनमें कावेरी और लोकपावनी नदीके संगमके समीप करिगट्टा पहाडी पर चैत्रमें मेला होता है । मेलेमें लगभग २०००० यात्री जाते है ।

मैसूर जिलेके तालकडके निकट कावेरी नदीके किनारे पर मुडकडोर नामक पवित्र पहाडीपर मल्लिकार्जुन नामक शिवका मन्दिर है । वहाँ प्रति वर्ष फाल्गुनमें १५ दिन मेला होता है । लगभग १०००० यात्री वहाँ जाते हैं । ( मैसूर जिलेके नञ्जनगुडीके मेलेका वृत्तान्त नञ्जनगुडीमे देखिये ) ।

बंगलोर जिलेमे बंगलोर शहरसे ३६ मील दक्षिण अर्कवती नदीके दहिने किनारेपर तालुकका सदर स्थान कानकहल्ली नामक छोटा कसबा है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४३६० मनुष्य थे। वहाँ एक किलेके भीतर रंगनाथका एक पुराना मन्दिर है, जहाँ प्रति बृहस्पतिवारको लगभग २००० आदमियोंका मेला होता है।

बंगलोर जिलेमे बंगलोरसे कोलार जानेवाली सडकके निकट बंगलोर शहरसे १८ मील पूर्वोत्तर एक नदीके बायें किनारे पर तालुकका सदर स्थान होसकोट नामक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ में ४३७७ मनुष्य थे। वहां २ मील लम्बा बांध, और एक सरोवर है, जिसके भर जानेपर पानीकी चादरके घेरेका विस्तार १० मील होजाता है। वहां प्रति वर्ष दो मेले होते है। प्रत्येक मेलेमें लगभग ५००० मनुष्य वहां आते हैं।

बंगलोर जिलेके तिरुमल नामक गांवमें रंगनाथस्वामी का एक मंदिर है। वहां प्रति वर्ष चैत्र की पूर्णमासी से १० दिन तक मेला होता है। मेलेके समय लगभग १००००मनुष्य वहां जाते हैं।

कोलार जिलेमें अवानी नामक पवित्र गांव है, जिसमे स्मार्त मतके साधुका एक मठ है। लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी लंका जानेके समय इस स्थान पर ठहरे थे और इस गांवकी पहाडी पर महर्षि वाल्मीकि कुछ दिनों तक रहे थे। वहां रामचन्द्रका मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष मवेसीका बडा मेला होताहै। मेलेमें लगभग ४०००० मनुष्य आते हैं।

कोलार जिलेमें कोलार कसबेसे ७ मील उत्तर वनरासी नामक छोटा गांव है। वहां प्रति वर्ष तारीख ६ अप्रैलसे ९ दिन तक यरलप्पा देवता का मेला होताहै। मेलेमें लगभग २५००० आदमी आते है और बिकनेके लिये करीब ६०००० मवेसी आती हैं।

कदूर जिलेके शृंगेरीमे श्री शंकराचार्य संप्रदाय का मठ और शारदा देवीका मन्दिर है। वहां नवरात्रमे तथा अन्य समयोमे वर्षमें कई वार मेले होते हैं ( शृंगेरीके वृत्तांतमे देखिए)।

कदूर जिलेमे चिकमंगलूरसे १५ मील पूर्वोत्तर सक्रायमपट्टन नामक वस्ती है। वहां ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थान पर महाभारतमें प्रसिद्ध राजा रुक्मांगद की राजधानी थी। वहां एक बड़ी तोप और ४ स्तंभोके ऊपर एक चौखूटा पत्थर तथा रंगनाथ देवताका मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष रंगनाथ की रथयात्रा के समय वहुत लोग जाते हैं। और उनको भेड़ा बलिदान देते हैं।

तमकूर जिलेके गुव्वीमें मेला होता है, जिसमे दूर दूरसे सौदागर आते हैं और सब तरहके माल बिकते हैं।

तमकूर जिलेके यदीपुर गांवमें प्रति वर्ष चैत्रमासमें सिद्धेश्वरम् की यात्रा का मेला होता है। मेला ५ दिन रहता है। लगभग १०००० मनुष्य आते हैं।

तमकूर जिलेमे तमकूर कसबेसे १५ मील उत्तर शीबी नामक गांव है, जिसमें लगभग २०० वर्ष का बना हुआ नृसिंहजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर ऊंची दीवार है। वहां माघमें १५ दिन मेला होता है। मेलेमें लगभग १०००० मनुष्य आते हैं और बड़ी सौदागरी होती है।

शिमोगा जिलेमें शिमोगा कसबेसे ३० मील दक्षिण-पश्चिम तुंगनदीके बायें किनारेपर निधिहल्ली नामक गांवमे एक खाल है। वहां के लोग कहते हैं कि परशुरामजीने इसको

अपने परशासे बनाया था। वहाँ अगहनमे मेला होता है। मेलेमें लगभग ३००००० रुपयेकी मवेसी आदि वस्तु विकती है। ३ दिन उस खालमे हजारों आदमी स्नान करतेहैं। उस गांव मे २ पुराने मठ है।

मैसूर राज्यके दुदेरी तालुकमे नया कनहट्टी नामक गांव है, जिसमे लिंगायत लोगोंके महापुरुष प्रसिद्ध टप्पारुद्रका समाधि मन्दिर है। वहां प्रति वर्ष रथयात्राका मेला होता है, जिसमे लगभग १५००० यात्री आते है।

मैसूर राज्यमे हसन कसवेसे २३ मील पश्चिमोत्तर वेलूर नामक पुराना पवित्र गांव है। वहाँ प्रति वर्ष वैशाखमें ५ दिन मेला होता है। ( वेलूरमे देखिये )।

मैसूर राज्यमे चुंचनगिरि नामक पहाडीके पादमूलके पास गंगाधरेश्वरका मेला होता है। मेला १५ दिन रहता है; उसमे लगभग १०००० मनुष्य आते है।

मैसूर राज्यके अतिकुप्पा तालुकमे मैलकोटा नामक गांव है, जिसमे विशेष करके वैष्णव लोग रहते है। श्रीरामानुजस्वामीने १२ वी सदीमें वहाँ १४ वर्ष निवास किया था। वहाँ रामानुजीय संप्रदायका एक प्रसिद्ध मठ और कृष्णका मन्दिर और ऊँचे चट्टानके ऊपर नृसिंहजीका मन्दिर है। उस गांवके निकट एक प्रकारकी सफेद मिट्टी होती है; दूर दूरके आचारी लोग अपने ललाट पर तिलक करनेके लिये उसको लेजाते है। उस गांव के निकट एक पर्वके समय प्रति वर्ष लगभग १०००० मनुष्य आते हैं। रामानुजीय संप्रदायकी ८ गद्दी प्रधान है, जिनमेंसे मैलकोटा, तोताद्री और तिरुपदीकी गद्दीपर विरक्त आचारी रहते है।

मैसूर जिलेकी सीमाके पास कुर्गके पश्चिमोत्तरकी सीमाके निकट मद्रास हातेके दक्षिणीकिनारा जिलेमें पश्चिमीघाटके एक कंटा पहाडियोंके सुब्रह्मण्य सिलसिलेकी एक चोटीको पुष्पगिरि कहते है। आदमी कठिन चढ़ाईसे ३ घण्टेमें वहाँ पहुंचता है। उसके नीचेके ढालू बगलके सघन वनमें वनैले हाथी रहते है। वहाँ प्रति वर्ष माघके मेलेमें बहुत यात्री आते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूरके राज्यके २७९३६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ४९४३६०४ मनुष्य थे, अर्थात् २४८३४५१ पुरुष और २४६०१५३ स्त्रिया। इनमे ४६३९१२७ हिन्दू, २५२९७४ मुसलमान, ३८१३५ कृस्तान, १३२७८ जैन, ३५ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी और ५ बौद्ध थे। इनमे सैकडे पीछे ७४ कनडी बोलने वाले, १५ तेलगु अर्थात् तैलंगी भाषावाले, ४$\frac{3}{4}$ उर्दू भाषावाले, ३$\frac{1}{2}$ तामिल बोलने वाले और ३ अन्य भाषावाले थे। मैसूर राज्यमें नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भांति पढ़े हुए थे, प्रति हजारमें ८१९ बनिया, ६७८ ब्राह्मण, ३८ ब्राह्मणी और ६६४ कोमटी पुरुष तथा १२ कोमटीकी स्त्रियाँ। राज्यके पूर्वके एक छोटे भागके अतिरिक्त राज्यके सब लोग कनडी भाषा बोलते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यके २४७२३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ४१८६१८८ मनुष्य थे; अर्थात् ३९५६३३६ हिन्दू, २००४८४ मुसलमान, २९२४९ कृस्तान, ४७ पारसी, ४१ सिक्ख, ९ बौद्ध, १ यहूदी और २१ अन्य. जिनमेंसे हिन्दुओंमें ८०३५२१ बकिलिगा ( खेती और मजूरी करने वाले ), ४७०२६९ लिंगायत, २९१९६५

## कनडी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ

ಅ ಆ ಇ ಈ ಉ ಊ ಋ ೠ ಎ ಐ ಒ ಔ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त

ಕ ಖ ಗ ಘ ಙ ಚ ಛ ಜ ಝ ಞ ಟ ಠ ಡ ಢ ಣ ತ

थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ

ಥ ದ ಧ ನ ಪ ಫ ಬ ಭ ಮ ಯ ರ ಲ ವ ಶ ಷ ಸ ಹ ಳ

ऴ ऱ का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

ೞ ಱ ಕಾ ಕಿ ಕೀ ಕು ಕೂ ಕೆ ಕೈ ಕೊ ಕೌ ಕಂ ಕಃ ೧ ೨ ೩ ೪ ೫ ೬ ೭ ೮ ೯

कुरुनेवर (बेडिहर), १६७७५५ नेयिगर ( बिनाईके काम करने वाले ) १६२६५२ ब्राह्मण, ८४५८३ उपार ( नमक बनाने वाले ), ८४४०७ इदगा ( ताड़ी वाले ), ८२४७४ कुंचिगर ( पीतल तथा ताम्बेकी चीज बनाने वाले ) ६९९२८ अगासा ( धोबी ), ५७९१६ गोल्लार ( चरवाहा ), डम्बेरा इत्यादि, ४४२८३ टिगलर ( बागवान् ), ४१२२९ महाराष्ट्र, ३१२६९ कुम्भार, ३०३७६ नावित ( नाई ), २९४४९ धनिगा ( तेली ), २५९८५ कोमटी ( व्योपारी ), १६८७३ सतानी ( मन्दिरोंके पुजारी ), १३२५१ क्षत्री, ५७१८ आदि निवासी जातियोंके लोग और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। मुसलमानोंमे १७९२९६ सुन्नी, ५०५५ पिंडारी, ४६५६ लब्बा, ४२४८ सीया, ३७७७ दइरा, ५१६ बहावी, ३८५ मपिला और २५५१ अन्य किसिमके थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यके नीचे लिखे हुए कसबोंमें १०००० से अधिक मनुष्य थे,–बङ्गलोर जिलेके बङ्गलोर कसबेमें १८०३६६, मैसूर जिलेके मैसूर कसबेमें ७४०४८ और श्रीरंगपट्टनम् में १२५५१, कोलार जिलेके कोलार कसबेमें १२१४८ और चिकबालापुरमें १०६२३, शिमोगा जिलेके शिमोगामें ११३४० और तमकूर जिलेके तमकूर कसबेमें ११०८६।

मैसूर राज्यके आस्तिकोंमें शंकराचार्यके अद्वैत मतके स्मार्त, माधवाचार्यके द्वैत मतके लोग और रामानुजीय संप्रदायके विशिष्टाद्वैत मतके वैष्णव लोग बहुत हैं,–स्मार्त लोग कहते हैं कि जीव ईश्वरसे अलग नहीं है, वह उन्हीका हिस्सा है, माधवाचार्यके मतके लोगोंका कथन है कि ईश्वर और जीव अलग अलग हैं और रामानुजीय संप्रदायके लोग कहते हैं कि मायाविशिष्ट ब्रह्म है, जीव ईश्वरसे अलग होकर जन्म लेता है और मरनेपर ईश्वरमें मिल जाता है।

माधवाचार्यके संप्रदायके लोग मैसूर राज्यमें बहुत है। कोडगु ( कुर्ग ) देशके पश्चिमके भागमें उडपीपुर गाँव है; उसीमें माधवाचार्यका जन्म हुआ था। उस गाँवमें माधवाचार्यका मठ है।

मैसूरके राज्यमे जङ्गली जातियोंमेंसे, एक प्रकारसे लोगोंकी झोपडियाँ वृक्षोंकी डाल पातसे बनती है। वे लोग शिकारसे अपना निर्वाह करते हैं; किन्तु अब कुछ लोग वृक्षोंको काटते है और काफीकी खेतोंमें काम करते हैं। वे लोग जाति भेद नही रखते। प्रत्येक गाँवमे उनका एक मुखिया रहता है। उनके शिरका बाल मोटा तथा १५ इञ्च तक लम्बा होता है, जिसको वह पीछे एक रस्सीसे बाँधते है। उनकी स्त्रियाँ पुरुषोंके साथमें काम नहीं करती हैं। जङ्गली लोगोंमें एक जातिके लोग केवल जङ्गली पैदावारोंसे अपना निर्वाह करते है। वे लोग वृक्षोंसे मधुमक्खियोंके मधु निकालकर इकट्ठे करते है। पुरुष तथा स्त्री दोनोंके मुख मोटे तथा बेडौल होते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( अश्वमेधपर्व, ८३ वाँ अध्याय ) राजा युधिष्ठिरने कौरवोंको जीतनेके पश्चात् अश्वमेध यज्ञका सामान किया। अर्जुनकी रक्षामें यज्ञ-अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देशके राजाओंको जीतते हुए दक्षिण समुद्रकी ओर गये। उन्होंने उस तरफके द्राविण अर्थात् द्राविड, अन्ध्र, माहिषक अर्थात् मैसूर वाले, कालगिरीय अर्थात् नीलगिरि वाले वीरोंको संग्राममें परास्त करके सुराष्ट्रकी ओर गमन किया।

आदिब्रह्मपुराण—( २६ वाँ अध्याय ) भारतवर्षके दक्षिण भागमें माहिषक, मैलेय अर्थात् मलयगिरि इत्यादि देश है।

इतिहास—मैसूर राज्यमे कई एक शिलालेख तथा ताबके पत्तरोंके लेख मिले है, जिनसे महाभारत और रामायणमे लिखे हुए कई एक स्थान पहचाने गये है। जान पडता है कि ईसासे लगभग ३०० वर्ष पहिले बौद्धोके भेदिया अर्थात् गुप्त दूतने उस देशको देखा था। जैन लोग बहुत दिनोतक मैसूरमे प्रधान बनकर रहे। उनके बनाये हुए बहुतेरे सुन्दर मन्दिर और अन्य स्मरण चिह्न विद्यमान है।

ऐतिहासिक समयमे प्रथम मैसूरका उत्तरी भाग कदम्ब वंशके राजाओके अधीन था। उन्होंने १४ वी सदीमे राज्य किया, पीछे वे लोग चालुक्यवंशके राजाओको "कर" देते थे। उस समय गङ्गा वंशके राजा मैसूरके दक्षिणी भाग और कोयम्बतूरमे राज्य करते थे। उनकी राजधानी पहिले कोयम्बतूर जिलेके करूरमे और पीछे कावेरी नदीके पास तालकदमे थी। ९ वीं सदीमे चोला वंशके राजाने तालकदके गङ्गा वंशके राजाका विनाश किया। मैसूर राज्यके पूर्वी बगलका एक भाग पहिले पल्लव वंशके राजाओके अधिकारमें था। ७ वी सदीमे चालुक्य वंशके राजाने पल्लव वंशके राजाको परास्त किया, किन्तु पल्लव वंशवाले १० वीं सदी तक उनके बडे दुश्मन बने रहे। चालुक्य वंशवालोने चौथी सदीमें हिन्दुस्तानके उत्तरसे आकर एक फैले हुए देशको जीता, जिसका एक भाग १२ वी सदीके अन्ततक उनके अधिकारमे था। बाद बल्लाला वंशके राजाने उनको परास्त करके उनका राज्य अपने राज्यमे मिला लिया। जान पडता है कि चोला वंशके राजाओंने मैसूरमे १५० वर्षसे अधिक राज्य नही किया। कलचुरिया वंशवालोंका राज्य भी ऐसाही बहुत समय तक नहीं रहा।

हौसला बल्लाल वंशके राजा, जो जैन धर्मी थे, बडे लडाके थे। उन्होंने मैसूरके वर्त्तमान राज्यके सम्पूर्ण पश्चिमी, दक्षिणी तथा मध्य भागको और कोयम्बतूर, सेलम और धारवाडके हिस्सेको जीता। उनकी राजधानी द्वार समुद्र ( द्वारकावती पाटन ) था। सन् १३१० में दिल्लीके अलाउद्दीनके जनरल मलिक काफूरने बल्लाल वंशके राजाको कैद किया और शहरको लूटा। सन् १३२६ मे महम्मद तुगलककी भेजी हुई सेनाने द्वार समुद्रको अच्छी तरहसे बरबाद किया। जैन राजाओ और उनके पीछेके राजाओके समयके बहुत मन्दिर अबतक विद्यमान हैं। पीछेके राजाओंके मन्दिरोंमेंसे हौसलेश्वरका मन्दिर हिन्दुस्तानके विचित्र मन्दिरोंमेंसे एक है।

हौसला बल्लाल वंशके राज्यका अन्त होनेपर सन् १३३६ मे वारंगलकी कचहरीके अफसर बूका और हरिहरने विजयानगरका राज्य कायम किया। विजयानगरके हिन्दू राजा और बहमनी वंशके मुसलमान बादशाहसे कई बार लडाई हुई। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर शहरके स्थान पर पहिले एक गॉव था। मैसूरके वोडियरके पूर्वजने सन् १५२४ मे उस गाँवके पास एक किला बनाया और उसका नाम महिषासुर जिसको उसके वंशकी इष्ट देवी चामुण्डाने मारा था, रक्खा। वही नाम शहरका भी पडा, किन्तु पीछे महिषासुर नाम बदलकर मैसूर हो गया। सन् १६६५ में दक्षिणके ५ मुसलमान बादशाहोमेंसे ४ ने मिलकर विजयानगरके रामराजाको तालीकोटमें परास्त करके मार डाला। रामराजाके वंशधर अपनी राजधानी को छोड कर पेनुकुण्डा और चन्द्रगिरिमें हुकूमत करने लगे।

पेनुकुंडाके नरसिंह राजाके निर्बल होनेपर छोटे २ अनेक देशी प्रधान स्वाधीन बन गये, जिनमें एक दक्षिणके मैसूरका बोडियर था। कनड़ी भाषामें मालिक तथा प्रभुको बोडियर कहते है। मैसूर बोडियरकी राजधानी था। पहले मैसूरके प्रधान लोग विजयनगरके राजाके प्रतिनिधिको, जो श्रीरंगपट्टनमूमें रहते थे, खिराज देते थे। सन् १६१० में मैसूरके बोडियरने पेनुकुंडाके सूबेदार तिरुमलईसे श्रीरङ्गपट्टनम्‌का किला छीन लिया; तबसे मैसूर राज्य नियत हुआ। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा बोडियरका पूर्व पुरुषा विजयराज नामक यादव क्षत्री अपने भाई कृष्णराजके साथ सन् १३९९ में काठियावाड़के द्वारकासे आये; उनकी ९ वीं पीढ़ीमें राजा बोडियर थे। चमाराज और कंठीराज राजा बोडियरके उत्तराधिकारी हुए। कंठीराजने सन् १६३८ से १६५८ तक योग्यताके सहित राज्य किया। उन्होंने राजधानीकी किलाबन्दी किया और एक टकशाल बनाया। उनके सिक्के सन् १७६१ तक चलते थे।

सन् १६७० मे चिका देवराज मैसूरके राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने अपने राज्यको दक्षिणी भारतमे प्रख्यात राज्य बनाया। सन् १६८७ में राजवंशके लोग शैवसे वैष्णव होगये। सन् १७०४ में चिकादेवराज मरगये। उसके बाद दो राजा हुए; उनमेंके पिछले राजा सन् १७३१ में निःसन्तान मरगये; तब राजाके कुलका रामराज नामक एक आदमी मैसूरका राजा बना था, किन्तु दीवानने उसको गद्दीसे उतार कर कैद कर दिया, वह कैदखानेहीमें मर गया। सन् १७३४ में उस वंशके चिका कृष्णराज राजसिंहासन पर बैठे।

चिका कृष्णराजके राज्यके समय हैदरअली एक मामूली सिपाही था, जिसने सन् १७६२ में मैसूरके राजासे उनका राज्य छीन लिया और बिदनोरकी लूटसे मालामाल होगया। मैसूर राज्यके कोलार जिलेके बुड़ीकोट नामक गाँवमें सन् १७२२ में हैदरअलीका जन्म हुआ था। उस समय उसका पिता फतह महम्मदखाँ सीराके नवाबके अधीन कोलारका फौजदार होकर बुडीकोटामें रहता था। हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलताननें हिन्दू राज्यका चिह्न मिटा देनेके लिये मैसूरके किलेको तोड़वा दिया और उसके सामानसे उससे एक मील पूर्व एक टीले पर नजराबाद नामक किला बनवाया, जिसकी चन्द निशानियाँ अब तक देखनेमें आती हैं।

सन् १७९९ में अङ्गरेजोंने श्रीरङ्गपट्टनम्‌की लडाईमे टीपूसुलतानको परास्त किया। टीपू मारा गया। अङ्गरेजी सरकारने मैसूरके राजवंशके चमाराजके पुत्र कृष्णराजको मैसूरका पुराना राज्य, जिसको हैदरअलीने छीन लिया था, देदिया। टीपूके मरनेपर नजराबाद किलेके पत्थर उजाड़ कर मैसूरके पुराने किलेके स्थान पर फिर किला बनाया गया और किलेके भीतर राजमहल इत्यादि इमारतें बनाई गई। श्रीरङ्गपट्टनम् शहरकी घटती और मैसूर शहरकी बढ़ती होने लगी। राजा लडके थे इस कारणसे राज्यका प्रबन्ध एक योग्य महाराष्ट्र करने लगे। सन् १८१० में सबालिग होने पर राजा कृष्णराज राज्याधिकारी हुए। उन्होंने महाराष्ट्र सरदारके जमा किये हुए धनको खर्च कर दिया। उनसे राज्यका प्रबन्ध उचित भाँतिसे नहीं चला, इस लिये सन् १८३१ में अङ्गरेजी गवर्नमेंटने अपने कर्मचारियों द्वारा मैसूर राज्यका प्रबन्ध करना आरम्भ किया। बङ्गलोर शहर मैसूर राज्यका सदरस्थान बना। राजाको खर्चके लिये मालगुजारीका पाँचवाँ भाग मिलने लगा। सन् १८६८ में

राजा कृष्णराज ७५ वर्षकी अवस्थामे मर गये । उसके उपरान्त कृष्णराजके गोद लिये हुए पुत्र जो उसी वंशके थे, चमाराजेन्द्र वोडियरके खिताबके साथ उत्तराधिकारी हुए, जिनकी अवस्था छः सात वर्षकी थी।

सन् १८७६ से १८७८ तक मैसूरके राज्यमें बडा भारी अकाल था। उस समय मैसूर राज्यकी तरफसे ७० लाख रुपये खर्च किये गये और मालगुजारीके २८ लाख रुपये छोड़ दिये गये; तथा १५ लाख ५० हजार रुपये चन्दासे आये, तिस पर भी राज्यके १० लाख मनुष्य और २ लाख ५० हजार मवेसी अकालसे मरगये।

सन् १८८१ के मार्चमे अङ्गरेज महाराजने नये महाराज सर चमाराजेन्द्र वोडियर जी०सी० एस० आईको राजाका पूरा अधिकार दे दिया। मिष्टर आर० सी०रंगाचार्लू दीवान बने *।

## नंजनगुड़ी।

मैसूरके रेलवे स्टेशनसे १५ मील दक्षिण नजगुड़ीका रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्यके मैसूर जिलेमें चामुण्डा पहाडीसे दो मील दूर कव्वानी और गुण्डल नदीके किनारेपर नञ्जनगुडी कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५२०२ मनुष्य थे। कनड़ी भाषामें नञ्जनका अर्थ विष पीनेवाला अर्थात् शिव और गुडीका अर्थ नगर है ( अर्थात् शिव का नगर ) नञ्जनगुडीसे १ मील दूर मैसूरके रेजीडेंटका एक बँगला है, जिसके पास कव्वानी नदीपर पत्थरका पुल बना हुआ है।

नञ्जनगुडीमें ३८५ फीट लम्बा और १६० फीट चौड़ा जिसमें १४७ खम्भे लगे हैं; नंजुडेश्वर शिवका बड़ा मन्दिर है। नंजुडेश्वरको लोग नीलकण्ठभी कहते है । मन्दिरके खर्चके लिये मैसूर राज्यकी ओरसे २०२०० रुपये प्रति साल मिलते हैं। वह मैसूर राज्यमें पवित्र स्थान है। वहाँ प्रति महीनेकी पूर्णिमाको रथयात्राका उत्सव होता है। चैत्र और अगहनकी रथयात्राके समय दक्षिण भारतके सब विभागोंसे हजारो यात्री वहाँ आते हैं।

इतिहास—सन् १७४० में मैसूरके एक दीवानने नंजुडेश्वरके पुराने छोटे मन्दिरके स्थानपर नजुडेश्वरका वर्तमान मन्दिर बनवाया और एक दूसरे दीवानने उसको सुधारा।

# अठारहवाँ अध्याय।

( मैसूर राज्यमें ) तमकूर, श्रावन बड़गुला, हलेबिडके मन्दिर, बेलूर, शृंगेरीमठ और हरिहर, ( बम्बई हातेमें ) हुबली, धारवाड़, ( पोर्चुगीजोंके राज्यमें ) गोआ, ( बम्बई हातेमें ) कारवार, गोकर्णतीर्थ, जरसोपाके जलप्रपात और रत्नागिरि।

## तमकूर।

बङ्गलोर शहरके रेलवे स्टेशनसे ४० मील पश्चिमोत्तर तमकूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें ( १३ अंश, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ८ कला,

* सन् १८९४ के अतमें महाराज सर चमाराजेंद्र वोडियरकी मृत्यु होगई । उनके पश्चात् उनके पुत्र महाराज श्रीकृष्णराजेंद्र वोडियर बहादुर जिनकी अवस्था लगभग ११ वर्षकी थी उत्तराधिकारी हुए।

५० विकला पूर्व देशान्तरमें ) देवरायदुर्ग नामक पहाडीके दक्षिण-पश्चिमकी नेवके पास तमकूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा तमकूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तमकूर कसबेमें ११०८६ मनुष्य थे, अर्थात् ८५७१ हिन्दू, २०३३ मुसलमान, ३७४ कृस्तान और १०८ जैन।

केले, कसइली, नारियल इत्यादि वृक्षोंके कुञ्जोंसे घेरा हुआ तमकूर कसबा है। कसबेमें कई एक चौडी सडके बनी हुई है। देशी लोगोंके मिट्टीके मकान खपडेंसे छाये हुए है। यूरोपियन लोग उत्तर ओर बसते है। डिपुटी कमिश्नरकी कचहरीका विशाल मकान बना हुआ है, जो गोलाकार ढॉचेका तीन मञ्जिला है। अन्य इमारतोंमें इस्टेट कमिश्नर, एञ्जिनियर और अमलदारके आफिस, कई एक स्कूलोंके साथ एक मिशन जेलखाना, जिला स्कूल, अस्पताल, बंगला और गिरजा है। वहॉ १२० लोहारखाने है, जिनमें लड़ाईके हथियार और छूरियॉ बनती हैं। वहाँ भॉति भॉतिकी पत्थरकी मूर्त्तियॉ और विविध प्रकारके बाजे तयार होते हैं। प्रति बृहस्पति वारको मेला होता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर राजवंशके एक राजाने तमकूरको बसाया।

तमकूर जिलेमें बहुत देशी कपडे तैयार होते है। उस जिलेमे लगभग ४००० कपड़े बिननेकी ढरकियॉ तथा कारिगह और लगभग ३५००० सूत कातनेके चरखे हैं।

## श्रावन बड़गुला।

तमकूरके रेलवे स्टेशनसे ६० मील ( बङ्गलोर शहरसे १०० मील ) पश्चिमोत्तर अर्सीकेराका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ८ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूरके राज्यमे श्रावन बडगुला नामक गॉव है, जिसमे जैन लोगोंके धर्मप्रचारक रहते है। उस गॉवके निकट इन्द्रवेत्ता और चन्द्रगिरि नामक २ पहाडियाँ है, जिनमेसे इन्द्रवेत्ता पहाडीके ऊपर मैदानमे जैनोंके तीर्थकरोंमेसे गोमतराय अर्थात् गोमतेश्वरकी ७० फीट ऊँची प्रतिमा है। उसके आगेके शिलालेखसे जान पडता है कि उस प्रतिमाको चामुण्डारायने बनवाया था। लोग कहते है कि ईसासे ६० वर्ष पहिले चामुण्डाराय था। वहॉ पुराने समयके बहुतसे शिलालेख है। घेरेके भीतर कमरोंमे लगभग ७० छोटी जैन मूर्त्तियॉ हैं। चन्द्रगिरि पहाड़ीके ऊपर १५ जैन मन्दिर है।

## हलेवीड़के मंदिर।

अर्सीकेराके रेलवे स्टेशनसे १० मील ( बङ्गलोर शहरसे ११०) मील ) पश्चिमोत्तर बानावारका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे २० मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर राज्यके बेलूर तालुकमें हलेवीड एक प्राचीन गॉव है, जिसके पास पूर्व समयके अनेक मकान तथा मन्दिरोंकी निशानियॉ और हौसलेश्वर तथा केदारेश्वरके २ मन्दिर है।

हौसलेश्वरका मन्दिर—५ फीट ऊँचे चबूतरेपर १६० फीट लम्बा और १२२ फीट चौड़ा हौसलेश्वरका प्राचीन मन्दिर है, जिसको हौसला बलाल वंशके राजाने बनवाया था; मन्दिरके चारोंओर लगभग ३० फीट चौडी उस चबूतरेकी हाँसिया है। चबूतरेसे २५ फीट ऊपर मन्दिरका कार्निस है। मन्दिरकी कारीगरी और बनावट विचित्र है। मन्दिरमे एक ओर हौसलेश्वर नामक बहुत बड़ा शिवलिङ्ग और दूसरी ओर पार्वतीजीकी सुन्दर प्रतिमा है।

मन्दिरके आगे जगमोहनमे नन्दी बैल बैठा है। जगमोहनके आगे एक मण्डपमें १६ फीट लम्बा, ७ फीट चौड़ा और १० फीट ऊंचा दूसरा नन्दी है। मन्दिर हालमे मरम्मत किया गया है।

केदारेश्वरका मन्दिर—यह मन्दिर हौसलेश्वरके मन्दिरसे बहुत छोटा है, किन्तु इसकी कारीगरी उससे भी अधिक बारीक है। इसकी नेवसे इसके शिरतक उत्तम सङ्गतरासीका काम है। मन्दिर १६ पहला है।

मन्दिरके शिखरपर लगकर एक वृक्षने पत्थरोंको हटा दिया, बहुतसी प्रतिमा अपने स्थानोंसे हट गई, जो बङ्गलोरके अजायबखानेमे रखी हुई है। मन्दिर हीन दशामे है। उसका जगमोहन उजड़ रहा है, तथा उसमे पौधे जम गये है।

## वेलूर।

बानावारके रेलवे स्टेशनसे २० मील दक्षिण-पश्चिम ऊपर लिखा हुआ हलेबीड, और हलेबीडसे १० मील दक्षिण-पश्चिम, तथा हसन कसबेसे २३ मील पश्चिमोत्तर मैसूर राज्यमे एक नदीके दहिने किनारेपर तालुकका सदर स्थान वेलूर एक म्युनिस्पल कसवा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २९१७ मनुष्य थे। पुराणोमे वेलूरका नाम वेलापुर लिखा है। उसको उस देशके लोग दक्षिणकी काशी कहते है।

चन्नकेशवका मन्दिर—ऊँची दीवारके भीतर ४४० फीट लम्बा और ३६० फीट चौडा अर्थात् ६ बीघे विस्तारका आँगन है। आँगनमे चन्नकेशवका विशाल मन्दिर और चार पॉच अन्य छोटे मन्दिर है। आगे पूर्व तरफ २ उत्तम गोपुर बने हुए है। मन्दिर और जगमोहनमे सङ्गतरासीका बारीक काम है। चन्नकेशव ७ फीटसे अधिक ऊँचे हैं। वहाँ प्रति वर्षके वैशाखमे ५ दिनो तक उत्सव होता है, जिसमें लगभग ५ हजार मनुष्य आते है।

१२ वी सदीके मध्यमें हौसला बल्लाला वंशके राजा विष्णुवर्द्धनने, जैन धर्मसे वैष्णव धर्ममे आनेके पश्चात् चन्नकेशवका मन्दिर बनवाया। उसके प्रसिद्ध कारीगर डकनाचारीने मन्दिरमे विचित्र कारीगरीका काम बनाया था।

## शृंगेरी मठ।

बानावारके रेलवे स्टेशनसे १८ मील (बङ्गलोर शहरसे १२८ मील) पश्चिमोत्तर और हुबली जंक्शनसे १६० मील दक्षिण-पूर्व बिरूरका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे एक रेलवे शाखा पश्चिमोत्तर शिमोगा कसबेको गई है। बिरूरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ६० मील पश्चिम मैसूर राज्यके कदूर जिलेमे तुग नदीके उत्तर अर्थात् बायें किनारे पर (१३ अंश, २५ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १७ कला, ५० विकला पूर्व देशांतरमें) शृंगेरी एक पवित्र गाव है। शृंगेरीसे ९ मील पश्चिम शृङ्गगिरि, जिसको लोग ऋषिशृङ्ग भी कहते हैं, पहाड़ी है, जिसके नामसे शृंगेरी नाम पडा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँही शृंगी ऋषिका जन्म हुआ था। शृङ्गगिरिका अपभ्रंश शृंगेरी नाम है। शृंगेरी बस्तीमे मैसूर राज्यकी एक तहसीली कचहरी, एक लम्बी सडक और मल्लिकार्जुन नामक शिवका मन्दिर है। शृंगेरीमे लगभग १७०० मनुष्य बसते है।

शृंगेरी गांवके पास टीले पर शारदा देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। वहाँ शृंगेरीमठ तथा मठके स्वामी विद्याशंकर और शृंगेरीभट्टका मन्दिर बना हुआ है। शृंगेरीके आस पास चन्दनके वृक्ष बहुत हे और छोटी इलायची, काली मिर्च और सुपारी बहुत उत्पन्न होती है। वहाँ नृसिंहजीका एक मन्दिर है।

शृंगेरीमठमें शंकराचार्यकी नियत कीहुई गद्दी पर तबसे इस समय तक लगातार गद्दीके उत्तराधिकारी लोग होते आते हैं। एक अङ्गरेजी किताबमें शृङ्गेरीमठकी गद्दी पर क्रमसे रहने वाले २९ उत्तराधिकारियोंके नाम है।

शृङ्गेरीमठके वर्त्तमान स्वामी श्रीजगद्गुरु शिवाभिनव नृसिंह भारती बड़े भारी पण्डित हैं। वह भारत वर्षके विविध प्रान्तोंमे पर्य्यटन करके बहुत द्रव्य लाते हैं और पुण्य कार्य्यमे खर्च करते हैं। तुंग नदीकी घाटीमे मांगनी नामक उपजाऊ भूमि शृङ्गेरीमठकी जायदाद है और मैसूरके राज्यकी ओरसे मठको वार्षिक १००० रुपये मिलते हैं। वर्षमें नवरात्र आदि पर्वों-के समय कई वार मठमें बडा उत्सव होता है, जिनमें ३००० से १०००० तक लोग आते हैं। उस समय सब जातिके लोगोंको मठकी ओरसे भोजन कराया जाता है। और पुरुषोंको मुद्रा तथा स्त्रियोंको पहननेके कपडे और चोली बांटी जाती है।

शृंगेरीमठकी शाखा ४ मठ हैं,—( १ )मैसूर राज्यमें तुंगभद्रा नदीके तट पर कूडली गाँवमें, ( २ )मैसूर राज्यके बङ्गलोर जिलेके शिवगंगा नामक गाँवमें, ( ३ ) मदरास हातेके बल्लारी जिलेमें किष्किन्धाके विरूपाक्षके मन्दिरके पास और ( ४ )बम्बई हातेके पूना शहरके पास संकेश्वरमें।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—कूर्मपुराण—( ब्राह्मी-संहिता, २९ वां अध्याय ) नील लोहित शङ्कर भक्तोंके मंगलके लिये प्रकट होंगे और श्रौत तथा स्मार्त मतकी प्रतिष्ठाके लिये सकल वेदांतका सार ब्रह्मज्ञान और निर्दिष्ट धर्म अपने शिष्योंको उपदेश देंगे।

दूसरा शिवपुराण—( उर्दू अनुवाद, ७ वा खण्ड, पहिला अध्याय ) अधर्मियोंके मत प्रबल होनेके समय शिवजी एक ब्राह्मणके गृह जन्म लेकर शंकर नामसे प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अधर्मका विनाश करके संन्यास धर्म तथा अद्वैत मतको प्रकट किया।

भक्तमाल—लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजीने भक्तमाल नामक पद्य भाषाकी पुस्तक बनाई। उसके ४३ वें अंकमें लिखा है कि शंकराचार्य धर्म पालन करनेके लिये कलियुगमे प्रकट हुए। उन्होंने अनीश्वरवादी बौद्धों और कुतर्की जैनोंको परास्त करके धर्मविमुखोंको सत मार्गमें कर दिया। वह सदाचारकी सीमा थे। उनकी कीर्ति विश्वमें फैली है। वह ईश्वरके अंशसे अवतार लेकर मर्यादाका पालन करते थे।

शंकराचार्यजीका जीवन चरित्र—शंकरदिग्विजय आदि संस्कृत पुस्तकोंमें लिखा है कि केरल ( अर्थात् मालावार ) देशमें वृष पर्वतके ऊपर पूर्णा नदीके किनारेपर ज्योति-र्लिंग रूपसे शिवजी प्रकट हुए। वहाँके राजशेखर नामक राजाने उस लिंगकी प्रतिष्ठा करवाई। उस लिंगके समीप काटली नामक नगरमे विद्याधिराज नामक पण्डितके गृह शिवजीने जन्म लिया। उनके पिता विद्याधिराजने उनका "शिवगुरु" नाम रक्खा। और उचित समय पर मघ्व पण्डितकी कन्यासे उनका विवाह कर दिया। जब २५ वर्षकी अवस्था होनेपरभी शिवगुरुके कोई सन्तान नहीं हुई, तब वह अपनी भार्याके सहित नदीमें

स्नान करके वृष पर्वतपर शिवजीकी आराधना करने लगे। शिवजीके प्रकट होने पर शिव-गुरुने उनसे पुत्र मांगा। शिवजीने पूछा कि तुम अल्प बुद्धिवाले बहुत पुत्र कि थोड़ी आयुवाला सर्वज्ञ एक पुत्र लोगे? शिवगुरुने कहा कि मुझको थोडी आयुवाला सर्वज्ञ एकही पुत्र स्वीकार है। शिवजी उनको यही वर देकर चले गये। उसके अनन्तर गर्भ धारण करनेसे १० मासपर शिवगुरुकी भार्याके पुत्र उत्पन्न हुआ। श्रीशङ्करजीकी आराधना करनेसे पुत्रका जन्म हुआ, इस लिये शिवगुरुने उसका नाम शङ्कर रक्खा। शङ्करकी ४ वर्षकी अवस्था होनेपर उनके पिता शिवगुरुका देहान्त होगया। शङ्करने ८ वर्षकी अवस्थामें अपनी मातासे आज्ञा लेकर नर्मदा नदीके तीरपर जाकर श्रीगौडपादजीके शिष्य गोविन्दनाथ अर्थात् गोविन्दानन्दसे, जिनको गोविन्द योगीद्रभी कहते हैं, सन्यास धर्मकी शिक्षा ली।

कुछ समयके पश्चात् गोविन्दानन्दने शकरको आज्ञा दी कि तुम काशीपुरीमे जाकर ब्रह्मसूत्रोपर भाष्यकी रचना करो। शङ्करने काशीमे जाकर कावेरी तटके निवासी एक ब्राह्मण कुमारको सन्यासकी दीक्षा देकर उसका सनन्दन नाम रक्खा और अन्य बहुतेरे लोगोको संन्यासकी दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया। उसके उपरान्त वह अपने शिष्योके सहित तीर्थ भ्रमण करते हुए बदरिकाश्रम पहुँचे। उन्होंने वहां कुछ दिन निवास करके व्यासजीके रचे हुए सूत्रोंपर भाष्य बनाया। उसके पश्चात् शंकराचार्यने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य और बृहदारण्य, इन १० उपनिषदों पर भाष्यकी रचना की। उसके पीछे उन्होने भगवद्गीतापर भाष्य किया। इन्ही तीनों भाष्योको "प्रस्थानत्रयी" कहते है। इनके अतिरिक्त शकराचार्यजीने अनेक वेदान्त ग्रन्थोको बनाया और अपने बनाये हुए ग्रन्थोको अपने शिष्योको पढाया। उन्होंने अपने प्रेमपात्र शिष्य सनंदनका नाम पद्मपाद रक्खा।

शंकराचार्यजीने प्रयागमे जाकर भट्टपाद नामक महात्माका, जिसका नाम कुमारिलभी है, दर्शन किया। भट्टपादने कहा कि हे शंकर! यदि तुम अद्वैत मतका प्रकाश करना चाहते हो तो माहिष्मतीमें जाकर चारो दिशाओमें प्रसिद्ध कर्ममीमांसाके सिद्ध करनेवाले मण्डन मिश्रको शास्त्रार्थमें परास्त करो। उसके परास्त होने पर सम्पूर्ण पण्डित परास्त होनेके तुल्य हो जायँगे। भट्टपाद ऐसा कह कर परमधामको चले गये।

शंकराचार्यजीने नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मतीपुरीमे जाकर पण्डित मण्डनमिश्रसे कहा कि तुम हमारे साथ शास्त्रार्थ करो, जिसका पराजय होगा वह जीतने वालेके मतको ग्रहण कर उसका शिष्य होजायगा। तुमने वेदानुकूल अद्वैत मार्गको छोडकर कर्म मार्गहीका आश्रय लिया है, कि तो तुम अद्वैत मत ग्रहण करलो नही तो हमसे शास्त्रार्थ करो। मंडन-मिश्र बोले कि मुझको शास्त्रार्थ करनेकी सर्वदा इच्छा रहती है, किन्तु ऐसा कोई मुझको नही मिलता। मै तुम्हारे साथ शास्त्रार्थ करूंगा, परन्तु हमारे तुम्हारे बीचमें अवश्य कोई मध्यस्थ होना चाहिये, जो जीत हारका निर्णय करे। उस समय दोनों आदमीकी सम्मतिसे मण्डनमिश्रकी सरस्वती नामक स्त्री मध्यस्थ बनाई गई। शंकराचार्यने कहा कि परास्त होजाने पर मै गेरुआ वस्त्र और सन्यास कर्मको छोडकर श्वेत वस्त्र धारण करके पुनः गृहस्थ हो जाऊँगा। मण्डनमिश्रने प्रण किया कि शास्त्रार्थमें हार जाने पर मैं श्वेत वस्त्र और गृहस्थाश्रम धर्मका परित्याग करके गेरुआ- वस्त्र और संन्यास धर्मको ग्रहण

करूंगा। उस समय मण्डनमिश्रकी भार्या सरस्वतीने दोनोंके कण्ठमें पुष्पकी एक एक माला पहना करके उनसे कहा कि शास्त्रार्थ करते करते जिसके कंठ की माला कुंभलाय जाय वह अपने को परास्त हुआ समझ ले। श्रीशंकराचार्यजी और मंडनमिश्र का परस्पर शास्त्रार्थ होने लगा। दोनों अपने अपने अनुकूल युक्तिसे वेदका प्रमाण देने लगे। पांच छः दिनसे अधिक शास्त्रार्थ होनेके पश्चात् शंकराचार्यने जब अनेक रीतियोंसे श्रुतियोंके प्रमाणसे जीव और ब्रह्मका अभेद सिद्ध किया तब मंडनमिश्रके गलेकी माला कुंभला गई। सरस्वतीने मंडनमिश्रका पराजय स्वीकार करके शंकराचार्यसे कहा कि हे यतिराज! तुमने मेरे पतिको पूर्ण रीतिसे नहीं जीता; क्योंकि वेदमें लिखा है कि पत्नी पुरुष का आधा अंग है, इसलिये तुम मुझको भी शास्त्रार्थमें जीत कर इनको अपना शिष्य बनाओ। शंकराचार्यने सरस्वतीका वचन स्वीकार किया। शंकराचार्य और सरस्वतीका १७ दिनों तक शास्त्रार्थ हुआ किन्तु किसी का पराजय नहीं हुआ, तब सरस्वतीने विचार किया कि शंकराचार्य आजन्म ब्रह्मचारी हैं, इस कारणसे यह "कामशास्त्र" को कुछ भी नहीं जानते होंगे, इनसे कामशास्त्रमें प्रश्न करनेपर मेरा विजय होगा, ऐसा विचार उसने शंकराचार्यसे प्रश्न किया कि काम की कला कितनी हैं, उसका स्वरूप क्या है, वह किस स्थान पर रहता है, उसकी पूर्व की तथा अंतकी स्थिति किस भांति है और स्त्री पुरुषमें उसकी विलक्षणता क्या है इत्यादि, शंकराचार्य कुछ काल तक मौन रह सोच करके बोले कि हे सरस्वती! इन प्रश्नोंके उत्तर देनेके लिये तुम मुझको एक एक मासका समय दो, तब इस कामशास्त्रमें भी तुम्हारा पराजय करूंगा। सरस्वतीने उनका वचन स्वीकार किया।

शंकराचार्यजी कामशास्त्र जाननेके लिये अपने शिष्योंके सहित मंडनमिश्रके घरसे चल दिये। उन्होंने जाकर एक स्थान पर एक गुहामें अमरुक नामक राजाका मृत शरीर देखा। तब उन्होंने पद्मपाद आदि शिष्योंसे कहा कि मैं इस राजाके शरीरमें प्रवेश करके इसकी स्त्रियोंसे काम शास्त्रका ज्ञान प्राप्त करूँगा और फिर अपने योग बलसे इस शरीरको छोड कर अपने शरीरमें आजाऊंगा। जब तक मैं लौट आऊं तब तक तुम लोग इस गुहामें मेरे मृत शरीरकी रक्षा करते रहो ऐसा कह वह योग बलसे अपने स्थूल शरीरको वहां छोड़ कर ज्ञानेन्द्रियोंके सहित लिंग शरीर द्वारा राजाके शरीर में प्रवेश कर गये। तब वह राजा जीवित होकर अपने घर गया। राजा को देख पुरवासी और प्रजाओंको परम आनंद हुआ। राजा इंद्रके समान प्रजापालन करने लगा, किंतु राजाका अलौकिक प्रभाव देखकर मंत्रियोंके चित्तमें बडा संदेह उत्पन्न हुआ। वे कहने लगे कि जान पडता है कि किसी योगिराजने राजाके शरीरमें प्रवेश किया है, इसलिये ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे योगी फिर अपने शरीरमें न जासके। ऐसा विचार कर मंत्रियोंने गुप्त भावसे दूतोंको आज्ञा दी कि तुम लोग मृतकोंको खोज खोज अग्निमें भस्म करदो। इधर राजा संपूर्ण राज्य भार मंत्रियोंपर छोड़कर स्त्रियोंके साथ अनेक प्रकारके विषय भोग भोगने लगे। उसके उपरान्त उन्होंने कामशास्त्रके जानने वालोंके साथ विचार करके भाष्य सहित वात्स्यायन सूत्रोंका अभ्यास कर लिया और शृंगारका निधि रूप "अमरु शतक" नामक एक ग्रन्थ बनाया। उधर शंकराचार्यजीके शिष्योंने देखा कि अवधिके एक माससे पाँच छः दिन अधिक बीत गये, किंतु स्वामीजी लौट कर नहीं आये। तब वे लोग स्वामीजीके शरीरकी रक्षाके लिये कुछ चेलोंको छोड़कर उनको

खोजनेके लिये वहांसे चलकर अमरुक नामक राजाके राज्यमें पहुँचे। उन्होंने वहाँ जब सुना कि अमरुक राजा मरकर फिर जी गया है और वह बडे न्यायसे अब प्रजा पालन करता है तब समझ लिया कि इसी राजाके शरीरमे गुरु महाराज हैं। शिष्योने जब उस राजाके शरीरमे स्थित शंकराचार्यको अपनी गान विद्याकी चतुरता दिखलाई तब शंकराचार्यने शिष्योंको पहचानकर अपने शरीरमें जानेकी इच्छा की। आचार्यजीने राजाके शरीरको वहाँ छोड कर लिंग शरीर द्वारा अपने पूर्वके शरीरमें प्रवेश करनेके लिये चल दिया। उन्होंने गुहामें जाकर देखा कि राजाके मंत्रियोंके भेजे हुए दूत गण उनके मृतक शरीरको भस्म करनेके निमित्त चिता पर रखकर उसमे अग्नि लगा रहे हैं। उस समय शंकराचार्यजीने अपने शरीरमें प्रवेश करके संकटसे छूटनेके लिये नृसिंहजीका स्मरण किया। जब नृसिंहजी प्रकट हुए तब अग्नि शांत होकर बुझ गई। उसके पश्चात् शंकराचार्यजीने मण्डनमिश्रके घर जाकर उनकी स्त्री सरस्वतीको कामशास्त्रमे परास्त कर दिया। तब मण्डनमिश्रने विधि पूर्वक संन्यास धर्म ग्रहण किया। शंकरजीने उनको अपने शिष्योंमें श्रेष्ठ बनाया और उनका नाम सुरेश्वराचार्य रक्खा।

शंकराचार्यजी दक्षिण दिशामें गये। वहाँ सुरेश्वराचार्य आदि उनके शिष्योंने शैव, पाशुपत, गाणपत्य, शाक्त आदि मतवादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त किया। उसके पश्चात् जब शंकराचार्यजीने सिद्ध स्थानके पास श्रीवल्ली नामक ग्राममे निवास किया था तब उस ग्रामके प्रभाकर नामक विद्वान् ब्राह्मणने अपने १३ वर्षकी अवस्थाके मूढ़ पुत्रको उनके चरणोंपर डाल दिया। शंकराचार्यजीने उस पुत्रसे पूछा कि जडवृत्तिवाला तू कौन है? उस समय शंकरजीके दर्शनके प्रभावसे उसने विज्ञान लाभ करके १२ श्लोकोंमे आत्मतत्त्व वर्णन किया। तब शंकराचार्यने प्रभाकर ब्राह्मणसे कहा कि इन श्लोकोंसे आत्मतत्त्व हस्तामलकवत् प्रकाशित होता है, इस लिये इनको रचनेवाले तुम्हारे पुत्रका नाम अबसे हस्तामलक होगा उसके पश्चात् शंकरस्वामी हस्तामलकको अपने साथमें लेकर तुङ्गभद्राके तटपर शृङ्गेरी नामक पुरीमें आये, जहाँ पहिलेहीसे वह शारदादेवीकी स्थापना कर चुके थे। उन्होंने वहाँ शृंगेरीमठ स्थापन किया। शंकरस्वामीके शिष्योंमे गिरि नामक एक मूर्ख शिष्य था, जिसने स्वामीजीके अनुग्रहसे तत्कालही सम्पूर्ण विद्या प्राप्त करके तोटक छन्दमे शंकराचार्यकी स्तुति की; इस कारणसे उसका नाम तोटकाचार्य करके प्रसिद्ध हुआ। स्वामीजीके मुख्य शिष्योंमें उसकी गणना हुई। उस समय पद्मपाद, सुरेश्वराचार्य, हस्तामलक और तोटकाचार्य शंकरस्वामीके शिष्योंमे प्रधान हुए। इनके अतिरिक्त समितपाणि, चिद्विलास, ज्ञानकन्द, विष्णुगुप्त, शुद्धकीर्त्ति, भानुमरीचि, कृष्णदर्शन, बुद्धिवृद्धि, विरंचिवाद, अनन्तानन्द इत्यादि उनके बहुत शिष्य थे। स्वामीजीकी आज्ञासे उनके शिष्योंने बहुतसे ग्रन्थ बनाये। शंकरस्वामी ऋषिशृंगपर बहुत दिनोंतक निवास करनेके पश्चात् अपन घर गये क्योंकि एक बार घरपर जानेको उन्होंने पहिले अपनी मातासे कहा था। उनके घर जानेपर उनकी माताका देहान्त होगया।

श्रीशंकराचार्यजी पृथ्वीमें दिग्विजय करके नास्तिक तथा द्वैतमत वाले लोगोंको परास्त कर उनको शुद्ध अद्वैत मतमें लाये। उनका मत है कि इस प्रपंचमें जो कुछ देखनेमें आता है वह सब मिथ्या है। ब्रह्मसे भिन्न कोई पदार्थ नहीं है। ईश्वर और जीव एकही वस्तु है। इस

कारणसे उन्होंने किसी आस्तिक मतको, जिसमें ईश्वरकी सत्ता मानी जाती है, खण्डन नहीं किया, अद्वैत भावसे सब मतोंको स्थापित किया। विष्णु, शिव आदि देवताओंमे भेद रखनेवाले लोगोंको उनमें अभेद बुद्धि रखनेको उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि केवल ब्रह्मही उपासना करने योग्य है, किन्तु उसकी उपासना करना कठिन है, इस कारणसे शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश, दुर्गा इत्यादि देवताओंकी, जो उसके अंश है, समान भावसे उपासना करो। शंकराचार्यजी जैन, बौद्ध आदि मताभिमानियोंको परास्त करनेके पश्चात् कुछ शिष्योंके साथ बदरिकाश्रममे गये। वहाँ केदाराश्रममे उनका देहान्त होगया। उस समय उनकी ३२ वर्षकी अवस्था थी।

श्रीशंकराचार्यजीके जन्मका कोई ठीक समय अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है, परन्तु, शिष्य परम्परासे, जो शंकराचार्यके बादसे अभीतक चली आती है, अनुमान होता है कि सन् ईस्वीकी ९ वीं सदीमें वह थे। कुछ लोग उससे पहिले उनके रहनेका समय अनुमान करते है।

भारतवर्षकी चारों दिशाओंकी सीमाओंके पास शंकराचार्यजीके ४ प्रधान मठ है, जो उनके ४ शिष्योंसे हुए है—दक्षिणकी सीमाकी ओर मैसूर राज्यके शृंगेरी गाँवमें उनके शिष्य पृथ्वीधराचार्यका शृंगेरीमठ है, जिसका भुवार संप्रदाय, भूर्भुवगोत्र सरस्वती, भारती और पुरी उपाधि, रामेश्वर क्षेत्र, आदि वाराह देवता, कामाक्षी देवी, तुङ्गभद्रा तीर्थ; चैतन्य ब्रह्मचारी; यजुर्वेद, और अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य है। पश्चिमकी सीमापर द्वारिकापुरीमे शंकराचार्यके शिष्य विश्वरूपाचार्यका शारदामठ है, जिसका कीटवार संप्रदाय, अवगत गोत्र, तीर्थ, आश्रम और श्रीपाद उपाधि, द्वारिका क्षेत्र, सिद्धेश्वर देवता, भद्रकाली देवी, गंगागोमती तीर्थ, स्वरूप ब्रह्मचारी, सामवेद और तत्त्वमसि महावाक्य है। उत्तरकी सीमाके पास गढ़वाल जिलेकी जोशीमठ नामक बस्तीमें शंकरजीके शिष्य तोटकाचार्य का जोशीमठ है, जिसका आनन्दवार संप्रदाय, भृगु गोत्र, गिरि, पर्वत, और सागर उपाधि, बदरिकाश्रम क्षेत्र, नारायण देवता, पुण्यागिरि देवी, अलकनन्दा तीर्थ, नन्द ब्रह्मचारी, अथर्व वेद और अहमात्मा ब्रह्म महा वाक्य है। पूर्वकी सीमा पर उडीसेके पुरी जिलेके जगन्नाथपुरीमे शंकरजीके शिष्य पद्मपादाचार्यका गोवर्द्धनमठ है, जिसका भोगवार संप्रदाय, कश्यप गोत्र, वन और अरण्य उपाधि, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ देवता, विमला देवी, महोदधि तीर्थ, प्रकाश ब्रह्मचारी, ऋग्वेद और प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म महावाक्य है। ऐसा मठाम्नाय आदि ग्रन्थोंमें लिखा है।

## हरिहर।

बिरूरके रेलवे स्टेशनसे ७९ मील उत्तर (बङ्गलोर शहरसे ३०७ मील पश्चिमोत्तर) और हुबली जंक्शनसे ८१ मील दक्षिण-पूर्व हरिहर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्यमें मैसूर राज्य और बम्बई हातेके अङ्गरेजी जिलेकी सीमाके पास तुङ्गभद्रा नदीके दहिने किनारेपर (१४ अंश, ३० कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५० कला, ३६ विकला पूर्व देशांतरमे) हरिहर एक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४६७९ मनुष्य थे।

हरिहरके निकट तुङ्गभद्रा नदी पर, जो वम्बई हाते और मैसूर राज्य की सीमा बनी है, सन् १८६८ का बना हुआ १४ मेहराबियोंका एक सुन्दर पुल है, जिस पर होकर बङ्गलोर की सडक धारवाड को गई है। पुलके बनानेमें ३००००० रुपयेसे अधिक खर्च पड़े थे।

हरिहर पुराना कसबा है। हरिहरका वर्त्तमान मंदिर सन् १२२३ का बना हुआ है। सन् १८६५ तक कसबेके २ मील पश्चिमोत्तर फौजी छावनी थी। हरिहरके बने हुए लाल चमड़े प्रसिद्ध हैं।

## हुबली।

हरिहर कसबेसे ८१ मील ( बङ्गलोर शहरसे २८८ मील ) पश्चिमोत्तर और धारवाड कसबेसे १२ मील दक्षिण—पूर्व हुबलीका रेलवे जंक्शन है। वम्बई हातेके धारवाड जिलेमें ( १५ अंश, २० कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १२ कला, पूर्व देशांतरमे ) सब-डिवीजनका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा हुबली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हुबलीमें ५२५९५ मनुष्य थे, अर्थात् २६८१८ पुरुष और २५७७७ स्त्रियाँ। इनमे ३४७५५ हिन्दू, १५५१६ मुसलमान, १४४२ क्रस्तान, ८०१ जैन, ६० पारसी, १६ यहूदी और ५ एनिमिष्टिक थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ७४ वा और वम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ८ वां शहर है।

हुबलीमे सबडिवीजनकी प्रधान कचहरियां, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। वहाँ रुई, रेशम, नमक और गल्लेकी बड़ी तिजारत होती है। तांबेके वर्त्तन बहुत बनते हैं। दक्षिणी महाराष्ट्र देशके रुईके व्यापारका वह केंद्र हुआ है। पूना वाली सडक हुबली होकर हरिहर और उससे दक्षिण-पूर्व बङ्गलोरको गई है।

रेलवे—हुबली जंक्शनसे "सदर्न मरहटा रेलवे" की लाइन ३ ओर गई हैं, तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है—

(१) हुबली जंक्शनसे पश्चिम,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१२ धारवाड।
५६ लोंडा जंक्शन।
७१ कैसिलरक्।
१२२ मोरमूगाव बंदरगाह।

लोंडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील बेलगांव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, १२४ मील संगली, १३४ मील तासगांव-रोड, १४२ मील कुंडलरोड, १६४ मील करदा कसबा, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील वाथर, २३० मील नीरा, २४६ मील जेजुरी और २७८ मील पूना जंक्शन।

मीराज जंक्शनसे पश्चिम ६ मील शिरोलरोड, और २९ मील कोल्हापुर।

(२) हुबली जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३६ गदग जंक्शन।
४७ हरपालपुर।
८८ होसपेट।
१०४ गादिगनूर।
१२९ वल्लारी शहर।
१५९ गुटकल जंक्शन।

गदग जंक्शनसे उत्तर ४२ मील बादामी, ५८ बगलकोट कसबा, ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन।

गुंटकल जंक्शनसे दक्षिण ६३ मील धरम्वरम् जंक्शन, ११२ मील हिन्दूपुरम् और १७४ मील बङ्गलोर शहर ( गुंटकलसे रेलवे लाइन ५ ओर गई हैं, (पृष्ठ ९५१ मे देखिये )

(३) हुबली जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व,–

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

८१ हरिहर।

१६० विरूर।

१७८ बानावार।

१८८ अर्सीकेरा।

२४८ तमकूर।

२८८ बङ्गलोर शहर।

## धारवाड़।

हुबली जंक्शनसे १२ मील पश्चिमोत्तर धारवाडका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेमें ( १५ अंश, २७ कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ३ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान धारवाड़ एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड़ कसबेमें ३२८४१ मनुष्य थे अर्थात् १६७४९ पुरुष और १६०९२ स्त्रियाँ। इनमे २३८९६ हिन्दू, ७६६७ मुसलमान, ८८३ कृस्तान, ३४८ जैन, ४२ पारसी और ५ यहूदी थे। उस जिलेके हिन्दुओंमे ब्राह्मण और लिङ्गायत शरीफ है।

धारवाड़ कसबेमें ७ महल्ले हैं। चन्द मकान दो मञ्जिले तीन मञ्जिले बने हुए हैं। प्रति मङ्गलवारको बाजार लगता है। सबसे ऊँची भूमि पर कलक्टरका आफिस है, वहाँसे कसबा और उसके पासकी बस्तियाँ तथा चारोओरका देश देख पडता है। उसके पास एक मन्दिर है। कसबेके उत्तर ओर नीची भूमिपर धारवाड़का किला है। किलेकी दीवारके भीतर तथा बाहर २५ फीटसे ३० फीट तक चौड़ी दो खाई हैं। किलेके भीतर कोई दर्शनीय वस्तु नहीं है। किला हीन दशामें है। किलेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर देशी पैदलकी छावनी, १ मील पश्चिम मुसाफिरोंके लिये बँगला, थोड़ा पश्चिम–दक्षिण कबरगाह, और बगलेसे १ मील दक्षिण जरमन मिशनका बँगला है। धारवाड़ कसबेसे लगभग १¾ मील दक्षिण एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर पत्थरसे बना हुआ जैन ढांचेका एक चौकोना मन्दिर है। उसके खम्भोमेंसे एक खम्भेपर पारसी लेख है, जिसमें लिखा है कि सन् १६६० में बीजापुरके बादशाहके डिपुटीने इस मन्दिरको मसजिद बना लिया। दो जलाशयोंसे कसबे में पानी आता है, क्योंकि कसबेके प्रायः सब कूपोंका पानी खारा है।

धारवाड़ कसबेमें ब्राह्मण, लिङ्गायत, पारसी, मारवाडी इत्यादि लोग सौदागरी करते हैं। रुई, चावल इत्यादि माल धारवाड़से अन्य देशोंमे भेजे जाते हैं और शोरा, नारियल, खजूर, कसैली, नील, तांबा इत्यादि धातु और अङ्गरेजी चीजे अन्य स्थानोसे धारवाड़में आती है। जेलखानेके कैदी लोग कपडे, कालीन और बेंतकी चीजें बहुत सुन्दर बनाते हैं। धारवाड़में 'सदर्न मरहटा रेलवे' का सदर स्थान है।

धारवाड़ जिला—बम्बई हातेके दक्षिण महाराष्ट्रदेश ( दक्षिणी किस्मत ) में धारवाड़ जिला है। इसके उत्तर बेलगॉव और बीजापुर जिला, पूर्व हैदराबादका राज्य और तुंगभद्रा नदी, जो मद्रास हातेके बल्लारी जिलेसे धारवाड़को अलग करती है, दक्षिणी मैसूरका राज्य और पश्चिम ओर उत्तरी कनारा जिला है। जिलेकी भूमि उपजाऊ है। धारवाड़ जिलेमें कोई बडी नदी नहीं है। पहिले इस जिलेमें सोना बहुत मिलता था। जिलेके पूर्व भागके डम्बलके पडोसकी पहाड़ियोंमे और उनसे निकली हुई नदियोंमे अबतक कुछ सोना मिलता है। एक प्रकारके लोग, जो जलगर कहलाते हैं, सोना निकालनेका काम करते है। जिलेके जंगल और पहाडियोंमें भालू, बाघ, तेंदुए इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। धारवाड़ जिलेका जलवायु बम्बई हातेके सब जिलोंसे अधिक स्वास्थ्यकर समझा जाता है।

इस जिलेमे ३ मेले होते हैं,—( १ ) बॉकीपुर सबडिविजनके हलगुरगांवमे एक मुसलमान फकीरके दरगाहके पास फागुनमे ३००० यात्रियोका मेला, ( २ ) नवगढ़ सबडिविजनके अमनूरगॉवमे एक मुसलमान फकीरके यादगारममें चैत्रमें लगभग ६००० मनुष्योंका मेला और ( ३ ) रानी बेनूर सबडिविजनके गुरगूडापुर गॉवमे हिन्दू देवता मल्हार मार्तण्डके स्मरणार्थ आश्विनमें लगभग ९००० मनुष्योंका मेला होता है। जिलेमें लिगायत लोगोंके अनेक मठ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड़ जिलेके ४५३५ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८८२९०७ मनुष्य थे, अर्थात् ७६९३४९ हिन्दू, १००६२२ मुसलमान, १०५२६ जैन, २३५६ क्रूस्तान, ३१ पारसी, १८ यहूदी और ५ बौद्ध। हिन्दुओमे १३५३५७ पंचमशाली ८७५६८ धाँगर, ५४३५४ बिराव, ४४३४५ कुनबी, ३९११६ जंगम, २८४०३ ब्राह्मण; २७६१२ माँग, २३४९९ तेली, २१६८६ रेड्डी, १८९५३ कोस्ती ( बिनाईके काम करनेवाले ), ११३९२ महारा और बाकीमें कोली, सीपी, सुतार ( बढ़ई ), इत्यादि जातियोके लोग थे। राजपूत केवल ३४५० थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड़ जिलेके कसबे हुबलीमें ५२५९५, धारवाडमें ३२८४१, गदगमें २३८९९ और रानीबेनूरमे १३७६१ मनुष्य थे। इनके अलावे धारवाड़ जिलेमें बंकापुर, नरगढ, नवलगढ़ इत्यादि छोटे कसबे है।

इतिहास—लोगोकी कहावतसे विदित होता है कि विजयानगर राज्यके आनागुंदीमें रामराजा रहते थे। उनके अधीनके जंगल महकमेके अफसर धाररावने सन् १४०३ में धारवाडके किलेको बनवाया। सन् १५६४ में तालीकोटकी लडाईमें विजयानगरके राजाके पराम्त होनेपर धारवाड जिला बीजापुरके राज्यमे मिलगया। सन् १५६८ में बीजापुरके महम्मद आदिलशाहने आनागुदीके राज्यका विनाश कर दिया। सन् १६७५ मे शिवाजीके अधीन महाराष्ट्रोंने धारवाड जिलेमे उपद्रव मचाया। उस समयसे एक सौ वर्षतक वह देश महाराष्ट्रोंके अधिकारमें रहा। सन् १६८५ में दिल्लीके बादशाह औरंगजेबने धारवाड़का किला लेलिया। सन् १७५३ में वह किला महाराष्ट्रोंके अधीन हुआ। सन् १७७६ मे मैसूरके हैदरअलीने धारवाड जिलेपर अधिकार करके धारवाड कसबेको ले लिया। सन् १७९१ में महाराष्ट्रोंने अङ्गरेजी सहायता पाकर धारवाड कसबा और वहॉका किला मुसलमानोंसे छीन लिया। सन् १८१८ में पेशवाके पराम्त होनेपर किलेके समेत धारवाड़ जिला अंगरेजोंकाधिकारमें होगया।

पहिले धारवाड़ जिलेके कसबों और बडे बडे गाँवोंके पास एक एक किले थे; उनके भीतर शरीफ तथा धनी लोगों और बाहर गरीब लोगोंके मकान थे। अब तक बहुतेरे किलोंकी निशानियाँ देख पडती है। पूर्व समयमे बहुतेरे गावोंके चारो ओर लुटेरोंके आक्रमणसे बचनेके लिये मिट्टी तथा ईंटोंकी दीवार बनी हुई थी, जिनमेंसे बहुतेरी दीवार अब गिर गई है।

## गोआ।

हुबली जंक्शनसे पश्चिम १२ मील धारवाडका रेलवे स्टेशन और धारवाड़के रेलवे स्टेशनसे पश्चिम ४४ मील लोंडा जंक्शन, ५९ मील सदर्न मरहटा रेलवे और इण्डिया पोर्चुगीज रेलवेका जंक्शन, कैसिलरक् और ११० मील मोरमूगांव बन्दरगाहका रेलवे स्टेशन है। कैसिलरक् स्टेशनके पास अङ्गरेजी और पोर्चुगीजोंके राज्यकी सीमा है। कैसिलरक्से पश्चिम १० मीलके भीतर १७ जगह पहाड फोड करके उसके भीतर रेलवे लाइन बैठाई गई है। सुरंगी मार्ग, जो पहाड फोड़ कर बने है, १५० फीटसे ८३८ फीट तक लम्बे हैं। कैसिलरक्से ८½ मील पश्चिम दूधसागर नामक स्टेशनके पास एक उत्तम झरना है, जिसको लोग दूधसागर कहते हैं। खडी पहाडीके पादमूलके पास मोरमूगॉवका रेलवे स्टेशन है। मोरमूगॉंव बन्दरगाहसे ब्रिटिस इण्डिया स्टीम् नवीगेशन कम्पनीके आगबोट लगभग २६ घंटेमे बंबई शहरमें पहुंच जाते है। बंदरगाहसे पश्चिमोत्तर १०१ मील रत्नागिरि और २२७ मील बंबई है।

गोआ शहर समुद्रके किनारे पर ( १५ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ५७ कला पूर्व देशांतरमें ) पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी राजधानी है। वास्तवमें ३ कसबोंका नाम गोआ है,—पहिला गोआ, पुराना गोआ और पांजिम। इनमेसे पहिला गोआ, जो ज्वारीनदीके किनारे पर कदंब वंशके राजाओं द्वारा बनाया गया था, वह मुसलमानोंके आक्रमणसे पहिले हिंदुओंका पुराना शहर था, किंतु उसकी इमारतोंकी अब कोई निशानी नहीं हैं। दूसरा गोआ, जिसको लोग पुराना गोआ कहते हैं, पहिले गोआसे लगभग ५ मील उत्तर है। उसको वास्कोडीगामाके हिन्दुस्तानमे आनेसे १९ वर्ष पहिले ( सन् १४७९ ई० में ) मुसलमानोने बसाया। उस प्रसिद्ध शहरको जब पोर्चुगल वालोंने जीता तब वह पोर्चुगीजोंके एशियाके राज्यकी राजधानी हुआ। १६ वीं सदीमे वह खूब बढ़ा चढ़ा था, किन्तु पीछे महामारीसे मनुष्य-संख्या घट जानेसे और पोर्चुगल गवर्नमेंटका सदर स्थान पांजिम होनेके कारण वह शहर खंडहर होगया, परंतु अब तक वह हिन्दुस्तानके रोमन कथोलिक पादडियोंका सदर स्थान बना है। वहां अब जंगल जमगया है, गिरजों और पादडियोंके मकानके अतिरिक्त कुछ नही है। उनमें चार पॉच गिरजे मरम्मतसे हैं। सन् १८९० में पुराने गोआमें केवल ८६ मनुष्य थे।

पांजिम–पॉंजिमको नया गोआभी कहते हैं। मोरमूगॉव ४ मील उत्तर पॉंजिम शहर तक अच्छी सडक बनी हुई है। समुद्रके पासकी एक जमीनकी पट्टीके ऊपर मंडावी नदीके बायें किनारे पर उसके मुहानेसे लगभग ३ मील दूर पोर्चुगीज वालोंके राज्यका सदर स्थान पॉंजिम है, जिसमें सन् १८८१ में ११८५ मकान और ८४४० आदमी थे और इस समय

लगभग ९५०० मनुष्य है; जिनमेंसे आधेसे अधिक लोग देशी कृस्तानोंके वंशधर हैं। पॉजि-सके बीच वाले महल्लेसे रिवदर शहरतली तक लगभग ३०० गज लंबा एक ऊंची सडक बनी है, जिससे होकर प्रधान सडक पुराने गोआ को जाती है। पॉजिम शहर निहायत सुंदर और साफ है। उसमे पोर्चुगल गवर्नमेंट की बहुतसी सुन्दर इमारते बनी हुई है। बारक अर्थात् सैनिकगृह दूर तक फैले हुए है, जिनमें ३०० सेना रहती हैं। बारकके पास पोर्चुगीजोंके पूर्व गवर्नर अलबुकेर्कको ५ फीटसे अधिक ऊंची प्रतिमा खडी है। पुराने किले-में गोआके गवर्नर रहते है। इनके अलावे पॉजिममें हाईकोर्ट, कष्टमहौस, अस्पताल, जेल-खाना, स्कूल, म्युनिसिपल आफिस और अन्य अनेक आफिस हैं।

गोआका राज्य—यह पश्चिमी किनारे पर पोर्चुगीजोका राज्य है। इसके पश्चिम ओर समुद्र और ३ ओर अंगरेजी जिले है, अर्थात् इसके उत्तर सावंत वाडीका राज्य, पूर्व-पश्चिमी घाट पहाडियोका सिलसिला, जो बेलगाव जिलेसे इसको अलग करता है, दक्षिण तरफ उत्तरी किनारा जिला और पश्चिम समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ६२ मील और सबसे अधिक चौडाई पूर्वसे पश्चिम तक ४० मील तथा संपूर्ण क्षेत्रफल प्राय १०६२ वर्गमील है।

गोआ राज्य पहाड़ी देश है। उसकी सबसे ऊँची पहाडीकी सोनसागर नामक चोटी, जो राज्यके उत्तरीय भागमे है, समुद्रके जलसे ३८३७ फीट ऊँची है। छोटी नदियां बहुत हैं। बहुतेरी नदिया एक दूसरीको काटती हुई बहती है, जिससे बहुतसे छोटे टापू बन गये हैं, जिनमें १८ प्रधान हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोआ राज्यके आठों जिलोंमे ४४५४४९मनुष्य थे, अर्थात् २५६६११ यूरेशियन और देशी कृस्तान, ६१५ यूरोपियन और अमेरिकन, २३० अफ्रिकन और बाकीमें हिन्दू, मुसलमान इत्यादि। उस समय गोआ राज्यके कसबे मोरमूगांव-में २५२२ मकान और ११७९४ मनुष्य, मपुकामें २२८५ मकान और १०२८६ मनुष्य तथा पॉंजिममें ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे।

गोआके राज्यमें अब तिजारत बहुत कम होती है, किन्तु वहॉंके बढ़ई, लोहार, सोनार तथा जूता बनानेवाले बडे कारीगर हैं। वे अपनी कारीगरीकी चीजोंको बनाकर बेंचते हैं। नारियल, कलैली, आम, तरबूज, कटहल इत्यादि फल, दारचीनी, मिर्च आदि मसाले और नमक आदि चीजें उस राज्यसे अन्य स्थानोंमें भेजी जाती है और कपड़ा, चावल, तमाकू, चीनी, शराब, धातु और शीशेके बर्तन इत्यादि विविध प्रकारकी वस्तु अन्य स्थानोंसे गोआ राज्यमें आती हैं। सन १८७३—१८७४ में गोआके गवर्नमेंटको गोआ राज्यसे १०८१४८० रुपये मालगुजारी आई थी। और १०७१४४० रुपये खर्च पडे थे।

पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानका राज्य—हिन्दुस्तानमें पोर्चुगलके बादशाहके अधीन गोआ दमन और ड्यू है। ये तीनों बम्बई हातेमें हैं,—गोआ उत्तरी किनारा जिलेके उत्तर दमन, सूरत और थाना जिलेके मध्यमें और ड्यू काठियावारके दक्षिण भागमें। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानके सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्रफल १०६६ वर्गमील था और सम्पूर्ण मनुष्य-संख्या ५६१३८४ थी।

इतिहास—सन् १०९ ईस्वीसे गोआ कदम्ब वंशके राजाओंके, जिनमें पहिले राजाका नाम तिलोचन कदम्ब था, अधिकारमें चला आया। सन् १३१२ में दिल्लीके

अलाउद्दीनके सेनापति मलिक काफूरने उसको अपने अधिकारमे किया। सन् १३७० में विजयानगरके हरिहरके मन्त्री विद्यारण्य माधवने मुसलमानोंको परास्त करके गोआ छीन लिया। सन् १४४९ मे वहमनी खानदानके वादशाह दूसरे महम्मदने गोआको जीतकर वहमनी राज्यमें मिला लिया। लगभग १५ वी सदीके अन्तमें यह वीजापुरके आदिलशाही खानदानके हस्तगत हुआ। सन् १५१० की १७ वी फरवरीको पोर्चुगलके वादशाहके गवर्नर "अलफंसोडी अल्वुकर्क" ने वीजापुरवालोंसे गोआ छीन लिया। उसने वहाँ किलावन्दी करके पोर्चुगीजोंका राज्य नियत किया। उसके पश्चात् वह वहुत शीघ्रतासे प्रसिद्ध होकर पोर्चुगीजोंके पूर्वी राज्यकी राजधानी हुआ। जव गोआ शहर वढ़ा चढ़ा था तव उसमें लगभग २००००० मनुष्य वसते थे और उसमे वडी भारी तिजारत होती थी। पोर्चुगीजोंने अनेक गिरजे वनवाये। हालंडवालों तथा महाराष्ट्रोंके कई वार आक्रमणसे तथा देशी लोगोंकी वगावतसे गोआकी वडी हानि हुई। वार वारकी लूट पाटसे तथा वहाँके जल वायु रोगवर्द्धक होनेके कारण उसके निवासी लोग उसको छोडने लगे।

पहिले पुराने गोआ कसवेमें पोर्चुगीजोंके गवर्नर रहते थे। सन् १७५९ मे पाजिम अर्थात् नया गोआ, जो मछुहोंका छोटा गॉव था, गवर्नरका सदर स्थान वना। वहां वीजापुरके यूसुफ आदिलशाहका वनवाया हुआ किला पहिलेहीसे था। उस समयसे पुराने गोआकी आवादी तेजीसे घटने लगी। सन् १८४३ मे गोआ कसवा पोर्चुगीज वालोंके हिन्द-के राज्यकी राजधानी हुआ।

## कारवार।

मोरमूगांवके बन्दरगाहसे ४८ मील दक्षिण-पूर्व कारवारका बन्दरगाह है। बम्बई हातेके पश्चिमीघाटपर उत्तरी किनारा नामक जिलेका सदर स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसवा कारवार है। एक सप्ताह पर वम्बईके आगवोट मोरमूगांव तथा कारवार होकर दक्षिण जाते है। कारबारके बन्दरगाहके किनारेसे ५०० गज दूर समुद्रमें लङ्गरकी जगह है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कारवार कसवेकी म्युनिसिपल्टीके भीतर १४५७९ मनुष्य थे, अर्थात ११६६६ हिन्दू, १८१६ कृस्तान, १०८३ मुसलमान, ९ जैन, १ पारसी, १ यहूदी और ३ अन्य।

कारवारकी म्युनिसिपलटीके भीतर ९ वस्तियां है। कारवारमे जिलेकी प्रधान कचह-रियां, अस्पताल, टेलीग्राफ आफिस, स्कूल इत्यादि सरकारी मकान है। किनारेके आसपास कई टापू हैं, जिनमेंसे सवसे बड़े टापूपर एक लाइट हाउस बना है, जो समुद्रके जलसे २१० फीट ऊँचा है और समुद्रमें २५ मील दूरसे देख पडता है।

उत्तरी किनारा जिला–बम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशमे उत्तरी किनारा नामक जिला है। इसके उत्तर बेलगाँव जिला, पूर्व धारवाड जिला और मैसूरका राज्य, दक्षिण मद-रास हातेमें दक्षिणी किनारा जिला; पश्चिम पश्चिमीघाटका समुद्र और पश्चिमोत्तर गोआका राज्य है। जिलेका सदर स्थान कारवार है।

पश्चिमीघाटका सह्याद्रि सिलसिला, जो ३५०० से २००० फीट तक ऊचा है, जिलेमें उत्तरसे दक्षिणको गया है। जिलेमें वरदा, काली, गंगावली, शिरावती आदि छोटी नदियाँ बहती हैं। होनावर कसबेसे ३५ मील उत्तर जरसोपाका प्रसिद्ध जलप्रपात अर्थात्

बड़ा झरना है। कारवारसे होनावर तक समुद्रके किनारेके पासकी पहाडियोंसे मकान बनाने योग्य सुन्दर पत्थर निकलते है। जिलेके चन्द भागोंमें लोहेकी खान है। जिलेमें जङ्गल बहुत हैं। उत्तरी किनारा जिलेमें बम्बई हातेके सब जिलोंसे अधिक बनैले जन्तु रहते हैं। उसमें अब तक अनेक प्रकारके बाघ, भालू, बनैले कुत्ते, साँभर, बनैले सूअर और भांति भांतिके हरिन बहुत है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी किनारा जिलेके ३९११ वर्गमील क्षेत्र-फलमे ४९१८४० मनुष्य थे, अर्थात् ३८१३२८ हिन्दू, २४२८२ मुसलमान, १४५०९ क्रस्तान, १६६९ जैन, २५ यहूदी, १७ पारसी और १० बौद्ध। हिन्दुओंमें ६३८६५ ब्राह्मण, ५१०५७ कुनबी, १५७६५ धेद, १०१५८ सोनार, ३२२२ सुतार (बढई), २१६१ कुम्भार, १९७१ तेली, ८३४ लोहार, ३४४ राजपूत और बाकी २३१९३३ में अन्य जातियोंके मनुष्य थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी किनारा जिलेके कसबे कारवारमें १४५७९ और कुमटामें १०७१४ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त ५ हजारसे अधिक और १० हजारसे कम आबादीवाले ६ छोटे कसबे और गोकर्ण प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। गोकर्ण और बनवासीमें उत्तम पुराने मन्दिर, जरसोपामे प्रसिद्ध जैन मन्दिर और मीरजान तथा सदाशिव-गढ़मे पुराने किले है। जिलेमें १२ बन्दरगाह हैं, जिनमेसे कारवार, कुमटा, अकोला, भट-कर और होनावर प्रसिद्ध है।

इतिहास–पुराना कारवार कसबा एक समय कारवार कसबेसे २ मील पूर्व काली नदीके किनारेपर बहुत प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। वहाँ सन् १६३८ मे अङ्गरेजोंने एक कोठी कायम की। सन् १६६० में कारवार कसबा बीजापुर राज्यके अधिकारमे था। उस समय वहाँ ५० हजार जोलाहे रहते थे। सन् १६६५मे शिवाजीने अङ्गरेजोंसे ११२० रुपया खिराज लिया। सन् १६०४ मे शिवाजीने कारवार कसबेको लूटा और जला दिया, किन्तु अङ्गरेजोंकी कुछ हानि नहीं की। सन् १६७६ में वहाँके देशी प्रधानोंने अङ्गरेजी कोठीपर जुल्म किया। सन् १६७९ में अङ्गरेजोंने कोठीका काम उठा लिया; किन्तु सन् १६८३ मे उन्होने फिर काम आरम्भ किया। सन् १६८४ में प्रायः सब अङ्गरेज कारवार कसबेसे निकाल दिये गये। सन् १६९७ में महाराष्ट्रोंने कारवारको उजाड दिया। सन् १७१५ में वहाँका पुराना किला तोड़ दिया गया। एक देशी प्रधानने सदाशिवगढ़में किला बन-वाया। सन् १७२० में अङ्गरेजोंको फिर वहाँसे अपना कारवार उठा लेना पड़ा। सन् १७५२ में फिर अगरेजी कोठी कायम हुई। सन् १८०१ में पुराना कारवार कसबा हीन दशामें पड़चुका था।

उत्तरी किनारा जिलेका इतिहास मदरास हातेके दक्षिणी किनारा जिलेके इतिहासमें शामिल हैं। पहिले उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेमें था, किन्तु सन् १८६२ में बम्बई हातेमें कर दिया गया। उसके पीछेका वर्तमान कारवार कसबा है, जो पहिले मछुहोंका छोटा गाँव था।

## गोकर्ण तीर्थ।

कारवारके बन्दरगाहसे ४० मील और मोरमूगाँवके बन्दरगाहसे ८८ मील दक्षिण-पूर्व उत्तरी किनारा जिलेमें समुद्रके किनारेपर कुमटा एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१

की मनुष्य-गणनाके समय १०७१४ मनुष्य थे। कुमटाके वन्दरगाहसे १० मील उत्तर, समुद्रके किनारेसे लगभग १ मील दूर वम्बई हातेके उत्तरी किनारा जिलेमें गोकर्ण एक गाँव तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। मोरमूगाँवमें रेलगाडीसे उतरकर वहाँसे आगवोट द्वारा गोकर्ण जाना चाहिये। कुछ यात्री हुवलीके रेलवे स्टेशनसे गोकर्ण जाते हे। हुवलीसे लगभग १२५ मील दक्षिण-पश्चिम गोकर्ण तक वैलगाडीका मार्ग है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोकर्ण गाँवमें ४२०७ मनुष्य थे, अर्थात् ४१९१ हिन्दू, ९ कृस्तान और ७ मुसलमान।

गोकर्ण गाँवमे महावलेश्वर शिवका द्राविडियन ढाचेका वडा मन्दिर वना हुआ है। वडे घेरेके भीतर महावलेश्वर शिवका खास मन्दिर है, उसके आस पास अनेक मन्दिर और गोपुर वने है। मन्दिरमें सर्वदा १०० से अधिक दीप जलाये जाते हैं। भारत-वर्षके सव त्रिभागोंके यात्री खास करके पर्यटन करनेवाले साधु लोग गोकर्णमे जाते हैं। प्रति वर्ष फाल्गुनकी शिवरात्रिको वहाँ मेला होता है, जिसमें २००० से ८००० तक आदमी एकत्र होते है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—( वनपर्व, ८८ वां अध्याय ) दक्षिणकी ताम्रपर्णी नदीके देशमें विख्यात गोकर्ण तीर्थ है। ( २७७ वां अध्याय ) लंकापति रावण खर की सेना-का विनाश सुनकर रथारूढ हो त्रिकुलाचल और कालपर्वतको लांघ आकाश मार्गसे रमणीय समुद्रको देखता हुआ गोकर्णमें पहुँचा। उसने वहाँ मारीच राक्षसको, जो रामके डरसे उस स्थानमें आ पडा था, देखा। ( २७८ वाँ अध्याय ) वह मारीचको साथ लेकर पचवटीके पास पहुँचा। मारीच मृगका विचित्र रूप धारण कर रामको वनांतरमे लेगया। रावणने सीताका हरकर चल दिया।

( अनुशासनपर्व, १८ वाँ अध्याय ) चारुशीर्पने गोकर्ण तीर्थमे जाकर १०० वर्ष पर्यन्त तप किया। तव महादेवजीने उसको सौ हजार वर्षकी परमायु तथा एक सौ पुत्र दिये।

अध्यात्मरामायण—( उत्तरकांड, प्रथम अध्याय ) रावणने कुम्भकर्ण और विभीषणके सहित गोकर्णमें जाकर कठिन तप किया था। जब एक सहस्र वर्ष वीत जाते थे, तव वह अपना एक शिर काटकर अग्निमें होम कर देता था। इसी प्रकारसे दस सहस्र वर्ष वीतने पर जव वह अपना दसवाँ शिर काटनेके लिये उद्यत हुआ, तव उसको वर देनेके लिये ब्रह्मा प्रकट हुए। रावणने ऐसा वर मांगा कि मैं सुर, असुर, नाग, यक्ष आदि देवताओंसे अवध्य होजाऊं, मनुष्यसे मुझको कोई भय नहीं है। ब्रह्माजी उसको यह वर देकर कुम्भकर्णके पास गये। कुम्भकर्णने सरस्वतीकी प्रेरणासे मोह युक्त होकर ऐसा वर मांगा कि मैं ६ मास निद्रित रहकर एक दिन भोजन करूं। उसको यह वरदान देकर ब्रह्माजी विभीषणके निकट गये। विभीषणने यह वरदान मांगा कि मेरा मन सर्वदा धर्ममे तत्पर रहे। ब्रह्माजी इनको भी, ऐसाही होगा कहकर चले गये। ( यह कथा वाल्मीकिरामायण, उत्तरकांडके १० वें सर्ग में है )।

लिंगपुराण—( २४ वाँ अध्याय ) शिवजीने कहा कि सोलहवें द्वापरमें गोकर्ण नामसे हम अवतार लेंगे। जिनके नामसे वह स्थान गोकर्णवनके नामसे प्रसिद्ध होगा।

पद्मपुराण—( उत्तरखण्ड, २२२ वाँ अध्याय ) गोकर्ण क्षेत्रमें मृत्यु होनेसे मनुष्य निःसंदेह शिवरूप होजाता है; उसका फिर जन्म नहीं होता।

गरुडपुराण--( पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय ) भारतवर्षमें गोकर्ण नामक उत्तम तीर्थ है।

कूर्मपुराण--( उपरि भाग, ३४ वाँ अध्याय ) तीर्थोंमें उत्तम गोकर्ण तीर्थ है, जिसमें गोकर्णेश्वर शिवलिंगके दर्शन करनेसे मनोवाञ्छित फल लाभ होता है, तथा वह मनुष्य शंकरको अति प्रिय हो जाता है।

वाराहपुराण--( उत्तरार्द्ध, २०७ वाँ अध्याय ) एक समय महर्षि सनत्कुमारने सुमेरु पर जाकर ब्रह्मासे पूछा कि शिवजीका नाम उत्तर गोकर्ण, दक्षिण गोकर्ण और शृंगेश्वर किस भांतिसे हुआ ? इन लिङ्गोके स्थान कहां हैं। ब्रह्माजीने कहा कि मंदराचलके उत्तर किनारेपर मुजवान पर्वत हैं, वहाँ पार्वती और स्वामिकार्त्तिक आदि गणोंके साथ भगवान् शङ्कर विराजते थे। शिलाद मुनिके नंदी नामक पुत्र उस स्थान पर वहुत कालसे उग्र तप कर रहे थे। शिवजीने नंदीको वहुत वरदान दिया और कहा कि आजसे सर्वत्र हमारे तुल्य तुम्हारा पूजन होगा। उन्होने अपने जानेके समय नंदीसे कह दिया कि हम श्लेष्मातक वनमें जाते है, किसीके पूछने पर तुम उस स्थानको बतलाना नही। ( २०८ वॉ अध्याय ) शिवजीके जाने पर नन्दीश्वरने चतुर्भुज तथा त्रिनेत्र होकर दिव्य रूप धारण किया और हाथोंमे त्रिशूल परिघ, दड और पिनाक धारण करके दूसरे शिवके समान वह होगया। देवताओंने नन्दीश्वरके विलक्षण तेजको देखकर यह वृत्तान्त इन्द्रसे कहा। इन्द्रको भय हुआ कि यह तपस्वी अवश्य तीनो लोकोंको अपने वशमें करेगा, इस लिये शिवजीसे मिलकरके इसकी शांतिके लिये कोई उपाय पूछना चाहिये। ऐसा विचारकर ब्रह्मा और विष्णुको साथ ले वह नन्दीके पास पहुँचे। नन्दीने ब्रह्मादि देवताओंका बड़ा सत्कार किया और इनके दर्शनसे अपने को कृतकृत्य माना; परन्तु उनके पूछने पर शिवका पता नही बताया। ( २०९ वॉ अध्याय ) तब देवता मुञ्जवान पर्वतसे शिवजीको खोजने चले और ढूँढते ढूँढते श्लेष्मातक वनमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने मृगरूप धारण किये हुए शिवजीको देखकर उनको पहचान लिया। सब लोग मृगको पकड़नेके लिये चारोओरसे दौडे। इन्द्रने उस मृगके शृंगका अग्रभाग जाकर पकड़ा, विचला भाग ब्रह्माने पकड लिया और शृंगका मूल विष्णुके हाथमें आया। तब वह शृंग तीन टुकड़े होकर तीनोंके हाथमें रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम सब हमको नहीं पासकोगे। अब शृंग मात्रके लाभसे सन्तुष्ट हो जाओ।

( २१० वाँ अध्याय ) इन्द्रने शृंगके निज खण्डको विधि पूर्वक अमरावतीपुरीमें स्थापित किया और ब्रह्मोने उसी भूमिमें स्थापित कर दिया। दोनों खण्डोंका नाम लोकमें गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। विष्णुनेभी अपने हाथके शृंगके खण्डको लोकके हितके लिये स्थापित किया, जिसका नाम शृंगेश्वर हुआ। जहां जहां शृंगका खण्ड स्थापित हुआ, वहाँ शिवजी निज अंशकलासे स्थित होगये।

लङ्कापुरीका रावण सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत अपने पुत्र मेघनादके साथ स्वर्गमें गया। उसने वहाँ इन्द्रादि देवताओंको जीत स्वर्गमें निज राज्य स्थिर किया। रावणने अपने घर जानेके समय अमरावतीके गोकर्णेश्वरको लंकामें स्थापित करनेके लिये अपने साथ ले लिया। वह अपने मार्गके एक स्थानमें गोकर्णेश्वर शिवलिङ्गको रख संध्योपासन करने लगा। जब चलनेके समय वह शिवलिङ्गको उठाने लगा, तब वह नहीं उठा। उस समय रावण उसी भांति लिङ्ग-

को वहाँही छोड़कर लङ्काको चला गया। उसी लिङ्गका नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। उसकी किसीने प्रतिष्ठा नहीं की, लोककी रक्षाके लिये शिवजी अपने-आप भूमिमें स्थिर होगये ( ब्रह्माके स्थापित शृंगके खण्डका नाम उत्तर गोकर्ण है, उनका वृत्तान्त भारत-भ्रमण दूसरे खण्डके गोलागोकर्णनाथमें और विष्णुके स्थापित शृंगके खण्डका वृत्तान्त तीसरे खण्डके शृंगेश्वरनाथमें लिखा हुआ है )।

स्कन्दपुराण–( ब्रह्मोत्तर खण्ड, दूसरा अध्याय ) शिवजी कैलास और मन्दराचलके समान गोकर्ण क्षेत्रमें भी सर्वदा निवास करते हैं। वहां महावल नामक शिवलिङ्ग है, जिसको रावणने वडा तप करके पाया और गोकर्णक्षेत्रमें स्थापित किया।

उस क्षेत्रमें अगस्त्य, सनत्कुमार, उत्तानपाद, अग्नि, कामदेव, भद्रकाली, गरुड, रावण, विभीषण, कुम्भकर्ण आदि व्यक्तियोंने तप करके अपने अपने नामसे शिवलिङ्ग स्थापित किये थे। वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, स्कन्द, गणपति, धर्म, क्षेत्रपाल, दुर्गा आदि देवताओंके स्थान हैं। वहाँके सब तीर्थोंमें कोटितीर्थ मुख्य है और सब लिङ्गोंमें महावल नामक शिवलिङ्ग श्रेष्ठ है। पश्चिमके समुद्रके तीरपर ब्रह्महत्यादि पापोंको नाश करने वाला गोकर्ण क्षेत्र है। उस क्षेत्रमें फाल्गुनकी शिवरात्रिको बेलपत्रसे शिवके पूजन करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं।

दूसरा शिवपुराण–( ८ वाँ खण्ड, १० वाँ अध्याय ) पश्चिमके समुद्रके तटपर गोकर्ण नामक तीर्थ है। शिवजीको मन्दराचल आदि स्थानोंके समान गोकर्णभी प्रिय है। वहाँ असंख्य मनुष्योंने तप करके मोक्ष पाया है। उस तीर्थके महावल नामक शिवलिङ्गको रावणने तप करके पाया था और गणपतिने उसको वहाँ स्थापित किया।

( ४३ वाँ अध्याय ) एक समय लंकापति रावणने हिमालय पर्वत पर शिवलिङ्ग स्थापित करके शिवका वड़ा तप किया। जब शिवजी प्रकट नहीं हुए, तब उसने अपने ९ शिरोंको काटकर शिवलिङ्ग पर चढ़ा दिया। जब वह अपना दसवां शिर चढानेको उद्यत हुआ तब शिवजी प्रकट हुए। शिवजीने उसके शिरोंको उसके धड़से जोड़ दिया और उससे कहा कि हे दशानन! तुम क्या चाहते हो? रावणने कहा कि मैं वलवान् होऊँ और तुम्हारे लिङ्गको अपने नगरमें स्थापित करके उसका दर्शन करूं, यही वरदान आप मुझको देवे। शिवजीने कहा कि ऐसाही होगा; किन्तु मार्गमें किसी स्थानपर तुम हमारे लिंगोंको रक्खोगे तब वह वहांही रह जायंगे। ऐसा कह शिवजी दो लिंग रूप होगये। रावण दोनोंको मजूषोंमें करके कांवर पर लेचला। मार्गमें शिवकी मायासे रावणको वडे वेगसे लघुशंका लगी। वह एक मुहूर्तके लिये एक गोपको कांवर थंभा कर मूत्र करने लगा। ( ४४ वाँ अध्याय ) जब रावणके मूत्र करते हुए विलंब होगया और उसका मूत्र नहीं रुका, तब अहीरने थककर धरती पर कांवर रख दिया। उसके पश्चात् रावण वडा जोर करके लिंगोंको उठाने लगा; किन्तु वे नहीं उठे। तब वह दोनों लिंगोंको अपने अँगूठेसे दबाकर अपने घर चला गया। जो लिंग कांवरमें रावणके आगे था, वह गोकर्णमें चंद्रभाल नामसे और जो पीछे था वह चिताभूमिमें वैद्यनाथ नामसे प्रसिद्ध हुआ।

## जरसोपाके जलप्रपात।

कुमटाके वंदरगाहसे १० मील, कारवारके बंदरगाहसे ५० मील और मोरमू गांवके रेलवे स्टेशनसे ९८ मील दक्षिण-पूर्व ( मङ्गलूरके वंदरगाहसे १०२ मील पश्चिमोत्तर ) होना–

वरका बंदरगाह है। उत्तरी किनारा जिलेमें समुद्रके तीर पर समुद्रके एक बडे कोलके उत्तर सबडिवीजन का सदरस्थान होनावर एक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६६५८ मनुष्य थे; अर्थात् ५२५२ हिंदू, ८६८ कृस्तान और ५३८ मुसलमान। कोलके दक्षिण-पूर्व जरसोपा नामक नदी, जिसको शिरावती भी कहते है, समुद्रमें गिरती है। होनावरमे बडा कारबार होता है । बम्बईके आगबोट मोरमूगांव, कारवार, कुमटा और होनावर होकर दक्षिणकी ओर जाते हैं।

होनावरसे १८ मील पूर्व नदीकी धाराके पीछे जरसोपा नामक वस्ती और उस वस्तीसे २० मील पूर्वकी ओर कोदकानी वस्ती है। होनावरसे जरसोपा वस्ती तक नदीमें नाव जाती है और जरसोपासे कोदकानी तक जंगलका मार्ग है। जलप्रपातोंके पास जानेके लिये सवारीके लिये मचोला भी मिलता है।

कोदकानी वस्तीके पास जरसोपा नदीके ४ जलप्रपात, अर्थात् बड़े झरने है । लोग कहते है कि ऐसा विचित्र जलप्रपात किसी जगह नहीं है। अमेरिकाके नियागरा नामक जलप्रपात भी इसका मुकाबला नही कर सकता है। दूरहीसे जरसोपाके पानीका शब्द आकर कानो पर बजडता है । कोदकानीके आस पास २ डाक बंगले है । वहांके जंगलोमे बनैले सूअर, बाघ इत्यादि वनजतु रहते है। कोदकानीके पाससे उसके नीचे अजीब तरहसे खौलता हुआ जलप्रपातोका पानी देख पडता है। तीन स्थानोंसे जलप्रपात देख पडते है। घूम घाम-कर खडी उतराईसे उन स्थानोपर जाना होता है। जलप्रपातोके निकटकी एक वस्तीमें खास करके जैन लोग बसे है।

वहाँ ४ जलप्रपात है--पहिले का नाम ग्रेटफल, अर्थात् बडा जलप्रपात, दूसरेका नाम रोरर अर्थात् गर्जने वाला, तीसरेका नाम राकेट अर्थात् अग्निबाण और चौथेका नाम डैमब्लांची अर्थात् घूंघट वाली दुलहिन है। इनमेंसे पहिला जलप्रपात ८३० फीट ऊपरसे १३२ फीट गहरे कुण्डमें गिरता है । देखनेवाला नीचे कुण्डमे गिरते हुए जलको देख सकता है। रोरर नामक दूसरे जलप्रपातका अंग पहिले जलप्रपातसे बडा है; किन्तु वह पहिलेके समान तेजीसे नहीं गिरता है। जलप्रपातका पानी कुंडमे होकर नदीके विस्तरमें गिरता है। राकेट नामक तीसरे जलप्रपातका पानी फव्वारा बन कर वाणोंके समान वर्षता है और डैमब्लांची नामक चौथा जलप्रपात ऊपरसे निहायत मुलायम देख पडता है, वह देखनेमें नफीस तथा बहुत सुन्दर है।

## रत्नागिरि।

मोरमूगावके बंदरगाहसे १०१ मील पश्चिमोत्तर और बम्बई शहरसे १२६ मील दक्षिण कुछ पूर्व रत्नागिरिका बंदरगाह है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें (१६ अंश, ६९ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १९ कला, ५० विकला पूर्व देशांतरमें) जिलेका सदर स्थान रत्नागिरि नामक कसबा है। बम्बईसे आगबोट रत्नागिरि, मोरमूगाव, कारवार इत्यादि बंदरगाहोमे होकर दक्षिण जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि कसबेमें १४३०३ मनुष्य थे, अर्थात् १०४२७ हिन्दू, ३७०८ मुसलमान ९९ कृस्तान, ५३ जैन २ पारसी और १४ अन्य।

रत्नागिरिमें जज, कलक्टर आदि हाकिमोंकी कचहरियाँ, कोढियोंके लिये एक अस्पताल और अनेक स्कूल हैं। दो कोलोंके बीचके एक चट्टानी टीलेके ऊपर पुराना किला है। कसबेसे उत्तरकी छावनीमें थोडी फौज रहती है। प्रधान सडकों पर और बंदरगाहमें रातको लालटेनोंकी रोशनी होती है। लाइट हाउस पर समुद्रके जलसे २५० फीट ऊपर लालटेन जलती है। कसबेसे १½ मील दूरकी एक नदीसे कसबेमें नल द्वारा पानी आता है। जयगढ़, रत्नागिरि और पूरनगढ़ प्रधान बंदरगाह हैं। गेंहू, नमक और मकान बनानेके कामकी लकडी अन्य स्थानोंसे रत्नागिरिमें आती हैं और जलानेकी लकडी, मछली तथा बांस रत्नागिरिसे दूसरे स्थानोंमें भेजे जाते हैं।

रत्नागिरि जिला–इसके उत्तर जंजीराका राज्य और कुलाबा जिला, पूर्व सितारा जिला और कोल्हापुरका राज्य, दक्षिण सावंतवाडी देशी राज्य और पोर्चुगीजोंका गोआ राज्य और पश्चिम समुद्र है। रत्नागिरि जिलेको दक्षिण कोकन भी कहते हैं। साधारण तरहसे जिलेकी भूमि नीची ऊँची तथा पत्थरीली है। जिलेमें जङ्गल अब कम है, सर्प बहुत हैं। गर्म पानीके झरने राजापुर, खेडगाँव, सगमेश्वर गाँव, अर्वली गाँव, तोरला गाँव और डपोली सबडिवीजनमें है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि जिलेके ३९२२ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ९९७०५० मनुष्य थे, अर्थात् ९२१०४६ हिन्दू, ७१०५१ मुसलमान, ३२७५ कृस्तान, १६९९ जैन, १६ पारसी, २ बौद्ध और १ यहूदी। हिन्दू और जैनोंमें ४८६७८४ कुन्बी, ८४१९४ मांग और महारा, ६८१७८ ब्राह्मण, ६८०३९ भंडारी ( ताडीके काम करने वाले ), १६६३८ तेली १५१०८ सुतार ( बढ़ई ), १२५४२ सोनार, १०५०६ कुम्भार, १०६२४ चमार, ८६ राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि जिलेके कसबे मालवनमें १७०५३, रत्नागिरिमें १४३०३, चिपलूनमें ११७१७ और बिंगुरलामें १०१३४ मनुष्य थे। जिलेमें राजापुर इनसे छोटा कसबा है।

इतिहास–रत्नासुर दैत्यके नामसे कसबेका नाम रत्नागिरि पड़ा है। उस देशमें ऐसा प्रसिद्ध है कि शिवजीके अवतार ज्योतिबाने यहाँ रत्नासुरको मारा था। कोल्हापुरके पास एक प्रसिद्ध मन्दिरमें ज्योतिबाकी पूजा होती है। चिपलून और कोलकी गुफासे विदित होता है कि सन् ईस्वीके २०० वर्ष पहिलेसे५०वर्ष पीछे तक रत्नागिरिके उत्तरीय भागमें बौद्ध लोग बसते थे। उसके पश्चात् जिलेमें अनेक राजा हुए, जिनमें चालुक्य वंशके राजा अधिक बलवान् थे। सन् १३१२ में मुसलमानोंने उस जिलेमें लूट पाट किया। वे लोग दभोलमें बसे, किन्तु जिलेका संपूर्ण भाग सन् १४७० तक उनके अधीन नहीं हुआ। सन् १५०० में सावित्रीके दक्षिणका संपूर्ण कोकन बीजापुरके अधीन हुआ। पोर्चुगीजोंके बल घटनेके समय शिवाजीने बीजापुरकी फौज और पोर्चुगीजोंको जीत करके रत्नागिरि जिलेमें अपना अधिकार करलिया। सन् १७५५ में अङ्गरेजोंने पेशवाके साथ मिल करके सुवर्णदुर्ग नामक प्रधान किलेका विनाश किया और उसके दूसरे वर्ष विजयदुर्गको छीन लिया, तब पेशवाने इन कामोंके बदलेमें अङ्गरेजोंको नव गावोंके साथ बानकोटको देदिया। उन्होंने सन् १७६५ में मालवान और रेडीको जीत कर, मालवान कोल्हापुरके राजाको और रेडी सावंतवाडीके राजाको वापस दिया। उसके पश्चात् २३ वर्ष तक कोल्हापुर और सावंतवाड़ीके

राजा परस्पर लडते रहे। अन्तमें दोनों राजाओंने अङ्गरेजी सरकारको मालवान और वेंगु-रला देकरके उससे मेल किया। सन् १८१८ में अङ्गरेजोने पेशवासे अन्य जिलोंके साथ रत्नागिरि जिलेको लेलिया।

# उन्नीसवां अध्याय।

## ( वम्बई हातेमें ) वेलगाँव, गोकाकका जलप्रपात, मीराज, कोल्हापुर, सगली, सतारा, बाई और महाबलेश्वर।

### वेलगांव।

हुवली जक्शनसे ५६ मील पश्चिम और मोरमूगॉवके रेलवे स्टेशनसे ६६ मील पूर्व लोंडा जंक्शन और लोंडा जंक्शनसे ३३ मील उत्तर वेलगॉवका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देश ( दक्षिणी किस्मत ) में ( १५ अंश, ५१ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ३३ कला, ५९ विकला पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रके जलसे लग-भग २५०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा वेलगॉव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजीछावनीके साथ बेलगाँव कसवेमें ४०७३७ मनुष्य थे, अर्थात् २२१३७ पुरुष और १८६०० स्त्रियां। इनमे २७२४० हिन्दू, ८६४१ मुसलमान, ३१८४ कृस्तान, १६१२ जैन, और ५५ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९९ वाँ और वम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे १२ वॉ शहर है।

वेलगॉव कसवा चट्टानी भूमिपर वसा है, उसमे वृक्ष वहुत है। उसके पूर्व किला है और पश्चिमी फौजी छावनी फैली है। वेलगॉवमें जिलेकी प्रधान कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और छोटे वडे लगभग १५ स्कूल है। कसवेके चारोओर दूर दूरपर छोटी २ पहाडियॉ है। वहाँ नमक, सूखी मछली, नारियल और नारियलके छिलकेके रस्सेकी खास करके सौदागरी होती है। चीनी तथा अनेक प्रकारके गल्ले चारोओरसे वेलगॉवमे आते है। एक अच्छी सडक वेलगाँव कसवेसे कोल्हापुर राज्य होकर पूनेको गई है।

किला—लगभग १००० गज लम्बा और ७०० गज चौड़ा अंडाकार शकलमे वेलगाँवका किला है। उसके चारोओर पत्थरकी दीवार और चौड़ी खाई है। किलेके उत्तर एक वडा तालाव और पश्चिमोत्तर फाटक है। उसके भीतर तोपखाना, वारक ( सैनिक गृह ) और सिविलियन तथा अन्य लोगोंके चन्द वङ्गले हैं। नकारखानेके पूर्व एक सादी मसजिद, दक्षिण एक जैन मन्दिर, कमसरियट स्टोरके आंगनमें दूसरे जैन मन्दिरके दक्षिण-पूर्व सन् १५१९ की वनी हुई मसजिद है।

वेलगॉव जिला—इसके उत्तर मीराजका राज्य, पूर्वोत्तर वीजापुर जिला, पूर्व जमखण्डी और मुधोलका राज्य, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व धारवाड और उत्तरी किनारा जिला और कोल्हापुरका राज्य. दक्षिण-पश्चिम गोआका राज्य और पश्चिम सावन्तवाड़ी और

कोल्हापुरका राज्य है । जिलेकी सीमाके भीतर आसपासके कई छोटे राज्यकी भूमि हैं । जिलेमें बडा मैदान है, किन्तु जगह जगह झाडियोंसे ढंके भरे नीची पहाडियोंके सिलसिले है। अनेक चोटियोंपर छोटे छोटे किले है। कृष्णा; घटपर्वा और मलपर्वा जिलेकी प्रधान नदियां है. इनमेसे किसीमें सर्वदा नाव नहीं चल सकती है । जिलेमें अनेक प्रकारके पत्थर हैं । पहिलेकी अपेक्षा अब जङ्गल कम हैं । जिलेके पश्चिमके भागके मकान फूस या खपडेसे छाये गये है, परन्तु पूर्वके भागमे, जहां वर्षा कम होती है, मिट्टीकी छत वाले मकान बने हैं।

बेलगॉव जिलेके परसगढ नामक सवडिवीजनमें बेलगॉव कसबेसे ४१ मील पूर्व कुछ दक्षिण सौंदत्ती नामक कसबा है । उससे ५ मील पश्चिमोत्तर वर्षमे दो वार यल्लमादेवीका प्रसिद्ध मेला होता है,—दोनो मेले तीन दिनो तक रहते है, उनमे १५००० से २०००० तक लोग आते हैं । अगहनकी पूर्णमासीके मेलेके समय यल्लामाके पतिकी मृत्यु होनेका और वैशाखकी पूर्णिमाके मेलेके समय उसके जी जीनेकी लीला होती है । बेलगाँव जिलेमे महाराष्ट्री कनडी और हिन्दी भाषा प्रचलित हैं, सरकारी काम कनडीमें होता है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बेलगॉव जिलेके ४६५७ वर्गमील क्षेत्रफलमे ८६४०१४ मनुष्य थे, अर्थात् ७४६२८६ हिन्दू; ६६२६२ मुसलमान, ४४९९१ जैन, ६३२२ कृस्तान, ८९ यहूदी और ६४ पारसी । हिन्दुओंमे ९०८४८ लिङ्गायत, ३०४०४ ब्राह्मण, २७११ राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे ।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय बेलगॉव जिलेके कसबे बेलगावमें ४०७३७, गोकाकमें १२१०६, निपानीमें ११७२८ और अथनीमे १०४१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १४४२ मे महम्मदशाहके जनरल ख्वाजा महम्मद गवनने बेलगांव कसबेको जीता। सोलहवीं सदीके आरम्भमें कुछ समय तक वह खूरम तुर्कके अधिकारमें था। १९ वी सदीके आरम्भमे बेलगांव जिला धारवाड जिलेके नामसे पेशवाके अधीन था। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने पेशवाको परास्त करके धारवाड जिले तथा बेलगांवके किलेको ले लिया । अङ्गरेजी राज्य होनेपर बेलगांव कसबेकी उन्नति होने लगी । सन् १८३६ में धारवाड जिलेके उत्तरी भागको बेलगांव जिला बनाया गया ।

## गोकाकका जलप्रपात ।

बेलगांवके रेलवे स्टेशनसे ३६ मील ( लोंडा जक्शनसे ६९ मील ) उत्तर कुछ पूर्व गोकाकरोडका रेलवे स्टेशन है । बेलगांव जिलेमें गोकाक एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२१०६ मनुष्य थे, अर्थात् ९६४१ हिन्दू, २२५२ मुसलमान और २१३ जैन।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४ मील दूर गोकाकका जलप्रपात है । वहाँ गतपर्व नदीकी धारा १७५ फीट ऊपरसे चादरकी तौरपर नीचे गिरती है, गोकाक कसबेके पास रहनेके कारण उसको गोकाकका जलप्रपात कहते है । नीचेका कुण्ड बड़ा गहरा है, वहाँसे गोकाक नहर निकाली गई है । कुण्डके पास महादेव आदि देवताओंके कई एक पुराने मन्दिर हैं । वर्षा कालमें जलप्रपातका दृश्य बहुत मनोरम रहता है, उस समय जलकी चादरकी चौड़ाई लगभग २०० फीट होजाती है ।

# मीराज।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील ( लोंडा जंक्शनसे ११८ मील ) उत्तर मीराजका रेलवे जंक्शन है । बम्बई हातेमें कृष्णानदीसे पूर्व मीराज राज्यकी राजधानी मीराज एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मीराज कसबेमें २६०६० मनुष्य थे, अर्थात् १३१०५ पुरुष और १२९५५ स्त्रियाँ । इनमे २००४६ हिन्दू, ५२४४ मुसलमान, ७०३ जैन, ५६ कृस्तान, ६ यहूदी और ५ पारसी थे ।

मीराज राज्यके दो राजा हैं, एक राजा, जो बड़ी शाखासे है, मीराजमे और दूसरे जो छोटी शाखासे हैं, बड़गावमें रहते हैं ।

मीराजका वर्त्तमान राजा गङ्गाधरराव गणपति जातिके कोकन ब्राह्मण हैं । मीराज कसबेमें उनका महल और १ अस्पताल बना हुआ है । उनके राज्यका क्षेत्रफल ३४० वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २ कसबे और ५५ गाँव तथा ६९७३२ मनुष्य थे । उनका राज्य शोलापुर और धारवाड़ जिलेसे तथा कृष्णानदीकी घाटीमें है, जिससे उनको ३ लाख रुपयेसे अधिक मालगुजारी आती है, जिसमेसे १२५६० रुपये अङ्गरेजी गवर्नमेंटको दिये जाते हैं । राजाको ५५४ फौज और ३२८ पुलिस रखनेका अधिकार है ।

बडगावके वर्तमान राजा लक्ष्मणराव हरिहर कोकन ब्राह्मण है । उनके राज्यमें, जो धारवाड, सतारा तथा शोलापुर जिलेमें है, सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३५ गाँव और ३०५४१ मनुष्य थे । राज्यका क्षेत्रफल ३०८ वर्गमील है, जिससे उनको १६०००० रुपयेसे अधिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ६४१० रुपये अङ्गरेजी सरकारको 'कर' स्वरूप दिये जाते है । राजाको २७० फौज और ३१९ पुलिस रखनेका अधिकार है ।

मीराज राज्य बम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशके पोलिटिकल एजेंसीके अधीन हैं । दोनो राजा दक्षिणी महाराष्ट्र देशमें औवल दर्जेके सरदार समझे जाते हैं ।

इतिहास–पेशवाने पटवर्द्धन वंशके एक ब्राह्मणको मीराजका राज्य दे दिया । ( संगली-के इतिहास में देखिये ) उसके उपरांत उसमेसे संगलीका राज्य अलग होगया । उसके पीछे ( पेशवाका राज्य अङ्गरेजी अधिकारमे होजानेपर ) सन् १८२० में अंगरेजी सरकारकी मंजू-रीसे वह राज्य चार भागोंमे बट गया । उनमेंसे एक भागका मालिक सन् १८४२ में और दूसरे भागका मालिक सन् १८४५ में निष्पुत्र मरगया, इस कारणसे उस दो भाग राज्यका अंत होगया, बाकी दो भाग, जिनमेंसे एक के राजा मीराज कसबेमें और दूसरेके बडगांवमें रहते है; विद्यमान हैं ।

# कोल्हापुर।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील ( लोंडा जंक्शनसे ११८ मील ) उत्तर मीराज जन्क्शन और मीराजसे ३९ मील पश्चिम कुछ दक्षिण कोल्हापुरका रेलवे स्टेशन है । कोल्हा-पुर राज्यके खर्चसे मीराजसे कोल्हापुर तक रेलवे शाखा बनी है । बम्बई हातेके ( १६अंश, ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, १६ कला पूर्व देशांतरमें ) एक प्रसिद्ध देशी राज्यकी राजधानी कोल्हापुर है, जिसको अनेक लोग करवीर कहते हैं, उसके निकट पुराने करवीरकी छोटी बस्ती है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ कोल्हापुर शहरमें ४५८१५ मनुष्य थे, अर्थात् २३३९३ पुरुष और २२४२२ स्त्रियां । इनमें ४००७० हिन्दू, ४१९३ मुसलमान, १२७९ जैन, २६० कृस्तान और १३ पारसी थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ८७ वॉ और ( वडोदाको छोडकर ) बम्बई हातेके देशी राज्योंमें तीसरा शहर है।

कोल्हापुर शहरके आस पास पहाडियां है, इस लिये शहरके छोटे वडे प्राय' सव मकान पत्थरसे वने हैं । शहर उत्तम मकानोंसे भूपित है । अनेक सडकें पक्की तथा चौड़ी बनी हुई है । शहरकी सफाईमें वडी उन्नति हुई है । हालमे चंद सरकारी इमारत उत्तम वनी है । पवलिक वागमें टाउनहाल है । इनके अलावे कोल्हापुरमे पोलिटिकल एजेंटकी सुन्दर कोठी, गिरजा, जेलखाना, अनेक अस्पताल तथा स्कूल हैं और अनेक शहर तथा कसवोंके लोग आकर सौदागरी करते हैं ।

कोल्हापुर शहरके उत्तर ब्रह्मपुरी नामक पवित्र पहाडीके पास ब्राह्मणोके मुर्दे जलाये जाते है; उससे लगभग १०० गज उत्तर पंचगङ्गा नामक नदीके निकट रानीवागमे राजवंशके मुर्दोंका अग्नि संस्कार किया जाता है । रानी वागके समीप एक घेरेके भीतर महाराष्ट्र प्रधान शंभाजी, शिवाजी, तारावाई और आईवाईके समाधि मन्दिर हैं । बौद्ध लोगोंके मंदिर तथा मकानोंकी अनेक निशानियां शहरके आस पास मिली है । कोल्हापुरके पास ३ मील घेरेकी एक गहरी झील है । कोल्हापुर कसवेसे ३ मील दूर वावरा गांवके पास कोल्हापुरकी पैदल सेना रहती है ।

महाराजके महल—कोल्हापुरमे कोल्हापुर नरेशके दो राजमहल हैं,—पुराना महल शहरके मध्यमे और नया महल शहरके बाहर है । पुराने महलका घेरा वहुत वड़ा है, उसके चौकके दरवाजेपर नकार खाना बना है, जिससे भीतर प्रवेश करनेपर दहिने ओर राजवाडा अर्थात् पुराना महल देख पडता है । उसके दूसरे मंजिलके दरवार कमरेमे कोल्हापुरके मृत महाराज राजारामको गोद लेनेवाली अहल्याबाई और दूसरे किसी प्रधानकी माता अकावाई की तस्वीर और तीसरे मजिलमें एक हथियारखाना है । चौकके दक्षिण बगलमे खजानाका मकान और उस मकानमे लगा हुआ राज्यका आफिस है । पुराने महलके पास हाईस्कूल और उसके आगे देशी पुस्तकालय है ।

शहर और रेजीडेंसीके वीचमें ७००००० रुपयेके खर्चसे अंगरेजी ढगका नया राजमहल वना है । एक वहुत बड़े रमनेके भीतर राजमहल और एक वड़ा सरोवर है । राजभवनमे एक लम्वा चौडा मनोहर दरवार गृह वना है । उसकी छत तथा दीवारोंमे सफेद पालिस पर सुनहली गिलटी द्वारा विविध भांतिके फूल पत्र और पक्षियोकी मूर्तियां वनी हुई है । वहां ऊपर अनेक बरामदे भी हैं । दरवार गृहके फर्शमें विविध रंगके वहुमूल्य पत्थरोंकी सुन्दर पच्चीकारी कीहुई है । उसके ऊपर बड़ा कालीन विछा है । उस गृहके द्वारके सामने मार्वुलका अर्द्धचन्द्राकार सुन्दर चवूतरा है, जिसके ऊपर सुन्दर सिंहासन रक्खा है । दरवार गृहके एक ओरकी दीवारके पास पूर्वोक्त सिंहासन और तीन ओरकी दीवारोंमें गाथिक ढंगके द्वार वने हैं, जिनके ऊपरकी मेहराबियोंमें भांति भांतिके चित्रोंसे चित्रित शीशे जडे गये है । दरवार गृहके कमरेके पास उससे लगे हुए अङ्गरेजी ढंगसे सजे हुए दो मनोरम कमरे हैं, जिनमें महाराजसे भेंट करने वाले अङ्गरेज लोग आकर ठहरते हैं ।

महालक्ष्मीजीका मन्दिर—शहरके भीतर पुराने राजमहलके निकट खजाना घर और खजानाघर तथा राज्यके आफिसके पीछे कोल्हापुरकी प्रसिद्ध महालक्ष्मीजीका विशाल मन्दिर है, जिसको बहुत लोग अम्बाका मन्दिरभी कहते है। उस मन्दिरमें पुरानी कारीगरीके अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। मन्दिरका प्रधान भाग देशी खानोंसे निकले हुए नीले रंगके पत्थरोंसे बना हुआ है। एक बडे घेरेके पूर्व बगलमें महालक्ष्मीजीका निज मन्दिर है। मन्दिरके गुम्बजके नीचेकी नकाशीका काम जैन मन्दिरोंके ढांचेका है। जैन लोग कहते है कि यह हमारी इष्ट देवी पद्मावतीका मन्दिर है। प्रति वर्ष वैशाखमासमें महालक्ष्मीजीकी प्रतिनिधि स्वरूप पीतलकी प्रतिमा शहरमे चारोंओरें फिराई जाती है, उस समय बहुतसे लोग एकत्र होते है। महालक्ष्मीजीके मन्दिरके पास पद्मसरोवर; काशी और मणिकर्णिकातीर्थ और विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि देवता हैं।

देवीभागवत—सातवें स्कन्धके ३८ वे अध्यायमें लिखा है कि, दक्षिण देशमे सह्याद्रि नामक पर्वतपर कोल्हापुर नामक नगरमे लक्ष्मीजी सदा स्थित रहती हैं। ( लोग कहते है कि करवीर माहात्म्यमे महालक्ष्मीजीकी महिमाका विशेष विवरण लिखा है )।

मन्दिर और गुफा—पनालाके किलेके पास जानेवाली सडकके समीप समुद्रके जलसे लगभग २६०० फीट ऊँची ज्योतिवा नामक पहाड़ी है। उसके ऊपर बहुतेरे मन्दिर बने हुए हैं, जिनमेंसे ३ शिव मन्दिर प्रधान हैं। उन मन्दिरोंमें कोई बहुत पुराना मन्दिर नहीं है। उस पहाडीके बगलमें पत्थर निकालकर बनाईहुई कई एक पुरानी कोठरियाँ अर्थात् गुफाये है।

ज्योतिवा पहाडीके पास पावलाकी गुफामें ३४ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक बड़ा कमरा है, उसमें चट्टानके १४ स्तम्भ लगे है और भीतरकी दीवारोंमें काटकर छोटी कोठरियाँ बनाई हुई है। कमरेके बायेंके बगलमें ( आगेसे पीछे तक ) ३० फीट लम्बी और १५ फीट चौडी बेडौल शकलकी चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर है।

पनालाका किला—कोल्हापुर शहरसे १२ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके जलसे लगभग ३००० फीट ऊपर पनालाका पहाडी किला है। ७ मील तक सुगम मार्ग और ५ मील खड़ी चढ़ाईकी राह है। पूर्व समयमें वह किला दुर्गम तथा दुर्भेद्य था, किन्तु अब उसमें जानेका सुगम मार्ग बना दिया गया है, जिसपर तांगा चला जाता है। पहाडीके शिरपर किला है। किलेके "चार दरवाजे" के पास मारुतिका मन्दिर है। उससे आगे जानेपर बाई ओर एक स्कूल देख पडता है, जो पहिले मुसलमानोंका मकबरा था। उससे थोड़े आगे सड़कके उसी बगलमें शम्भाजीका मन्दिर है। खडी पहाडीके बगलपर शिवाजीकी दो मञ्जिली इमारत है, जिसमें गर्मीकी ऋतुओंमे कोल्हापुरके पोलिटिकल एजेंट रहते हैं। उसके ½ मील दक्षिण-पश्चिम १३० फीट लम्बा, ५७ फीट चौडा तथा ३० फीट ऊँचा पत्थरसे बना हुआ मालखाना है। शिवाजीके समयमें उसमें फौजके खानेके लिये गल्ले रक्खे जाते थे। सन् १६५९ और १६६०में जब बीजापुरकी सेनाने उस किलेमें४ मास तक शिवाजीको घेर रक्खा था, तब उसी मालखानेके गल्लेसे उनकी सेनाका निर्वाह हुआ था। किलेके पश्चिम बगल पर नकाशीदार तेहरा फाटक है। एक देव मन्दिरके पास सन १४९७ का बना हुआ एक सरोवर है। किलेके पूर्ववाले फाटकसे लगभग १ मील दूर पवनगडका किला है।

कोल्हापुरका राज्य—बम्बई हातेके अङ्गरेजी जिलोंके बीचमें कोल्हापुरका राज्य है। इसके उत्तर सतारा जिला, पूर्वोत्तर कृष्णानदी, जो सांगली, मीराज आदि देशी राज्योंसे कोल्हापुरको अलग करती है, पूर्व तथा दक्षिण बेलगाँव जिला और पश्चिम सह्याद्रि पर्वत है। कोल्हापुर राज्यमें महाराष्ट्र देश तथा करनाटकके पुराने हिन्दू राज्यका भाग शामिल है, इसलिये राज्यमें महाराष्ट्री तथा कनड़ी दोनों भाषा प्रचलित हैं। राज्यकी राजधानी कोल्हापुर शहर है। राज्यके पश्चिम ऊंची पहाडियाँ और मध्यमें नीची पहाडियोंकी कई लाइनें और पूर्वके भागमें खेतोंका मैदान है। राज्यके पश्चिम भागमें पनाला, विशलगढ़, बावरा, भूधरगढ़ आदि पहाडियों पर कोल्हापुरके प्रधानोंके पुराने किले हैं। पनाला, विशालगढ, भूधरगढ़ और कोल्हापुरकी पहाडियोंमें लोहेके ओर मिलते हैं। राज्यमें अनेक पहाड़ियोंसे पत्थर निकाला जाता है। कोल्हापुर राज्यकी आठो नदियोंमेंसे कोई ऐसी नहीं है, जो गर्मीकी ऋतुओंमें हिल कर पार जाने लायक न होय। उस राज्यमें धान, मिलेट, ऊख, तबाकू, कपास और अनेक भांतिकी तरकारियां बहुत पैदा होती हैं। धातु और मिट्टीके बर्त्तन, ऊन और सूतके कपडे, कागज, इतर, लाह इत्यादि वस्तु तयार होती हैं। रुई, चीनी, तंबाकू, और अनेक प्रकारके गल्ले उस राज्यसे बाहरके कसबोंमें भेजे जाते हैं और रेशम, नमक, गंधक, अनेक भाँतिके मसाले और खुरदा वस्तुएँ अन्य स्थानोंसे उस राज्यमें आती हैं। कोल्हापुर, शिरोल, वड़गांव, अलटा, इंचल करंजी, कागल और मलकापुरमें देशी सौदागरी होती है। कोल्हापुरको 'कर' देने वाली विशलगढ, बावरा, कागल, इंचलकरंजी आदि १३ मिलकियतें हैं। कोल्हापुर कसबेमें बडा जेलखाना और राज्यमें १३ मातहत जेल हैं। कोल्हापुर राज्यमें एक प्रविंशियल कालिज, एक देशी पुस्तकालय और छोटे बड़े लगभग १७५ स्कूल हैं। राज्यसे महाराजको वार्षिक लगभग २३००००० रुपये मालगुजारी आती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोल्हापुर राज्यके २८१६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८००१८९ मनुष्य थे, अर्थात् ७१९१६४ हिन्दू, ४६७३२ जैन, ३३०२२ मुसलमान, १२५३ कृस्तान, १२ बौद्ध, ५ यहूदी और १ पारसी। हिंदुओंमें ३६२१५८ कुनबी, ७२३९१ लिंगायत, ६५३१४ महारा, ३८३२६ धांगड, २९४४६ ब्राह्मण, १३३२३ माग, ११४५१ सोनार, १०२१९ चमार, ८५०९ कुम्भार, ७४७६ नापित (नाई), ५९२४ कोष्टी, ५६६६ दर्जी, ५२७७ विराध, ५२०८ धोबी, १५०० राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोल्हापुर राज्यके कसबे कोल्हापुरमें ४५८१५, इंचल करंजीमें ११२०० और शिरोल, कागलमें दस दस हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—देशी कहावतोंसे विदित होता है कि पूर्वकालमें कोलापुरके पासका 'करवीर' नामक नगर बहुत प्रसिद्ध तथा एक पवित्र स्थान था। महालक्ष्मीजीका बड़ा मंदिर उन कहावतोंका साक्षी है। उस मंदिरके चारोओरके बरामदे अब नहीं हैं। कोल्हापुर कसबेके उत्तर बगलमें अब तक करवीर नामक एक छोटा गांव है। प्रथम करवीर राजधानी था, पीछे कोल्हापुर राजधानी बनाया गया। कोल्हापुर शहरके आस पास बौद्धोंकी इमारातोंकी अनेक निशानियां मिली हैं। लगभग सन १८८० में एक बौद्ध स्तूपमें बिल्लोरका एक डब्बा मिला था, जिसके ऊपर सन ईस्वीके आरंभ से लगभग ३०० वर्ष पहिलेके राजा अशोकके समय-

का लेख था, इससे जान पडता है कि कोल्हापुर अति प्राचीन स्थान है। आस पासकी भूमि खोदने पर अनेक छोटे मंदिर तथा अन्य इमारते मिली है, जो किसी समयमें, भूकंपसे पृथ्वीमे धस गई थीं।

पश्चिमीघाट पर बसने वाले सिलहार वंशके प्रधानके तीसरे पुत्रके वंशधरोंने कोल्हापुर शहरके चारो ओरके देश और बेलगांव जिलेके पश्चिमोत्तरके भागको १० वी सदीके अंतमें अपने अधिकारमें किया। सन् १२१३—१२१४ मे देवगिरिके यादववंशके राजाने उनसे वह देश और पनालाका किला छीन लिया। पीछे बहमनी खांदानके बादशाहने यादवोंको निकालकर वहां अपना अधिकार जमाया। पीछे उस देशको बीजापुरके बादशाहने अपने अधिकारमे लिया। उसने सन् १५४९ मे पनालाके किलेकी मरम्मत करवाई। सन् १६५९ में महाराष्ट्रकुलभूषण महाराज शिवाजीने बीजापुर वालोंसे कोल्हापुरका देश और पनालाका किला छीन लिया। सन् १६९० में दिल्लीके बादशाह औरंगजेबने शिवाजीके वंशधरोंसे पनालाका किला ले लिया।

सन् १६८० ई० में महाराज शिवाजीके देहान्त होने पर उनके पुत्र शंभाजी उनके उत्तराधिकारी हुए, जिनको सन् १६८९ में औरंगजेबने मार डाला और शंभाजीके पुत्र शाहूजीको कैद कर रक्खा। सन् १७०० मे जब शिवाजीके छोटे पुत्र राजाराम मर गये; तब उनकी विधवा स्त्रीने शिवाजी नामक अपने पुत्रको कोल्हापुरमें रक्खा। सन् १७०७ में औरंगजेबके मरनेके पश्चात् शाहूजी, दिल्लीकी अधीनता स्वीकार करके अपने दादा शिवाजीकी जायदादके अधिकारी बने। उन्होने सिताराको अपनी राजधानी बनाया। बडे शिवाजीके बडे पुत्र शंभाजीके और छोटे पुत्र राजारामके वंशधरोंसे कई वर्षों तक अपने अधिकारके लिये झगडा जारी रहा। सन् १७३१ मे संधि हुई, जिसके अनुसार राजारामके वंशधरोंके अधीन कोल्हापुर स्वतंत्र राज्य माना गया। सन् १७६० मे राजारामके पुत्रकी मृत्यु होने पर भोंसला वंशके एक मनुष्य उस राज्यके उत्तराधिकारी हुए। उसकी कई पुश्तके पीछे तीसरे शिवाजी कोल्हापुरकी गद्दी पर थे। सन् १८४५ में कोल्हापुर राज्यकी निगरानीके लिये अङ्गरेजी पोलिटिकल सुपरिण्टेंडेंट कायम हुआ और शहरके पास एक कंप नियत किया गया। सन् १८५७ के बलवेके समय कोल्हापुरके बलवाइयोंने हथियारखानेसे हथियारोंको और सरकारी खजानेसे ४५००० रुपये ले लिये। तीसरे शिवाजीने सन् १८६६ में अपने मरनेके समय राजाराम नामक भानजेको गोद लिया। सन् १८७० में राजाराम इगलेडसे हिंदुस्तानको लौटते समय मार्गमें मर गये। तब उनकी विधवा रानीने एक लड़केको गोद लेकर कोल्हापुरके सिंहासन पर बैठाया। वह लडका महाराज शिवाजी छत्रपतिके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सन् १८८३ में शिवाजी छत्रपति उन्मत्त होकर मर गये। उनका कोई पुत्र नहीं था इस लिये उनकी रानीने कोल्हापुर राज्यके अधीनके कागल नरेशके बडे पुत्र यशवंत रावको, जिनका जन्म सन् १८७४ में हुआ था, गोद लिया। यशवंतराव सन् १८८४ के मार्चमें महाराज शाहू छत्रपतिके नामसे कोल्हापुर राज्यके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८९१ में बडोदाके एक राजपुरुषकी राजकुमारीसे उनका व्याह हुआ। कोल्हापुरके राजाओंको दत्तक पुत्र बनानेका अखतियार है। उनको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे १९ तोपोंकी सलामी मिलती है।

# संगली।

मीराज जंक्शनसे ६ मील पश्चिमोत्तर ( लोंडा जंक्शनसे १२४ मील उत्तर ) संगलीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशमे कृष्णा नदीके पास संगली नामक देशी राज्यकी राजधानी संगली कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय संगली कसबेमें १४७९८ मनुष्य थे; अर्थात् ११७५५ हिन्दू, २०५७ मुसलमान, ९२७ जैन और ५९ कृस्तान।

संगलीमें एक छोटा किला है, जिसके भीतर वहाँके राजाका महल और उनके अनेक आफिस बने हुए हैं। बाहर अनेक आफिस और कसबेकी बस्तियाँ हैं। कसबेसे दक्षिण एक छोटी नदी कृष्णामे मिली है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय संगली राज्यके ८९६ वर्गमीलमें १९६८३२ मनुष्य थे। यह राज्य बम्बई हातेके दक्षिण महाराष्ट्र देशके पोलिटिकल एजेंसीके अधीन ६ टुकडोमें है। राज्यसे राजाको ९८१३५० रुपये मालगुजारी आती है। संगलीके राजा कोकन ब्राह्मण है।

इतिहास—पेशवाने पटवर्द्धन वंशके हरिभट्ट नामक ब्राह्मणको मीराजका राज्य दे दिया। सन् १७७२ मे गोविंदरावहरिके पोते चिंतामणि राव राज्यके अधिकारी हुए। चिंतामणि राव केवल ६ वर्षके लडके थे, इस लिये उनके लड़कपनमें उनके चाचा गंगाधर रावने राज्यका प्रबंध किया। लडकेके बड़े होने पर चचा भतीजेमें राज्यके लिये झगड़ा उठा। अन्तमे उस राज्यमेंसे मीराजका राज्य गंगाधर रावको और संगलीका राज्य चिंतामणि रावको मिला। उस समय मीराजकी मालगुजारी ४७९८०० रुपये और संगलीकी ६३५१८० रुपये थी। सन् १८१८–१८१९ मे पेशवाके परास्त होनेके पश्चात् चिंतामणि राव अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधीन हुए। सन १८५१ मे चिन्तामणि रावका देहान्त होगया। अब उनके पुत्र वर्तमान संगली नरेश चंडीराव चिन्तामणि है।

# सतारा।

संगलीके रेलवे स्टेशनसे ७६ मील ( लोंडा जंक्शनसे २०० मील ) उत्तर कुछ पश्चिम ओर पूनाके रेलवे स्टेशनसे ७८ मील दक्षिण सतारा रोडका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमे ( १७ अंश, ४१ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, २ कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमे ) कृष्णा और येना नदीके संगमके निकट जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा सतारा है। सतारा रोडके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १० मीलकी पक्की सड़क सतारा कसबेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके सहित सतारा कसबेमें २९६०१ मनुष्य थे, अर्थात् १५४०६ पुरुष और १४१९५ स्त्रियाँ। इनमें २४६८५ हिन्दू, ३७६० मुसलमान, ५५९ कृस्तान, ४३७ जैन, ७८ पारसी, ७६ यहूदी और ६ अन्य मनुष्य थे।

सताराके मकान छोटे तथा सादे हैं, किन्तु कसबा साफ तथा उसकी सडकें चौडी हैं। वहाँ एक हाई स्कूल, जेलखाना, अस्पताल और जिलेकी कचहरियाँ है। सताराके पूर्व और

पश्चिम पहाडियाँ है। पश्चिमकी पहाडीसे कसबे तक ४ मील लम्बी एक नाली लाई गई है; जिस द्वारा कसबेमें पानी आता है। $1\frac{1}{2}$ मील लम्बी और इतनीही चौडी भूमिपर फौजी छावनी फैली है। इसके दक्षिण किनारेपर पुरानी रेजीडेन्सीका हाता है, जिसके उत्तर फाटकके बाहर यूरोपियन सिपाहियोंकी लाइने, लाइनोंके उत्तर देशी सिपाहियोंकी लाइनें और सदर बाजार है। अङ्गरेजी बारकके $\frac{1}{4}$ मील पश्चिम एक वृक्षके चारों ओर पत्थरका चबूतरा है, जिस पर सताराके राजा शाहूजी और वहाँके मृत कमिश्नरके स्मरणार्थ एक हृदय-ग्राहक ... देखनेमें आता है। यूरोपियन बारकसे $\frac{1}{2}$ मील पूर्वोत्तर नया कबरगाह है।

कसबेके बीचसे सताराके राजा आपासाहबका बनवाया हुआ पुरान महलके पास उससे लगा हुआ नया महल है, जिसके आँगनके उत्तर बगल पर एक बहुत बडा कमरा, आँगनके आगे कलक्टर साहबका आफिस और बड़े कमरेके पश्चिम जज साहबका आफिस है। नये महलसे $\frac{1}{2}$ मीलकी सडक पूर्व ओर पुराने कबरगाहको गई है। पुराना महल अब छोड दिया गया है। उससे लगभग २०० गज दूर राजारामका जिला ( बाहरका मकान ) और बाग है।

राजारामको सताराकी मृतरानीने दत्तकपुत्र बनाया था, किन्तु अङ्गरेजी सरकारने उसको उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया। राजारामके पास सताराके राजाओंके भूषण और शिवाजीके जयभवानी नामक प्रसिद्ध तलवार तथा अनेक दूसरे हथियार, अर्थात् एक बघनखा नामक हथियार, जिससे उन्होंने अफजलखाँको घायल किया था; एक गैंडेका ढाल, जिस पर हीरेके ४ फूल जडे हुए हैं, एक डब्बा जिसपर हीरा, लाल आदि रत्न जडे हैं; रत्न जड़े हुए कलम तथा दावात, लडाईका बखतर और $1\frac{1}{2}$ फीट लम्बा ( जिसकी मूठमें हीरे आदि रत्न जड़े हुए है ) सुन्दर खञ्जर है।

एक छोटी खड़ी पहाडीके शिरपर सतारेका किला है। किलेके उत्तर बगलपर मजबूत फाटक बना हुआ है। नीचेसे चढ़ावका मार्ग फाटक तक गया है। किलेके भीतर अब चन्द बँगलोंके अतिरिक्त कुछ नहीं है, प्राय सर्वत्र उजाड़ होरहा है। किलेसे चारों ओर पहाडियाँ देख पडती हैं, जिनमेंसे चन्द पहाडियों पर उजडे पुजडे किले है। ऐसा प्रसिद्ध है कि पनालाके राजाने, जो सन् ११९२ में राज्य करता था, सताराके वर्त्तमान किलेको बनवाया था।

सतारासे ३ मील पूर्व कृष्णा और येना नदीके सङ्गमके पास महुली नामक गाँव है, वहा चारों तरफके लोग मुर्दे लाकर जलाते हैं। नदीके तीरपर सन् १७०० का बना हुआ रामेश्वरका मन्दिर सन् १७४२ का बना हुआ भोलेश्वर महादेवका मन्दिर और सन् १८२५ का बना हुआ राधाशंकरका मन्दिर और संगमके पास सन् १७३५ का बना हुआ वहाँके सब मन्दिरोंसे बडा विश्वेश्वर महादेवका मन्दिर और सन् १६७९ का बना हुआ सङ्गमेश्वर महादेवका मन्दिर है। सङ्गमेश्वरके मन्दिरके बाहरके फाटकसे नीचे कृष्णा नदीके तीर तक सीढ़ियाँ बनी हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ बहुतेरे अन्य मन्दिर और सतियोंके स्थान हैं।

सतारा जिला—इसके उत्तर नीरानदी, जो पूना जिलेसे सताराको जुदा करती है और दो छोटे देशी राज्य, पूर्व शोलापुर जिला और कई मिलकियतें, दक्षिण कोल्हापुर और संगली देशी राज्य तथा बेलगाँव जिलेके चन्द गाँव और पश्चिम सह्याद्रि पहाडियोंकी

श्रेणी है, जो कुलावा और रत्नागिरि जिलेसे इस जिलेको जुदा करती है। जिलेका सदर स्थान सतारा कसबा है। जिलेमे पहाडियाँ बहुत है। लगभग ६५० वर्गमील भूमिपर जङ्गल है। पश्चिमकी पहाडियोंमे बनेले सूअर, भालू, सांभर, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते है। सतारा कसबेसे ४६ मील पूर्वोत्तर सिहनपुर गाँवके पासकी पहाडी पर महादेवजीका मन्दिर है। वहाँ यात्री बहुत जाते है, फाल्गुनमे मेला होता है, जिसमे ५०००० तक मनुष्य जाते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सतारा जिलेके ४९८८ वर्गमील क्षेत्रफलमे १०६२३५० मनुष्य थे, अर्थात् १००८९१८ हिन्दू, ३६७१२ मुसलमान, १५६७९ जैन, ८८६ क्रूस्तान, ९९ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी और ६ बौद्ध। हिन्दुओंमें ५८३५६९ कुन्बी; ८७६७९ महारा, ४८३६२ ब्राह्मण, ४१५४७ धांगर, २४७८४ माली, २०९१९ मांग, १७०३५ लिंगायत, १६१०५ चमार, १४२५१ नापित ( नाई ), १२३२१ कुम्भार, ११०४३ सुतार ( बढ़ई ), ८६३२ कोस्ती, १३३८ राजपूत, ३७९६ जंगम, २०४६ बनजारा और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। सतारा जिलेमें महाराष्ट्री और कुछ कनडी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सतारा जिलेके कसबे सतारामें २९६०१; वाई में १२४३८, करदामे १२०८६, अस्तामें ११४०३, तासगाँवमें ११२७१ और इसलामपुरमें १०६५७, मनुष्य थे। इसी जिलेमें गर्मीकी ऋतुओमे अङ्गरेजोके रहनेका स्थान महाबलेश्वर है।

इतिहास–एक समय सताराके किलेमें दीवार, बुर्ज तथा फाटक, सब मिलकर गिनती में १७ थे, उसी कारणसे शहरका नाम सतारा पड गया। सम्भव है कि बम्बई हातेके कोकनके समान सतारा जिलाभी सन् ईस्वीके ९० वर्ष पहिलेसे सन् ३०० ईस्वी तक अन्ध्रभृत्य या शातकर्णी वंशके राजाओके अधिकारमें था। कदाचित् उस वंशकी शाखाके कोल्हापुर वालेने तीसरी अथवा चौथी सदी तक सतारापर अपना अधिकार रक्खा था। उसके पीछेसे १४ वी सदीके आरम्भ तक सताराके विषयमे कोई इतिहासिक समाचार नहीं मिलता है। शिला तथा तांबेके पत्तरपरके लेख रत्नागिरि और बेलगाँव जिले तथा कोल्हापुर राज्यके पड़ोसमें मिले हैं, इससे सम्भव है कि लगभग सन् ५५० से सन् ७६० तक चालुक्य वंशवाले, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूता वंशवाले सन् १२२० तक पश्चिमी चालुक्य और उनके अधीनके शोलापुरके शिलहरा और लगभग सन् १३००तक देवगिरिके यादव वंशवाले राजा सतारा जिलेपर अधिकार रखते थे। सन् १३१८ में यादव वंशके राजाके राज्यका विनाश होनेपर मुसलमानोंने और सन १३४५ में बहमनी खानदानके बादशाहने सतारापर अधिकार किया। १५ वीं सदीके अन्तमें बहमनी खानदानके अन्त होने पर सताराके कई राजा बने, किन्तु पीछे सतारा जिला बीजापुरके अधीन हुआ। उसके पश्चात् पासके पूना और शोलापुर जिलेके साथ सतारा जिला महाराष्ट्रोंके राज्यका केंद्र बना। सन् १६७३ में शिवाजीने सताराका किला ले लिया। सन् १६९८ में सतारा महाराष्ट्रोंके राज्यका सदर स्थान बना। दूसरे वर्ष औरंगजेबने सतारामें जाकर महाराष्ट्रोंको परास्त किया। अठारहवीं सदीके आरम्भसे लगभग सन् १७५० तक मुगल बादशाहोंके निर्बल होनेके समयमें महाराष्ट्रोंके अधिकारका

मार्ग खुला। सन् १७०५ में महाराष्ट्रोंने आनाजी पन्तकी चातुर्य्यतासे फिर मुसलमानोंसे किला छीन लिया। लगभग सन् १७१८ मे वालाजी पेशवाका प्रताप चमका। सन् १७४९ में ब्राह्मण पेशवाने सताराके राजपूत राजाओंका राज्य ले लिया। पेशवाका सदर स्थान पूनामें हुआ। शिवाजीके वंशके सताराके राजा पेंशन पाने लगे।

सन् १८१८ में जब पूनाके दूसरे बाजीराव पेशवा परास्त हुए, तब अङ्गरेजी सरकारने शिवाजीके वंशधर दूसरे शाहूजीके पुत्र प्रतापसिंहको, जिसको पेशवाने राजकैदी-के समान पिंशन देकर रक्खा था, आसपासके देशके साथ सतारा देदिया और पेशवाके बाकी राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १८३९ में जब राजा प्रतापसिंहने बगावत-की इच्छा की, तब अङ्गरेजोंने उनको राजकैदी बना कर बनारस में भेजदिया और उनके भाई शाहूजीको, जिनको आपासाहब भी कहते है, सताराकी गद्दी पर बैठाया। सन् १८४८ मे आपासाहब निष्पुत्र मरगये; तब अङ्गरेज महाराजने उनका राज्य अपने राज्यमें मिला लिया और उनकी ३ रानियोंको उचित पेंशिनका प्रबंध कर दिया। वे सताराके मह-लमें रहती थीं। सन् १८७४ तक तीनोंका देहांत होगया।

## बाई।

सतारारोडके रेलवे स्टेशनसे ९ मील उत्तर और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ६९ मील दक्षिण बाथरका रेलवे स्टेशन है। बाथरसे पश्चिम ओर ४० मीलकी सड़क महाबलेश्वरको गई है; उसी सडक पर बाथरसे १८ मील पश्चिम ओर सतारा कसबेसे २० मील उत्तर कुछ पश्चिम बम्बई हातेके सतारा जिलेमें कृष्णा नदीके बांयें किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान बाई एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाई कसबेमें १२४३८ मनुष्य थे, अर्थात् ११४०१ हिन्दू, ९९८ मुसलमान, २१ जैन, १६ कृस्तान, और २ यहूदी।

बाई कसबा कृष्णानदीके किनारोंके अतिपवित्र स्थानोंमेंसे एक है। उसमे लगभग २० मन्दिर हैं, जिनमें माधवजी, लक्ष्मीजी, गणेशजी और महादेवजीके मंदिर प्रधान है। कसबे-में ब्राह्मण बहुत बसते हैं। नदीके तीरपर ½ मील तक सीढ़ियाँ बनी हुई है। दिनभर वहाँके लोग घाटो पर स्नान करने तथा अपने वस्त्र धोनेके काममे लगे हुए देखनेमें आते है, क्योंकि उस देशके प्रायः सब हिंदू लोग अपने वस्त्र आप धोते हैं। बाईमें सबजजकी कचहरी, अस्पताल और बङ्गला है। वहाँ बडी तिजारत होती है। वहाँ ब्राह्मणोंका एक कालिज है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था।

बाईके निकट एक पहाडीपर पांडुगढ नामक किला है। वस्तीसे थोड़ीही दूरपर मुसल-मानी ढांचेका सुन्दर नमूना रास्तिया खान्दानके राजाका मकान है; जिसको लोग मोतीबाग कहते है। बाईसे लगभग ५ मील पश्चिम ओर कृष्णानदीके पास डोमगांवमें एक बहुत सुन्दर मंदिर है। उसके आंगनमें श्वेत संगमर्मरका फर्श लगा है। वहाँ ५ फीट ऊंचे मार्बुलके स्तंभ पर पंचमुखी महादेवकी प्रतिमा और अनेक सर्पोंके आकार बने हुए हैं। बाईसे लग-भग ८ मील दूर एक पहाडीके पादमूलके पास ¾ एकड भूमि पर छाया करता हुआ पुराना वटवृक्ष है।

# महाबलेश्वर।

सतारारोडके रेलवे स्टेशनसे ९ मील उत्तर और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ६९ मील दक्षिण वाथरका रेलवे स्टेशन है, जहांसे पश्चिम ४० मीलकी सडक महाबलेश्वरको गई है। वाथरसे १८ मील पश्चिम वाई कसबेके पास तक समतल सडक है। और वाईसे पश्चिम चढाईकी राह है। वाथरसे २९ मील पर पंचगनीगांवके पास अङ्गरेजोंके वहुतसे बङ्गले; उससे आगे $\frac{1}{3}$ मील तक उतराईकी सडक, वाथरसे ३९ मील सताराके राजाकी वनवाई हुई लगभग ८०० गज लम्बी और २०० गज चौडी एक झील और ४० मील पर महाबलेश्वर है। महाबलेश्वर जानेका दूसरा मार्ग पूना शहरसे है। पूनासे ७४ मीलकी अच्छी सडक गई है। पसरनीघाट तक घोडा गाडी जासकती है, किन्तु घोडोंकी सहायता देनेके लिये दस बारह कुलियोंकी साथ रहनेकी जरूरत रहती है।

बम्बई हातेके सतारा जिलेमें ( १७ अंश, ५८ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ४३ कला, ३५ विकला पूर्व देशांतरमें ) पश्चिमीघाटके महाबलेश्वर नामक सिलसिलेके ऊपर, जिसकी साधारण उचाई समुद्रके जलसे लगभग ४५०० फीट है, बम्बई हातेका प्रधान स्वास्थ्यकर स्थान महाबलेश्वर है।

महाबलेश्वर पहाडीके ऊपर लगभग ७ मील लम्बी और ३ मील चौडी प्राय समतल जगह है। उस मैदानसे पश्चिम पहाडियाँ है, जो समुद्रसे २५ मील पूर्व चली आई है। महाबलेश्वरमें गाडी दौड़ने योग्य अच्छी सड़कें वनी है। मामूली सरकारी इमारतें तथा जगह जगह यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये लगभग १०० बँगले बने हुए हैं। वहाँ एक अमीर आदमीके रहने योग्य कमरोंके मासिक भाड़े ४० रुपये लगते हैं। स्टेशनके मध्यमें बाजार है, जिसमें विविध प्रकारकी वस्तु, जो वहाँ लाई जासकती है, मिलती है। महाबलेश्वरगांवसे ३ मील दक्षिण यूरोपियन लोगोंकी वस्तीमें एक अच्छी लायब्रेरी, क्लब, गिरजा और कबरगाह है।

गर्मीके दिनोंमें महाबलेश्वरमे बम्बईके गवर्नर, बम्बईकी फौजके कमाण्डर इनचीफ और बम्बई आदि शहरोंके अनेक अन्य प्रधान अफसर तथा अमीर लोग आकर रहते है।

महाबलेश्वरकी मनुष्य-संख्या समयके अनुसार बढ़ती घटती है। सन् १८८१ की फरवरीकी मनुष्य-गणनाके समय मलकोलमपेट नामक गाँवके सहित महाबलेश्वरके ६५ टोलों अर्थात् झुण्डोंमें ३२४८ मनुष्य थे।

वहाँ सालाना औसतमें लगभग २६४ इंच वर्षा होती है। वर्षाकालमें महाबलेश्वरका दृश्य अति मनोरम होजाता है, क्योंकि उस समय सम्पूर्ण नदियों और झरनोंकी धारा गिरती है।

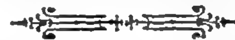
कृष्णानदीके निकसनेका स्थान–महाबलेश्वर गाँवके समीप जहाँसे कृष्णानदी निकली है, एक खड़ी पहाड़ीके पादमूलके निकट मन्दिरके भीतर एक कुण्ड बना हुआ है, जिसमें गोमुखी होकर पानीकी धारा गिरती है। महाबलेश्वर गाँवमें महाबलेश्वर शिवका पुराना मन्दिर तथा ग्वाली राजाका बनवाया हुआ काले पत्थरका एक बहुत पुराना मन्दिर और उसीका बनवाया हुआ गोटेश्वरका मन्दिर है। वहाँके सब मन्दिरोंमे महाबलेश्वर शिवका मन्दिर प्रधान है। कृष्णाके निकासका स्थान होनेके कारण महाबलेश्वर पवित्र स्थान समझा

जाता है, वहाँ बहुतसे यात्री जाते है। वह नदी उस स्थानसे निकल कर बम्बई हाते, हैदराबादके राज्य और मदरास हातेमें दक्षिण-पूर्व और पूर्वको बहती हुई लगभग ८०० मील बहनेके उपरान्त मछली बन्दरके नीचे समुद्रमे गिरती है। मालपर्व, गतपर्व, भीमा, तुङ्गभद्रा आदि नदियाँ उसमें मिली है। वाई, सतारा, सङ्गली, वेजवाड़ा, मछली बन्दर आदि कसबे उसके किनारो पर बसे है।

प्रतापगढका किला—महाबलेश्वरसे ६ मील दूर पहाडीके बगलके नीचे तक गाडी जाने लायक सडक है। वहाँसे किलेके फाटक तक कड़ी चढ़ाईका मार्ग है। खड़ी पहाड़ीके ऊपर प्रतापगढका सुन्दर पहाड़ी किला है, जिसको शिवाजीके किला होनेके कारण बहुत लोग जानते हैं। शिवाजीने उसके आस पासके देशको जीत करके उस किलेको बनवाया और उसी किलेके पास सन् १६५९ मे बीजापुरके सेनापति अफजलखाँको मार डाला था। ( पूनाके इतिहासमे देखिये )।

महाबलेश्वरका इतिहास—सन् १८२८ मे बम्बईके गवर्नर सर जान मलकोलमने सताराके राजासे महाबलेश्वरको लेकर वहाँ अपना ग्रीष्म भवन बनाया और राजाको उसके बदलेमे कोई दूसरी जगह दे दी, तभीसे वह स्थान प्रसिद्ध हुआ। महाबलेश्वरके पास उसके नामसे मलकोलमपेट नामक गाँव बसा है।

# बीसवां अध्याय।



## ( बम्बई हातेमें ) पूना, भीमशंकर, कारलीके गुफामन्दिर और अमरनाथ।

## पूना।

सतारारोडके रेलवे स्टेशनसे ७८ मील उत्तर, धोंद जंक्शनसे ४८ मील पश्चिमोत्तर और बम्बई शहरसे ११९ मील दक्षिण-पूर्व पूनामे रेलवेका जंक्शन है। मैं दक्षिणसे आकर रेलवेके पासकी धर्मशालामें टिका। बम्बई हातेके मध्य विभागमें ( १८ अंश, ३० कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ५५ कला, २१ विकला पूर्व देशान्तरमें ) सीधी लकीरसे समुद्रके किनारेसे लगभग ६५ मील पूर्व, समुद्रके जलसे १८५० फीट ऊपर बम्बई हातेकी सेनाका सदर मुकाम और पूना जिलेका सदर स्थान पूना एक सुन्दर शहर है। वहाँ जुलाईसे नवम्बर तक बम्बईके गवर्नर रहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ पूना शहरमे १६१३९० मनुष्य थे, अर्थात् ८७०९७ पुरुष और ७४२९३ स्त्रियाँ इनमे १२८३३३ हिन्दू, १९९९० मुसलमान, ८१८५ कृस्तान, २३०४ जैन, १६९५ पारसी, ७८७ यहूदी और ९६ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यहँ भारतवर्षमें १६ वाँ और बम्बई हातेमें दूसरा शहर है। पूना शहरकी मनुष्य-सख्या बढ रही है। सन् १८५१ में फौजी छावनी छोड करके उसमें केवल ७३२०९ मनुष्य और सन् १८८१ में ९९६२२ मनुष्य थे।

शहर पूर्वसे पश्चिम तक २ मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको १½ मील चौडा, २¾ वर्गमीलमे फैला है। दक्षिणमे मोटा नदी और पश्चिमोत्तरसे मूठा नदी आकर शहरके उत्तर

शहर तथा छावनीके बीचमें मिल गई है। सङ्गमके पास कई एक देवमन्दिर और मोटा नदी-पर ४८२ फीट लम्बा और २८ फीट चौडा वेलेस्लीब्रिज नामक पत्थरका पुल है, जो सन् १८७५ में १११००० रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। सङ्गमसे थोडीही दूर पर मोटा नदीके दहिने किनारेपर मैदानमें शहर बसा है। शहर और छावनीके बीचमें सरकारी आफिसोंके पास रेल्वे स्टेशन है। शहरके दक्षिण पार्वती पहाडी और चन्द मील पूर्व तथा पूर्वोत्तर अनेक पहाडियाँ है, जो सतारेकी ओर गई हैं। शहरसे दक्षिण एक झील है। एक नहर शहर होकर निकली है, जिसको एक महाराष्ट्र सरदारने बनवाया था। वह लगभग २०००० रुपयेके खर्चसे सुधारी गई है, जिसमें १७५००० रुपये बम्बईके पारसी सर जमसिद जीजी भाईने दिया था।

शहरकी प्रधान सडकें, जो चौडी है, उत्तरसे दक्षिणको और तङ्ग सडकें पूर्वसे पश्चिमको गई है। शहरके अधिक मकान दो मञ्जिले तथा तीन मञ्जिले है। बहुतेरे मकान खपडेपोश है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १२२७१ मकानोंमेसे ७१६ मकान औवल दरजेके थे। कई जगह सडकके पास पानीकी नलमें लोहेकी पुतली बनी है, जलकल-का पानी उसके शिरसे निकल कर छत्राकार बर्षता है। और किसी किसीमें फव्वारेके समान पानी निकलता है।

पूना शहर १८ महल्लोंमें विभक्त है। पेशवाओंके राज्यके समय वह सातो दिनोंके नामसे सात महल्लोमे बंटा था। जिस दिनके नामसे जो महल्ला है उसी दिनको उस महल्लेमें बाजार लगता है, जैसे कि बुधवारीपेठ अर्थात् बुधवारी महल्लेमे बुधके दिन बुधवारी नामक बाजार होता है। शनिवारी महल्लेमें पेशवाके महलका खण्डहर विद्यमान है, जिसको वहाँके लोग जूनावाडा अथवा पुराना महल कहते है। उसको अंतिम पेशवा बाजीरावके दादाने बनवाया था, वह बड़ी भारी इमारत थी, जो सन् १८२७ में जला दी गई, अब लगभग १७५ गज लम्बा और इतनाही चौडा केवल एक घेरा है।

बुधवारी महल्लेमें महाराष्ट्रोंके चन्द पुराने महल तथा नाना फरनवीसकी हवेली है, जिसमें छोटा आंगन, एक हौज और बहुतसी छोटी कोठरियाँ बनी हुई है। उस महल्लेमें एक बहुत सुन्दर अठपहला बाजार है। उसके मध्यमें एक अठपहला मकान, जिसकी आठों दिशा-ओंमे आठो पहलोंसे बाहरको निकले हुए ८ चौकोने खुले हुए मकान है, जिनमे एक ओरसे अर्थात् लम्बाईमें छः छः और चौडाईमे चार चार लकड़ीके खम्भे लगे है। आठोके बाहरके छोर पर दीवार और भीतरके छोर पर अन्तर देकरके केवल ४ पहलोंमे दीवार है। वह बाजार सुन्दर अङ्गरेजी खपड़ोसे छाया हुआ है। उसके भीतर ऊँचे चबूतरों पर, जो तरह दार बने हुए है, भांति भांतिके मेवे, फल, तरकारियां और अनेक प्रकारकी अन्य वस्तुये बिकती है। चबूतरोंके नीचे सडक बनी है।

बाजारसे थोडीही दूरपर तुलसीबाग नामक स्थानमें राम, लक्ष्मण तथा जानकीजीका सुन्दर शिखरदार मन्दिर और बुधवारी महल्लेके पास बेलबाग नामक स्थानमें लक्ष्मीनाराय-णका मंदिर है। मंदिरके पासके कूपमें रहट लगा है।

वेलेस्ली पुलके पार होनेपर बांई ओर पुराना इंजिनियरिंग कालिज मिलता है, जिसके पूर्व जिलेकी कचहरियां फैली है। पुलके पूर्व बगलसे एक रास्ता एक उत्तम बागको गया है,

जिसमे कई एक सुंदर शिवमंदिर बने हुए हैं। इंजिनियरिंग कालिजसे ३०० गज दूर "सर एलबर्ट मैसून हौस" नामक एक उत्तम इमारत है। उस जगहको लोग गार्डनरीच भी कहते है। वहाँ सुन्दर बाग नदीके किनारेपर फैला है। बागमें सर एलबर्ट मैसून हौस है, जिसके कमरोमे मार्बुलके टुकडोके फर्श हैं। बागमे एक सुंदर हौज तथा पानीका टावर बना है। मूलानदीके पास ६ एकड़ भूमि पर एक मनोरम बाग है। शहरके बाहरकी सीमाके पास एक बडा जैन मंदिर है। किर्की कसबेकी ओर २४६००० रुपयेके खर्चमे डेकान कॉलिज बना हुआ है, जिसका आधा खर्च सर जमसिदजी जीजीभाईने दिया था। कालिजके मध्यका ब्लक दो बाजुओंके साथ दो मजिला है। उसकी लोहेकी छत रगी हुई है। प्रधान ब्लकके पश्चिमोत्तरके कोणके पास १०६ फीट ऊंचा टावर है। ७० फीट लंबा कालिजका हल है। प्रधान इमारतमे क्लासोंके कमरे है और बाजुओंके कमरोमे विद्यार्थी रहते है।

शहरके उत्तर फौजी छावनी है, जिसकी सीमाके भीतर सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३०१२९ मनुष्य थे। छावनीमे यूरोपियन और देशी घोड़सवार तथा पैदल सेना रहती है। सीमाके भीतर मोटा और मूला नदीके किनारोंके पास तथा किर्कीकी छावनीको जाने वाली सडकके बगलमे दो मील तक यूरोपियन लोगोंकी बहुतसी कोठियां बनी हुई है। पूना शहरसे ३½ मील दूर किर्कीके रेलवे स्टेशनसे १½ मील पर गवर्नमेन्ट हौस है।

पूनामे एक हाईस्कूल, दो कालिज और कई एक छोटे स्कूल और देशी लड़कियो तथा यूरोपियन और यूरेशियन लडकियोंके अलग अलग कई स्कूल है। इनके अलावे एक यतीमखाना, उत्तम चित्रशाला, एक खेती विद्याका कालिज, खेतोकी फसिलोंकी परीक्षाके लिये गवर्नमेंट बाग तीन अङ्गरेजी कबरगाह, अनेक अस्पताल, कई एक मिशन, बहुतेरे गिरजा, एक कागज बनानेकी मिल, दूसरे कई एक कल कारखाने और एक पिंजरापोल है, जिसमें असमर्थ तथा दुःखी पशु पाले जाते हैं। शहरकी सड़को पर रात्रिमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। जलकल सर्वत्र लगी है।

पूनामे सुप्रसिद्ध पण्डिता रमाबाईकी "शारदा सदन" नामक प्रसिद्ध पाठशाला है, जिसमे स्त्रिया पढाई जाती हैं। रमाबाई पूनाके महाराष्ट्र ब्राह्मणकी पुत्री है। उसने सस्कृत, महाराष्ट्री, अङ्गरेजी तथा डाक्टरी विद्या अच्छी तरहसे पढ़ी है। इंगलेंड, अमेरिका आदि देशोंमे पर्यटन करके क्रस्तान होकर वह अब पूना में रहती है।

यद्यपि पूनेकी सौदागरी और दस्तकारी पेशवाओंके राज्यके समयके समान अब नहीं है, तथापि वहां अब तक कपडे, रेशमी वस्त्र, पीतल, तांबे, लोहे तथा मिट्टीके बर्त्तन इत्यादि वस्तु बहुत बनती है। वहाँके कारीगर सोने चांदीके भूषण, हाथी दांतकी कंघी इत्यादि चीजें बनानेमे बहुत प्रसिद्ध है। वे लोग मोरपख लगा करके खसके सुन्दर पंखे तथा दरी बनाते है। वहाँ मिट्टीकी प्रतिमा अत्युत्तम तैयार होती है। पूना शहरका जल वायु स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमे सालाना वर्षा लगभग २९ इञ्च होती है।

गणेशचौथका उत्सव—जैसे बङ्गाल देशमें दुर्गा पूजा, राजपूतानेमे दीवाली और पश्चिमी हिंदुस्तानमें होलीकी धूमधाम होती है, वैसेही बम्बई हातेमें गणेशचौथके महोत्सवका समारोह दिखाई देता है। जैसे बङ्गालमें दुर्गाकी प्रतिमा बनाकर लोग पूजते है और अन्त समयमे उसको जलमे विसर्जन कर देते है. वैसेही बम्बई हातेके लोग गणेशकी प्रतिमाको

बनवाते और जलमे विसर्जन करते है। गणेशचौथका उत्सव भादो सुदी चौथसे चौदस तक १० दिन पर्यन्त होता है।

बम्बई हातेके अन्य नगरोंके समान गणेशचौथका उत्सव पूनेमें सैकडों जगह होता है। कुंभार द्वारा मिट्टीकी गणेशकी सुन्दर प्रतिमा बनाई जाती है। भादो सुदी ४ के दिन, जिस तिथिमे गणेशजीका जन्म है, बडी धूमधामसे गणपतिजीकी प्रतिमाकी सुन्दर सिंहासनपर प्रतिष्ठा होती है और बडे समारोहसे गणेशजीकी सवारी निकलती है। लोग डण्डोंके तालपर मधुर स्वरसे भजन गाते हैं। बहुतेरे लोग उन्मत्त होकर नाचते हैं। नाचने वालोमे कोई स्त्री, कोई शराबी तथा कोई मल्लाह बनता है और सब मिल जुलकर नाचने लगते है। नित्य गणेशजीकी प्रतिमाकी पूजा होती है। उसको नैवेद्य चढाया जाता है। भादो सुदी १० के दिन सब मूर्त्तियाँ समुद्र, नदी अथवा सरोवरमे विसर्जन करदी जाती हैं।

उस दिन प्रतिमाओको लेजाने वाले दलोंकी बडी भीड होती है। लोग नाच गान करते हुए विविध सवारियोंपर प्रतिमाओंको जलके किनारेपर ले जाते है।

गणेशपुराण–( उपासना खण्ड, ५० वॉ अध्याय ) मनुष्योंको उचित है कि भादो मासकी दोनो चौथको बडा उत्सव करें, बाजा बजाते हुए तथा गान करते हुए रात्रिमें जागरण करें, प्रभात होनेपर गणेशजीकी प्रतिमाकी पूजा करके होम करे, दूसरे दिन प्रतिमाको पालकीमे रखकर लेचलें; आगे आगे किशोर अवस्थाके बालक डण्डोंसे युद्ध करते हुए चले, प्रतिमाको लेजाकर जलमे विसर्जन करें और बाजे गाजेसे युक्त अपने गृह लौट आवें।

( ८७ वॉ अध्याय )–भादों मासकी दोनो चौथमे गणेशजीकी प्रतिमा बनाकर गाने बजाने आदि उत्सवोंके साथ सुन्दर विधानसे उस प्रतिमाकी पूजा करके रात्रिमे जागरण करना चाहिये। उत्सव करनेवालोको उचित है कि धातुकी प्रतिमा होवे तो ब्राह्मणोको देवे; किन्तु दूसरी वस्तुकी प्रतिमाको परम उत्साहसे पालकीमें रखकर जलके किनारे ले जावे। पालकीके साथ छत्र, ध्वजा, पताका तथा गान करते हुए और डण्डे बजाते हुए बालकोंका दल जाना चाहिये। इस भाँति प्रतिमाको ले जाकर जलमें पधरा देना उचित है।

( उत्तर खण्ड, ८१ वॉ और ८२ वॉ अध्याय ) श्रीपार्वतीजीने भादो सुदी चौथके दिन गणेशजीकी पार्थिव प्रतिमा बनाकर पूजन किया। उस समय गणेशजीके प्रसन्न होनेपर वह प्रतिमा चैतन्य होकर बालरूप होगई। पार्वतीजी उस बालकको स्तन पिलाने लगीं। भादों सुदी चौथ सोमवारको गणेशजीका जन्म हुआ था, तभीसे चौथ तिथि वरदाता कहाती है। मनुष्योंको उचित है कि उस तिथिमें गणेशजीका उत्सव करे, उनकी मृत्तिकाकी प्रतिमा बनाकर यथा विधिसे पूजन करें और मण्डप बनाकर व्रत तथा रात्रिमें जागरण करें। जो मनुष्य उस तिथिमें मृण्मय गणेशकी पूजा नहीं करता, वह नाना प्रकारके रोगोसे पीडित होता है।

किर्की–पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३ मील पश्चिमोत्तर किर्कीका रेलवे स्टेशन है। बम्बईकी आरटिलरीका सदर मुकाम किर्की फौजी छावनी है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय किर्कीमे १०९५१ मनुष्य थे, अर्थात् ७७०६ हिन्दू, १५३४ कृस्तान, १४६० मुसलमान, १२५ जैन, ७४ पारसी, ४७ यहूदी और ५ अन्य। किर्कीके बारकोके ३/४ मील पूर्वोत्तर

लड़ाईके सामान रखनेकी कोठी और उत्तर ओर बारूदका कारखाना है। किर्कीके रेलवे स्टेशनसे १½ मील दूर गणेशखण्डके पास गवर्नमेंट हौस है। उसमें ८० फीट ऊँचा एक बुर्ज है; जिसपर चढ़नेसे मनोरम दृश्य देखनेमें आता है। गवर्नमेंट हौसमे दरबार कमरा, मेहमानोंके रहनेका कमरा, नाचका कमरा इत्यादि सुन्दर इमारतें बनी हुई है और ९० फीट लम्बी फूलोंके गमलोंकी गलरी है।

पार्वतीका मन्दिर—पूना शहरसे दक्षिण-पश्चिम रेलवे स्टेशनसे लगभग ४ मील दूर पार्वती नामक पहाडीपर पार्वतीजीका विशाल मन्दिर बना हुआ है। सिहगढ़ जानेवाली सड़क पूनासे पार्वती पहाडीके उत्तर होकर गई है, जिसके पास हीरा बागमे एक झील, मसजिद, मन्दिर और पेशवाओंका विला अर्थात् बाहरका बैठक है।

पहाडीके नीचेसे पार्वतीके मन्दिरके पास तक सीढियाँ बनी हुई है। पूनेके बालाजी बाजीराव पेशवाने सन् १७४९ में मन्दिरको बनवाया था। मन्दिरके बनानेमें लगभग १०००००० रुपये खर्च पडे थे, किन्तु बहुत लोग उसको सताराके राजाका मन्दिर कहते है। मन्दिरके पहिले चौगानमें कोनेके पास विष्णु, सूर्य, दुर्गा और स्कन्दके छोटे छोटे मन्दिर और मध्यमे पार्वतीजीके खास मन्दिरमे, जो बृहत् है, पार्वतीजी, महादेवजी तथा गणेशजी है। उस पहाडीके ऊपर इनके अलावे अन्य कई मन्दिर तथा स्थान है; वहाँ सावन मासमें बडा मेला होता है। दिवारीके दिन उत्तम रीतिसे मन्दिरमें रोशनी की जाती है।

मन्दिरके घेरेका द्वारके ऊपर चढ़नेसे नीचे पूर्व ओर पार्वती तालाब, तालाबके दक्षिण पार्वती गाँव, हीराबाग और संटमेरीका चर्च और दक्षिण-पश्चिम पेशवाओंके एक महलका खण्डहर देखनेमे आता है।

सिंहगढका किला—पूना शहरसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम सह्याद्रि पर्वतके बड़े सिलसिलेके पूर्व बगलकी पहाडीपर समुद्रके जलसे ४१६२ फीट ऊपर सिंहगढ़का पुराना किला है। पूनासे सिंहगढ पहाडीकी नेवके पास तक १४ मील तक गाड़ी जाती है। वहाँसे टट्टू या झंपान पर जाना होता है। पूनासे १० मील आगे उस मार्गमें ६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें एक बडी झील, जो पत्थर बाँध बाँध करके बनाई गई थी, मिलती है। उस झीलसे किर्की तथा पूना शहर और २ नहरोंसे पानी जाता है। पहाडीके ऊपर पुरानी दीवारके भीतर लगभग ४० एकड भूमिपर नादुरुस्त शकलमे सिंहगढका किला है। ३ फाटक होकर किलेके भीतर जाना होता है। फाटकसे थोड़ीही दूर शिवाजीके समयका अस्तबल है, जो उसी जगहके चट्टानमें उनके भीतरसे पत्थर निकाल कर बनाया गया था। फाटकसे ¾ मील पूर्व रामराजाका मन्दिर है, जिसके पास पत्थर निकालकर बनाया हुआ एक सरोवर और इसी भाँति बने हुए कई एक कूप है। उस पहाड़ीके ऊपर यूरोपियन लोगोंके गर्मीके दिनोमे रहनेके लिये कई एक बँगले बने हुए हैं।

पूनासे सीधी लाइन द्वारा १७ मील और जाने आनेके मार्गसे २४ मील दक्षिण-पूर्व पहाड़ीके बगल पर पुरन्दरके २ किले है, एक नीचे और दूसरा ऊपर।

खण्डोबाका मन्दिर—पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व जेजुरीका रेलवे स्टेशन है। जेजुरीमें खण्डोबाका, जो एक राजा था और शिवका अवतार समझा गया, प्रसिद्ध

मन्दिर है। उस देशके लोगोंमेंसे अनेक लोग, जिनके सन्तान नहीं होती, मानता करते हैं कि हमारे सन्तान होगी तो पहिली संतान हम खण्डोबाको देंगे। उस आदमीका जो प्रथम पुत्र होता है वह उस मन्दिरके पास रहा करता है और खण्डोवाका कुत्ता समझा जाता है। अगर पहिले पुत्र नहीं हुआ, पुत्री हुई तब उसका पिता उस पुत्रीका व्याह विधानके साथ खण्डोवासे कर देता है, वह पुत्री मुरली कहलाती है।

पूना जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला, पूर्व अहमदनगर और शोलापुर जिला, दक्षिण नीरानदी, बाद सतारा जिला और फलतानाकी मिलकियत और पश्चिम कुलावा और थाना जिला है। जिलेका सदर स्थान पूना शहर है। जिलेकी भूमि ऊँची नीची है। पश्चिमकी सीमाके पास सह्याद्रिकी प्रायः अगम चोटियाँ हैं। भीमानदी उस जिलेमें पश्चिमोत्तरसे दक्षिण-पूर्वको बहती है। सह्याद्रिके सिलसिलेसे बहुत धारायें निकलकर भीमानदीमें गिरती हैं। उस जिलेमें खानिक पैदावार बहुत नहीं है, किन्तु सड़क और मकान बनानेके योग्य पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिमके भागमें बाघ, तेंदुए, सांभर और भालू कभी कभी मिलते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पूना जिलेके ५३४८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९००६२१ मनुष्य थे, अर्थात् ८३४८४२ हिन्दू, ४२०३६ मुसलमान, १०८८० जैन, ९५०३ कृस्तान, १५७४ पारसी, १०५८ पहाडी और जङ्गली जातियाँ, ६१९ यहूदी, ७८ बौद्ध और ३० सिक्ख। हिन्दुओंमें ३९६५८६ कुन्बी, ८८०१९ माग और महारा, ५२५४३ माली, ४९०६० ब्राह्मण, ४२८२९ कोली, १५६९० चमार, ५५३२ सुतार (बढई) और बाकीमें लिङ्गायत, दरजी इत्यादि जातियोंके लोग थे, राजपूत केवल ३३६४ थे। पूना जिलेमें महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पूना जिलेके कसबे पूनेमें १६१२९०, जुनीरमें ११९०५ और किर्कीमें १०९५१ मनुष्य थे।

इतिहास—पूना, सतारा और शोलापुर इन तीनों जिलोंका प्राचीन इतिहास एकही है। ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईस्वीके आरम्भमें राजा शालिवाहनने, जिसकी राजधानी गोदावरीके किनारे पर पैठन थी, महाराष्ट्रदेशमें हुकूमत किया। उसके पश्चात् चालुक्य वंशके बलवान राजपूत राजाओंने महाराष्ट्र देशके एक बडे भागको तथा कर्नाटकको अपने अधिकारमें करलिया। उनकी राजधानी कल्यानी कसवा था। उस राज्यको नियत करनेवाले जयसिंहने पल्लववंशके राजपूत राजाको जीता था। १० वीं सदीमें चालुक्य वंशका एक राजा बडा प्रतापी हुआ। १२ वीं सदीके अंतमें देवगिरिके यादव वंशके राजाने चालुक्य वंश वालोंको परास्त करके उस देशपर अपना अधिकार किया। बारहवीं सदीके अन्तमें एक राजा, जिसका राज्य उत्तर ओर नीरानदी तक था, कोल्हापुरके निकट पुनल्लामें रहता था। उसको देवगिरिके राजा सिंहनने परास्त किया।

मुसलमानोंके आक्रमणोंसे सन् १३१२ ई० तक देवगिरिके यादव वंशके राज्यका अन्त होगया। सन् १३४५ में दक्षिणके मुसलमान सरदारोंने दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तोगलकसे बागी होकर बहमनी वंशके बादशाहको अपना शासक बनाया। उसकी राजधानी गुलबर्गा थी। सन् १४२६ में बहमनी खांदानके बादशाह अहमदशाहने गुलबर्गाको छोड़

## मोडी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द

ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

कर बीदरको राजधानी बनाया। सन् १४७२ में बहमनी खांदानके पिछले स्वाधीन बादशा-हने पश्चिमी घाटके पासके छोटे किलोंको तथा खेलनाको जीता। उसके पीछे उसने बहमनी राज्यका नया विभाग किया, जिसके अनुसार जुनीर एक सूबाका सदर स्थान बना, जिसके अधीन वाई, बेलगांव इत्यादि तथा कोकनका एक भाग था। भीमानदीके पासका अन्य देश बीजापुरके अधीन हुआ। शोलापुर, गुलबर्गा और पुरंधर एक अलग देश बना। बीजा-पुरका राज्य कायम करनेवाला यूसफ आदिलशाह बीजापुरका गवर्नर बनाया गया। अहम-दनगरका राजवंश कायम करनेवाला अहमदशाह जुनीर भेजा गया। दस्तुर दीनार नामक एक अबिसिनियन गुलबर्गाका हाकिम बनाया गया। जीनखां तथा ख्वाजाजहां नामक दो भाइयोंके अधिकारमे पुरंधर, शोलापुर और अन्य ११ जिले हुए। सन १४८९ में अहमद-शाह स्वाधीन बन गया। लगभग उसी समय बीजापुरका यूसफ आदिलशाह भी स्वाधीन बनकर भीमानदीके पास तकके देशका मालिक बना। सन् १४९१ मे दक्षिणके नये राजाओंने एक प्रकारकी संधि की, जिसके अनुसार नीरानदीके उत्तर और करमारानदीके पूर्वके देश वर्त्तमान शोलापुर जिलेके एक भागके साथ अहमदनगरके निजामशाही बादशाहको और भीमा तथा नीरा नदीके दक्षिणका देश बीजापुरके बादशाहको मिला। गुलबर्गाका दस्तुरदीनार कई लड़ाइयोंके पश्चात् सन् १५०४ मे मारागया और गुलबर्गाका राज्य बीजापुरके राज्यमें मिलगया। सन् १५११ में बीजापुरके राज्यमे शोलापुर मिला लिया गया। पुरंधर और उसके पासका देश बहुत वर्षोंतक अहमदनगरके अधीन ख्वाजाजहांके अधिकारमे था।

बीजापुर और अहमदनगरके बादशाह आपसमें लडते रहे; किन्तु उन्होंने विजयानगर-के हिंदू राजा राजारामसे डरकर परस्पर मेल किया और सन् १५६५ की जनवरीमें ताली-कोटमें राजारामको परास्त करके उनका राज्य लेलिया।

सन् १५९२ के पीछे दिल्लीके मुगल बादशाहोंने दक्षिण देश पर आक्रमण आरंभ किया। सन् १६०० में अकबरने अहमदनगरको परास्त किया। वह देश थोडे दिनोंतक मुगलोंके अधीन रहा।

सन् १६०४ में अहमदनगरके बादशाहने शिवाजीके दादा मालीजीको पूना देदिया। सन् १६१६ में दिल्लीके शाहजहांने अहमदनगर राज्यके बडे भागको जीता; किंतु सन् १६२९ में वह राज्य अहमदनगरको लौटा दिया गया। सन् १६३३ मे मुगलोंने दौलताबादको लेलिया और वहांके बादशाहको कैद किया, परतु शिवाजीके पिता शाहजी भोसलेने सन् १६३४ में बादशाही खानदानके एक आदमीको बादशाह बनाया, गगा-घरी और पूना शहरको लूटा तथा बीजापुरकी सेनाकी मददसे मुगलोको पुरंधरसे भगाया। तब शाहजहांने सेनाओंके साथ स्वयं जाकर बीजापुर पर घेरा डाला। सन् १६३६ में वहां-का बादशाह सुलह करनेके लिये मजबूर हुआ। शाहजहांको शाहजी द्वारा छीना हुआ देश मिलगया। सन् १६३७ में अहमदनगरका बादशाह मुगलोंके अधीन बनगया। निजामशाही खानदानका अन्त होगया। जुनीरके साथ भीमानदीके उत्तरका देश मुगलोंके राज्यमे मिला लिया गया और उसके दक्षिणका देश बीजापुरके बादशाहको मिला। शाहजी बीजापुरके अधीन रहकर काम करने लगे, उनको कई बस्तियोके साथ पूना और सूपाकी जागीर मिली।

बीजापुरके बादशाहोंके अधीन महाराष्ट्र लोग प्रसिद्ध होने लगे; और उनका बल क्रम क्रमसे बढ़ने लगा । शाहजी भोंसलेके पुत्र शिवाजी महाराष्ट्रोंके अगुआ हुए ( उनका जीवनचरित्र आगे है ) । सन् १६६३ में औरङ्गजेबका सेनापति साइस्ताखाँने शिवाजीसे पूना छीन लिया, किन्तु उसके चन्द रोज बाद शिवाजीने अचानक चढ़ाई करके साइस्ताखांके पुत्र और उसके रक्षकको मार कर उसको घायल कर दिया । मुसलमानी सेना भाग गई । उसके पीछे औरङ्गजेबने फिर पूना पर अधिकार किया । सन् १६६७ में औरङ्गजेबने शिवाजीको पूना लौटा दिया । शिवाजीके पुत्र शंभाजीके राज्यके समय औरङ्गजेबके अफसर खांजहांके अधिकारमे पूना शहर था ।

औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् १८ वीं सदीमें पूना, सतारा और सोलापुर ये तीनो जिले महाराष्ट्रोंके बैठक थे, जिनका राज्य पञ्जाबसे बङ्गाल तक और दिल्लीसे मैसूर पर्यन्त पहुँचा था । पहिले पेशवाओंका सदर स्थान सतारा था, किन्तु जब उनका अधिकार बहुत बढ़ गया तब उन्होंने पूनाको अपना सदर स्थान बनाया । सन् १७६३ मे हैदराबादके निजामअलीने पूनाको लूटा और उसके एक भागको जलादिया । उसके पश्चात् पीछेके पेशवाओ और संधिया तथा हुल्करके परस्परके झगडोसे बहुत बार पूनाका परिवर्त्तन हुआ था । सन् १८०२ में पेशवाने बेसीनकी संधि द्वारा अपनी सहायताके लिये अङ्गरेजी सेनाको पूनाके पास रखना स्वीकार किया । अन्तमें अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने बड़ी लड़ाइयोंके पश्चात् बाजीराव पेशवाको परास्त करके सन् १८१८ में पूनाको लेलिया । उसके उपरान्त पूना शहर अङ्गरेजी जिलेका सदर स्थान और दक्षिणमें सर्व प्रधान फौजी छावनीका मुकाम हुआ ।

शिवाजीकी कथा–चित्तौरगढ़के राणाओके वंशमें शिवरायके ३ पुत्र थे; दो तो समरमें मारे गये, किन्तु तीसरे सबसे छोटे भीमसिंहने भोंसला नामक दुर्गमें भाग कर अपना जान बचाया, इसीसे उनके वंशवाले भोंसला कहाये । भीमसिंहके पुत्र विजयभानु थे । विजयभानुके पुत्र खेलकर्ण यवनोंसे दिक्क होकर दौलताबादके पास बेरुलमें जा बसे । उनके पुत्रका नाम जयकर्ण था । जयकर्णके पुत्र महाकर्ण, उनके पुत्र राजा शिव, राजा शिवके पुत्र शम्भाजी और शम्भाजीके पुत्र मालीजी थे ।

सन् १५५२ ईस्वीमें मालीजीका जन्म हुआ । मालीजीके पिता शम्भाजी कई छोटे गांवोंके जमीन्दार थे । मालीजी २५ वर्षके होनेपर अहमदनगरके राज्यमें कुछ घुड़सवारोंके स्वामी हुए । पीछे वह ५००० घोडसवारोंके मालिक बनाये गये ।

सन् १५९४ ई० में मालीजीके पुत्र शाहूजीका जन्म हुआ । सन् १६०४ में निजामशाही गवर्नमेण्टने सूपा और पूनाके परगनोको मालीजीको दे दिया । सन् १६१८ में मालीजी भोंसलाका परलोक हुआ ।

शाहजीका विवाह सन् १६०१ में लुखजी यादवरावकी पुत्रीसे हुआ था । लुखजी यादवराव निजामशाही दरबारके अधीन एक बड़ी जागीरके अधिकारी थे । जब दिल्लीके बादशाहका अधिकार अहमदनगरके राज्यपर फैला. तब सन् १६२१ ई० में लुखजी यादवराव मुगलोंकी तरफ चले गये । उस समय निजामशाही और मुगलोंके बीचमें घोर शत्रुता

चल रही थीं। जमाई शाहजी निजामशाहीके पक्षमें और ससुर लुखजी मुगलोंके पक्षमें थे, किसी किसी लड़ाईमें ससुर और दमादका भी सामना हो जाता था।

सन् १६२६ की एक लड़ाईमें शाहजी हारकर भाग चले। उस समय उनके ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी और उनकी पत्नी जीजी बाई भी युद्धस्थलमें उपस्थित थी। जीजी बाई गर्भवती थी। तीनों एक एक घोडे पर भाग रहे थे और लुखजी यादवराव मुगल सेना लेकर अपनी बेटी, दमाद और नातीको पछिया रहे थे। जब गर्भवती जीजी बाई भागनेमें असमर्थ होगई, तब शाहजी उसको छोड़ अपने बालक पुत्र शंभाजीको लेकर निरापद स्थानमें चले गये।

लुखजी यादवराव अपनी पुत्री जीजीको शिवनेरी किलेमें कैद कर शाहजीसे शत्रुता साधने लगे। शाहजीके मांगने परभी उसने कन्याको उनके पास नहीं भेजा। जीजी बाई अपना समय शिवनेरी दुर्गकी शिवाई देवीके पूजनमें बिताती थी। सन् १६२७ ई० की वैशाख शुक्ला द्वितीयाको जुनीरके शिवनेरी किलेमें जीजीबाईके गर्भसे शिवाजीका जन्म हुआ। शिवाई देवीके प्रसादसे पुत्र जन्मा इस लिये उसका नाम शिवाजी रक्खा गया। जब दूसरे सुलतान मुरतिजा निजामशाह बालिग होगये, तब उन्होंने सन् १६३० ई० में लुखजी यादवरावको दगासे दौलताबादमें बुलाया और वहाँ आनेपर उसको मरवाडाला।

पीछे मुरतिजा निजामशाह मुगलोंकी कैदमें पडे और दौलताबाद मुगलोके हाथमें गया। उसी समय शाहजीकी पत्नी जीजीबाई मुगलोंके हाथ गई, पर अनेक महाराष्ट्रोंने मिलकर बडी बड़ी दिक्कतोसे जीजीबाईका उद्धार किया; तबसे जीजीबाई शिवाजीके साथ कुण्डाने दुर्गमें रहने लगी।

जब निजामशाही राज्य मुगलोके राज्यमें मिल गया। तब शाहजीने बीजापुरके आदिलशाहीकी नौकरी कबूल करली। उस समयसे वह अपनी नई ब्याही पत्नी तुका बाई और बड़े पुत्र शम्भाजीको अपने साथ रखने लगे। जीजीबाई कुछ दिन पतिके साथ रहकर पीछे शिवाजीके साथ पूनामें जाकर रहने लगी। शाहजीके अधीन अनेक ब्राह्मण कर्म्मचारी थे, जिनमेंसे नारूपन्तपर कर्नाटककी जागीरका और दादाजीपर पूनाकी जागीरका भार दिया हुआ था। दादाजीकी पूनाकी जागीर तथा पूनाकी जन-संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। दादाजी शिवाजीको विरोचित शिक्षा देने लगे।

शिवाजी जब १६ वर्षके हुए, तब वह पहाडी मावली वीरोके सहारेसे धनियोका धन लूटकर अपने आवश्यकीय कामोके लिये धन इकट्ठा करने लगे। शाहजीकी पूनाकी जागीरमें कोई पहाड़ी किला नहीं था। सन् १६४६ ई० में शिवाजीने विना लडाईके तोरनका किला लेलिया, जो पूनासे २० मील दक्षिण-पश्चिम नीरानदीके किनारेपर मजबूत पहाड़ी किला था। पीछे उन्होंने किलेको मजबूत करके उसमें मावली वीरोको नियुक्त किया। और किलेका नाम पूर्णचन्द्रगढ़ रक्खा। उसके पश्चात् उन्होंने सन् १६४७ में बड़ी फुर्तीके साथ एकही वर्षमें वहाँसे ६ मील दूर महोर बद्ध पहाड़ीपर दूसरा किला तय्यार करके उसका नाम राजगढ़ रक्खा। शिवाजीके उन कामोकी खबरसे बीजापुर दरबारमे हलचल मच गई; परन्तु जब शाहजीने अपनी कर्नाटककी जागीरसे मुलायम चिट्ठी लिखी, तब दरबार शान्त रह गया। दादाजीकी मृत्यु होजाने पर शिवाजीने अपनी जागीरके अन्तर्गत कोंडाने

दुर्गनामक किलेको मुसलमान किलेदारसे छीन लिया और उसका नाम सिंहगढ रक्खा। तथा पुरंधरके हिन्दू किलेदारके मरजानेपर उस किलेको भी ले लिया। अब शिवाजीकी जागीर चाकुनसे नीरानदी तक फैल गई।

सन् १६४८ में शिवाजी बीजापुर राज्यका खजाना, जो कल्याणसे बीजापुर जाता था, लूट कर अपने वर्तमान वासस्थान राजगढ़मे उठालाये। उस समय उन्होंने बीजापुरके राज्यके कई छोटे किलोंको लेलिया और कल्याणके पास बीरवारी और लिङ्गाना नामक दो किले बनवाये।

उस समय कर्नाटकमे शाहजीकाभी विलक्षण प्रभाव हुआ था। सन् १६४९ में बीजापुरके सुलतान आदिलशाहकी अनुमतिसे सुधौलके बाजी घोरपुरेने, जो शाहजीके साथ काम करता था, उनको नेवता देकर घरमें बुलाया और पकड़कर बीजापुरके दरबारमे भेज दिया। महम्मद आदिलशाहने शाहजीको कैदखानेमे रक्खा, पर कुछ दिनोंके बाद शिवाजी-की गुप्त प्रार्थनासे जब महम्मद आदिलशाहके ब्राह्मण मन्त्री मुरार पन्तने कोशिश की, तब आदिलशाहने शाहजीको कारागारसे मुक्त करके चार वर्षके लिये राजधानीमें नजरबन्द रक्खा। उधर शिवाजी मुगलोंसे लिखा पढ़ी कर रहे थे, इसी भयसे सुलतान आदिलशाहको चारों वर्ष तक शिवाजीके विरुद्ध सेना भेजनेका साहस न हुआ। उधर कर्नाटककी दशा बहुत बिगड़ गई। शाहजीके बडे पुत्र शम्भाजी विद्रोहियोके हाथसे मारेगये। सन् १६५३ मे सुलतानने शाहजीको नजरबन्दसे रिहांई कर पुनः कर्नाटकमें भेजा।

शिवाजीने नये जीते हुए देशोंकी रक्षाके लिये कृष्णाके तटके पर्वत पर प्रतापगढ़ नामक किला बनाया। शिवाजीके प्रधान मंत्री श्यामराजे पन्तने राज्यका अच्छा प्रबंध किया। इस लिये शिवाजीने उसको पेशवाकी पदवी दी। सन् १६५७ में शिवाजीने मुगल राज्के जुनीर शहरको लूट लिया, जिससे उनको बहुत धन और घोड़े मिले। उसी वर्ष शिवाजीके पुत्र शम्भाजीका जन्म हुआ। सन् १६५९ में जब मंत्री श्यामराजे पन्त कंकणके फतहखा सिद्दीने युद्धमे हारगये, तब वह मंत्रीके कामसे च्युत किये गये और मोरो त्रिमल पिंगलेको पेशवाका पद प्राप्त हुआ।

उसी सालके अकटूबर महीनेमें बीजापुर दरबारके सिपहसालार अफजलखाँने शिवाजी-को पकडनेका बीडा उठाया और दरबारके कर्मचारी पन्तोजी गोपीनाथको दूत बनाकर शिवाजीके पास भेजा, पन्तोजीने मित्रता दृढ़ करनेके लिये परस्पर मिलन होनेकी बात शिवाजीसे कही। शिवाजीने दगाको जान लिया। उसनेभी कृष्णजी भास्करको अपना दूत नियुक्त कर अफजलखाके पास भेजा। मिलनेका स्थान प्रतापगढ किलेके नीचे मुकरर हुआ। अफजलखाके साथ शस्त्रधारी हजारों सिपाहियोंको देख शिवाजीने अपने कर्मचारियोंके अधीन बहुतसी सेना छिपा रक्खी और अपने वस्त्रके नीचे जिरहबखतर पहिन लिया तथा बिछुआ और बाघनखा हथियार धारण किया। जब शिवाजी और अफजलखां नियत स्थान पर एकत्र हुए, तब शिवाजीने अपने बिछुए और बाघनखा हथियारसे अफजलखांको घायल करके उनको मारडाला। उसी समय छिपे हुए महाराष्ट्रोंने मुसलमानोंकी सेना पर आक्र-मण किया। मुसलमानी सेनाके बहुत लोग मारेगये, कुछ भाग गये और जो पकड़े गये उनको शिवाजीने छोडवा दिया। नवम्बर बीतनेसे पहिलेही अगणित स्थान और दिसम्बरमें कोल्हापुर जिला शिवाजीके अधिकारमें होगया।

अफजलखाकी फौज का नाश सुन कर बीजापुरकी फौजने चारो तरफसे शिवाजीके किलेपर आक्रमण किया । पहले तो बहुत मुसलमानी सेना मारी गई; परंतु पीछे मुसलमानोंने पनालाके किलेमें शिवाजीको घेर लिया । शिवाजी ४ मास तक किलेमें आत्मरक्षा करके उसके पश्चात् चुने हुए मावली वीरोंके साथ एक ओरका व्यूह भेद कर निकल गये ।

सन् १६६२ में शिवाजीने वम्बई हातेके उत्तरी सरहद तक बडा मुल्क ले लिया और बादशाही शहर सूरतको खूब लूटा । सन् १६६४ में अपने पिताके मरनेपर उन्होने राजाकी पदवी ली और अपने नामका सिका जारी किया । सन् १६६५ में उन्होंने मुगलोके लशकरको बीजापुरकी रियासतपर चढ़ाई करनेमे मदद दी । सन् १६७४ में शिवाजी अपनी राजधानी राजगढमें बड़ी धूमधामसे राज सिंहासनपर बैठे । उस समय उन्होंने सोनेका तुलादान किया । उसके पश्चात् उन्होंने छोटे छोटे राजाओंसे राज्यकर और बम्बईके अङ्गरेजोंसे वहुत नजर लिया । सन् १६७६ मे शिवाजीने कर्नाटक तक अपनी सेना भेजी । सन् १६८० में ५३ वर्षकी अवस्थामें उनका देहांत होगया । राजगढ़ मे उनका समाधि मन्दिर बना हुआ है ।

सन् १६८० मे शम्भाजी, जिनका वय २३ वर्षका था, अपने बाप शिवाजीकी जगह गद्दीपर बैठे, परन्तु उनकी जिन्दगीका समय पोर्चुगीजों और मुगलोंकी लड़ाइयोंमें कटा । औरंगजेबने सन् १६८९ मे उनको पकड़ा और मार डाला । उनका पुत्र शाहूजी, जो उस समय ६ वर्षका था, गिरफ्तार होगया, जो औरङ्गजेबके मरने तक कैद रहा । सन् १७०७ मे शाहूजी मुगलोंकी अधीनता स्वीकार करके अपने पिताके राज्य पर बहाल हुआ; किन्तु उसने रियासतका प्रवन्ध अपने दीवान बालाजी विश्वनाथके, जो ब्राह्मण थे, सिपुर्द कर दिया ।

पेशवाओंका वृत्तान्त–जब शिवाजीके पोते शाहूजीने बालाजी विश्वनाथको अपनी रियासत सिपुर्द करदी, तब धीरे धीरे पेशवाका उहदा मौरूसी होगया । शिवाजीके परिवारके अधिकारमे केवल सतारा और कोल्हापुरकी छोटी रियासत रहगई ।

( १ ) पहले पेशवा बालाजी विश्वनाथने सन् १७१८ मे दिल्लीके बादशाहकी सहायताके लिये एक फौज भेजी और सन् १७२० ई० मे जोर डालकर दक्षिणकी मालगुजारीपर बादशाह फरमानके जरियेसे चौथ हासिल की ।

( २ ) दूसरे पेशवा बाजीराव बालाजी अपने पिताके मरनेपर सन् १७२१ में राजसिंहासन पर बैठे । उन्होंने सन् १६३६ में मालवापर भी अपना अधिकार कर लिया और विंध्याचलके उत्तर और पश्चिमको नर्मदा और चम्मल नदीके बीचके मुल्कपर अपना राज्य फैलाया तथा सन् १७३९ मे बसीनका किला पोर्चुगीजोंसे छीन लिया ।

( ३ ) बाजीरावके मरनेपर उनके पुत्र बालाजी बाजीराव सन् १७४० में तीसरे पेशवा बने, जिनके राज्यके समय महाराष्ट्रोंका भय सम्पूर्ण मोगल राज्य पर छा गया । उनने निजामसे दो लड़ाइयाँ लड़कर अपने राज्यको बढ़ाया; सन् १७५० में पूना शहरको राजधानी बनाया और उत्तरी हिन्दको पञ्जाब तक लूटा । उस समय पञ्जाबका शासक अहमदशाह दुर्रानी क्रोध करके चढ़ आया और सन् १७६१ में, पानीपतकी लड़ाईमे महाराष्ट्रोंको परास्त किया ।

( ४ ) दूसरे बालाजीकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र माधवराव सन् १७६१ में पूनाकी गद्दीपर बैठे; सन् १७६३ मे निजामअलीने पूनाको लूट कर बरबाद किया। माधवरावसे इतना बन पड़ा कि उसने अपने जोरको हैदराबाद, मैसूर और बरारके हाकिमोंके मुकाबलेमें कायम रक्खा।

( ५ ) माधवरावके देहान्त होने पर सन् १७७२ में नारायणराव, जिसकी अवस्था १७ वर्षकी थी, पाँचवाँ पेशवा बना। वह सन् १७७३ मे राज्य पानेके ९ महीने बाद अपने अङ्ग रक्षक द्वारा मारा गया।

( ६ ) नारायणरावके मरनेपर उसके पुत्र माधवरावका जन्म हुआ। राज्यका सम्पूर्ण काम दीवान नानाफरनवीस करने लगा, परन्तु दूसरे बालाजीके भाई रघोबाने माधवराव नामक लड़केको दोगला कहकर खुद छठवाँ पेशवा होनेका दावा किया। नाना फरनवीसने फ्रान्सीसियोंसे सहायता माँगी और अङ्गरेजोने बम्बईसे रघोबाकी सहायता की। मरहटों और अङ्गरेजोसे सन् १७७९ से १७८१ तक लड़ाई होती रही। सन् १७८२ में सुलह हुई, जिसके अनुसार सालसट और एलिफेंटाके टापू और दो दूसरे टापू अङ्गरेजोके हाथ लगे, रघोबाको अच्छी पेंशन मिली और नाबालिग माधवराव अपनी हुकूमत पर पक्का हुआ; परन्तु २१ वर्षकी अवस्थामे वह फाटकके ऊपरकी बालकानीसे गिर कर मर गया।

( ७ ) माधवरावके मरने पर उसके चचेरे भाई दूसरे बाजीराव सन् १७९५ में सातवाँ पेशवा बनकर पूनाकी गद्दीपर बैठे। उनका बल दिनपर दिन घटता गया। जशवन्तराव हुलकरने पेशवा और सिंधियाकी मिली हुई फौजोंको पूनामें परास्त किया और सिन्धियाके सम्पूर्ण तोप, असबाब और भण्डारको लूट लिया।

सन् १८१७ की पहिली नवम्बरको बाजीराव पेशवाकी फौजने पूनाकी अङ्गरेजी छावनी और नदीके सङ्गमके पासके रेजीडेंसीको लूट करके जला दिया। ता० ५ नवम्बरको अङ्गरेजी रेजीडेण्ट किर्कीके पास, जो उस समय एक छोटी बस्ती थी, चला गया। पेशवाकी सेनामें १४ तोपोके साथ ८००० पैदल सेना और १८००० घोड सवार थे। उनके अलावे पार्वती पहाडीके निकट पेशवाके साथ २००० पैदल फौज और ५००० सवार थे। अंगरेजोंके पास केवल २८०० सेना थी, जिनमें ८०० यूरोपियन थे। कई लड़ाइया हुई, जिनमे पेशवाकी ओरके बहुत लोग मारे गये। तारीख ११ नवम्बरको जब अङ्गरेजी जनरल इस्मीथके अधीनकी सेना सिरूरसे आगई तब थोड़ी लडाईके पश्चात् पेशवाकी सेना पीछे हटी। अन्तमे पेशवा परास्त हुए। सन् १८१८ में उनका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया। बाजीराव पेशवाको वार्षिक ८ लाख पेंशन नियत हुआ। वह कानपुरके पास बिटूरमें रहने लगे, जो सन् १८५३ में वहाँही मर गये।

बाजीरावकी मृत्यु होनेपर अङ्गरेजी सरकारने उनके दत्तक पुत्र नाना धुन्धूपन्तको उनका उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया और बाजीरावकी पेंशन बन्द कर दी। सन् १८५७ के बलवेके समय नाना धुन्धूपन्तने कानपुरमें बहुतसे अङ्गरेजोको मार डाला ( कानपुरमें देखिये )।

रेलवे—पूनासे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है;—

(१) पूनासे पश्चिमोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
३ किर्की।
१० चिचवाडा।
२१ तलेगाँव।
२३ वाडगाँव।
३४ कार्ली।
३९ लोनवली।
४१ खण्डाला।
५७ कर्जत।
६५ नेरल।
८१ अमरनाथ।
८६ कल्याण जंक्शन।
९८ थाना।
१०२ भंडूप।
११३ दादर जंक्शन।
११९ वम्बई (विक्टोरिया टर्मिनस)।

कल्याण जंक्शनसे पूर्वोत्तर ८३ मील नासिक, १२९ मील मनमार जंक्शन, और २४३ भुसावल जंक्शन।

(२) पूना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ग्रेट इण्डियन पेनिन सुला रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
४८ धोंद जंक्शन।
६६ डिकसल।
१०५ केम।
११६ वारसी रोड।
१४५ मोहल।
१६५ शोलापुर।
१७४ होतगी जंक्शन।
२३५ गुलवर्गा।
२५२ शाहाबाद।
२५८ वाडी जंक्शन।
३२५ रायचूर।

धोंद जंक्शनसे उत्तर ५१ मील अहमद नगर और १४६ मील मनमार जंक्शन।

होतगी जंक्शनसे दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे पर ५८ मील बीजापुर, १३१ मील वादामी और १७३ मील गदग जंक्शन।

वाडी जंक्शनसे पूर्व निजाम स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद १२१ मील सिकन्दराबाद और २०८ मील वारंगल।

(३) पूना जंक्शनसे दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
६९ वाथर।
७८ सितारारोड।
१६० मीराज जंक्शन।
२०९ गोकाकरोड।
२४५ वेलगाँव।
२७८ लोंडा जंक्शन।

मीराज जंक्शनसे २९ मील पश्चिम कोल्हापुर।

लोंडा जंक्शनसे ६६ मील पश्चिम मोरमूगांव बन्दरगाह।

लोंडा जंक्शनसे पूर्व ४४ मील धारवाड, ५६ मील हुबली जंक्शन, ९२ मील गदग जंक्शन, १४५ मील होसपेट, १८५ मील वल्लारी और २१५ मील गुण्टकल जंक्शन।

हुबली जंक्शनसे दक्षिण—पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील वनावार, २४८ मील तमकूर और २८८ मील वङ्गलोर शहर।

# भीमशङ्कर।

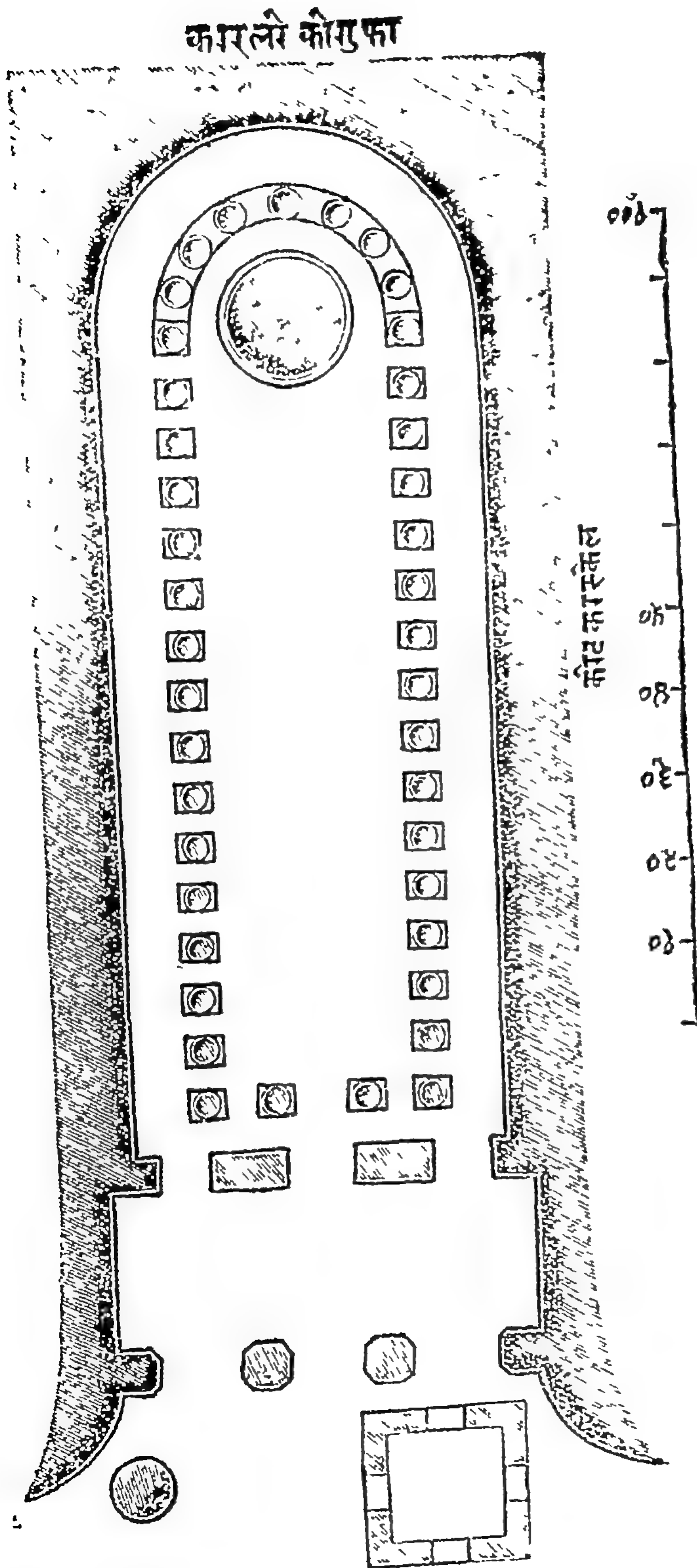
पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३१ मील पश्चिमोत्तर तलेगॉवका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे २४ मील दूर भीमशङ्कर महादेवका मन्दिर है। मार्गमें पहाडकी चढ़ाई उतराई नहीं मिलती। भीमशङ्करके पास जानेका दूसरा मार्ग तलेगांवके स्टेशनसे ४४ मील पश्चिमोत्तर नेरलके रेलवे स्टेशनसे है। उस स्टेशनसे केवल१६मील दूर भीमशङ्कर है, किन्तु उस मार्गमें १० मील गाड़ी जाने वाली सडकके वाद ६ मील पहाडीकी चढ़ाई उतराई मिलती है।

इस भीमशङ्करको लोग शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोका भीमशङ्कर कहते हैं, परन्तु शिव पुराणमें, जहां १२ ज्योतिर्लिङ्गोकी कथा है,कामरूपदेश अर्थात् आसामदेशके कामरूप जिलेमे भीमशङ्कर लिखा हुआ है, जो नीचे लिखी हुई कथासे विदित होगा।

शिवपुराण—( ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय ) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिंगोमेंसे भीमशंकर शिवलिंग डाकनीमे विराजते है। ( ४८ वां अध्याय ) लंकाके कुम्भकर्णका पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटीके सहित सह्याचल पर रहता था। उसने १० हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजीसे अप्रमेय वर पाया। उसके पश्चात् वह कामरूपके राजाको परास्त कर उसको वंदीखानेमें रख कामरूप देशका स्वामी बनगया और देवगण तथा ऋषीश्वरोंको क्लेश देने लगा। कामरूपका राजा वंदीखानेमे पड़ा हुआ अपनी स्त्रीके सहित पार्थिव बना कर शिवजीकी आराधना करने लगा। उधर देवताओने शिवजीको प्रसन्न करके भीम दैत्यके विनाशके लिये उनसे प्रार्थना की। भीमने जब सुना कि राजा वंदीगृहमे भी शिवका पूजन करता है, तब राजाके निकट जाकर उसके ऊपर तलवार चलाई। शिवजीने उसी समय पार्थिवसे निकल कर भीमकी तलवारको अपने पिनाकसे सौ टुकडे करडाला। तब महादेवजी और भीमका भयकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवता गण भयसे अति त्रसित हुए। जब नारदने आकर दैत्यके वधके लिये शिवजीकी प्रार्थना की, तब भगवान् शंकरने हुंकाररूपी अस्त्रसे संपूर्ण राक्षसोंके सहित भीमको भस्म कर दिया। उस समय देवताओने शिवजीसे प्रार्थना की कि हे भगवन्! आप लोकके हितके अर्थ इस स्थानमें निवास करके इस दुष्ट देशको पवित्र कीजिये। शिवजी देवताओके वचन स्वीकार करके उस स्थानमे रहगये और भीमशंकर नामसे प्रसिद्ध हुए। उनके दर्शन और स्मरण करनेसे संपूर्ण पापका विनाश होता है।

# कारलीके गुफामंदिर।

तलेगांवके रेलवे स्टेशनसे १३ मील ( पूनाशहरके रेलवे स्टेशनसे ३४ मील ) पश्चिमोत्तर कारलीका रेलवे स्टेशन और कारलीके रेलवे स्टेशनसे ५ मील पश्चिमोत्तर लोनवलीका रलवे स्टेशन है। दोनों स्टेशनोंसे ६ मील दूर आसपासके मैदानसे लगभग ६०० फीट ऊंची पहाडीके बगलमे कारलीके प्रसिद्ध गुफा मन्दिर हैं। लोनवलीसे ४½ मील तक तांगा जाने लायक मार्ग और १½ मील टट्टू जानेकी राह है।


कारले की गुफा
फीट का स्केल

बम्बई हातेके पूना जिलेमें ( १८ अंश, ४५ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३१ कला, १६ विकला पूर्व देशांतरमें ) कारलीके गुफामंदिर है। वहां अनेक विहार गुफाओंके सहित एक वृहत् चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मंदिर निशन पहाडी चट्टानमे पत्थर खोद कर अर्थात् भीतरसे पत्थर निकाल कर बनाया हुआ है। इतनी बडी तथा सुन्दर चैत्यगुफा भारतवर्षमें दूसरी नहीं है। गुफाके पेशगाह अर्थात् आगेके ओसारेके वगलमे और आगेके सिंह स्तंभपर पुराने लेख हैं, जिनसे विदित हुआ है कि महाराज भूतिने ( जो सन् ईस्वीके आरंभसे ७८ वर्ष पहिले राज्य करते थे ) इसको बनवाया था। वह गुफा अपने पेशगाहके पीछेसे अपनी पीछेकी दीवार तक १२५ फीट लंबी और दहिने बायेंकी दीवारके भीतर ४५ फीट चौडी तथा नीचेके तलसे छतके तल तक ४६ फीट ऊंची है। उसके भीतरकी पिछली दीवार गोलाकार है। गुफाके भीतर चारो ओरकी दीवारोंसे लगभग ६ फीट भीतर चट्टानके बने हुए स्तंभोंकी एक पंक्ति है, जिनमेंसे दहिने और बायें पंदरह पंदरह अठपहले स्तंभ है। प्रत्येक स्तंभोंकी नेव लंबी, मध्य भाग अठपहला और ऊपरका भाग सुन्दर नकाशीसे भूषित है, जिसमें दो हाथी दो दो सुन्दर सवारोंके सहित बने हुए है। गुफाके पीछेके भागके ७ स्तभ सादे अठपहले हैं। गुफाके आगे पेशगाहकी ओर ४ अठपहले स्तंभ हैं। स्तंभोंके भीतर उस गुफाका मध्य भाग लगभग १०५ फीट लबा और २५ फीट चौड़ा है। वह गुफा अब शिवका मन्दिर समझी जाती है। सामने उसके पीछेके भागमें प्राय शिवलिंगके समान दघोब है। दघोब छोटे स्तूपके समान होता है, पर उसमे बुद्धदेव अथवा उनके शिष्यकी अस्थि रहती है। गुफा और उसके पेशगाहके बीचकी दीवारमे ३ दरवाजे है; मध्यका बडा और बगलोंके दोनो छोटे। पेशगाह दहिने बायें ५२ फीट लंबा और आगेसे पीछे तक १५ फीट चौडा है। उसके आगे पहलदार मोटे मोटे ४ स्तंभ बने हुए हैं। पेशगाहके आगे उसके दहिने बगलमें १ मोटा सिंहस्तंभ, जिसके शिरोभागमे ४ सिंह बने हुए हैं, और बायें एक छोटा मन्दिर है।

अन्य गुफायें—कारलीके पास बहुतसी विहार गुफा भी हैं। प्रधान विहार नीचे ऊपर ३ पंक्तियोंमें हैं। उनके मध्यमें छतके नीचे बड़ा कमरा और कमरेके बगलोंमे छोटी कोठरियाँ बनी हुई है। ऊपरवालेमें केवल एक बरण्डा है, जिसके पास भवानीका छोटा मन्दिर है। पहाडीके कदमके पास एक छोटा गाँव है, जिसकी गुफा एकविराकी गुफा कहलाती है।

रेलवे स्टेशनसे ३ मील दक्षिण मैदानसे १२०० फीट उँचाई पर लोगढ़ और ईशापुरके पहाडी किले है।

भाजाकी गुफायें—कारली गाँवसे ३ मील दक्षिण-पूर्व भाजा नामक बस्तीसे लगभग १ मील दूर सन् ईस्वीके २०० वर्ष पहलेकी बनी हुई १२ जगह १८ गुफायें हैं। वह स्थान भारतवर्षके दिलचस्प स्थानोंमेंसे एक है।

बेदसाकी गुफायें—भाजागाँवसे ५½ मील पूर्व और वाडगाँवके रेलवे स्टेशनसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम बेदसा गाँव है। वहाँकी गुफायें भाजाकी गुफाओंसे थोडे पीछेकी हैं। वहाँके प्रधान गुफा मन्दिरमें एक दघोब है, छतके नीचे २७ सादे स्तम्भ बने हुए हैं। स्थानके दोनों बगलोंपर पत्थर काट कर दो मञ्जिली गुफा बनी हुई है, जिनमें छोटी कोठरियोंके साथ मामूली वरंडे हैं। वहाँ १४ दघोबोंमें अजीब सङ्गतराशीके काम हैं, जिनमेंसे

५ भीतर और दूसरे सब गुफाके बाहर हैं। गुफाके आगे मेहराब द्वार ४ स्तम्भोंपर बहुतेरे घोडे, बैल और हाथी बने हैं। गुफा मन्दिरका नकशा कार्लीकी चैत्य गुफाके समान है, लेकिन न तो उतना बडा है और न उसके समान उत्तम है और उससे यह नया जान पड़ता है। इसमे एक दघोव है, जिसकी छतके नीचे १० फीट ऊँचे २६ स्तंभ बने हुए हैं। आगेमें करीब २५ फीट ऊँचे ४ स्तम्भ है, जिनके शिरके पास बहुतसे घोड़े, बैल और हाथी बने हैं। मन्दिरके पास मेहराब दार छतवाला अण्डाकार शकलका एक हल है, जिसके बगलोमें ११ छोटी कोठरियाँ बनी हुई है।

खण्डाला—लोनवलीरेलवे स्टेशनसे २ मील खण्डालागांवका रेलवे स्टेशन है। खण्डाला एक बडा गाँव है। उसके पास एक अस्पताल एक अङ्गरेजी बँगला और एक तालाब है। गर्मीके दिनोमें बम्बेके बहुतेरे धनी लोग उस गाँवमे रहते हैं। डाक बंगलेसे सीधी लाइनमें आधा मील और एक नालेके घुमावकी राहसे १½ मील दूर एक जलप्रपात है, जो नीचे और ऊपर दो भागोमे बँटा हुआ है, जिनमेसे ऊपरवाला जलप्रपात ऊपरसे ३०० फीट नीचे गिरता है।

## अमरनाथ।

लोनवलीके स्टेशनसे ४२ मील ( पूनाके स्टेशनसे ८१ मील ) पश्चिमोत्तर और कल्याण जंक्शनसे ५ मील दक्षिण अमरनाथका रेलवे स्टेशन है। लोनवलीसे कर्जतके रेलवे स्टेशन तक १८ मीलके भीतर रेलगाड़ी चलनेके लिये १६ जगह पहाड़ फोड कर उसके भीतर रेलवे सड़क बनी है। सम्पूर्ण सुरंगी सड़ककी लम्बाई ३,५३५ गज है, जिसके बनानेमें लगभग ६० लाख रुपये खर्च पड़े थे। लाइन चढ़ाव, उतार तथा घुमावकी है। बोर घाटकी चढ़ाईकी जगहपर दोनो ओरसे गाडियोमें जोरावर एञ्जिन लगाया जाता है। कर्जतसे दक्षिण ९ मीलकी लाइन कम्पवलीको गई है, जिसपर वर्षाकालमे गाड़ी नहीं चलती है।

अमरनाथ नामक स्टेशनके पास बम्बई हातेके थाना जिलेमे अमरनाथ नामक छोटा गाँव है, जिसमें लगभग ३०० मनुष्य बसते हैं। गाँवसे ¾ मील पूर्व एक सुन्दर घाटीमे अमरनाथ शिवका विचित्र मन्दिर है। उसके एक दरवाजेके पास शिलालेख है, जिससे विदित होता है कि वह मन्दिर शाका ९८२ ( सन् १०६० ) ई० में बना। निज मन्दिरमे खण्डित तथा चिपटा शिवलिङ्ग है। उत्तर बगलके ताकमें एक पुरुषकी तीन शिरवाली प्रतिमा है, उसकी जंघापर एक स्त्री बैठी है। अनुमानसे जान पडता है कि शिव पार्वतीकी प्रतिमा होगी। मन्दिरके दक्षिण-पूर्व बगलपर कालीजीकी प्रतिमा है। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम २२ फीट लम्बा और इतनाही चौडा मण्डपम् अर्थात् जगमोहन है, जिसमें पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर द्वार बने हुए हैं। प्रत्येक द्वारके आगे एक ओसारा और प्रत्येक ओसारेमें ४ स्तम्भ लगे है, जिनमेंसे २ स्तम्भ दीवारसे मिले हुए है। मण्डपम्की छतमें उत्तम कारीगरीसे विविध भांतिके फूल, पत्ते, चिडियायें तथा सिंहके शिर बने हुए हैं। मन्दिरके द्वारपर विचित्र शिल्पकारीका काम है। मन्दिरके बाहर चारो तरफ और मण्डपम्के चारो स्तम्भोमें विचित्र कारीगरीका काम है। बम्बई हातेके किसी मन्दिरमें इससे बढ़कर काम नहीं देखपड़ता। दरवाजेका फाटक, जिससे अमरनाथके निज मन्दिरमें जाना होता है, अनेक हाथी और सिंहोंसे, जिनके बीचमे महादेवकी प्रतिमा है, भूषित है।

# इक्कीसवाँ अध्याय।

## (बम्बई हातेमें) कल्याण, नासिक, त्र्यंबक, थाना, और अलीबाग।

### कल्याण।

अमरनाथके रेलवे स्टेशनसे ५ मील उत्तर (पूना शहरसे ८६ मील पश्चिमोत्तर), नासिकसे ८३ मील और मनमार जंक्शनसे १२९ मील दक्षिण-पश्चिम तथा बम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ३३ मील पूर्वोत्तर कल्याणमें रेलवेका जंक्शन है। बम्बई हातेके उत्तरीय विभागके थाना जिलेमें (१९ अंश, १४ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १० कला पूर्व देशान्तरमे) सबडिवीजनका सदर स्थान कल्याण नामक तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कल्याणमें १२६०८ मनुष्य थे, अर्थात् ९७०२ हिन्दू, २४५३ मुसलमान, २७२ पारसी, ११५ क्रस्तान, ४६ जैन, ७ यहूदी और १३ अन्य।

कल्याणमें सबजजकी कचहरी, अस्पताल, स्कूल, ८ छोटे जलाशय, एक जलाशयके पास सदानन्दका मन्दिर और बहुतसे कूप है। म्युनिसिपल्टीने एक बाजार बनवाया है, जिसमें तरकारी आदि वस्तु बिकती है। कल्याणमें नमक, चावल, तम्बाकू इत्यादिकी बडी तिजारत होती है। सडके पक्की बनी है।

इतिहास—पहिली, दूसरी, पांचवीं तथा छठवी सदीके शिलालेखोंमें कल्याणका नाम मिलता है। दूसरी सदीके अन्तमे कल्याण प्रसिद्ध हुआ। छठवी सदीमे वह एक प्रतापी राजाका सदर स्थान और भारतवर्षके ५ प्रसिद्ध बाजारोमेसे एक बाजार था। १४ वीं सदीके आरम्भमें वह एक जिलेका सदर स्थान इस्लामाबाद नामसे प्रसिद्ध था। सन् १५३६ में पोर्चुगल वालोंने कल्याणको ले लिया, किन्तु सन् १५७० में उनको छोड़ देना पडा। उसके पश्चात् वह अहमदनगरके राज्यके अधीन हुआ। सन् १६३६ में बीजापुर वालोने उसको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १६४८ में शिवाजीने कल्याणको ले लिया, किन्तु सन् १६६० में मुसलमानोंने फिर उसपर अपना अधिकार कर लिया। सन् १६६२ में शिवाजीने फिर उसपर अपना अधिकार किया। उन्होंने सन् १६७४ में अङ्गरेजोको कल्याणमें एक कोठी नियत करनेकी आज्ञा दी। सन् १७८० में अङ्गरेजोने महाराष्ट्रोंसे कल्याण ले लिया, तबसे वह उनके अधिकारमें है। पहिले कल्याणकी चारोओर दीवार थी, जिसमें ११ बुर्ज ४ फाटक बने थे।

### नासिक।

कल्याण जंक्शनसे २६ मील पूर्वोत्तर अठगांवके रेलवे स्टेशनके पास बांध बनाकर एक बडी झील बनाई गई है, जिसको सन् १८९७ मे भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड लैसडौनने खोला था। झीलका बांध २ मील लम्बा और ११८ फीट ऊंचा है, जिसकी चौडाई नेवके पास १०३ फीट और शिरके समीप २४ फीट है। बांधसे टन्सा नदीका जल रुककर ८

वर्गमीलके विस्तारकी झील वन गई है, जो ३ करोड ३० लाख गेलन पानी जुमा सकती है। उस झीलसे वम्बई शहरमे पानी जाता है।

अठगांवके रेलवे स्टेशनसे १६ मील (कल्याण जंक्शनसे ४२ मील) पूर्वोत्तर कसाराके रेलवे स्टेशनसे तालघाटकी चढ़ाई आरम्भ होती है। उस जगहसे पूर्वोत्तर इगतपुरीके स्टेशनके पास तक ९½ मीलमें रेलवे लाइन १०५० फीट ऊपर गई है। एक खास एञ्जिन कसारा स्टेशन पर गाडियोंमें जोडा जाता है और इगतपुरीके पास हटा दिया जाता है। कसारा और इगतपुरीके वीचमें ११ जगह पहाडियोंमें छेद करके उनके भीतर रेलवे लाइन वैठाई गई है, जिसपर रेलगाडी चलती है।

इगतपुरीसे २८ मील ( कल्याण जंक्शनसे ८० मील ) पूर्वोत्तर और नासिकरोडसे ३ मील दक्षिण-पश्चिम देवलालीका रेलवे स्टेशन है। देवलालीसे ७ मीलकी सुन्दर सडक नासिक कसवेको गई है। देवलालीमे १००० सेनाके रहने लायक वारक अर्थात् सैनिक गृह वने हैं। यूरोपको जाती हुई अथवा वहाँसे आती हुई सेना वारकोंमे ठहरती हैं।

देवलालीके रेलवे स्टेशनसे ३ मील, कल्याण जंक्शनसे ८३ मील और वम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ११६ मील पूर्वोत्तर और मनमार जंक्शनसे ४६ मील दक्षिण-पश्चिम नासिकरोडका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनके पास धर्मशाला वनी हुई है। वम्बई हातेके मध्य विभागमे नासिकरोडके रेलवे स्टेशनसे ५ मील पश्चिमोत्तर गोदावरी नदीके दोनो किनारोपर समुद्रके जलसे १९०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान तथा एक प्रसिद्ध तीर्थ नासिक कसवा है। रेलवे स्टेशन और नासिक कसवेके वीचमे सन् १८९१ से ट्रामगाडी चलती है; प्रति आदमीका महसूल एक आना लगता है। सवारीके लिये वैलगाडी तथा तांगे वहुत मिलते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नासिक कसवेमें २४४२९ मनुष्य थे, अर्थात् १२५४० पुरुष और ११८८९ स्त्रियाँ। इनमे २०६९७ हिन्दू, ३४५२ मुसलमान, १७५ जैन, ७३ क्रस्तान, २८ पारसी और ४ यहूदी थे।

नासिक कसवेका वडा भाग गोदावरी नदीके दहिने, अर्थात् उसके दक्षिण-पूर्वके किनारेपर ३ छोटे टीलो पर फैलता हुआ लगभग १ मील चला गया है, जिसका क्षेत्रफल २ वर्गमील होगा। उसके दक्षिणके भागको पुराना कसवा और उत्तरके भागको नया कसवा कहते हैं। कसवेके वहुतेरे मकानोंके अगवासोंमे उत्तम नकाशीदार लकडीके काम है और जगह जगह गलियोंमे फाटक वने है। पेशवाके महलोमें कलक्टरकी कचहरी और अनेक आफिस हैं। नासिकमें एक अस्पताल, एक हाईस्कूल और ८ देशी भाषाके स्कूल है। उसमें कागज, कपडा, लप, वाकस, चेन, मूर्तियां आदि चीजें बनती है। पीतल और तावेके वर्त्तनकी दस्तकारीके लिये नासिक प्रसिद्ध है। भारतवर्षके किसी कसवेमें नासिकसे वढ़कर वर्त्तन नहीं बनते। वहाँ पाव भरका एक लोटा दस रुपये तक विकता है। कसवेकी सडको पर रात्रिमें लालटेनोंकी रोशनी होती है।

लोग कहते हैं कि नासिकमें लगभग १२०० वर ब्राह्मण हैं। वहांके वहुत ब्राह्मण विद्यावान् तथा शुद्धाचरण होते है। वहाँकी स्त्रियाँ पर्देमें नही रहतीं। ब्राह्मण और ब्राह्मणी एकही पंक्तिमें बैठकर भोजन करते हैं। उस देशके लोग नासिकको पश्चिमी भारतकी काशी

कहते है। नासिकतीर्थमें बहुत यात्री जाते है। १२ वर्ष पर जब सिंहराशिके बृहस्पति होतेहै तब नासिकमे बहुत बडा मेला होता है।

गोदावरीके बायें किनारेके नासिक कसबेको लोग पंचवटी कहते है। नासिक कसबेके लगभग सातवां भाग मनुष्य उसमे बसते है। उसमे बहुतेरे मन्दिर और मकान है, जिनमे खास करके ब्राह्मण लोग रहते है।

गोदावरी नदी-नासिकसे १८ मील पश्चिम गोदावरीके निकासका स्थान त्र्यंबक है। वहांसे ६ मील पर चक्रतीर्थमे गोदावरी नदी प्रकट हुई है। चक्रतीर्थसे नासिक, पैठन, गंगाखेड़, नादेड, राजमहेंद्री और धवलेश्वरम् होती हुई करीब ९०० मील पूर्व-दक्षिण बहनेके उपरान्त राजमहेंद्रीके पास समुद्रमें मिल गई है। वह निजाम राज्यमे ओरसे छोर तक बहती है।

नासिकके पास नदीकी धारा सूखे मौसिममें बहुत छोटी रहती है। करीब ४५० गजकी लम्बाईमे गोदावरीके किनारोपर पत्थरकी सीढियां बनी हुई हैं और नदीके मध्यमें १२ पक्के कुंड तथा पोखरे बने है, जिनमेंसे एकका नाम रामकुण्ड और रामगया है। गोदावरीका जल क्रमसे एक कुण्डसे दूसरेमें गिरकर बाहर निकलता है। नदी पार जानेमें नावकी आवश्यकता नहीं होती। उस प्रदेशके हिन्दू लोग कपड़ोको अपने हाथसे धोते हैं। मैंने एकही समयमे पचासों मनुष्योंको गोदावरीमें वस्त्र धोते हुए देखा जिनमें स्त्री बहुत थी।

लोग कहते है कि वनवासके समय श्रीरामचन्द्रने जिस स्थानपर गोदावरीमें स्नान कर दशरथजीको पिंड दिया, उसी स्थानका नाम रामगया वा रामकुण्ड हुआ। वहाँ पिंडदानका बडा माहात्म्य है। बायें किनारेसे एक छोटे झरनेका जल आकर पत्थरके गोमुखीसे रामकुण्डमे गिरता है, उस स्थानको अरुणसंगम कहते हैं। रामकुण्डके सामने एक धर्मशाला है, जिसमे पानी कम होने पर साधू लोग रहते है। रामकुण्डके एक किनारेपर मुर्देकी राखी लोग डालते है। एक दूसरे झरनेका जल रामकुण्डके पूर्व एक कुण्डमे गिरता है, उस स्थानको वरुणासंगम लोग कहते है। गोदावरी नदीके किनारेपर कई छत्तरी बनी हैं। कपूरथलेके महाराज इंगलैंड जाते समय अदनमें मरगये, उनकी छत्तरी अर्थात् समाधिमन्दिर वहां बना हुआ है। यात्री लोग प्रथम नारियल फलसे गोदावरीकी भेंट करके तब स्नान करते है। गोदावरीकी उत्पत्ति आदिका वृत्तान्त त्र्यम्बककी प्राचीन कथामें लिखा है।

देवमन्दिर—गोदावरीके किनारोपर तथा उसके भीतर बहुतसे मन्दिर और स्थान है। सुन्दरनारायणका मन्दिर रामके मन्दिरसे छोटा है, लेकिन उसमे कारीगरीका काम उससे अधिक है। उस मन्दिरको सन् १७२५ में होलकरके एक सरदारने बनवाया। उसके नीचे एक बालाजीका मन्दिर और एक दूसरा मन्दिर है। नदीके बायें किनारेपर रामकुण्डके पास ५० सीढ़ियोंके ऊपर ६०० वर्षका पुराना कपालेश्वर शिवका मन्दिर है।

नदीके बायें किनारेसे ½ मील दूर ९३ फीट लम्बा, ६५ फीट चौडा और ६० फीट ऊंचा रामचन्द्रजीका उत्तम मन्दिर है। उसके बाहरका घेरा २६० फीट लम्बा और १२० फीट चौडा है, जिसके भीतर ९६ मेहराब बने हैं। वर्तमान मन्दिर करीब १०० वर्षका बना हुआ है। मन्दिरके पासका मण्डप बहुत सुन्दर है। वहांके लोग कहते हैं कि इस मन्दिरके बननेमे ७ लाख रुपये खर्च पड़े थे।

पञ्चवटी—गोदावरीके वायें किनारेसे ½ मील दूर कई आँठियोंका एक वटवृक्ष है, जिसको लोग पञ्चवटी कहते है।

वटवृक्षके पास सीतागुफा नामक एक भुवेवरा है, जिसमें सूत, वैठकर कर प्रवेश करना होता है। वहाँका पुजारी प्रति यात्रीसे गुफाके द्वारपर एक पाई लेता है। गुफाके भीतर एक दूसरी गुफा है। प्रत्येक गुफा करीव ५ फीट लम्वी चौड़ी और ४ फीट ऊँची है। पहली गुफामे ९ सीढियोंके नीचे राम, लक्ष्मण, जानकीकी छोटी मूर्त्तियाँ और ७ सीढ़ियोंके नीचे दूसरी गुफामे पञ्चरत्नेश्वर महादेव है।

तपोवन–नासिक कसवेसे २ मील दूर गोदावरीनदीके वायें गौतमऋषिका तपोवन है। पञ्चवटीसे आगे जानेपर लक्ष्मणजीका स्थान मिलता है, जिससे आगे हनूमानजीकी मूर्ति है। उससे आगे पहाड़से गिरती हुई गोदावरी और कपिलानदीका संगम है। वहाँ पञ्चतीर्थ नामके ५ कुण्ड हैं, ( १ ) ब्रह्मयोनि, ( २ ) विष्णुयोनि, ( ३ ) रुद्रयोनि, ( ४ ) मुक्तियोनि और ( ५ ) अग्नियोनि। पहलेके तीनों कुण्ड एक साथ मिले हैं, अन्दर अन्दर एकसे दूसरेमें और दूसरेसे तीसरेमें जाना होता है। अग्नियोनि विशेष गहिरा है।

पूर्वकथित पञ्चतीर्थमें सौभाग्यतीर्थ, कपिला संगम और सूर्पणखातीर्थ मिलकर अष्टतीर्थ वनते है। गोदावरी और कपिलाके संगमके पार सप्तऋषियोंका स्थान है। एक जगह गोदावरीके किनारेपर सूर्पणखाकी पाषाण प्रतिमा है।

लोग कहते हैं कि पञ्चवटीसे कई एक कोस दक्षिण जटायुकी मृत्युका स्थान और कई एक कोस पूर्व अकोल्हा नामक गांवमें अगस्त्यमुनिके आश्रमका स्थान, अगस्त्यकुण्ड, सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रमका स्थान और अमृतवाहिनीनदी तीर्थ है। अकोल्हासे कई एक कोस पश्चिम साइखेड़ा नामक गाँवमें मारीचकी मृत्युका स्थान है।

पाण्डव गुफा–इसको अङ्गरेज लोग लेनाकेव्ज अर्थात् लेनाकी गुफा कहते हैं। नासिक कसवेसे ४¾ मील पश्चिम-दाक्षिण एक पहाड़ीके पादमूलके पास तक पक्की सडक है। पहाड़ीके नीचेसे गुफाके पास तक पगडण्डी मार्ग है। पासकी भूमिसे लगभग ४५० फीट ऊपर उस पहाड़ीके उत्तर वगलपर लगभग ५०० गजकी लम्वाईमे छोटी वड़ी २१ गुफा हैं, जिनको चौथी सदीमें वौद्ध लोगोंने वनवाया था, जो अव पाण्डव गुफा करके प्रसिद्ध है। उनमेंकी अनेक वौद्ध मूर्त्तियोंको लोग हिन्दुओंके देवता कहते है। गुफाओंमे जोड़ किसी जगह नहीं है, क्योंकि पहाड़ीके भीतरसे पत्थर निकालनेसे वे सम्पूर्ण गुफा मन्दिर तैयार हुए है। पगडण्डी मार्गके शिरके पास ३७ फीट लम्बी, २९ फीट चौडी और १० फीट ऊँची चिपटी छत वाली एक गुफा है। उसके मध्यके कमरेके चारों ओर १६ कोठरी और मध्यमे भैरवकी मूर्त्ति है जिसके दोनों तरफ एक एक स्त्रीकी प्रतिमा वनी हुई हैं।

दूसरी गुफा अर्थात् कमरा ५७ फीट लम्वा और इतनाही चौड़ा है। उसके तीन वगलोमे १८ कोठरियाँ और आगे ६ खम्भे लगे हुए सुन्दर दालान है। पश्चिम ओर एक गुफामें विश्वकर्मा आदिकी १२ मूर्त्तियाँ हैं। विश्वकर्माके दहिने तथा वायें एक एक स्त्री और सामने उसके भाई और पिताकी प्रतिमा है। पश्चिम ३½ फीट ऊँची गौतमकी मूर्त्ति है। वहाँ जलसे पूर्ण २० फीट लम्वा एक सीताकुण्ड है। उसके वाद एक दूसरा कुण्ड मिलता है। उससे आगे सीढ़ियों द्वारा एक कमरेमें जाना होता है, जिसके चारो वगलोमे ७ छोटी कोठरियाँ और उत्तर अखीरमे पार्वतीकी घिसी हुई मूर्त्ति है।

उससे पूर्व ४६ फीट लम्बी और २७ फीट चौडी एक बड़ी गुफा है; जिसके चारों बगलोंमे २२ कोठरियाँ बनी हुई है। उस गुफामे भीम, अर्जुन, युधिष्ठिर; नकुल, सहदेव, द्रौपदी और कृष्णकी पुरानी मूर्त्ति है।

कभी कभी एक आदमी वहाँ रहता है। गुफा निर्जन स्थानमें है। बहुत लोग देखनेके लिये वहाँ जाते है।

नासिक शहरसे करीब २ मील पूर्व रामसेजकी पहाडीमें गुफाओका एक झुण्ड है, परन्तु वह प्रसिद्ध नहीं है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत— ( वनपर्व, ८३ वाँ अध्याय ) पंचवटी तीर्थमें जानेसे बड़ा फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहाँ साक्षात् वृषवाहन शिव निवास करते हैं, उनकी पूजा करनेसे मनुष्य सिद्ध होजाता है।

( ८४ वा अध्याय ) गोदावरी नदीमे स्नान करनेसे गोमेध यज्ञका फल होता है और वासुकीका उत्तम लोक मिलता है। वहाँ वेणनदीके सङ्गममें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है।

वाल्मीकिरामायण–( अरण्य काण्ड, १३ वॉ सर्ग ) रामचन्द्रजीने अगस्त्य मुनिके आश्रम पर जाकर उनसे अपने रहनेका स्थान पूछा। मुनि बोले कि हे राघव ! यहॉसे एक योजन पर गोदावरी नदीके समीप पंचवटी नामसे विख्यात एकांत पवित्र तथा रमणीय देश है, तुम वहाँ जाकर आश्रम बनाकर रहो। देखो वह महुओका महावन देख पड़ता है, उत्तरकी ओरसे जानेपर एक वटका वृक्ष मिलेगा, उसीके पास पर्वतके समीप पंचवटी नामक वन है।

राम और लक्ष्मण अगस्त्य मुनिसे विदा हो ऋषिके कहे हुए मार्गसे पंचवटीको पधारे। ( १४ वॉ सर्ग, रास्तेमें जटायु गृद्धसे भेंट हुई। ( १५ ) रामचन्द्रजी पंचवटी पहुँच कर लक्ष्मणसे बोले कि देखो यह गोदावरी नदी, जो अति दूर भी नहीं है, देख पड़ती है। यहॉके पर्वत अनेक कन्दरों तथा स्थान स्थानमें सुवर्ण, रजत और ताम्र धातुओंसे सुशोभित है, जान पडता है कि इनमें खिड़कियॉ बनी हैं। वे शृङ्गार किये हुए हाथियोके समान मनोरम देख पडते है। उस समय लक्ष्मणजीने मिट्टीके अनेक स्थान और बॉसके खम्भाओं, शमी वृक्षकी शाखाओंकी टट्टियोकी दीवारो और पत्तोंके छप्परसे मनोहर पर्णकुटी बनाई। उसमे वे लोग निवास करने लगे। ( १६ वॉ सर्ग ) शरदऋतु बीत कर हेमन्तऋतु प्राप्त हुई।

( १७ वाँ सर्ग ) एक समय रावणकी बहिन शूर्पणखा नामक राक्षसी वहॉ आई। वह रामचन्द्रकी सुन्दरता देख कामसे मोहित होगई। उसने रामचन्द्रसे कहा कि मैं तुम्हारे भाई सहित सीताको खा जाऊंगी, तुम मेरे पति होकर मेरे साथ दण्डक वनमें विहार करो। ( १८ वाँ सर्ग ) रामचन्द्र बोले कि मैं तो व्याहा हूँ, मेरा छोटा भाई लक्ष्मण यदि भार्य्याकी आकाक्षा रखता हो, तो तुम उसीको अपना पति बनाओ। तब वह राक्षसी शीघ्र लक्ष्मणके पास जाकर उनसे बोली कि तुम्हारे रूपके योग्य मै भार्य्या हूँ, तुम मेरे साथ दण्डकारण्यमें विहार करो। लक्ष्मणने कहा कि मैं तो रामचन्द्रका दास पराधीन और असमर्थ हूँ, तुम उन्हीकी छोटी पत्नी बनो। तब शूर्पणखा रामचन्द्रके पास जाकर बोली कि हे राम ! तुम अपनी पत्नीको अङ्गीकार कर मुझे नहीं मानते हो, मैं अभी इस

मानुषोंका भक्षण कर जाऊंगी । ऐसा कह वह सीतापर झपटी । रामचन्द्र उसको रोककर लक्ष्मणसे बोले कि इस राक्षसीको कुरूप करो । तब लक्ष्मणने क्रोध कर खड्ग निकाल शूर्पणखाके नाक और कान काट लिये ।

शूर्पणखा महाभारी नाद करती हुई महावनमें घुस गई । उसके अनन्तर उसने जनस्थानमें खर नामक अपने भाईके समीप जाकर उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया । ( १९ वाँ सर्ग ) खरने रामचन्द्रको मारनेके लिये शूर्पणखाके साथ १४ महाबली राक्षसोंको भेजा । ( २० वाँ सर्ग ) जिनको रामचन्द्रने मार डाला । शूर्पणखाने खरके पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया । ( २२ वाँ सर्ग ) खरने चुने हुए १४००० राक्षसोंकी सेना लेकर प्रस्थान किया । ( २३ वाँ सर्ग ) राक्षस वीरोंकी सेना शीघ्र आकर राम, लक्ष्मणके पास उपस्थित हुई । ( २४ वाँ सर्ग ) रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि तुम वैदेहीको लेकर दुर्गम पर्वतकी गुहामें जा बैठो । तब लक्ष्मण सीताको लेकर धनुष बाण धारण कर, बड़ी दुर्गम गुहामें चले गये । ( २५ वाँ सर्ग ) रामचन्द्र और राक्षसोंका युद्ध होने लगा । ( २६ वाँ सर्ग ) अकेले रामचन्द्रने क्षणमात्रमें १४ सहस्र राक्षसोंके साथ दूषणको मार डाला । उस समय संग्राम भूमिमें खर और त्रिशिरा बच गये थे । ( २७ वाँ सर्ग ) रामचन्द्रने तीन बाणोंसे त्रिशिरा सेनापतिके तीनों मस्तक काट गिराये । ( ३० वाँ सर्ग ) खर राक्षसभी बडा युद्ध करनेके उपरान्त रामचन्द्रके हाथसे मारा गया ।

( ३१ वाँ सर्ग ) रावणने अकम्पन राक्षसके मुखसे जनस्थानके रहनेवाले खर आदि राक्षसोंके मारे जानेका वृत्तान्त सुना । उसी समय वह खर युक्त रथ पर चढ़ मारीचके आश्रममें जा पहुँचा । रावण मारीचसे बोला कि रामने मेरा समाज नष्ट कर डाला, मैं उसकी स्त्रीको हर लाऊंगा; तुम मेरी सहायता करो । मारीचने रावणको जब बहुत समझाया, तब वह जानकी हरणके कामसे निवृत्त हो लंकामें लौट गया ।

( ३२ वाँ सर्ग ) शूर्पणखा खर आदि राक्षसोंके वधसे बड़ी व्याकुल हो लंकामें गई । ( ३५ वाँ सर्ग ) उसने रावणसे सब वृत्तान्त कह कर उसको धिक्कार दिया । तब रावण रथारूढ़ हो समुद्रके पार एकान्त पवित्र वनमें तपस्वी रूपी मारीचके पास फिर पहुँचा । ( ३६ वाँ सर्ग ) रावण बोला कि हे मारीच ! जिसने मेरी बहिनकी नाक और कान काटकर उसको विरूप कर दिया है; मैं उसकी भार्य्या सीताको हर लाऊंगा । इस काममें तुम मेरी सहायता करो । ( ४० वाँ सर्ग ) मारीचने फिर बहुत समझाया; तब रावण बोला कि यदि तुम मेरा यह कार्य्य नहीं करोगे, तो मैं अभी तुम्हें मार डालूंगा ।

( ४२ वाँ सर्ग ) जब किसी तरहसे रावणने मारीचका वचन नहीं माना तब वह रावणके साथ रथमें बैठ रामचन्द्रके आश्रममें पहुँचा और झट मृग बनकर रामचन्द्रके द्वारपर चरने लगा । उस कालमें वह अति अद्भुत रूप मृग बना था । ( ४३ वाँ सर्ग ) सीता मृगको देख प्रसन्न हो रामचन्द्रको देख लक्ष्मणको पुकारने लगी । तब दोनों भाई उधर देखने लगे । मृगको देख लक्ष्मण शंका युक्त हो बोले कि मैं तो इसको मारीच राक्षस जानता हूँ, यह मायासे चमकीला रूप बना है । सीताने लक्ष्मणकी बातको सुनी, अनसुनी कर रामचंद्रसे कहा कि हे आर्य्य पुत्र ! यह परम मनोहर मृग मेरे मनको हरे लेता है, तुम इसको हमारी क्रीडाके लिये ले आओ, यदि यह जीता न मिलेगा, तब भी इसकी खाल बहुत सुन्दर होगी ।

(४४ वाँ सर्ग) रामचन्द्र भाईको सावधान कर धनुष बाण और खड्ग ले मृगके पीछे दौड़े। वह मृग बारबार छिप जाता था और दूर जाकर प्रकट होता था। इस प्रकारसे वह रामको आश्रमसे दूर लेगया। तब रामचन्द्रने मृगकी छातीमे बाणसे मारा, जिससे वह राक्षस उछलकर भूमिपर गिर पडा। वह मरनेके समय रामचन्द्रके तुल्य शब्द चिल्लाकर बोला कि हा सीते! हा लक्ष्मण! मरनेके समय वह मृगरूपको छोड़कर विशालरूप राक्षस होगया। (४५ वाँ सर्ग) सीता अपने पतिके तुल्य आर्त नादको सुन लक्ष्मणसे बोली कि तुम शीघ्र दौड़ो, रामचन्द्रको बचाओ। जब लक्ष्मण रामचन्द्रके शासनका स्मरण कर सीताके कहने परभी नही गये, तब सीता क्रुद्ध होकर बोली कि तुम अपने भाईके मित्र रूप शत्रु हो इत्यादि। लक्ष्मण सीताके दुर्वचनसे क्रुद्ध हो शीघ्रतासे रामके पास चले।

रावण एकान्त अवसर पाकर संन्यासीका वेष धर सीताके पास पहुँचा। वैदेहीने रावणका; जो ब्राह्मण अतिथिके वेषसे आया था, अतिथि सत्कार किया (४७ वाँ सर्ग) और उससे अनेक बातें की। उसके पश्चात् रावण बोला कि हे सीते! मैं राक्षसोंका राजा रावण हूँ; तुम मेरी पटरानी बनो। (४९ वाँ सर्ग) ऐसा कह रावणने संन्यासी वेप छोड़ अपने रूपको धारण कर सीताको पकड रथमे बैठाकर वहाँसे चल दिया। सीता किसी वन वृक्ष पर बैठे हुए जटायुको देखकर बोली कि हे जटायु! देखो यह पापी रावण अनाथके समान मुझको हर लेजाता है। (५१ वाँ सर्ग) ऐसा सुन जटायु रावणसे युद्ध करने लगा। प्रथम तो उसने रावणके रथको चूर कर दिया, परन्तु अन्तमे रावणने उसके दोनों पक्षो, पैरो और अगल बगलके देहके भागोको खड्गसे काट डाला। तब जटायु गिर पड़ा, उसकी थोडी सांस रह गई। (५२ वाँ सर्ग) रावण सीताको लेकर आकाश मार्गसे चला और (५४ वाँ सर्ग) लङ्कामे जा पहुँचा।

(६० वाँ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मणके साथ अपने आश्रममें आकर अपनी पर्णकुटीको शून्य पाया। (६७ वाँ सर्ग) लक्ष्मणने कहा कि हे प्रभो! आप इसी जन स्थानमें सीताको ढूँढिये, क्योंकि यहाँ बहुत राक्षस निवास करते हैं और अनेक वृक्ष, लता, दुर्गमपर्वत, गड़हे और कन्दरायें हैं। यहाँकी भयकर कन्दरायें नाना मृगगणोंसे भरी है। उसके अनन्तर रामचन्द्रने उस वनमे ढूँढते २ रुधिरसे भरे हुए जटायुको देखा।

(६८ वाँ सर्ग) जटायु बोला कि हे राघव! राक्षसराज रावण माया करके सीताको हर लेगया। वह मेरे दोनो पक्षोंको काट कर सीताको दक्षिण दिशामें लेगया है। ऐसा कहकर गृध्रराज जटायु मरगया। रामचन्द्रने चितामें जटायुका अग्निसंस्कार करके उसके नामसे पिण्डदान दिया। उसके पश्चात्दोनो भाइयोंने गोदावरी नदीमे स्नान करके गृध्रके नामसे तर्पण किया। उसके अनन्तर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण सीताको ढूँढनेके लिये उससे आगे चले।

(अध्यात्मरामायणमें आरण्यकाण्डके तीसरे अध्यायसे ८ वें अध्याय तक यह कथा है, किन्तु उसमें लिखा है कि जब मारीच नामक राक्षस मायाका विचित्र मृग बनकर सीताके सन्मुख दौड़ने लगा, तब रामचन्द्रने जानकीजीसे कहा कि हे सीते! तुमको हर लेजानेके लिये रावण यहां आवेगा, इस लिये तुम अपनी आकृतिकी छाया कुटीमें छोडकर एक वर्ष पर्यन्त अग्निमें निवास करो। सीताजी अपनी पर्णकुटीमें अपनी मायाका स्वरूप छोडकर अग्निमें प्रवेश करगई। मायाकी सीताको रावण हर लेगया)

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३६ वॉ अध्याय) गोदावरी नदी सब पापोंका नाश करने वाली है। उसमें स्नान तथा पितर और देवताओंके तर्पण करनेसे सम्पूर्ण प्रायश्चित्त छूट जाता है और सहस्र गोदानका फल मिलता है।

नासिक जिला—इसके उत्तर खानदेश जिला, पूर्व हैदराबादका राज्य; दक्षिण अहमदनगर जिला और पश्चिम थाना जिला है। सदर स्थान नासिक कसबा है। इस जिलेके पश्चिम भागके चन्दगांवके अतिरिक्त जिलेके सम्पूर्ण गांव ऊँची भूमिपर हैं। पश्चिमी भाग, जिसमें बहुत छोटी पहाडियाँ तथा नाले हैं, डांग और पूर्वका भाग, जिसमें अच्छी तरहसे खेती होती है, देश कहलाता है। इस जिलेमें बहुतेरे पहाडी किले और लगभग १६०० वर्गमील जङ्गल है, जिसमें बाघ, तेंदुए, हरिन, भालू इत्यादि वनैले जन्तु रहते हैं।

सन् १८८१की मनुष्य-गणनाके समय नासिक जिलेके ५९४० वर्गमील क्षेत्रफलमें ७८१२०६ मनुष्य थे, अर्थात् ६८३५७९ हिंदू, ५१६८७ एनिमिष्टिक (जिनमें प्राय. सब भील हैं), ३५२९४ मुसलमान, ७६०९ जैन, २६४४ कृस्तान, २८८ पारसी, १०१ यहूदी, २ सिक्ख और २ बौद्ध। हिंदुओंमे २७६३५९ कुन्बी, ७८५५८ कोली, ७०३५१ धेद, २९३९२ बनजारा, २९०५३ ब्राह्मण, २५०९४ माली, १४८८९ धांगर, ११९५८ तेली, १०००३ चमार और बाकी में राजपूत, विराध, भंडारी, जंगम, कोस्टी, लिंगायत, मांग, सुतार इत्यादि जातियोंके लोग थे। नासिक जिलेमें महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नासिक जिलेके कसबे नासिकमें २४४२९, मालेगांवमें १९२६१, योलामें १८८६१ और सिन्नेरमें १००१२ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त इगतपुरी और त्र्यंबक छोटे कसबे हैं।

सह्याद्रि पर्वतके बगलके नीचेके पश्चिमकी बस्तियोंके कोली, भील, कथोड़ी, वारली, ठाकुर इत्यादि जंगली जातियोके निवासी प्राय. सर्वदा एक स्थानपर नहीं रहते। जब उनके खेतोंके अन्न खर्च होजाते हैं, तब वे लोग खास करके गर्मीके दिनोंमें वनोंमें जाकर अपना निर्वाह करते हैं। वहां वे लोग बनोंकी ककडी काट २ बेंचते है और फल, मूल तथा जङ्गली जानवर और मछली खा करके रहते हैं।

इतिहास—जिस स्थान पर लंकाके राजा रावणकी बहिन शूर्पणखाकी नासिका अर्थात् नाक काटी गई, उस स्थानका नाम नासिक होगया। सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग २०० वर्ष पहिलेसे २०० वर्ष पीछे तक नासिक जिला अन्ध्रभृत्य वंशके राजाओंके, जो बौद्ध मतके थे, अधिकारमें था। उसके पीछे वह जिला समय समय पर चालुक्य, राठौर, चण्डोर और देवगिरिके यादव वंशवाले हिन्दू राजाओके अधीन था। सन् १२९५ से सन् १७६० तक वह मुसलमानोके अधिकारमें था, अर्थात् क्रमसे देवगिरि सेनापति, गुलबर्गाके बहमनी खानदानके बादशाहके अहमदनगरके निजामशाही खानदानवाले और औरङ्गाबादके मुगल बादशाहके अफसर उस पर हुकूमत करते थे। मुसलमानोने नासिक कसबेको अपने राज्यके एक विभागका सदर स्थान बनाया था। सन् १७६० से सन् १८१७ तक नासिक जिला महाराष्ट्रोंके अधीन था। पेशवाने नासिक कसबेको अपने राज्यकी एक राजधानी बनाई थी। उस समय कसबेकी उन्नति हुई थी। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवाके परास्त होनेपर वह जिला अङ्गरेजी राज्यमे मिल गया। अङ्गरेजी राज्यमे होनेपर कस-

वेकी घटती होने लगी; किन्तु उसके पीछे रेलवे बन जानेसे तथा जिलेका सदर स्थान बन-नेसे कसवेकी अब बड़ी उन्नति हुई।

## त्र्यम्बक।

नासिक कसबेसे १८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण ( १९ अंश, ५४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३३ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमे ) नासिक जिलेमें त्र्यम्बक एक म्युनिसिपल कसबा तथा पवित्र तीर्थ स्थान है। नासिकसे त्र्यम्बक तक पक्की सडक बनी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय त्र्यम्बक कसबेमें ३८३९ मनुष्य थे; अर्थात् ३६८४ हिंदू, १३० मुसलमान, १६ जैन और ९ कृस्तान।

त्र्यम्बक जाने आनेके लिये मैने नासिकमे ४ रुपये पर एक तांगा किराया किया था। मार्गमें पत्थरके कई एक कूप, सडककी दहिनी ओर निर्वादीके समीप अहिल्याबाईका बनवाया हुआ पत्थरका एक सुन्दर तालाब और दो छोटे मन्दिर और वाड़ीके पास लगभग ९०० फीट ऊँची २ गावदुमी पहाडियाँ हैं। सडकके दोनो तरफ जगह जगह स्वाभाविक सुन्दर शकलकी कई पहाडियाँ देखनेमें आती हैं। वाल्मीकिरामायणके आरण्य काण्डमें लिखा है कि रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो यहाँके पर्वत शृङ्गार किये हुए हाथियोके समान मनोरम देख पडते है। त्र्यम्बक कसबेके आस पास द्वितीयाके चन्द्रमाकी शकलमें १२०० फीटसे १५०० फीट तक ऊँची पहाडियोंकी श्रेणी है। एक पहाड़ी पर पुराना किला है।

त्र्यम्बक कसबेमें अनेक जलाशय, देवमन्दिर तथा बड़े मकान है। वहाँ बहुतसे पण्डोके मकान बने हुए है और खाने पीनेकी सब वस्तु सर्वदा मिलती हैं। उसके पासकी पहाडीसे सुप्रसिद्ध गोदावरी नदी निकली है। वहाँ शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेसे त्र्यंबक शिवका सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। नासिक जानेवाले प्रायः सब यात्री त्र्यंबक जाते हैं। जब १२ वर्ष पर सिंह राशिके बृहस्पति और सूर्य होते है, तब त्र्यंबक तथा नासिकमें कुम्भ-योगका बडा मेला होता है, जो संवत १९४१ ( सन् १८८४ ईस्वी ) के सिंहमासमे हुआ था और संवत १९५३ ( सन् १८९६ ईस्वी ) के सिंहमासमें होगा। ( कुम्भयोगकी कथा भारतभ्रमणके पहिले खण्डमें प्रयागके वृत्तान्तमें देखियेगा )। उस मेलेके समय भारतवर्षके सब प्रान्तोंसे सब सम्प्रदाय वाले लाखों यात्री त्र्यंबकमें आकर स्नान करते हैं। त्र्यंबकतीर्थकी परिक्रमा करनेके समय पहाडियोंकी चढाई उतराई मिलती है।

कुशावर्त तालाब-त्र्यंबक बस्तीके पास कुशावर्त कुण्ड नामक चौकोना तालाब है। उसके चारो बगलोंपर पत्थरकी सीढियाँ, तीन बगलोंमें २५ फीट ऊंचा महराबदार दालान, अनेक देवालय तथा धर्मशालाये, प्रत्येक कोनेके पास एक मन्दिर, पूर्व ओर पत्थरका फर्श और पूर्वोत्तर कनखलतीर्थ नामक पत्थरका छोटा तालाब है। वहाँके स्नानका मुख्य स्थान कुशावर्त तालाब है। गोदावरी नदीका जल पर्वतके शिखरसे उसके भीतर आता है। और भूगर्भमें बहता हुआ उस स्थानसे ६ मील दूर चक्रतीर्थमे जाकर प्रगट होता है। यात्रीगण कुशावर्तमें नारियल भेट देकर स्नान करते हैं। उसमे स्नानके समय धोती कचारना निषेध है।

कुशावर्तसे दूर एक पहाडीके पास गंगासागर नामक बड़ा तालाव है। उसके किनारे पर निवृत्ति देवीका मंदिर बना हुआ है।

त्र्यम्बक शिवका मन्दिर—कुशावर्तसे पूर्व २२५ फीट लम्बे घेरेके भीतर लगभग ८० फीट ऊँचा शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे त्र्यम्बक शिवका शिखर दार मन्दिर है। मंदिर अच्छे डौलका पहलदार है। उसके आगेका जगमोहन अर्थात् मंडप ४० फीट ऊंचा है, जिसके फर्शमें मार्बुलका एक कछुआ बना हुआ है। जगमोहनके आगे एक छोटे मंदिरमें नंदी बैल है। घेरेके भीतर सर्वत्र पत्थरका फर्श और मन्दिरके पश्चिम-दक्षिण अमृतकुण्ड नामक तालाब है। त्र्यंबक शिवके वर्तमान मंदिरको पहिले बाजीराव पेशवाने, जिसका राज्य सन् १७२१ से सन् १७४० तक था, बनवाया। उसके बनवानेमें ९ लाख रुपये खर्च पड़े थे। सर्व साधारण यात्री त्र्यम्बक शिवके निज मंदिरके भीतर नहीं जाने पाते है, जगमोहनमें खड़े होकर दर्शन करते है; पूजा वहांके पुजारी द्वारा चढ़ाई जाती है; किंतु ऐसा नियम मेलेके दिनोमे नहीं रहता। लोग कहते हैं कि त्र्यंबक शिवके मंदिरके खर्चके लिये सरकारसे मासिक १००० रुपये मिलते हैं। प्रति सोमवारको शिवकी प्रतिनिधि मूर्तिकी पालकी धूमधामसे निकलती है।

ब्रह्मगिरि—त्र्यम्बक गांवके तीन ओर पहाडियां है। जिनमेंसे कुशावर्तसे $\frac{1}{2}$ मील दूर गोदावारी नदीका मूल स्थान ब्रह्मगिरि नामक पहाड़ी है। वह वहांकी सब पहाडियोंसे ऊँची है। पहाड़ीके नीचेसे गोमुखी तक बम्बईके करमजी नामक भाटियाने सीढियां बनवा दी हैं। लगभग ३५७ सीढ़ियोंके ऊपर रामकुण्ड और लक्ष्मणकुण्ड और ६९० सीढ़ियोंके ऊपर गोदावरीके निकासका स्थान है। वहां एक मंडपमें डेढ़ हाथ लम्बा, १ हाथ चौड़ा और १ हाथ गहिरा पत्थरका कुण्ड है, जिसमें एक गोमुखीसे गोदावारीकी धारा गिरती है। उस स्थानको वहांके लोग गंगाद्वार कहते है। कितने लोग उस जलको कांवरमें भर कर दूर दूर तक ले जाते हैं। वहां गंगाजीकी मूर्ति है। यात्री लोग उस कुण्डमें पैसे तथा रेजकी डालते है। उसी कुण्डका जल नीचे होकर रामकुण्डमें, रामकुण्डसे लक्ष्मणकुण्डमें और लक्ष्मणकुण्डसे पत्थरकी नाली द्वारा, जो लगभग ९०० फीट लम्बी और १५ फीट चौड़ी है, त्र्यम्बक गांवके पास आया है। वह धारा कुशावर्तमें गुप्त होकर चक्रतीर्थके कूपमे प्रकट होती है। उस बड़े कूपसे सर्वदा जल निकलता है और नासिककी ओर जाता है।

ब्रह्मगिरिके पास जटाफटका और नील पर्वत नामक पहाडी है। जटाफटकासे झरनेका पानी गिरता है, नीलपर्वत पर धर्मशाला बनी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—( सृष्टि खंड, ११ वां अध्याय ) त्र्यंबक तीर्थमे त्रिलोचन महादेव सदा निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—( ब्राह्मी संहिता, उत्तरार्द्ध, ३४ वां अध्याय ) त्र्यंबक तीर्थमें रुद्रकी पूजा करनेसे ज्योतिष्टोम यज्ञका फल मिलता है।

स्कंदपुराण—( सेतुबंध खंड, २० वां अध्याय ) सिंहके बृहस्पति होने पर गोदावरी नदीमे स्नान करनेसे महत् पुण्य होता है।

जैमिनिपुराण—( ११ वां अध्याय ) सिंह राशि पर सूर्यके होने पर गोदावरी नदीमे स्नान करनेसे अन्य तीर्थोंमें स्नान करनेकी आवश्यता नहीं रहती।

सौरपुराण–( ६९ वां अध्याय ) गोदावरी नदीके निकास स्थान पर त्र्यम्बक नामक शिवलिंग है। उसके निकट ब्रह्मगिरि पर स्नान, जप, दान तथा ब्रह्मयज्ञ करनेसे सबका फल अक्षय होता है। जो मनुष्य वहाँ स्नान और शिवजीका दर्शन करता है, वह स्कंद और नंदीके समान शिवजीके समीप खेलता है।

वायुपुराण–( ४३ वां अध्याय ) सिंह राशिके वृहस्पति होने पर सपूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्रमें निवास करते हैं। सिंहस्थ वृहस्पतिमे गौतम क्षेत्रके अतिरिक्त अन्य तीर्थमे जाना निषेध है, किन्तु उससमय भी गयामे पिंडदान करना निषेध नही है।

वाराह पुराण–( ७० वां अध्याय ) गौतम ऋषिने दंडक वनमें घोर तप करके ब्रह्माजी-से ऐसा वर मांग लिया कि हमारे यहाँ अन्न आदि सब पदार्थ सर्वदा परिपूर्ण रहे। उसके पश्चात् वह भजनमें तत्पर रह कर अभ्यागतोको भोजन देने लगे। एक समय जब १२ वर्षका अवर्षण हुआ, तब वनके ऋषिगण गौतमके आश्रम पर जाकर इच्छा भोजन करते हुए दारुण समयको विताने लगे। जब वृष्टि होने पर पृथ्वी पर अन्न तथा शाक उत्पन्न हुए, तब ऋषि-योंने गौतमके शाण्डिल्य नामक शिष्यसे अपने जानेकी आज्ञा माँगी। शांडिल्यने कहा कि तुम लोग महर्षि गौतमसे आज्ञा लेकर जाओ। ऐसा सुन मरीचि ऋषि क्रोध युक्त होकर बोले कि क्या हम लोगोंने भोजनके लिये अपनी देहको बेंच दिये है, हम लोग अपनी इच्छासे जब चाहेंगे तब चले जाँयगे। उस समय सब ऋषियोंने मायाकी एक गौ प्रकट करके उसको गौतमकी अन्नशालामें छोड़ दिया। गौतमजीने गौको देख कर उसके ऊपर जलका छींटा दिया। छिंट्टाके लगनेसे वह गौ मर गई। ऋषियोंने कहा कि हे गौतम! तुमने गोवध किया, जब तक तुम्हारी गौहत्या नहीं छुटेगी तब तक हमलोग तुम्हारा अन्न नहीं भोजन करेंगे। उसके पश्चात् गोतमकी प्रार्थना करने पर ऋषियोंने कहा कि जब तुम इस गौको गंगाके जलसे स्नान कराओगे, तब यह मूर्छाको छोड़ कर सजीव होजायगी।

गौतमजी हिमालयमे जाकर गंगाके पानेके लिये शिवजीका तप करने लगे। कुछ कालके उपरान्त महादेवजी प्रकट हुए। गौतमने उनसे गंगाको मांगा। शिवजीने गौतमको अपनी जटाका एक खंड दिया। गौतमने अपने आश्रममे आकर उस जटाका जलबिंदु गौके ऊपर छिटका, जिससे वह मायाकी गौ जीवित होगई और उस जलबिंदुसे पवित्र नदी बह चली, जिसका नाम गोदावरी है। शिवजी प्रकट होकर गौतमजीसे बोले कि जो मनुष्य इस गोदावरी नदीमे स्नान करके पितरोंका पिंडदान और तर्पण करेगा उसके पितरगण नरकसे मुक्त हो स्वर्गमे जा बसेंगे।

शिवपुराण–( ज्ञान संहिता, ३८ वा अध्याय ) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे त्र्यबक शिवलिङ्ग गोदावरीके तट पर विराजते हैं।

( ५२ वा अध्याय ) पूर्वकालमें महर्षि गौतमने अपनी पत्नी अहल्याके साथ दक्षिण दिशामें ब्रह्मगिरिके पास दशसहस्र वर्ष तक तप किया था। एक समय १०० वर्ष तक वर्षा नहीं हुई, उस समय बहुतेरे जीव मर गये और बहुतेरे वहाँसे भाग कर देशांतरोंमें चले गये। तब गौतमजीने वरुण देवताकी तपस्या की। वरुण प्रसन्न होकर प्रकट हुये। गौतमजीने वरुणसे यह वर मांगा कि यहाँ वर्षा होवे और मेघका जल मुझको मिले। उस समय वरुणकी आज्ञानुसार गौतमने एक गढा खोदा, वरुणने उसको अक्षय जलसे पूर्ण कर दिया।

उसके पश्चात् वरुण बोले कि हे गौतम ! आजसे यह गढ़ा तीर्थ रूप होगा, यह क्षेत्र तुम्हारे नामसे लोकमे विख्यात होगा, इस क्षेत्रमें दान, हवन, जप तथा श्राद्ध करनेसे उनका फल अक्षय होगा। वरुणजीके चले जानेपर दुर्लभ जलको पाकर गौतमजी अपना नित्य नैमित्तिक कर्म करने लगे। उस स्थानपर अनेक प्रकारके वृक्ष, फल; फूल और धान्य उत्पन्न होने लगे। पृथ्वीमंडलमे गौतमका वन सबसे श्रेष्ठ हुआ। बहुतसे महर्षि अपने शिष्यों तथा स्त्री पुत्रोंके सहित वहा आकर निवास करने लगे। उन्होने वहा धान्यकी खेती भी की। कुछ समयके पश्चात् ऋषियोकी पत्नियोने ऋषियोंसे झूठ मूठ कहा कि अहल्या जल लानेके समय हम लोगोको नित्य दुर्वचन कहती है, हम लोगोके जीनेको धिक्कार है। ( ५३ वां अध्याय ) उस समय ऋषिगण गणेशजीकी आराधना करने लगे। गणेशजीके प्रकट होनेपर उन्होंने उनसे ऐसा वर मांगा कि हे देवेश ! तुम ऐसा उपाय करो जिससे गौतम इस आश्रमसे निकाल दिए जायँ। गणेशजी दुर्बल गौका रूप धारण करके गौतमके यवके खेतमें चरने लगे। यह देख गौतमजी हाथमे एक तृण लेकर गौको निवारण करने लगे। उस तृणसे छूतेही वह गौ गिर कर प्राण रहित होगई। तब ऋषिगण अपने शिष्य और अपनी पत्नियो सहित गौतमको दुर्वचन कहने लगे तथा पाषाणोंसे उनकी ताडना करने लगे और कहने लगे कि तुम अपने परिवार सहित इस वनसे चले जाओ, तुम्हारे आश्रममे रहनेसे अग्नि तथा पितर हमारे दिये हुए अन्नको ग्रहण नही करेंगे। गौतमने ऋषियोकी अज्ञानुसार अपने आश्रमसे एक कोस दूर आश्रम बनाया। कुछ दिनोके उपरान्त गौतमकी बडी प्रार्थना करने पर ऋषियोने गौतमको प्रायश्चित्तका विधान बतलाया। ऋषियोकी आज्ञानुसार गौतमने ब्रह्मगिरिकी परिक्रमा करके विधि पूर्वक पार्थिव पूजनका काम आरंभ किया। कुछ समयके पश्चात् पार्वतीके सहित महादेवजी प्रकट होकर गौतमसे बोले कि तुम इच्छित वर मांगो। गौतम बोले कि हे स्वामिन् ! आप मुझको पापसे रहित कीजिये और गंगाको दीजिये। पूर्व कालमे अपने व्याहके समय शिवजीने ब्रह्माको गङ्गाजल दिया था और उसका कुछ भाग रखलिया था। उन्होंने वही गङ्गाजल गौतमको दिया। तब गङ्गाजी स्त्री रूप होकर बोली कि हे ऋषीश्वरो ! मै गौतमको पवित्र करके यहाँसे चली जाऊँगी। उस समय शिवजी बोले कि हे देवी ! २८ वें युगके वैवस्वत मन्वन्तर तक तुम यहाँ निवास करो। गङ्गाने कहा कि हे गौतम ! यदि पार्वती और अपने गणों सहित महादेवजी इस स्थानपर निवास करें, तो मैं यहाँ रहसकती हूँ। गङ्गाका ऐसा वचन सुन शिवजी बोले कि हे देवी ! मै यहाँ स्थित होऊँगा। गङ्गाने भी शिवका वचन स्वीकार किया। ( ५४ वाँ अध्याय ) उसी समय देवगण, ऋषिगण, अनेक तीर्थ तथा क्षेत्र वहाँ आकर गङ्गा और शिवकी स्तुति करने लगे। उन्होंने कहा कि हे गङ्गे ! जिस समय बृहस्पतिजी सिंह राशि पर स्थित होंगे, उस समय हम सब यहाँ आवेंगे और मनुष्योंके ११ वर्षके धोये हुए पापोंको दूर करदेगे। अब लोकके हितके लिये तुम और शिवजी यहाँ निवास करो। जब तक सिंह राशिके बृहस्पति रहेंगे, तब तक हम लोग यहाँ निवास करेंगे। ऐसा सुन शिवजी वहाँ रह गये और गङ्गा भी स्थित होगई। उस समयसे जब सिंहके बृहस्पति होते हैं, तब सब क्षेत्र, पुष्करादि तीर्थ, गङ्गादि नदी और वासुदेवादिक देवता गोदावरीके तीर पर निवास करते हैं। जब तक वे वहाँ स्थित रहते हैं तब तक उनके स्थानोंमें जानेसे कुछ फल नहीं मिलता। जब तक सिंहके

गुरु रहें तब तक अन्य किसी तीर्थमें जाना उचित नहीं है। गौतमीके निकट महापातकके नाश करने वाले त्र्यंवक नामक ज्योतिर्लिंग शिव विख्यात हुए। ब्रह्म पर्वतके उदुम्बर वृक्षकी शाखासे गङ्गाकी धारा निकली। गौतमजीने उसमें स्नान किया। उसी दिनसे उस स्थानका नाम गङ्गाद्वार हुआ। जब गौतमके द्वेषी ऋषिगण गङ्गामें स्नान करने आये तब गङ्गा वहाँ अन्तर्द्धान होगई। जब आकाशवाणीके अनुसार गौतमके द्वेषी ऋषियोने १०१ बार ब्रह्मगिरिकी प्रदक्षिणा की और गङ्गाकी आज्ञासे गौतमने गङ्गाद्वारसे कुछ आगे कुशाओंसे आवर्त किया, तब वहाँ गङ्गाजी प्रकट हुई। उस दिनसे वह तीर्थ कुशावर्तके नामसे विख्यात होगया। उसमें स्नान करने वाला मनुष्य मुक्त होजाता है। गङ्गाद्वार, कुशावर्त और त्र्यंवक शिवके निकट कोटितीर्थमे स्नान करनेसे फिर जन्म नही होताहै। जो मनुष्य प्रथम ( नासिकमे ) रामचन्द्रका दर्शन करके त्र्यंवक शिव और गङ्गाद्वारका दर्शन करता है, उसका सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाता है।

( विद्येश्वरसंहिता, १० वाँ अध्याय ) महापवित्र गोदावरी नदी ब्रह्महत्या और गोहत्या पापको छुडानेवाली तथा रुद्रलोकको देनेवाली है। सिंह राशिपर वृहस्पति और सूर्यके होनेपर गोदावरीनदीमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है।

## थाना।

कल्याण जंक्शनसे १२ मील ( नासिक रोडके रेलवे स्टेशनसे ९५ मील ) पश्चिमदक्षिण और वम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे २१ मील पूर्वोत्तर थानाका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके उत्तरी विभागमें सालसटके कोलके पश्चिम किनारेपर जिलेका सदर स्थान थाना नामक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना कसवेमें १७४५५ मनुष्य थे, अर्थात् १३९१८ हिन्दू, १६११ मुसलमान, ११५८ क्रुस्तान, ३७८ पारसी, २७९ यहूदी १४३ जैन और ३८ अन्य।

थाना कसवेमें एक किला, पोर्चुगलवालोंका कथेड्रल, सरकारी कचहरी, खजाना, अस्पताल और कई एक जलाशय हैं। वहुतेरे सरकारी अफसर और अन्य लोग भी थाना कसवेमें रहते है और प्रतिदिन वम्बई शहरमें जाकर अपना अपना काम करते हैं। पूर्व समयमें थाना कसवेमें रेशमका वड़ा काम होता था, अव उसमें केवल १४ लूम अर्थात् वीननेकी कल हैं।

थाना जिला—इसके उत्तर पोर्चुगलके वादशाहके राज्यका दमन और अङ्गरेजी राज्यका सूरत जिला, पूर्व नासिक, अहमदनगर और पूना जिला, दक्षिण कुलावा जिला और पश्चिम समुद्र है। जिलेमें वैतरणी नामक एक छोटी नदी वहती है। सम्पूर्ण जिलेमें पहाड़ियोंके सिलसिले देखनेमें आते है। जिलेसे जलानेकी वहुत लकडी वम्बई शहरमे जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना जिलेके ४२४३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९०८५४८ मनुष्य थे अर्थात् ८०६८४५ हिन्दू, ४२३५१ मुसलमान, ३९५४५ क्रुस्तान, १३०७८ पहाडी और जङ्गली जातियोंके लोग, ३३१५ पारसी, २५१७ जैन, ८९२ यहूदी और ५ अन्य। हिन्दुओंमे २२१३२५ कुन्वी, ११७७३२ अग्रिया ( खेती करनेवाले ),

८९४६७ कोली, ५२६४५ महारा, २४२९५ ब्राह्मण और बाकीमें भण्डारी, दुबला, बनजारा इत्यादि जातिके लोग थे, उनमें राजपूत केवल २७७२ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना जिलेके कसबे बन्दरामे १८३१७, थानामें १७४५५, भिवाडीमें १४३८७, कल्याणमे १२६०८, कुरलामें ११४६९ और वसीनेमे ११२९१ मनुष्य थे।

इतिहास—१३ वीं सदीमें थाना कसबा एक प्रसिद्ध शहर तथा एक स्वाधीन राज्यकी राजधानी था। सन् १३१८ में मुबारकखिलजीने थानाको जीता। सन् १५२९ से थानाका मालिक पोर्चुगीजोंको कर देने लगा। सन् १५३३ में पोर्चुगीजोंने उसको ले लिया। १६ वीं सदीमे थाना कसबेमें ६००० आदमी रेशमका काम करते थे। सन् १७३७ में महाराष्ट्रोंने पोर्चुगीजोंसे थाना छीन लिया। सन् १७७४ में अङ्गरेजोंने थाना पर अपना अधिकार किया, किन्तु उसके पीछे महाराष्ट्रोंने उसको अङ्गरेजोंसे ले लिया। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवाके परास्त होनेपर थाना जिला अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया।

## अलीबाग।

बम्बई शहरसे १९ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर बम्बई हातेके कुलाबा जिलेका प्रधान कसबा और अलीबाग सबडिवीजनका सदर स्थान अलीबाग नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अलीबागमें ६३७६ मनुष्य थे, अर्थात् ५६७४ हिन्दू, ४०७ मुसलमान, ६६ जैन, ५५ कृस्तान, २ पारसी और १७२ अन्य लोग।

अलीबागमें सबजजकी कचहरी, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, कष्टमहौस और एक उत्तम बाग है। कसबेसे लगभग १½ मील पूर्वोत्तर सन् १८७६ की बनी हुई एक झील है, जिससे कसबेमें पानी आता है। वह ३० फीट गहरी ७ एकड भूमिपर है। समुद्रके किनारेसे लगभग २०० गज दूर एक छोटे चट्टानी टापूपर कुलाबाका पुराना किला है। किलेसे दक्षिण पश्चिम समुद्रके जलमे लगभग ६० फीट ऊँचा गोलाकार चट्टान है, जिसपर अनेक जहाज ठोकर खाकर डूब गये हैं।

कुलाबा जिला—यह बम्बई हातेके कोकन अर्थात् दक्षिणी विभागमें एक जिला है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर बम्बईका बन्दरगाह और थाना जिला, पूर्व सह्याद्रि पहाडी और पूना तथा सतारा जिला, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम रत्नागिरि जिला और पश्चिम जंजीराका राज्य और थोड़ी दूर तक समुद्र है। जिलेका प्रधान कसबा अलीबाग है। यह जिला १५ मीलसे ३० मील तककी चढ़ाईमे बम्बईके बन्दरगाहसे ७५ मील दक्षिण-पूर्व महाबलेश्वर पहाड़ीके पास तक सह्याद्रि पर्वत और समुद्रके बीचमे फैला हुआ है। समुद्रके पास बहुत जलाशय हैं; जिनमेंसे चन्द जलाशय भूमिसे पत्थर निकालकर बनाये गये हैं। इस जिलेमें बाघ और तेंदुए बहुत हैं। समुद्रके किनारेके पासके गांवोमे बहुतसे मछुहे बम्बई भेजनेके लिये मछलियाँ एकत्र करते हैं। इसी जिलेमें रायगढ़का किला है, जहां सुप्रसिद्ध शिवाजी सन् १६७४ में राजसिंहासनपर बैठे और सोनेका तुलादान किया।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कुलाबा जिलेके १४९६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३८१६४९ मनुष्य थे, अर्थात् ३६०११७ हिन्दू, १७८९१ मुसलमान, २१३९ यहूदी, ११६४

जैन, ३०५ कृस्तान और ३३ पारसी । हिन्दुओंमें १५९३३५ कुन्बी, ४४१९१ अग्रिया, ३४८४७ महारा, १४८६९ कोली, १३७८९ ब्राह्मण, ११२६० माली, ७३३२ गावली और बाकीमें भंडारी, लिङ्गायत, भांगर, जङ्गम आदि जातियोंके लोग थे; राजपूत केवल १६७ थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुलाबा जिलेके कसबे ऊरनमे ११४३२ और पनवेलमें १०४२० मनुष्य थे । अलीबाग इत्यादि कई इनसे छोटे कसबे है ।

इतिहास—सन् ईस्वीके आरम्भके बाद अंध्रभृत्य वंशके राजा, जिनकी राजधानी कोल्हापुर था, कुलाबाके मालिक थे । ६ ठी सदीमें सम्पूर्ण उत्तरीय कोकनके सहित वह चालुक्य वंशके राजाके अधीन हुआ । १३ वीं सदीमें कुलाबा जिलेपर देवगिरिके राजाका, १४ वी सदीमें बहमनी वंशके बादशाहका और उसके पश्चात् क्रमसे गुजरातके बादशाह, मुगल बादशाह और महाराष्ट्र लोगोंका अधिकार हुआ । शिवाजीने २ छोटे किले बनवाये । जिनमेंसे एक रायगढ़का किला है । उन्होंने सन् १६६२ में कुलाबाके किलेकी मरम्मत करवाई ।

अग्रिया जातिका कांधोजी सन् १६९८ में महाराष्ट्रोंके जहाजोंका अफसर था । उसका सदर स्थान वर्तमान बम्बई शहरसे दो तीन मील दूर कुलाबाके किलेमें था । उसने सन् १७१३ में पेशवाकी अधीनता छोडकर और जंजीराके सीदियोंको परास्त करके कोकनके किनारेके आस पास अपनी हुकूमत कायम की । उसकी राजधानी "विजयदुर्ग" था । सन् १७५६ मे पेशवा और अङ्गरेजोकी संमिलित सेनाओने कांधोजीके वंशधरोंको परास्त करके विजयदुर्ग किलेको ले लिया । विजयदुर्ग पेशवाके अधीन हुआ । सन् १८१८ मे जब पूनाके पेशवाका राज्य अङ्गरेजी सरकारने ले लिया, तब कांधोजीके वंशके मानाजी और राघोजी पेशवाके अधीन कुलाबाके अधिकारी थे; जो उस समयसे अङ्गरेजी गवर्नमेंटके अधीन हुए । सन्१८४०में उस खानदानके दूसरे कांधोजीकी मृत्यु होने पर उसका राज्य बम्बईके अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया ।

लगभग २०० वर्ष हुए कि अली नामक एक धनी मुसलमानने वर्तमान अलीबाग कसबेके पास बहुतसे कूप और बाग बनवाये, जिनमेंसे बहुतेरे अबतक विद्यमान हैं, उसी कसबेका नाम अलीबाग पड़गया ।

## बाइसवां अध्याय ।

### ( बंबई हातेमें ) बंबई और एलिफेंटाके गुफामंदिर ।

### बंबई

पश्चिमके समुद्रके किनारे पर ( १८ अंश, ५५ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५३ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें ) प्राय. द्वीपके भीतर बंबई हातेकी राजधानी और उस हातेका प्रधान शहर तथा पश्चिमी भारतका बन्दरगाह बम्बई है । बम्बई शहरके विक्टोरिया नामक रेल्वे स्टेशनसे पूना जंक्शन, धौंद जंक्शन और रायचुर होकर

७९५ मील दक्षिण-पूर्व मदरास शहर; पूना जंक्शन, धोंदजंक्शन, वाड़ीजंक्शन, सिकन्दराबाद और बेजवाडा जंक्शन होकर १२१९ मील पूर्व कुछ उत्तर कटक शहर; भुसावल जंक्शन, नागपुर, बिलासपुर जंक्शन और आसनसोल जंक्शन होकर १२७८ मील पूर्वोत्तर कलकत्ता शहर, और अहमदाबाद, अजमेर, बाँदीकुई जंक्शन और रेवाडी जंक्शन होकर ८८८ मील उत्तर कुछ पूर्व दिल्ली शहर है।

बम्बई शहरसे पश्चिमोत्तर समुद्रके मार्गसे १९२ मील वेरावल बन्दर, ३४२ मील द्वारिका, ५०० मील करांची बन्दर, १६६४ मील अदन और ७९४७ मील इङ्गलैण्डका लन्दन शहर है।

बम्बई शहरसे एक सडक पूर्वोत्तर कल्याण, अठगाँव, नासिक, धूलिया, मऊ, इन्दौर, फतेहाबाद, ग्वालियर इत्यादि नगर होकर आगे गई है और दूसरी सडक पूर्व कुछ उत्तर अहमदनगर, पैठन, नागपुर, भण्डारा, राजनन्दगाँव, रायपुर, फुलझर, सम्भलपुर, क्योंझोर, मेदनीपुर, उलनडिया होकर कलकत्तेमें पहुँची है।

बहुतसे आगबोट और जहाज बम्बईके बन्दरगाहोंमें लगते हैं तथा बन्दरगाहोंसे खुलते हैं। उनमेंसे "बृटिस इण्डिया स्टीम नेवीगेसन कंपनी" का आगबोट एक सप्ताहपर बम्बईसे खुलता है और गोआ, कारवार, मङ्गलूर, कलीकोट, तुतिकुडी इत्यादि पश्चिमी किनारेके बन्दरगाहोंमें होकर सिलोनके कोलम्बो शहरको जाता है। एक कम्पनीके आगबोट सप्ताहमें ३ दिन बम्बईके बन्दरगाहसे खुलते हैं और बिरावल, बंगलोर, पोरबन्दर, द्वारिका, मांडवी इत्यादि बन्दरगाह होकर करांची बन्दरमें पहुँचते हैं। उन आगबोटोंमें द्वारिकाके बहुत यात्री जाते हैं। द्वारिकाके यात्री २५—३० अथवा ३५ घंटेमें बम्बईसे द्वारिका पहुँच जाते हैं। आगबोटका महसूल एक आदमीका दूसरे क्लासके ४ रुपये और तीसरे क्लासके २ रुपये, लगते हैं।

बम्बई शहरसे दो रेलवेकी दो लाइन दो तरफ गई है, तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

(१) बम्बई शहरके कुलाबाके रेलवे स्टेशनसे उत्तर बम्बे, बडोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध–स्टेशन।

| मील | स्टेशन |
|---|---|
| ३ | चरनी रोड। |
| ८ | दादर। |
| १० | माहिम। |
| ११ | बान्दरा कसबा। |
| १८ | गुरगाँव। |
| २२ | बोरवली। |
| २८ | भयदर। |
| ३३ | वेसीन रोड। |
| ९५ | संजान। |
| १०९ | दमनरोड। |
| ११५ | उदवादा। |
| १२५ | वलसर कसबा। |
| १४९ | नवसारी। |
| १६७ | सूरत। |
| १९८ | अङ्कलेश्वर। |
| २०४ | भडौच। |
| २२९ | मियागाँव जंक्शन। |
| २४६ | विश्वामित्री जंक्शन। |
| २४८ | बडोदा। |
| २७० | आनन्द जंक्शन। |
| २८१ | नडियाद। |
| २९२ | महम्मदाबाद। |

३१० अहमदाबाद जंक्शन।

मियागॉव जंक्शनसे २० मील पूर्वोत्तर डभोई जंक्शन; डभोईसे १० मील दक्षिण चन्दोद और ९ मील पूर्व वहादुरपुर।

विश्वामित्री जंक्शनसे पूर्व १२ मील डभोई जंक्शन और २१ मील वहादुरपुर।

आनन्द जक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसवा, १९ मील डाकौर, ४९ मील गोधडा, ९४ मील दोहड कसवा, और १६४ मील रतलाम जंक्शन और आनन्दसे पश्चिम-दक्षिण १४ मील पेतलाद कसवा। ( आगे अहमदावादमें देखो )।

(२) वम्वई शहरके विक्टोरिया नामक रेलवे स्टेशनसे पूर्वोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला रेलवे,——

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

६ दादर।

१७ भण्डूप।

२१ थाना

३३ कल्याण जंक्शन।

५९ अठगाँम।

७५ कसारा।

८५ इगतपुरी।

११३ देवलाली।

११६ नासिक।

१४६ लासलगॉव।

१६२ मनमार जक्शन।

१७८ नन्दगाँव।

२०४ चालीस गाँव।

२३२ पचोरा।

२६१ जलगांव कसवा।

२७६ भुसावल जंक्शन।

३१० वुरहानपुर।

३२२ चॉदनी।

३५३ खण्डवा जक्शन।

४१६ हरदा।

४४२ सिउनी।

४६३ इटारसी।

५३६ गाडरवाडा जंक्शन।

५६४ नरसिहपुर।

६१६ जवलपुर।

कल्याण जक्शनसे दक्षिण पूर्व ४ मील अमरनाथ, २१ मील नेरल, २९ मील कर्जत, ४५ मील खण्डाला, ४७ मील लोनवली, ५२ मील कारली, ६३ मील वाडगॉव, ६५ मील तलेगॉव, ७६ मील चिचवाडा, ८३ मील किर्की और ८६ मील पूना जंक्शन।

मनमार जंक्शनसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर और १४६ मील धोंद जक्शन।

भुसावल जंक्शनसे पूर्व ओर ५६ मील जलब जक्शन, ६४ मील सेगॉव, ८७ मील अकोला, १३६ मील वडनेरा जंक्शन, ९५ मील वरधा जक्शन और २४४ मील नागपुर शहर।

खडवा जक्शनसे पश्चिमोत्तर राजपूताना माल्वा रेलवे पर ३७ मील मोरतक्का, ७३ मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, १११ मील फतेहावाद जंक्शन १६० मील रतलाम

जंक्शन और २७७ मील चित्तौरगढ़।

इटारसी जक्शनसे उत्तरकी ओर इण्डियनामिडलेण्ड रेलवे पर ११ मील हुशङ्गावाद, ५७ मील भोपाल जंक्शन, ९० मील भिलसा, १४३ मील वीना जंक्शन, १७९ मील ललितपुर और २३८ मील झाँसी जंक्शन।

जवलपुरसे पूर्वोत्तर ईष्ट इण्डियन रेलवे पर ५७ मील कटनी जक्शन, १६६ मील मानिकपुर जंक्शन २२४ मील नैनी जक्शन और २२८ मील इलाहाबाद।

वम्बई शहरमें रेलवेके १३ स्टेशन है,—शहरके उत्तरके दादरके स्टेशनसे दक्षिण-पश्चिम ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रेलवे पर १ मील परेल, २ मील कर्री रोड, ३ मील चिंचपोकली, ४ मील भायखला, ५ मील मसजिद और ६ मील विक्टोरिया स्टेशन और दादरके स्टेशनसे दक्षिण वम्बे, वडोदा, सेंट्रल इण्यिन रेलवेपर १ मील एलफिन्स्टोन रोड, ३ मील महालक्ष्मी, ४½ मील ग्रेंटरोड, ५½ मील चरनीरोड, ६ मील मरीन लाइन, ६¾ मील चर्चगेट और ८ मील कुलावाका रेलवे स्टेशन है।

भोलेश्वर अथवा माधोदासकी धर्मशालामें उतरनेवालोंको मसजिदके रेलवे स्टेशनमें उतरना उचित है। विक्टोरिया स्टेशनपर वहुत लोग रेलगाड़ियोंसे उतरते है।

वम्वईमें ट्रामवे कम्पनीका काम कलकत्तेके ट्रामवेसे अधिक फैला हुआ है। कुलावामें ट्रामवेका खतमी स्टेशन है, जिसके अस्तवलमे लगभग ६५० घोडे रहते है। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वम्वई शहरमे ८२१७६४ मनुष्य थे, अर्थात् ५१८०९३ पुरुष और ३०३६७१ स्त्रियाँ। इनमे ५४३२७६ हिन्दू, १५५२४७ मुसलमान, ४७४५८ पारसी, ४५३१० कृस्तान, २५२२५ जैन, ५०२१ यहूदी, १९० वौद्ध और ३७ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें पहिला शहर है, किन्तु कलकत्तेमें हवड़ाको मिला देनेसे वही पहिला शहर होता है।

वम्वई शहरका क्षेत्रफल २२ वर्गमील है। उसकी लम्वाई कोलावाकी दक्षिणी सीमासे जियन कसवे तक, जिसपर होकर रेलवे लाइन सालसट टापूको गई है, ११½ मील और इस्लेनेड ( कोटका मैदान ) के उत्तरके भागकी चौड़ाई ३ मीलसे ४ मील तक है। उत्तरके अतिरिक्त वम्वई टापूके तीन तरफ समुद्र है। उसके दक्षिणका भाग क्रम क्रमसे घटकर दक्षिणमें नोकके समान होगया है, जिसको लोग कुलाबा पाइन्ट कहते हैं। टापूके किनारेकी भूमि नीची है। वहाँका सबसे ऊँचा मालावार नामक शिखर समुद्रके जलसे केवल १८० फीट ऊँचा है।

वम्बई टापूके आस पास खास करके उसके उत्तर और पूर्व वेसीन, ड्रावी, वरसोवा, सालसट, ट्रम्वे, वोल्ड, वोमन्स, आइलेंड, कुलावा, एलिफेंटा, वुचरस आइलेंड, जीवेटें आइलेंड और करेंजा नामके ११ टापू हैं, जिनमेंसे कई टापुओंपर अनेक पहाड़ियाँ है। वम्वई शहरसे उत्तर सालसट नामक बड़ा टापू है। वम्वई शहर और सालसटके वीचमे

* १९०९ सनूसे ट्रामवे विजलीसे चलने लगी है।

कजवे और पुल वना है, जिसपर होकर रेलवे लाइन निकली है। सालसट टापू थाना जिले-का एक सवडिवीजन है, उसका क्षेत्रफल २४१ वर्गमील है। उसके मध्य भागमे उत्तरसे दक्षिण तक पहाड़ियोंका चौडा सिलसिला है, जिसका एक शिखर समुद्रके जलसे लगभग १५३५ फीट ऊँचा है। सालसटकी पहाडियोमे वहुतसे गुफा मन्दिर बने हुए है, जिनमे कनारीके गुफामन्दिर अधिक प्रसिद्ध है।

वम्बई शहरके देशी महल्लोकी सड़के कम चौड़ी तथा जगह जगह पर टेढ़ी है, किन्तु वे वहुत साफ रहती है। सडकोके बगलोमे तीन मञ्जिले, चौमञ्जिले तथा पञ्चमञ्जिले, कोई कोई छः मञ्जिले मकान वने हुए है, जिनमेंसे चन्द मकानोमे वहुत कारीगरीका काम है। जगह जगह मन्दिर और मसजिद देखनेमें आती है। शहरका वह भाग, जो किला कहलाता है, शहरके सम्पूर्ण भागोसे अधिक प्रसिद्ध है। उसमें अधिक यूरोपियन लोग रहते है, चौडी सडके तथा बडे वडे मकान वने है और वड़ी भीड़ देखनेमें आती है। उस भागमे वहुतसे सरकारी आफिस, कारोवारके मकान और दूकाने घनापनके साथ बनी हुई है। इनमेसे वहुतेरे मकान वहुत वड़े हैं, उनके मुकावलेके मकान कलकत्तेके अतिरिक्त हिन्दुस्तानके दूसरे शहरोमें प्रायः देखनेमें नहीं आते है। उस भागके और खास देशी शहरके बीचमें एक वड़ा मैदान है। वम्बई शहरकी सडकोपर आदमियोंकी बडी भीड रहती है। वहां प्राय. सब देशों तथा टापुओंके लोग अपनी अपनी पोशाक पहने हुए देखनेमे आते है। कोटके मैदानमें सरकारी इमारतोंकी सुन्दर लाइने हैं, जिनमें सेक्रेटरियट, यूनिवरसिटी, सिनेटहाल, नई हाईकोर्ट, पोष्टआफिस, टेलीग्राफ आफिस, सरकारी कामोंके मुहकमेके अनेक आफिस इत्यादि उत्तम इमारतें हैं। किलेकी भूमिपर रात्रिमें विजुलीकी रोशनी होती है। वम्बईके वहुत प्रसिद्ध इमारतोंमेंसे एलिफष्टोन सर्किल, कष्टमहौस, टाउनहाल, टकसाल और कथेड्रल है। वन्दरगाहमे भांति भांतिके जहाजों और आगवोटोका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

पश्चिम किनारेपर कुलावाचर्च और यूनिवरासिटी अर्थात् विश्वविद्यायल, जिसमें घडीका वडा बुर्ज है, देखने लायक है। ग्रेटरोडपर नार्थवुक वाग, मुम्बा देवीसे दक्षिण जुमा मसजिद है।

किलेकी जगहसे ३½ मील पश्चिमोत्तर मालावार पहाडी है, जिसपर यूरोपियन, पारसी तथा अन्य अमीर लोगोके विले और बङ्गले वने हुए हैं और सुन्दर वाग लगे हैं। उसके दक्षिणी नोकपर गवर्नमेट हौस। पहाडीके चारोओर यूरोपियन लोगोंकी वहुतसी कोठियां है। शहरके पश्चिम वेकुला और मैंजगन, शहरतलीमें वहुतसे कल कारखाने है।

वम्बईमे वहुतसे स्कूल हैं, जिनमें कई एक स्कूलोमें खास करके लड़कियाँ पढ़ती है। वहाँ "आर्यमहिला समाज' नामक स्त्रियोंकी एक सभा है, जिसमे प्रायः शिक्षिता स्त्रीही वक्तृता देती है। पहिले पूनावाली पडिता रमावाई उस सभाकी सम्पादिका थी, उनके पश्चात् अहिल्याबाई नामक एक महाराष्ट्री स्त्री उस पदपर नियुक्त हुई। वम्बई शहरमें महाराष्ट्री, गुजराती इत्यादि भाषा प्रचलित है।

वम्बई शहरमे प्रति वर्ष भादों सुदी चौथमे चौदस तक वहुत स्थानोंमें धूमधामसे गणेशचौथका महोत्सव होता है (पूनाके वृत्तान्तमें देखिये)। कार्तिकमें ५ दिनों तक दिवालीका उत्सव रहता है। दिवालीके दिन लोग बडे धूम धामसे समुद्रकी पूजा करते हैं। नव-

त्सोत्सव बडे समारोहसे होकर चैत्र वदी पंचमीको समाप्त होता है। दादरके रेलवे स्टेशनसे एक मील दूर माटुंगा नामक स्थानमें आषाढ़ सुदी एकादशीको विठोवा देवके उत्सवका मेला होता है। वहाँ विठोवा देव और अन्य देव देवियोंके मन्दिर बने हुए हैं।

वम्बईकी म्युनिसिपल्टीकी सफाई सराहनीय है। उसकी लगभग ८० लाख रुपयेकी वार्षिक आमदनी और इसी भांति खर्च है। शहरमें सर्वत्र जलकलकी नले फैली हैं। रात्रिमें सड़कोंपर गेसकी रोशनी होती है। शहरका जल वायु उत्तम है। वहाँ न जाड़ेके दिनोंमें बहुत सर्दी और न धूपके दिनोंमें बहुत गर्मी पडती है। औसतमें सालाना वर्षा लगभग ७० इञ्च होती है। वहाँ समुद्रका साधारण ज्वार १४ फीट और पूर्णमासीका ज्वार १७ फीट ऊँचा होता है।

कलकत्तेके सूर्योदयसे १ घण्टा और ३ मिनट पीछे वम्बई शहरमे सूर्योदय होता है। जब वम्बई शहरकी लोकल घडीमें ५ वजके ३० मिनट होते हैं, उस समय दिल्लीमें ५ वजके ४७ मिनट, आगरामे ५ वजके ५० मिनट, मदरास शहरमें ६ वजके शून्य ० मिनट, इलाहाबादमे ६ वजके ७ मिनट और कलकत्तामे ६ वजके ३३ मिनटका समय रहता है, अर्थात् वम्बई शहरके सूर्योदयसे १७ मिनट पहिले दिल्लीमें, २० मिनट पहिले आगरामें, ३० मिनट पहिले मदरास शहरमे, ३७ मिनट पहिले इलाहावादमे और १ घण्टा ३ मिनट पहिले कलकत्तामे सूर्योदय होता है।

धर्मशालायें—मार्केट ( वाजार ) के पास माधोदासजीकी धर्मशाला मुसाफिरोंके आरामकी जगह है। भोलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक वडा मकान बना है, उसमें भी मुसाफिर उतरते हैं। वम्बा देवीके सरोवरके पास कुछ लोग टिकते हैं +। मैं माधोदासजीकी धर्मशालेमें टिका था।

महारानी वाग—( विक्टोरिया गार्डन )—शहरके उत्तरी भागमें परेल रोडके पूर्व किनारेपर ३४ एकड भूमिपर महारानी वाग है, जिसमें म्युनिसपालिटीके प्रति वर्ष १०००० रुपये खर्च पडते हैं। वागमे एक घड़ीका टावर है। वागके वृक्ष, झाड़ी और फूल सभी खूबसूरतीके साथ लगाये तथा सजाये गये हैं। उसके भीतर सड़के और फौआरे उत्तम रीतिसे वनाये गये हैं। वागके एक भागमें जगह जगह पशु पक्षी और जल जन्तुओंके रहनेकी जगह बनी है, जिनमें बहुतेरे वाघ, भालू, हरन, सर्प, मूसा, सुतुरमुर्ग आदि जन्तु रहते हैं। एक गोलाकार हौजमें पत्थरके ढोंकोंके नीचे और छोटे अशोकके वृक्षोंपर बहुत सर्प है।

अजायवखाना—महारानी वागके पश्चिमी हिस्सेमें सडकसे थोड़ेही पूर्व एलवर्ट मिउजियमकी दो मञ्जिली इमारत है, जिसका काम सन् १८६२ में आरम्भ और सन् १८७१ में समाप्त हुआ। भीतर मार्बुलका फर्श और दीवार, छत तथा खम्भोंमें जगह जगह सुनहरा काम है। उसके नीचेकी मञ्जिलमें महारानी विक्टोरियाके स्वामी प्रिन्स एलवर्टकी मार्वुलकी प्रतिमा है। छोटा अजायवखाना होनेपर भी उसमे वहुतसी मनोहर वस्तुयें देखनेमें आती हैं। उसमे विविध भांतिके अन्न, वीज, लकडी, पत्थर, धातु, हथियार, कपड़ा, नकली फल तथा तरकारी, दरियाई चीज, प्रतिमा, मरी हुई चिड़ियाये और वडीवडी हड्डियाँ, एक वखतर, एक वखतर पहना हुआ घोड़सवार इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं।

+ पासही हीरावाग नामकधर्मशाला वहुत उत्तम सवके टिकनेलायक वनगई है।

महालक्ष्मीका मन्दिर—परेलसे दक्षिण–पश्चिम महालक्ष्मी स्थानमें महालक्ष्मीजीका सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। महालक्ष्मीजीका स्थान प्राचीन है।

पिञ्जरापोल–भोलेश्वर नामक स्थानमें पिञ्जरापोल अर्थात् पशु आश्रम है। बम्बेके धार्मिक लोग चन्दा करके वहाँ जन्तुओंको पालते हैं। बम्बेके लोग रास्तेमे कुत्तेको भी पानेपर पिञ्जरापोलमें रख देते है, इसी तरह दुर्बल जन्तु प्रतिपालित होते है। वह कई एकड़ भूमिपर बना है। पहले भागमे रोगी और बूढ़े जानवर, दूसरेमें बकरे, भेड़ और गदहे, तीसरेमें भैंस और चौथे भागमे कुत्ते रहते हैं।

मुम्बा देवी–उसी देवीके नामसे शहरका नाम मुम्बई और बम्बई है। कालबा देवी सड़कके पास एक सरोवरके समीप बम्बा देवीका लम्बा मन्दिर है। उसमें मुम्बा देवी, शिव, हनूमान और गणेशकी अलग २ कोठरी है, सबके आगे एक दालान है, जिसका फर्श उजले और काले मार्बुलके टुकडोसे बना है। मुम्बा देवीके सिंहासनमे चाँदी पत्र जडा है, उनका मुकुट सुनहरा है। मन्दिरमें समय समय पर दर्शकोंकी भीड़ रहती है।

द्वारिकाधीशका मन्दिर–इस्प्लेनेडके पास परेल जानेवाली सडकके दाहिने तरफ ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा द्वारिकाधीशका मन्दिर है। मन्दिरके दरवाजेपर चाँदीका पत्तर जडा हुआ है। वह मन्दिर बम्बई शहरमे प्रसिद्ध है।

मालाबार पहाड़ी–जैसे बम्बेका दक्षिणी भाग दोनो तरफसे घटता हुआ समुद्रमें चला गया है, जिसके दक्षिणके नोकको कुलाबा पाइन्ट कहते है, वैसेही मालाबार पहाडी बम्बेके पश्चिम प्रान्तसे समुद्रमें दक्षिण-पश्चिम गई है, जो समुद्रके जलसे १८० फीट ऊँची है। उस पर पारसियोंका समाधि स्थान, बालकेश्वरका मन्दिर और गवर्नमेंट हौस आदि उत्तम इमारत बनी हुई हैं। मालाबारके उत्तर कम्बाला पहाड़ी है; दोनोंके बीचमें होकर एक राह पश्चिम ओर समुद्रके किनारे तक चली गई है।

पारसियोंका दोखमा–ग्रेंटरोडके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम-दक्षिण और चरनीरोड स्टेशनसे सीधा पश्चिम मालाबार पहाड़ीके ऊँचे शिखरपर समुद्रसे करीब १०० फीट ऊपर पारसियोंका दोखमा अर्थात् मुर्दे रखनेका मकान है। पारसी जातिके अतिरिक्त दूसरे मनुष्योंको पारसी पंचायतके सेक्रेटरीसे दोखमा देखनेके लिये आज्ञा लेनी होती है। एक सड़क दोखमाके टावरोंके उत्तर तरफ गई है, जिसको सर जमसिदजी जीजी भाईने बनवाया। उसने टावरोंके पूर्व और उत्तर १००००० गज मुरब्बा भूमिभी दी थी। वह दोखमा देखने लायक उत्तम इमारत है।

दोखमाके बाहरीके हातेके फाटकके भीतर ८० सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियोंको लांघ कर हातेके दहिने ओर फिरनेपर एक पत्थरकी इमारत मिलती है, जिसमें पारसी लोग मृतककी क्रियाके समय एबादत करते है। उस स्थानसे बम्बे शहरका उत्तम दृश्य हासिल होता है। समुद्रके पास रहनेसे वहाँकी हवा ठण्टी रहती है। वहाँ एकही जगह गोलाकार ५ मीनार है। उनमेंसे एक मीनारके बनानेमें जो १५६ फीट ऊँची है ३००००० रुपये और चार मीनारोंमेंसे प्रत्येकमें २००००० रुपये खर्च पडे हैं।

प्रत्येक मीनारके भीतर मध्यमें कूपके समान गाड है। उसमें नीचेसे रास्ता है। गाड़के चारो तरफ मृत पुरुष, स्त्री और लड़कोंके रखनेके लिये अलग अलग पत्थरके चबूतरे गोला-

कार स्थान वने हुए है। एक स्थानमें एक पारसीका मुर्दा रख दिया जाता है। मांसभक्षी पक्षियोंके आनेके लिये ऊपर रास्ते है। दोखमाके समीपके वृक्षोंपर गृद्ध, काक, सकुनी आदि पक्षी झुण्डके झुण्ड रहते है। वे मृतकको खा लेते है। पीछे उसकी हड्डियाँ वीचवाले गाड़में जलसे वहादी जाती है। उसके पश्चात् गाड़के नीचेके मार्गसे हड्डियोंको निकालकर गाड़ साफ किया जाता है। पारसी लोग अपने मृतकोंको न जलाते हैं और न भूमिमें गाड़ते हैं। वे लोग इसी भांति दोखमामें रखकर उनको पक्षियोंको खिला देते हैं। कोई कोई धनी पारसी अपने मकानहीमें खास दोखमा वना लिये है।

पारसियोंका वृत्तान्त—छठवी सदीके पीछे जव मुसलमान लोग दूसरे देशोंमें जाकर वलसे लोगोंको अपने धर्ममें लाने लगे, तव वहुतसे पारसी अपने देश पारसको त्यागकर खुरासानमें जा वसे और वहुतेरे अपने प्राणके डरसे मुसलमान होगये। पारसके वर्तमान मुसलमान उन्हीके वंशधर हैं। भागे हुए पारसियोंने कुछ समयके पश्चात् मुसलमानोंके अत्याचारसे खुरासानसे भागकर पारसके समुद्रके अर्मज द्वीपमें आश्रय लिया। उसके कुछ दिन पीछे करीव ७०० पारसी मुसलमानोंके अत्याचारसे पीड़ित हो वहाँसे पूर्व दिशाको चले और समुद्रके रास्तेसे हिन्दुस्तानके निकट आकर काम्वे समुद्रके डिऊ नामक टापूमें रहने लगे; किन्तु वह द्वीप रहने योग्य नहीं था इस लिये वे वहाँ कुछ दिन रहकर सन् ७१७ ई० में दमनसे प्रायः २० मील दाक्षिण संजान नामक स्थानमें आये। वहाँके राजा जयदेव राणाने उनको अपने राज्यमे रहनेकी आज्ञा दी। मुसलमानोने हिन्दुस्तानमें आनेपर पारसियोंको मुसलमान वनानेके लिये जयदेव राणासे युद्ध किया। राणाके पराजय और निहत होनेपर पारसीगण संजानसे भागकर वाहारत नामक पहाडपर १२ वर्ष तक छिपे रहे। उसके पश्चात् क्रमशः वंश विस्तार होनेपर पारसी लोग वहाँसे वान्सा और वान्सासे नौसारीमें जाकर रहने लगे। कुछ दिनोंके पीछे वे लोग नौसारीसे वारियामे चले गये। वहाँ कुछ समयके पश्चात् उन्होने सवल होकर वहाँके राजाको कर देनेसे इनकार किया। राजानेएक विवाहके समय वहुतेरे पारसियोंको मारडाला। जो पारसी वहाँसे प्राण लेकर भागे, उन्हीकी सन्तान क्रमशः वढ़कर भडौच, सूरत, वम्वे आदि शहरोंमें फैल गई। वर्तमान पारसी उन्हींके वंशधर हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हिन्दुस्तानमे ८९९०४ पारसी थे, जिनमेंसे ४७४५८ वम्वे शहरहीमें रहते थे। इस समय भी थोड़े पारसी, पारस ( ईरान ) देशमें देखनेमें आते हैं।

पहले पारसी भी हिन्दुओंके समान अनेक देव देवीकी उपासना करते थे; परन्तु जौराष्ट्रा स्पिटामाके नये धर्म प्रचारके पीछेसे वे अहुर मज्दा नामक एक ईश्वरके उपासक हुए। पारसी कहते हैं कि जौरास्ट्रा स्पिटामा एक पवित्र अग्निको स्वर्गसे पृथ्वीमे लाया; इससे वे लोग अग्निको अति पवित्र समझकर पूजते हैं और अग्नि पूजक कहे जाते हैं।

वम्वेमें प्रायः प्रति पारसी आवासके निकट अग्नि पूजाके लिये एक२ अग्निमन्दिर प्रतिष्ठित हैं। उनमें नवसारीके अग्निमन्दिर सवसे अधिक प्रसिद्ध हैं। सव मन्दिरोंमे जौरास्ट्रा स्पिटामाकी लाई हुई पवित्र अग्नि दिन राति प्रज्वलित रहती है। किसी घटनासे किसी मन्दिरकी अग्नि वुझ जाय तो पारसी लोग अमङ्गल सूचक समझते हैं और दूसरे मन्दिरसे अग्नि

लाकर उस मन्दिरमे पुनः संस्थापन करते है। वर्तमान पारसी जल और सूर्य्यकी उपासना भी करते हैं। वे लोग अपने प्रत्येक अग्निमन्दिरमे एक एक श्वेत वृषभ पालते हैं और गोमूत्रसे निराङ्ग नामक एक पदार्थ बनाकर अग्निमन्दिरमे रखते हैं।

पारसियोंके रीति व्यवहार हिन्दुओंके रीत व्यवहारसे कुछ मिले हुए और कुछ भिन्न है। कोई कोई पारसी किसी हिन्दूसे अपना जल नहीं छुआता और कोई मुसलमानका बनाया पाक खा लेता है। उनमे कन्याका विवाह चचेरे भाईके साथ होता है। पारसी मद्य-पान करते है, पर चुरट अथवा किसी तरहका धूम्रपान कोई नहीं करता। कृस्तान, हिन्दू, मुसलमान, जैन, सिक्ख इत्यादि सब लोगोंमे बहुत भिक्षुक देख पडते हैं; किन्तु पारसी जातिमें भिक्षुक अथवा वेश्या एक भी नहीं है। पारसियामें दूसरी जातियोंसे अधिक विद्याकी रिवाज है। उनमें सैकडे पीछे ७८ पुरुष और ५१ स्त्रियॉ पढ़ी हुई है। उनमें बहुतेरोने अङ्गरेजी विद्या पढ़कर बड़े बडे सरकारी ओहदे पाये है। लगभग ९० हजार पारसियोंमें दस पन्द्रह करोडपति, सैकडों लखपति और हजारो पारसी सहस्रपति हैं। बहुतेरे पारसी अपनी कीर्तिके लिये लाखों रुपये दान कर देते है।

पारसियोंमे बहुत लोग गुजराती पोशाक और बहुत लोग कोट पतलून पहनते है। उनकी टोपी दो तरहकी होती हैं, बडी टोपी सन्मानित लोग पहनते हैं। पारसियोंकी स्त्रियॉ रेशमी साडी पहनती है, पॉवमें जूता या बूट लगाती है और शिरपर सर्वदा एक सादा रुमाल बांधती है। उनमे हीरा मोतीके भूपण पहननेकी चाल अधिक है। किसी पारसी-की मृत्युके समय पारसी लोग उस रोगीके मुख पर कोई गव्य द्रव्य लगाकर उसको एक कुत्तेसे चटवाते है। जिस रोगीके मुखको कुत्ता नहीं चाटता उसके शरीरमें पाप समझा जाता है। उस समय उस रोगीके स्वजन किसी उपायसे रोगीका मुख चटाकर उसको निः-पाप करते हैं। उस कामके लिये प्राय. सब पारसीके गृहमे एक या अधिक कुत्ते पाले जाते हैं।

पारसियोंकी धर्म पुस्तकोमे लिखा है कि मृत आत्मा मरनेके तीन दिन पीछे मित्थ नामक देवताके पास जाता है। बाजे वेशो नामक अप देवता वहॉंसे उसको भारत वर्षमें लाता है, जहासे सदात्मा और असदात्मा दोनों एक रास्तेसे आत्मसंग्राहक सेतुके निकट पहुॅचते है। वहॉंसे कुत्ता सदात्माको स्वर्गमें लेजाता है और असदात्मा अन्धकार पूर्ण नर्कमें गिरता है। जान पडता है कि इसीसे पारसी कुत्तोंका मान करते हैं।

पारसी धर्मशाला—दोखमासे दक्षिण गॉवदेवीरोडपर गरीब पारसियोंके लिये पारसी धर्मशाला बनी है। एक बड़े बागमे वह साफ सुन्दर इमारत है। बागमें एक सरोवर है। धर्मशालामे कभी कभी २०० तक पारसी स्त्री, पुरुष और लड़के रहते हैं।

जल कलके हौज—दोखमासे थोडी दूरपर बम्बईकी जलकलके हौज है। सालसट टापूके विहारझील और तुलसीझीलसे पानी आकर वहॉंके हौजोंमें रहता है और वहॉंसे नल द्वारा सम्पूर्ण शहरमे जाता है।

बालेश्वरका मन्दिर—मलाबार पहाडीके दक्षिणी भागमें पश्चिम किनारेपर बालेश्वर शिवका दर्शनीय मन्दिर है। वह मन्दिर बम्बईके सम्पूर्ण मन्दिरोमें प्रसिद्ध है। वहॉ बाणगङ्गा तीर्थ नामक एक बहुत सुन्दर छोटा सरोवर है, जिसके चारों तरफ ब्राह्मणोंके मकान और देव स्थान बने हुए है।

यहांके लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रने सीताहरण होनेके पश्चात् यहा आ करके वालूका शिवलिङ्ग स्थापित किया । जब प्यास लगनेपर उनको यहाँ पानी नही मिला, तब उन्होने एक वाण पृथ्वीमें चलाया, जिससे एक सरोवर वन गया, जिसको वाणतीर्थ कहते है ।

गवर्नमेंट हौस—मलावार पोइन्टके अखीर दक्षिण-पश्चिम गवर्नमेंट हौस है, जिसको वालकेश्वरका गवर्नमेंट हौस कहते है । समुद्रकी तरफ वडे वडे ठण्ढे कमरे और वरण्डे वने है । सन् १८८० से वम्बेके गवर्नर खास करके उस कोठीमे रहते है और कभी कभी जाड़ेमें वागकी सैरके लिये परेलकी कोठीमे ठहरते हैं । मलावार पोइन्टमे दूसरे अङ्गरेजोकीभी कई कोठियाँ वनी हुई है । गवर्नमेंट हौसके दक्षिण एक वैटरी है ।

प्रिंस आफ वेल्स वाग—उसको साधारण लोग चरनी रोडका वाग कहते हैं । मलावार पहाडी और कुलावाके वीचके पश्चिमी किनारेको वेकवे कहते है । उसके पूर्व तरफ प्रिंस आफ वेल्स वाग है, वाग छोटा होने परभी समुद्रके तीरमे रहनेके कारण बहुत मनोरम वना है ।

क्रैफोर्ड मार्केट—विक्टोरिया स्टेशनसे लगभग आधा मील उत्तर वम्वेमे बहुत प्रसिद्ध और देखने योग्य क्रैफोर्ड मार्केट नामक एक उत्तम वाजार है । क्रैफोर्ड नामक कमिश्नरके नामसे १११८००० रुपयेके खर्चसे वह वाजार वना । लम्बे चौडे मकानमें वाजार सजा है । फर्समे मार्वुलके टुकडे जडे गये है । दीवारोपर खूबसूरत फूलोंकी लता चढी हुई हैं। हिन्दू, मुसलमान, इसाई आदि सव मजहवके लोगोंके खानेकी हर किसिमकी वस्तु अलग अलग कमरोंमे सजी रहती हे । एकसे दूसरीका सम्वन्ध नहीं रहता । किसीके धर्ममे किसी तरहका फर्क नहीं पडता । चीजोंके मोल करनेकी कुछ जरूरतही नहीं है । सव चीजोंका भाव मोटे कागजपर छपा हुआ या लिखा हुआ रहता है ।

विक्टोरिया स्टेशन—एस्प्लेनेड मार्केट रोड और वोरीवन्दर रोडके वीचके कोनेपर किलेकी जगहसे थोडा उत्तर ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रेलवेका विक्टोरिया नामक खतमी स्टेशन है, जिसको वोरीवन्दरका स्टेशन भी लोग कहते हैं । स्टेशनकी इमारत वम्बेकी सवसे उत्तम इमारतोंमेंसे एक है । वह सन् १८८८ में २७००००० रुपयेके खर्चसे तय्यार हुई थी । वह दो मञ्जिली तथा तीन मञ्जिली इमारत है। उसके छतमे सुनहरी मीनाकारी की-हुई है । मारवरी पत्थरके खूबसूरत खम्भे लगे हैं । ऊपर एक ऊँचे गुम्वजपर वडी घडी लगा है, जिसकी आवाज दूरसे सुन पडती है । घडीके पास महारानी विक्टोरियाकी सुन्दर तस्वीर है । स्टेशनमे रातको विजलीकी रोशनी होती है । स्टेशनकी इमारत १५०० फीट लम्बी है । यह स्टेशन भारतके सव रेलोके स्टेशनोसे वडा और सुन्दर है ।

यूरोपियन जनरल अस्पताल—वह विक्टोरिया स्टेशनके पासही दक्षिणपूर्व वोरीवन्दर रोडके दरवाजेपर है । मुसाफिर वीमार पड़े तो उसमे जानसे दूसरी जगहोसे अधिक सुभीता है । मुफ्तमें और दाम लेकर दोनो तरहके मरीज उसमें रखे जात है । उसके पास उसके अधीन सेंट जर्जका नया अस्पताल है ।

म्युनिसिपल आफिस—वह विक्टोरिया स्टेशनके पश्चिम वन रहा है, जो वम्वेमें सवसे मशहूर इमारत हे । उसके खर्चके लिये १२ लाख रुपये अनुमान किये गये है । उसका गुम्ब-

जदार टावर २५५ फीट ऊँचा है, जो वम्बेके हर हिस्सोंसे देख पडता है, । उसमें १३ फीट ऊँची एक अङ्गरेजी प्रतिमा है। बड़े सीढ़ी घरके ऊपर एक गुम्वज बना है।

गवर्नमेण्ट इमारतोंकी वड़ी लाइनका अगवास वैकवेकी तरफ है, जो उत्तरसे दक्षिण क्रमसे लिखी जाती है,—

महारानी विक्टोरियाकी प्रतिमा–टेलीग्राफ आफिसके पास सफेद मार्बुलकी वनी हुई महारानी विक्टोरियाकी प्रतिमा बैठी है। प्रतिमाके ऊपर गथिक ढाचेकी चाँदनी वनी हुई है। वह प्रतिमा सन् १८७२ में १८२००० रुपयेके खर्चसे तैयार हुई, जिसमे खांडोजी राव गायकवाडने १६५००० रुपये दिये थे। यही न्याय परायण महारानी विक्टोरिया, जिनका जन्म सन् १८१९ ईस्वीकी चौबीस मईको हुआ था, भारतवर्षकी स्वामिनी है।

टेलीग्राफ आफिस–यह एक उत्तम इमारत है, इसका अगवास मार्बुलसे बना हुआ ३८२ फीट लवा है, जिसमें नोले रङ्गके पत्थरके स्तम्भ लगे हुए है।

पोस्ट आफिस–यह टेलीग्राफ आफिसके दक्षिण २४२ फीट लम्बा तीन मञ्जिला है। इसके उत्तर तरफ गिर्जा है। जिस पत्थरका टेलीग्राफ आफिस है, उसीसे यह भी वना है।

पवलिक वर्क्स सेक्रेटरियट—यह पोस्ट आफिसके दक्षिण है इसमे रेलवे, सिचाई इत्यादि कामोके मुहकमे हैं। इसका अगवास २८८ फीट लम्बा और मध्यका हिस्सा ६ मञ्जिला है।

हाईकोर्ट–यह पवलिक वर्क्स सेक्रेटरियटसे दक्षिण ५६० फीट लम्बी पांच मञ्जिली इमारत है। इसकी चौडाई एक तरहकी नहीं है। बाहर चारो तरफ वालकानी वनी है, जिनमे जगह जगह एक एक, दो दो तथा चार चार मेहरावदार स्तम्भ लगे है। १७५ फीट ऊँचा १ टावर है। प्रधान दरवाजेके दोनो तरफ १२० फीट ऊँचा टावर है। ऊपर न्याय और दयाकी प्रतिमा वनी है। प्रधान सीढी पूर्व है। काले, सफेद और सुर्ख पत्थरोंका फर्श है। यह इमारत २०००० पाउंडके खर्चसे तय्यार होकर सन् १८७९ में खुली। इस इमारतकी पहली और तीसरी मञ्जिलमे इब्तदाई कचहरियाँ, दूसरी मञ्जिलमे अपीलकी कचहरियाँ और मध्य भागमें फौजदारीकी कचहरियाँ है। कचहरियोके मकानोंमे सब साधारण लोगोके बैठनेको बहुतसी कुर्सियां रक्खी हैं। हाईकोर्टके पूर्व वम्बे क्लब है।

राजाबाईका टावर—हाईकोर्टसे दक्षिण यूनिवरसिटीके पास २६० फीट ऊंचा और ५५ फीट लम्बा पोरवन्दरके खूबसूरत पत्थरोंसे वना हुआ राजाबाईका टावर (बुर्ज) है, जिसको रायचन्द प्रेमचन्द नामक एक गुजराती धनीने सन् १८७८ ई० मे अपनी माता राजाबाईकी यादगारके लिये २००००० रुपयेके खर्चसे वनवाया और पुस्तकालयके लिये भी ४००००० रुपया दिया। इसके नीचेकी मञ्जिलमे यूनिवरसिटीके दफ्तर, मध्यकी मञ्जिल मे यूनिवरसिटीका पुस्तकालय और सबसे ऊपर टावरका बुर्ज है, जिसपर चढ़नेसे वम्बे शहरका उत्तम दृश्य हासिल होता है। टावरके ऊपर एक बडी घड़ी लगी है, जिसके पास रातमे बिजलीकी रोशनी होती है।

इसके पास १०४ फीट लम्बा, ४४ फीट चौडा और ६४ फीट ऊँचा यूनिवरसिटीका हाल है, जो सन् १८७४ में तय्यार हुआ था।

सेक्रेटेरियट सेक्रेटरियट–यूनिवरसिटीके दक्षिण ४४३ फीट लम्बा प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट है। इसके दो बाजू ८१ फीट लम्बे है। सीढीघरके ऊपर १७० फीट ऊँचा

टावर है। पहली मञ्जिलमें कौंसिल हाल कमेटीके कमरे, गवर्नर और कौंसिलके मेम्बरोंके लिये खानगी कमरे और मालगुजारी मुहकमेके अनेक आफिस और दूसरी मञ्जिलमें जुडिसियल और फौजी मुहकमे हैं।

कालेज—प्रसीडेंसियल सेक्रेटरियटके पूर्व कालिज है।

प्रिंस आफ वेल्सकी प्रतिमा—कालिजके पूर्व सेमन इष्टीटिउटके सामने महारानी विक्टोरियाके वडे पुत्र प्रिंस आफ वेल्सकी धातुकी प्रतिमा है, जो सन् १८७९ में करीब १५०००० रूपयेके खर्चसे तय्यार हुई।

तैरनेका हौज—प्रसीडेंसियल सेक्रेटरियटसे पश्चिम-दक्षिण समुद्रके तीरपर तैरनेका हौज बना है।

सेटजानका मेमोरियल चर्च–यह सन १८५८ में कुलावामे बना। इसका टावर १९८ फीट ऊँचा है, जो समुद्रमे दूरसे देख पडता है।

अपोलो बन्दर–बम्बेके दक्षिणी भागके पूर्व किनारेपर अपोलो बन्दर है। वहाँ समुद्रके किनारे किनारे दूर तक एक वडी चौडी मजबूत दीवार बनाई गई है, जिसको समुद्र किसी तरह तोड नहीं सकता। थोडी थोडी दूर पर नीचे उतरनेको सीढियाँ बनी हैं। विलायतसे आये हुए जहाज वहाँ खडे होते है और मुसाफिरोको उतारकर डौकयार्डमे चले जाते है और विलायत जानेवाले लोग उसी जगह जहाजमे बैठते हैं। शामके वक्त बहुतेरे अङ्गरेज और हिन्दुस्तानी अमीर लोग बग्गियोंपर या पैदल समुद्रकी हवा खाने वहाँ जाते है। वहाँ नित्य अङ्गरेजी बाजा बजता है। बन्दरगाहके पास नया यूरोपियन महल्ला है।

गवर्नमेंट डौकयार्ड–बम्बेके बन्दरगाहोमें छोटे वडे बहुत डौक है, जिनमें रहनेसे जहाजोको समुद्रके तूफानका डर नहीं रहता। समुद्रके जलमे बढ़कर चारो तरफसे दीवार खैंच दी गई है, एक तरफ जहाजोके प्रवेश करनेका रास्ता है। जब ज्वारके साथ जहाज भीतर चले जाते है तब रास्तेको लोहेके तखतेसे बन्द कर देते है। इनमे गवर्नमेंटडौक, प्रिंसेस डौक, विक्टोरिया डौक प्रधान है। अपोलोगेटसे उत्तर और कष्टमहौससे दक्षिण समुद्रके किनारेपर लगभग ७०० गज लम्बा गवर्नमेंट डौकयार्ड है। उसके पास रात्रिमें बिजलीकी रोशनी होती है। जब ईष्टइण्डियन कम्पनीने सन् १७३५ ई० में उसको बनवाया था तब वह बहुत छोटा था, जो बढते बढ़ते हदसे बाहर अवस्थाको पहुँच गया है। डौकयार्डके घेरेके मुतअल्लुक करीब २०० एकड भूमि है। उसमें ५ ग्रेवी डौक है, जिनमेसे ३ मिलकरके एक वडा बम्बे डौक बन जाता है, जिसकी लम्बाई६४८फीट, चौडाई शिरके पास ५७ फीट और तलीमे ३४ फीट और खडो गहिराई १२ फीट है। दूसरे २ ग्रेवीं डौक एकडौक बनता है, जिसकी लम्बाई ५५० फीट, चौडाई शिरके पास ६८ फीट और तलीमे ४६ फी[illegible] और खडी गहराई २६ फीट है।

किनारेपर बड़ी वडी कल है, जो जहाजोंपरसे मालको जंजीरो द्वारा उठाकर किनार[illegible] गिरा देती है। डौकोंके पास वडे २ मकान बने हैं, जिनमें जहाजोके माल हिफाजतसे रक्खे जाते हैं। डौकके पास दिन भर आदमियोकी भीड रहती है। सुबह और शामको बहुत लोग हवा खानेके लिये वहाँ जाते हैं।

टकशाल–किलेकी तबाहीके उत्तर बम्बेका टकशाल घर है, जो सन् १८२९ में बना। इमारत सादी है। उसके आगे एक सरोवर है।

एलफिस्टोन सर्किल–टकशालसे पश्चिम किलेकी भूमिके प्रायः मध्य भागमे एलफिंस्टोन सर्किल है । वहाँ मध्यमें वृत्ताकार छोटा वाग सडकसे घेरा हुआ है, सडकके वाहर गोलाकार मकान वने हैं ।

टाउनहाल–एलफिस्टोन सर्किलके पूर्व भागमें वम्बेका टाउनहाल है, जो सन् १८३५ में ६०००० पाउंडके खर्चसे तैय्यार हुआ । उसमें वम्बेके गवर्नर और दूसरे प्रसिद्ध लोगोंकी पत्थरकी प्रतिमा वनी है इमारतके आगे स्तम्भोंका कतार है । अगवास २६० फीट लम्वा है । पहली मञ्जिलमे मेडिकल वोर्डके आफिस और मिलीटरी आडिटर जनरलका आफिस है । ऊपरकी मञ्जिलका कमरा १०० फीट लम्वा और इतनाही चौडा है, जिसमें कमेटी होती है और समय समय पर अङ्गरेज लोग नाचते हैं ।

किलेकी तवाही–टकशाल और कष्टमहौसके वीचमें वन्दरगाहकी तरफ अव केवल किलेकी छोटी दीवार है । वहॉ एक झण्डा है, जिससे जहाजोंको इसारा दिया जाता है । और क्लव टावर भी है । दक्षिण तोपखाना है । पश्चिम किलेकी लम्वी चौडी भूमिपर शहर वस गया है । पहले वहॉ सेट देविड किला था, जो छोड दिया गया । अङ्गरेजी सरकारने वम्बेकी रक्षाके लिये समुद्रके तीरके छोटे टापुओमें वैटरी ( मोर्चा ) वनाई है । प्रत्येक वैटरी पर २ या ३ तोपें रखी हुई है ।

जङ्गी जहाज–समुद्रके अपोलो वन्दरके सन्मुख अविसिनिया और मेगडैला नामक २ जङ्गी जहाज रहते है । कप्तानसे आज्ञा लेकर उनको देखनेके लिये वोट द्वारा जाना होता है । वे जहाज जलके ऊपर केवल २ हाथ रहते हैं । उनके पहले तहमे युद्धके हथियार और सिपाहियोंके रहनेके स्थान, दूसरे तहमे अस्पताल और जेलखाना और तीसरे तहमें खानेकी सामग्री और पीनेका जल रहता है । आगे और पीछेके हिस्सोंमे २ किले है । प्रत्येक किलेमे २ वडी तोपें रहती हैं । जहाजोंमें एक एक कल है, जव शत्रुओंके अधिक गोले वर्षने लगते है, तव उससे जहाजको डेक तक जलमें डुवा दिया जाता है । एक तलसे दूसरे तलके आदमीसे वातचीत करनेके लिये तार लगा हैं ।

प्रिंसेस डौक—मसजिदके रेलवे स्टेशनसे पूर्व ४८५ गज लम्वा और ३३३ गज चौडा प्रिंसेस डौक है, जिसका पानी ३० एकड भूमि पर फैला हुआ है । महारानी विक्टोरियाके वडे पुत्र, हम लोगोंके भावी वादशाह प्रिंस आफ वेल्सने सन् १८७५ में उसकी नेव दी थी । सन १८८० में ६८ लाख रुपयेके खर्चसे वह तैयार हुआ ।

विक्टोरिया डौक—प्रिंसेसडौकके दक्षिण ४२४ गज लम्वा और ३३३ गज चौडा २५ एकड भूमिपर विक्टोरिया डौक है । प्रिंसेसडौकसे विक्टोरिया डौकमे जहाज जानेके लिये दोनोके वीचमे ६४ फीट चौडा जहाजी मार्ग वना है ।

लाइटहाउस–( रोशनीघर ) वम्बेमें ३ लाइट हाउस हैं,—प्रगुस, मेंकराक और डाल-फिन लाइटहाउस । उनमे प्रगुस लाइटहाउस सवसे ऊँचा और दर्शनीय है । उसको देखनेके लिये पोर्टकमिश्नरसे पास लेना चाहिये । वह वम्बेसे दश वारह मील दक्षिण-पश्चिम एक जजीरे पर वना है । अपोलो वन्दरसे नाव पर चढकर वहॉ जाना होता है । उस लाइट-हाउसके वननेमें ६५०००० रुपये खर्च पडे हैं । वह १५० फीट ऊँचा तीन तल्ला है । सबसे नीचेके तहकी दीवारकी मुटाई १० फीट है । उसके ऊपर जहाँ रातमें रोशनी होती

है, और दिनमे झण्डा खडा किया जाता है, उसकी रोशनी चढ़नेकी सीढ़ियाँ बनी है । १८ मील तक देख पड़ती है । जहाजवाले उस रोशनी या झण्डेसे जहाजोंके ले आने या रोक रखनेके लिये इशारा समझ लते है ।

बम्बेका व्यापार और दस्तकारी—रुईका बहुत बडा बाजार कोलाबामे है । वहाँसे प्रतिसाल बहुतसी रुई दूसरे मुल्कोमे भेजी जाती है और बहुतसी बम्बेके लगभग ७० कल कारखानोमें खर्च होती है । लगभग ३० हजार आदमी रुईका काम करते हैं ।

परेलमे कपडोके बहुत मिल अर्थात् कल कारखाने है । वहाँ बडे बड़े मकानोमें कल द्वारा एक जगह कपाससे रुई निकाली, दूसरी जगह तूमी और तीसरी जगह धुनी जाती है, चौथी जगह उसकी पिउनी, पांचवीं जगह पतली पिउनी और छठवी जगह उससे भी पतली पिउनी होती है । इसी क्रमसे सूता तय्यार होकर एक कलमें करची बनती है। किसी जगह करचियोंसे नारा बनते हैं, किसी जगह नाराओसे कपडेकी तानी, किसी जगह भरनी होती है, इस तरहसे कपडे तय्यार होते है । एक जगह कलही द्वारा कपडोकी तह लगती है । इसी तरहसे रेशमके सिलमे रेशमी कपडे तय्यार होते हैं ।

बम्बेमें करीब ३००० जवाहिरी हैं, जिनका काम सर्वदा जारी रहता है । वहाँकी प्रसिद्ध दस्तकारियोंमेंसे पीतल और ताम्बाके बर्तनकी दस्तकारी है । मुम्बा देवीके तालाबके सामने ताम्बाका बाजार है । बम्बेकी काली लकड़ीकी नकाशी प्रसिद्ध है । चन्दनकी लकड़ी और दूसरी लकड़ियोंमें खासकर नकाशी होती है । बबईका आम बहुत प्रसिद्ध है, वहासे दूर दूर तक रेलगाडीमें आम भेजे जाते है । बबईमें सोना और चाँदीके तारका लेस बनता है । कारचोबीका बेश कीमत काम होता है । कुम्हारके काम सीखनेका स्कूल है । २८, ५६ और ८० रुपये भरीके सेर चलते है । बम्बे शहरमे कारबारकी २१९ कम्पनी हैं, जिनकी पूँजी १३ कोटि रुपयेसे अधिक है ।

देशी सौदागरोंमे पारसी प्रधान है, उनके बाद मारवाडी और गुजराती है । बंबईमें अरब, पारस, अफगानिस्तान. तुरकिस्तान, आफ्रिका इत्यादिके मुसलमान सौदागर रहते है, जो खास करके पारसकी खाडी, जञ्जीबार और अफ्रिकाके पूर्व किनारेके साथ तिजारत करते है । पारसी और यहूदी यूरपके साथ तिजारत करते हैं ।

बम्बई शहरका इतिहास—मुम्बा शब्दका अपभ्रंश बम्बे तथा बम्बई है । महाराष्ट्र भाषामें महाअम्बाको मुम्बा कहते हैं । महाअम्बा शिवरानी देवीजीका नाम है । कुछ लोगोंका मत है कि जब पोर्चुगल वालोंने बम्बईमें अपना वाणिज्य कायम किया, तब उन्होंने उसका नाम बन्बे अर्थात् उत्तम बन्दर रक्खा । उसके पीछे लोग बन्बेको बम्बे कहने लगे, जिसको मुम्बई तथा बम्बई भी कहते हैं ।

सन् १५३२ में पोर्चुगल वालोंने बम्बई टापूपर अपना अधिकार किया । सन् १६६१ में पोर्चुगलके बादशाहने लंदनके शाहजादे दूसरे चार्लससे अपनी लड़की कैथरिनका ब्याह किया और दूसरी वस्तुओंके साथ बम्बई टापूको भी दहेजमे दिया, किन्तु पोर्चुगीजोंने सन् १६६५ तक बम्बई अङ्गरेजोंके हवाले नहीं किया । सन् १६६८ में चार्लसने ईष्टइंडियन कम्पनीको १० पाउंड सालाना खिराजपर बम्बईको ठीका देदिया । उस समय बम्बई शहरमें केवल लगभग १०००० मनुष्य बसते थे; किन्तु उसकी उन्नति बडी तेजीसे होने लगी ।

कम्पनीने किलेबन्दीको दृढ किया, और यूरोपियन लोगोंको बसाया। दस्तकारी और तिजा-रतकी उन्नति होने लगी।

सन् १६७३ मे बम्बईके किलेमें १२० तोपें और टापूमे पोर्चुगीजोंकी कई एक गिरजा थीं। उस समय बम्बईकी मनुष्य-संख्या लगभग ६०००० होगई थी और कम्पनीकी प्रधान कोठी सूरत शहरमे थी, किन्तु सन् १६८७ में कम्पनीका सदर स्थान बम्बई हुई। सन् १७०८ में बम्बई एक स्वाधीन हाता बनाई गई। सन् १७७३ में वह कलकत्ताके गवर्नर जनरलके अधीन बनी। सन् १७८० मे बम्बई शहरकी मनुष्य-संख्या लगभग ६००००० होगई। सन् १८१८ में पूनाके बाजीराव पेशवाके परास्त होनेके पश्चात् बम्बई पश्चिमी भारतमे बहुत प्रसिद्ध और भारतवर्षके एक बडे देशकी राजधानी हुई।

बम्बई हाता—यह भारतवर्षके पश्चिम भागमे एक हाता है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर बलोचिस्तान, और खिलात, उत्तर और पूर्वोत्तर पञ्जाब देश और राजपूतानेके देशी राज्य, पूर्व मध्यदेशके देशी राज्य, मध्यदेश, बरार और हैदराबादका राज्य, दक्षिण मैसूरकी राज्य और मदरास हाता और पश्चिम अरबका समुद्र है। इसकी चौडाई बहुत कम है, किन्तु लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १०००मीलसे अधिक होगी। बम्बई हातेके उत्तर भागमें सिन्ध, मध्यमे गुजरात और दक्षिण भागमे महाराष्ट्र देश है। गुजरातके पश्चिमी भागको काठियावार प्राय द्वीप कहते है। बम्बई हातेके गवर्नर लगभग ८ मास बम्बई शहरमे और जुलाईसे लग-भग ४ मास तक पूनामे रहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिन्ध छोड करके बम्बई हातेका क्षेत्रफल ७७२७५ वर्गमील और सिन्धदेशका क्षेत्रफल ४७७८९ वर्गमील और दोनो मिल कर अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १२५०६४ वर्गमील और बडोदाको छोड करके बम्बई हातेके देशी राज्योंका क्षेत्र-फल ६९०४५ वर्गमील तथा बडोदाका क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील और दोनो मिलकर देशी राज्योंका क्षेत्रफल ७७२७१ वर्गमील और अङ्गरेजी राज्य तथा देशी राज्योंके साथ बम्बई हातेका क्षेत्रफल २०२३३५ वर्गमील था।

बम्बई हातेमे पहाड बहुत है,—हातेके पश्चिमोत्तर सिन्धनदीके दहिने किनारेपर सुलेमान पर्वतका भाग हाला और खरतरी पहाडी, सिन्ध प्रदेशमें बालदार नीची पहाडियोंके सिल-सिले कच्छ और काठियावारमे अर्वली पहाडके भागकी बहुतसी छोटी पहाडियाँ, उससे दक्षिण-पूर्व गुजरात और मध्य भारतके बीचमें फैला हुआ पहाडका जंजीरा, असीरगढके किलेके पडोससे गुजरात तक सतपुडा पहाडका सिलसिला, खानदेश और हैदराबादके राज्यकी सीमाके पास अजन्ता पहाडियाँ और पश्चिमीघाटपर सह्याद्रि पहाड है।

सिन्धदेशमे सिन्धनदी, गुजरातमें साबरमती और माही, जो माहीकण्ठा पहाडियोंसे निकलकर दक्षिण ओर बहती हुई काबेकी खाडीमे गिरती है, और माहीसे दक्षिण नर्मदा, तापती, नरावती, गोदावरी, कृष्णा और भीमा इत्यादि नदियाँ बहती हैं। बम्बई हातेमें कच्छकी खाडी और काबेकी खाडी कच्छ रान, सिन्धनदीके दहिने किनारेपर सेहवन कसबेके पास मन्छर झील और बम्बई शहरके पास बनाई हुई विहार झील तथा तुलसी झील है।

वम्बई हातेकी प्रधान फसिल अन्न और कपास है। समुद्रके पासके जिलोंमें नारियलके फल वहुत होते हैं, काली मिट्टीकी भूमिमें कपास और भूरी मिट्टीमें अन्न आदि फसिल होती है। गुजरात और उसके दक्षिणके देशमें कपास और ज्वार बाजड़ा वहुत उत्पन्न होता है। एकही समयमें किसी खेतमें ज्वार वोया जाता है और किसीमें काटा जाता है। कपासका खलिहान लगता है। पश्चिमी घाटपर अधिक वर्षा होनेके कारण गर्मी अधिक पडती है, किन्तु सिन्ध प्रदेशमें पानी कम वर्षता है और गर्मी वहुत अधिक होती है। गुजरातके बैल तथा गाय प्रसिद्ध हैं। वहाँके बैल और गाय वहुत बडे बडे तथा सुन्दर होते हैं। महाराष्ट्र देशमे शोलापुरके आसपास वहुत बडी सींग वाली भैंस देखनेमें आई, जिनमेंसे किसी किसीकी सींग ३ फीटसे अधिक लम्बी थीं। वम्बई हातेके सिन्ध प्रदेश और राजपूतानेमें वहुतसे ऊंट लादे जाते हैं और सवारीके काममें आते हैं।

भारतवर्षके अन्य प्रदेशोंकी अपेक्षा वम्बई हातेमें कल कारखाने वहुत अधिक हैं। कपड़े आदि अनेक भांतिकी वस्तु कल द्वारा तैयार करके वहाँसे भारतवर्षके शहरों तथा चीन आदि परदेशोंमें भेजी जाती है। इस समय वम्बई हातेके लगभग ९० कारखानोंमें ७०००० आदमी काम करते हैं।

महाराष्ट्र लोगोंमें अधिक लोग शैव और गुजरातियोंमे अधिक लोग वैष्णव मतके होते हैं। महाराष्ट्री और गुजराती लोगोंमे पुरुष धोती पहनते हैं और शिरपर वहुत बड़ी पगड़ी बाँधते हैं। महाराष्ट्र लोगोंकी स्त्रियाँ कच्छा देकर कमरमे रंगीन कपडा और देहमें चोली पहनती है तथा शिर उघार रखती हैं और गुजराती स्त्रियाँ घांघरी पहनकर ऊपरसे सारी ओढ़ती हैं। महाराष्ट्र और गुजराती हिन्दू प्राय सव लोग अपने वस्त्र आपही धोते हैं। शहरोंमे नदियोंके किनारोंपर कपडे धोने वालोंका दल देखनेमें आता है। वे लोग भीगाहुआ वस्त्र छू जानेपर उसको अपवित्र समझते है। बंबई हातेमें स्त्रीकी स्वाधीनता अति प्रबल है; उनमें महाराष्ट्री और पारसियोंकी स्त्रियाँ प्रधान है। व्याहकी बरातके साथ पुत्री वालेके घर स्त्रियाँभी जाती हैं। स्त्रियोंमें सोनेके भूषण पहननेकी अधिक चाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बंबई हातेकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भांति पढे हुए थे, प्रतिहजारमे ७६१ प्रभु और १६४ प्रभु जातिकी स्त्रियाँ, ६९७ वनिया श्रीमाली और १५ उस जातिकी स्त्रियाँ, ६८७ कायस्थ और २१२ उनकी स्त्रियाँ, ६४८ ब्रह्मशास्त्री और २६८ उनकी स्त्रियाँ, ६४५ ब्राह्मण और ३३ ब्राह्मणी और ५१८ साधारण वनियाँ और १८ उनकी स्त्रियाँ।

वम्बई हातेके (सिन्धको छोडकर) महाराष्ट्री, गुजराती, पारसी आदि सव लोग अपने नामके पीछे अपने पिताका नाम लिखते हैं तथा उच्चारण करते है। प्रत्येक आदमीके नामके बाद एक अन्य नाम सुना जाता है, वह पीछेवाला नाम उसके पिताका रहता है।

जैसे उत्तरी भारतमें विक्रमीय संवत् लिखनेकी वहुत चाल है, वैसे गुजरात और महाराष्ट्र तथा उसके पडोसके देशोंके सर्व साधारण लोगोंमें शालिवाहन शाकाका प्रचार है। वे लोग चैत सुदी एकमसे चैत मासका आरम्भ मानते हैं, इस कारणसे फागुनकी महा शिवरात्रिको वे लोग माघकी शिवरात्रि कहते हैं, क्योंकि उनका फागुन-फागुन सुदी एकमसे आरम्भ होता है।

विक्रमीय संवत्का प्रारम्भ उत्तरीय भारतमे चैत सुदी एकमसे होता है, किन्तु पश्चिमी भारतके लोग उसका आरम्भ कार्तिक सुदी एकमसे मानते है, इस लिये पश्चिमी विक्रमी संवत् उत्तरी विक्रमी संवत्से ७ मास पीछे आरम्भ होता है। जान पडता है कि विक्रमी संवत्का आरम्भ कार्तिक सुदी १ से और शक संवत्का चैत सुदी १ से था, किन्तु उत्तरी भारतवालोंने पीछे विक्रमी संवत्का आरम्भ भी शक संवत्के साथ चैत सुदी १ को मान लिया।

बम्बई आदि पश्चिमी भारतमें वडी धूमधामसे होली होती है। फाल्गुनकी पूर्णिमाको प्रायः प्रति महल्लो अथवा टोलोमें लोग पवित्र लकड़ियाँ या गोइठोंसे होलिका दहन करते है। चैत्रकी प्रतिपदाके दिन सब लोग इकट्ठे होकर परस्पर डण्डेका खेल खेलते है, अर्थात् अपने दोनो हाथोमे एक एक डण्डा लेकर एक आदमी दूसरे तथा तीसरे आदमीके डडोमें और दूसरा तथा तीसरा आदमी उसके डण्डोंमें मारता है। चैतवदी पञ्चमीको फाग उत्सव समाप्त होता है। महाराष्ट्र लोग प्रतिवर्ष भादोंमे वडी धूमधामसे गणपति उत्सव करते हैं (पूनाके वृत्तान्तमें देखिये)।

बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे बम्बई शहरको छोड करके ४ विभागमे २३ जिले है,—दक्षिणी विभागमें शोलापुर, सतारा, वेलगाव, धारवाड, बीजापुर, उत्तरी किनारा और रत्नागिरि नामक ७ जिले, मध्य विभागमें खानदेश, नासिक, अहमदनगर और पूना नामक ४ जिले, उत्तरी विभागमे अहमदाबाद, खेडा, पञ्चमहाल, भडाच, सूरत, थाना, और कुलावा ये ७ जिले, जिनमेंसे अहमदाबाद, खेडा, पंचमहाल, भड़ौच और सूरत ये ५ जिले गुजरातमें है, और सिन्ध देशमे कराची, हैदराबाद, "थर और परखर," सिकारपुर और अपरसिन्ध फान्टियर ये ५ जिले।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिन्धको छोड करके बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १५९८५२७० मनुष्य थे अर्थात् ८१९४४७७ पुरुष और ७७९०७९३ स्त्रिया। इनमे १४०८९६७४ हिन्दू, १२८६७६३ मुसलमान, २३९५१३ जैन, १५१००१ कृस्तान, १२५६८३ जङ्गली जातियों इत्यादि, ७२४११ पारसी, ९४२९ यहूदी, ६७१ बौद्ध, ९८ सिक्ख और २७ अन्य थे। इनमें सैकडे पीछे ५३$\frac{3}{4}$ महाराष्ट्री भाषावाले २०$\frac{3}{4}$ गुजराती भाषावाले, १५$\frac{1}{2}$ कनडी भाषावाले, ५$\frac{3}{4}$ उर्दू भाषावाले और ४$\frac{1}{4}$ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे।

बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेशमें २८७१७७४ मनुष्य थे, अर्थात् १५६८५९० पुरुष और १३०३१८४ स्त्रियों। इनमें २२१५१४७ मुसलमान, ५६७५२९, हिन्दू, ७७९३५ जङ्गली जातियों ७७६४ कृस्तान, १५३४ पारसी, ९२३ जैन, ७२० सिक्ख, २१० यहूदी और २ बौद्ध थे, जिनमें सैकडे पीछे ८३ सिन्धी भाषावाले, ६$\frac{1}{4}$ बलोच भाषावाले, ४$\frac{3}{4}$ मारवारी भाषावाले और ६ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे।

बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसबे, जिनमें सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,—

| नं० | नाम शहर | नाम जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| १ | बम्बई | बम्बई | ८२१७६४ |
| २ | पूना | पूना | १६१३९० |
| ३ | अहमदाबाद | अहमदाबाद | १४८४१२ |
| ४ | सूरत | सूरत | १०९२२९ |
| ५ | कराची | कराँची | १०५१९९ |
| ६ | हैदराबाद | हैदराबाद | ५८०४८ |
| ७ | शोलापुर | शोलापुर | ६१९१५ |
| ८ | हुबली | धारवाड | ५२५९५ |
| ९ | अदन | अदन | ४४०७९ |
| १० | शिकारपुर | शिकारपुर | ४२००४ |
| ११ | अहमदनगर | अहमदनगर | ४१६८९ |
| १२ | बेलगाँव | बेलगाँव | ४०७३७ |
| १३ | भड़ौच | भड़ौच | ४०१६८ |
| १४ | धारवाड़ | धारवाड | ३२८४१ |
| १५ | सतारा | सतारा | २९६०१ |
| १६ | सक्कर | शिकारपुर | २९३०२ |
| १७ | नडियाद | खेडा | २९०४८ |
| १८ | नासिक | नासिक | २४४२९ |
| १९ | गदग | धारवाड | २३८९९ |
| २० | वीरमगाँव | अहमदाबाद | २३२०९ |
| २१ | धूलिया | खानदेश | २१८८० |
| २२ | बारसी | शोलापुर | २०५६९ |
| २३ | पण्ढरपुर | शोलापुर | १९९५४ |
| २४ | मालेगाँव | नासिक | १९२६१ |
| २५ | योला | नासिक | १८८६१ |
| २६ | बन्दरा | थाना | १८३१७ |
| २७ | बगलकोट | बीजापुर | १८०३४ |
| २८ | थाना | थाना | १७४५५ |
| २९ | मालवन | रत्नागिरि | १७०५३ |
| ३० | बीजापुर | बीजापुर | १६७५९ |
| ३१ | धोलका | अहमदाबाद | १६४९४ |
| ३२ | धोपडा | खानदेश | १५६५५ |
| ३३ | अमरेठ | खेड़ा | १५६३८ |
| ३४ | कलाडगी | बीजापुर | १५४८१ |
| ३५ | धरनगाँव | खानदेश | १५०७२ |
| ३६ | कपडावञ्ज | खेडा | १४८०५ |
| ३७ | वलसर | सूरत | १४७७९ |
| ३८ | गोधडा | पचमहाल | १४६९१ |
| ३९ | जलगाँव | खानदेश | १४६७२ |
| ४० | कारवार | उत्तरी किनारा | १४५७९ |
| ४१ | परोला | खानदेश | १४४७८ |
| ४२ | भिम्वाडी | थाना | १४३८७ |
| ४३ | रत्नागिरि | रत्नागिरि | १४३०२ |
| ४४ | रनवेन्नर | धारवाड | १३७६१ |
| ४५ | भुसावल | खानदेश | १३१६९ |
| ४६ | दोहड | पचमहाल | १२९३५ |
| ४७ | कल्याण | थाना | १२६०८ |
| ४८ | राण्डोल | खानदेश | १२५५७ |
| ४९ | वाई | सतारा | १२४३८ |
| ५० | जकोबाबाद | अपरसिन्ध | १२३९६ |
| ५१ | बोरसाद | खेड़ा | १२१५९ |
| ५२ | गोकाक | बेलगाँव | १२१०६ |
| ५३ | करदा | सतारा | १२०८६ |
| ५४ | जम्बुसर | भडौच | १२०७२ |
| ५५ | लरखना | शिकारपुर | १२०१९ |
| ५६ | जुनीर | पूना | ११९०५ |
| ५७ | निपानी | बेलगाँव | ११७२८ |
| ५८ | चिपलून | रत्नागिरि | ११७१७ |
| ५९ | कुरला | थाना | ११४६९ |
| ६० | नसीराबाद | खानदेश | ११४६२ |
| ६१ | ऊरन | कुलाबा | ११४२२ |
| ६२ | अस्ता | सतारा | ११४०३ |
| ६३ | सङ्गमनेर | अहमदनगर | ११३६५ |
| ६४ | वसीन | थाना | ११२९१ |
| ६५ | तासगाँव | सतारा | ११२६१ |
| ६६ | हुलकाल | बीजापुर | ११२१६ |
| ६७ | किर्की | पूना | १०९५१ |
| ६८ | नान्देर | सूरत | १०९२६ |
| ६९ | यावल | खानदेश | १०८०० |

| नं० | नाम शहर | नाम जिला | जन-संख्या |
|---|---|---|---|
| ७० | कुमटा | उत्तरी कनारा | १०७१४ |
| ७१ | अकलेश्वर | भडौच | १०६९२ |
| ७२ | इसलामपुर | सतारा | १०६५७ |
| ७३ | पनवेल | कुलावा | १०४२० |
| ७४ | अथनी | वेलगॉव | १०९१६ |
| ७५ | शेरपुर | खानदेश | १०१४२ |
| ७६ | विगुरला | रत्नागिरि | १०१३४ |
| ७७ | खेडा | खेडा | १०१०१ |
| ७८ | धोलेडा | अहमदावाद | १००८८ |
| ७९ | शिनेर | नासिक | १००१२ |

वम्वई हातेमे वहुत देशी राज्य तथा जागीर है, किन्तु उनमेंसे वहुतसे अत्यन्त छोटे है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वडोदा राज्यको छोड करके वम्वई हातेके देशी राज्योमे ८०५९२९८ मनुष्य थे, अर्थात् ४१२०१२५ पुरुष और ३९३९१७३ स्त्रियॉ। इनमे ६७८१०६५ हिन्दू, ८५३८९२ मुसलमान, ३१४७७३ जैन, ९७६४१ जंगली जातियॉ, ८२३९ क्रुस्तान, २५११ पारसी, १०८२ यहूदी और ९५ सिक्ख थे, जिनमे सैकडे पीछे $६०\frac{३}{४}$ गुजराती भाषा वाले, $२२\frac{१}{८}$ महाराष्ट्री भाषा वाले, $७\frac{३}{४}$ कनडी भाषा वाले, $४\frac{३}{८}$ कच्छी भाषा वाले, ३ उर्दू वाले और २ अन्य भाषा वोलने वाले मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके अनुसार वम्वई हातेके गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्योका त्रिज,–

| नं० | देशी राज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | कसवा और गॉव | मकान | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | काठियावाड़ एजेंसी | २०५५९ | ४१६८ | ४०९४३५ | २३४३८९९ |
| २ | कोल्हापुर | २८१६ | १०६१ | १२९१४८ | ८००१८९ |
| ३ | पालनपुर एजेंसी | ८००० | ११०८ | १२५२३७ | ५७६४७८ |
| ४ | रवाकण्ठा एजेंसी | ४७९२ | ११०४ | १०९७३० | ५४३४५२ |
| ५ | दक्षिणी मरहटा जागीरे | २७३४ | ६०२ | ९०७९९ | ५२३७५३ |
| ६ | माहीकण्ठा एजेंसी | ११०४९ | १८१६ | ११७११२ | ५१७४८५ |
| ७ | कच्छ | ६५०० | ८९७ | १०२१०७ | ५१२०८४ |
| ८ | सताराकी जागीरे | ३३१४ | ७३६ | ४५६४६ | ३१८६८७ |
| ९ | सावत वाडी | ९०० | २२६ | ३०४४४ | १७४४३३ |
| १० | सूरत एजेंसी | १२२० | ३६९ | २७८९४ | १५११३० |
| ११ | खैरपुर (सिन्ध) | ६१०९ | ० | २५७२० | १२९१५३ |
| १२ | कांबे | ३५० | ८५ | २१७०२ | ८६०७४ |
| १३ | जञ्जीरा | ३२५ | २२६ | १४४२१ | ७६३६१ |
| १४ | खानदेश एजेंसी | २८४० | ४८६ | ११३१३ | ६०२७० |
| १५ | अक्कलकोट | ४९८ | १०५ | ८४९३ | ५८०४० |
| १६ | जवहर | ५३५ | ११६ | ८३०७ | ४८५५६ |
| १७ | सवानूर | ७० | २४ | २६४६ | १४७६३ |
| १८ | नारूकोट | १४३ | ५० | १३१३ | ६४४० |
| | जोड | ७३७५४ | १३१६१ | १३५१३३६७ | ६९४१०४२ |

वम्बई हातेके वड़े देशी राज्योका त्रिज,—

| न० | देशी-राज्य | देश | क्षेत्रफल वर्गमील | मनुष्य-सख्या सन् १८८१ | मालगुजारी |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | भावनगर .. | काठियावाड | २८६० | ४००३२३ | ३४००००० |
| २ | कच्छ .. | कच्छ .... ... . | ६५०० | ५१२०८४ | ३०००००० |
| ३ | नवानगर . | काठियावाड .. | ३७९१ | ३१६१४७ | २४००००० |
| ४ | कोल्हापुर ... | महाराष्ट्र .. ... | २८१६ | ८००१८९ | २३००००० |
| ५ | जूनागढ . | काठियावाड . | ३२७९ | ३८७४९९ | २१००००० |
| ६ | गोंडल .... | तथा ... .. | १०२४ | १३५६०४ | १२००००० |
| ७ | मोरवी .. . | तथा . .... | ८२१ | ८९९६४ | १०००००० |
| ८ | सङ्गली . | दक्षिणी महाराष्ट्र | ८९६ | १९६८३२ | ९८१००० |
| ९ | ध्रांगध्रा ..... | काठियावाड .. | ११५६ | ९९६८६ | ७५०००० |
| १० | कांवे ......... | गुजरात ... | ३५० | ८६०७४ | ६२५००० |
| ११ | राधनपुर .... | पालनपुर एजेंसी | ११५० | ५८१२९ | ६००००० |
| १२ | खैरपुर .... | सिन्ध .. .. | ६१०९ | १२९१५३ | ५५०००० |
| १३ | पोरवन्दर . .. | काठियावाड ... | ६३६ | ७१०७२ | ५५०००० |
| १४ | पालनपुर .. | पालनपुर एजेंसी | ३१५० | २३६४८१ | ५००००० |
| १५ | वाढ़वान . | काठियावाड . | २३६ | ४२५०० | ४५०००० |
| १६ | सावंतवाडी .. | महाराष्ट्र .. . | ९०० | १७४४३३ | ३२५००० |
| १७ | मीराज ..... | दक्षिणी महाराष्ट्र | ३४० | ६९६७२ | ३०००-० |
| १८ | लिंवडी ... | काठियावाड .. | ३४४ | ४३०६३ | २६४००० |
| १९ | राजकोट .... . | तथा ....... . | २८३ | ४६५४० | २०५००० |
| २० | वड़गाँव ..... | दक्षिणमहाराष्ट्र | २०८ | ३०५४१ | १६०००० |

वम्बई हातेके देशी राज्योंके शहर और कसवे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,—

| सं० | नाम कसवा | नाम राज्य | नाम एजेंसी | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|---|
| १ | भावनगर | भावनगर | काठियावाड | ५७६५३ |
| २ | नवानगर | नवानगर | काठियावाड | ४८५३० |
| ३ | कोल्हापुर | कोल्हापुर | महाराष्ट्र | ४५८१५ |
| ४ | मांडवी | कच्छ | कच्छ | ३८१५५ |
| ५ | जूनागढ़ | जूनागढ़ | काठियावाड़ | ३१६४० |
| ६ | कांवे | कांवे | गुजरात | ३१३९० |
| ७ | राजकोट | राजकोट | काठियावाड़ | २९२४७ |
| ८ | मीराज | मीराज | दक्षिणी मरहटा जागीर | २६०६० |

| नं० | नाम कसवा | नाम राज्य | नाम एजेंसी | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|---|
| ९ | भुज | कच्छ | कच्छ | २५४२१ |
| १० | वाढ़वान | वाढवान | काठियावाड | ३४६०४ |
| ११ | पालनपुर | पालनपुर | पालनपुर | २१०९२ |
| १२ | धोराजी | धोराजी | काठियावाड | २०४०६ |
| १३ | पोरवन्दर | पोरवन्दर | काठियावाड | १८८०५ |
| १४ | महुआ | महुआ | काठियावाड | १६७०७ |
| १५ | मोरवी | मोरवी | काठियावाड | १६३२५ |
| १६ | गोंडल | गोंडल | काठियावाड | १५३४३ |
| १७ | विरावल | जूनागढ़ | काठियावाड़ | १५३३९ |
| १८ | ध्रागड्रा | ध्रांगड्रा | काठियावाड | १५२०९ |
| १९ | सङ्गली | सङ्गली | दक्षिणी मरहटा जागीर | १४७९८ |
| २० | अञ्जर | कच्छ | कच्छ | १४४३२ |
| २१ | राधनपुर | राधनपुर | पालनपुर | १४१७५ |
| २२ | जैतपुर | जैतपुर | काठियावाड़ | १३६४६ |
| २३ | लिंवडी | लिंवडी | काठियावाड | १३४९७ |
| २४ | मङ्गरोल | मङ्गरोल | काठियावाड | १३००५ |
| २५ | जमखण्डी | जमखण्डी | दक्षिणी मरहटा जागीर | १२५०४ |
| २६ | मङ्गलवेधा | मङ्गलवेधा | तथा | १२२७० |
| २७ | शाहपुर | शाहपुर | तथा | ११९६१ |
| २८ | लक्ष्मणेश्वर | लक्ष्मणेश्वर | तथा | ११८४३ |
| २९ | इचलकरञ्जी | कोल्हापुर | महाराष्ट्र | ११२०० |
| ३० | नांदोद | नांदोद | रेवाकण्ठा | १०८१९ |
| ३१ | पलताना | फलताना | सताराकी जागीर | १०५६४ |
| ३२ | पालीटाणा | पालीटाणा | काठियावाड | १०४४२ |
| ३३ | माडवा | कच्छ | कच्छ | १०४३३ |
| ३४ | लुनवाडा | लुनवाड़ा | रेवाकण्ठा | १०१०१ |
| ३५ | सिहोर | सिहोर | काठियावाड | १०००५ |

बम्बई हातेका इतिहास—प्राचीन समयमें वर्त्तमान बम्बई हाता बहुतसे स्वाधीन राजाओंके अधिकारमें बँटा हुआ था । अजंता आदिकी गुफाओं और गिरिनार आदिके चट्टानी लेखोंसे विदित होता है कि सन् ईस्वीके आरम्भके पहिले तथा आरम्भके समय बम्बई हातेमें बौद्ध तथा जैन लोगोंके मतकी प्रबलता थी । अब तक बम्बई हातेमें जैन लोग बहुत है । महाभारत तथा पुराणोंसे विदित होता है कि अति पूर्वकालमें भारतके दक्षिण, आनर्त, सिन्ध, सौवीर, महाराष्ट्र गुजराष्ट्र या गुर्जर, जिसको अब गुजरात कहते हैं, सौराष्ट्र, जिसको काठियावाड़ कहते हैं, इत्यादि देशोंके नामसे वर्त्तमान बम्बई हाता बहुतसे हिन्दू राजाओंके राज्यमें विभक्त था । पुराने सिक्कों, शिला लेखों और तांबेके दानपत्रोंके लेखोंसे, जो कई एक स्थानोंमें बहुत मिले हैं, ज्ञात हुआ

है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग १००० वर्षके भीतर उन देशोंमें राजपूतोंने राज्य किया था। उनमें अधिक प्रतापी वल्लभी और चालुक्य वंशके राजा थे।

मुसलमानोंने पहिले सिन्धमें अपना अधिकार किया। सन १०२४ में गजनीके महमूदने गुजरातपर चढ़ाई करके सोमनाथके मन्दिरका धन लूटा। उस समय गुजरातके हिन्दू राजा, जिनकी राजधानी अनहिलवाडा, जिसको अब पाटन कहते हैं, था, मुसलमानोंके आक्रमणसे बच गये। सन् १२९७ मे दिल्लीके अलाउद्दीनके सेनापति अलफखाँने उनके राज्यका विनाश किया। उस समयसे सन् १४०३ तक दिल्लीके नियत किये हुए डिपोटी लोग गुजरातपर हुकूमत करते रहे। उनमेंसे जाफरखाँने एक स्वाधीन राज्य कायम किया। सन् १४१३ में पहिले सुलतान अहमदने असावलके पास अहमदाबाद शहरको बसा कर उसको अपनी राजधानी बनाया। अहमदके बराबर बड़े प्रतापी और विभवशाली हुए थे। सन् १५७३ में दिल्लीके अकबरने स्वयं सेनापति बनकर गुजरातको जीता। १७ वीं सदीमे महाराष्ट्रोंके प्रभाव बढ़नेपर भी उस देशके दक्षिण भागमें मुसलमानोंका अधिकार कायम था, किन्तु सन् १७०७ मे औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् उनके सम्पूर्ण देखलाऊ अधिकार जाते रहे। सन् १७५७ मे महाराष्ट्रोंने अहमदाबादके साथ गुजरातको लेलिया।

सन् १२९४—१२९५ मे अलाउद्दीनने डेकान अर्थात् दक्षिणके कई शहरोंको जीता। १४ वीं सदीमें महम्मद तुगलकके राज्यके समय बहमनी खानदानके अहमदशाहने तुगलकसे बागी होकर अपना एक स्वाधीन राज्य कायम किया। उसकी राजधानी पहिले गुलबर्गा और पीछे बीदर था। लगभग सन् १४९० मे बहमनी बादशाहत टूट गई और बीजापुर तथा अहमदनगरका राज्य कायम हुआ। १६ वीं सदीके अन्तके भागमें दिल्लीके बादशाहने उन स्वाधीन राज्योंका दबाना आरम्भ किया। सन् १६३७ मे अहमदनगरका राज्य दिल्ली और बीजापुरके बादशाहोंमे बांट लिया गया। सन् १६८४ मे दिल्लीके औरङ्गजेबने बीजापुरको ले लिया। महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी, जिनका जन्म सन् १६२७ मे था, औरङ्गजेबसे लडते हुए दक्षिणमें स्वाधीन बनकर सन् १६७४ मे रायगढ़मे बड़े शानसे राजसिंहासनपर बैठे। सन् १६८० में शिवाजीका देहान्त होगया। १८ वीं सदीमें पूनाके पेशवा और बडोदाके गायकवाड़ बम्बई हातेमे अधिक प्रसिद्ध हुए, उन्होंने उस देशके बड़े हिस्सेसे 'कर' लिया।

यूरोपियन लोगोंमे पोर्चुगाल वाले पहिले पहिल हिन्दुस्तानमें आये। सन् १४९८ में पोर्चुगलका "वास्कोडीगामा" पश्चिमी किनारेके कलीकोटमे उतरा। उसके ५ वर्ष बाद बडे अलवुकर्कने गोआको जीता। सन् १५३२ में पोर्चुगाल वालोंने बम्बई टापूको अपने अधिकारमें किया। सन् १६०८ मे अङ्गरेजोंका जहाज सूरत शहरमे पहुँचा। उस समय सूरत हिन्दुस्तानकी तिजारतका प्रधान स्थान थी। सन् १६१३ मे अङ्गरेजोंने दिल्लीके बादशाह जहाँगीरसे इजाजत लेकर सूरतमे अपनी कोठी कायम की। सन् १६१८ मे हालेण्ड वालोंने भी वैसीही इजाजत ली। सन् १६६१ मे पोर्चुगालके बादशाहने लन्दनके बादशाहको दहेजमें बम्बईका टापू देदिया (बम्बई शहरके इतिहासमें देखिये)। सन् १७०८ मे ईष्टइण्डियन कम्पनीने बम्बई हाता नियत किया। सन् १७७३ में बंबई हाता कलकतेके गवर्नर जनरलके अधीन बनाया गया।

सन् १७५६ में बम्बईके गवर्नरने पेशवाके साथ मिलकर सुवर्णदुर्गके बन्दरगाहको छीन लिया और अङ्गरेजोंने विजयदुर्गको जीता, जिससे समुद्रके डाकू निर्बल होगये। सन् १७७४ मे महाराष्ट्रोंके साथ अङ्गरेजोंकी लडाई आरम्भ हुई। सन् १७८२ में सालबाईकी सन्धि द्वारा अङ्गरेजोंको सालसट, एलिफेंटा, करंजा और हाग इन ४ टापुओंपर अधिकार होगया। बसीन और गुजरातकी जीती हुई सब वस्तु अङ्गरेजोंने पेशवाको लौटा दी। सिन्धियाको भडौच शहर मिला। सूरतका किला सन् १७५९ में अङ्गरेजोंके अधिकारमे होचुका था। सन्१८००में वहांके नव्वाबने उस शहरका सम्पूर्ण प्रबन्ध अङ्गरेजोंके अधीन करदिया। सन् १८०३ और १८०४ मे दूसरी बार महाराष्ट्रोंसे अङ्गरेजोंकी लडाई हुई, जिससे वर्तमान सूरत, भडौच और खेडा जिलेके साथ गुजरातका बहुत बड़ा भाग अङ्गरेजी अधिकारमें होगया। सन् १८१७ में महाराष्ट्रोंकी तीसरी लडाई आरम्भ हुई। पेशवाके परास्त होनेपर पूना, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, बेलगांव, बीजापुर, धारवाड, अहमदाबाद और कोकन जिला अङ्गरेजी राज्यमे सब मिल गये। उसी समय हुलकरने खानदेश जिलेका अपना अधिकार अङ्गरेजोंको दे दिया। सन् १८४८ मे सतारा जिला अङ्गरेजी राज्यमे मिला लिया गया। सन् १८६१ में उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेसे बम्बई हातेमे कर दिया गया।

## लिफैंटाके गुफामन्दिर।

बम्बई शहरके किलेके स्थानसे ६ मील दूर ( १८ अंश, ५७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, पूर्व देशान्तरमें ) थाना जिलेमे एलिफेंटा नामक टापू है, जिसको देशी लोग घारापुरी तथा गोरापुरीका टापू कहते है। टापूका घेरा समुद्रके ज्वार और भाटाके अनुसार ४ मीलसे ४½ मील तक और क्षेत्रफल ४ वर्गमीलसे ६ वर्गमील तक रहता है। उस टापूमें एक तङ्ग घाटीके दोनों ओर एक एक लम्बी पहाडी है। पहाडीका सबसे ऊंचा शृङ्ग समुद्रके जलसे ५६७ फीट ऊंचा है। पूर्व और पूर्वोत्तरके अतिरिक्त टापूके सम्पूर्ण बगलोंमें जङ्गली झाडी लगी है। टापूके पश्चिमोत्तर बगलमें नाव लगनेकी जगह है। प्रतिवर्ष हजारों आदमी बम्बईके अपोलो बन्दरसे नावमें अथवा स्टीमलचंम सवार होकर एलिफेंटाकी गुफाओंको देखनेके लिये उस टापूमें जाते है। शिवरात्रिको वहाँ एक मेला होता है। शिवके त्योहारोंमें बहुत लोग त्रिमूर्त्तिके दर्शनको जाते है। उस टापूमें पानीका एक गाड है।

गुफामन्दिरोंके होनेके कारण एलिफेंटा टापू प्रसिद्ध है। वहाँ हिन्दुओंके ५ गुफा मन्दिर है, जिनमेसे ४ दुरुस्त अथवा प्राय दुरुस्त है, किन्तु पाचवां ( एक बडा गुफा मन्दिर ) पत्थरोंसे भर गया है। वहाँके गुफामन्दिरो तथा देव मूर्त्तियोंमें पत्थर अथवा ईटोंके जोड़ नहीं है. उसी पहाडीके भीतरसे पत्थर खनकर, उसी जगह मन्दिर, स्तम्भ और प्रतिमा सब [illegible] बनाई गई थी, जो अबतक विद्यमान है।

[illegible] टापूके पश्चिमवाली बडी पहाडीके बगलमें समुद्रके ज्वारके पानीसे २५० फीट [illegible] त्रिमूर्त्तिकी गुफा अति मनोरम है। उसमें बहुत यात्री जाते है। नावसे उतरनेके [illegible] फीट दूर उस गुफाका दरवाजा है। उत्तर मुखकी गुफा है। वह [illegible] दरवा- [illegible] १३० फीट लम्बी और पूर्वके बगलमें पश्चिमके बगल तक [illegible] [illegible] नहीं है। [illegible], जो तीन ओरसे गुफा

है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग १००० वर्षके भीतर उन देशोंमें राजपूतोंने राज्य किया था । उनमें अधिक प्रतापी वल्लभी और चालुक्य वंशके राजा थे ।

मुसलमानोंने पहिले सिन्धमें अपना अधिकार किया । सन् १०२४ में गजनीके महमूदने गुजरातपर चढ़ाई करके सोमनाथके मन्दिरका धन लूटा । उस समय गुजरातके हिन्दू राजा, जिनकी राजधानी अनहिलवाडा, जिसको अब पाटन कहते हैं, था, मुसलमानोंके आक्रमणसे बच गये । सन् १२९७ में दिल्लीके अलाउद्दीनके सेनापति अलफखॉने उनके राज्यका विनाश किया । उस समयसे सन् १४०३ तक दिल्लीके नियत किये हुए डिपोटी लोग गुजरातपर हुकूमत करते रहे । उनमेंसे जाफरखॉने एक स्वाधीन राज्य कायम किया । सन् १४११ से पहिले सुलतान अहमदने असावलके पास अहमदाबाद शहरको बसा कर उसको अपनी राजधानी बनाया । अहमदके वंशधर बडे प्रतापी और विभवशाली हुए थे । सन् १५७३ में दिल्लीके अकबरने स्वयं सेनापति बनकर गुजरातको जीता । १७ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंके प्रभाव बढनेपर भी उस देशके दक्षिण भागमें मुसलमानोंका अधिकार कायम था; किन्तु सन् १७०७ में औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् उनके सम्पूर्ण देखलाऊ अधिकार जाते रहे । सन् १७५७ में महाराष्ट्रोंने अहमदाबादके साथ गुजरातको लेलिया ।

सन् १२९४—१२९५ में अलाउद्दीनने डेकान अर्थात् दक्षिणके कई शहरोंको जीता । १४ वीं सदीमें महम्मद तुगलकके राज्यके समय वहमनी खानदानके अहमदशाहने तुगलकसे बागी होकर अपना एक स्वाधीन राज्य कायम किया । उसकी राजधानी पहिले गुलबर्गा और पीछे बीदर था । लगभग सन् १४९० में वहमनी बादशाहत टूट गई और बीजापुर तथा अहमदनगरका राज्य कायम हुआ । १६ वीं सदीके अन्तके भागमें दिल्लीके बादशाहने उन स्वाधीन राज्योंका दबाना आरम्भ किया । सन् १६३७ में अहमदनगरका राज्य दिल्ली और बीजापुरके बादशाहोंमें बाट लिया गया । सन् १६८४ में दिल्लीके औरङ्गजेबने बीजापुरको ले लिया । महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी, जिनका जन्म सन् १६२७ में था, औरङ्गजेबसे लडते हुए दक्षिणमें स्वाधीन बनकर सन् १६७४ में रायगढ़में बड़े शानसे राजसिंहासनपर बैठे । सन् १६८० में शिवाजीका देहान्त होगया । १८ वीं सदीमें पूनाके पेशवा और बड़ोदाके गायकवाड़ बम्बई हातेमें अधिक प्रसिद्ध हुए, उन्होंने उस देशके बडे हिस्सेसे 'कर' लिया ।

यूरोपियन लोगोंमें पोर्चुगाल वाले पहिले पहिल हिन्दुस्तानमें आये । सन् १४९८ में पोर्चुगलका "वास्कोडीगामा" पश्चिमी किनारेके कलीकोटमें उतरा । उसके ५ वर्ष बाद बडे अलबुकर्कने गोआको जीता । सन् १५३२ में पोर्चुगाल वालोंने बम्बई टापूको अपने अधिकारमें किया । सन् १६०८ में अङ्गरेजोंका जहाज सूरत शहरमें पहुँचा । उस समय सूरत हिन्दुस्तानकी तिजारतका प्रधान स्थान थी । सन् १६१३ में अङ्गरेजोंने दिल्लीके बादशाह जहाँगीरसे इजाजत लेकर सूरतमें अपनी कोठी कायम की । सन् १६१८ में हालेण्ड वालोंने भी वैसीही इजाजत ली । सन् १६६१ में पोर्चुगालके बादशाहने लन्दनके बादशाहको दहेजमें बम्बईका टापू देदिया ( बम्बई शहरके इतिहासमें देखिये ) । सन् १७०८ में ईष्टइण्डियन कम्पनीने बम्बई हाता नियत किया । सन् १७७३ में बंबई हाता कलकत्तेके गवर्नर जनरलके अधीन बनाया गया ।

सन् १७५६ मे वम्बईके गवर्नरने पेशवाके साथ मिलकर सुवर्णदुर्गके बन्दरगाहको छीन लिया और अङ्गरेजोंने विजयदुर्गको जीता, जिससे समुद्रके डाकू निर्बल होगये । सन् १७७४ मे महाराष्ट्रोंके साथ अङ्गरेजोंकी लडाई आरम्भ हुई । सन् १७८२ मे सालबाईकी सन्धि द्वारा अङ्गरेजोंको सालसट, एलिफेंटा, करंजा और हाग इन ४ टापुओंपर अधिकार होगया । बसीन और गुजरातकी जीती हुई सब वस्तु अङ्गरेजोंने पेशवाको लौटा दी । सिन्धियाको भडौच शहर मिला । सूरतका किला सन् १७५९ मे अङ्गरेजोके अधिकारमे होचुका था । सन्१८००मे वहाँके नव्वाबने उस शहरका सम्पूर्ण प्रबन्ध अङ्गरेजोके अधीन करदिया । सन् १८०३ और १८०४ मे दूसरी बार महाराष्ट्रोंसे अङ्गरेजोंकी लडाई हुई, जिससे वर्तमान सूरत, भडौच और खेडा जिलेके साथ गुजरातका बहुत बडा भाग अङ्गरेजी अधिकारमें होगया । सन् १८१७ में महाराष्ट्रोंकी तीसरी लडाई आरम्भ हुई । पेशवाके परास्त होनेपर पूना, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, बेलगांव, बीजापुर, धारवाड, अहमदाबाद और कोकन जिला अङ्गरेजी राज्यमे सब मिल गये । उसी समय हुलकरने खानदेश जिलेका अपना अधिकार अङ्गरेजोंको दे दिया । सन् १८४८ मे सतारा जिला अङ्गरेजी राज्यमे मिला लिया गया । सन् १८६१ में उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेसे वम्बई हातेमे कर दिया गया ।

## लिफेंटाके गुफामन्दिर ।

वम्बई शहरके किलेके स्थानसे ६ मील दूर ( १८ अंश, ५७ कला उत्तर अक्षाश और ७३ अंश, पूर्व देशान्तरमें ) थाना जिलेमे एलिफेंटा नामक टापू है, जिसको देशी लोग धारापुरी तथा गोरापुरीका टापू कहते है । टापूका घेरा समुद्रके ज्वार और भाटाके अनुसार ४ मीलसे ४½ मील तक और क्षेत्रफल ४ वर्गमीलसे ६ वर्गमील तक रहता है । उस टापूमें एक तङ्ग घाटीके दोनों ओर एक एक लम्बी पहाडी हैं । पहाडीका सबसे ऊँचा शृङ्ग समुद्रके जलसे ५६७ फीट ऊँचा है । पूर्व और पूर्वोत्तरके अतिरिक्त टापूके सम्पूर्ण बगलोंमें जङ्गली झाडी लगी है । टापूके पश्चिमोत्तर बगलमें नाव लगनेकी जगह है । प्रतिवर्ष हजारों आदमी वम्बईके अपोलो बन्दरसे नावमें अथवा स्टीमलंचमें सवार होकर एलिफेंटाकी गुफाओंको देखनेके लिये उस टापूमें जाते है । शिवरात्रिको वहाँ एक मेला होता है । शिवके त्यौहारोंमें बहुत लोग त्रिमूर्त्तिके दर्शनको जाते हैं । उस टापूमें पानीका एक गाड है ।

गुफामन्दिरोंके होनेके कारण एलिफेंटा टापू प्रसिद्ध है । वहाँ हिन्दुओंके ५ गुफा मन्दिर हैं, जिनमेसे ४ दुरुस्त अथवा प्रायः दुरुस्त है, किन्तु पांचवाँ ( एक बड़ा गुफा मन्दिर ) पत्थरोंसे भर गया है । वहाँके गुफामन्दिरों तथा देव मूर्त्तियोंमें पत्थर अथवा ईटोंके जोड़ नहीं है, उसी पहाड़ीके भीतरसे पत्थर खनकर, उसी जगह मन्दिर, स्तम्भ और प्रतिमा सब कुछ बनाई गई थीं, जो अबतक विद्यमान हैं ।

उनमें टापूके पश्चिमवाली वडी पहाडीके वगलमें समुद्रके ज्वारके पानीसे २५० फीट ऊपर त्रिमूर्त्तिकी गुफा अधिक मनोरम है । उसमें बहुत यात्री जाते हैं । नावसे उतरनेके स्थानसे ¾ मील दूर उस गुफाका दरवाजा है । उत्तर मुखकी गुफा है । वह आगेके दरवाजेसे पीछेकी दीवार तक १३० फीट लम्बी और पूर्वके वगलसे पश्चिमके वगल तक इतनीही चौडी है, किन्तु उसका फर्श चौकोना नहीं है । आगेका ओसारा, जो तीन ओरसे खुला

है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग १००० वर्षसे भीतर उन देशोंमें राजपूतोंने राज्य किया था। उनमें अधिक प्रतापी वल्लभी और चालुक्य वंशके राजा थे।

मुसलमानोंने पहिले सिन्धमें अपना अधिकार किया। सन् १०२४ में गजनीके महमूदने गुजरातपर चढ़ाई करके सोमनाथके मन्दिरका धन लूटा। उस समय गुजरातके हिन्दू राजा, जिनकी राजधानी अनहिलवाडा, जिसको अब पाटन कहते हैं, था, मुसलमानोंके आक्रमणसे बच गये। सन् १२९७ में दिल्लीके अलाउद्दीनके सेनापति अलफखाँने उनके राज्यका विनाश किया। उस समयसे सन् १४०३ तक दिल्लीके नियत किये हुए डिपोटी लोग गुजरातपर हुकूमत करते रहे। उनमेंसे जाफरखाँने एक स्वाधीन राज्य कायम किया। सन् १४१३ से पहिले सुलतान अहमदने असावलके पास अहमदाबाद शहरको बसा कर उसको अपनी राजधानी बनाया। अहमदके वंशधर बडे प्रतापी और विभवशाली हुए थ। सन् १५७३ में दिल्लीके अकबरने स्वयं सेनापति बनकर गुजरातको जीता। १७ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंके प्रभाव बढनेपर भी उस देशके दक्षिण भागमें मुसलमानोंका अधिकार कायम था, किन्तु सन् १७०७ में औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् उनके सम्पूर्ण देखलाऊ अधिकार जाते रहे। सन् १७५७ मे महाराष्ट्रोंने अहमदाबादके साथ गुजरातको लेलिया।

सन् १२९४—१२९५ मे अलाउद्दीनने डेकान अर्थात् दक्षिणके कई शहरोंको जीता। १४ वीं सदीमें महम्मद तुगलकके राज्यके समय बहमनी खानदानके अहमदशाहने तुगलकसे बागी होकर अपना एक स्वाधीन राज्य कायम किया। उसकी राजधानी पहिले गुलबर्गा और पीछे बीदर था। लगभग सन् १४९० में बहमनी बादशाहत टूट गई और बीजापुर तथा अहमदनगरका राज्य कायम हुआ। १६ वीं सदीके अन्तके भागमें दिल्लीके बादशाहने उन स्वाधीन राज्योंका दबाना आरम्भ किया। सन् १६३७ मे अहमदनगरका राज्य दिल्ली और बीजापुरके बादशाहोंसे बांट लिया गया। सन् १६८४ मे दिल्लीके औरङ्गजेबने बीजापुरको ले लिया। महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी, जिनका जन्म सन् १६२७ मे था, औरङ्गजेबसे लड़ते हुए दक्षिणमें स्वाधीन बनकर सन् १६७४ मे रायगढ़में बड़े शानसे राजसिंहासनपर बैठे। सन् १६८० में शिवाजीका देहान्त होगया। १८ वीं सदीमें पूनाके पेशवा और बड़ोदाके गायकवाड़ बम्बई हातेमें अधिक प्रसिद्ध हुए, उन्होने उस देशके बडे हिस्सेसे 'कर' लिया।

यूरोपियन लोगोंमे पोर्चुगाल वाले पहिले पाहिल हिन्दुस्तानमें आये। सन् १४९८ में पोर्चुगलका "वास्कोडीगामा" पश्चिमी किनारेके कलीकोटमे उतरा। उसके ५ वर्ष बाद बडे अलबुकर्कने गोआको जीता। सन् १५३२ मे पोर्चुगाल वालोंने बम्बई टापूको अपने अधिकारमें किया। सन् १६०८ में अङ्गरेजोंका जहाज सूरत शहरमे पहुंचा। उस समय सूरत हिन्दुस्तानकी तिजारतका प्रधान स्थान थी। सन् १६१३ मे अङ्गरेजोंने दिल्लीके बादशाह जहाँगीरसे इजाजत लेकर सूरतमे अपनी कोठी कायम की। सन् १६१८ मे हालेण्ड वालोंने भी वैसीही इजाजत ली। सन् १६६१ मे पोर्चुगालके बादशाहने लन्दनके बादशाहको दहेजमें बम्बईका टापू देदिया ( बम्बई शहरके इतिहासमें देखिये )। सन् १७०८ मे ईष्टइण्डियन कम्पनीने बम्बई हाता नियत किया। सन् १७७३ मे बंबई हाता कलकत्तेके गवर्नर जनरलके अधीन बनाया गया।

सन् १७५६ मे बम्बईके गवर्नरने पेशवाके साथ मिलकर सुवर्णदुर्गके बन्दरगाहको छीन लिया और अङ्गरेजोने विजयदुर्गको जीता, जिससे समुद्रके डाकू निर्बल होगये। सन् १७७४ मे महाराष्ट्रोके साथ अङ्गरेजोंकी लडाई आरम्भ हुई। सन् १७८२ में सालबाईकी सन्धि द्वारा अङ्गरेजोंको सालसट, एलिफेंटा, करंजा और हाग इन ४ टापुओंपर अधिकार होगया। बसीन और गुजरातकी जीती हुई सब वस्तु अङ्गरेजोने पेशवाको लौटा दी। सिन्धियाको भडौच शहर मिला। सूरतका किला सन् १७५९ मे अङ्गरेजोके अधिकारमे होचुका था। सन्१८००मे वहाँके नव्वाबने उस शहरका सम्पूर्ण प्रबन्ध अङ्गरेजोके अधीन करादिया। सन् १८०३ और १८०४ मे दूसरी बार महाराष्ट्रोसे अङ्गरेजोकी लडाई हुई, जिससे वर्तमान सूरत, भडौच और खेडा जिलेके साथ गुजरातका बहुत बडा भाग अङ्गरेजी अधिकारमें होगया। सन् १८१७ में महाराष्ट्रोकी तीसरी लडाई आरम्भ हुई। पेशवाके परास्त होनेपर पूना, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, बेलगांव, बीजापुर, धारवाड, अहमदाबाद और कोकन जिला अङ्गरेजी राज्यमे सब मिल गये। उसी समय हुलकरने खानदेश जिलेका अपना अधिकार अङ्गरेजोंको दे दिया। सन् १८४८ मे सतारा जिला अङ्गरेजी राज्यमे मिला लिया गया। सन् १८६१ में उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेसे बम्बई हातेमे कर दिया गया।

## लिफेंटाके गुफामन्दिर।

बम्बई शहरके किलेके स्थानसे ६ मील दूर (१८ अंश, ५७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, पूर्व देशान्तरमें) थाना जिलेमे एलिफेंटा नामक टापू है, जिसको देशी लोग धारापुरी तथा गोरापुरीका टापू कहते है। टापूका घेरा समुद्रके ज्वार और भाटाके अनुसार ४ मीलसे ४½ मील तक और क्षेत्रफल ४ वर्गमीलसे ६ वर्गमील तक रहता है। उस टापूमें एक तङ्ग घाटीके दोनों ओर एक एक लम्बी पहाडी हैं। पहाडीका सबसे ऊँचा शृङ्ग समुद्रके जलसे ५६७ फीट ऊँचा है। पूर्व और पूर्वोत्तरके अतिरिक्त टापूके सम्पूर्ण बगलोंमें जङ्गली झाडी लगी है। टापूके पश्चिमोत्तर बगलमें नाव लगनेकी जगह है। प्रतिवर्ष हजारों आदमी बम्बईके अपोलो बन्दरसे नावमें अथवा स्टीमलंचमें सवार होकर एलिफेंटाकी गुफाओको देखनेके लिये उस टापूमें जाते हैं। शिवरात्रिको वहाँ एक मेला होता है। शिवके त्यौहारोंमें बहुत लोग त्रिमूर्त्तिके दर्शनको जाते है। उस टापूमे पानीका एक गाड है।

गुफामन्दिरोके होनेके कारण एलिफेंटा टापू प्रसिद्ध है। वहाँ हिन्दुओके ५ गुफा मन्दिर हैं, जिनमेसे ४ दुरुस्त अथवा प्रायः दुरुस्त है, किन्तु पांचवां (एक बडा गुफा मन्दिर) पत्थरोंसे भर गया है। वहाँके गुफामन्दिरो तथा देव मूर्त्तियोंमें पत्थर अथवा ईंटोके जोड़ नहीं है, उसी पहाडीके भीतरसे पत्थर खनकर, उसी जगह मन्दिर, स्तम्भ और प्रतिमा सब कुछ बनाई गई थीं, जो अबतक विद्यमान हैं।

उनमें टापूके पश्चिमवाली बडी पहाडीके बगलमें समुद्रके ज्वारके पानीसे २५० फीट ऊपर त्रिमूर्त्तिकी गुफा अधिक मनोरम है। उसमें बहुत यात्री जाते हैं। नावसे उतरनेके स्थानसे ¾ मील दूर उस गुफाका दरवाजा है। उत्तर मुखकी गुफा है। वह आगेके दरवाजेसे पीछेकी दीवार तक १२० फीट लम्बी और पूर्वके बगलसे पश्चिमके बगल तक इतनीही चौडी है, किन्तु उसका फर्श चौकोना नहीं है। आगेका ओसारा, जो तीन ओरसे खुला

हुआ है, ५५ फीट लंबा और आगेसे पीछे तक १६ फीट चौड़ा है। ओसारे और पीछेके भागको छोड़ करके गुफाका खास अंग ९१ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। उसमें ६ पंक्तियोंमें २६ स्तंभ और १६ बगलवाले स्तंभ थे, जिनमेंसे ८ स्तंभ टूट फूट गये हैं और दूसरोंको भी हानि पहुँची है। नीचेका फर्श और ऊपरकी छतकी ऊँचाई एक समान नहीं हैं, इससे स्तंभ १५ फीटसे १७ फीट तक ऊँचे होते हैं।

गुफा अर्थात् गुफामन्दिरके भीतर उसकी पिछली दीवारके पास एकही साथ ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रकी मूर्त्ति बनी हुई हैं, जिनको त्रिमूर्त्ति कहते हैं। उनमेंसे सामने अर्थात् उत्तर ब्रह्मा, पश्चिम विष्णु और पूर्व रुद्रकी मूर्त्ति है। तीनो मूर्त्तियोंके केवल गले और मुख-मण्डल मात्र हैं। इस मूर्त्तिकी उँचाई १८ फीट और आंखके सामनेके सिरका घेरा २२ फीट है। त्रिमूर्त्तिके पास अङ्ग भङ्ग किये हुए तेरह तेरह फीट ऊँचे दो द्वारपाल हैं। त्रिमूर्त्तिके दोनो तरफ दो कमरोमे बहुतसी मूर्त्तियाँ बनाई हुई हैं, जिनमेंसे पूर्ववाले कमरेमे १७ फीट ऊँचा अर्द्धनारीश्वर शिव, शिवके दहिने कमलासन पर बैठे हुए ब्रह्मा और कमलासनके नीचे हंसोंकी ५ प्रतिमा और अर्द्धनारीश्वरके बाये गरुड़पर चढ़े हुए विष्णु हैं। त्रिमूर्त्तिके पश्चिमवाले कमरेमे १६ फीट ऊँची शिवकी और १२ फीट ऊँची पार्वतीकी प्रतिमा है। एक दूसरे कमरेमे शिव और पार्वतीके व्याहके समयकी प्रतिमा बनी हुई हैं;—शिवजीके दहिने पार्वती खडी हैं। हिमवान् और उनकी भार्या शिवको पार्वतीको समर्पण कर रहे है। एक कमरेमे शिवलिंग और अनेक बडे द्वारपाल हैं। गुफाके पश्चिम भागके कमरेमें कपालभृत् शिवकी ११ फीट ऊँची मूर्त्ति है। गुफाके भीतर एक स्थानमें रावण कैलास पर्वतको उठा रहा है। पर्वतपर शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति है। एक स्थानपर शिवके गण दक्षके यज्ञका विध्वंस कर रहे है।

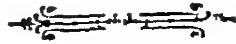
व्याघ्र मन्दिर लगभग ५० फीट लम्बा और १८ फीट ऊँचा है। उसके आगे ६ स्तम्भ बने हैं। सीढ़ीके दोनों ओर बाघकी प्रतिमा खडी हैं। भीतर शिवलिङ्ग और बहुत देवमूर्तियाँ हैं। अन्य गुफा मन्दिर हीन दशामें विद्यमान है, जिनमेंसे एक बडी गुफासे दक्षिण—पूर्व उत्तर-वाले मान्दिरके साथ ११० फीट लम्बा है, उसका अगवास ८० फीट लम्बा है। एक गुफा एलि-फेण्टा टापूकी दूसरी पहाड़ीके बगलमें है। गुफाओंकी बहुतसी मूर्त्तियोंके अङ्ग भङ्ग होगये है।

इतिहास—उस टापूके दक्षिण बगलमें १३ फीट लम्बा और ७३/४ फीट ऊँचा पत्थरका हाथी था, इस लिये पोर्चुगाल वालोंने उस टापूका नाम एलिफेण्टा रक्खा, क्योंकि अङ्गरे-जीमें हाथीको एलिफेण्ट कहते है। सन् १८१४ में उस हाथीका गला और सिर गिर गया। सन् १८६४ मे उसका धड़ बबईके विक्टोरिया बागमें रक्खा गया।

अनुमान किया जाता है कि तीसरी सदीसे दशवी सदी तक उस टापूपर एक नगर और प्रसिद्ध पवित्र स्थान था, जहॉ बहुत यात्री लोग जाते थे। पहाडोके पास धानके खेतमें ईंटे और पत्थरकी नेव, टूटे हुए स्तम्भ, शिवकी अनेक प्रतिमा और एक पुराने नगरके अनेक चिह्न मिले हैं।

एलिफेण्टाकी गुफाओंके बनानेका ठीक समय जाना नहीं पडता, उनको कोई कोई पाण्डवोंकी गुफा, कोई कोई किनाराके बाणासुर नामक राजाकी बनवायी हुई और कोई बडे सिकन्दरकी बनवाई हुई कहते हैं। गुफाओंमे कोई शिला लेख नहीं है। अङ्गरेज वैज्ञा-निक लोग त्रिमूर्त्तिकी बड़ी गुफाको ९ वीं अथवा १० वीं सदीकी बनी हुई कहते हैं।

# तेइसवां अध्याय ।



## ( बम्बई हातेमें ) योगेश्वरका गुफामन्दिर, मण्डपेश्वरके गुफा-मन्दिर, कनारीके गुफामन्दिर, वसीन, ( पोर्चुगीजोंके राज्यमें ) दमन, ( बम्बई हातेके गुजरात देशमें ) नौसारी, सूरत, भड़ोंच, शुक्लतीर्थ, डभोई, चन्द्रोदय तीर्थ और बड़ोदा ।

## योगेश्वरका गुफा मन्दिर ।

वम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ६ मील पूर्वोत्तर और कुलावाके रेलवे स्टेशनसे ८ मील उत्तर दादरका रेलवे स्टेशन है। दादरमें 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे' और 'वम्बे वड़ोदा सेण्ट्रल इण्डियन रेलवे' का अलग अलग स्टेशन वना है। स्टेशनके पास एक धर्मशाला है। मैं दादरसे वम्बे वड़ोदा सेंट्रल इण्डियन रेलवेकी गाड़ीमें सवार हो उत्तरकी ओर चला।

दादरके रेलवे स्टेशनसे २ मील उत्तर माहिमके स्टेशनके पास वम्बई टापू और साल-सटके टापूके वीच वाले कजवे अर्थात् पहाड़ी पुलको रेलगाड़ी पार होती है। माहिमके स्टेशनसे १ मील उत्तर वान्दरा कसवेका रेलवे स्टेशन है। थाना जिलेमें बान्दरा सवसे वड़ा कसवा है। उसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १८३१७ मनुष्य थे। बान्दराके रेलवे स्टेशनसे ७ मील ( वम्बईके कुलावाके स्टेशनसे १८ मील ) उत्तर गुरगॉवका रेलवे स्टेशन है।

गुरगॉवके रेलवे स्टेशनसे २½ मील दक्षिण और योगेश्वर गॉवसे २ मील पूर्वोत्तर थाना जिलेके सालसट टापूमें अम्बोली नामक गॉवके पास योगेश्वरका गुफा मन्दिर है। यह इलो-राके कैलासको छोड़ करके भारत वर्षके सव गुफा मन्दिरोंसे वड़ा है। लोग अनुमान करते है कि यह गुफा ८ वी सदीकी वनी हुई है। इसकी लम्बाई २४० फीट और चौड़ाई २०० फीट है। पूर्वके दरवाजेकी वनावट अच्छी है, किन्तु पश्चिम वाले दरवाजेसे प्रायः सव लोग आते जाते है। प्रथम४ सीढ़ियोंके ऊपर एक छोटे कमरेमे टूटी हुई वहुत प्रतिमा देख-नेमें आती हैं। उसके आगे एक दरवाजे होकर मध्य वाले वड़े कमरेमे, जो १२० फीट लम्वा और इतनाही चौडा है, जाना होता है। कमरेमें २० स्तम्भ वने हुए है। वड़े कमरेके भीतर २४ फीट लम्वा और इतनाही चौड़ा महादेवका निज मन्दिर है, जिसमें ४ द्वार वने हुए है। गुफामन्दिरके पूर्वके दरवाजेके ऊपर एक आश्चर्य प्रतिमा है, जो तैयार नही हुई थी। इनके अतिरिक्त उस गुफामे जगह जगह वहुतसी पुरानी मूर्त्तियॉ वनी हुई हैं। योगेश्वरगुफासे ६ मील उत्तर मगथानाकी गुफा है।

## मण्डपेश्वरके गुफामन्दिर ।

गुरगॉवके रेलवे स्टेशनसे ४ मील ( वम्वईके कुलावाके स्टेशनसे २२ मील ) उत्तर बोरवलीका रेलवे स्टेशन है। बोरवलीसे १ मील दूर और कनारीकी पहाड़ीसे, जिसमें

कनारीके गुफा मन्दिर है, ४ मील पश्चिम मण्डपेश्वरकी गुफाये हैं । रेलवे स्टेशनसे घोड़े जानेका मार्ग है ।

वहाँ पहाड़ीमें काटकर बनाये हुए ३ गुफामन्दिर हैं । लोग अनुमान करते हैं कि वे९ वीं सदीके बने हुए हैं। पूर्व वाला पहला गुफामन्दिर ५७ फीट लम्बा और १८ फीट चौड़ा है। उसके पश्चिम पत्थरका कुण्ड है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है । दूसरा गुफामन्दिर ३७ फीट लम्बा और १५ फीट चौड़ा है । उसके पश्चिमकी दीवारमें २५ प्रतिमाओंके साथ एक चतुर्भुज मूर्त्ति है, जिसको लोग भीम कहते हैं, कदाचित् अपने गणोंके साथ वह शिव होवें । वहुत प्रतिमाओंके अंग भङ्ग हैं, पश्चिम वाले तीसरे गुफा मन्दिरमें ताला बन्द करके उसका पुजारी अपने घर चला जाता है । उसमें कमरे और अनेक छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं । दक्षिण और उससे अधिक ऊँचाईपर ४० फीट ऊँचा गोलाकार टावर है। बाहरसे उसपर चढ़नेकी सीढ़ी बनी है । पूर्व वाली गुफाके दक्षिण-पश्चिम पोर्चुगीजोंका उजड़ा पुजड़ा गिरजा है।

## कनारीके गुफामन्दिर ।

बोरवलीके रेलवे स्टेशनसे, जो वम्बईके कुलाबा स्टेशनसे २२ मील उत्तर है, ५ मील दूर और तुलसी झीलके बाँधसे २ मील उत्तर तथा थानाके डाक बङ्गलेसे ६ मील दूर सालसट टापूके मध्य भागकी एक पहाड़ीके बगलमें नीचे ऊपर छोटे बड़े १०९ गुफा मन्दिर बने हुए हैं । बोरवलीके स्टेशनसे वहाँ तक घोड़े जाने लायक मार्ग है । सम्पूर्ण गुफामन्दिर पहाड़ीसे पत्थर खोदकर बनाये गये थे, उनमें कोई जोड़ नहीं है । वहाँके गुफा मन्दिर इलोरा, अजंता तथा कारलीके गुफामन्दिरोके समान मनोहर नहीं हैं; तिसपर भी दर्शनीय वस्तु हैं। पहाड़ीके नीचेसे सब गुफाओंके पास पत्थरमें काटकर पगडण्डी राह बनाई हुई है । गुफा मन्दिरोंमें स्थान स्थानपर बुद्धदेव और बहुत बौद्ध मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं । लोग अनुमान करते हैं कि बड़ा चैत्य ५ वीं सदीका है, किन्तु ९ विहार उससे पाहिलेके होंगे ( विहार उसे कहते हैं, जिसके मध्यमें बड़ा कमरा और बगलोंमें बौद्ध मतके भिक्षुकोंके रहनेके लिये कोठरियाँ हो ) । ९ वीं सदीके पीछे तक कनारीकी गुफा बनी थीं । वहाँ बुद्ध देवका एक दाँत था, इस लिये वह स्थान पवित्र समझा गया ।

कनारीके गुफामन्दिरमें बड़ा चैत्य गुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर प्रधान और दिलचस्प है। वह कारलीके बड़े चैत्यके नकलका है, किन्तु उसके समान यह सुन्दर नहीं है । इसके दोनों बगलोंमें बुद्ध देवकी २३ फीट ऊँची एक एक प्रतिमा है । वरण्डाके दरवाजेके स्तम्भपर चौथी सदीका शिलालेख है । बरण्डा और गुफामन्दिरके बीचमें पानीका एक कुण्ड है ।

बड़े चैत्यसे थोड़ी दूरपर वहाँके विहार गुफाओंमे सबसे उत्तम 'दरबार गुफा है । छोटी कोठरियोंको छोड़ करके उसकी लम्बाई ९६ फीट और चौडाई ४३ फीट है । एक गुफा मन्दिरमें बुद्ध देव कमलासनपर बैठे हैं, उनके पास ७ पुजारी और सेवकोंकी छोटी मूर्त्तियाँ हैं ।

तुलसी झील-कनारीके गुफामन्दिरोंसे २ मील दक्षिण सालसट टापूमें तुलसीझीलका बाँध है । वह झील सन् १८७२ म ४ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुई । उससे वम्बईके पासकी मालाबार पहाड़ीपर पानी पहुँचाया जाता है।

विहारझील–तुलसीझीलसे २ मील दक्षिण और भण्डूपके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५ मील दूर सालसट टापूमे २ मील लम्बी और १½ मील चौड़ी तथा १४०० एकड़ भूमिपर विहारझील वनी है। उसको एक अङ्गरेजने गरपर नदीको बाँध करके लगभग ३८००००० रुपयेके खर्चसे वनवाया था। झीलका बाँध ३० फीट चौडा और पानीके ऊपर ३० फीट ऊँचा है। उसमें ७५ फीट तक गहरा पानी रहता है पानीमे बहुत मछलियाँ है।

## बसीन।

बोरवलीके रेलवे स्टेशनसे ६ मील उत्तर भयदरके स्टेशनके पास एक बड़ी नदीपर रेलवेका पुल वना हुआ है। बोरवलीसे ११ मील (बम्बईके कुलावाके रेलवे स्टेशनसे ३३ मील) उत्तर वसीनरोडका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ५ मील दूर (२९ अंश, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५१ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमे) वम्बई हातेके थाना जिलेमें समुद्रके पूर्व सबडिवीजनका सदर स्थान वसीन एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वसीनमे ११३९१ मनुष्य थे, अर्थात् ७१४७ हिन्दू, ३०८९ कृस्तान, १०३२ मुसलमान, १५ जैन और ८ पारसी।

पुराने शहरके चारों तरफ दीवार है। उसके भीतर १४ वीं और १५ वीं सदीके वने हुए कई एक गिरजे उजड़ रहे है। समुद्रके किनारेसे थोड़ीही दूर पर वसीनका खण्डहर और किला विद्यमान है। वहाँ हालका बना हुआ एक शिव मन्दिर है। वसीनमे सरकारी कचहरियाँ वनी हुई हैं।

इतिहास–सन् १५३४ में पोर्चुगालवालोंने गुजरातके सुलतान बहादुरशाहसे दमनके साथ, जो अब तक पोर्चुगीजोंके अधिकारमें है, बसीनको लेलिया। उसके २ वर्ष पीछे बसीनमें एक किला बनाया गया। लगभग २०० वर्ष बसीन पोर्चुगालवालोंके अधिकारमें था। उस समय उसका विभव बहुत बढ़ गया था। अन्य शहरोंके धनी लोगोंको वसीनके धनी लोगोंकी उपमा दी जाती थी। बहुतसे उत्तम मकान बने थे। उस समय वहाँ १ यतीमखाना, १ कैथेड्रल और १३ गिरजे थे। सन् १६९५ में महामारीसे शहरके निवासियोंमेंसे एक तिहाई लोग मर गये। सन् १७६५ में महाराष्ट्रोंने वसीनको लेलिया। सन् १७८० में अङ्गरेजोंने वसीनको महाराष्ट्रोंसे छीन लिया था, किन्तु सन् १७८२ मे उनको लौटादिया। सन् १८१८ में पेशवाके परास्त होजानेपर वह फिर अङ्गरेजोंको मिल गया।

## दमन।

वसीन रोडके रेलवे स्टेशनसे ७६ मील (वम्बईके कुलावाके स्टेशनसे १०९ मील) उत्तर दमन रोडका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें पोर्चुगालके बादशाहके हिन्दुस्तानके राज्यका एक भाग, गोआके गवर्नरके अधीन दमन एक राज्य है। उस राज्यके दो भाग हैं, एक खास दमन परगना और दूसरा नागरहवेली परगना। सन् १७८१ की मनुष्य-गणनाके समय दोनों परगनोंके ८२ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०२०२ मकान और ४९०८४ मनुष्य थे।

खास दमन परगनेका क्षेत्रफल २२ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २९ गाँवोंमें २१६२३ मनुष्य थे। दमन परगना दमन गंगा नामक नदी

द्वारा दो भागोंमे विभक्त है,—नदीके दक्षिण थाना जिलेके पास वडा दमन और नदीके उत्तर सूरत जिलेकी सीमाके पास छोटा दमन है।

दमन गंगा नामक नदीके दोनो वगलोंपर एक एक किला है। दोनोंकी दीवारोंपर तोपैं रक्खी हुई हैं। नदीके बायेंका पत्थरका किला, जिसके बगलमे जमीनकी ओर खाई है, प्राय: मुरब्बा शकलमें है; उसमें वहाँके गवर्नर और उनके अधीन कर्मचारियोंके आफिस तथा मकान बने हुए हैं और म्युनिसिपल आफिस, अस्पताल, जेलखाना, अनेक बारक, ६ नया चर्च और बहुतसे खानगी मकान हैं। उस किलेमें पोर्चुगीजोके गवर्नर, फौजी सामान, पोर्चुगाल सरकारके कर्मचारी लोग और चन्द खानगी निवासी रहते हैं, जो प्रायः सब कृस्तान हैं। नदीके दहिनेका छोटा किला नये वनावटका है। उसकी दीवार बड़े किलेकी दीवारसे अधिक ऊँची है। उसके भीतर एक गिरजा, एक पादड़ीकी कोठी, एक भजनालय इत्यादि इमारतें है।

दमन परगनेके पूर्व ओर ६० वर्गमील क्षेत्रफलमें नागरहवेली परगना है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७२ गाँव और २७४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १५३१ में पोर्चुगाल वालोंने दमनको लूटा। देशियोंने फिर उसको सँवारा। सन् १५५९ में पोर्चुगाल वालोंने उसको ले लिया। सन् १७८० में पूनाकी सन्धिके अनुसार महाराष्ट्रोंने पोर्चुगीजोंको नागरहवेलीका परगना दे दिया। पोर्चुगाल वालोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी वढ़तीके समय दमनमें बड़ी सौदागरी होती थी, किन्तु अब बहुत कम होती है।

## नौसारी।

दमनरोडके रेलवे स्टेशनसे ६ मील उत्तर उदवादाका रेलवे स्टेशन है। उदवादा वस्तीमें पारसी लोगोंका सबसे पुराना अग्नि मन्दिर है। लगभग सन् ७०० ईस्वीमें पारसी लोगोने पारससे अग्नि लाकर वहाँ स्थापित किया था, वही अग्नि अवतक वहाँ जलता है। उदवादासे १० मील उत्तर सूरत जिलेके वलसर कसबेका रेलवे स्टेशन है।

उदवादाके स्टेशनसे ३४ मील और दमनरोडके स्टेशनसे ४० मील (बम्बईके पासके दादरसे १४१ मील) उत्तर नौसारीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके सूरत जिलेके भीतर बड़ौदाके राज्यमें पूर्णा नदीके-बायें अर्थात् दक्षिण किनारेपर समुद्रसे लगभग १२ मील पूर्व नौसारी एक सुन्दर कसवा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नौसारीमें १६२७६ मनुष्य थे, अर्थात् ९२८२ हिन्दू, ४४५२ पारसी, २३२९ मुसलमान, २१२ जैन और १ कृस्तान।

नौसारीमें एक उत्तम टाउनहाल, पारसी लोगोंका एक सुन्दर मन्दिर, अस्पताल, लायब्रेरी और महाराज गायकवाड़का जेलखाना है। उसमें पारसी लोग बहुत बसते है। पारसी लोगोंने यूरोपियन तरीके पर वहाँ अर्क और साबुनका कारखाना जारी किया है। समुद्रसे पूर्णा नदी होकर नौसारीमें बहुत माल आता है। मलाह लोग पूर्णा नदीको नौसारी नदी कहते है। पारसी लोग नौसारीमे तांवा, पीतल, लोहा, कपडा, लकडी आदिके काम करते है। नौसारीकी खाड़ीके पास पारसी लोगोंके मुर्दे रखनेका दोखमा अर्थात् श्मशान मन्दिर बना हुआ है। पारसियोंके आनेके समयसे नौसारी उनकी जमायतका सदर स्थान है।

# सूरत।

नौसारीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील ( बम्बईके कुलावाके स्टेशनसे १६७ मील ) उत्तर और भडौंचके स्टेशनसे ३७ मील दक्षिण सूरतका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें तापती नदीके बायें अर्थात् दक्षिण किनारेपर ( २१ अंश, ९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५४ कला, १५ विकला पूर्व देशान्तरमें ) समुद्रसे १० मील पूर्व जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा सूरत है।*

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ सूरत शहरमें १०९२२९ मनुष्य थे, अर्थात् ५६०७४ पुरुष और ५३१५५ स्त्रियाँ। इनमें ७८२४० हिन्दू २०४२० मुसलमान, ५८९३ पारसी, ४२६३ जैन, ३७७ कृस्तान और ३६ यहूदी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २६ वाँ और बंबई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें चौथा शहर है।

सूरत शहर तापती नदीके झुकावपर है। वह नदी वहाँसे पश्चिम अपने मुहानेकी ओर घूम गई है। नदीके किनारेकी ओर छोड करके शहरके बगलोंमें पुरानी दीवार है। एक अच्छी सड़क स्टेशन रोडसे किलेकी ओर गई है। दूसरी सड़कें कम चौडी हैं। रेलवे स्टेशनके पास एक सरकारी धर्मशाला बनी हुई है।

खास शहरके भीतर घनी वस्ती है। सड़कोंके बगलोंमें पारसी लोगों, उच्च जातिके हिन्दुओं तथा बोरा मुसलमानोंके मकान सुन्दर बने हुए हैं। सूरतमें ये तीनों खास करके धनी हैं। शहरके पश्चिम नदीके पास परेडकी जगहके साथ फौजी छावनी फैली है। नदीकी ओर जिलेकी कचहरियाँ हैं।

सूरत शहरमें तापती नदीके किनारेके पास सन् १५४० का बना हुआ एक किला है। किलेकी दीवार ८ फीट मोटी है, उसके प्रत्येक कोनेपर गोलाकार बुर्ज बना हुआ है। किलेके पूर्व वाले फाटकके ऊपर शिलालेख है। किलेके पास उससे लगा हुआ ८ एकड़ भूमिपर विक्टोरिया बाग है। किले और कष्टम हौसके बीचमें सन् १८३० का बना हुआ अङ्गरेजी गिरजा है, जिसमें १०० आदमी बैठ सकते हैं।

सूरतमें हिन्दुओंके अनेक मन्दिर हैं, जिनमेंसे स्वामीनारायणका मन्दिर और हनूमानजीके २ मन्दिर प्रधान हैं। स्वामीनारायणके विशाल मन्दिरमें ३ गुंबज हैं, वह शहरके सब स्थानोंसे देख पड़ते हैं।

सूरतमें मुसलमानोंकी बहुत मसजिदें हैं, जिनमें ४ प्रधान है—( १ ) गोपीझील नामक पुराने तालावके पश्चिम किनारेपर नवसैयद साहबकी मसजिद है, जो एक समय गुजरातकी अत्युत्तम इमारतोंमें गिनी जाती थी। ( २ ) सैयदपुरामें सैयद इद्रुसकी मसजिद सूरतकी प्रसिद्ध इमारतोंमेंसे एक है, जिसको सन् १६४० में एक मुसलमान सौदागरने बनवाया था। उस मसजिदमें एक बड़ा मीनार है। सैयद इद्रुस सूरतके वर्तमान काजी साहबके पुरुषे थे। ( ३ ) मिर्जा सामियाकी मसजिद है, जिसको सूरतके किलेको बनवाने वाले खोदाबन्द-खाने सन् १५४० में बनवाया था। उसमें संगतरासीका अच्छा काम है। ( ४ ) सन्

---

* हालमें एक रेलवे लाइन सूरत शहरसे पूर्व खानदेश जिलेके जलगावके रेलवे स्टेशनमें जा मिली है। उस लाइन पर सूरत शहरसे १०९ मील अमलनेर १७५ मील बरनगाव और १९८ मील जलगावका स्टेशन है।

१५३० की बनी हुई ख्वाजा दीवान साहबकी मसजिद है। इनके अतिरिक्त वोरा मुसलमानोंके अनेक सुन्दर मकबरे हैं।

सूरतमे पारसियोंके २ अग्नि मन्दिर, जैन लोगोंके ४० से अधिक मन्दिर और अङ्ग-रेजोके कई एक गिरजे और बहुतसी कवरे है। दिल्ली जाने वाली सड़कके निकट सन् १८७१ का बना हुआ ८० फीट ऊँचा घडीका बुर्ज है, जिसपर चढ़नेसे सूरत शहरकी सुन्दर शोभा देखनेमें आती है। इनके अतिरिक्त सूरतेंम एक हाइ स्कूल, जिसमे ५०० लड़के बैठ सकते हैं, २ खैराती अस्पताल, जानवरोंके लिये १ अस्पताल और रूई तथा कपडेके कई एक मिल अर्थात् कल कारखाने है। शहरसे १२ मील पश्चिम सूरतका बन्दरगाह है।

प्रधान सड़कोंपर रातमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। सूरतकी चन्दनकी लकड़ीकी नकाशीदार चीजे प्रसिद्ध हैं। वहाँका सामुद्रिक व्यापार पहिलेसे अब बहुत घट गया है। सन् १८०१ मे वहाँकी आमदनी और रफतनीके मालका दाम १०४३२२२ पाउंड था, किन्तु सन् १८८३–१८८४ मे वह केवल ३२७२२१ पाउंड रह गया, इसमेंसे १४६६९५ पाउंडका माल आया और १८०५२६ पाउंडका माल सूरतसे अन्य स्थानोमे गया। बहुत रुई और अन्न सूरतसे अन्य शहरोंमें भेजे जाते हैं। शहरमें ३६ रुपये और ७२ रुपये भरके सेरसे सौदा बिकते हैं। शहरके कई एक मील दूर देहातमें एक मेला होता है।

तापती नदी–रेलवे स्टेशन और तापती नदीके बीचमें सूरत शहर है। स्टेशनसे १½ मील दूर तापती नदीका प्रधान घाट है। वहाँ शहरकी ओर दूर तक पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, जिसपर पचासहाँ आदमी अपने कपड़े धोते हुए देखनेमें आये, क्योंकि वहाँके प्रायः सब हिन्दू अपने कपड़े आप धोते हैं। घाटके पास तापती नदीपर १७ पायोंका पुल है। उस घाटपर आषाढ़ मासमें एक महीना स्नानका मेला होता है।

तापती नदी सतपुडाकी पहाड़ीसे निकलकर लगभग ४४० मील पश्चिम बहनेके पश्चात् सूरत, शहरसे १४ मील पश्चिम डुमसा गाँवके पास खंभातकी खाडीमें गिरती है। बुरहानपुर, सूरत इत्यादि नगर उसके किनारे पर हैं। तापी अर्थात् तापती नदीका निकास स्थान किसी पुराणमें विन्ध्याचल; किसीमें ऋक्षवान् पर्वत और किसी पुराणमें पारिपात्र पहाड़ लिखा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—भविष्यपुराण—( पूर्वार्द्ध, ४२ वाँ अध्याय ) सूर्यकी पत्नी संज्ञासे यम नामक पुत्र और यमुना नामक पुत्री और छायासे सावर्णि मनु और शनिश्चर दो पुत्र और तपती नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। एक दिन यमुना और तपतीका परस्पर विवाद हुआ। उस समय परस्परके शापसे दोनो नदी होगई। सूर्य भगवानने कहा कि यमुनाका जल गङ्गाजलके समान और तपतीका जल नर्मदाके जलके तुल्य माना जायगा।

आश्चर्य फकीर–जिस समय मैं सूरतकी धर्मशालामे टिका था, उसी समय एक मुसल-मान फकीर, जिसकी अवस्था ४० वर्षकी होगी, रेलगाडीसे उतर कर बैलगाडीमे सवार हो धर्मशालामें पहुँचा और धर्मशालाके एक भागमें उतरा। उसके जाने पर शहरसे दर्शकोंका तंता लग गया। सैकड़ा मनुष्योकी भीड लग गई। कई मुसलमान उसकी सेवामे नियुक्त होगये। बहुतेरे लोग फकीरके पास पैसा रखने लगे। मैने पहिले अखबारोंमे पढ़ा था कि एक फकीर, जिसकी देहमे लोहेके बहुत सींकड़ है, जब रेलगाड़ीमें बैठा तब रेल कर्मचारियोंने उसको माल समझकर पसेंजर गाड़ीसे उतारकर मालगाड़ीमें चढ़ा दिया। मुझको अनुमान होता है कि यह वही फकीर है।

फकीरके शरीरमें ३ मनसे अधिक लोहेके सीकड, मेख तथा कड़ियां थीं. उसके गले, कमर, जंघाओं तथा भुजाओंमें मोटी मोटी कडी लगी थीं, जिनमेंसे गलेकी कड़ियोंमें ४ फीटसे अधिक लम्बे पचीस तीस मोटे मोटे सीकड़, जिनके नीचेके छोरोंपर लोहेके मेख थे। और दोनो भुजाओंकी दोनो कडियोंमे ग्यारह सीकड़ लटके थे। इसी भांति उसकी कमर और जंघाओंकी कडियोंमे वहुत सीकड लगे थे। वह फकीर सींकड़ोंके बोझसे चल फिर नहीं सकता था, दो आदमियोंके सहारेसे थोड़ी दूर चलता था।

सूरत जिला—यह जिला गुजरात देशके दक्षिण भागमें है। इसके उत्तर भड़ौंच जिला और वडौदाका राज्य, पूर्व वड़ौदा, राजपिपला, वांसड़ा और धर्मपुरके देशी राज्य; दक्षिण थाना जिला और पोर्चुगीजोंका स्वतन्त्र दमन राज्य और पश्चिम अरवका समुद्र है। जिलेका सदर स्थान सूरत शहर है। डांगा पहाड़ियों और समुद्रके वीचमे केम नदीसे दक्षिण और दमनगंगासे उत्तर जिलेका मैदान लगभग ८० मील फैला है। जिलेकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे लगभग १६० फीट है। जिलेमे चन्द छोटी पहाडियाँ हैं। नदियोंमे तापती और केमनदी वड़ी हैं। पहाडियोंमे मकान वनाने लायक पत्थर वहुत ह। कोई प्रसिद्ध जङ्गल नहीं है। जङ्गलोंमें तेदुए, भालू, वनैले शूअर, भेड़िया इत्यादि वनजंतु रहते हैं। सूरत जिलेमें गुजराती और कुछ महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सूरत जिलेके १६६२ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६१४१९८ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५०३१ हिन्दू, ११८६६४ पहाडी और जङ्गली जातियाँ, ५५५४७ मुसलमान, १२५९३ पारसी, ११६७० जैन, ६२१ क्रूस्तान, ६१ यहूदी, और ११अन्य। हिन्दुओंमे ७६८६३ दुवला, ४९४५२ कोली (खेतिहर), ४००५९ ब्राह्मण, ३६८०१ कुन्वी ( खेतिहर ), ३१५०६ महारा, ९५८१ तेली, ८६५९ राजपूत, केवल १४१६ धोवी और वाकीमे अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सूरत जिलेके कसवे सूरतमे १०९२२९, वलसरमें १४७७९ और रांडेरमे १०९२६ मनुष्य थे। वलसर एक वन्दरगाह है। सूरत शहरसे २ मील दूर तापतीके पीछे उसके किनारे पर रांडेरमें रुईकी तिजारत होती है। वुढ़ानमें एक वडा मन्दिर है; वहाँ हिन्दू यात्री जाते है। उनाईमे एक सालाना मेला होता है।

इतिहास—१३ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीका कुतवुद्दीन अनहिलवाडाके राजा भीमदेवको परास्त करनेके पश्चात् सूरत शहर तक गया। उस समय यह जिला एक हिन्दू राजाके राज्यका एक भाग था। वह राजा सूरत शहरसे १३ मील पूर्व कारेंजके किलेमें रहता था। उसने मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार की। सन् १३४७ में महम्मदतुगलककी फौजने सूरत शहरको लूटा। सन् १३७३ में फीरोज तुगलकने सूरतमें एक किला वनवाया। १६ वी सदीके आरम्भमें जव गोपी नामक एक धनी हिन्दू सौदागर वहाँ वसा, तव सूरतका वर्तमान शहर कायम हुआ। उस समय सूरतमें वडी तिजारत होती थी। पोर्चुगाल वालोंने अपने हिन्दुस्तानमें आनेके वाद जव सूरत शहरको लूटा, तव अहमदावादके सुलताननें मजवूत किला वनानेकी आज्ञा दी। सन् १५४० में खुदावन्दखां नामक तुर्कीने सूरतमें किला वनवाया। सन् १५७३ में अकवरने स्वयं जाकर ४७ दिन घेरा देनेके वाद सूरत शहरको ले लिया। उस सन्से १६० वर्ष तक मुगलोंके नियत किये हुए अफसर

सूरत शहर और जिलेका प्रबन्ध करते थे। अकवर, जहांगीर और शाहजहांके राज्यके समय सूरतमें सर्वदा शांति बनीरही। १७ वीं सदीमें सूरत भारतवर्षके प्रथम तिजारती शहरोंमेंसे एक थी, बहुतेरे यूरोपियन सौदागर वहाँ आते थे।

सन् १५७३ से पोर्चुगाल वाले सूरतमे तिजारत करते थे। सन १६०८ में एक अङ्गरेजी जहाज तापतीके मुहानेपर पहुँचा। सन् १६१२ में दिल्लीके बादशाह जहांगीरने ईष्ट इण्डियन कम्पनीको सूरत, कांवे, अहमदाबाद और गोगोमे तिजारत करनेकी आज्ञा दी। सन् १६१५ में अङ्गरेजोने पोर्चुगीजोंको परास्त किया। उस समय अङ्गरेजोंकी ओर ४ जहाजोंपर ८० तोपे थी और पोर्चुगीजोकी ओर ४ गैलियन, ३ अन्य बड़े जहाज और ६० छोटे जहाज तथा १३४ तोपें थीं। उस समय अङ्गरेजोंकी कोठी सूरतमें कायम हुई। सन् १६१६ में हालेड वालोने बादशाहसे आज्ञा लेकर सूरतमें अपनी कोठी नियत की। कुछ फरांसीसीभी सूरतमे रहने लगे।

सन् १६६४ की ५ जनवरीको शिवाजी ४००० घोडसवारोंके साथ सूरतमें आपहुँचे उन्होंने ६ दिनो तक शहरको खूब लूटा। शिवाजी अङ्गरेजी कोठी पर महासरा करके कामयाब नहीं हुए, इस लिये मुगल बादशाह औरङ्गजेबने अङ्गरेजो पर प्रसन्न होकर उनका महसूल माफ कर दिया। सन् १६६८ में फरांसीसियोंकी कोठी सूरतमें कायम हुई। सन् १६७० में महाराष्ट्रोंने सूरत शहरको फिर लूटा। उसके बाद सन् १७०२ और १७०७ में सूरत शहर महाराष्ट्रो द्वारा लूटा गया। सूरत शहर १७ वीं सदीके अन्तमे सर्वदासे अधिक धनी था; उस समय उसमें पृथ्वीके प्रायः सब देशोंके लोग तिजारत करते थे। इसके पश्चात् बम्बईकी बढ़तीके साथ साथ सूरतकी घटती होने लगी। सन् १७५९ म सूरतके नवाबने २ लाख रुपये वार्षिक पेंशन कबूल करके अङ्गरेजोंको शहर और किला दे दिया। उस प्रबन्धको दिल्लीके बादशाहने स्वीकार किया। सन् १८०० में सूरत और रांडेर कसबा अङ्गरेजी अधिकारमे होगया। सन् १८११ में सूरतमें २५०००० और सन् १८१६ में १२४४०६ मनुष्य थे। सन् १८३७ में सूरतमें आग लगी, जिससे ९३७३ मकान बरबाद होगये। आग १० मील तक फैल गई थी। इसी साल तापतीकी बाढ़ने सम्पूर्ण शहरमें फैल कर लोगोंको निरालम्ब कर दिया। बहुतेरे सौदागर सूरतको छोडकर बम्बई चले गये। सन् १८४२ तक नवाबके उत्तराधिकारी नवाब कहलाते थे। सन् १८४७ से सूरत शहरकी धीरे धीरे फिर उन्नति होने लगी। सन् १८६२ में सूरतके किलेसे फौज उठा ली गई।

## भड़ौच।

सूरतके रेलवे स्टेशनसे २ मील उत्तर तापती नदी पर रेलवेका बड़ा पुल और ३१ मील उत्तर भड़ौच जिलेमें अङ्कलेश्वर कसवा है ❀। अङ्कलेश्वरसे ६ मील और सूरतसे ३७ मील ( बम्बईके कुलाबाके रेलवे स्टेशनसे २०४ मील ) उत्तर और बड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे ४४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम भड़ौचका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात

❀ अंकलेश्वरसे पूर्वोत्तर एक लाइन राजपरदी होकर रेलवे एजेंसीमें राजपिपलाके राज्यकी राजधानी नंदोद कसबेको गई है। अङ्कलेश्वरसे १९ मील राजपरदी और ३७ मील नंदोद कसबा है।

दृशेम ( २१ अश, ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, २ कला पूर्व देशान्तरमें ) नर्मदा नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर उसके मुहानेसे लगभग ३० मील पूर्व भड़ौच जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा भड़ौच है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौच कसबेमें ४०१६८ मनुष्य थे, अर्थात् २०७९० पुरुष और १९३७८ स्त्रियाँ। इनमें २५२५७ हिन्दू, ११३५४ मुसलमान, २२४३ पारसी, ७३२ जैन, ४८८ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियाँ, और ९४ क्रस्तान थे। मनुष्य-सख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २६ वाँ और बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १२ वाँ शहर है।

पहिले भड़ौच कसबेके चारोंओर पक्की दीवार थी, अब जमीनकी ओरकी दीवार गिर रही है, चन्द स्थानोंमें उसकी निशानी भी नहीं है; किन्तु नर्मदाके बाढ़से कसबेको बचानेके लिये कसबेके दक्षिण नदीके पासकी दीवार मरम्मत करके रक्खी हुई है। वह लगभग १ मील लम्बी और ३० फीटसे ४० फीट तक ऊँची पत्थरसे बनी हुई है। नर्मदाके पास १०० फीटसे अधिक ऊँची पहाड़ीपर पुराना किला है। उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिरजा, स्कूल, म्युनिसिपल आफिस, लायब्रेरी, हालेंड वालोंकी पुरानी कोठी और जिलेकी कचहरियाँ हैं।

कसबेके अधिक मकान ईटोंके, दो मञ्जिले तथा खपड़ेपोश हैं। कसबेके पूर्व भागमें चन्द बड़े मकान हैं। कसबेके पास नर्मदा नदीकी चौड़ाई १ मील है। कसबेके दक्षिण नर्मदा नदीपर रेलवेका सुन्दर पुल बना हुआ है, ऐसा पुल उस रेलवेपर किसी जगह नहीं है। पूर्व वाले फाटकके बाहर नर्मदाके तीरपर भृगुऋषिका मन्दिर है, जिसको लोग कसबेसे पहिलेका बना हुआ कहते हैं। कसबेमें पत्थरकी एक सुन्दर मसजिद, रुई कातने और कपड़े बिननेकी २ मिल ( कल कारखाने ) और रुई ओटने तथा दबानेके कई कारखाने हैं।

किलेसे ३०० गज पश्चिमोत्तर एक मकबरा, और २ मील पश्चिम ( सडकसे १०० गज बायें ) हालेंडवालोंकी चन्द बडी कबरें हैं। उनके सामने पारासियोंके ५ दोखमा अर्थात् मुर्दे रखनेके मकान हैं। उनमेंसे ४ पुराने हैं और पाँचवेंको बम्बईके एक धनी पारसीने हालमें बनवाया है।

भड़ौच पश्चिमी भारतके पुराने बन्दरगाहोंमेंसे एक है। नर्मदानदी मध्य देशमें अमर कंटकके पाससे निकलकर लगभग ७५० मील पश्चिम बहनेके पश्चात् भड़ौचसे ३० मील पश्चिम लोहार नामक गाँवके पास समुद्रमें मिली है। सन् १८८०-१८८१ में लगभग ४५ लाख रुपयेका महुआ, गेहूँ, रुई, जलानेकी लकड़ी इत्यादि चीजें भड़ौचसे नर्मदा तथा समुद्र द्वारा अन्य स्थानोंमें भेजी गई और लगभग १५ लाख रुपयेका चावल, कसइली, कोयला, लोहा, पत्थर, मकान बनानेकी लकड़ी इत्यादि वस्तु अन्य जगहोंसे समुद्र तथा नर्मदा द्वारा भड़ौचमें लाई गई।

भड़ौच जिला—यह जिला गुजरात देशमें है। इसके उत्तर माही नदी बाद कांबे, पूर्व और पूर्व-दक्षिण वड़ोदा और राजपिपलाका राज्य, दक्षिण केम नदी बाद सूरत जिला और पश्चिम कांबेकी खाड़ी है। इस जिलेकी लम्बाई कांबेकी खाड़ीके किनारेपर ५४ मील और चौडाई २० मीलसे ४० मील तक है। जिलेमें केवल समुद्रके किनारेके पास चन्द छोटी

पहाड़ियाँ और भड़ौच शहरके पड़ोसमें चन्द टीले है। भड़ौंच जिलेके बेल बहुत अच्छे होते है।

भड़ौंच जिलेमें भड़ौंच कसबेसे लगभग ८ मील दूर नर्मदा नदीके किनारेपर भादभूत गाँवमे भादेश्वर महादेवका मन्दिर है। भादोके मलमासमें वहाँ एक मास मेला होता है, जिसमें लगभग ६० हजार आदमी जाते हैं। भड़ौच जिलेके जम्बुसर सवडिवीजनमें धाँधर नदीके मुहानेके पास देवजा गाँवमें दीवारसे घेरा हुआ मन्दिर है। वहाँ सालमें २ वार मेला होता है। प्रति मेलेमें लगभग २ हजार मनुष्य जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौंच जिलेके १४५३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३२६९३० मनुष्य थे, अर्थात् २२२८३८ हिन्दू, ६७२४८ मुसलमान, ३९८९६ पहाड़ी जातियाँ, जिनमें प्रायः सब भील हैं, ३७६८ जैन, ३०४२ पारसी, ११५क्रस्तान,१८ यहूदी और ५ अन्य। हिन्दुओंमे ५२५०० कोली, २७१४३ कुन्वी, १६७१९ राजपूत, १५५५३ महारा और धेर, १३१६१ ब्राह्मण, ८०३७ दुवला, ४४५१ कुम्भार, केवल १०९४ धोबी और बाकीमें अन्य जातियोके लोग थे। भड़ौच जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौंच जिलेके कसबे भड़ौंचमें ४०१६८, जम्बुसरमें १२०७२ और अंकलेश्वरमें १०६९२ मनुष्य थे।

इतिहास—उस देशके लोग कहते हैं कि भड़ौचको भृगु ऋषिने बसाया था, यह पूर्व-कालमे भृगुपुरके नामसे प्रसिद्ध था। सन् ६० से सन् २१० तक भड़ौंचका नाम बड़गजा था। उस समय एक जैनमत वाला राजपूत वहाँका स्वाधीन राजा था। चीनका हायनशांग, जो सन् ६२९ से सन ६४५ तक भारतवर्षमें रहा था, लिखा है कि भडौंच कसबेमें १० बौद्ध-मठ, ३०० बौद्ध फकीर और १० मन्दिर हैं। सन् ७४६ से सन् १२९७ तक भड़ौं-चका बन्दरगाह अनहिलवाड़ाके राजपूत राजाओके अधिकारमे था। सन् १३९१ से सन् १५७२ तक भड़ौंच शहर अहमदावादके मुसलमान वादशाहोके अधिकारमें था। सन् १५७३ में दिल्लीके वादशाह अकवरने भड़ौंचको अहमदावादके तीसरे मुजफ्फरशाहसे छीन लिया।

सन् १६१६ मे वादशाह जहांगीरकी आज्ञासे अङ्गरेजोने और सन् १६१७ में हालेड-वालोने भढ़ौंचमें कोठी कायम की। सन् १६७५ और सन् १६८६ में महाराष्ट्रोंने भडौंचको लूटा। सन् १७७२ में अङ्गरेजोंने भड़ौंचके नवावसे भड़ौच शहर और जिलेको छीन लिया, किन्तु उनका सेनापति मारागया, जिसकी कवर किलेके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास है। सन् १७७३ में अङ्गरेजोंने सिंधियाको भड़ौंच दे दिया था, किन्तु सन् १८०३ में उससे ले लिया।

## शुक्लतीर्थ।

भड़ौंच कसबेसे १० मील पूर्व नर्मदा नदीके दहिने किनारेपर प्रसिद्ध शुक्लतीर्थ है। वहाँ कवि, ओंकारेश्वर और शुक्ल नामक ३ पवित्र कुण्ड और अनेक देवमन्दिर है। ओंका-रेश्वरके निकट एक मन्दिरमें शुक्लनारायणकी मूर्त्ति है। वहाँ कार्तिकमें एक मेला होता है, जिसमे लगभग २५००० मनुष्य आते हैं। चन्द्रगुप्तने अपने ८ भाइयोंके मारनेके पातकसे

छूटनेके लिये शुक्रतीर्थमें जाकर स्नान किया था। ११ वीं सदीमें अनहिलवाड़ाके राजाने पश्चात्ताप करके शुक्रतीर्थमें निवास कर अपना जीवन व्यतीत किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-कूर्मपुराण—( उत्तरार्द्ध, ३९ वाँ अध्याय ) नर्मदा नदीमें शुक्रतीर्थके तुल्य अन्य तीर्थ नहीं है। उसके दर्शन, स्पर्श तथा स्नान करनेसे महान् फल लाभ होता है। उस तीर्थका परिमाण एक योजन है। उस तीर्थके वृक्षोंके शिखरोंके दर्शन मात्रसे ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है। प्रतिवर्ष वैशाख वदी १४ को पार्वतीके सहित महादेवजी शिवलोकसे आकर वहाँ निवास करते हैं। उस तीर्थमें अहोरात्र उपवास करनेसे सम्पूर्ण पाप विनष्ट होजाता है। जो मनुष्य कार्तिक वदी १४ को उपवास करके वहाँ परमेश्वरको घृतसे स्नान कराता है, वह अपने २१ पुर्षाओंके सहित ईश्वरके समीप निवास करता है। उस तीर्थमें स्नान करनेसे फिर जन्म नहीं होता। अयन संक्रांति, चतुर्दशी अथवा विषुवत् संक्रांतिको वहाँ उपवास करके स्नान करनेसे मनुष्य हरि और शंकरजीका प्रिय होता है।

कबीरवट—शुक्रतीर्थसे १ मील पूर्व मङ्गलेश्वरके सामने नर्मदा नदीके टापूमें कबीरवट नामसे प्रसिद्ध एक बहुत बडा वटवृक्ष है। लोग कहानी कहते हैं कि कबीरजीकी दातुअनसे यह वृक्ष हुआ था। वृक्षकी प्रधान जडके पास १ मन्दिर है।

एक आदमीने, जिसको सन् १७७६ और १७८३ के बीचमें उस वृक्षको देखा था, लिखा है कि कबीरवटमें ३५० बडी और लगभग ३००० छोटी जटा अर्थात् बरोह हैं और इसके प्रधान भागकी शाखाओंका घेरा २००० फीट है। मार्गमें जाते समय ७००० सेना इसकी सायामें बैठती है। सन् १८२५ में कबीरवटका बडा भाग नर्मदाकी बाढसे बहगया, तिसपर भी वह संसारके उत्तम वृक्षोंमेंसे एक था, किन्तु बहुत पुराना होजानेसे तथा नदीकी बाढ़ोंसे क्रम क्रमसे उस वृक्षका विस्तार अब बहुत घट गया है।

## डभोई।

भड़ौचके रेलवे स्टेशनसे २५ मील उत्तर कुछ पूर्व मियागांवका रेलवे जंक्शन है। मियागांवसे २० मील पूर्व और बड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे १४ मील दक्षिण-पूर्व डभोईमें रेलवेका जंक्शन है। गुजरात देश बड़ोदाके राज्यमें ( २० अंश, १० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, २८ कला पूर्व देशान्तरमें ) डभोई एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डभोईमें १४५३९ मनुष्य थे, अर्थात् १०७४९ हिन्दू, ३०८२ मुसलमान, ५०१ जैन, १९५ एनिमिष्टिक और १२ पारसी।

कसबेके चारोओर शहरपनाहकी पुरानी दीवार है। बडोदाकी ओरका बड़ोदाफाटक ३१ फीट ऊँचा है, उसके दोनों बाजुओंपर सुन्दर नकाशीका काम बना हुआ है, जिसमें विष्णुके अनेक अवतार और स्वर्गीय घड़ियालोंके साथ खेलती हुई स्त्रियोंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। फाटकके भीतर किलेकी दीवारमें दालानोंके स्तम्भोंकी सुन्दर पंक्तियां हैं। कच्ची सडकसे उससे आगे जानेपर ईंटोंके मकान मिलते हैं। उससे और आगे कसबेके दक्षिणका फाटक ३० फीट ऊँचा है। कसबेके पूर्वका हीराफाटक ३६ फीट ऊँचा है, उसमें बारीक नकाशीका काम है। उसके पास महाकालीका मन्दिर है, जो नया रहने पर बहुत सुन्दर होगा। कसबेसे उत्तरके पुराने महलमें अब बडोदाके महाराजकी कचहरी होती है। उस

तरफ एक उत्तम तालाब है। इनके अलावे डभोईमें नरनारायणका मन्दिर, लक्ष्मीवेंकटेशका मन्दिर, एक बङ्गला, एक अस्पताल, एक जेलखाना, एक कपास ओटनेकी कोठी, पुलिस लाइन और कई एक स्कूल हैं। वहाँ खिर्नीके वृक्षमें एक खोखला है। लोग कहते हैं कि पापी आदमी उससे होकरके नहीं निकल सकता है। डभोईमें पगड़ी और सारी अच्छी बनती है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि ११ वीं सदीमें डभोईका नाम धर्मवती था। १३ वीं सदीमें अन-हिलवाडाके राजाने वहाँके किलेको बनवाया।

डभोईसे पूर्व ९ मील बहादुरपुर और १८ मील सोनगिरिका रेलवे स्टेशन है। सोन-गिरिके पास मार्बुलकी उत्तम खानि है। बहादुरपुरके पास एक किला है।

बहादुरपुरके रेलवे स्टेशनसे १५ मील पूर्वोत्तर चम्पानीरका पुराना किला है। चम्पा-नीरमें बहुतसे मकबरों, मसजिदों और तालाबोंके खण्डहर विद्यमान है। चारो ओर जङ्गलमें अनेक दीवार, मीनार तथा महलोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं। लोग कहते हैं कि अनहिल-वाड़ाके राजाने ८ वीं सदीमें चंपानीरको बसाया था। १२९७ तक यह उस वंशके राजाओंके अधिकारमें था।

## चन्द्रोदय।

डभोईके रेलवे स्टेशनसे १० मील ( बड़ोदासे २४ मील ) दक्षिण कुछ पूर्व चन्द्रोदयका रेलवे स्टेशन है। गुजरातदेशके बड़ोदा राज्यमें नर्मदा नदीके दहिने किनारेपर नर्मदा और ऊर्ज नदीके सङ्गमके पास चन्द्रोदय नामक एक बडा गाँव और पवित्र तीर्थ स्थान है। उसमें लगभग ४२०० मनुष्य बसते है। चन्द्रोदयके निकट नर्मदाके किनारेपर करनाली नामक एक पवित्र गॉव है। चन्द्रोदयमें बहुत देव मन्दिर; स्थान, पाठशाला, और दो धर्मशालायें हैं।

चन्द्रोदय पश्चिम भारतमें सबसे अधिक पवित्र स्थानोमेंसे एक है। उस देशके लोग कहते हैं कि नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदयके समान कोई पवित्र तीर्थ स्थान नहीं है। जैसे गङ्गाके किनारेपर विद्वान् पण्डितोंका मुख्य स्थान काशी है वैसेही नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदय है।

चन्द्रोदय यात्राका प्रसिद्ध स्थान है। प्रति पूर्णिमाको वहाॅ हजारों मनुष्य स्नानके लिये जाते हैं। कार्तिक और चैतकी पूर्णिमाको वहां प्रधान मेला होता है; प्रति मेलेमें वहां २० हजारसे २५ हजारतक यात्री जाते है।

## बड़ोदा।

मियागॉव जंक्शनसे १७ मील पूर्वोत्तर विश्वामित्री जंक्शन है। विश्वामित्री जंक्शनसे २ मील, मियागॉव जंक्शनसे १९ मील, सूरतसे ८१ मील और बम्बईके कुलाबाके स्टेशन से २४८ मील उत्तर बड़ोदाका रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्यके गुजरात प्रदेशमें खम्भातकी खाडीसे पूर्व ( २२ अंश, १७ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १६ कला पूर्व देशान्तरमें ) विश्वामित्री नामक छोटी नदीके पूर्व बडोदाके महाराजकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान शहर बड़ोदा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बड़ोदा शहरमे ११६४२० मनुष्य थे, अर्थात् ६२८७१ पुरुष और ५३५४९ स्त्रियॉ। इनमे ९१९३८ हिन्दू, २०८७९ मुसलमान, २४७५ जैन, ५८२ पारसी, ५०४ कृस्तान, ३० यहूदी, ९ एनिमिष्टिक और ३ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २५ वाँ, बम्बई हातेमें चौथा और गुजरातमें दूसरा शहर है।

रेलवे स्टेशनके पास २ धर्मशालायें है, जिनमेंसे दीवान साहवकी धर्मशाले वड़ी है। रेलवे स्टेशनसे १ मील उत्तर फौजी छावनी और रेजीडेंसी और छावनीसे १ मील दक्षिण—पूर्व शहर है। छावनी और शहरके मध्यमें शहरके पश्चिम विश्वामित्री नदी वहती है, जिसपर पत्थरके ४ पुल वने हुए हैं।

बडोदाका खास शहर शहरपनाहके भीतर १७ महल्लोंमे विभक्त है। वह शहरपनाहसे बाहर नदी तथा छावनीकी ओर पश्चिमको फैला है, जिसमे महाराज, गायकवाड़की, सेनाकी रसदका मुहकमा है। सियाजी, रावजी, आपाजी, वापाजी, आनन्दराव, गङ्गाधरशास्त्री इत्यादि प्रसिद्ध लोगोके नामसे महल्लोंके नाम है। उत्तरकी शहर तलियोंमें १२ महल्ले हैं, जिनमेंसे फतहसिंह महल्लेमें मृत महाराज खण्डेजीरावके दीवान भाऊ सिन्धियाका मकान, अस्तवल, गाड़ीके मकान, महाराजका हाथीखाना और मल्लोंके २ स्कूल है। पूर्वकी शहरतलीमें, जिसमें अखाडा, जन्तुशाला और आनन्दरावका पुराना महल है, केवल ५ महल्ले है। दक्षिणकी शहरतलीमें ११ महल्ले है, जिनमेंसे एक खण्डोवाके मन्दिरका महल्ला कहलाता है।

शहरके अधिक मकान बहुत तङ्ग हैं, किन्तु हालमें कई एक अत्युत्तम इमारतें वनी है। इस सदीमें राजधानी बहुत बढ़ गई है। शहर तलियोमें सरकारी तथा शरीफोंके बहुतसे अच्छे मकान वने हैं। शहरतलीके पश्चिम और दक्षिण तरफ बङ्गलोंके साथ महाराजके सुन्दर बाग हैं। शहरतलियोंमें जेलखाना, सरकारी आफिस, हाईस्कूल, यमुनाबाईका अस्पताल, महाराजकी लायब्रेरी इत्यादि सुन्दर मकान हैं। बड़ोदेमें रुई कातनेकी कल है, कपड़ा बुननेकी मिल अर्थात् कल कारखाना वना हुआ है और बहुत कोठीवाल तथा जवाहिरी रहते है। महाराजकी ओरसे सदावर्त जारी है। जल कल ३५ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार होकर सन् १८९२ मे खुली। शहरसे १८ मील दूर अजवा झील, जिसका क्षेत्रफल ४¾ वर्गमील है, बनाई गई है; उसीसे नलों द्वारा शहरमे पानी आता है। रात्रिमें बड़ी सडकोपर लालटेनोंकी रोशनी होती है।

शहरके गेण्डाफाटकसे ३ मील दक्षिण मकरपुरामें महाराज खण्डेजीरावका वनवाया हुआ एक सुन्दर महल है। शहरसे पूर्व ओर १४ मील डभोईका, २३ मील बहादुरपुरका और ३८ मील चम्पानीरका किला है।

देवमन्दिर—बडोदा शहरमें विठ्ठलजीका मन्दिर ( जिसके खर्चके लिये महाराजकी ओरसे वहुतसी जागीर निकाली हुई है ); गायकवाड़के वंशकी रक्षक खण्डोवा देवीका मन्दिर, स्वामीनारायणका मन्दिर, सिद्धनाथका मन्दिर, कालिकाका मन्दिर, रामचन्द्रका मन्दिर, गोवर्द्धननाथजीका मन्दिर, वलदेवजीका मन्दिर, काशीविश्वेश्वरका मन्दिर, गणपतिजीका मन्दिर, वेचराजीका मन्दिर, भीमनाथका मन्दिर, इत्यादि बहुतसे देव मन्दिर हैं।

भीमनाथके मन्दिरके पास महाराज गायकवाड़की ओरसे ब्राह्मण लोग पुरश्चरण करते हैं। एक स्थानमें दो शिव मन्दिर और बड़ोदाके राजा गोविन्दराव और आनन्दराव तथा रानी गेनाबाई और मृत मल्हाररावकी रानी इन चारोंकी ४ छतरियाँ हैं। छतरियोंमें उनके सम्पूर्ण शरीर अथवा शरीरके एक भागकी प्रतिमा है। देवताओंके समान उनका मान किया जाता है। वहाँ उनकी प्रसन्नताके लिये बहुतसे ब्राह्मण और ब्राह्मणियोंको नित्यही खिचरी खिलाई जाती है।

बड़ोदा-कालिज—रेलवे स्टेशनसे थोड़ी दूर आगे शहरके मार्गमें सड़कके बायें बड़ोदा कालिजकी उत्तम इमारत है; जिसको वर्तमान बड़ोदा नरेशने बनवाया है। वह इमारत लगभग ४०० फीट लम्बी और दोनों छोरोंके पास तथा मध्यमें लगभग १३५ फीट चौड़ी है। उसके दोनों मञ्जिलोंमें चारोंओर मेहराबदार सुन्दर ओसारे बने है। इमारतके ऊपर ७ बड़े गुंबज हैं। उस कालिजमें बी. ए. तककी शिक्षा दी जाती है।

बड़ा बाग—छावनी और शहरके बीचमें एक उत्तम बाग है, जिसमें होकर विश्वामित्री नदी निकली है। बागमें भांति भांतिके वृक्ष, पौधे और फूल लगे हुए हैं और जगह जगह फूलो और पत्तियोंके गमलोंकी पंक्तियाँ सजी हुई है। फूल पत्तियोंका एक बङ्गला है, जिसमें छोटी सड़कें निकाली गई हैं, उनके बगलोंमें भांति भांतिके फूल पत्तियां लगी हैं तथा गमले रक्खे हुए हैं। उस बागमें एक छोटा चिड़ियाखाना है, जिसमें बाघ इत्यादि बनैले जन्तु और अनेक भांतिके पक्षी रक्खे हुए हैं।

खास शहर—खास शहरके चारोंओर प्रत्येक बगलमें ½ मील लम्बी पक्की दीवार है। चारो बगलोके मध्यमें एक एक फाटक हैं। पूर्वके फाटकसे पश्चिमके फाटक तक और उत्तरके फाटकसे दक्षिणके फाटकतक सड़क बनी हुई हैं, जिससे शहर ठीक चार चौखुटे भागमें बँट गया है। मध्यमें चारो सडकोंके मेलपर एक छोटा चौखुटा बङ्गला है, जिसके चारोओर तीन तीन मेहराबियाँ बनी हुई हैं। उत्तर वाली सड़कके बगलोंमें महाराज पहिले सियाजी रावका बनवाया हुआ पुराना महल और अन्य लोगोंके मकान तथा दूकानें और अन्य सडकोंके बगलोंपर शहरके मकान और दूकानें हैं। शहरपनाहके बाहर चारोओर शहरतलियाँ हैं। पश्चिमके फाटकसे बाहर एक बड़ा तालाब है।

राममहल—शहरपनाहके भीतर उत्तर वाली सडकके दोनो बगलोंमें पहिले सियाजीराव गायकवाड़का बनवाया हुआ तीन मञ्जिला राजमहल है। महलका विस्तार बड़ा है किन्तु उसमें पुराने ढबके छोटे छोटे कमरे तथा घुमावकी सीढ़ियाँ है।

नजरबागका महल—राजमहलके पासही पूर्व नजरबाग नामक उत्तम उद्यान है। पूर्व वाली सड़कके बगलमें बागके दक्षिणका फाटक है। बागमें पक्की सड़कें बनी हैं और भांति भांतिके वृक्ष, पौधे तथा फूल उत्तम रीतिसे लगे हैं।

नजरबागमें मृत महाराज मल्हारराव गायकवाडका बनवाया हुआ चौमञ्जिला महल है। कोई बड़े हाकिम अथवा राजा आते हैं तो उसी महलमें उनका स्वागत होता है। उस महलमें महाराजके ३ करोड़ रुपयेसे अधिककी जवाहिरात और भूषण रक्खे हुए हैं। महलके नीचेकी मञ्जिलमें मार्बुलका फर्श है। मैं पहरे वालोंसे इजाजत लेकर ऊपरकी मञ्जिलोंमें गया। ऊपरकी मञ्जिले राजसी सामानसे सजी हैं। किसी जगह सीढ़ियोंपर बनात

बिछे है, किसी जगह गलीचेका फर्श है, किसी किसी स्थानमें भांति भांतिके सुन्दर टेबुल, बैंच, पलंग, आलमारी, आइने, सोने चाँदीसे भूषित कुर्शियाँ इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं। छतोंमे सुनहरा रङ्ग दिया हुआ है।

सोने और चाँदीकी तोपे-पूर्व वाली सड़कके दक्षिण बगलमें नजरबागके दक्षिणके फाटकसे लगभग २० गज पूर्व एक अस्तवलके मकानमे महाराज मल्हारराव गायकवाड़की बनवाई हुई २ सोनेकी और २ चाँदीकी तोपे रक्खी हुई हैं। दो गाडियो पर, जिनमें चाँदीके पत्तर जड़े हुए हैं, तीन तीन हाथ लम्बी २ सोनेकी और दो गाड़ियोंपर, जिनमे पीतलके पत्तर जड़े हुए है, तीन तीन हाथसे कुछ कम लम्बी २ चाँदीकी तोपे रक्खी हैं। उस समय उस अस्तबलमे अनेक गाडियाँ और पंदरह बीस घोडे थे।

अखाड़ा-नजरबागसे पीछे शहरके पूर्ववाले फाटकके पास अखाडा है, जिसमें समय समय पर हाथी, गेंडे, भैंसे, भेडे तथा मल्ल लडाये जाते हैं। वहाँ घेरेके भीतर एक वड़ा आगन है। घेरेकी दीवारमे जगह जगह छोटे द्वार बने है। दीवारमें लगा हुआ घेरेसे बाहर एक ओर महाराज तथा सरदार लोगोके बैठनेका मकान और तीन ओर साधारण दर्शकोके बैठनेके लिये ऊँची छत है। आँगनके मध्यकी बड़ी कोठरीमे कई एक छोटे द्वार हैं। हाथियो तथा गेडोकी लड़ाईके समय आवश्यक होने पर लडानेवाले उन छोटे द्वारोंसे आँगनकी कोठरीमे चले जाते है अथवा दीवारके छोटे द्वारोंसे बाहर निकल जाते है।

हाथीखाना—चम्पानीर फाटकसे उत्तर, उत्तरकी शहरतलीमें हाथीखाना है, जिसमें महाराज खण्डेजीरावके समय लगभग १०० हाथी रहते थे, किन्तु अब बहुत कम हाथी हैं। हमारे जानेके समय उसमें २३ हाथी थे। वहाँ हाथियोंके रहनेके लिये वडा घेरा बना हुआ है।

चम्पानीर फाटकसे थोडीही दूर पर शहरपनाहसे बाहर शेरशाह नामक बडा तालाब है। लडीपुरा फाटकके पास वाले सुरसागर नामक बड़े तालावसे उस तालाब तक लोहेकी नल लगी है।

लक्ष्मीविलास महल—शहरसे पश्चिम एक बडे मैदानमे वर्त्तमान बडोदा नरेश महाराज सर सियाजीराव बहादुरका बनवाया हुआ लक्ष्मीविलास नामक राजमहल है। महाराजने २७ लाख रुपयेके खर्चसे उस महलको बनवाया है। रेलवे स्टेशनसे वह महल विस्तृत भूमिपर शहरके मकानोंसें ऊँचा देख पडता है। महलका मध्य भाग ११ मञ्जिलका और चारो ओरके भाग तीनमञ्जिले चौमंजिले हैं, जिनमें स्थान स्थानपर बहुत गुम्बज बने हैं।

महलसे ५० गज उत्तर बावलीकी शकलका नवलखा कूप है, उसका पानी धुयेकी कलसे उठा करके नालोद्वारा मोतीबाग, नजरबाग तथा शहरके अन्य स्थानोंमे पहुँचाया जाता है। महलके मैदानके पूर्व बगलमे सड़कके पासकी दो मंजिली और तीन मंजिली इमारतोंमें महाराजकी न्याय विभागकी कचहरियाँ होती हैं तथा दफ्तर रहते हैं।

वड़ोदाका राज्य-यह राज्य गुजरात देशके अनेक भागोंमे और काठियावाडमें है। राज्यके ४ डिवीजन अर्थात् विभाग हैं, जिनमेंसे (१) वड़ोदा विभागमें वड़ोदा, चोरंदा, पेटलाद, डभोई आदि ८ सबडिवीजन, (२) काडी विभागमें काड़ी, पाटन, वीजापुर वीसनगर, देहगांव, सिद्धपुर, कलोल, महसाना आदि १० सबडिवीजन, (३) नौसारी विभागमे नौसारी,

टोनगढ़ इत्यादि ८ सवडिवीजन, और (४) अमरेली विभागमे अमरेली, ऊखमण्डल, धारी इत्यादि ५ सबडिवीजन हैं। इनमें अमरेली विभागके अतिरिक्त, जो काठियावाड़में है, अन्य तीनों विभाग अङ्गरेजी राज्य और वड़ोदाको कर देनेवाले छोटे प्रधानोंके राज्योंमे मिले हुए हैं। वड़ोदाके राज्यका क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील है। राज्यसे महाराजको वार्षिक मालगुजारी एक करोड४० लाख रुपये आती है। वडोदा राज्यकी आमदनी हैदराबादको छोड़ करके हिन्दुस्तानके सम्पूर्ण देशी राज्योंकी आमदनीसे अधिक है। वड़ोदाके महाराजको अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको 'कर' नहीं देना पडता है। वम्बई हातेके अन्य देशी राजाओंके समान यह वम्बईके गवर्नरके अधीन नहीं है, वह भारतवर्षके गवर्नर जनरलके अधीन हैं। वड़ोदाका राज्य खुला हुआ मैदान है। उसमें सरस्वती, सावरमती, माही, नर्मदा, तापती, पूर्ना, केम इत्यादि वहुतसी नदियां वहती हैं। काठियावाडके अमरेली विभागका ऊखमण्डल सवडिवीजन, जिसमें द्वारिका है, तीन ओरसे समुद्रसे घेरा हुआ है। राज्यके प्रायः सव भागो अच्छे अच्छे जलाशय और देवमन्दिर हैं। राजपिपला पहाड़ियोंके अतिरिक्त राज्यके किसी भागमे पहाडियोंका कोई सिलसिला नहीं है। काठियावाडके ऊखमण्डल सवाडिवीजनको छोड करके राज्यकी प्राय सव भूमि उपजाऊ है। वडोदाके राज्यमें कपास वहुत होती है।

नौसारी सबडिवीजनके सोनागढ़ और सालेरमे २ पहाडी किले हैं सोनागढ़से १० मील दक्षिण रूपागढ़ भी पहाड़ी किला है, किन्तु उसमे फौज नहीं रहती है। इनके अलावे डभोई, वहादुरपुर और चम्पानीरमें भी किले हैं। वड़ोदा राज्यका सोजित्रा गाँव चाकूके लिये, डभोई पगड़ी और सारीके लिये और पाटन छुरी तथा मिट्टीके वर्तनके लिये प्रसिद्ध है।

वड़ोदाके राज्यमें कई मेले होते हैं,—वड़ोदा विभागमे नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदयमे कार्त्तिक और चैत्रकी पूर्णिमाको, राजपूताना मालवा रेलवेपर कलोलके स्टेशनसे १४ मील पश्चिम काडी विभागके काडी कसबेमे सालमें कई वार, सिद्धपुरसे ८ मील दक्षिण काडी विभागके ऊँझा कसवेमें वर्षमे एक वार और बीरमगाँवसे २५ मील दूर काडी विभागके पाटन सवडिवीजनमे वचराजीके मन्दिरके पास आश्विनमे मेला होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वड़ोदाके राज्यमें २४१५३९६ मनुष्य थे; अर्थात् १२५२९८३ पुरुष और ११६२४१३ स्त्रियाँ। इनमे २१३७५६८ हिन्दू, १८८७४० मुसलमान, ५०३३२ जैन, ३९८५४ जङ्गली जातियाँ, ८२०६ पारसी, ६४६ कृस्तान, ३६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ अन्य थे। इनमे सैकड़े पीछे ९३ गुजराती भाषा वाले, ३½ उर्दू भाषा वाले, २ महाराष्ट्री भाषा वाले और १½ अन्य भाषा बोलनेवाले थे। उस समय वडोदा राज्यके हिन्दूकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे;—प्रति हजारमे ७९० प्रभु और ८७ उस जातिकी स्त्रियाँ, ७७६ वनिया और ११ उनकी स्त्रियाँ, और ५५९ ब्राह्मण और २४ ब्राह्मणी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वडोदा राज्यमे १९५४२९० हिन्दू थे, जिनमे ३९११९८४ कुर्न्वी, १३८५०६-ब्राह्मण, ७९८५३ राजपूत, ५७०२७ बनिया, १४८३५ मलाह इत्यादि और शेषमे अन्य जातियोंके लोग थे।

वडोदा राज्यके शहर और कसवे जिनमें सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे, वडोदा विभागके वड़ोदा शहरमें ११६४२०, पेटलादमे १५५२८

डभोईमें १४५३९, सोजित्रामें ११४१२ और वासोमें १०३७१, काडी विभागके पाटनमें ३२६४६, वीसनगरमें २१३७६, काडीमें १६३३१, सिद्धपुरमें १६२२४,वाडनगरमें १५९४१ और ऊँझामें ११८८७, नौसारी विभागके नौसारीमें १६२७६, और अमरेली विभागके अमरेलीमें १५६५३।

वडौदाके राज्यमें कपडे और लोहेकी चीजें तथा मिट्टीके वर्तन वहुत तैयार होते हैं। सैकड़ो आदमी दङ्गल कुस्तीके पेशे करते है। राज्यमें ३५ से अधिक अस्पताल हैं। राज्यके ५११ स्कूलोंमें ५४००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिनमें वम्बेकी यूनिवरसिटीके अधीन एक कालिज है। लडकियोंके ४२ स्कूलोंमें लगभग ५०००लड़कियाँ और स्त्रियोंके ५स्कूलोंमें लगभग २२० स्त्रियाँ पढ़ती हैं।

वड़ोदा राज्यके मामूली सैनिक विभागमें ३८ तोपें, सोने और चाँदीकी ४ तोपें, १५४ गालन्दाज, आरटिलरीकी २ वैटरी, २४७ घोड़सवार सेना, और पैदलकी ६ रेजीमेण्ट हैं। ये सब सेना अङ्गरेजी तरीकेसे सिखलाई गई हैं। इनके अलावे गैर मामूली फौजमे लगभग ४४०० सवार और १८०० पैदल हैं। प्रतिवर्ष मामूली फौजमें लगभग ७५०००० रुपये और गैर मामूली फौजमे लगभग २८००००० रुपये खर्च पडते हैं।

इतिहास—वडोदाके राजा लोग गायकवाड़ कहलाते हैं, जिसका अर्थ गायका पालने वाला है। उनको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे २१ तोपोंकी सलामी मिलती है। वड़ोदाके किसी राजाने किसी समय अङ्गरेजोके विरुद्ध युद्ध नहीं किया था। सन् १७२०—१७२१ में केरूजीराव पटेलके पुत्र दामाजी पटेलने बालापुरकी लड़ाईमे बड़ी बीरता दिखलाई। महाराज शिवाजीके पौत्र साहूजीने, जिसकी राजधानी सतारा था अपने सेनापति खण्डेराव धवरेके मुखसे दामाजीकी प्रशंसा सुनकर उनको शमशेर बहादुरकी पदवीसे भूषित करके अपना सहायक सेनापति वनाया। थोडेही दिनोंके वाद दामाजीका देहान्त होगया, तब उनके भतीजे पीलाजी राव गायकवाड़ उनके पदपर नियुक्त होकर सेनापतिके पुत्र त्र्यम्बक धवरेके सहायक सेनापति वने।

सन् १७३१ में त्र्यम्वक धवरे और पीलाजी पूनाके पेशवाके शत्रु महाराष्ट्रोंमें मिलकर पेशवाके विरुद्ध खड़े हुए। तारीख पहिली अपरैलको बड़ोदाके पास लड़ाई हुई, जिसमें त्र्यम्वक धवरे मारा गया और उसकी सेना परास्त हुई। उसके पश्चात् त्र्यम्वकका वच्चा पुत्र यशवन्तराव सेनापति वनाया गया और पीलाजीको सेना खास खेलकी एक और पदवी मिली। शमशेर बहादुर और सेना खास खेल ये दोनों उपाधियां अबतक बड़ोदाके राजवंशमे चली आती हैं। पीलाजीने वादशाही अफसरोको संग्राममें परास्त करके गुजरातके वहुतसे प्रधान नगरोंको अपने अधिकारमें कर लिया।

सन् १७३२ में मुगल वादशाहके कर्मचारी जोधपुरके राजा अभयसिंहने पीलाजीरावको छलसे मारडाला। उस समय पीलाजीके दो पुत्र थे, दामाजी और प्रतापराव, जिनमेंसे वड़े पुत्र दामाजी उत्तराधिकारी हुए, जिन्होने अपने ३६ वर्षके अधिकारमें मुगलोंसे सम्पूर्ण गुजरात देश छीन लिया था। सन् १७३२ में पीलाजीके भाई महाजी गायकवाड़ने वड़ोदा नगरको अपने अधिकारमे कर लिया; तबसे वह शहर गायकवाड राजाओकी राजधानी है। सयाना होने पर यशवन्तराव सेनापतिके योग्य नहीं था; इसलिये धवरेवंशके

स्थान पर दामाजी सेनापति नियत हुए। दामाजीने सताराकी तारावाईकी, जो अपने पोतेको पेशवाकी अधीनतासे निकाल कर स्वतन्त्र बनानेका उद्योग करती थी, सहायता की, किन्तु पेशवाने दामाजीको छलसे पकड लिया। जब दामाजीने "राजकर" का ६५ लाख बकाया रुपया और अपने भविष्यजीतका आधा भाग देनेको इकरार किया तब पेशवाने उनको छोड दिया। उसके दूसरे वर्ष दामाजीने अपने अधिकारमें किये हुए काठियावाड देशका एक भाग पेशवाको दे दिया और आवश्यक समयमें पेशवाकी सहायता करनेका एकरार किया। सन् १७५२ में अहमदाबाद जीता गया, उसकी मालगुजारीको दामाजी और पेशवाने बांट लिया। सन् १७६१ में पानीपतकी लड़ाईके समय एक बड़ी सेना दामाजीके अधीन थी। दामाजीने अपने राज्यको बहुत बढ़ाया। सन् १७६८ में उनका देहान्त होगया।

दामाजीकी ३ स्त्रियां थीं;–पहिली स्त्रीके पुत्र गोविन्दराव, दूसरीके पुत्र सियाजीराव और फतहसिंह; और तीसरी स्त्रीके पुत्र मानाजी थे। इनमें सियाजी और फतेहसिंह बड़े पुत्र थे। दामाजी की मृत्युके समय गोविन्दराव पूनामे थे। वह माधवराव पेशवाको नजर देकर अपने पिताके उत्तराधिकारी बने। उधर बुद्धिमान फतहसिंहने अपने भाई सियाजीरावको बड़ोदाकी गद्दी पर बैठा दिया और पूनामें जाकर उनको राजा स्वीकार करनेके लिये पेशवा माधवरावसे विनय किया। माधवरावने परस्परके झगड़ेसे उनके बल घटानेके निमित्त सियाजीको राजा स्वीकार कर लिया। गोविन्दराव और फतहसिंहका परस्पर झगड़ा होने लगा। सन् १७८९ में जब फतहसिंहका देहान्त होगया, तब मानाजी पेशवाको नजर देकर सियाजीरावके राज्यका प्रबन्ध करने लगे। सन् १७९३ में मानाजीकी मृत्यु होने पर गोविन्दराव उत्तराधिकारी बने, जिनको पेशवाने अहमदाबादके जिलोंकी मालगुजारीका अपना भाग ठेका दे दिया। सन् १८०० में गोविन्दरावके देहान्त होने पर पेशवाने उनके पुत्र आनन्दरावको उत्तराधिकारी स्वीकार किया।

सन् १८१५ में जब बडोदाके राजपूत प्रसिद्ध गङ्गाधर शास्त्री मारे गये तबसे पेशवा और गायकवाडके बीचका सम्बन्ध टूट गया। पेशवाने केवल ४ लाख रुपये वार्षिक खिराज स्वीकार करली। गायकवाड स्वतन्त्र बन गये। सन् १८१७ में अङ्गरेजोंने पेशवाको परास्त किया; उस समयसे गायकवाड़ अङ्गरेजोंके करद मित्र बने।

सन् १८१९ में आनन्दराव गायकबाड़के देहान्त होने पर उनके छोटे भाई सियाजीराव और सन् १८४७ में सियाजीरावकी मृत्यु होने पर उनके बडे पुत्र गणपतिराव राज्याधिकारी हुए। सन् १८५६ में गणपतिरावके अपुत्र मरनेपर उनके भाई खांडेरावको राजसिंहासन मिला। सन् १८५७–५८ के बलवेके समय खांडेराव गायकवाडने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की, इस लिये उनकी खिराज, जो ३ लाख रुपये थे, सब माफ कर दी गई। सन् १८७० मे खांडेरावके निष्पुत्र मरजानेके उपरान्त उनके छोटे भाई मल्हारराव बडोदाके राजा हुए, जो खांडेरावको मारनेकी तदबीर करनेके अपराधमें पहिले कई वर्षोंतक राजकीय कैदी बन चुके थे। मल्हाररावने सोने चाँदीकी ४ तोपे, हीरेका हार, हीरेकी पगड़ी, मोतियोंकी झालर आदि बहुमूल्य वस्तु बनाकर अपनी उदारताका खूब परिचय दिया। उनसे बहुत प्रजन असंतुष्ट होगई; राज्यमें अप्रबंध फैला। उनके राज्यके ३ वर्षके भीतरही अङ्गरेजी गव-

नेमंटने उनके अप्रबंधके विचार करनेके लिये एक कमीशन नियत किया। कमीशनकी रिपोर्ट देनेपर भारत गवर्नमेण्टने आज्ञा दी कि महाराज मल्हारराव १७ महीनेके भीतर अपना प्रबन्ध सुधारै। उस अवधिके भीतरही सन् १८७४ में मल्हाररावपर अङ्गरेजी रेजी-डेण्ट कर्नल आर फेअरको विप देनेके उद्योग करनेका सन्देह हुआ। उसकी जाँचके लिये ६ मेम्बरोंका एक कमीशन नियत हुआ, जिनमेसे ३ ने महाराजको दोपी कहा। भारत गवर्नमेण्टने मल्हाररावको राज्यकार्यमे अयोग्य समझ कर सन् १८७५ की २२ वीं अप्रैलको पदच्युत करके मदरास भेज दिया। अङ्गरेज गवर्नमेण्टकी आज्ञासे महाराज खांडेरावकी विधवा महारानी यमुना वाईने खानदेशके एक छोटे गाँवके एक साधारण कृपकके पुत्र गोपालरावको दत्तक पुत्र बनाया। बडोदा राज्यके नियत करनेवाले पीलाजीरावके पुत्र और दामाजीरावके छोटे भाई प्रतापराव थे, जिनके वंशधर गोपालराव है। जब दामाजीराव बडोदाके राजा हुए तब उनके भाई प्रतापराव अपनी हीन आर्थिक अवस्थाके कारण खान-देशके किसी गाँवमे जा वसे। प्रतापरावसे पाँचवी पीढीमें काशीराव हुए, उन्हींके पुत्र गोपालराव हैं। सन् १८७५ की १७ वीं मईको गोपालराव बडोदाके सिंहासनपर बैठाये गये, जो महराज सर सियाजीराव गायकवाड सेना खास खेल शमशेर बहादुर जी० सी० एस० आई० के नामसे विख्यात हुए हैं। सन् १८८१ में उनको राज्यकार्यका पूर्ण अधिकार मिल गया। महाराजकी अवस्था ३१ वर्षकी है। यह अङ्गरेजी आदि विद्याओंमे अति निपुण है। कई वार विलायतसे हो आये है। इनके राज्यमे विद्याकी वडी उन्नति हुई है। प्रति बड़े गाँवोंमें एक स्कूल कायम होनेका प्रवन्ध हुआ है।

# चौबीसवां अध्याय।



## ( बम्बई हातेके गुजरात देशमें ) डाकौर, गोधड़ा, कांबे, नड़ियाद, खेड़ा और अहमदाबाद।

## डाकौर।

वड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे २२ मील उत्तर कुछ पश्चिम आनंद जंक्शन है, जहाँसे पूर्व कुछ उत्तर रेलवे लाइन अमरेठ, डाकौर, गोधड़ा, दोहड इत्यादि स्टेशन होकर रतलाम जंक्शनको गई है ( अहमदावादके रेलवेकी फिहारिस्तमें देखिये )। वडोदा और आनंदके बीचमे माही नदीपर रेलवेका पुल मिलता है। आनन्द जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसवेका रेलवे स्टेशन है। खेडा जिलेमें अमरेठ एक कसवा है, जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १५६३८ मनुष्य थे। अमरेठसे ५ मील और आनन्द जंक्शनसे १९ मील डाकौर कसवेका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेमे गुजरात प्रदेशके खेडा जिलेमें ( २२ अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ११ कला, पूर्व देशान्तरमें ) डाकौर एक छोटा कसवा तथा तीर्थस्थान है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय डाकौरमें ७७७१ मनुष्य थे; अर्थात् ७४०१ हिन्दू, ३५४ मुसलमान, ८ जैन, ५ पारसी और ३ अन्य।

डाकौरमें एक तालाब, जिसको गोमती तड़ाग कहते हैं; रणछोड़ भगवान्का बड़ा मन्दिर; त्रिविक्रमजीका मन्दिर; एक अस्पताल और पोष्टआफिस है। डाकौर पश्चिमी भारतमें यात्राका एक प्रधान स्थान है। वहाँ मन्दिरोंमें भगवान्के भोगरागका बड़ा प्रबंध रहता था। प्रतिमहीनेमें वहाँ बहुतसे यात्री जाते हैं। कार्तिककी पूर्णिमाको वहाँ बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग १००००० मनुष्य जाते हैं।

डाकौरकी कथा—ऐसा प्रसिद्ध है कि बुढ़ानभक्त नामक एक ब्राह्मण, जिसको रामदास भी कहते हैं, डाकौरमें रहता था। वह प्रतिवर्ष गोमती द्वारिकामें जाकर बड़ी श्रद्धा, भक्तिसे रणछोड़जीका दर्शन किया करता। संवत् १२७२ ( सन् १२१५ ईस्वी ) में रणछोड भगवान्ने उससे कहा कि हे विप्र ! तुम अति वृद्ध होगये; इस लिये यहाँ आनेमें तुमको क्लेश होता है। तुम आधीरातके समय गाड़ा लेआओ, मैं तुम्हारे संग तुम्हारे नगरमे चलूँगा। तुम वहाँही हमारा दर्शन करते रहना। भगवान्की आज्ञानुसार वह ब्राह्मण आधीरातमें गाडा लाया। रणछोड़जीकी मूर्त्ति गाड़ापर विराजमान हुई। ब्राह्मण गाडा लेकर डाकौरमें पहुँचा।

भोर होनेपर गोमतीद्वारिकाके पुजारी लोग बुढ़ानभक्तपर सन्देह करके रणछोड़जीको खोजते हुए डाकौरकी ओर दौड़े। रणछोड़जीने बुढ़ानभक्तसे कहा कि द्वारिकाके पुजारी आते हैं, तुम मुझको तालाबमें छिपा दो। ब्राह्मणने वैसाही किया। पुजारियोंने जब बुढान भक्तके गृहमे मूर्त्तिको नहीं पाया; तब तालाबमें भालेसे टटोलकर मूर्त्तिको निकाल लिया। भालेकी नोकका चिह्न मूर्त्तिके कटि स्थानमें देख पड़ता है। बुढानभक्तने पुजारियोंसे कहा कि तुम लोग मुझसे मूर्त्तिके बराबर सोना लेकर इसको छोड़ दो। पुजारियोंने लोभवश यह बात स्वीकार की। ब्राह्मण बहुतसा सोना लाकर मूर्त्तिको तौलने लगा, किन्तु मूर्त्तिका पलरा नहीं उठा। जब रणछोड़जीके स्वप्नके अनुसार उसने सब सोनेको पलरेसे उतारकर अपनी स्त्रीके कानकी बारी उस पलरेपर रक्खी, तब मूर्त्तिका पलरा उठ गया।

उस समय रणछोड़जीने पुजारियोंको स्वप्न दिया कि तुम लोग यहाँसे चले जाओ। गोमतीद्वारिकामें गोमतीगङ्गाका माहात्म्य रहेगा। लाडुवा गाँवके पास पृथ्वीके गर्भमें एक मेरी मूर्त्ति है। तुम लोग उसको निकालकर बेटद्वारिकामें स्थापित करो। मैं नित्यही ७ पहर डाकौरमें और १ पहर बेटद्वारिकामें निवास करूँगा। पुजारियोने भगवान्की आज्ञानुसार लाडुवा गाँवसे मूर्त्तिको लाकर बेटद्वारिकामें स्थापित किया। एक दूसरी मूर्त्ति गोमतीद्वारिकामें स्थापित कीगई।

## गोधड़ा।

डाकौरके रेलवे स्टेशनसे ३० मील ( आनन्द जंक्शनसे ४९ मील ) पूर्व कुछ उत्तर और बड़ोदा शहरसे सड़कद्वारा ५२ मील पूर्वोत्तर गोधड़ाका रेलवे स्टेशन है। एक सड़क नीमच छावनीसे गोधड़ा होकर बड़ोदा शहरको गई है। बम्बई हातेके गुजरात देशमें ( २२ अंश, ४६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमें ) पंचमहाल जिले तथा रेवाकण्ठाके पोलिटिकल एजेंसीका सदर स्थान और जिलेमें सबसे बड़ा कसबा गोधडा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गोधड़ामें १४६९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५३३ मुसलमान, ६४५२ हिन्दू, ५२५ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ४६ पारसी और २६ क्रस्तान।

गोधड़ा कसबेके आसपास जंगल है। गोधड़ामें एक अस्पताल, ३ स्कूल, एक मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियाँ हैं। कसबेके पास एक बडा तालाब है, जिससे धानके खेत पटाये जाते है। गोधडासे ४५ मील पूर्व रेलवे स्टेशनके पास पंचमहाल जिलेका दोहड कसबा है।

पंचमहाल जिला—यह गुजरात देशके पूर्वी विभागमे वारियाके राज्य द्वारा दो भागोंमें विभक्त है। दक्षिण–पश्चिम वाले भागके उत्तर लोनवाडा, सुन्थ और संजेलीके राज्य; पूर्व वारियाका राज्य, दक्षिण बडोदाका राज्य और पश्चिम वडोदाका राज्य और माही नदी है; नदीके वाद खेड़ा जिला हैऔर पंचमहाल जिलेके पूर्वोत्तर वाले भागके उत्तर चिलकारी और कुशालगढ़का राज्य, दक्षिण–पूर्व मालवा देश और अनासनदी; दक्षिण और पश्चिमी मालवा और पश्चिम सुन्थ, सजेली और वारियाका राज्य है। जिलेका सदर स्थान गोधड़ा है। जिलेमें गोधड़ा, कुलोल और दोहद ये तीन सबडिवीजन है। जिलके मध्य भागमें खास करके जङ्गल है। जिलेमें२५०० फीटसे अधिक ऊँचा कोई पहाडी नहीं है। पंचमहाल जिलेमे गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पंचमहाल जिलेके १६१३ वर्गमीलमें २५५४७९ मनुष्य थे, अर्थात् १५९६२४ हिन्दू, ७७८४० जङ्गली जातियाँ, १६०६० मुसलमान, १८६७ जैन, ४४ क्रस्तान, ३० पारसी, ७ यहूदी और ७ अन्य। हिन्दुओमें ८१७३७ कोली, ६०८६ ब्राह्मण, ५९३४ कुन्वी, ५५९५ राजपूत, ५०२३ महारा, ३१७७ चमार, १८५८ नापित ( नाई ) और वाकी में अन्य जातियोके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पंचमहाल जिलेके कसबे गोधड़ामें १४६९१ और दोहदमे १२९३५ मनुष्य थे।

इतिहास–पंचमहाल जिलेका इतिहास चम्पानेरके इतिहासमें शामिल है। चम्पानेर अब पुराने शहरका खण्डहर है। लगभग सन् ३५०से लगभग सन् १३०० ई० तक चंपानेर अनहिलवाड़ाके तोमर राजपूतोंका किला था। उसके पश्चात् सन् १४८४ तक चम्पानेर और उसके चारोंओरका देश चौहान राजपूतोके अधिकारमें था। सन् १४८४ से सन् १५३६ तक चम्पानेर गुजरातकी राजधानी था। सन्। १५३५में दिल्लीके हुमायूँने चम्पानेर शहरको लूटा। सन् १५३६ में अहमदावाद गुजरातकी राजधानी बना। १८ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंने जिलेको अपने अधिकारमें कर लिया। सन् १८५३ में अङ्गरेजी प्रवन्ध हुआ। सन् १८६१ में सिंधियाने अङ्गरेजी गवर्नमेण्टसे झांसीके पासकी भूमि लेकर पंचमहाल उनको दे दिया। वह देश रेवाकण्ठाके पुलिटिकल एजेण्टके अधीन रक्खा गया। सन् १८७७ में पचमहाल एक अलग जिला कायम हुआ। एक समय गोधड़ा कसवा अहमदावादके मुसलमान वादशाहोंके राज्यके एक भागका सदर स्थान था।

## कांबे।

आनन्द जंकशनसे दक्षिण-पश्चिम १४ मीलकी रेलवे शाखा पेटलाद तक गई है। पेटलाद वडोदाके राज्यमें सवडिवीजनका सदर स्थान और एक तिजारती कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १५५२८ मनुष्य थे, अर्थात् १०९८२ हिन्दू, ४२०२

मुसलमान, ३१८ जैन, ३० पारसी और ५ क्रस्तान। वहाँ पुलिस-स्टेशन, जेलखाना, स्कूल, कष्टम हौस और बहुतसी सराय है।

पेटलाद कसबेसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम वम्बई हातेके गुजरात देशमें कांबेकी खाड़ीके शिरके पास ( २२ अंश, १८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमे ) माही नदीके मुहानेसे उत्तर कांबे नामक देशी राज्यकी राजधानी कांबे कसवा है, जिसको खम्भातभी कहते हैं। ❀

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कांबे कसबेमें ३१३९० मनुष्य थे, अर्थात् १५२७३ पुरुष और १६११७ स्त्रियाँ। इनमें २०९५२ हिन्दू, ७४३६ मुसलमान, २८२५ जैन, १३५ पारसी और १२ क्रस्तान थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह ( वडोदा राज्यको छोड करके ) वम्बई हातेके देशी राज्योंमें ६ वाँ कसवा है।

पहिले कसबेके चारोओर ईंटोंकी दीवारका ३ मीलका घेरा था। अब तक किसी किसी जगह दीवारके हिस्से और उसके पासके टावर देखनेमें आते हैं। नवाबका महल, जिसकी बनावट अच्छी नहीं है, अच्छे प्रकारसे मरम्मत है। महम्मदशाहके राज्यके समय सन् १३२५ की बनी हुई जामामसजिद है, जिसमें जैन मन्दिरके खम्मे लगे हुए हैं। बहुतेरी इमारतोंके खण्डहर काबेके पूर्वके विभवको जनाते है। कांबेमें लकडी और पत्थरकी चीजें अच्छी तैयार होती हैं। वहाँके बने हुए भूषण बहुत सुन्दर होते हैं। वहाँ समुद्रके साधारण ज्वारका पानी २५ फीट और बड़े ज्वारका पानी ३३ फीट ऊँचा होता है; इस कारणसे वहाँ जहाजोंके आनेमें बड़ा भय रहता है और माही तथा साबरमती नदीकी मिट्टी आनेसे कांबे-की खाडीमें पानी कम होगया है, इस लिये कावे कसबेके पास जहाज नहीं आसकते, इन्हीं कारणोंसे कांबेकी तिजारत अब घट गई है।

कांबेका राज्य—गुजरातके पश्चिमी भागमें कांबेकी खाडीके पास कांबेका राज्य है। इसके उत्तर खेड़ा जिला, पूर्व खेडा जिला और बडोदा राज्यका पेटलाद सबडिवीजन और दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम कांबेकी खाडी है। बडौदाके राज्य और अङ्गरेजी राज्यके कई गाँव कांबेके राज्यके भीतर तथा कांबेके राज्यके चन्द गाँव अङ्गरेजी राज्यके खेडा जिलेमें हैं। देश खुला हुआ मैदान है। भूमि उपजाऊ है। गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कांबे राज्यके ३५० वर्गमील क्षेत्रफलमें २ कसवे ८३ गाँव और ८६०७४ मनुष्य थे, अर्थात् ७०७०८ हिन्दू, १२४१७ मुसलमान और २९४९ अन्य। कांबेके नवाब मुगल खानदानके सीया मुसलमान है। उनको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी नियत है। नवाबको लगभग ६२५००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेसे महसूल इत्यादि छोड करके २६००० रुपये अङ्गरेज महाराजको राज कर दिया जाता है। उनका सैनिक बल २०० सवार और ९०० पैदल है। नवाब जाफरअलीखाँ साहब बहादुर, जिनकी अवस्था लगभग ४२ वर्षकी है, कांबेके वर्त्त-मान नवाब है।

---

❀ पेटलादसे कावे तक रेलवे बनगई। पेटलादसे १८ मील कावेका रेलवे स्टेशन है।

इतिहास—एक मुसाफिरने सन् ९१३ में कांबेको देखा था। जान पडता है कि ११ वीं और १२ वीं सदीमें कांबे अनहिलवाड़ा राज्यके प्रधान बन्दरगाहोंमेंसे एक था। सन् १२९७ में जब मुसलमानोंने अनहिलवाडा राज्यको जीता तब कांबे हिन्दुस्तानके सबसे बड़े धनी कसबोंमेंसे एक था। सन् १३०४ में दिल्लीके अलाउद्दीनने कांबे कसबेको लूटा और वहाँके मन्दिरोंको बरबाद किया। १५ वीं सदीमें गुजरातके मुसलमान बादशाहोके अधीन गुजरातकी उन्नतिके साथ कांबेकी फिर उन्नति हुई। १६ वीं सदोके आरम्भमे वह भारतवर्षमें तिजारतका एक प्रधान केन्द्र बना था। सन् १६१३ में जब अङ्गरेज लोग आये, तब पोर्चुगाल और हालेण्डवाले अपनी अपनी कोठी वहाँ कायम कर चुके थे। पीछे सूरतकी बढती होनेसे कांबेकी घटती आरम्भ हुई। कांबेके वर्त्तमान नवाबका मूल पुरुष मोमिनखां गुजरातके अन्तिम गवर्नरसे पहिले गुजरातका गवर्नर था। उस समय मोमिनखाँका दामाद निजामखाँ कांबेका हाकिम था। सन् १७४२ मे मोमिनखांके मरनेपर उसके पुत्र मुफ्तकारखाँने दगासे निजामखाँको मार कर कांबेको अपने अधिकारमें कर लिया। १८ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंने कांबेको लूटा था।

## नड़ियाद।

आनन्द जंक्शनसे ११ मील ( बडौदा शहरके स्टेशनसे ३३ मील ) पश्चिमोत्तर और अहमदाबादके रेलवे स्टेशनसे २९ मील दक्षिण-पूर्व नडियादका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें ( २२ अंश, ४० कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५५ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें ) खेडा जिलेमें नडियाद सबडिवीजनका सदर स्थान और उस जिलेमें सबसे बड़ा कसबा नड़ियाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नड़ियादमें २९०४८ मनुष्य थे, अर्थात् १५०४२ पुरुष और १४००६ स्त्रियाँ। इनमें २४८४१ हिन्दू, ३८७४ मुसलमान, २३२ जैन, ५२ पारसी और ४९ कृस्तान थे।

नडियादमें सबजजकी कचहरी, खफीफा कचहरी, एक हाईस्कूल, एक अस्पताल और एक रूईका कल कारखाना है। वहाँ तम्बाकू और घीकी बड़ी तिजारत होती है।

## खेड़ा।

नडियादसे ११ मील ( बडोदा शहरसे ४४ मील ) पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पूर्व महम्मदाबादका रेलवे स्टेशन है। सन् १४७९ में अहमदाबादके महम्मद बेगडाने महम्मदाबादको बसाया था। उसकी बनवाई हुई भँवरबावली महम्मदाबादमें विद्यमान है। वह बावली ७५ फीट लम्बी और २५ फीट चौडी है। चक्करदार सीढ़ियोंसे नीचे जाना होता है। नीचे ८ कमरे बने हुए हैं। बावलीमें पत्थरकी २ महराबियाँ हैं, जिनमें बादशाहका झूलन लगता था।

महम्मदाबादके स्टेशनसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम खेडा कसबे तक सुन्दर सडक बनी है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें ( २२ अंश, ४४ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ४४ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान खेड़ा कसबा है, जिसको कैरा भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खेड़ा कसबेमें १०१०१ मनुष्य थे, अर्थात् ६४९७ हिन्दू, २१९० जैन, १३९२ मुसलमान, १२ सिक्ख और १० क्रस्तान।

खेडा कसबेमे सरकारी कचहरियोंके सुन्दर मकान बने हुए हैं। कचहरीके पास एक बड़ा जैन–मन्दिर; पूर्व वाले फाटकके बाहर जेलखाना और दक्षिणके फाटकके बाहर घड़ीका बुर्ज और लायब्रेरी है। इनके अलावे खेडामे १ अस्पताल और चार पांच सरकारी स्कूल हैं। खेडा जङ्गली मुहकमेके कलक्टरका सदर स्थान है। वहाँ उस मुहकमेके हाकिमोंके मकान बने हुए हैं। खेड़ामे सारी और देशी लोगोके पहननेके कपड़े बहुत छापे जाते हैं।

खेडा जिला—गुजरातके उत्तरीय विभागमे खेडा जिला है। इसके उत्तर अहमदाबाद जिला और एक छोटा देशी राज्य; पश्चिम अहमदाबाद जिला और कांबेका राज्य और दक्षिण तथा पूर्व माही नदी और बडोदाका राज्य है। जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय खेडा जिलेके १६०९ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८०४८०० मनुष्य थे, अर्थात् ७२०८६६ हिन्दू, ७२९५४ मुसलमान, ९६०३ जैन, १०४१ क्रस्तान, १३१ पारसी, ७ यहूदी और १९८ पहाडी जातियाँ इत्यादि। हिन्दुओंमें २७९३४४ कोली ( खेतिहर ), १४३१५१ कुन्बी ( खेतिहर ), ४२८०० महारा और धेर, ४१४९९ ब्राह्मण, २५७७३ राजपूत, १०८७४ चमार, १०८५९ हजाम, ८९८२ कुम्भार और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खेड़ा जिलेके कसबे नड़ियादमे २९०४८, अमरेठमें १५६३८, कपडवंजमे १४८०५, बोरसादमे १२१५९ और खेडामें १०१०१ मनुष्य थे। डाकौर कसवा भी इसी जिलेमे है।

इतिहास—खेडा कसबा बहुत पुराना है। लोग कहते है कि यह महाभारतके समयमें था। ताम्बेके दानपत्रसे निश्चय होता है कि ५ वीं सदीमें खेडा विद्यमान था। सन् ७४६ से सन् १२९० तक खेड़ा जिला राजपूत राजाओंके अधिकारमे था, जिनमे अनहिलवाड़ाके राजा अधिक प्रसिद्ध थे। १४ वीं सदीके अन्तमे खेड़ा जिला अहमदाबादके मुसलमानोके अधीन हुआ। सन् १५७३ में अकबरने उसको ले लिया। सन् १७२० से उस जिलेमें महाराष्ट्र और मुसलमान सूबेदार परस्पर झगड़ा करते रहे। सन् १७५३ मे दामाजीराव गायकवाडने खेडा कसबे और जिलेको जीता, तब पेशवा तथा गायकवाडने जिलेको बॉट लिया। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८०२ में पेशवासे खेड़ा जिलेको हिस्सा, सन् १८०३ में आनन्दराव गायकवाडसे खेडा कसवा और खेडा जिलेका एक भाग और सन् १८१७ मे गायकवाड़से खेड़ा जिलेका शेष भाग ले लिया। सन् १७३० तक खेडा कसबेकी छावनीमें अङ्गरेजी सेना रहती थी।

## अहमदाबाद।

महम्मदाबासे १८ मील ( वम्बई शहरके कुलाबाके स्टेशनसे ३१० मील ) उत्तर अहमदाबादका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें साबरमती नदीके बायें अर्थात् पूर्व किनारेपर ( २३ अंश, १ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ३८ कला ३० विकला पूर्व देशान्तरमें ) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें सबसे बडा शहर अहमदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय फौजी छावनीके साथ अहमदाबाद शहरमें १४८४१२ मनुष्य थे; अर्थात् ७६६३० पुरुष और ७१७८२ स्त्रियाँ। इनमे १०२६१९ हिन्दू, ३०९४६ मुसलमान, १२७४७ जैन, १०३१ क्रस्तान, ७२३ पारसी, १५६एनिमिष्टिक, १५३ यहूदी और ३७ अन्य थे। मनुष्य–गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १८ वाँ, वम्बई हातेमें तीसरा और गुजरातमे पहला शहर है।

अहमदाबाद शहरसे "वम्बे वडोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" ३ ओर गई है; जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) अहमदाबादसे पश्चिम-दक्षिणके वाढवान तक "वम्बे वडोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" और उससे आगे काठियावाडके देशी राजाओकी रेलवे है,–

अहमदाबादसे पश्चिम ४० मील वीरमगाँव जंक्शन, ५७ मील पत्री और ६२ मील खारागोडा।

वीरमगाँव जंक्शनसे पूर्वोत्तर ४१ मील महसाना जंक्शन और पश्चिम दक्षिण ३९ मील वाढ़वान जंक्शन।

वाढ़वान जक्शनसे दक्षिण-पश्चिम-५२ मील वंकानीर जंक्शन, ७७ मील राजकोट, १०१ मील गोंडल और १२४ मील जितलसर जंक्शन।

वंकानीर जंक्शनसे उत्तर १६ मील मोरवी।

जितलसर जंक्शनसे पश्चिम १० मील धोराजी, २१ मील उपलेटा और ७८ मील पोरवन्दर, जितलसरसे दक्षिण १७ मील जूनागढ़, २४ मील शाहपुर, ३९ मील केशोद और ६८ मील विरावलवन्दर और जितलसरसे पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ़, ९८ मील सिहोरा कसवा और ११२ मील भावनगर।

धोला जंक्शनसे उत्तर ५५ मील लिंवडी, ६८ मील वाढ़वान कसवा और ७२ मील वाढवान जंक्शन।

(२) वाढ़वान जंक्शनसे रेलवेके प्रसिद्ध स्टेशनोंके फासिले;–

वाढ़वानसे दक्षिण ४ मील वाढ़वान शहर, १७ मील लिंवडी और ७२ मील धोला जंक्शन।

धोला जंक्शनसे पूर्व १३ मील सोनगढ़, १८ मील सिहोर कसवा, २९ मील भावनगरका तिकट स्टेशन और ३१ मील भावनगरका स्टेशन और धोला जंक्शनसे पश्चिम २४ मील लाठी, ७७ मील जेतपुर और ८० मील जितलसर जंक्शन।

(३) अहमदाबाद जंक्शनसे उत्तर पालनपुर और पालनपुरसे पूर्वोत्तर अजमेर जंक्शन;—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

४ सावरमती।

१६ कलोल।

४३ महसाना जंक्शन।

५६ ऊंझा कसवा।

६४ सिद्धपुर।

८३ पालनपुर जंक्शन।

११५ आवूरोड।

२१८ मारवाड़ रेलवे जंक्शन।

२५१ हरिपुर।

२७२ वियावर ।

३०५ अजमेर जंक्शन ।

महसाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २५ मील पाटन; पूर्वोत्तर १३ मील वीसनगर कसवा, २१ मील वाड़नगर कसवा और २८ मील खेरालू और दक्षिण–पश्चिम ४१ मील वीरमगॉव जंक्शन ।

पालनपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १७ मील डीसा ।

मारवाड़ रेलवे जंक्शनसे जोधपुर बीकानेर रेलवेपर उत्तर कुछ पश्चिम ४४ मील लूनी जंक्शन और ६५ मील जोधपुर महलका स्टेशन।

लूनी जंक्शनसे पश्चिम ६० मील पञ्चभद्रा ।

जोधपुरसे पूर्वोत्तर २८ मील पिपरारोड, ६३ मील मर्तारोड जंक्शन, १३६ मील कुचामनरोड, १५१ मील सांभर और १५५ मील वांदीकुई जंक्शन ।

मर्तारोड जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम १०३ मील बीकानेर ।

( ४ ) अहमदाबादसे दक्षिण,–

मील-प्रसिद्ध स्टेशन ।

१८ महमदाबाद ।

२९ नड़ियाद ।

४० आनन्द जंक्शन ।

६२ वडोदा ।

६४ विश्वामित्री जंक्शन ।

८१ मियांगांव जंक्शन ।

१०६ भड़ौच ।

११२ अंकलेश्वर ।

१४३ सूरत ।

१६१ नवसारी ।

१८५ वलसर ।

१९५ उदवाडा ।

२०१ दमनरोड ।

२१५ संजान ।

२७७ वेसीनरोड ।

२८२ भयंदर ।

२८८ बोरवली ।

२९२ गुरगांव ।

२९९ बाँदरा कसवा ।

३०० माहिम ।

३०२ दादर ।

३०७ चरनी रोड ।

३१० बम्बईमें कुलावा ।

आनन्द जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसवा, १९ मील डाकोर, ४९ मील गोधडा, ९४ मील दोहद कसवा और १६४ मील रुतलाम जंक्शन और आनन्द जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण १४ मील पेटलाद कसवा ।

विश्वामित्री जंक्शनसे पूर्व १२ मील डभोई जंक्शन और २१ मील बहादुरपुर ।

मियागाँव जंक्शनसे पूर्वोत्तर २० मील डभोई जंक्शन, डभोईसे दक्षिण १० मील चन्द्रोदय और पूर्व ९ मील बहादुरपुर ।

अहमदाबादमें रेलवे स्टेशनके पास धर्मशाला है। रेलवे सड़कके पश्चिम और साबर-मती नदीसे पूर्व १५ फीटसे २० फीट तक ऊँचे शहरपनाहके भीतर २ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें अहमदाबादका खास शहर है। शहरपनाहकी दीवारमें प्रायः ५० गजके अन्तर पर पाये बने हुए है और चारो ओर १२ फाटक हैं;--पूर्व ओर सारंगपुर, कालूपुर और प्रेमभाई फाटक; उत्तर दरियापुर, दिल्ली और शाहपुर फाटक, पश्चिम खांपुर और भद्र फाटक और दक्षिण जमालपुर, स्टोरिया और राजपुर फाटक। इनके अलावे ७ छोटे फाटक है।

शहरमें अनेक चौड़ी सडकें बनी है। म्युनिसिपल्टीकी सीमाके भीतर २८ मीलसे अधिक लम्बी गाडी चलनेके लायक सडक है। प्रधान सडक शहरके आरपार उत्तरसे दक्षिणको गई है। एक सडक, जो बगलोंके फुटपाथोंके साथ ४० फीट चौडी है, पश्चिमसे पूर्वको गई है। सडकोंपर रातमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। सडकोंके बगलोंमें सुन्दर मकान और दुकानें बनी हुई है। शहरमे १४ बाजार हैं। शहरके मध्य भागके खुले हुए स्थानमे गल्लेका वडा बाजार है।

शहरमें लगभग १२५ जैनमन्दिर और अनेक हिन्दूमन्दिर है। हिन्दू मन्दिरोंमें स्वामी-नारायणका मन्दिर सबसे बडा है। जामामसजिद, रानी सिप्री, दस्तूरखां, अहमदशाह, मुहाफिजखाँ, हैवतखॉ, सैयदआलम, मलिकआलम, सीदीसैयद, कुतबशाह, सैयदउसमानी, मियाखॉ, चिस्ती, सीदीबसीर, अहमदचूस इत्यादि लोगोंकी बहुतसी मसजिदे और पहिला अहमदशाह, शाहआलम, आजिम और मवजिम, दरियाखां, असमखां, मीरआबुल अजीरु-द्दीन इत्यादिके मकबरे हैं। इनके अलावे २ लायब्रेरी, जिलेकी कचहरियाँ, अस्पताल, पागलखाना, कोढ़ीखाना, दवाखाना, ४ लड़कियोंके स्कूल १४ लड़कोंके स्कूल, और लगभग १०० खानगी स्कूल हैं।

शहर तथा उसके आस पास भी बहुतसी दर्शनीय वस्तु है,—माता भवानीका पुराना कूप, दादाहरिका कूप, काकरिया झील, शांतिदासका मन्दिर, अजीमखांका महल, जो अब जेलखानेके काममे आता है इत्यादि।

शहरसे ३½ मील पूर्वोत्तर फौजी छावनी है। शहर और छावनीके बीचमे उत्तम सडक बनी है। सड़कके बगलोंमे वटवृक्षोंकी मनोरम श्रेणी हैं। नित्य शामको बहुत लोग वहाँ हवा खाने जाते हैं। दिल्ली फाटक से ५०० गज दक्षिण २ गिरजे और शहरसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम साबरमतीके दूसरे पार सरखेज हैं। माधवपुर शहरतलीमें बहुत तिजारती लोग रहते हैं। रेलव स्टेशनसे पूर्व सारसपुर नामक एक सुन्दर शहरतली है, उसके चारों ओर दीवार है। सारसपुरमे चिन्तामणिका उत्तम जैनमन्दिर है; जिसको सन् १८६८ में शांतिदास नामक धनी सौदागरने पुराने जैनमन्दिरके स्थान पर ९ लाख रुपयेके खर्चसे बनवाया। अहमदाबादके चारों ओर १२ मीलमें दिलचस्प तवाहियॉ है।

भद्र फाटकके समीपके जेलखानेके पास एक कोठरीमें कालीजीकी मूर्त्ति है। फाटकसे बाहरकी साबरमतीका पुल टूट गया है। नदीके तीरपर अपने अपने कपडे धोती हुई स्त्रियोंके झुण्ड देख पडते हैं, जिनमें अनेक पुरुषभी कपडे धोते हैं।

उसमानपुरके सामनेसे साबरमती नदीका पानी जल कलद्वारा शहरमे आता है। प्रतिवर्ष शहरमें छोटे बडे लगभग २५ मेले होते है। अहमदाबादके सोनार, ठठेरे, जवाहिरी,

बढ़ई, कुम्भार, संगतरास, कागज बनाने वाले और हाथीदांतके काम बनानेवाले कारीगर प्रसिद्ध है। वहां देव मूर्त्तियोंके भूषण बक्स, सूतके कपडे, सुनहरी रेशमी कमख्वाब, सोना चाँदीके लैस, गलीचे, चमडेकी ढाल इत्यादि वस्तु अत्युत्तम तैयार होती है। यद्यपि अहमदाबादकी दस्तकारियाँ पहिलेसे अब कम हैं; तथापि वहाँके बहुत लोगोंका निर्वाह उन्हींसे होता है। शहरमें बड़े बड़े कोठीवाले रहते हैं। अनेक भांतिके बहुतसे कल कारखाने हैं, जिनमें १३ से अधिक केवल कपड़े बीननेके हैं।

लगभग ३५० वर्ष हुए अहमदाबाद शहरमें विनोदीराम ब्राह्मणके गृह दादूपन्थी संप्रदायके नियत करनेवाले दादूजीका जन्म हुआ था। भारत-भ्रमण पहिला खण्ड चौदहवें अध्यायके निरानामें दादूजीका वृत्तान्त लिखा हुआ है।

स्वामीनारायणका मन्दिर–शहरके पूर्वोत्तर भागमें, शहरसे उत्तरके दरियापुर नामक फाटकसे दक्षिण जानेवाली चौडी सड़कके किनारेके पास सन् १८५० का बना हुआ, स्वामीनारायणका विशाल मन्दिर है। मन्दिरका गुम्बज अठपहला है। मन्दिरमें भोगरागकी बडी तैयारी रहती है, उसके खर्चके लिये भारी आमदनीका प्रबन्ध है। १९ वी सदीमें स्वामीनारायणकी संप्रदाय चली है। इस संप्रदायके नियत करनेवाले स्वामीनारायण नामक ब्राह्मण सन् १८२५ के पीछे तक थे। गुजरात और काठियावाड़के अनेक नगरोंमें स्वामीनारायणके मन्दिर बने हुए हैं। स्वामीनारायणकी आज्ञानुसार उनके मन्दिरमें कोई स्त्री नहीं जाने पाती है।

मन्दिरके पास पिंजरापोल नामक पशुशाला है, जिसमें धार्मिक लोगोके चन्देसे लगभग १००० जानवर पाले गये है। एक कमरेमें कीड़ेभी है। उससे दक्षिण ओर नवगजपीर नामक ९ कबरें हैं। प्रत्येक कबर १८ फीट लम्बी है। लोग कहते हैं कि ये कबरे अहमदाबाद शहर बसनेके समयसे बहुत पहिलेकी हैं।

मोहाफिजखाँकी मसजिद—स्वामीनारायणके मन्दिरसे पश्चिमोत्तर शहरके दिल्ली फाटकसे दक्षिण मोहाफिजखाँकी मसजिद है, जिसको सन् १४६५ में महम्मदबेगडाके सूबेदार जमालुद्दीन मोहाफिजखांने बनवाया था। उसकी मीनार सुन्दर है। वह मसजिद वहाँकी सब मसजिदोंसे अधिक मरम्मत है।

हाथीसिंहका जैन मन्दिर–शहरके उत्तरके दिल्ली फाटकसे लगभग ६०० गज उत्तर, सडकसे पूर्व, हाथीसिंहका बडा जैन मन्दिर है। वह मन्दिर सन् १८४८ में १० लाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। लगभग १३० फीट लम्बे और १०० फीट चौडे आंगनमें जैनोंके १५ वें तीर्थकर धर्मनाथजीका उत्तम मन्दिर है। मन्दिरके नीचेका भाग मार्बुलसे बना हुआ है। मन्दिरमें धर्मनाथजीकी मार्बुलकी सुन्दर प्रतिमा बैठी है, उसके शिरपर नकली हीरोंसे भूषित सुनहरा मुकुट है। मन्दिरके आगेके जगमोहन अर्थात् पेशगाहमें उत्तम नकाशीका काम बना है। मन्दिर और जगमोहनमे श्वेत तथा नील रंगके मार्बुलके टुकडोंसे फर्श बना है और रंगदार बेश कीमती पत्थरोंकी पच्चीकारीसे फूल बेल बनाये गये है।

आंगनके चारों बगलोंमें दीवारके स्थानपर एकही तरहके ५२ शिखरदार मन्दिर है। प्रति मन्दिरमें एक, दो अथवा तीन मार्बुलकी जैन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। उनकी छाती,

कन्धाओ इत्यादि अंगोपर रत्न और सोने जडे हुए हे। सब मन्दिरोमें पीतल अथवा लोहेके जालीदार छोटे किवाड़ लगे है। मन्दिरोंके आगे आंगनकी तरफ सुन्दर ओसारे है। मन्दिरके घेरेके आगे एक विश्राम गृह और एक दूसरा मकान है।

हार्थीसिंहके मन्दिरसे लगभग १ मील पूर्वोत्तर दादाहरिका प्रसिद्ध कुँआ और उससे पूर्वोत्तर असरवागाँवमें माता भवानीका सुन्दर कुआं है।

नया जैन मन्दिर-शहरके भीतर एक सडकके वगलमें एक सुन्दर जैन मन्दिर है। एक घेरेके भीतर खास मन्दिर है। उसके आगेकी दीवारमे अनेक द्वार वने हुए हैं। मन्दिरमें प्रति द्वारके सामने मार्वुलकी एक जैन मूर्त्ति है, जिनमेंसे मध्यके द्वारके सामनेकी मूर्त्ति वड़ी है। मन्दिरके आगे सुन्दर जगमोहन और वाकी तीन वगलोंमें परिक्रमाके मार्गके बादकी दीवारमे पंक्तिसे वड़े वडे ताक वने हुए है, जिनमें जैन तीर्थकरोंकी मार्वुलकी प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। उनकी छाती आदि अङ्गोपर सोना अथवा रत्न जडे हुए हैं । ताकोंके जालीदार द्वारोंसे मूर्त्तियाँ देख पड़ती है।

अहमदशाहका मकवरा—शहरके मध्य भागमें दरियापुर फाटक और कालूपुर फाटककी सड़कके मेलके पास अहमदाबाद शहरको कायम करने वाला अहमदशाहका मकवरा है। पाहिले एक पेशगाह, जिसमें १८ स्तम्भ लगे हैं, मिलता है। मकबरेके मध्यका कमरा ३६ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। अनेक रङ्गके मार्वुलके टुकड़ोसे फर्श वना हुआ है। मकवरेमें अहमदशाहकी नकली कवर है, उसके उत्तर उसके पुत्र महम्मदशाहकी कवर और दक्षिण उसके पोते कुतवशाहकी कबर है।

अहमदशाहके मकवरेसे लगभग १५० फीट पूर्व अहमदाबादकी उत्तम इमारतोंमेंसे एक अहमदशाहकी स्त्रियोंका मकवरा हीन दशामें विद्यामान है। उसमे ८ वडी और कई एक छोटी कवरे हैं। मकबरेके आगे आङ्गन और अगवासकी इमारत है।

जुमामसजिद-अहमदशाहके मकवरेसे दक्षिण-पश्चिम प्रधान सड़क ( मानिक चौक )-के दक्षिण वगलमें जुमामसजिद नामक एक उत्तम मसाजिद है, जिसको अहमदावादके वसाने वाले अहमदशाहने सन् १४२४ में वनवाया था। एक बड़े आंगनके पश्चिम वगलमें खास मसजिद और तीन वगलोंमें मेहरावदार ओसारे और मध्यमें पानीसे भरा हुआ एक छोटा हौज है। सम्पूर्ण आंगनमें पत्थरका फर्श है। पूर्वके भागके एक घेरेमें अहमदशाहकी कबर है। उत्तर वगलमें सड़कके दक्षिण किनारेपर सदर दरवाजा है।

खास मसजिदमे २६० जैन स्तम्भ लगे हैं। उसके ऊपर मध्यमे १ वड़ा और चारों ओर १४ छोटे गुम्वज हैं। नीचे मार्वुलका फर्श है, जो पुराने होनेके कारण वहुत उदास होगया है। मार्वुलके तख्तेपर अरवी अक्षरमें मुसलमानी मतकी शिक्षाका शिलालेख है। सन् १८१९ के भूकम्पके समय मसाजिदके दोनों वड़े मीनारोंके ऊपरके भाग गिर गये, अव उनकी ऊँचाई ४४ फीटसे अधिक नहीं है।

जुमामसाजिदसे पश्चिम ओर प्रधान सडकपर अहमदशाहका वनवाया हुआ "तीन दरवाजा" है। उसमे सुन्दर नकाशीका काम वना हुआ है। दरवाजेकी छत सन् १८७७ में तोड दी गई।

अहमदशाहकी मसजिद—तीन दरवाजेसे दक्षिण—पश्चिम शहरके पश्चिमकी दीवारके पासके मानिकबुर्जके दक्षिण-पूर्व अहमदशाहकी मसजिद है। उसको अहमदशाहने जुमामसजिदसे पहिले सन् १४१४ में बनवाया था।

रानी सिप्रीकी मसजिद—शहरके दक्षिणके एोरिया फाटकसे उत्तर अहमदशाहकी पतोहू रानी सिप्रीकी सुन्दर मसजिद है। मसजिदके पास उसका मकबरा है। दोनो सन् १४३१ में बने। मसजिदके दो मीनार लगभग ५० फीट ऊंचे हैं।

रानी सिप्रीकी मसजिदसे पश्चिम दस्तूरखानकी मसजिद है, जिसको अहमदाबादके महम्मदबेगडाके मन्त्रियोने बनवाया था। उसके चन्द गज पूर्व आसाभीलका; जिसके नामसे पहिले अहमदाबादका नाम असावल था, घेरा है। वहाँ पूर्व कालमें भील राजा आसाका किला था।

कांकरिया झील—शहरके दक्षिणके राजपुर फाटकसे ३/४ मील दक्षिण पूर्व ७२ एकड भूमिपर दर्शनीय कांकरिया झील है, जिसको लोग हौजी कुतुब भी कहते है। इसको अहमदाबादके सुलतान कुतुबुद्दीनने सन् १४५१ मे बनवाया था। वह झील ३४ पहलका गोलाकार है, उसका प्रत्येक पहल ६३ गज लम्बा है, इस हिसाबसे उसका घेरा २१४२ गज अर्थात् लगभग १ १/४ मील लम्बा होता है। झीलके सब पहलोमें नीचेसे ऊपर तक पत्थरकी सीढियाँ बनी हुई है, ऊपर चारोंओर सडक हैं।

झीलके मध्यमें लगभग ७५ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा टापू है। झीलके दक्षिण किनारेसे टापू तक २५० गज लम्बी सडक बनी है, जिसके किनारो पर छोटे छोटे वृक्ष लगे हैं और फूलोंके गमले रक्खे हुए है। टापू पर नगीना नामकी छोटी फुलवाडी और घटामण्डल नामक छोटा बँगला है। टापूके मध्यमे दमकलाका छोटा हौज है। अहमदाबादके कलक्टर साहबने सन् १८७२ मे झीलकी मरम्मत करवाई और शहरके राजपुर नामक फाटक तक एक सडक बनवा दी।

शाहआलम—कांकरिया झीलसे १ १/२ मील दक्षिण पश्चिम बतवारोडके पास शाहआलम नामक प्रसिद्ध जगह है। वहाँ एक बहुत बडे आँगनके पश्चिमोत्तरके कोनेमे बडी मसजिद, दक्षिण-पूर्वके कोनेमें शाह आलमका मकबरा, दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें शाह आलमके खानदानके लोगोंका मकबरा और पूर्वोत्तरके कोनेमें पेशगाहके साथ एक कमरा और आँगनके बीचमें पानीका हौज है। आँगनमें पत्थरका फर्श है। उत्तर बगलमे दोहरा फाटक है।

मसजिदके भीतर ८ स्तम्भोकी ४ पंक्तिया और उसके आगेके दोनो कोनोंके पास ९० फीट ऊँचे दो मीनार है। उस मसजिदको महम्मद सालेहने बनवाया, उसके मीनारोंका काम निजाम्रतखांने आरम्भ किया और सयफखाँने समाप्त किया।

शाहआलमका मकबरा गुम्बजदार है। उसकी दीवार दोहरी है। बाहरकी चारों ओरकी दीवारमे २८ मेहराबियां बनी हुई हैं, जिनमें किसी किसीमे किसी धातुकी जालीदार टट्टियां और किसी किसीमे जालीदार कपाट हैं। भीतरकी दीवारमे, जो कबरके चारो ओर है; २० खम्भे लगे है और चारों ओर एक एक जालीदार दरवाजा है। मकबरेमें काले और उजले मार्बुलका फर्श है। मार्बुलके चौखट लगे हैं। शाह आलम अहमदाबादके सुलतान

महम्मद वेगडाका उपदेशक था; वह सन् १४९५ मे मर गया। महम्मद वेगडाकी कचहरीका सरदार ताजखॉ नारियालीने इस मकवरेको वनवाया । जहाँगीरकी वीवी नूरजहॉके भाई आसफखाने १७ वीं सदीमें मकवरेके गुम्वजको वेश कीमती पत्थर और सोनेसे संवारा ।

शाहआलमके मकवरेके सामने पश्चिम वड़े घेरेके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमे शाह आलमके मकवरेके नकशेका दूसरा मकवरा है, जिसमे शाह आलमके खानदानके लोगोंकी कवरे है ।

आजिम और मवजिमका मकवरा—शहरके दक्षिणके जमालपुर फाटकसे कई मील दक्षिण-पश्चिम सावरमती नदीके दूसरे पार अर्थात् उससे पश्चिम सरखेजकी इमारतोंके वनानेवाले प्रधान कारीगर आजिम और मवजिम दोनों भाइयोका वड़ा मकवरा है, जो सन् १४५७ में वना था । लोग कहते हैं कि वे दोनो खुरासानसे आये थे ।

उस मकवरेसे कई सो गज दूर सरखेजमे अहमदावादके सुलतान महम्मद वेगड़ा आदिके मकवरे है । फाटक होकर आँगनमें जाने पर वाई ओर महम्मद वेगड़ा और उसके लडकोंका वडा मकवरा देख पड़ता है, जिसके पास तालावके किनारे पर महम्मद वेगड़ाकी स्त्री राजावाईका एक उमदा मकवरा है । दहिनी ओर सुलतान अहमदशाहके उपदेशक शेख अहमदखट्टू गंजवखसका उत्तम मकवरा और एक मसजिद है । वह मकवरा गुजरातके उस किसिमके सव मकवरोसे वड़ा है । उसके ऊपर मध्यमें वड़ा गुम्वज और उसके वग-लोमें वहुतसे छोटे गुम्वज हैं । अठपहले घेरेके भीतर, जिसमें पीतलकी जालीदार खिड़-कियाँ हैं, कवर है । मार्वुलका फर्श है । गुंबजके तलमें सुन्दर मुलामा है । दरवाजे पर सन् १४७३ का पारसी लेख है । मकवरेसे लगी हुई १८ स्तम्भों पर १० गुम्वजकी मसजिद है । गंजवखस सन् १४४५ मे अति वृद्ध होकर मरा । उसके स्मरणार्थ मकवरा और मस-जिद वनाई गई । उसकी कवरके दक्षिण उसके चेले शेख शहावुद्दीनकी कवर है ।

महम्मद वेगडाने १७ एकड़ भूमिपर तालाव वनवाया, उसके चारों ओर सीढ़ियॉ वनाई और उसके दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास एक सुन्दर महल वनाया, जो हीन दशामें विद्यमान है। तालावमें घड़ियाल रहते हैं। उससे थोड़ा दक्षिण वावा अलीशेरका छोटा मकवरा है। १७ वीं सदीमें सरखेज नीलके लिये वहुत प्रसिद्ध था । सन् १६२० में हालेंड वालेंने वहाँ एक कोठी कायम की ।

सावरमती नदी—अहमदावाद शहरके पश्चिम सावरमती नदी वहती है । शहरके पास उसकी चौड़ाई लगभग ५०० गजसे ६०० गज तक है । नदी सर्वदा नाव चलनेके योग्य नहीं रहती । गर्मीके दिनोंमें उसमें केवल दो तीन फीट गहरा पानी रह जाता है। अहमदावाद जिलेमें सावरमतीके किनारेपर नीलकण्ठ महादेव, खड्गधारेश्वर महादेव और भीमनाथ महादेवके ३ प्रसिद्ध शिवालय हैं । उस जिलेमें वह सवसे वडी नदी है । वह नदी पूर्वोत्तरमें अर्वली पहाड़से निकलकर दक्षिण—पश्चिमको वहती हुई लगभग ३०० मील वह-नेके उपरान्त कावेकी खाड़ीमें गिरती है । वहुतसी छोटी नदियाँ उसमें मिली हैं। उस नदीका शुद्ध नाम साभ्रमती है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—( उत्तरखण्ड, १३५ वाँ अध्याय ) कश्यपजीने अर्वुद अर्थात् अर्वली पर्वतमे, जहॉ वचित्र सरस्वती नदी थी, अनेक वर्षों तक भारी तप किया था।

मुनि गणोंने उनसे प्रार्थना की कि तुम हम लोगोंके हितके लिये यहाँ गङ्गाको लाओ। कश्यपजीने अर्बुद वनमें सरस्वती नदीके तीरपर तप आरम्भ किया और अन्य ऋषि गण भी शिवकी आराधना करने लगे। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे कश्यप! तुम इच्छित वर मांगो। कश्यपजीने कहा कि हे भगवन्! तुम मुझको अपने शिरमें स्थित पवित्र गङ्गाको दो। तव शिवजीने अपनी एक जटासे गङ्गाको दिया। कश्यपजी गङ्गाको अपने आश्रममें ले गये। उस समयसे कश्यपजीके आश्रमका नाम केशरन्ध्र तीर्थ और गङ्गाका नाम काश्यपीगङ्गा हुआ। काश्यपीगङ्गाके दर्शन मात्रसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते हैं। उसका नाम सतयुगमें कृतवती, त्रेतामें गिरिकार्णिका, द्वापरमें चन्दना और कलियुगमें साभ्रमती रहता है। उसके तीरपर बहुतसे महर्षि निवास करते हैं। उसके जलमें सम्पूर्ण तीर्थोंका वास है। उसके पास श्राद्ध करनेसे पितरोंका शीघ्रही उद्धार होजाता है। उसके तीरपर ब्रह्मचारीश और गङ्गाधर शिवलिङ्ग और राजखड्ग नामक पवित्र तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते हैं।

(१३६ वाँ अध्याय) साभ्रमती नदी नन्दीकुण्डसे निकलकर अर्बुद पर्वतको लांघकर आगे गई है। नन्दीकुण्डके पास कपालमोचन तीर्थ और कपालेश शिवलिङ्ग है। (१३७ वाँ अध्याय) साभ्रमती नदी नन्दी प्रदेशसे विकीर्ण वनमें जाकर पर्वतोंके किनारोंको काटती हुई ७ धाराओंमें विभक्त होकर दक्षिण ओर समुद्रमें जामिली है। सातों धाराओंके नाम ये हैं,—१ साभ्रमती, २ सेटिका, ३ वल्किनी, ४ हिरण्या, ५ हस्तिमती, ६ वेत्रमती और ७ वीं भद्रामुखी। (१३९ वाँ अध्याय) मातृतीर्थके समीप साभ्रमतीमें स्नान करनेसे मातृ मण्डलमें निवास होता है। साभ्रमती और गोखुराके संगममें स्नान करनेवालेको करोड यज्ञ करनेका फल मिलता है। (१४७ वाँ अध्याय) साभ्रमतीके तीरपर खड्ग तीर्थमें स्नान करके खड्गधारेश्वर शिवके दर्शन करनेसे मनुष्यको स्वर्गलोक मिलता है। खड्ग धारेश्वरकी पूजा कार्त्तिकमें करनेसे मनोवांछित फल मिलता है और वैशाखमें करनेसे राज्य लाभ होता है। (१७० वाँ अध्याय) समुद्र और साभ्रमतीके संगममें स्नान करनेसे महापातकोंका नाश होजाता है। वहाँ श्राद्ध करनेसे मनुष्यका ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है और पितर लोकमें निवास होता है। (१७२ वाँ अध्याय) साभ्रमतीके तीरपर नीलकण्ठ तीर्थमें नीलकण्ठ महादेव हैं। उनके दर्शन और पूजन करनेसे मनोवांछित फल लाभ होता है तथा मुक्ति मिलती है।

अहमदाबाद जिला—गुजरात देशमें अहमदाबाद जिला है। इसके उत्तर बडोदाके राज्यका उत्तरी भाग; पूर्वोत्तर माहीकण्ठा एजेंसी; पूर्व एक देशी राज्य और खेडा जिला; दक्षिण-पूर्व कांबेकी खाडी; दक्षिण और पश्चिम काठियावाड़ प्राय द्वीप है। जिलेकी सीमाओंके भीतर वड़ोदा और काठियावाड़के राज्योंके अनेक गाँव हैं और इस जिलेके गाँवोंके अनेक झुण्ड जिलेकी सीमाओंके बाहर हैं। जिलेमें दक्षिणी सीमाके पास और उत्तरी सीमाके बाहर कई एक चट्टानी पहाड़ियाँ हैं। प्रधान नदी साबरमती है। पश्चिम भागके अलावे, जहाँका पानी बहुत खारा है, जिलेमें सर्वत्र कूप हैं, जिनमेंसे बहुतेरोंमें २५ फीटके नीचे पानी है। जगह जगह जलाशयभी हैं। अहमदाबाद शहरसे लगभग ३७ मील दक्षिण पश्चिम वीरमगाँव सबडिविजनमें ५० वर्गमील क्षेत्रफलमें एक बड़ी झील है, जिसमें कई एक छोटे टापू बने हैं। जिलेके पूर्वोत्तर भागमें थोड़ा जङ्गल है। जिलेकी मवेसियाँ बहुत उत्तम होती हैं। जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

## गुजराती बर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

અ આ ઇ ઈ ઉ ઊ ઋ ૠ ઌ એ ઐ ઓ ઔ અં અઃ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द

ક ખ ગ ઘ ઙ ચ છ જ ઝ ઞ ટ ઠ ડ ઢ ણ ત થ દ

ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ

ધ ન પ ફ બ ભ મ ય ર લ વ શ ષ સ હ ળ ક્ષ જ્ઞ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

કા કિ કી કુ કૂ કે કૈ કો કૌ કં કઃ ૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदावाद जिलेके ३८२१ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८५६३२४ मनुष्य थे; अर्थात् ७२९४९३ हिन्दू, ८३९४२ मुसलमान, ३८४७० जैन, १९९६ जङ्गली, १५३८ कृस्तान, ६५२ पारसी और २३३ यहूदी। हिन्दुओंमें १७६३६८ कोली, १०९६९० कुन्वी, ४८६५८ राजपूत, ४३००० ब्राह्मण, ४०६२६ महारा, २०५५५ कुंभार, १५३७७ चमार, ११६७९ लोहार और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदावाद जिलेके कसबे अहमदावादमें १४८४१२, वीरमगाँवमें २३२०९, धोलकामे १६४९४ और धोलेडामें १००८८ मनुष्य थे। इनके अलावे धुंधुक, परांजित; गोगो, मुरासा और सानन्द छोटे कसबे हैं।

इतिहास–पहिले पहल अनहिलवाड़ाके राजपूत राजाओंने ( सन् ७४६–१२९७ ) अहमदावाद जिलेकी भूमि जोतवानेका प्रबंध किया था। वहाँके राजाओंके प्रबल होनेके समयभी जिलेका वडा भाग अर्द्ध स्वाधीन भीलोंके हस्तगत था।

सन् १४११ में सुलतान अहमदने, जिसका राज्य सन् १४१२ से १४४३ तक था, हिन्दुओंके पुराने नगर असावलके पास, जो शहरके दक्षिणीय भागमें विद्यमान है, अहमदाबादके शहरपनाहका काम आरम्भ किया। सन् १४८६ में महम्मदशाह वेगडाने शहरपनाहको दुरुस्त करवाया। सन् १५११ तक आवादी और धनमे शहर वढ़ा चढ़ा था। सन् १५१२ से १५७२ तक गुजरातके मुसलमान वादशाहोंके प्रतापकी घटतीके साथ साथ शहरकी घटती हुई। सन् १५७३ में दिल्लीके अकवरने अहमदावाहके तीसरे मुजफ्फरशाहके राज्यके समय गुजरातके साथ अहमदावादको जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया। भील लोगोंने भी उनकी अधीनता स्वीकार की। फिर शहरकी उन्नति होने लगी। १६ वीं और १७ वीं सदीमें अहमदावाद पश्चिमी भारतके प्रतापशाली शहरोंमेंसे एक था। फिरिस्तामें लिखा है कि अहमदावादके ३६० महल्ले अलग अलग दीवारोंसे घेरे हुए थे। लोग कहते हैं कि उस समय शहरमें लगभग ९ लाख मनुष्य वसते थे। वहाँ १८ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीका अधिकार नाममात्र रह गया! वहुतेरे मुसलमान और महाराष्ट्र प्रधान अहमदावादके लिये झगडने लगे। शहरकी घटती होने लगी। सन् १७३८ में दामाजी गायकवाड और मुहिमखां मुगलने अहमदावाद शहरको ले लिया। उसके पश्चात् जब पेशवाने दामाजीको कैद कर लिया, तब मुगलके कर्मचारियोंने सम्पूर्ण शहरपर अपना अधिकार जमाया, किन्तु जब दामाजी कैदसे छूटकर आये तब उन्होंने रघुनाथरावकी फौजकी सहायता लेकर सन् १७५३ में शहरको फिर ले लिया। सन् १७५७ में मुहीमखांने महाराष्ट्रोंसे शहरको फिर गया। सन् १८०३ में अहमदावाद जिलेमें अङ्गरेजी अधिकार हुआ। सन् १८१७ में गायकवाड़ने अङ्गरेजोंको अहमदावाद शहर और उस जिलेके बाकी हिस्सेको, जो उनके और पेशवाके हिस्सेमें थे, दे दिया। सन् १८१८ की पहिली जनवरीको अहमदावाद एक अलग जिला वनाया गया। उस समयसे शहरकी फिर वढ़ती होने लगी। सन् १८३३ में अङ्गरेजी सरकारने २५०००० रुपयेके खर्चसे शहरकी दीवारकी मरम्मत करवाई। सन् १८७५में नदीकी वाढ़से अहमदावाद शहरके ३८८७ मकान टूट गये और लगभग ६००००० रुपयेकी वस्तुओंकी हानि हुई।

गुजरात देश–बम्बई हातेमें सिन्ध देशसे दक्षिण (काठियावाड प्रायद्वीपके साथ) गुजरात नामक प्रसिद्ध देश है। उसके उत्तर राजपूताना, पूर्व विंध्य और सतपुडा पहाड़ीके भाग, दक्षिण कोकन और पश्चिम समुद्र है। उसमें सूरत, भड़ौच, खेड़ा, पंचमहाल और अहमदाबाद ये ५ अङ्गरेजी जिले, जिनका क्षेत्रफल १०१५८ वर्गमील है, और बड़ोदाका राज्य तथा वम्बे गवर्नमेंटके अधीनके काठियावाड, माहीकण्ठा, रेवाकण्ठा, कांबे, नारूकोर्ट इत्यादि देशी राज्य हैं, जिनका क्षेत्रफल ५९८८० वर्गमील है। अङ्गरेजी जिले और देशी राज्यों दोनोंका क्षेत्रफल ७००३८ वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय अगरेजी पांचो जिलों मे २८५७७३१ और वड़ोदा गुजरातके देशी राज्योंमें ६९२२०४९ तथा अगरेजी जिलों और देशी राज्यों दोनोंमें ९७७९७८० मनुष्य थे। कभी कभी काठियावाड़को छोड कर वाकी देशको, जिसका क्षेत्रफल ४१५३६ वर्गमील है, गुजरात देश कहते है। गुजरात देश कपासकी उपज और उत्तम मवेसियोंके लिये प्रसिद्ध है (गुजरातका इतिहास वंबईके इतिहासमें लिखा हुआ है)। इसी देशमे सुप्रसिद्ध स्वामी दयानंद सरस्वती-जीका जन्म हुआ था।

स्वामी दयानद सरस्वतीका संक्षिप्त जीवनचरित्र–गुजरातके काठियावाडके मोरवी नगर-में औदीच्य ब्राह्मणके घर सन् १८२४ ई० से स्वामीदयानद सरस्वतीजीका जन्म हुआ। उनके पिता अबाशंकर एक प्रतिष्ठित जिमीदार थे। पिताने उनका नाम मूलशंकर रक्खा और बाल्यावस्थाहीमें उनको रुद्री और शुक्ल यजुर्वेद प्रारंभ करा दिया। मूलशंकरकी अवस्था २० वर्षकी हुई, तब उनके चचाका, जो उनसे वड़ा स्नेह रखतेथे, देहांत होगया। उस समयसे उनके चित्तमे मनुष्य सबधी अनेक प्रश्न उत्पन्न होने लगे और उनके मनमें वैराग उत्पन्न हुआ। जब उनके पिता उनके विवाहका उद्योग करने लगे, तब उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं कभी विवाह न करूगा। जब व्याहका दिन एक मास रह गया, तब मूलशंकर चुपके निकल कर इधर उधर भ्रमण करने लगे। भ्रमण करते हुए उनको साधु रूपधारी कई एक ठग मिले, जिनमें-से एकने उनकी अंगूठियां ठगली और दूसरेने, जो एक रानीको निकाल लाया था, उनसे ठट्ठा करना आरभ किया, इसलिये मूलशंकर किसी जगह न ठहर कर सिद्धपुरके बड़े मेलेमें चले गये। उनके पिता अंवाशंकरने उनका समाचार पाकर सिद्धपुरमे जाकर एक मन्दिरमें उनको पकडा। उन्होंने मूलशंकरकी कोपीन फाड डाली तथा तूंबा तोड़ डाला। चौथे दिन रात्रिमें मूलशकर अर्थात् स्वामी दयानंद सरस्वती वहांसे भाग निकले। उसके पश्चात् उन्होंने कई एक महात्माओंसे मिल कर योगाभ्यास किया। उसके उपरांत वह भ्रमण करते हुए अलक-नदा नदीके निकासके स्थानमें पहुंचे। उस समय उन्होने विचार किया कि हिमालयकी वर्फमें गल कर प्राण त्याग करदे, किंतु फिर शोचा कि विना ज्ञान प्राप्त किये हुए मरना पाप है, इस लिये विद्या प्राप्त करनी चाहिये। ऐसा विचार वह वहांसे मथुरामें आये। उस समय मथुरामें स्वामी विरजानद नामक ८१ वर्षका एक महान् विद्वान्, जो दोनों आंखोंसे अन्धे थे, रहते थे। उनको प्राचीन आर्य ग्रन्थोंके अतिरिक्त नवीन ग्रन्थोंपर श्रद्धा न थी। स्वामी दयानंदजी-ने उनसेही विद्याभ्यास आरंभ किया। अमरलाल नामक एक धर्मात्मा पुरुषने स्वामीजीके नित्यके भोजनादिका प्रबंध कर दिया। स्वामी दयानदजीने अढ़ाई वर्ष मथुरामें रह कर स्वामी विरजानदजीसे महाभाष्य, वेदांतसूत्र, अष्टाध्यायी इत्यादि ग्रन्थ समाप्त किये। जब वह भेंटके

लिये कुछ लौंगके दाने लेकर अपने गुरुजीसे विदा मांगने गये, तब स्वामी विरजानंदजीने उनको आज्ञा दी कि जो वेदविद्या संसारसे उठ गई है, तुम उसका प्रचार करो, मत मतांतरोंको दूर करके देशका सुधार करो और मनुष्यकृत ग्रन्थो पर, जिनमें परमेश्वर और ऋषियोंकी निंदा भरी है, विश्वास मत करो। स्वामी दयानंदजी गुरुकी आज्ञा पालन करनेकी प्रतिज्ञा करके वहांसे विदा हुए और उसी दिनसे उसका उद्योग करने लगे।

स्वामी दयानन्दसरस्वतीको स्वामी विरजानन्दके मिलनेसे वेदों, उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थोंपर श्रद्धा हुई। उन ग्रन्थोंको पढ़नेसे उनको असाधारण ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् वह भारतवर्षके नगरोंमें भ्रमण करके व्याख्यान देने और शास्त्रार्थ करने लगे। वह अपने कथनका प्रमाण वेदों और उपनिषदोंसे देते थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक बड़ी पुस्तक बनाई और बहुतसी पाठशालाये स्थापित की। वह वेद, उपनिषद आदि अति प्राचीन ग्रन्थोंको मानते थे। ईश्वरको निराकार मानकर मूर्त्ति पूजाका निषेध करते थे। ईश्वर, जीव और प्रकृतिको अनादि और नित्य मानते थे। स्त्री, शूद्र तथा हिन्दू मात्रको वेद पढ़नेका अधिकारी कहते थे। विधवा विवाहके पक्षपाती थे।

स्वामीजीके अनुयायियोने "आर्य्यसमाज" स्थापित किया, जो भारतवर्षके प्रायः सब बड़े नगरोंमें विशेष करके पञ्जाब प्रान्तमें फैला हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वतीके उद्योगसे भारतवर्षमें वेदका प्रचार प्रथमकी अपेक्षा अब बहुत बढ़ गया है।

स्वामीजीने सन् १८८३ ईस्वीके ३० अकतूबरको, जब उनका वय ५९ वर्षका था, राजपूतानेके अजमेर शहरमे अपने शरीरका परित्याग किया।

राधास्वामी-मत—इस उन्नीसवीं सदीमें ब्रह्मसमाज, आर्य्यसमाज, स्वामीनारायणका मत, सतनामी पन्थ, कुम्भी पन्थिया, राधास्वामीमत ये सब नये पन्थ नियत हुए हैं, जिनका संक्षिप्त वृत्तान्त भारत-भ्रमणमें स्थान स्थानपर लिखा गया है। राधास्वामी मतकी कथा ऐसी है,-आगरा निवासी राधास्वामीजीने राधास्वामी मतको नियत किया, जो जातिके खत्री थे। पश्चिमोत्तर देशके पोष्टमास्टर जनरल राय सालग्राम साहेब बहादुरने राधास्वामी कृत "सारवचनराधास्वामी" नामक पुस्तकको सन् १८८५ में छपवाया था, उन्होंने उसके आरम्भमे लिखा है कि आगरा शहरके पन्नीगली नामक महल्लेमे संवत् १८७५ ( सन् १८१८ ईस्वी ) के भादों बदी अष्टमीकी अर्द्धरात्रिके समय राधास्वामीजीका जन्म हुआ। वह बाल अवस्थाहीसे खास २ लोगोको परमार्थका उपदेश देने लगे। उन्होंने लगभग १५ वर्ष तक अपने मकानके एक कोठेमें बैठकर श्रुतशब्दयोगका अभ्यास किया और उसके पश्चात् १७ वर्ष तक अपने गृहमें सतसंगियों और परमार्थीलोगोको संतमत अर्थात् राधास्वामी मतका उपदेश दिया। लगभग ३००० मनुष्य उनका उपदेश ग्रहण करके उनके मतमे आगये। अब बहुतसे लोग उनके मतके अभ्यासमें लगे हुए है।

आगरामें लाला शिवदयालसिंहजी, वृन्दावन और प्रतापसिंह ३ भाई थे, जिनमेंसे लाला शिवदयालसिंहजी पीछे राधास्वामीजीके नामसे प्रसिद्ध होगये, प्रतापसिंह अब तक विद्यमान हैं। राधास्वामीजीका संवत् १९३५ ( सन् १८७८ ) के असाढ़बदी १ को देहान्त होगया। आगरा शहरसे ३ मील दूर राधास्वामी नामक बागमें उनका सुन्दर समाधिमन्दिर बना है। वहाँ राधास्वामी मतके बहुत साधु रहते हैं।

राधास्वामीजीके प्रधान शिष्य आगरा निवासी कायस्थकुलभूषण राय सालग्राम साहेव वहादुर पोष्टमास्टर जनरलने इस मतको वहुत फैलाया है। इन्होने इस मतके अनेक वड़े वडे ग्रन्थ वनाये और छपवाये है। उनके प्रधान शिष्य काशीनिवासी पण्डित ब्रह्मशङ्कर मिश्रजी है। आगरा और इलाहाबादमें राधास्वामी मतकी संगत अर्थात् सभा नियत हुई है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भारतवर्पमे इस मतके १७६४३ मनुष्य थे।

राधास्वामी सम्प्रदायके ग्रन्थोमे लिखा है कि जो ईश्वर सबसे परे है, उसका नाम राधास्वामी है। उस मतके लोग आगराके लाला शिवदयालसिंहजीको उन्हीका अवतार मानकर उनको राधास्वामी कहने लगे। राधास्वामीमत श्रीकवीर साहबके मतसे वहुत मिलता है। इस मतके लोग "सुरत शब्द योग" का अभ्यास करते है, अर्थात् जीवात्माको नेत्रोके स्थानसे ऊपर ब्रह्माडमे चढाते है और अन्तरका शब्द सुनते है। इनके मतमें सच्चा गुरु सच्चा नाम और सच्चा सतसंग इन ३ वातोंकी आवश्यकता है। इस मतके लोग शराव आदि मादक वस्तु नहीं पीते और मांस नहीं खाते। इनके मतमें तीर्थ, व्रत, मूर्त्तिपूजा करने और पुस्तकोंके खाली पढ़नेहीसे अन्तः करण शुद्ध नहीं होता है।

काठियावाड—बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशके पश्चिमी भागमे काठियावाड़ प्रायद्वीप है। इसके उत्तर कच्छकी खाडी और कच्छका रन वाद कच्छ देश, पूर्व सावरमती नदी और कांबेकी खाड़ी वाद गुजरात देश और दक्षिण और पश्चिम अरवका समुद्र है। इसके दक्षिण-पश्चिमके भागको, जो लगभग १०० मील लम्बा होगा, सौराष्ट्र देश कहते हैं, जिसमें सोमनाथ, पट्टन, विरावल इत्यादि नगर है। काठियावाड़की सबसे अधिक लम्वाई लगभग २२० मील और सवसे अधिक चौडाई १६५ मील है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय काठियावाडमें लगभग १३२० वर्गमील भूमि, जिसमें लगभग १४८००० मनुष्य थे, वडोदाके राज्यमें, लगभग ११०० वर्गमील भूमि, जिसमें १६०००० मनुष्य थे, अङ्गरेजी राज्यके अहमदावाद जिलेमे, लगभग ७ वर्गमील भूमि, जिसमें १२६३६ मनुष्य थे, पोर्चुगीजोंके राज्य डिऊके अधिकारमे और वाकी २०५५९ वर्गमील भूमि, जिसमें २३४३८९९ मनुष्य थे, काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंसीके अधीन थी। काठियावाडके राज्यसे वडोदाके महाराजको १०९००० रुपये, अङ्गरेजी सरकारको अहमदावाद जिलेके भागसे २६६००० रुपये और पोर्चुगालके गवर्नमेण्टको लगभग ३८००० रुपये मालगुजारी आती है।

काठियावाडके पोलिटिकल एजेंसीके अधीन, जो सन् १८२२ मे कायम हुई, छोटे वडे १८७ देशी राज्य हैं। इनमेंसे १३ अङ्गरेजी गवर्नमेंटको कर नहीं देते और १०५ अङ्गरेजी गवर्नमेंटको और ७९ वडोदाके महाराजको 'राजकर' देते हैं तथा १२४ जूनागढ़के नव्वावको भी खिराज देते हैं। वह एजेंसी ४ भागोंमें विभक्त है,—अर्थात् झालावाड, हालार, सौराष्ट्र और गोहेलवार, जिनमें एक एक पोलिटिकेल एसिस्टेंट रहते हैं, जिनको जिला जज और मजिष्ट्रेटके समान अखतियार है। वे लोग अपनी समायतसे वड़े मुकदमोंको राजकोटकी फौजदारी कचहरीमें भेजते हैं। एजेंसीके प्रधान हाकिम पोलिटिकल एजेण्टका सदर स्थान राजकोट है।

काठियावाड़में स्थान स्थानपर छोटी पहाड़ियाँ हैं। अनेक छोटी नदियाँ है, जिनमें भदर नदी प्रधान है। लगभग १५०० वर्गमील गिरके जंगलके अलावे काठियावाड़में प्रासिद्ध जंगल हैं। जंगलोंमें चीता, तेंदुए, हरिन इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। पहिले सम्पूर्ण काठियावाड़ और गुजरातमें बहुत सिंह होते थे, किन्तु अब वे केवल गिर पहाड़ीके जंगलमें मिलते हैं। जूनागढ़के पास बहुत गुफाये हैं। गिरनार और पालीटाणाकी पहाडियोंपर सुन्दर जैन मन्दिर है। काठियावाड़की एजेंसीमें कपास, बाजडा और जवाड बहुत होते है। चन्द भागोंमें हलदी, ऊख और नील भी होते है। बच्चे देनेके लिये बहुत घोडियाँ पाली जाती है। कई एक भागोंमें भेड़ बहुत होती है। काठियावाड़में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८६३ में काठियावाड़के पोलिटिकेल एजेसीके अधीनेक देशी राज्य ७ दर्जेमें विभाग किये गये। पहिले और दूसरे दर्जेके प्रधानो अर्थात् राजाओंको दीवानी और फौजदारी दोनो मुहकमेके विचार करनेका अधिकार है। उनसे कम दर्जेके राजाओंके अखतियार दर्जेके अनुसार घटते गये है। पहले दर्जेमें भावनगर, नवानगर, जूनागढ़ और ध्रॉगड्रा, और दूसरे दर्जेमें गोंडल, मोरवी, पोरबन्दर, वाढ़वान, लिंबड़ी, झिङ्गवाड़ा, वंकानेर इत्यादि किये गये, किन्तु अब मोरवी और गोण्डल प्रथम दर्जेमें और पोरवन्दर तीसरे दर्जेमे कर दिये गये हैं।

काठियावाड़के बड़े देशी राज्योंका त्रिज,—

| नं० | राज्य | क्षेत्रफल वर्गमील | मनुष्य-संख्या सन् १८८१ | मालगुजारी |
|---|---|---|---|---|
| १. | भावनगर .. .. | २८६० | ४००३२३ | ३४०००००० |
| २ | नवानगर . .. . | ३७९१ | ३१६१४७ | २४०००००० |
| ३ | जूनागढ़ ..... . | ३२७९ | ३८७४९९ | २१०००००० |
| ४ | गोंण्डल . . | १०२४ | १३५६०४ | १२०००००० |
| ५ | मोरवी ...... ... | ८२१ | ८९९६४ | १००००००० |
| ६ | ध्रॉगड्रा . . . . . | ११५६ | ९९६८६ | ७५०००० |
| ७ | पोरबन्दर .. .. ... | ६३६ | ७१०७२ | ५५०००० |
| ८ | वाढवान ..... ... | २३६ | ४२५०० | ४५०००० |
| ९ | लिंबडी .. ..... | ३४४ | ४३०६३ | २६४००० |
| १० | राजकोट .. . | २८३ | ४६५४० | २०५००० |
| ११ | पालीटाणा. | २८८ | ४९२७१ | २०००००० |

सन् १८८१ की मनुष्य—गणनाके समय काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंसीके देशी राज्योंके २०५५९ वर्गमील क्षेत्रफलमे २३४३८९९ मनुष्य थे, अर्थात्

१९४२६५८ हिन्दू, ३०३५३० मुसलमान, ९६१४१ जैन, ६०५ क्रस्तान, ४८९ पारसी, १४५ यहूदी और ३२४ अन्य । हिन्दुओंमे ३३०८४० कोली, ३१६८३८ कुन्बी, १४६६२९ ब्राह्मण, १२९०१८ राजपूत, १२३६६६ महारा, ८५११८ कुंभार, ५४९६८ लोहाना २९९९१ नापित ( नाई ), २९३५२ दरजी, २६७३८ वढ़ई, २६१७८ लोहार, १६५०२ सोनार और बाकीमे अन्य जातियोंके लोग थे ।

काठियावाडके देशी राज्योके कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे;—

| नम्बर | नाम कसबा | मनुष्य-संख्या | नम्बर | नाम कसबा | मनुष्य-संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | भावनगर | ५७६५३ | १० | गोंडल | १५३४३ |
| २ | नवानगर | ४८५३० | ११ | विरावल | १५३३९ |
| ३ | जूनागढ | ३१६४० | १२ | ध्रांगड्रा | १५२०९ |
| ४ | राजकोट | २९२४७ | १३ | जेतपुर | १३६४६ |
| ५ | वाढवान | २४६०४ | १४ | लिंबँड़ी | १३४९७ |
| ६ | धोराजी | २०४०६ | १५ | मङ्गलोर | १३००५ |
| ७ | पोरबन्दर | १८८०५ | १६ | पालीटाणा | १०४४२ |
| ८ | महुआ | १६७०७ | १७ | सिहोर | १०००५ |
| ९ | मोरवी | १६३२५ | | | |

काठियावाड़का इतिहास—मौर्यवंशी राजा अशोकके राज्यके समय विक्रमी संवत्के आरम्भसे लगभग २०० वर्ष पहिलेके शिलालेख गिरनारके पासके चट्टानपर खोदे हुए है । कदाचित् राजा अशोक और अन्य मौर्यवशी राजाओके अधीन क्षत्रप वंशवालोने सौराष्ट्रमें राज्य किया था । सन् ई० के लगभग १०० वर्ष पहिलेसे तीसरी सदीतक लगभग ३०० वर्ष पर्यन्त उस देशके शाह वंशके राजाओंने और उनके पश्चात् कन्नौजके गुप्त वंशी राजाओके सेनापतियोंने सौराष्ट्रमें हुकूमत किया था । गुप्त वंशीका अन्तिम सेनापति सौराष्ट्रका राजा हुआ, जिसने अपने लेफ्टिनेटको वर्त्तमान भावनगरसे १८ मील पश्चिमोत्तर वल्लभीनगरमें रक्खा । जब विदेशी आक्रमण करनेवालेने गुप्तवंशी राजाको सिंहासनसे उतार दिया, तब ५-वी सदीमें वल्लभी राजाने कच्छ, सूरत, भड़ौंच, खेड़ा मालवा इत्यादि देशोंपर अपना अधिकार फैलाया । सन् ६१२ से ६४० तक दूसरा ध्रुवसेन राजाका राज्य था । नहीं जान पड़ता है कि किस तरहसे वल्लभी वंशके राज्यका विनाश हुआ । अनुमानसे जान पडता है कि जब मुसलमानोंने सिंधसे आकर उनका नाश किया, तब काठियावाडकी सीमाके बाहर अनहिलवाड़ा राज्यका सदर स्थान बना । सन् ७४६ से १२९७ तक अनहिलवाड़ाके राज्यके समय काठियावाडमे बहुतसे छोटे राजा हुए थे । सन् १०२४ मे गजनीके महमूदने काठियावाड़के दक्षिण भागके सोमनाथका मन्दिर लूटा । अनहिलवाड़ाके राजाओने काठियावाडके उत्तरी भागमें झाला राजपूतोंको वसाया । १३ वीं सदीमें गोहेल राजपूत, जो, काठियावाडके पूर्वी भागमें हैं, उत्तरसे आये । जाडेजा और काठी पश्चिमसे कच्छ होकर काठियावाडमें आये थे ।

काठियावाडके दक्षिण-पश्चिमका वडा भाग, जो लगभग १०० मील लम्बा है, अव तक सौराष्ट्र देश कहलाता है। १३ वीं और १४ वीं सदीमें काठी जातिके लोग कच्छसे आकर उस प्रायद्वीपमे वसे, तवसे उसके मध्य भागसे पूर्वका वडा भाग काठियावाड़ कहलाने लगा। कच्छवालोंने १५ वीं सदीमें सम्पूर्ण काठियोंको अपने देशसे निकाल दिया। महाराष्ट्रोंने सौराष्ट्र और काठियावाड दोनोंका काठियावाड नाम प्रसिद्ध कर दिया, परन्तु वहुत लोग, खास करके देशी आदमी अव तक दक्षिण-पश्चिमके भागको सौरा कहते है।

वहादुरशाहने पोर्चुगालवालोको काठियावाडके डिऊमें कोठी वनानेकी इजाजत दी। सन् १५३६ में पोर्चुगालवालोने वहाँ एक किला वनाया। अव तक डिऊ टापू और वह किला पोर्चुगालवालोके अधिकारमें है।

सन् १५७३ में अकवरने गुजरातको जीता। महाराष्ट्रोंने सन् १७०५ में गुजरातमें प्रवेश किया। सन् १७६० में उनका राज्य दृढ़ होगया। सन् १८०७--१८०८ से काठियावाड़के सव प्रधान पूनाके पेशवा और वड़ोदाके गायकवाड़को अङ्गरेजी गवर्नमेंट द्वारा राजकर देने लगे। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने काठियावाड़के पेशवाका भाग ले लिया। सन् १८२० में गायकवाड़ने अपना हिस्सा अङ्गरेजी सरकारद्वारा वसूल होना स्वीकार किया। सन् १८२२ में वम्बईके गवर्नरके अधीन काठियावाड़में पोलीटिकल एजेंसी कायम हुई। सन् १८३१ में प्रधान फौजदारी कचहरी कायम हुई। जिस अपराधके विचार करनेका देशी प्रधानोंको अधिकार नहीं है, उसका विचार उस कचहरीका हाकिम करता है।

# पचीसवाँ अध्याय।

## ( वम्बई हातेके काठियावाड़में ) वीरमगाँव, वाढ़वान, ध्रांगध्रा, मोरवी, राजकोट, नवानगर, ( कच्छमें ) मांडवी, भुज, नारायणसर, ( काठियावाड़में ) गोंडल और पोरवन्दर।

## वीरमगांव।

अहमदावाद शहरसे कई मील उत्तर शाहीके वागके पास सावरमती नदीपर रेलवेका सुन्दर पुल है। पुलके ऊपर रेलवे लाइनके वगलमें आदमीके चलनेका मार्ग वना है। अहमदावादके रेलवे स्टेशनसे ४ मील उत्तर कुछ पश्चिम सावरमती नदीके उत्तर किनारे पर सावरमती नामक रेलवे स्टेशन है, जिसके पास एक वड़ा जेलखाना वना है। उस स्टेशनसे पूर्वोत्तर छोटी गाडीकी रेलवे लाइन महसाना, अजमेर, वांदीकुई जंक्शन इत्यादि स्टेशनों होकर दिल्ली और आगराको और पश्चिम ओर वड़ी गाड़ीकी लाइन काठियावाड़मे वीरमगाँव होकर वाढवानको गई है। वाढवानसे आगे काठियावाडके देशी राजाओंकी छोटी गाड़ीकी लाइनें हैं।

अहमदावादके रेलवे स्टेशनसे ४० मील ( सावरमतीके स्टेशनसे ३६ मील ) पश्चिम वीरमगाँवका रेलवे स्टेशन है। वम्वई हातेके अहमदावाद जिलेमें सव डिवीजनका सदर स्थान वीरमगाँव एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वीरमगॉवमें २३२०९ मनुष्य थे, अर्थात् १५६४० हिन्दू, ५१८९ मुसलमान, २३२० जैन, ४० पारसी, १५ क्रस्तान और ५ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशनके पास सुन्दर सरकारी धर्मशाला बनी है। मैने धर्मशालाके पास एक भिक्षुक-लडका देखा, जिसकी आंखोका चिह्न कुछ नहीं था, किन्तु आंखोके स्थानोके ऊपर भौहे थीं। वीरमगॉव कसवेके चारोओर शहरपनाह अर्थात् पक्की दीवार है। उसमें ११ वी सदीके अन्तका बना हुआ मानसर नामक एक तालाब है, जिसके चारो बगलों पर पत्थरकी सीढियां और बहुतेरे छोटे मन्दिर बने हुए है। इनके अलावे वीरमगॉवमें कपडेका मिल, सबजजकी कचहरी, अस्पताल और स्कूल है। वीरमगॉवसे २५ मील दूर बचराजीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां आश्विनमे मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० आदमी जाते है।

वीरमगॉवसे पश्चिमोत्तर एक रेलवे लाइन खारागोडाको गई है। वीरमगॉवसे १७ मील पश्चिम कुछ उत्तर दीवारसे घेरा हुआ पत्री नामक छोटा कसबा और २२ मील कच्छके रनके पास खारागोड़ा गॉव है। सूखी ऋतुओमें कच्छके रनका कीचड़ सूखकर कड़ा होजाता है, उससे बहुत नमक तैयार होता है। नमक बटोरने के लिये उस रनमें रेलकी बहुत सड़कें निकाली गई है। रेलवे स्टेशनके पास बहुत नमक इकट्ठा किया जाता है।

## बाढ़वान।

वीरमगॉवके रेलवे स्टेशनसे ३९ मील दक्षिण-पश्चिम (अहमदाबाद जंक्शनसे ७९ मील) वाढवानका रेलवे जंक्शन है। वाढ़वानसे मोरवी रेलवे पश्चिम और वंकानेरको और वंकानेरसे उत्तर मोरवीको तथा दक्षिण-पश्चिम राजकोट, गोंडल और जितलसर जंक्शनको और भावनगर, गोंडल, जूनागढ़ और पोरबन्दर रेलवे वाढ़वान जंक्शनसे दक्षिण लिंबड़ी होकर धोला जंक्शनको और धोलासे पूर्व भावनगरको तथा पश्चिम जितलसर जंक्शन और पोरबन्दरको और जितलसर जंक्शनसे दक्षिण जूनागढ़ होकर वेरावल वन्दरको गई है।

रेलवेके जंक्शनसे ४ मील पश्चिम वाढ़वान कसबेका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके काठियावाड़के झालावाड़ विभागमें देशी राज्यकी राजधानी वाढवान एक पुराना कसवा है। उससे ३ मील पश्चिम वाढवानका सिविल स्टेशन है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिविल स्टेशनके साथ वाढ़वान कसवेमें २४६०४ मनुष्य थे, अर्थात् १५९१० हिन्दू, ५५४५ जैन, ३०१७ मुसलमान, ५६ पारसी, ५२ क्रस्तान और २४ यहूदी।

वाढवान कसवेके चारों ओर पत्थरकी दीवार है। कसवेके दक्षिणीय भागमे वाढ़वान नरेशका चौमञ्जिला विशाल महल वना हुआ है। वाढ़वानमें रुईकी वड़ी तिजारत होती है, धनी तिजारती लोग वसते है और उत्तम सावुन, जीन आदि घोड़ेके असवाव तथा पत्थरकी चीजे वहुत तैयार होती हैं।

वाढवानके सिविल स्टेशनमें अच्छा वाजार, अनेक सरकारी आफिस, जेलखाना, अस्पताल, एक घडीका वुर्ज, एक अच्छी धर्मशाला, बँगला और तालुकदारोंका एक स्कूल है। जो तालुकदारोंके लड़के राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढ़नेका खर्च नहीं दे सकते

हैं; वे वाढ़वानके स्कूलमें पढ़ते है। एक अच्छी सड़क वाढ़वानके सिविल स्टेशनसे राजकोटको गई है।

वाढवानका राज्य—काठियावाड़के झालावार विभागमें वाढ़वानका राज्य है। राज्यमे कपास और मामूली अन्न उत्पन्न होते हैं। नमक और देशी सावुन तैयार होता है। वह काठियावाडमें दूसरे दर्जेका राज्य है। लगभग २० स्कूलोंमें १३०० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वाढ़वान राज्यके २३६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसवा, ३० गाँवमें ९२२६ मकान और ४२५०० मनुष्य थे, अर्थात् ३४८०८ हिन्दू, २३१३ मुसलमान और ५३७९ अन्य।

वाढ़वान नरेश झाला राजपूत हैं। वर्तमान वाढ़वान नरेश ठाकुर साहब बलसिंहजी २७ वर्षके जवान हैं। वाढ़वान राज्यसे लगभग ४५०००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकारको २८६९० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी बल ४३८ आदमीका है।

## धांगध्रा।

वाढ़वानके रेलवे स्टेशनसे लगभग २० मील पश्चिमोत्तर और अहमदावाद शहरसे सड़क द्वारा ७५ मील पश्चिम कच्छके छोटे रनसे दक्षिण काठियावाड़के देशी राज्यकी राजधानी धांगध्रा है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धांगध्रा कसवामें १५२०९ मनुष्य थे, अर्थात् ११११३६ हिन्दू, २१८४ जैन, १८७९ मुसलमान, ६ पारसी और ४ कृस्तान।

राजधानीके चारों ओर पक्की दीवार है। उसमें धांगध्रानरेशका महल, कचहरियां, वाग, अस्पताल, स्कूल और कई एक देवमन्दिर है।

धांगध्राका राज्य—कच्छके छोटे रनके पास काठियावाडके उत्तर किनारेके समीप काठियावाड़में प्रथम दर्जेके राज्योमेंसे धांगध्राका राज्य है। राज्यमें स्थान स्थान पर पहाडी और चट्टान है। कपास और अन्न अधिक होते हैं। नमक, पत्थरकी चक्की, तांबे, पीतल और मिट्टीके वर्त्तन बहुत तैयार होते है। वनाई हुई सडक कोई नहीं है। लगभग ३१ स्कूलोंमे करीब १४०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धांगध्रा राज्यके ११५६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२९ गाँव और ९९६८६ मनुष्य थे; अर्थात् ८८६६५ हिन्दू ५६८६ मुसलमान और ५३३५ अन्य।

धांगध्रानरेश झाला राजपूत हैं। इनके पूर्व पुरुष पूर्वकालमें काठियावाड़के उत्तरसे आकर वीरम गाँव सवडिवीजनके पत्रीमे वसे। वहाँसे वे लोग हलावाडमें और हलावाडसे धांगध्रामें गये। धांगध्राकी शाखा वाढ़वान, लिंवड़ी और काठियावाडके और ३ छोटे प्रधान हैं। वंकानेरवाले अपनेको पत्रीकी वड़ी शाखासे कहते हैं। धांगध्राके राज्यसे लगभग ७५०००० रुपये वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट और जूनागढ़के नवावको ४४६७५ रुपया राजकर दिया जाता है। राज्यकी फौजी ताकत २१५० आदमीकी

---

* अब २१ मीलकी रेलवे लाइन वाटवानसे पश्चिमोत्तर धांगध्राको गई है।

है। धांगध्राके वर्त्तमान नरेश राजासाहब सर मानसिंहजी रनमलसिंहजी ( अर्थात् रनमलसिंहजीके पुत्र मानसिंहजी ) के सी. एस. आई ५७ वर्षकी अवस्थाके हैं।

## मोरवी।

वाढ़वान जंक्शनसे ५२ मील पश्चिम वंकानेर जंक्शन और वंकानेरसे १६ मील उत्तर ( अहमदाबादसे १४७ मील ) मोरवीका रेलवे स्टेशन है। बंबई हातेके काठियावाड़ देशके हालार विभागमे ( २२ अंश, ४९ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ५३ कला पूर्व देशान्तरमें ) एक छोटी नदीके पास देशी राज्यकी राजधानी मोरवीसे राजकोट तक ३५ मील उत्तम सडक बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मोरवी कसबेमें १६३२५ मनुष्य थे, अर्थात् १०७३५ हिन्दू, ३५०६ मुसलमान, २०२४ जैन, ३३ क्रस्तान, २१ पारसी और ६ यहूदी।

मोरवी कसबेमें मोरवी नरेश ठाकुर साहबका सुन्दर महल, कचहरियाँ, गल्लेका बाजार, एक पाठशाला, एक अस्पताल और कई स्कूल है। हालमें कसबेमें जलकल बनी है।

इसी मोरवीमे स्वामी दयानन्द सरस्वतीजीका जन्म हुआ था। अहमदाबादमे गुजरात देशके वृत्तान्तमें देखिये।

मोरवीका राज्य—काठियावाडके हालार विभागमें कच्छकी खाड़ीके पास मोरवीका राज्य है। देश साधारण रूपसे बराबर है। राज्यमें अन्न, ऊख और कपास बहुत होती है। समुद्रके रनके पास नमक बनाया जाता है। कच्छकी खाड़ी पर राज्यके एक बन्दरगाहसे सौदागरी होती है। राज्यके २६ स्कूलोंमे लगभग १३०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मोरवी राज्यका क्षेत्रफल ८२१ वर्गमील था; जिसके २ कसवों और १३४ गावोमे १७२४२ मकान और ८९९६४ मनुष्य थे, अर्थात् ७३९२६ हिन्दू, ११९४२ मुसलमान और ४०९६ अन्य।

मोरवी नरेश जाडेजा राजपूत हैं। ऐसी कहावत है कि १७ वीं सदीके पिछले भागमे जब कच्छके रावका छोटा पुत्र अपने बडे भाईको मार कर कच्छका राजा बन गया, तब बडे भाईकी सन्तानके लोगोने मोरवीमें आकर, जो कच्छके अधिकारमें थी, अपना अधिकार किया। मोरवी नरेश उन्हींके वंशधर हैं ( कच्छके इतिहासमें देखिये )।

सन् १८७० में ठाकुर रवाजीके देहान्त होने पर उनके पुत्र वर्त्तमान मोरवी नरेश ठाकुर साहब सर वाघजी बहादुर के. सी. आई ई. जिनकी अवस्था लगभग ३५ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए। वह राजकुमार कालिजमें पढे हैं और एक वार यूरपकी यात्रा कर आये हैं। पहिले मोरवीका राज्य काठियावाडके राज्योंमें दूसरे दर्जेका था, किन्तु अब प्रथम दर्जेमें हुआ है। मोरवीके राज्यसे लगभग १० लाख रुपये मालगुजारी आती है, जिमसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, बडौदाके गायकवाड और जूनागढ नवावको ६१५६० रुपया 'राजकर' दिया जाता है।

# राजकोट

मोरवीसे १६ मील दक्षिण वंकानेर जंक्शन और वंकानेरसे २५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम राजकोटका रेलवे स्टेशन है। काठियावाडके हालार विभागमें देशी राज्यकी राजधानी और काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंटका सदर स्थान राजकोट है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिविल स्टेशनके साथ राजकोट कसवेमे २९२४७ मनुष्य थे; अर्थात् १६०८३ पुरुप और १३१६४ स्त्रियाँ। इनमे, २०६७१ हिन्दू, ५८१८ मुसलमान, ३३९१ जैन, २०९ पारसी, १२४ क्रस्तान, २९ यहूदी और ४ एनिमिष्टिक थे।

राजकोटमें सिविल स्टेशन, फौजी छावनी, जेलखाना, राजकुमार कालिज, धर्मशाला, बङ्गला, कई एक गिरजे और २ स्कूल हैं। सन् १८७५ में ७०००० रुपयेके खर्चसे तैयार होकर हाई स्कूल खुला, जिसका खर्च जूनागढ़के नवावने दिया था। कसबेके पूर्वोत्तरके "जुबली वाटर वर्क्स" से राजकोटमें पानी आता है। कसबेमें अनेक भांतिके रंग तैयार होते है और साधारण तरहकी सौदागरी होती हैं।

राजकुमार कालिज, जिसमें काठियावाडके राजा तथा ठाकुरोंके लडके पढ़ते हैं, सन् १८७० में तैयार होकर खुला। उसके एक उत्तम हाल अर्थात् बड़े कमरेसे क्लासोंके कमरेमें जाना होता है। दोनो ओरके अगवासोंमें सुन्दर वरण्डे वने हैं। पश्चिम ओर सदर दरवाजा है, जिसके दोनों वगलोंमें दो टावर वने हैं। पूर्व वाले दरवाजेके ऊपर ५५ फीट ऊँचा एक चौकोना टावर है। उत्तर और दक्षिणके वाजुओंमे ३२ विद्यार्थियोंके सोने, वैठने, स्नान करने इत्यादि कामोंके लिये कमरे वने हुए हैं।

राजकोटका राज्य—काठियावाड़के हाला विभागमें काठियावाड़ प्रायद्वीपके मध्य भागमें राजकोटका राज्य है। वह राज्य काठियावाड़के राज्योंमे दूसरे दर्जेका है। राज्यकी भूमि ऊची नीची तथा पत्थरीली है। ऊख, कपास और मामूली अन्न होते हैं। १४ स्कूलों में लगभग १२०० लड़के पढ़ते हैं। राजकोटमें एक नदी पर कैशर हिन्द नामक प्रसिद्ध पुल है, उसके बनानेमें ११७५०० रुपया खर्च पडा था, जिसमें११०००० रुपया भावनगरके राजाने दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजकोटके राज्यका क्षेत्रफल २८३ वर्गमील था, जिसमें १ कसवा ६० गाँव और ४६५४० मनुष्य थे, अर्थात ३६९२९ हिन्दू, ६७७५ मुसलमान और २८३६ अन्य।

राजकोट नरेश ठाकुर साहव जाडेजा राजपूत हैं। वर्तमान ठाकुर साहव रवोजी, जो राजकुमार कालिजमें पढ़े थे, अपने राज्यका स्वयं प्रवन्ध करते है। राजकोटके राज्यसे लगभग २०५००० रुपया वार्पिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवावको २१३२० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी ताकत ३३६ आदमीकी है।

सन् १५४० में जामरावलने नवानगरको वसाया, जिसके वंशज नवानगरके वर्तमान जामसाहव हैं। उसीकी शाखासे राजकोटका राज्य नियत हुआ।

# नवानगर।

राजकोटके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम कुछ उत्तर ५४ मीलकी कच्ची सडक कच्छकी खाडीके दक्षिण किनारेपर नवानगरको, जिसको जामनगरभी कहते है, गई है। सडक पर पुल नही वना है, इस कारणसे वर्षाकालमें मार्ग वन्द हो जाता है *। काठियावाडके हालाड विभागमें (२२ अंश, २६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, १६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) देशी राज्यकी राजधानी नवानगर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नवानगर कसवेमें ४८५३० मनुष्य थे, अर्थात् २४४६० पुरुष और २४०७० स्त्रियॉ। इनमे २८६०० हिन्दू, १६०४९ मुसलमान, ३७८१ जैन, ४७ कृस्तान, ४१ पारसी और १२ यहूदी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत वर्षमे ७८ वॉ, वम्वईके गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्यों तथा काठियावाड़के राज्योंमें दूसरा शहर है।

४ मील की पक्की दीवारसे घेरी हुई नवानगर राजधानी है। प्रायः सव मकान पत्थरसे वने हुए है। राजमहल सुन्दर इमारत है। राजधानी उन्नति पर है। उसमें वडी तिजारत होती है। रेशमी और सोनेकी कारचोवीके काम तथा इतर और खुशवूदार तेलके लिये नवानगर प्रसिद्ध है। कसवेके उत्तर समुद्रमें मोती वाली सीप मिलती है, पर अच्छी नहीं। उससे नवानगरके जामसाहवको लगभग ४००० रुपये वार्षिक आमदनी होती है।

नवानगरका राज्य—काठियावाड़के हालाड़ विभागमें नवानगरका राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल ३७९१ वर्गमील है। इसके उत्तर कच्छका रन और कच्छकी खाडी पूर्व मोरवी, राजकोट, धोरला और गोंडलका राज्य; दक्षिण काठियावाडका सौराष्ट्र विभाग और पश्चिम ऊखमण्डल है। यह राज्य काठियावाड़के औवल दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। भूमि साधारण रूपसे समतल है; किन्तु इसकी सीमाके भीतर वरदा पहाडीके सिलसिलेका वड़ा भाग आया है। राज्यकी खानियोंमे अनेक प्रकारका मार्वुल, ताम्वा, लोहा और पत्थर है। कपास और मामूली अन्न वहुत होते है। खाडीके दक्षिण किनारेके पास कुछ मोतीकी सीप मिलती हैं। वहॉका रङ्ग वहुत अच्छा होता है। राज्यके भीतर कई वन्दरगाह हैं। सन् १८६० तक नवानगर राज्यकी पहाडियोंमें सिंह रहते थे, किन्तु अव केवल गिरिके जंगलमें मिलते हैं। उस राज्यमें चीता और तेंदुए हैं। राज्यके ६२ स्कूलोंमें लगभग ५००० लड़के पढ़ते हैं। राज्यसे परमार्थके कामोंमें वहुत रुपया खर्च होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नवानगरके राज्यमें ३१६१४७ मनुष्य थे; अर्थात् २५०३८२ हिन्दू, ४९२२१ मुसलमान और १६५४४ अन्य।

नवानगरका राजवंश जाडेजा राजपूत है। कच्छके राव और नवानगरके जाम साहव एकही कुलके हैं। जाडेजा राजपूत लोग कच्छसे काठियावाडमें आकर पुराने हुकूमत करने वालेको निकाल धुमलीमें वसे। उनमेसे जामरावलने सन् १५४० मे नवानगरको वसाया। इसी लिये नवानगरको जामनगर तथा वहॉके राजाओंको जामसाहव कहते हैं। सन् १७८८ मे नवानगरके चारोंओर पक्की दीवार वनाई गई। वर्तमान सदीके आरम्भमे वहुत जाडेजा

---

* अव ५१ मील की रेलवे लाइन राजकोटसे नवानगरको गई है।

राजपूत अपनी लड़कियोंको मार डालते थे, किन्तु सन् १८१२ में उनके प्रधानोंने इस कुरीतिके छोडानेका प्रबन्ध किया। इसको रोकनेके लिये अङ्गरेजी अफसरोंकी निगरानी बराबर होती आई है। अब वह लोग लड़कियोंको नहीं मारते है। जामसाहबको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। नवानगरके राज्यसे लगभग २४००००० रुपया मालगुजारी आती है। जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट, बड़ोदाके गायकवाड और जूनागढ़के नव्वाबको लगभग १२०००० रुपया राजकर दिया जाता है। जाम साहबका २३०० आदमीका फौजी बल है। नवानगरके वर्तमान नरेश जाम सर विभाजी रणमलजी के. सी. एस आई. ६२ वर्षकी अवस्थाके हैं।

## माण्डवी।

नवानगरके बन्दरगाहसे लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर कच्छके टापूके दक्षिण किनोरपर, भुज राजधानीसे ३६ मील दक्षिण–पश्चिमका कच्छका प्रधान बन्दरगाह तथा कच्छ राज्यमे सबसे बडा कसबा माण्डवी है। वह २२ अंश, ५० कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ३१ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। अनेक नाव नवानगरके बन्दरगाहसे कच्छकी खाडी द्वारा माण्डवी जाती है। आगबोट सप्ताहमे दो तीनबार बम्बई शहरसे खुलकर विरावल, पोरबन्दर, द्वारिका, माण्डवी आदि बन्दरगाहोंसे होकर करॉचीको और करॉचीसे माण्डवी, द्वारिका आदि बन्दरगाह होकर बम्बईको जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय माण्डवीमे ३८१५५ मनुष्य थे अर्थात् १८४०७ पुरुष और १९७४८ स्त्रियाँ। इनमे १९१२९ हिन्दू, १५४९९ मुसलमान, ३४३७ जैन, ५४ कृस्तान, ३० पारसी और ६ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बम्बे गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्योमे चौथा और कच्छके राज्यमें पहला कसबा है।

माण्डवी कसबा दीवारसे घेरा हुआ है। दीवारके बाहर नई सराय और पुरानी सराय नामक दो शहरतलियाँ है, जिनमें सौदागर और समुद्रमें काम करने वाले लोग रहते हैं। माण्डवीमें बड़ी सौदागरी होती है। बन्दरगाहमें किनारेसे ५०० गजके भीतर तक ७० टन बोझे वाले जहाज आते हैं। बन्दरगाहके पास लाइटहाउस बना हुआ है।

## भुज।

माण्डवीके बन्दरगाहसे ३६ मील पूर्वोत्तर ( २३ अंश, १५ कला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें ) कच्छ टापूके मध्यभागमे एक पहाडीके, जिसके ऊपर किला है, पादमूलके पास कच्छ राज्यकी राजधानी भुज नामक कसबा है। भुजग ( सर्प ) शब्दका अपभ्रंश भुज नाम है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय फौजी छावनीके साथ भुज कसबेमे २५४२१ मनुष्य थे, अर्थात् १३४२३ पुरुष और ११९९८ स्त्रियां। इनमें १४३५० हिन्दू, ९३५७ मुसलमान, १२२४ जैन, १८३ एनिमिष्टिक, ११६ कृस्तान, ७३ पारसी, ४७ यहूदी और ६८ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह कच्छके राज्यमें दूसरा कसबा है।

भुज कसबेमें कच्छके महारावका सुन्दर महल बना हुआ है। लगभग १५० वर्ष हुए कि कच्छके राव लखपतिजीने विलौरी आइनेका शीशमहल बनवाया था। वह महल तस्वीर

आदि मनोरम सामानसे सजा हुआ है । इनके अलावे भुजमें १ जेलखाना, १ हाई स्कूल, १ अन्य स्कूल, १ लायब्रेरी, १ अस्पताल, १ मसजिद, कच्छके राजाओंकी अनेक छत्तरियाँ और कई एक देव मन्दिर हैं । कसबेके बगलोंमे अनेक फाटक बने हुए हैं कसबेके आस पास कई दरगाह है । कसबेमें १६ वीं सदीके पहिलेकी बनी हुई कोई इमारत नहीं है ।

कच्छका राज्य—बम्बई गवर्नमेंटके अधीन गुजरातमे कच्छका राज्य है । इसके बड़े रनके उत्तर और पश्चिमोत्तर सिन्ध देश, पूर्व पालनपुर एजेंसीके देशी राज्य; दक्षिण कच्छकी खाड़ीके बाद काठियाबाड़ प्रायद्वीप और दक्षिण-पश्चिम अरबका समुद्र है । कच्छके रनको छोड करके कच्छ राज्यका क्षेत्रफल ६५०० वर्गमील है। उसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग १६० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको ३५ मीलसे ७० मील तक है । उसके उत्तर कच्छका बडा रन, पूर्व-दक्षिण छोटा रन, दक्षिण, कच्छकी खाडी और पश्चिमोत्तर सिन्धु नदीका पूर्वी मुहाना है । इस भांति सम्पूर्ण कच्छ देश प्रायः पूरे तौरसे हिन्द महाद्वीपसे अलग हुआ है । कच्छ राज्यमे ८ सबडिवीजन हैं । भुज राजधानी है । कच्छका देश ऊसर और चट्टानी है । वृक्ष प्रायः नहीं है, किन्तु चारागाह अच्छे हैं । जगह जगह पहाडियोंकी श्रेणी और जगह जगह अकेली पहाडी हैं । घाटियोंमें कपास और अन्नकी अच्छी फसिल होती हैं । कच्छमे कोई स्थाई नदी नहीं हैं,परन्तु वर्षा कालमें बहुतसी बडे विस्तारकी नदियाँ पहाडियोंके सिलसिलोंसे बहती हुई उत्तर और कच्छके रनमें और दक्षिण और कच्छकी खाडीमे गिरती हैं । वर्षाकालके अतिरिक्त अन्य ऋतुओंमें नदियोंके बहावके मार्ग कुण्डोंके समान देख पडते है । कच्छकी खानोंमें लोहा, फिटिकिरी, कोयला, शोरा, मकानके कामयोग्य पत्थर, एक प्रकारका मार्बुल इत्यादि खानिक वस्तु होती हैं । कोई जङ्गल नहीं है । बनाई हुई सडक प्राय. नहीं है, इस लिये बरसातमे देश प्राय. अगम हो जाता है। कच्छमें मकान अच्छे बनते हैं ।

कच्छ टापूके उत्तर और पूर्व-दक्षिण लगभग ९०००वर्गमील क्षेत्रफलमें कच्छका "रन" अर्थात् नमकदार मरुस्थल फैला हुआ है । उनमेसे उत्तर वाला बडा रन पूर्वसे पश्चिम तक लगभग १६० मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण ८० मील तक चौडा अर्थात् लगभग ७००० वर्गमीलमें और पूर्व-दक्षिण वाला छोटा रन पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ७० मील लम्बा अनुमानसे २००० वर्गमीलमें फैला है । कभी कभी रनका सम्पूर्ण सतह खास करके छोटे रनका नमकसे पूर्ण हो जाता है । रनके छोटे टापुओंमेंसे चन्द टापुओंको छोडकर जिनपर जगह जगह झाडियाँ और घास जमते हैं, रनमें किसी जगह वृक्षों तथा झाडियोंका चिह्न नहीं है । जङ्गली गदहे टापुओं और किनारोंके पास घूमा करते हैं और घास चरते हैं । कभी कभी बरसातमे पानीकी बहुत बाढ़ हो जाती है । उस समय आर पार जाना दुस्तर और भयानक हो जाता है। बाढ़का पानी सूख जानेपर जमीन नमकसे पूर्ण हो जाती है। जङ्गली गदहोंके झुण्डों और भूली हुई चिडियोके अतिरिक्त कोई प्राणी रनमें नहीं देख पड़ते, कभी कभी ऊँटोंके बनिजारे देखनेमें आते हैं । किनारोंके पासकी अपेक्षा रनका मध्य भाग बहुत ऊँचा है, इस कारणसे बगलोंमें कीचड तथा पानी रहनेपर भी मध्यका भाग सूख जाता है ।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय कच्छमें ८ कसबे, ८८९ गाँव, १०२००७ मकान और ५१२०८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३२५४७८ हिन्दू; ११८७९७ मुसलमान, ६६६६३ जैन, ९५९ जङ्गली जातियां, ९६ क्रस्तान, ४२४२ पारसी, ३० सिक्ख और १९ यहूदी । इनमे सैकड़े पीछे ८ से कुछ अधिक राजपूत और ६ से अधिक ब्राह्मण थे । राजपूतों-में लगभग २०००० जाडेजा राजपूत थे ।

कच्छमें सर्व साधारण लोगोंकी भाषा कच्छी है । कुछ कुछ फारसी और हिन्दुस्तानी भी प्रचलित है । सन् १८८२ में कच्छके ८६ स्कूलोंमे लगभग ५४०० लड़के पढ़ते थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कच्छ राज्यके कसबे मांडवीमे ३८१५५, भुजमें २५४२१, अजरमें १४४३३ और मांडवामें १०४३३ मनुष्य थे ।

कच्छकी तिजारत खास करके समुद्र द्वारा होती है । रुई, फिटकिरी, काले कपडे, चाँदीके वर्तन, सिलेट, दलिहन, अन्न इत्यादि चीजें कच्छसे अन्य देशोंमे जाती हैं और विविध प्रकारके अन्न, चीनी, मक्खन, किराना, माल, लकडी, कपडा, हाथीदांत और लोहा, पीतल तथा तांबेके वर्तन आदि वस्तु अन्य देशोंसे कच्छमें आती हैं । कच्छके वहुत लोग ऊंटोंको रखते हैं ।

कच्छमें भूकम्प वहुत हुआ करता है । उन्नीसवी सदीमें ४ वार, अर्थात् सन् १८१९, १८४४, १८४५ और सन् १८६४ में भूकम्प हुआ था; इनमें सन् १८१९ का भूकम्प वडा भयंकर था; उस समय कच्छके रावसाहवके महलके साथ भुज राजधानीके लगभग ७००० मकान गिर गये, ११५० मनुष्य मकानोंके नीचे दब गये, कच्छ राज्यके नगरोंकी बडी हानि हुई और टेराका किला जो कच्छके राज्यमें सब किलोंसे दृढ़ था, जमीनमें मिल गया ।

कच्छके महाराव जाडेजा राजपूत हैं । वर्तमान कच्छ नरेश महाराव सर खेगारजी सवाई वहादुर के. सी. आई. ई. जिनका जन्म सन् १८६६ में हुआ था, अपने पिता महाराव श्री प्रागमलजीकी मृत्यु होने पर सन् १८७६ में उत्तराधिकारी हुए थे । महाराव साहब और उनके भ्राता अच्छी तरहसे शिक्षित हैं । कच्छके राज्यसे लगभग ३०००००० रुपया मालगुजारी आती है । कच्छके महारावको अङ्गरेजी महाराजकी ओरसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है । फौजी बल २४० सवार, ४०० पैदल, ५०० अरब और ४० गोलंदाज है । इनके अलावे लगभग ३००० गैर मामूली पैदल और ६०० पुलिस हैं । आवश्यक होने पर उनके अधीनके प्रधान लोग लगभग ४००० आदमीकी सहायता कर सकते हैं ।

इतिहास–ऐसा प्रसिद्ध है कि १५ वीं सदीमें जाडाके पुत्र जामलाखके अधीन वहुतसे जाडेजा राजपूत सिन्ध देशसे कच्छमें आये । जाडाके वंशधर होनेसे वे जाडेजा कहलाते है । जाडेजा राजपूत अपनी लडकियोंको मारडालते थे । लोग कहते हैं कि इनके मूल पुरुष जाडाने इसरीतिको प्रचलित किया था उसने विना व्याही हुई अपनी ७ लडकियोंको मार-डाला; क्योंकि लड़कियोंके योग्य वर नहीं मिले थे ।

सन् १५४० तक जामलाखके वंशधर ३ शाखाओमे बँट कर कच्छ पर हुकूमत करते थे । सन् १५४० में जामवंशके खेगार नामक प्रतापी पुरुष अहमदावादके मुसलमान वादशाहकी सहायतासे जाडेजा जातिका प्रधान और सम्पूर्ण कच्छका मालिक वन गया । उसने वादशाहसे

रावकी पदवी और मोर्वीका राज्य पाया । खेंगारके चचा जामरावल, जो प्रथम कच्छके एक वडे भागपर हुकूमत करते थे, काठियावाडमे भाग गये । उन्होंने वहाँ नवानगर राज्यको कायम किया । उनके वंशधर नवानगरके राजा लोग अवतक जाम कहलाते है। खेगारसे ६ पीढ़ियो तक वड़े पुत्र राव वनते आये, परन्तु १७ वी सदीके पिछले भागमें रायधनजीकी मृत्यु होने पर उनके तीसरे पुत्र प्रागजीने अपने वड़े भाईको मारकर कच्छका राजसिंहासन ले लिया; किन्तु उस भाईके पुत्रको, जो गद्दीका अधिकारी था, मौर्वीका राज्य दे दिया । मौर्वी अवतक उसीकी संतानके अधिकारमे है । खेगारके वंशके राव लखपतिकी मृत्यु होने पर उनकी १६ स्त्रियाँ उनके साथ चितापर जल गई थीं । कच्छके अङ्गरेजी रेजीडेंटीके पास उनके स्मरण चिह्न अवतक विद्यमान हैं । कच्छके रावके मूल पुरुपा खेगारसे १४ वीं पीढ़ीमें महाराव श्रीप्रागमलजी थे, जिनके पुत्र वर्तमान कच्छ नरेश है ।

## नारायणसर ।

भुज राजधानीसे लगभग ९० मील पश्चिमोत्तर कच्छके राज्यमें सिन्ध नदीके पूर्वी मुहानेके पास नारायणसर नामक वस्ती और पवित्र तीर्थ स्थान है । वस्तीमे एक छोटा राजा रहता है । वहाँ आदिनारायणका, लक्ष्मीनारायणका और गोवर्द्धननाथजीका मन्दिर है । वहॉ वहुतेरे यात्री अपनी छातीपर छाप लेते हैं । नारायणसरसे १ मील दूर कोटेश्वर महादेव और नीलकंठ महादेव हैं । वहाँ वहुतेरे यात्री अपनी दाहिनी वाँह पर छाप लेते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–श्रीमद्भागवत ( ६ ठा स्कन्ध ५ वां अध्याय ) दक्षप्रजापतिने १० पुत्र उत्पन्न करके उनको सृष्टि करनेकी आज्ञा दी । वे सव पश्चिम दिशाके नारायणसर नामक पुण्यदायक तीर्थमे जहां सिन्धु नदी समुद्रमे मिली है, जाकर सृष्टि उत्पत्तिकी कामनासे कठोर तप करने लगे, किन्तु जव नारदजीने वहॉ जाकर उनको ज्ञानका उपदेश दिया तव उन लोगोने सृष्टिकी कामनाकी इच्छाको छोड कर जिस मार्गसे फिर लौटना नहीं होता उस मार्गको ग्रहण किया । यह समाचार सुनकर दक्षने एक सहस्र पुत्र उत्पन्न करके उनको प्रजा उत्पन्न करनेकी आज्ञा दी, वे लोग भी नारायणसरोवर पर गये और उसके पवित्र जलके स्पर्शसे विशुद्ध चित्त होकर सृष्टिकी कामनासे तप करने लगे । फिर नारदजीने वहाँ जाकर उनको ज्ञान उपदेश देकर विरक्त करदिया । वे लोग भी अपने भ्राताओके मार्गमे चले गये ।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण–( कृष्णजन्मखण्ड, १३२ वाँ अध्याय ) चन्द्रमाने देवगुरु वृहस्पतिकी स्त्री ताराको भादो सुदी चौथिको हरण किया और भादो वदी चौथको छोड दिया । वृहस्पतिने ताराको ग्रहण करलिया । उस समय ताराने चन्द्रमाको शाप दिया कि जो मनुष्य तुम्हारा दर्शन करेगा वह कलंकी और पापी होगा । तव चन्द्रमाने नारायण सरोवरमें जाकर नारायणकी आराधना की । नारायणने प्रकट होकर चन्द्रमासे कहा कि हे चन्द्र ! तुम सर्वदा कलंकी नहीं रहोगे, जो मनुष्य भादों सुदी चौथको तुमको देखेगा वही कलंकी होगा ।

## गोंडल ।

मैं राजकोटमें लौटकर रेलगाड़ीमें सवार हो गोंडल पहुचा । राजकोटके रेलवे स्टेशनसे २४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम और जूनागढ़से ४० मील पूर्वोत्तर गोंडलका रेलवे स्टेशन

है। काठियावाड़के हालाड़ विभागमें देशी राज्यकी राजधानी गोंडल एक कसवा है। गोंडलसे राजकोट, जेतपुर, जूनागढ़, धोराजी और उपलेटाको सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गोंडल कसवेमें १५३४३ मनुष्य थ; अर्थात् ९४२८ हिन्दू, ३८४७ मुसलमान, २०२२ जैन, ३७ कृस्तान और ९ पारसी।

कसबेके वगलोंमें दीवार बनी हुई है। इसमें बहुतसे सुन्दर मन्दिर हैं। कसबेके बाहर एक बागमें गोंडलके ठाकुर साहबके आफिस हैं। इनके अलावे गोंडलमें अस्पताल, दवाखाना और छोटे वड़े कई स्कूल हैं।

गोंडलका राज्य—काठियावाड़के हालाड़ विभागमें गोंडलका राज्य है। राज्यके एक छोटे भागमें पहाडियां हैं। कपास और अन्न खास पैदावार है। भदर इत्यादि अनेक छोटी नदियां बहती हैं। छोटे बड़े लगभग ४० स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोंडल राज्यके १०३४ वर्गमील क्षेत्रफलमें १७४ गॉव और १३५६०४ मनुष्य थे; अर्थात् १०५३२९ हिन्दू, २४६५२ मुसलमान और ५६२३ अन्य।

गोंडल नरेश जाड़ेजा राजपूत हैं। वर्त्तमान गोंडल नरेश ठाकुर साहब सर भगवत-सिंहजी संग्रामजी के. सी. आई. ई. ने, जिनकी अवस्था लगभग ३० वर्षकी है, राजकोटके राजकुमार कालिजमें शिक्षा पाई और सन् १८८५ में इङ्गलैंडके एडिंबरामें जाकर डाक्टरी विद्यामें निपुणता दिखलाई। वहाँकी यूनिवरसिटीने इनको एल० एल० डी० की पदवी दी। यह काठियावाडके राजाओंमें दूसरे दर्जेके राजाओंमें थे; किन्तु अब अङ्गरेज महाराजने इनको प्रथम दर्जेके राजाओंमे कर दिया है।

गोंडलके राज्यसे लगभग १२००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, बडोदाके गायकवाड और जूनागढ़के नव्वावको ११०७२० रुपया राज-कर दिया जाता है। गोण्डल नरेशका सैनिक वल २०० सवार, ६६० पैदल और पुलिस तथा १६ तोपें हैं।

# पोरबन्दर।

गोंडलके रेलवे स्टेशनसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम जेतलसर जंक्शन और जेतलसरसे१० मील पश्चिम धोराजीका रेलवे स्टेशन है। धोराजी काठियावाड़में एक प्रसिद्ध तिजारती कसबा दीवारसे घेरा हुआ है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय ३०४०६ मनुष्य थे; अर्थात् १०५६० मुसलमान, ८६१६ हिन्दू, १२१२ जैन, १६ पारसी और १ कृस्तान। धोराजीमें एक ठाकुर साहब हैं।

धोराजीके रेलवे स्टेशनसे ११ मील पश्चिम उपलेटाका रेलवे स्टेशन है। एक नदीके किनारेपर पक्की दीवारसे घेरा हुआ उपलेटा एक सुन्दर गॉव है, जिसमे एक ठाकुर साहब रहते हैं।

उपलेटाके रेलवे स्टेशनसे ५७ मील और जेतलसर जंक्शनसे ७८ मील पश्चिम ( जूना-गढ़से ९५ मील ) पोरबन्दरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड़के पश्चिम किना-रेपर ( २१ अंश, २७ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ४८ कला, ३०

विकला पूर्व देशान्तरमें ) काठियावाडमें एक देशी राज्यकी राजधानी तथा समुद्रका बन्दरगाह पोरबन्दर है, जिसको बहुत लोग सुदामापुरी भी कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय पोरबन्दर कसवेमें १८८०५ मनुष्य थे; अर्थात् १३२७२ हिन्दू, ४३६९ मुसलमान, १०९० जैन, ५७ पारसी और १७ क्रस्तान ।

पोरबन्दर कसबेके बगलोंमें पत्थरकी दीवार है। कसबेके प्रायः सब मकान पत्थरसे बने हुए हैं । राणासाहबका महल तीन मंजिला है । केदारनाथ शिवका विशाल मन्दिर बना हुआ है । मन्दिरमें भोगरागका सुन्दर प्रबन्ध है । कसबेमें राणासाहबकी कचहारियाँ, स्कूल, अस्पताल, मुरारजी कृष्णजीकी धर्मशाला, दो तीन अन्य धर्मशालायें, छोटे बडे छः सात सदावर्त और अनेक देवमन्दिर है । पोरबन्दरका पत्थर प्रसिद्ध है । मैने वहाँ देखा कि कारीगर लोग मकान बनानेके कामके लिये पत्थरोंको लकडीके समान आरासे चीरते थे ।

पोरबन्दरमें समुद्रद्वारा सिन्धु, बलोचिस्तान, पारसकी खाडी, अरब और अफ्रिकाके पश्चिम किनारेके बन्दरगाहोंके साथ तथा भारतवर्षके कोंकन और मालबार किनारेके सहित सौदागरी होती है । सन् १८८२—१८८३ में लगभग १६६०००० रुपयेके मालकी आमदनी रफतनी हुई थी । आगबोट सप्ताहमें तीन वार बम्बईसे मगरोल, विरावल बन्दर, पोरबन्दर, द्वारिका इत्यादि बन्दरगाह होकर कराँचीको और करांचीसे द्वारिका, पोरबन्दर, विरावल इत्यादि होकर बम्बईको जाते हैं । द्वारिकाके कुछ यात्री पोरबन्दरमे आगबोटपर चढ़ते ह तथा पोरबन्दरमें आगबोटसे उतरते है । पोरबन्दरसे द्वारिकाका महसूल एक आदमीका दूसरे क्लासका २ रुपये और तीसरे क्लासका एक रुपया लगता है ।

सुदामाजीका मन्दिर—पोरबन्दरके राणासाहबकी वाटिकामे श्रीकृष्ण भगवान्के मित्र सुदामाजीका एक बहुत छोटा मन्दिर है । मन्दिरमें सुदामाजी और उनकी पत्नीकी मूर्त्ति खडी हैं । मन्दिरमें केवल एक पुजारी रहता है । वाटिकामें एक छोटा बङ्गला और वाटिकाके निकट जगन्नाथजीका एक बहुत छोटा मन्दिर है । वाटिकासे बाहर सुदामाके मन्दिरसे पश्चिम भूमिपर चक्रव्यूहकी लकीरकी तरह आधे फीटसे अधिक ऊँची और इतनीही चौड़ी गचकी लकीरसे "भूल भुलैया" बनी है, जिसको लोग चौरासी भी कहते हैं । वह ऐसे ढबसे बनी है कि आदमी उसके एक मार्गसे प्रवेश करके लकीरोंसे बने हुए सब घेराओंमें घूमकर दूसरे मार्गसे निकल जाता है । सुदामाजी द्वारिकासे आनेपर अपनी मढ़ीके स्थानपर बड़ा महल देखकर भूल गये थे, उसीके स्मरणार्थ यह भूलभूलैया बनी है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—( दशम स्कन्ध, ८० वाँ अध्याय ) सुदामा नामक एक दरिद्र ब्राह्मण द्वारिकाधीश श्रीकृष्णचन्द्रके मित्र थे। एक समय उनकी स्त्री अति दुःखित हो पतिसे बोली कि हे ब्राह्मण ! यादवोंमें श्रेष्ठ साक्षात् लक्ष्मीपति कृष्ण चन्द्र तुम्हारे सखा है, तुम्हारे जाने पर वह तुमको बहुत धन देंगे, तुम उनके पास जाओ । सुदामाकी आज्ञासे उनकी स्त्रीने कृष्णचन्द्रको भेंट देनेके लिये थोडासा चावल एक फटे हुए वस्त्रमें बांध कर ला दिया । सुदामा उसको लेकर द्वारिकामे रुक्मिणीके महलके पास पहुँचे । श्रीकृष्णचन्द्र अपने द्वारपालके मुखसे सुदामाका आगमन सुन कर रुक्मिणीकी शय्यासे शीघ्र उठे । उन्होंने सुदामासे मिलकर उनको अपने पलंगपर बैठाया । साक्षात् श्रीरुक्मिणीजी उस ब्राह्मणकी सेवा करने लगीं ।

( ८१ वाँ अध्याय ) कृष्णभगवान्‌ने सुदामासे कहा कि हे ब्राह्मण ! तुम मेरे लिये क्या भेट लाये हो ? । जब सुदामाने लज्जित हो उनको तंडुल नहीं दिया, तब कृष्णभगवान्‌ने सुदामाके वस्त्रमेंसे चावल ले लिया । जब उन्होंने दो मुट्ठी चावल भोजन करके तीसरी मुट्ठी भोजन करनेका विचार किया, तब रुमिक्‍णीने उनका हाथ पकड लिया । सुदामा एक रात्रि श्रीकृष्णके भवनमें सुखसे निवास करके प्रातः काल भगवान्‌से विदा हो अपने घर चले। वह मार्गमें विचार करते थे कि इस कारणसे कृष्णने मुझको कुछ नहीं दिया है कि दरिद्री सुदामा धनको पाकर मदांध हो मुझको भूल जायगा । उसके पश्चात् सुदामाने अपने नगरमें पहुँचकर देखा कि इन्द्रभवनके समान महल बन गये हैं। चारोओर विमान सुशोभित हैं । चित्र विचित्र बाग लग गये है । अनेक सरोवर बन गये है । यह सब देख कर, उनका मन चकित होगया । फिर उन्होंने विचार किया कि यह तो मेराही स्थान है, ऐसा क्यों होगया । उस समय उनकी स्त्री पतिका आगमन सुन गृहसे बाहर आकर उनको अपने महलमें लेगई। सुदामाने बडा आश्चर्य माना और पीछे जान-लिया कि कृष्णभगवान्‌की कृपासे यह संपत्ति और ऐश्वर्य मुझको मिला है ।

पोरबन्दरका राज्य—काठियावाडके सौराष्ट्र विभागमें काठियावाड़के पश्चिमी भागमे अरबके समुद्रके किनारेके पास ६३६ वर्गमील क्षेत्रफलमें पोरबन्दरका राज्य है । यह राज्य समुद्रके किनारे पर दूर तक लम्बा है। इसकी चौड़ाई किसी जगह २४ मीलसे अधिक नहीं है । राज्यमें प्रायः पहाड़ी नहीं है। तीन चार छोटी नादियां बहती हैं। समुद्रके किनारेके निकट बडे बडे दलदल है । उनमें वर्षाका पानी इकट्ठा होता है । वर्षाका पानी पड़नेसे नमकदार दलदलोमे केवल घास और नरकट जमता है, किन्तु मीठे पानीके दलदलोमे धान, चना, अरहर इत्यादि फसिल होती है । इनमेंसे एक दलदल लगभग ६ मील लम्बा और ४ मील चौडा है । पोरबन्दरके राज्यमें औसत सालाना २० इञ्च वर्षा होती है । पोरबन्दरका पत्थर सुन्दरतामें प्रसिद्ध है । वह राज्यमें सर्वत्र मिलता है, किन्तु खास करके बरदा पहाडियोंकी खानोंसे निकाला जाता है । और बम्बई शहरमें बहुत भेजा जाता है । पोरबन्दर राज्यके उत्तम मकानोकी जोडाईमें गारा नहीं दिया जाता है । कारीगर लोग पत्थरोके टुकडोंको, जो आरासे चीरकर और बसुलोंसे काट कर बनाये जाते हैं, ठीक तरहसे बैठा कर दीवार बनाते है । वर्षा होने पर वे टुकड़े आपसे आप मिल जाते है । भडौंच, सूरत, नवसारी, करांची, बम्बई और मलेबारके किनारोंके बन्दरगाहोसे पोरबन्दरकी सौदागरी होती है। पोरबन्दरके राज्यमें पोरबन्दर, माधवपुर और मियानी प्रधान बन्दरगाह हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पोरबन्दर राज्यके १ कसबे और ८४ गावोंमें ७१०७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६३४०६ हिन्दू, ६७४१ मुसलमान और ९२५ दूसरे ।

पोरबन्दरके राणासाहब जेठवा राजपूत हैं । उनको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है । वह राज्य पहिले काठियावाडके दूसरे दर्जेके राज्योंमें था; किन्तु सन् १८६९ में तीसरे दर्जेमें कर दिया गया । पोरबन्दरके राज्यसे लगभग ५५०००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकार, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूना-गढ़के नवाबको ४८५०० रुपया दिया जाता है । राणासाहबका लगभग ६०० आदमियोंका सैनिक बल है । सन् १८८२-८३ में पोरबन्दरके राज्यमें १० स्कूल थे। लगभग १५० वर्षसे पो-

बन्दर कसवा राजधानी हुआ है । वर्त्तमान पोरवन्दर नरेश राणा श्रीविक्रमादित्यजी खेमाजी ७५ वर्षकी अवस्थाके वृद्ध हैं । यह वड़े धर्मनिष्ठ हैं, किन्तु राज्य प्रवंधके गड़वड़ होनेसे वम्वईके गवर्नमेंटने इनको राज्यच्युत कर दिया है ।

माधवपुर—पोरवन्दर कसवेसे ४० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके पास पोरवन्दरके राज्यमें माधवपुर बन्दरगाह है । वहाँ मधुमतीनदी समुद्रमें मिली है और ब्रह्मकुण्ड तीर्थ तथा कृष्ण-भगवान्‌का प्रसिद्ध मन्दिर है । कुछ लोग कहते है कि इसी स्थानपर रुक्मिणीजीके साथ श्रीकृष्णचन्द्रका विवाह हुआ था ।

---

# छबीसवां अध्याय ।



## ( काठियावाड़में ) मूलद्वारिका, द्वारिका और बेटद्वारिका ।

## मूलद्वारिका ।

पोरवन्दरसे १२ मील पश्चिमोत्तर द्वारिका जानेवाली सडकके पास मूलद्वारिका नामक गॉव है । वहाँ वहुतसे पुराने मन्दिर हैं । लोग कहते हैं कि श्रीकृष्ण भगवान् मथुरासे प्रथम इसी जगह आये थे ।

मूलद्वारिकासे ६ मील ( पोरवन्दरसे १८ मील पश्चिमोत्तर ) उखमण्डल सवडिवीजनमें मियानी पुराना वन्दरगाह है । मियानीसे लगभग २२ मील ( पोरवन्दरसे ४० मील ) पश्चिमोत्तर गोलगढ़ नामक गॉवके पास पिण्डारक तीर्थ और दुर्वासा ऋषिका आश्रम है ।

## द्वारिका ।

पोरवन्दरसे ५६ मील, विरावल वन्दरसे १५० मील और वम्वई शहरसे ३४२ मील पश्चिमोत्तर ( २२ अंश, १४ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ५ कला पूर्व देशांतरमे ) वम्वई हातेके काठियावाड़ प्रायद्वीपके पश्चिमोत्तरके कोनेमें, वडोदाके राज्यके अमरेली विभागके ऊखमण्डल सवडिवीजनमें द्वारिका एक छोटा कसवा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, जिसको गोमतीद्वारिका भी कहते हैं । पोरवन्दर, विरावलवन्दर और वम्वईमें रेल है । आगवोट सप्ताहमें ३ वार वम्वईसे विरावलवन्दर, पोरवन्दर, द्वारिका इत्यादि वन्दरगाह होकर कराचीको और करांचीसे द्वारिका, पोरवन्दर, विरावलवन्दर इत्यादि वंदरगाह होकर वम्वईको जाते हैं । द्वारिकाके यात्री वम्वई, विरावलवंदर और पोरवदरमें रेलगाड़ीसे उतरकर आगवोट द्वारा द्वारिका पहुँचते हैं । कुछ लोग पोरवंदरसे पैदल अथवा वैलगाड़ीपर सवार हो द्वारिका जाते है । वैलगाड़ीकी सडक अच्छी नहीं है । आगवोटका महसूल पोरवंदर तथा विरावल वदरसे द्वारिकाका दूसरे क्लासका २ रुपया और तीसरे क्लासका १ रुपया और वम्वईसे द्वारिकाका दूसरे क्लासका ४ रुपया और तीसरे क्लासका २ रुपया लगता है । आगवोटपर चढ़ाने

अथवा उतारनेवाली नावका महसूल चार आना अलग देना पडता है। द्वारिकामें उतरने-वालोंसे चुंगीकी तलासी ली जाती है। यद्यपि पोरबंदरसे आगबोट केवल ७ घण्टेमें द्वारिका पहुँच जाते है और सडक द्वारा पोरबंदरसे द्वारिका जानेमें दो दिनोसे अधिक समय लग जाता है तथापि बहुतेरे लोग आगबोटके क्लेशसे बचनेके लिये पैदल अथवा बैलगाडीपर वहांसे द्वारिका जाते है। हवा तेज रहनेपर जब नाव आगबोट पर चढनेवाले यात्रियोंको लेकर उछलती कूदती ऊँची ऊँची लहरोंको लांघती हुई पालके सहारेसे आगबोटकी तरफ चलती है, तब कितने लोग अधीर होजाते हैं, तथा कितने लोग वमन करते है। उससे अधिक क्लेश आगबोट पर होता है क्योंकि उस पर पहिलेके चढ़े हुए कितने लोग पांव फैला कर सोते हैं, नये चढ़नेवालोंमेंसे कितनेको बैठनेका स्थान नहीं मिलता तथा कितने लोग वमन करते है; किन्तु पवनकी तेजी नहीं रहनेपर और बैठने सोनेका स्थान मिल जाने पर आगबोटमें कोई दुःख नहीं होता। मेरे जानेके समय हवा तेज थी। द्वारिका भारतवर्षके पश्चिमके किनारे पर, भारतवर्षके ४ धामोंमेंसे एक धाम और सप्त पुरियोंमेसे एक पुरी है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोमतीद्वारिकामें ७४३ मकान और लगभग ५००० मनुष्य थे।

द्वारिका कसबेके एक भागके चारोओर, जो लगभग २५० गज उत्तरसे दक्षिणको लम्बा और २०० गज चौडा अर्थात् लगभग १७ बीघे भूमिपर है, पक्की दीवार बनी हुई है, जिसके चारो बगलोंमें एक एक फाटक बना है। दक्षिणकी दीवारमें रणछोडजीके मन्दिरके घेरेका खास फाटक है। घेरेके भीतर बस्ती, धर्मशालायें और बहुतसे मन्दिर और घेरेके बगलो-में अर्थात् उसके बाहर बहुतसे मन्दिर, स्थान इत्यादि हैं। द्वारिकामे आठ दस धर्मशालाये, बडोदाके महाराजकी कचहरियां, पुलिस, जेलखाना, फौजी छावनी, पांच छः स्कूल और कई एक अस्पताल हैं।

सन् १८५९ के वघेरोंके बगावतके समयसे महाराजके खर्चसे द्वारिकामें देशी पैदलकी एक कम्पनी अङ्गरेजी सेना रहती है। उसके अलावे महाराजकी सेना भी है। द्वारिका ऊखमंडल सबडिवीजनका सदर स्थान है। गोमतीद्वारिका और बेटद्वारिकाके यात्रियोंके 'कर' और चुंगीकी आमदनीका ४०००० रुपये पर ठीका दिया गया है। इसके अलावे लगभग ८००० रुपया घाटकी आमदनी है। ऐसा नहीं जानना चाहिये कि बडोदाके महाराज यात्रियोसे 'कर' लेकर अपने घर ले जाते हैं। ऊपर लिखी हुई आमदनीके अलावे महाराजको द्वारिकाके प्रबन्धके खर्चके लिये प्रति वर्ष लगभग ४०००० रुपया घरसे देना पड़ता है।

समुद्रके किनारेपर नमक तैयार होता है, जो वहाँ बहुत सस्ता बिकता है। समुद्रका ज्वार और भाटा नित्य दो बार होता है। भाटा होने पर अर्थात् समुद्रकी बाढका पानी हट जानेपर भांति भांतिके गोमती चक्र, कौड़ी दोहना इत्यादि जल उद्भिज वस्तु किनारे पर पड़ जाती हैं। यात्री लोग गोमती चक्रको पूजा करनेके लिये अपने घर ले जाते हैं।

द्वारिकामें बहुत पण्डे हैं। वही लोग धनी यात्रियोंके साथ बेटद्वारिकाभी जाते हैं। वहाँ जाति जातिके अलग अलग पण्डे हैं। किसी पण्डेके हिस्सेमें एक

जातिके यात्री और किसीके हिस्सेमे दो, तीन या उससेभी अधिक जातिके यात्री हैं। उन लोगोको यात्री खोज लानेके लिये कही जाना नहीं पडता; यात्रीको पुरीमें पहुँचने पर उस जातिका पण्डा उसके साथ लग जाता है। वहाँकी स्त्रियाँ पर्देमें नही रहतीं। ब्राह्मण भोजनके समय ब्राह्मणोंके साथ उनकी स्त्रियांभी आकर भोजन करती है,किन्तु विधवा स्त्रियां उनके साथ पक्तिमें नहीं बैठती।

द्वारिकाके आस पास किसी चीजकी पैदावार नही है, सब वस्तु बाहरसे आती हैं। नागफेनी और सीज जहां तहाँ बहुत हैं, जो जलानेके काममें आते है। किसी किसी जगह आम आदिके वृक्ष देखनेमे आते है, किन्तु वह हरे भरे अथवा सीधे खड़े नहीं हैं। पहिले उस देशमे कावाजातिके मुसलमान या अन्यलोग डाका मारते थे, इस लिये साधु लोग तथा निर्धन लोगोके अतिरिक्त धनी तथा सर्व साधारण लोग वहाँ प्रायः नही जाते थे। अब किसी जगह कोई भय नही है, नित्य सैकड़ों यात्री द्वारिकामे पहुँचते है।

गोमती—द्वारिकाके पश्चिम समुद्र और दक्षिण गोमती नामक लम्बा खाल है, जो समुद्रके ज्वारके पानीसे भरा रहता है। गोमतीके होनेसे उस नगरको लोग गोमती द्वारिका कहते हैं। गोमतीके उत्तरके किनारेपर द्वारिकाकी ओर पश्चिमसे पूर्व तक इस क्रमसे ९ पक्के घाट बने हुए हैं,—१ संगम घाट, २ नारायणघाट, ३ वासुदेवघाट, ४ गऊघाट, ५ पार्वती-घाट, ६ पाण्डवघाट, ७ ब्रह्माघाट, ८ सुरधनघाट और ९ वाँ सरकारीघाट। समुद्र और गोमतीके मेलके पास संगमघाटपर संगमनारायणका मन्दिर वासुदेवघाटके पास हनुमान्जीका मन्दिर और उससे पश्चिम नृसिंहजीका स्थान है। सरकारी घाटसे पूर्व निष्पाप कुण्ड नामक छोटा पोखरा है, उसके बगलोपर पक्की सीढियाँ बनी है, उसमे गोमतीका पानी रहता है। वहाँकी रीतिके अनुसार यात्री लोग प्रथम निष्पाप कुण्डमें तीर्थ भेट देकर स्नान करते है। जिसकी इच्छा होती है वह उस स्थानपर पिण्डदान करता है। उस कुण्डके समीप एक अन्य छोटा कुण्ड,संवलियाजीका मन्दिर,गोवर्द्धननाथका मंदिर और महाप्रभुकी बैठक है। प्रति यात्री-को गोमतीमें स्नान करनेके लिये बड़ोदाके महाराजके कर्मचारी अथवा ठीकेदारको दो रुपया देना पड़ता है, विना नियमित दो रुपया दिये हुए कोई गोमतीके किसी घाटपर स्नान नही कर सकता है। यात्री प्रथम दो रुपया देकरके तब निष्पाप कुण्डम स्नान करता है। जो एक बार नियमित कर दे देता है, वह नित्य स्नान करता है। दरिद्र लोगोंसे "मेरे पास कुछ नही है" ऐसा सौगन्ध कराकर उसका 'कर' माफ कर दिया जाता है। इसी भांति बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेवालोंसे भी दो रुपया लिया जाता है। लगभग१० वर्ष पहिले ब्राह्मणों और साधुओंको छोड़कर अन्य यात्रियोंको गोमतीमें स्नान करने और बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेका महसूल प्रतियात्रीका ९ रुपया लगता था; किन्तु अब नये प्रबन्धके अनुसार सबको दो दो रुपया दोनों द्वारिकामें देना होता है।

गोमतीके दक्षिण किनारेपर पंचकुआ नामसे प्रसिद्ध ५ पवित्र कूप हैं। पांचों लगभग एक एक हाथ लम्बे और इतनेही चौड़े चौखुटे हैं। यात्री लोग कूपोंसे जल निकालकर आचमन और मार्जन करते हैं।

अथवा उतारनेवाली नावका महसूल चार आना अलग देना पड़ता है। द्वारिकामें उतरनेवालोंसे चुंगीकी तलासी ली जाती है। यद्यपि पोरवंदरसे आगवोट केवल ७ घण्टेमें द्वारिका पहुँच जाते है और सडक द्वारा पोरवंदरसे द्वारिका जानेम दो दिनोसे अधिक समय लग जाता है तथापि वहुतेरे लोग आगवोटके क्लेशसे वचनेके लिये पैदल अथवा वैलगाडीपर वहांसे द्वारिका जाते हैं। हवा तेज रहनेपर जब नाव आगवोट पर चढनेवाले यात्रियोंको लेकर उछलती कूदती ऊँची ऊँची लहरोको लांघती हुई पालके सहारेसे आगवोटकी तरफ चलती है, तव कितने लोग अधीर होजाते हैं, तथा कितने लोग वमन करते है। उससे अधिक क्लेश आगवोट पर होता है क्योंकि उस पर पाहिलेके चढ़े हुए कितने लोग पांव फैला कर सोते हैं, नये चढ़नेवालोंमेंसे कितनेको वैठनेका स्थान नहीं मिलता तथा कितने लोग वमन करते है, किन्तु पवनकी तेजी नहीं रहनेपर और वैठने सोनेका स्थान मिल जाने पर आगवोटमें कोई दुःख नहीं होता। मेरे जानेके समय हवा तेज थी। द्वारिका भारतवर्षके पश्चिमके किनारे पर, भारतवर्षके ४ धामोंमेंसे एक धाम और सप्त पुरियोंमेसे एक पुरी है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोमतीद्वारिकामें ७४३ मकान और लगभग ५००० मनुष्य थे।

द्वारिका कसवेके एक भागके चारोओर, जो लगभग २५० गज उत्तरसे दक्षिणको लम्बा और २०० गज चौडा अर्थात् लगभग १७ वीघे भूमिपर है, पक्की दीवार वनी हुई है, जिसके चारो वगलोमें एक एक फाटक बना है। दक्षिणकी दीवारमें रणछोडजीके मन्दिरके घेरका खास फाटक है। घेरके भीतर वस्ती, धर्मशालायें और वहुतसे मन्दिर और घेरके वगलोमें अर्थात् उसके वाहर बहुतसे मन्दिर, स्थान इत्यादि हैं। द्वारिकामे आठ दस धर्मशालायें, बड़ोदाके महाराजकी कचहरियां, पुलिस, जेलखाना, फौजी छावनी, पांच छ स्कूल और कई एक अस्पताल है।

सन् १८५९ के वघेरोंके वगावतके समयसे महाराजके खर्चसे द्वारिकामें देशी पैदलकी एक कम्पनी अङ्गरेजी सेना रहती है। उसके अलावे महाराजकी सेना भी है। द्वारिका ऊखमडल सवडिवीजनका सदर स्थान है। गोमतीद्वारिका और वेटद्वारिकाके यात्रियोंके 'कर' और चुंगीकी आमदनीका ४०००० रुपये पर ठीका दिया गया है। इसके अलावे लगभग ८००० रुपया घाटकी आमदनी है। ऐसा नहीं जानना चाहिये कि वड़ोदाके महाराज यात्रियोंसे 'कर' लेकर अपने घर ले जाते हैं। ऊपर लिखी हुई आमदनीके अलावे महाराजको द्वारिकाके प्रवन्धके खर्चके लिये प्रति वर्ष लगभग ४०००० रुपया घरसे देना पड़ता है।

समुद्रके किनारेपर नमक तैयार होता है, जो वहॉ वहुत सस्ता विकता है। समुद्रका ज्वार और भाठा नित्य दो वार होता है। भाठा होने पर अर्थात् समुद्रकी वाढ़का पानी हट जानेपर भांति भांतिके गोमती चक्र, कौड़ी दोहना इत्यादि जल उद्भिज वस्तु किनारे पर पड़ जाती हैं। यात्री लोग गोमती चक्रको पूजा करनेके लिये अपने घर ले जाते हैं।

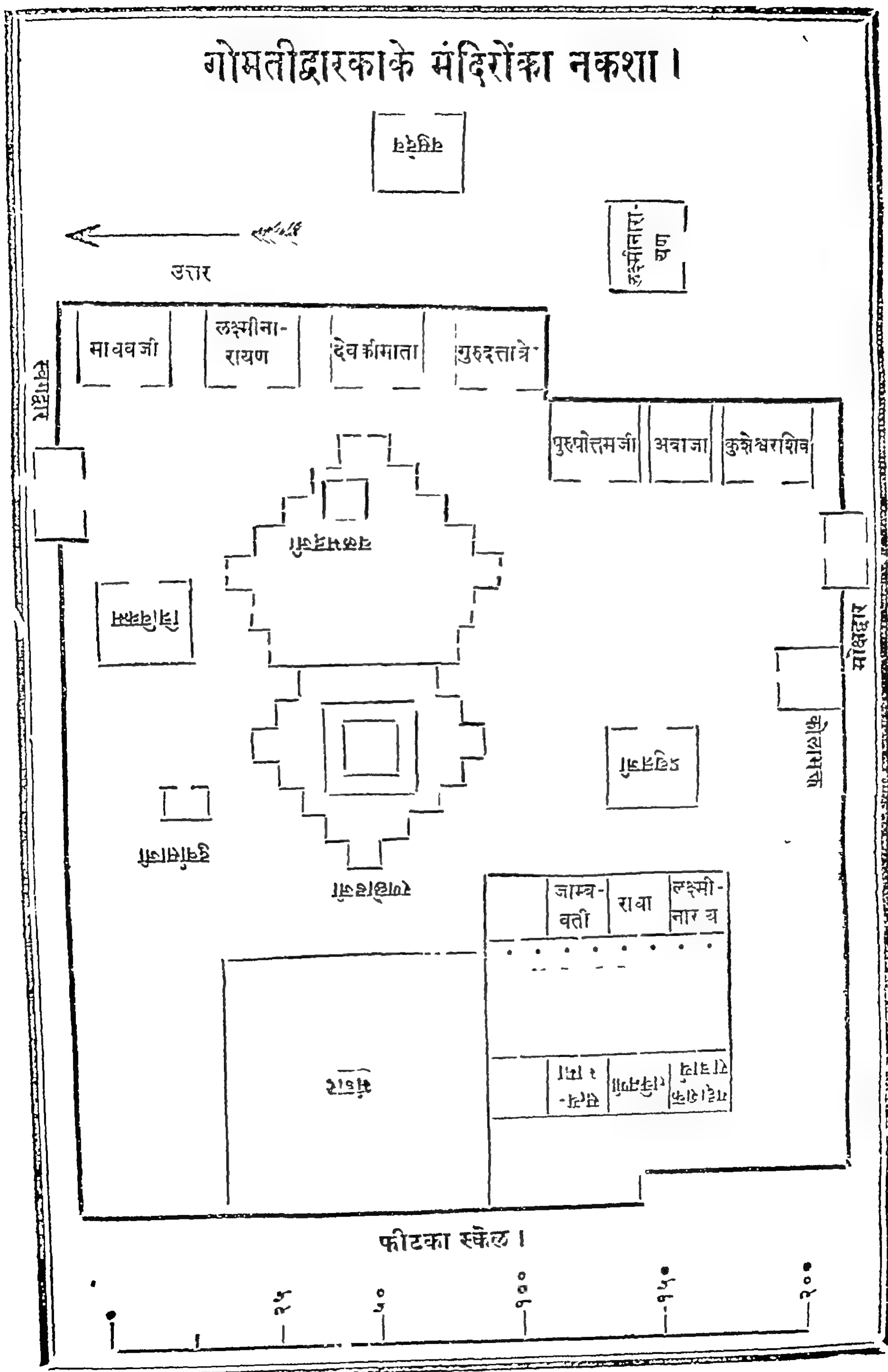
द्वारिकामें वहुत पण्डे है। वही लोग धनी यात्रियोंके साथ बेटद्वारिकाभी जाते हैं। वहॉ जाति जातिके अलग अलग पण्डे हैं। किसी पण्डेके हिस्सेमें एक

जातिके यात्री और किसीके हिस्सेमे दो, तीन या उससेभी अधिक जातिके यात्री है। उन लोगोंको यात्री खोज लानेके लिये कही जाना नही पडता; यात्रीको पुरीमे पहुँचने पर उस जातिका पण्डा उसके साथ लग जाता है। वहाँकी स्त्रियाँ पर्देमें नही रहतीं। ब्राह्मण भोजनके समय ब्राह्मणोंके साथ उनकी स्त्रियांभी आकर भोजन करती है,किन्तु विधवा स्त्रियां उनके साथ पक्तिमें नहीं बैठती।

द्वारिकाके आस पास किसी चीजकी पैदावार नही है, सब वस्तु बाहरसे आती हैं। नागफेनी और सीज जहां तहाँ बहुत है, जो जलानेके काममें आते है। किसी किसी जगह आम आदिके वृक्ष देखनेमे आते है, किन्तु वह हरे भरे अथवा सीधे खडे नहीं हैं। पहिले उस देशमे कावाजातिके मुसलमान या अन्यलोग डाका मारते थे, इस लिये साधु लोग तथा निर्धन लोगोंके अतिरिक्त धनी तथा सर्व साधारण लोग वहाँ प्राय: नही जाते थे। अब किसी जगह कोई भय नही है, नित्य सैकड़ों यात्री द्वारिकामे पहुँचते हैं।

गोमती—द्वारिकाके पश्चिम समुद्र और दक्षिण गोमती नामक लम्बा खाल है, जो समुद्रके ज्वारके पानीसे भरा रहता है। गोमतीके होनेसे उस नगरको लोग गोमती द्वारिका कहते हैं। गोमतीके उत्तरके किनारेपर द्वारिकाकी ओर पश्चिमसे पूर्व तक इस क्रमसे ९ पक्के घाट बने हुए हैं,—१ संगम घाट, २ नारायणघाट, ३ वासुदेवघाट, ४ गऊघाट, ५ पार्वती-घाट, ६ पाण्डवघाट, ७ ब्रह्माघाट, ८ सुरधनघाट और ९ वाँ सरकारीघाट। समुद्र और गोमतीके मेलके पास संगमघाटपर संगमनारायणका मन्दिर वासुदेवघाटके पास हनुमान्‌जीका मन्दिर और उससे पश्चिम नृसिंहजीका स्थान है। सरकारी घाटसे पूर्व निष्पाप कुण्ड नामक छोटा पोखरा है, उसके बगलोपर पक्की सीढियॉ बनी है, उसमे गोमतीका पानी रहता है। वहॉकी रीतिके अनुसार यात्री लोग प्रथम निष्पाप कुण्डमें तीर्थ भेट देकर स्नान करते है। जिसकी इच्छा होती है वह उस स्थानपर पिण्डदान करता है। उस कुण्डके समीप एक अन्य छोटा कुण्ड,संवलियाजीका मन्दिर,गोवर्द्धननाथका मंदिर और महाप्रभुकी बैठक है। प्रति यात्री-को गोमतीमें स्नान करनेके लिये बडोदाके महाराजके कर्मचारी अथवा ठीकेदारको दो रुपया देना पडता है, बिना नियमित दो रुपया दिये हुए कोई गोमतीके किसी घाटपर स्नान नहीं कर सकता है। यात्री प्रथम दो रुपया देकरके तब निष्पाप कुण्डमे स्नान करता है। जो एक बार नियमित कर दे देता है, वह नित्य स्नान करता है। दरिद्र लोगोंसे "मेरे पास कुछ नहीं है" ऐसा सौगन्ध कराकर उसका 'कर' माफ कर दिया जाता है। इसी भांति बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेवालोंसे भी दो रुपया लिया जाता है। लगभग१० वर्ष पहिले ब्राह्मणों और साधुओंको छोड़कर अन्य यात्रियोंको गोमतीमें स्नान करने और बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेका महसूल प्रतियात्रीका ९ रुपया लगता था; किन्तु अब नये प्रबन्धके अनुसार सबको दो दो रुपया दोनो द्वारिकामें देना होता है।

गोमतीके दक्षिण किनारेपर पंचकुंआ नामसे प्रसिद्ध ५ पवित्र कूप हैं। पांचों लगभग एक एक हाथ लम्बे और इतनेही चौड़े चौखुटे हैं। यात्री लोग कूपोंसे जल निकालकर आचमन और मार्जन करते हैं।


गोमतीद्वारकाके मंदिरोंका नकशा।
उत्तर
माधवजी
लक्ष्मीना-
रायण
देवकीमाता
गुरुदत्तात्रे
पुरुषोत्तमजी
अंबाजी
कुशेश्वरशिव
मोक्षद्वार
जाम्ब-
वती
राधा
लक्ष्मी-
नारायण
फीटका स्केल।

मन्दिर—यात्रीलोग निष्पाप कुण्डमे स्नान करके रणछोड आदि देवताओंके मन्दिरमें जाकर दर्शन करते है। शहरपनाहके भीतर उसके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास लगभग २४० फीट लम्बे और २०० फीट चौड़े घेरेमें रणछोड़ आदि देवताओंके मन्दिर है ( यहॉके नकशेसे देखिये )। घेरेके दक्षिण बगलमे स्वर्गद्वार नामक फाटक और उत्तर बगलमे मोक्षद्वार नामक फाटक है। स्नान करके मन्दिरमे जानेके समय मार्गमे कृष्णजी, गोमतीमाता और महालक्ष्मीजी और सीढ़ियोंपर हनूमानजी, नृसिहजी और साक्षीगोपालका दर्शन होता है। घेरेके भीतरके मन्दिरोंमें जाकर देवताओंके पूजन करनेका 'कर' नियत है। रणछोडजीके मन्दिरका ८ आना, त्रिविक्रमजीके मन्दिरका ४ आना, प्रद्युम्नजीके मन्दिरका ४आना और अन्य मन्दिरोंका 'कर' दो दो आना या उससे भी कम है। जो यात्री एक वार पुजारियोंको नियत 'कर' दे देता है, वह मन्दिरके भीतर नित्य जाकर देवताओके चरणोंको स्पर्श करके चरणोंपर पुष्प तथा तुलसी पत्र चढाता है। जो यात्री जिस मन्दिरका नियमित कर नही देता, वह उस मन्दिरके द्वारके वाहरसे दर्शन करता है।

कृष्ण भगवान् कालयवनके डरसे रण अर्थात् संग्राम छोड़कर द्वारिकामें भाग गये, इस कारणसे उनका नाम रणछोड़ पड़ा है। रणछोड़जीका मन्दिर द्वारिकाके सब मन्दिरोंमें प्रधान और सबसे अधिक बड़ा तथा सुन्दर है। वह मन्दिर, जो सात मञ्जिला शिखरदार है, ४० फीट लम्बा और उतनाही चौड़ा तथा लगभग १४० फीट ऊँचा है। ऊपरके मञ्जिलोंमें जानेके लिये भीतर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मन्दिरकी दीवार दोहरी है। दोनो दीवारोंके बीचमें परिक्रमा करनेकी जगह है। मन्दिरके भीतर चांदीके पत्तरोंसे भूषित किये हुए सिहॉसनपर रणछोड़जीकी, जिनको द्वारिकाधीश भी कहते हैं ३ फीट ऊँची श्यामल चतुर्भुज मूर्त्ति है। मूर्त्तिके अंगमे बहुमूल्य वस्त्र, गलेमें सोनेकी अनेक भांतिकी ११ माला हैं और शिरपर सुन्दर सुनहरा मुकुट है। मन्दिरके फर्शमें श्वेत तथा नील मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं, द्वारके चौखटोपर चाँदीके पत्तर लगे हैं और छतसे सुन्दर झाड़ लटकते हैं। यात्रीलोग रणछोड़जीके चरणोपर फूल और तुलसीपत्र तथा माला चढ़ाते है और सिंहासनकी परिक्रमा करते हैं। मन्दिरके ऊपरके एक मञ्जिलमें अम्बा देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे, अर्थात् पूर्व, मन्दिरसे अधिक लम्बा चौड़ा, १०० फीट ऊँचा पंचमंजिला जगमोहन है। उसके भीतर पत्थरके ६० चौकोने स्तम्भ लगे हैं। फर्शमें श्वेत और नील मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं। ऊपर सुन्दर गुम्बज है। उस जगमोहनमें पश्चिम-दक्षिणके कोनेके पास एक छोटी कोठरीमे शेषरूप वलदेवजी हैं। मन्दिरके समान जगमोहन भी पहलदार है। मन्दिरसे दक्षिण-पूर्व दुर्वासाजीका छोटा मन्दिर है।

रणछोड़जीके मन्दिरसे दक्षिण त्रिविक्रमजीका शिखरदार मन्दिर है। उसके किवाड, चौखट और सिंहासनपर चांदीके पत्तर जड़े हुए हैं, छतमे झाड आदि लगे हैं, फर्शमें श्वेत और नील मार्बुलके टुकड़े जडे हुए हैं। मन्दिरमें सिंहासनपर त्रिविक्रमजीकी मनोरम मूर्त्ति है। रणछोड़जीके वस्त्र भूषणोंके समान इनके भी वस्त्र भूषण हैं। त्रिविक्रमजीके पास राजा वलि और ब्रह्माके ४ पुत्र, अर्थात् सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमारकी छोटी छोटी मूर्त्ति और मन्दिरके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें गरुड़की मूर्त्ति है। त्रिविक्रमजीको वहुत लोग टीकमजी कहते हैं। वहॉंके पण्डोंका कथन है कि दुर्वासा ऋषि राजा वलिसे त्रिविक्रम भगवान्को मांग लाये थे।

रणछोडजीके मन्दिरसे उत्तर प्रद्युम्नजीका शिखरदार मंदिर है। मंदिरमें मार्बुलके टुकडोंका फर्श बना है, झाड़ लटकते हैं और चाँदीके सिंहासन पर श्याम रूप प्रद्युम्नजी विराजते हैं। उनका शृङ्गार भी प्रायः रणछोडजीके शृङ्गारके समान है। उनके पास अनिरुद्धजीकी छोटी प्रतिमा है।

घेरेके उत्तरवाले फाटकसे पश्चिम कुशेश्वर महादेवका मंदिर है। मंदिरके नीचे तहखानेमें कुशेश्वर शिवलिंग और पार्वतीजीकी मूर्त्ति है। वहाँ बहुतेरे यात्री लड्डू तथा घी चढ़ाते हैं। पण्डे लोग कहते हैं कि जब कुश नामक दैत्य द्वारिकामें बडा उत्पात करके सब लोगोंको क्लेश देने लगा, तब दुर्वासा ऋषि त्रिविक्रम भगवान्को राजा बलिसे माँग लाये। जब कुश दैत्य किसी भांतिसे नहीं मरा, तब त्रिविक्रमजीने उसको भूमिमे गाड़ कर उसके ऊपर शिवलिंग स्थापित कर दिया, जो कुलेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। उस समय कुशने कहा कि जो द्वारिकाके यात्री कुशेश्वरकी पूजा न करे, उनकी यात्राका आधा फल मुझको मिले, तब मैं इसके भीतर स्थिर रहूँगा। त्रिविक्रमजीने कुशको यह वर दे दिया; कुश भूमिमें स्थित होगया।

घेरेके भीतर उसके पश्चिमकी दीवारके पास क्रमसे उत्तरसे दक्षिण कुशेश्वर महादेव, अम्बाजी, पुरुषोत्तमजी, गुरु दत्तात्रेय, देवकी माता, लक्ष्मीनारायण और माधवजीके मंदिर, उत्तरकी दीवारके पास मोक्षद्वार फाटकसे पूर्व कोला भक्तका मन्दिर और पूर्वकी दीवारके पास एक घेरेके पूर्व बगलमें क्रमसे दक्षिणसे उत्तर, खाली मंदिर, सत्यभामाका मंदिर, रुक्मिणीका मंदिर, शंकराचार्य्यकी गद्दी और पश्चिम बगलमें क्रमसे दक्षिणसे उत्तर १ खाली मंदिर और जाम्बवती, राधा और लक्ष्मीनारायणके ३ मन्दिर हैं ( नक्शेसे देखिये )।

भीतरवाले घेरेसे दक्षिण शारदामठके अधीन रणछोडजीका भण्डार घर है। उसमें भोगकी सामग्री तैयार करके नियत समयोंपर रणछोडजी आदि वहाँके देवताओंको भोग लगाई जाती है। धनी यात्री लोग उस भण्डारमे भोगकी सामग्री अथवा रुपया देकर अपनी ओरसे वहाँके देवताओंको भोग लगवाते हैं।

भण्डारसे दक्षिण सुप्रसिद्ध शारदामठ है। भारतवर्षकी चारों दिशाओंकी सीमाओंके पास सुप्रसिद्ध शंकराचार्यजीके ४ प्रधान मठ हैं, जो उनके ४ शिष्योंसे हुए थे;—दक्षिणकी सीमाकी ओर मैसूर राज्यके शृंगेरी गाँवमें शृंगेरीमठ, पश्चिमकी सीमापर द्वारिकामें शारदामठ, उत्तरकी सीमाके पास गढ़वाल जिलेमे जोशीमठ और पूर्वकी सीमापर उड़ीसेकी जगन्नाथपुरीमें गोवर्द्धनमठ। इनका विशेष वृत्तांत तथा शंकराचार्यजीका जीवन चरित्र भारत-भ्रमणके इसी खण्डमें शृंगेरीके वृत्तांतमें है। इस समय द्वारिकाके शारदामठके स्वामी जगद्गुरु श्रीशंकराश्रम स्वामीजी हैं। उनका जन्म मदरास हातेके गोदावरी जिलेके एक गाँवमें हुआ था। उनका नाम जगन्नाथशास्त्री था। वह शास्त्रोंमे अच्छे विद्वान् हैं और अङ्गरेजी तथा फारसी भी जानते हैं। वह इस समय देशभूपणके लिये निकले हैं और सनातनधर्मका व्याख्यान देते फिरते हैं।

मन्दिरके बड़े घेरेसे बाहर उसके पश्चिम लक्ष्मीनारायणका एक मन्दिर है। नारायणकी श्यामवर्णकी चतुर्भुज मूर्त्ति लगभग २ हाथ ऊँची है, जिसके वाम अंकमें लक्ष्मीजीकी छोटी प्रतिमा है। नारायणके अंगमे बहुमूल्य वस्त्र, शिरपर सुनहरा मुकुट और गलेमें सोनेके १० हार हैं।

लक्ष्मीनारायणके मन्दिरसे दक्षिण-पश्चिम वासुदेवका मन्दिर है, जिसके चौखट और सिंहासनमें चाँदीके पत्तर जडे हुए है। मूर्त्ति श्याम वर्णकी चतुर्भुज है। उसके अंगमें सुन्दर वस्त्र, शिर पर सुनहरा मुकुट, हाथोमे सुनहरा शंख, चक्र, गदा और पद्म तथा गलेमें सोनेकी आठ दश सिकरी है।

नगरकी परिक्रमा-रणछोडजीके मन्दिरसे नगरकी परिक्रमाकी यात्रा आरम्भ होती है। मन्दिरसे पश्चिम गोमतीके घाटोपरके देवताओंके दर्शन करते हुए समुद्रके निकट सङ्गमघाट पर जाना चाहिये। सङ्गमसे उत्तरके समुद्रके घाटको लोग चक्रतीर्थ कहते है। उससे उत्तर रत्नेश्वर महादेवका मन्दिर है। उससे उत्तर द्वारिका नगरके बाहर सिद्धनाथ महादेवका मन्दिर मिलता है, जिसका फर्श श्वेत और नील मार्बुलसे बना है। उससे आगे ज्ञानकुण्ड नामक बावली, उससे आगे जूनीरामवाड़ी नामक मन्दिरमे राम, लक्ष्मण और जानकी, उससे आगे नई रामबाडी नामक मन्दिर और सौमित्री बावली नामक कूप, उससे आगे अक्षयवट वृक्ष अघोरकुण्ड, भद्रकाली और आशापुरी माताकी मूर्त्ति, और उससे आगे कैलासकुण्ड नामक छोटा पोखरा मिलता है। पोखरेके चारों बगलोमे पत्थरकी सिढ़ियाँ बनी हुई है। उसमें गुलाबी रङ्गका पानी है। वहाँके पण्डे कहते हैं कि राजा नृग गिरगिट होकर इसी कुण्डमें रहते थे और इसी स्थानपर उनका उद्धार हुआ था। कैलासकुण्डसे आगे सूर्यनारायण और उससे आगे शहर पनाहके पूर्वके दर्वाजेके पास जय और विजयका दर्शन होता है। उसके पश्चात् निःपापकुण्ड और रणछोडजीके मन्दिरके बीचके देवताओंके दर्शन करते हुए दक्षिण दरवाजेसे रणछोड़जीके मन्दिरमें जाकर परिक्रमा समाप्त करनी चाहिये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—( सभापर्व, १४ वाँ अध्याय ) मगधदेशका राजा जरासन्ध अपने प्रतापसे सम्पूर्ण पृथ्वीको अपने अधिकारमे करके पृथ्वीनाथ बन गया। पृथ्वीके बहुतसे राजा उसके भयसे उसके सहायक बन गये और बहुतेरे अपने देशको छोड़ कर भाग गये। ( कृष्णने कहा था कि हम बडे बड़े अस्त्रोंसे लगातार ३०० वर्ष तक जरासन्धके साथ लड़ेगे तौभी उसको नहीं जीत सकेंगे, क्योंकि वह अमरके समान तेजस्वी और बली है )। अस्ति और प्राप्ति नामक जरासन्धकी दो पुत्री कंससे ब्याही गई थी। जब कृष्णने कंसको मारा, तब उन्होंने अपना दुःख जरासन्धसे जा सुनाया। जरासन्ध बारबार मथुरापर आक्रमण करने लगा। हंस और डिम्भक दो अति बलवान् पुरुष जरासन्धके सहायक थे। १७ वीं लड़ाईके समय बलरामजीने हंसको मारा। डिम्भकने हंसकी ग्लानिसे यमुनामें डूबकर अपना प्राण छोड दिया। जरासन्ध उनकी मृत्युका समाचार पाकर उदास हो अपनी राजधानीकी ओर चला। उसके लौटनेपर कृष्ण आदि यादव आनन्दित मनसे फिर मथुरामें बसने लगे, किन्तु कंसकी दोनो स्त्रियाँ कृष्ण, बलरामको मारनेके लिये अपने पिता जरासन्धको फिर उभाडने लगीं। तब कृष्णने उदास हो मथुरासे भागनेका विचार किया। सब मथुरावासी अनन्त ऐश्वर्यको आपसमे बांटकर प्रत्येक आदमी स्वल्प भार लेकर पश्चिम दिशामें भाग गये। वे लोग भारतवर्षके पश्चिमी विभागमें रैवत पर्वतकी चोटियोंसे सुशोभित कुशस्थली अर्थात् द्वारिका पुरीमें जा बसे। उन्होंने अच्छे प्रकारसे वहाँके दुर्ग अर्थात् क़िलेका संस्कार किया। वह दुर्ग देवताओंके भी गमन करने योग्य न रहा। उस दुर्गसे स्त्रियाँ भी अनायास लड़ सकती थीं। सब लोग निर्भय होकर गोमन्त नामक पर्वतपर निवास

करने लगे। वह पर्वत ३ योजनमें फैला हुआ था। एक एक योजनपर एक एक सैन्य व्यूह बना था। प्रत्येक योजनके अन्तरपर सौ सौ द्वार बने थे।

(वनपर्व, ८२ वाँ अध्याय) द्वारिकापुरीमें जाकर पिण्डारक तीर्थमें स्नान करनेसे बहुत सुवर्ण मिलता है। उस तीर्थमें अब भी पद्मके तुल्य एक मुद्रा, त्रिशूल और पद्मके चिह्न देख पड़ते है। वहाँ महादेवजी सर्वदा निवास करते है।

(अनुशासनपर्व, ७० वाँ अध्याय) प्यासे हुए चन्द आदमियोंने जलको ढूंढते हुए द्वारिकाके एक स्थानमें तृण लताओंसे परिपूर्ण एक बडा कूप पाया। उन्होंने उसके भीतर एक बड़ा गिरगिट देखा। जब उनके बहुत यत्न करनेपर गिरगिट कूपसे नहीं निकला, तब उन्होने वहाँसे जाकर कृष्णसे वह वृत्तान्त कह सुनाया। कृष्ण भगवान्ने वहाँ जाकर कूपसे गिरगिटको निकाला। उन्होंने गिरगिट रूपी राजा नृगसे पूछा कि तुम्हारा रूप ऐसा क्यों हुआ है। तब गिरगिट बोला कि अग्निहोत्री ब्राह्मणकी एक गऊ भूलकर हमारी गौओंमें आ मिली। मैने एक ब्राह्मणको वह गऊ फिर दान करदी। अग्निहोत्रीने उस गऊको दूसरे ब्राह्मणके घर देखा। दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए मेरे पास आये। मै प्रतिग्रहीता ब्राह्मणको एक गऊके बदलेमें एकसौ गऊ देता था, किन्तु वह अस्वीकार करके चला गया। तब मैंने दूसरे ब्राह्मणको उस गऊके बदलेमे एक सहस्र गऊ लेनेको कहा; पर उसने अस्वीकार करके अपनीही गऊ मांगी। उसके पश्चात् जब मैंने उससे सोने चाँदीसे खचित रथ लेनेको कहा, तब वह उसकोभी अस्वीकार करके क्रोध युक्त हो अपने घर चला गया। उसी समय मै कालवश होकर यमराजके समीप उपस्थित हुआ। यमराजने कहा कि हे महाराज नृग! तुम्हारे पुण्यकी संख्या नहीं है, किन्तु तुमसे कुछ पापभी हुआ है। ब्राह्मणकी गऊ खो जानेसे रक्षा करनेकी तुम्हारी प्रतिज्ञा नष्ट हुई, इस कारण तुमको पाप हुआ और ब्राह्मणस्व ग्रहण करनेसे तुमको दूसरा पाप लगा। तुम पापका फल पहिले अथवा पीछे भोगोगे? मैंने कहा कि मैं पहिलेही पापका फल भोग करूँगा। हे प्रभो! मै उसी समय पृथ्वीमें गिरा। उस समय धर्मराजने मुझसे कहा कि सहस्र वर्ष पूरा होने पर तुम्हारा पाप कर्म नष्ट होगा; कृष्ण भगवान् तुम्हारा उद्धार करेंगे। मै गिरगिट रूपसे नीच शिर करके कूपमें गिर गया। ऐसा कह राजा नृग गिरगिट रूप छोड कर दिव्य विमानमे बैठ सुरलोकमे चले गये (यह कथा श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्धके ६४ वें अध्यायमें है)।

(१५९ वॉ अध्याय) महर्षि दुर्वासा यह कहा करते थे कि मुझको, जो मैं अल्प अपराधमें बड़ा क्रोध करता हूँ, कौन मनुष्य सत्कार पूर्वक अपने गृहमे रख सकता है। जब किसीने उनका सत्कार नहीं किया, तब कृष्णने अपने निज गृहमें उनका वास कराया। वह कभी सहस्रों आदमियोंके भोजनका सामान अकेलेही भोजन करलेते, कभी बहुत थोडा भोजन करते, कभी हँसते और कभी अकस्मात् रोदन करनेमें प्रवृत्त होजाते थे। उस समय पृथ्वी पर दुर्वासाके समान अवस्थावाला कोई मनुष्य न था। उसने अपने वास गृहमें जाकर बिछाई हुई शय्या और अलंकृत कन्याओंको जलादिया। एक दिन दुर्वासाने कृष्णसे कहा कि मुझको भोजनके लिये शीघ्रही पायस दो। कृष्णने उनको उष्ण पायस दिया। दुर्वासाने कुछ पायस भोजन करके कृष्णसे कहा कि तुम इस पायसको अपने सारे अंगमे लगाओ। कृष्णने जूठे पायसको अपने शरीर और मस्तकमें लगा लिया। तब दुर्वासाने रुक्मिणीको

देख कर उसके शरीरमें पायस लगाया। उसके पश्चात् वह पायसलिप्तांगी रुक्मिणीको शीघ्रही रथमें जोडकर रथमें बैठ कृष्णके गृहसे बाहर निकले। उन्होंने कृष्णके सन्मुखही बालिका रुक्मिणीको कोड़ेसे मारा और प्रशस्त राजमार्गसे रथको चलाया। जब रुक्मिणी थक गई, तब दुर्वासाने क्रुद्ध होकर रथको वेग पूर्वक दौड़ाया। उसके पश्चात् वह अत्यन्त क्रोध युक्त हो रथसे उतरकर ऊर्ध्व मार्गसे दक्षिणकी ओर दौड़े। उस समय कृष्ण, जिनके अङ्गमें पायस लगा हुआ था, मुनिके पीछे पीछे दौड़कर उनसे विनय करने लगे कि हे भगवन्! आप मुझपर प्रसन्न होवें। तब महर्षि दुर्वासा प्रसन्न होकर बोले कि हे कृष्ण! तुमने क्रोधको जीत लिया है, मै तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम्हारी टूटी, जली अथवा नष्ट हुई सब वस्तु जैसीकी तैसी तथा उससे भी उत्कृष्ट हो जायँगी। तुम्हारे शरीरके जितने भागमे पायस लगा है, वह अभेद्य हो जायगा, किन्तु तुम्हारे दोनो पदतलमें पायस नही लगा, मुझको इसी बातका संशय है। उसके पश्चात ब्राह्मणने रुक्मिणीसे कहा कि हे सुन्दरी! तुम्हारा यश और कीर्ति लोककी सब स्त्रियोंसे श्रेष्ठ होगी। कृष्णकी सोलह सहस्र स्त्रियोंमे तुम वरिष्ठा होगी, इत्यादि। उसी समय कृष्णका शरीर श्रीसम्पन्न होगया। दुर्वासाने जिन जिन वस्तुओंको तोड़ फोड दिया था तथा जलाया था, सब नई हो गई। दुर्वासा उसी स्थानमें अन्तर्द्धान होगये। (१६० वाँ अध्याय) रुद्रने दुर्वासा नामक वीर्यवान् ब्राह्मण बनकर कृष्णके गृहमे बहुत काल तक निवास करके दुःसह व्यवहार किया था।

(मौषल पर्व, ७ वाँ अध्याय) प्रभासमें द्वारिकाके क्षत्रियोंके निवास होनेके पश्चात् द्वारिका वासियोंके अर्जुनके साथ जानेके लिये नगरसे बाहर होने पर समुद्रने समस्त द्वारिका नगरीको अपने जलमें डुबा दिया। (८ वाँ अध्याय) ५ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लड़-कर प्रभासमें मरगये थे (यदुवंशियोंके निवासकी कथा सोमनाथपट्टनकी प्राचीन कथामें देखिये)।

आदिब्रह्मपुराणे—(७ वाँ अध्याय) राजा आनर्तका रेवत नामक पुत्र आनर्त देशका राजा हुआ। कुशस्थली उसकी राजधानी हुई।

देवीभागवत—(७ वां स्कंध, ७ वाँ अध्याय) शर्यातीका पुत्र आनर्त और आनर्तका पुत्र रेवत था, जिसने समुद्रके भीतर कुशस्थली नामक पुरी बसाई वह आनर्त आदि देशोंका राज्य करने लगा। उसके १०० पुत्र हुए और रेवती नामकी एक कन्या हुई। (८ वाँ अध्याय) राजा रेवत अपनी पुत्रीके लिये वर पूछनेके अर्थ पुत्रीके साथ ब्रह्मलोकमें गये। उस समय ब्रह्माकी सभामें गन्धर्वगणोंका गान होरहा था। जब गन्धर्वोंका गाना समाप्त हुआ, तब रेवतने अपना अभिप्राय ब्रह्मासे कह सुनाया। ब्रह्माने कहा कि हे राजेन्द्र! जिन राजपुत्रोंको तुमने वर बनानेका निश्चय किया था, वे अपने पिता, पुत्र तथा बांधवोंके सहित मर गये। अब सत्ताईसवां द्वापर बीतता है। तुम्हारे वंशके सब लोग मृतक होगये। दैत्योंने तुम्हारी पुरीको लूट लिया। अब वहाँ मथुरापुरीके सोमवंशी राजा उग्रसेन राज्य करते है। श्रीकृष्णने सब यादवोंको द्वारिकामें बसाया है। वहाँके वसुदेवके पुत्र बलदेवजी तुम्हारी कन्याके योग्य वर हैं। ऐसा ब्रह्माका वचन सुन राजा रेवत द्वारिकामें आये और रेवती नामक अपनी कन्याको बलदेवजीको समर्पण करके बदरिकाश्रममें चले गये।

श्रीमद्भागवत—( दशम स्कन्ध, ५० वाँ अध्याय ) जब कृष्णने मथुराके राजा कंसको मारडाला, तब अस्ति और प्राप्ति नामक उसकी दोनों स्त्रियोंने अपने पिता मगध देशके राजा जरासन्धसे अपना दुःख जा सुनाया। जरासन्धने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुराको चारों ओरसे घेर लिया ( २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदलकी एक अक्षौहिणी होती है )। बडी लडाईके अन्तमें वह कृष्ण आदि यदुवंशियोंसे परास्त होकर मगध देशको लौट गया। इसी भांति जरासन्धने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर १७ बार मथुरापर आक्रमण किया; किन्तु परास्त होकर सत्रहवार उसको लौट जाना पड़ा। अठारहवीं बार जरासन्धके आक्रमण करनेसे पहिलेही नारदकी प्रेरणासे कालयवनने आकर मथुराको घेर लिया। उस समय कृष्णने विचार किया कि महाबलवान् कालयवन मथुराको घेर रहाहै और कल अथवा परसों जरासन्ध भी अवश्य आवेगा, इस लिये एक अगम किलेमें यादवोंको रखकर कालयवनका वध करना चाहिये। ऐसा विचार कर उन्होने समुद्रके बीचमे १२ योजनका किला बनाकर उसमें द्वारिका नामक आश्चर्य नगर बनाया और अपने योगके प्रभावसे मथुरा वासियोंको उस नगरमें पहुँचा दिया। उसके पश्चात् वह द्वारिकासे मथुरामें आकर कालयवनके सामने होकर मथुराके द्वारसे बाहर निकले। ( ५१ वाँ अध्याय ) कालयवन श्रीकृष्णको पकड़नेके लिये उनके पीछे दौड़ा, जो पर्वतकी गुफामें जाकर राजा मुचकुन्दकी दृष्टिसे जल गया। ( ५२ वां अध्याय ) कृष्णने मथुरामें आकर कालयवनकी सेनाको मारकर उसका सब धन द्वारिकामें भेज दिया। उसी समय जरासन्ध फिर २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरापर चढ़ आया। कृष्ण और बलदेव वहाँसे शीघ्र भागे। जरासन्ध उनके पीछे दौडने लगा। दोनों भाई दूर जाकर प्रवर्षण नामक पर्वतपर चढ़ गये। जरासंध उस पर्वतके चारों ओर आग लगा कर चला गया। कृष्ण और बलदेव पर्वतसे कूद कर द्वारिकामें चले गये ( जरासंध और कालयवनके भयसे कृष्णको द्वारिका बसानेकी कथा आदि ब्रह्मपुराणके ८७ वें अध्यायमें और विष्णुपुराण—पांचवे अंशके २३ वे अध्यायमें है )।

( ५४ वे अध्यायसे ५८ वें अध्याय तक ) कृष्णकी ८ पटरानी थीं,—( १ ) विदर्भ देशके कुण्डनपुरके राजा भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी, ( २ ) जाम्बवानकी पुत्री जाम्बवती, ( ३ ) द्वारिकाके सत्राजितकी पुत्री सत्यभामा, ( ४ ) सूर्यकी पुत्री कालिन्दी, ( ५ ) उज्जैनके रहनेवाले वसुदेवकी बहिन राजाधिदेवीकी पुत्री मित्रविन्दा, ( ६ ) अयोध्याके राजा नग्नजितकी कन्या सत्या, जिसको नाग्नजिती भी कहते हैं, ( ७ ) कैकय देशमें रहनेवाली वसुदेवकी बहिन श्रुतिकीर्तिकी पुत्री भद्रा और ( ८ ) मद्र देशके राजाकी पुत्री लक्ष्मणा ( देवीभागवत—चौथे स्कन्धके २४ वें अध्यायमें भी यही ८ पटरानी लिखी हुई हैं )।

मत्स्यपुराण—( ४७ वाँ अध्याय ) यादवोंकी संख्या ३ करोड़ थी; उनमेंसे ६० हजार देवताओंके अंशसे बड़े बलवान् थे।

विष्णुपुराण—( ५ वाँ अंश, ३८ वाँ अध्याय ) कृष्णके परम धाम जानेके पीछे समुद्रने रुक्मिणीके महलको छोड़कर सारी द्वारिका नगरीको अपने जलमें डुबा दिया। उस महलको समुद्र अबतक नहीं बोर सकता; क्यों कि वहाँ विहार करनेके लिये कृष्ण भगवान् नित्य आते हैं ( यह कथा श्रीमद्भागवत—एकादश स्कन्धके ३१ वें अध्यायमें ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—कृष्ण जन्म खण्डके १२९ वें अध्यायमें और आदिब्रह्मपुराणके ९९ वे अध्यायमें है )।

पद्मपुराण–( पातालखण्ड १७ वाँ अध्याय ) द्वारावतीकी गोमती नदीका जल साक्षात् ब्रह्म रूप है। वहाँके सब पाषाण और सब मनुष्य चक्रांकित हैं। वहाँ सब लोगोंके पालक त्रिविक्रम भगवान् सर्वदा निवास करते हैं। ( ७९ वाँ अध्याय ) जो मनुष्य द्वारावतीके गोमतीचक्रसे युक्त १२ शालग्राम शिलाका पूजन करता है, वह वैकुण्ठमें जाकर पूजित होता है। जिस स्थान पर द्वारावतीकी शिला रहती है, वह स्थान वैकुण्ठ भवनके तुल्य है; उस स्थानमें मरने वाले मनुष्य विष्णु लोकमें जाते हैं। ( ९५ वाँ अध्याय ) जो पुरुष ३ रात्रि द्वारिकामें निवास करके गोमतीके जलमें स्नान करता है वह धन्य है। ( स्वर्गखण्ड, ५७ वाँ अध्याय ) विराट् पुरुषके ७ धातु सातों पुरियां हैं।

( उत्तरखण्ड, २९ वाँ अध्याय ) मनुष्य गोपीचन्दनको अपने अङ्गमें लगानेसे ब्रह्महत्याके पापसे विमुक्त हो जाता है। गोपीचन्दन गङ्गाजलके समान पवित्र है, उसका तिलक लगानेसे चाण्डालभी शुद्ध हो जाता है। ( ६७ वाँ अध्याय ) जिस घरमें गोपीचन्दन रहता है, वह गृह विष्णुका मन्दिर है। जो मनुष्य गोपीचन्दनका तिलक लगाता है, वह विष्णुलोकमें निवास करता है। ब्राह्मण और गऊको मारने वालाभी गोपीचन्दन शरीरमें लगानेसे तत्का-ळही सब पापोंसे विमुक्त हो जाता है।

गरुडपुराण–( पूर्वार्द्ध ६६ वाँ अध्याय) जिस स्थानमें द्वारिका चक्र और शालग्राम शिला दोनों रहते हैं, वह स्थान मुक्तिदायक हो जाता है। द्वारिका तीर्थ सम्पूर्ण पापोंका नाश करने वाला और भुक्ति मुक्तिका देने वाला है। ( प्रेतकल्प, २७ वाँ अध्याय ) जिस स्थानमें शालग्राम शिला और द्वारिकाकी शिला अर्थात् गोमतीचक्र रहता है, वह स्थान निःसंदेह मुक्तिका देने वाला है। अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवंतिका और द्वारिका ये सातों पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

स्कन्दपुराण–( काशीखण्ड, १०४ वाँ अध्याय ) द्वारिकाके चारोंओर चारों वर्णोंके प्रवेश करनेके लिये द्वार बने हुए हैं; इसी कारणसे तत्त्ववेत्ताओंने उसको द्वारावती कहा है।

वाराहपुराण–( १४३ वाँ अध्याय ) द्वारिकामें समुद्रके पास पंचसर नामक तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे सब पाप छूट जाते हैं।

## बेटद्वारिका।

गोमतीद्वारिकासे लगभग २० मील पूर्वोत्तर कच्छकी खाड़ीमें बड़ोदाके महाराजके अधीन बेटद्वारिका नामक छोटा टापू है। गोमतीद्वारिकासे एक सड़क वड़वालागांव और रामड़ा होकर और दूसरी एक राह नागेश्वर गाँव और गोपीतालाब होकर बेटद्वारिकाकी खाडीके पास गई है। बहुतेरे यात्री रामड़ा होकर बेटद्वारिका जाते हैं और गोपी तालाब होकर गोमतीद्वारिकामें लौट आते हैं और बहुतेरे यात्री गोपीतालाबकी राहसे जाकर रामडाकी सडकसे गोमतीद्वारिका लौट आते हैं। गोमती द्वारिकासे १ मील पर रुक्मिणीजीका एक छोटा मन्दिर, ३½ मील पर टूटा हुआ शहरपनाहके भीतर वडवाला नामक एक वडा गाँव, जिसमें १ धर्मशाला, १ सदावर्त और अनेक धनी महाजन हैं, ५ मील पर १ वावली, ६½ मील पर १ गाँव और १ पोखरा, ७¾ मील पर १ पोखरा, ८⅛ मील पर १ गाँव, ९½ मील पर एक वावली और १४ मील पर

बेटद्वारिकाकी खाडीके पास टूटा हुआ शहरपनाहके भीतर रामड़ा नामक वडा गॉव है । गोमतीद्वारिकासे रामड़ा तक सड़कके वगलोंमे मीलके पत्थर लगे है । सडकके आस-पासकी भूमि उपजाऊ नही है, कांटेदार सीज और नागफेनी वहुत देख पड़ती हैं, जिनको वहांके लोग सुखाकरके चुल्हामें जलाते हैं । सडकके किनारोंपर जगह जगह पीपल, वट आदिके वृक्ष लगाये गये है, किन्तु उनमे कोई हरा भरा अथवा सीधा खड़ा नही है । वे सव एकही दिशामे झुके हुए है । जाने आनेके लिये किरायेकी वैलगाडी वहुत मिलती हैं । एक गाड़ीका एक तरफका महसूल लगभग एक रुपया लगता है । गोपीतालावकी राहसे गोमती-द्वारिकासे १० मीलपर नागेश्वर गॉव, १३ मीलपर गोपीतालाव और लगभग १५ मीलपर बेटद्वारिकाकी खाडी है ।

रामड़ामें शहरपनाहके वाहर सड़कके पास १ धर्मशाला और एक सदावर्त है । अनेक यात्री विशेष करके दूरके साधुलोग रामड़ामें जाकर शंख, चक्र आदिके छापसे तप्त मुद्रांकित होते है । वही द्वारिकाका छाप कहलाता है । यात्रियोंके लिये वहाँ छाप लेनेकी कोई विधि अथवा नियम नहीं है । रामडासे करीव ६ मील पूर्वोत्तर समुद्रके एक छोटे टापूके भीतर वेट-द्वारिका नामक गाँव है । खाड़ीमें ६ मील नावपर जाना होता है । नाव पालके सहारेसे चलती है । नावका महसूल प्रति आदमीका आध आना लगता है, किन्तु सरकारी महसूल, जो बड़ोदाके महाराजके ठीकेदारको देना होता है, ब्राह्मण और साधुओंको प्रति आदमी आध आना और अन्य लोगोंको प्रति मनुष्य दो आना देना पड़ता है । लौटनेके समय भी इतनाही नावका भाड़ा तथा सरकारी महसूल लगता है ।

बेटद्वारिकाका टापू दक्षिण–पश्चिमसे पूर्वोत्तर तक लगभग ७ मील लम्बा है, किन्तु सीधी लाइनमें नापनेसे उसकी लम्वाई ५ मीलसे अधिक नहीं है । उसके दक्षिण–पश्चिमका आधा भाग लगभग ६० फीट ऊँचा पत्थरीला है । पूर्वोत्तरके नोकको लोग हनूमान अन्त-रीप कहते हैं । क्योंकि उस अन्तरीपके पास उस टापूमें हनूमानका एक मन्दिर है । उस टापूमें खास करके मन्दिरोंके सम्वन्धी ब्राह्मण वसते है । वेटद्वारिकाके टापूमे किसी चीजकी पैदावार नहीं है, जगह जगह सीज तथा नागफेनी वहुत लगी हैं । बेटद्वारिका श्रीकृष्णका विहारस्थल माना जाता है । एक कहानी प्रसिद्ध है कि संवत् १२७२ ( सन् १२१५ ई० ) में डाकौरका बुढ़ान भक्त गोमतीद्वारिकाके रणछोडजीकी प्रतिमाको डाकौरमें लेगया । जव वहाँके पुजारी डाकौरमे गये, तव रणछोडजीने उनको स्वप्न दिया कि हम यहांही रहेंगे । गोमतीद्वारिकामें गोमतीगङ्गाका माहात्म्य होगा । लाडुआ गाँवके पास पृथ्वीके भीतर मेरी एक मूर्त्ति है, तुम लोग उसको निकालकर वेटद्वारिकामे स्थापित करो । पुजारियोंने भगवा-न्की आज्ञानुसार लाडुआ गाँवसे मूर्त्तिको लाकर बेटद्वारिकामे स्थापित किया । एक दूसरी मूर्त्ति गोमतीद्वारिकामें स्थापित की गई ( चौवीसवें अध्यायमे डाकौरकी कथामें देखिये ) ।

टापूके उत्तरके किनारेके पास वेटद्वारिका नामक एक गाँव है, जिसमे यात्रियोंके जरूरी कामकी सव वस्तु मिलती है; कई एक धर्मशालायें वनी है, कई सदावर्त लगे हैं और रणछोड़सागर, रत्न तालाव, कचौरी तालाव, शंखतालाव इत्यादि जलाशय और वहुतसे देव-मन्दिर वने हुए हैं । कृष्णभगवान्के महलके मन्दिरोंके अतिरिक्त, जिनका नकशा यहाँ वना है;—

# बेटद्वारिकाका मंदिर।

उत्तर

भंडार

साक्षी गोपाल

भंडार

गोवर्धन जी

रुक्मिणी

भंडार

लक्ष्मीनारायण

जाम्बवंती

सत्यभामा

भंडार

भंडार

फाटक.

फाटक.

फीटका स्केल।



उस टापूमें मुरलीमनोहरका मन्दिर, हनूमानटेकरी, देवीका मन्दिर, नवग्रहका मन्दिर, नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर, धिङ्गणेश्वर, महादेवका मन्दिर, पञ्चेश्वर महादेवका मन्दिर, कचौरी तालावके पास रामचन्द्रका मन्दिर और शंख तालावके किनारेपर शंखनारायणका मन्दिर है। जलाशयोंमें रणछोडसागर, जो महलके मन्दिर और शंखोद्धारके वीचमें है, प्रधान है, उसके चारों वगलोंमें दीवार वनी है और जगह जगह घाट वने हैं। वेटद्वारिकामें हाजीपीरका एक रोजा है। वेटद्वारिकाकी छोटी परिक्रमा ६ मीलकी है। कुछ लोग जलमार्गसे नाव द्वारा टापूके चारोंओर घूमकर टापूकी परिक्रमा करते हैं।

सन् १८५७ के वलवेके अन्त सन् १८५९ मे अङ्गरेजी गवर्नमेंटने वाघेरोसे वेटद्वारिकाका टापू छीन लिया और उसका किला और वहांके प्रधान मन्दिरोंको उड़ा दिया। सन् १८६१ में वड़ोदाके महाराजने टूटे हुए मन्दिरोंको वनवाकर मन्दिरोंकी देव मूर्त्तियोंको, जो मन्दिर उड़ानेके पहिलेसे निकालकर रक्खी गई थीं, विधिपूर्वक संस्कार करवा करके पुनः स्थापित करवाया। तबसे धार्मिक भक्तोंने मन्दिरोंकी वडी उन्नति की है तथा उनके ऐश्वर्यको बहुत बढ़ाया है।

कृष्णके महल—वेटद्वारिकामे एक वड़े घेरेके भीतर दो मञ्जिले तीन मंजिले ५ महल बने हैं, जिनका नकशा यहाँ वनाया गया है। उत्तरके वड़े फाटकसे होकर भीतरके पश्चिमवाले छोटे फाटकके पास जाना होता है। वहाँ वड़ोदाके महाराजका कर्मचारी अथवा ठीकेदार प्रति यात्रीसे दो रुपये 'कर' लेता है। विना 'कर' दिये हुए कोई उस फाटकके भीतर जाने नहीं पाता है। भीतर राजाओंके महलकी तरहके अलग अलग ५ महल बने है। गोमतीद्वारिकाके समान वहाँ भी मन्दिरोंके देवताओंके चरण छूनेका 'कर' पुजारियोंको देना होता है। जो यात्री नियमित कर नहीं देता वह वाहरसे देवताओंका दर्शन करता है। जो यात्री अपनी ओरसे वहाँके देवताओंको स्नान करवाता है, उसको ७ रुपया राजाको देना पड़ता है और महापूजाका 'कर' अलग लगता है।

भीतरके फाटकसे सीधे पूर्व जाने पर दहिने ओर श्रीकृष्ण भगवान्‌के खास महलका द्वार मिलता है। उसका घेरा पूर्वसे पश्चिमको लगभग ९० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको लगभग ६० फीट चौड़ा है। घेरेके पूर्व वगलमें उत्तर प्रद्युम्नजीका मन्दिर, उससे दक्षिण रणछोडजीका मन्दिर और उससे दक्षिण टीकम अर्थात् त्रिविक्रमजीका मन्दिर है। इन मन्दिरोंके आगे दोहरी दालान हैं। घेरेके पश्चिम वगलवें उत्तर पुरुपोत्तमजीका मन्दिर, उससे दक्षिण देवकी माताका मन्दिर और उससे दक्षिण माधवजीका मन्दिर है। तीनों मन्दिरोंके आगे दालान है। घेरेके दक्षिण वगलमें पश्चिम ओर अम्बाजीका और उससे पूर्व गरुडका मन्दिर और मध्यमें छोटा आँगन है। प्रद्युम्नजी, रणछोडजी, टीकमजी और देवकी माताके मन्दिरोंके किवाड़ों और सिंहासनोंमें चाँदीके पत्तर जडे हुए है। मन्दिरोंके छतसे झाड और कुण्डिये लटके हैं। गोमती द्वारिकाके रणछोडजी, टीकमजी, प्रद्युम्नजी, देवकी माता, माधवजी और पुरुपोत्तमजीकी मूर्त्तियोंके समान वहाँकी मूर्त्तियोंकी झाँकी भी मनोरम है। अम्बा देवीकी मार्वुलकी प्रतिमा है। मन्दिरो और दालानोमे श्वेत और नीले मार्वुलका फर्श है। मन्दिरके भीतरसे ऊपर दो मंजिलेको सीढ़ियां गई हैं। वहाँ भगवान्‌का सेजमहल

है, झूला लगा है, चोपड खेलनेका स्थान बना है और कमरेके चारों ओरकी दीवारमें बड़े बडे आइने लगे हुए है । वहॉके मन्दिरों, कमरो तथा दालानोंकी सजावट देखने लायक है ।

रणछोड़जी अर्थात् कृष्णके महलके दक्षिण सत्यभामा और जाम्बवतीका महल; पूर्व साक्षीगोपालका मन्दिर और उत्तर रुक्मिणी तथा राधाका महल है । जाम्बवतीके महलमें जाम्बवतीके मन्दिरके पूर्व लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और रुक्मिणीके महलमें रुक्मिणीके मन्दिरसे पूर्व गोवर्द्धननाथका मन्दिर है । सब मन्दिरोंके किवाडोंमें चॉदीके पत्तर लगे हैं, छतोमे झाड लटके है, मूर्त्तियोंकी झॉंकी मनोरम है, मन्दिरोंके आगे सुन्दर जगमोहन बने हैं और मन्दिरो तथा जगमोहनोंमें मार्बुलका फर्श है । सत्यभामा, जाम्बवती, रुक्मिणी और राधा इन चारोंके भण्डार, कारखाने तथा भण्डारके मालिक अलग अलग है । चारों महलोंके भण्डारोंसे भाति भांतिकी भोगकी सामग्री नियमित समयोपर बनाकर रणछोडजीके मन्दिरमे भेजी जाती है । वहाँ दिन रातमे १३ वार भोग लगता है । राधाजीके महलसे सत्यभामा, जाम्बवती और रुक्मिणीके मन्दिरोमे भी भोग लगानेकी सामग्री तैयार करके भेजी जाती है । बेटद्वारिकामे गोमतीद्वारिकासे अधिक भोगरागका प्रबंध रहता है । अनेक यात्री अपने खर्चसे भोग लगवानेके लिये भण्डारमे रुपया देते हैं । नित्यके नियमित भोगके खर्चके लिये बडौदाके महाराज और काठियावाडके ठाकुर, सेठ इत्यादि धार्मिक लोग रुपया देते हैं । भोग लगी हुई सामग्री मोल मिल सकती है । दिन रातमें ९ वार आरती लगती है । नित्य मंदिरोके पट १२ बजे दिनमें बन्द होजाते है और ४ बजे खुलकर फिर रातमें ९ बजेके बाद बन्द होते है ।

शंखोद्धार—कृष्णके महलसे लगभग $1\frac{1}{2}$ मील दूर बेटद्वारिकाके टापूके भीतर शंखोद्धार नामक तीर्थमे शख तालाब नामक पोखरा और शंखनारायणका सुन्दर मन्दिर है । मार्गमे रणछोड़सागर मिलता है । मन्दिर और जगमोहनमे श्वेत और नीले मार्बुलका फर्श और सिंहासन तथा मन्दिरके किवाडोमे चॉदीके पत्तर लगे है । पण्डे लोग कहते हैं कि कृष्ण भगवान्ने इस स्थान पर शंखासुरका उद्धार किया था इसी लिये इसका नाम शंखोद्धार तीर्थ हुआ । यात्री लोग शंख तालाबमें स्नान करके शंखनारायणका दर्शन करते हैं ।

गोपीतालाब—जो यात्री रामडाकी सड़कसे बेटद्वारिका जाता है वह गोपीतालाब होकर गोमतीद्वारिको लौट आता है । बेटद्वारिकामें नावपर सवार हो गोपीतालाबकी ओर खाड़ीके किनारेपर नावसे उतरना होता है । खाडीसे लगभग २ मील पश्चिम-दक्षिण गोमतीद्वारिकाके मार्गमें गोमती द्वारिकासे १३ मील पूर्वोत्तर गोपीतालाब नामक कच्चा सरोवर है । मार्गमें पीले रङ्गकी भूमि मिलती है । गोपीतालाबके भीतरकी पीत रङ्गकी मिट्टी पवित्र गोपीचन्दन है । बहुतेरे यात्री गोपीतालावसे गोपीचन्दन निकालकर और बहुतेरे लोग गोपीचन्दनके पांसे तथा गोले, जो वहॉके लोग बनाकर बेंचते हैं, मोल लेकर अपने घर ले जाते हैं । उस तालाबमें स्नान करनेका "कर" एक आना लगता है । गोपीतालाबके पास एक छोटी बस्ती, २ धर्मशाला, छोटी धर्मशालाके पास गोपीनाथका मन्दिर, वल्लभ संप्रदाय वालोंकी एक मठ और २ सदावर्त्त हैं । वहॉ मयूर पक्षी बहुत रहते हैं । गोपीचन्दनके माहात्म्यकी कथा द्वारिकाकी संक्षिप्त कथामें लिखी हुई है ।

नागेश्वर—गोपीतालावसे ३ मील और बेटद्वारिकाकी खाड़ीसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम और गोमती द्वारिकासे १० मील पूर्वोत्तर नागेश्वर नामक वस्तीके पास नागेश्वर नामक शिवका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके भीतर शिवलिङ्गके पास पार्वतीकी मूर्ति और बाहर नन्दी बैल है। मन्दिर बहुत छोटा है; उसमें कोई पुजारीभी नहीं रहता। वस्तीके पास मयूर बहुत रहते हैं। अनेक लोग कहते हैं कि शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंके नागेश शिव-लिङ्ग यहीं हैं, किन्तु बहुत लोग नागेश अर्थात् अवढ़ा नागनाथको १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमें मानते है, जिनका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके चौथे खण्डके तीसरे अध्यायमें लिखा गया है। रास्तेमे दो तीन बस्तियां मिलती है; जिनके चारोओर शहर पनाहके स्थान पर कांटेदार लकड़ीके घेरान बने है। नागेश्वरसे दक्षिण-पश्चिम ४ मील पर एक बस्ती, ९ मील पर एक बावली और १० मील पर ( खाड़ीसे १५ मील ) गोमती द्वारिका है।

# सत्ताईसवां अध्याय।



## ( काठियावाड़में ) विरावल और सोमनाथपट्टन।

### विरावल।

मैं द्वारिकाके पास आगबोटमें सवार हो विरावल बंदर में उतरा। द्वारिकासे १५० मील ( मङ्गरोलके बन्दरगाहसे २० मील ) दक्षिण पूर्व और बम्बई शहरसे १९२ मील पश्चिमोत्तर अरबके समुद्रकी एक खाड़ीके पश्चिमी किनारेपर विरावल बन्दरगाह है। लगभग १४ घण्टेमें आगबोट द्वारिकासे पोरबन्दरें और मङ्गरोल बन्दरगाह होकर विरावलमें पहुँचते हैं। एक आदमीके दूसरे दर्जेका महसूल २ रुपया और तीसरे दर्जेका १ रुपया लगता है। द्वारिकासे बम्बईका महसूल इससे दूना है। द्वारिकाके कोई कोई यात्री पोरबन्दरमें, कोई विरावलमें और बहुतसे यात्री बम्बईमें लौट कर आगबोटसे उतरते है और रेलगाड़ीमें सवार होते हैं। बम्बई हातेके काठियावाडमें जूनागाढ़ राज्यके अन्तरगत ( २० अंश, ५३ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें ) सोमनाथके मन्दिरसे २½ मील पश्चिमोत्तर विरावल एक सुन्दर कसबा तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है, जिसको उस देशके अधिक लोग विरोवल पट्टन कहते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विरावल कसबेमे १५३३९ मनुष्य थे अर्थात् ७२४५ मुसलमान, ६९४९ हिन्दू, ११२४ जैन, १५ कृस्तान और ६ पारसी।

विरावल कसबा पक्की दीवारसे घेरा हुआ है। बन्दरगाहके लाइट हाउससे ½ मील दूर कसबेकी दीवारके पासहीं पश्चिम रेलवे स्टेशन है। कसबेके उत्तर देवक नदी बहती है। एक धर्मशाला रेलवे स्टेशनके पास और दूसरी धर्मशाला कसबेकी दीवारोंके भीतर है। कसबेमें दो तीन सदावर्त लगे हैं। कसबेके अधिक मकान पत्थरके मुंडेरेदार हैं। कसबेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके पास जालेश्वर महादेवका मन्दिर है। हालमें विरावल बन्दरगाहकी बड़ी उन्नति हुई है। मसकट, करांची और बम्बईके साथ बड़ी तिजारत होती है।

विरावलसे २० मील पश्चिमोत्तर मङ्गरोल एक कसबा तथा बन्दरगाह है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १३००५ मनुष्य थे। उसमें जूनागढ़को कर देनेवाला एक नव्वाब रहता है और एक उत्तम मसाजिद है।

## सोमनाथपट्टन।

विरावलसे ३½ मील दक्षिण-पूर्व बम्बई हातेके काठियावाड़ प्रायद्वीपके दक्षिण किनारेपर (२२ अंश, ४ कला, उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें) खाड़ीके पूर्वी किनारेके पास जूनागढ़के राज्यमें सोमनाथपट्टन एक कसबा है, जिसको देवपट्टन; प्रभासपट्टन, और पट्टनसोमनाथ भी कहते हैं। उसका नाम महाभारत तथा पुराणोंमें प्रभास लिखा है। विरावल तक रेलगाड़ी और आगबोट जाते हैं (विरावलमें देखिये)। विरावलमें सोमनाथपट्टन जानेके लिये किरायेकी घोडागाडी तथा बैलगाड़ी मिलती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सोमनाथपट्टन कसबेमें ६६४४ मनुष्य थे। इनमे अधिक मुसलमान हैं और बहुतसे ब्राह्मण पण्डे रहते हैं। बहुतसे धनी तिजारती लोग अब विरावलमें चले गये है।

सोमनाथपट्टन कसबेके चारोंओर पत्थरकी पुरानी दीवार है, जिनमें अनेक फाटक बने हुए है। पश्चिमके जूनागढ़ नामक फाटकसे कसबेमें जाना होता है। पूर्ववाले नानाफाटकके बाहर मुडेरादार एक बडी धर्मशाला है, जिसमें यात्री लोग ७ दिन तक रह सकते हैं। सोमनाथपट्टनमें नित्य यात्री जाते हैं। कसबेकी दुकानोंपर उनकी आवश्यकीय सब वस्तु मिलती है। कसबेमें ताला बहुत तैयार होते है, इस कामके लिये वह मशहूर है। सोमनाथपट्टन एक महालका सदर स्थान है। उसमे महालकी कचहरियाँ; चन्द कोठीवाल और तिजारती लोगोंके मकान, एक अस्पताल, एक स्कूल, कई एक मसाजिद, कई एक तालाब और बहुतसे देवमन्दिर हैं। वहाँके मुसलमान प्रबल हैं, वे बार बार वहाँके ब्राह्मणोंसे झगड़ते हैं।

प्राचीत्रिवेणी—"नानाफाटक" के दक्षिणके समुद्रका नाम अग्निकुण्ड है। यात्री लोग प्रथम अग्निकुण्डमें स्नान करके प्राचीत्रिवेणीमें स्नान करते हैं। नानाफाटकसे लगभग ¾ मील पूर्व प्राचीत्रिवेणी है। अग्निकुण्ड और प्राचीत्रिवेणीके बीचमें एक जगह ब्रह्मकुण्ड नामक एक छोटी बावली है, जिसके पास ब्रह्मकमण्डल नामक कूप और ब्रह्मेश्वर शिव लिङ्ग हैं और दूसरी जगह आदि प्रभास और जल प्रभास नामक दो कुण्ड है। कसबेके पूर्वके तीन नदियोंके संगमको प्राचीत्रिवेणी कहते हैं। वहाँ पूर्वोत्तरसे हिरण्यानदी, पूर्वसे सरस्वतीनदी और दक्षिण-पूर्वसे कपिला नदी आई है। कपिला सरस्वतीमें, सरस्वती हिरण्यामे और हिरण्या दक्षिण जा करके समुद्रमें मिल गई है। लोग कहते हैं कि इसी सङ्गमके पास श्रीकृष्णका शरीर जलाया गया था। प्राचीत्रिवेणीके पास त्रिवेणी माता, महाकालेश्वर आदि देवता हैं।

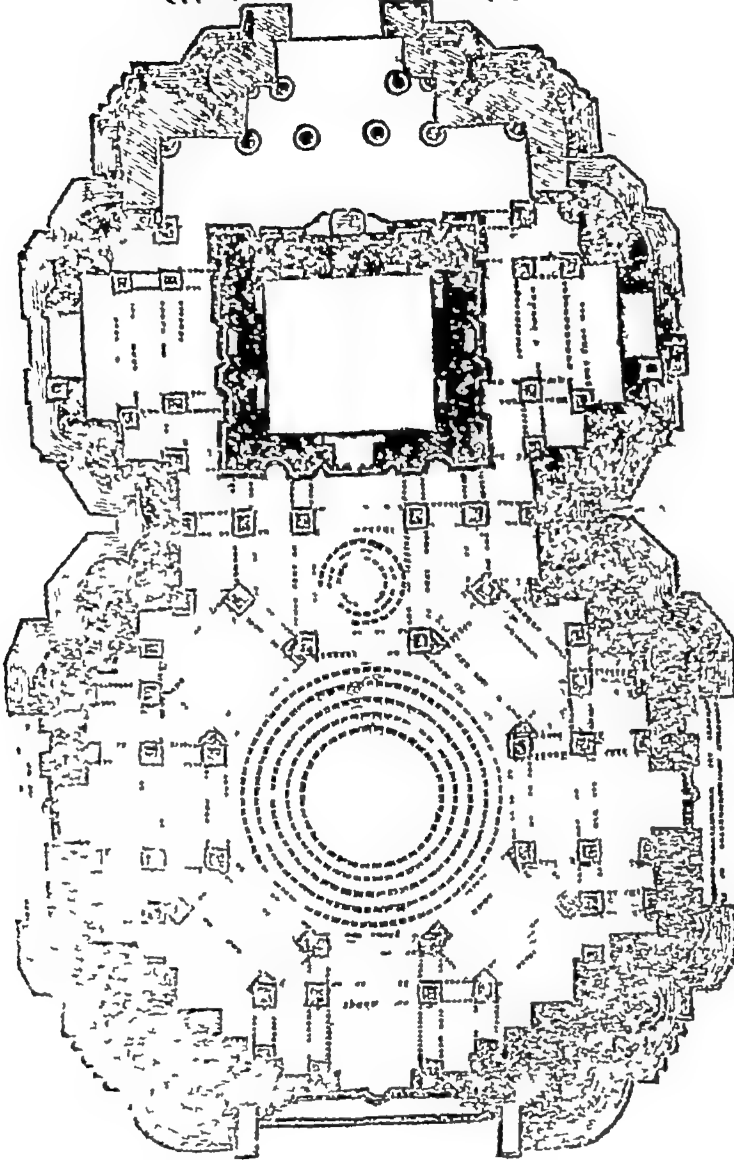
पूर्वके स्थान और देवता—प्राचीत्रिवेणीसे पूर्वोत्तर इस क्रमसे स्थान और देवता मिलते हैं,—संगमसे लगभग २०० गज उत्तर सूर्यनारायणका पुराना मन्दिर है, जिसके आधे भागको महमूदने तोड़ दिया था। उस मन्दिरसे थोड़े आगे जानेपर एक भूखेवरमें हिङ्गलाजमाताकी मूर्तिका दर्शन होता है। उससे आगे एक मन्दिरमें सिद्धनाथ महादेव (खण्डित

शिव लिङ्ग ) हैं, जिसके समीप बलदेवजीका मन्दिर और महाप्रभुकी बैठक अर्थात् कृष्णका मन्दिर है। उससे आगे हिरण्यानदीके दहिने किनारेपर एक पतला वटवृक्ष है। उस जगह एक बडा वटवृक्ष था, जिसको वहाँके मुसलमानोंने कई वार काट दिया, उसीसे यह वृक्ष निकला है। वटवृक्षके पास एक छोटी कबरगाह और कोठरीके समान दो छोटे मन्दिर है। मन्दिरोंमे अब कोई देवता नहीं है। उस स्थानके लिये हिन्दुओ और मुसलमानोंमें झगडा चला आता है। मुकदमा चल रहा है। अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे इसके विचार करनेके लिये कमीशन बैठा है। वहाँके लोग कहते है कि वलरामजी इसी स्थानसे परमधामको गये थे। उस स्थानके पास १ रामचन्द्रका मन्दिर और १ कृष्णका मन्दिर है। उस स्थानसे आगे जाने पर भीमेश्वर महादेवका मन्दिर और मन्दिरसे आगे हिरण्यानदीके तीरपर यादवस्थल नामक स्थान मिलता है। वहाँ नदीके तीरपर 'पत्तलो' के समान लम्बे पत्तेवाला एक प्रकारका घास, जिसके पत्ते पत्तलोंसे अधिक चौडे होते है, जमा हुआ है। लोग कहते है कि इसीका नाम महाभारत तथा पुराणोंमें एरका लिखा है, जिसके पत्ते यदुवंशियोके नाशके समय अमोघ शस्त्र होगये थे। लोग उस घासको पटेर तथा पान कहते हैं।

यादवस्थलसे कसबेकी ओर लौटने पर मार्गमे नृसिंहजीका मन्दिर और नानाफाटकके बाहर धर्मशालासे उत्तर ओर गौरीकुण्ड नामक सरोवर, जिसके पास बहुतसे पुराने शिव-लिङ्ग हैं, मिलता है।

इनके अलावे कसबेमें शहरपनाहके भीतर गणेशजी, महाकालीजी, भद्रकालीजी, दैत्यसूदन आदि देवताओंके बहुतसे मन्दिर है। रामपुष्कर नामक एक तालाब है, जिसके लिये मुसलमान हिन्दुओंसे झगड़ा करते है।

सोमनाथका नया मन्दिर–नानाफाटकसे लगभग २०० गज पश्चिमोत्तर कसबेके मध्य भागमे सोमनाथका नया मन्दिर है, जिसको इन्दौरकी महारानी अहल्याबाईने, जिनका राज्य सन् १७६५ से सन् १७९५ ई० तक था, बनवाया था। वह मन्दिर साधारण कदका शिखरदार है। उसके आगे अर्थात् पूर्व बगलमें सुन्दर जगमोहन बना हुआ है। मन्दिरमें एक शिवलिङ्ग और उसके नीचे १३ फीट लम्बे और इतनेही चौडे तहखानेमें सोमनाथ शिव लिङ्ग है। मन्दिरके दक्षिण बगलमे तहखानेमे जानेके लिये २२ सीढियाँ बनी हुई है। तहखानेमे १६ स्तम्भ लगे है, उसके मध्यमे बडे अर्घेपर बडे आकारका सोमनाथ शिवलिङ्ग, पश्चिम बगलमे पार्वतीजी, उत्तर बगलमे लक्ष्मीजी गङ्गाजी सरस्वतीजी और पूर्व बगलमे नन्दी है। वहाँ दिन रात दीप जलते है। मन्दिरके चारो बगलोंमे ऑगनके बाद दीवार है। ऑगनके पूर्वोत्तरके कोनेके पास गणेशजीका छोटा मन्दिर और पूर्व तथा उत्तर बगलमें दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके बाहर अघोरेश्वर शिवलिङ्ग है। सोमनाथके मन्दिरके ऑगनके पूर्व एक बडा ऑगन है। उसके चारो बगलो पर दो मंजिले मकान और दालान, पूर्व बगलमे सदर फाटक और दक्षिण बगलमे एक खिडकी है। बडे ऑगनके दक्षिण एक छोटा ऑगन है। सोमनाथके मन्दिरमे चन्द पुजारी रहते है। वहां नित्य यात्री जाते हैं।




सोमनाथका पुराना मन्दिर—कसवेके पश्चिम समुद्रके तीरपर सोमनाथका पुराना मन्दिर है, जिसको सन १०२४ में गजनीके महमूदने लूटा था। वह मन्दिर मुसलमानोंके अधिकारमें हीन दशामें विद्यमान है। जूनागढ़के नवाबके मुसलमान कर्मचारीके पास मन्दिर देखनेके लिये कुञ्जी मिलती है, तथा पेशगाहके दरवाजोंके जङ्गलोंसे मन्दिरके भीतरके हिस्से देख पड़ते हैं। तबाह हालतमें भी मन्दिरकी बनावट देखने योग्य है। गिरनारके नेमिनाथके मन्दिरके समान यह हातेसे घेरा हुआ था, अब केवल मन्दिर, जो काले पत्थरका है खड़ा है। उसके माचुलका काम अब नहीं है। मन्दिरके पेशगाह अर्थात् जगमोहनमें ३ ओर ३ दरवाजे हैं। उनके मध्यमें अठपहले स्थानकी आठों दिशाओंमें ओसारे हैं, ऊपर मध्यमें एक बड़ा और उसके पास ४ छोटे गुम्बज हैं। मध्यके गुम्बजके नीचे ८ स्तम्भ और ८ महराबी हैं। पेशगाहके पश्चिम सोमनाथका निज मन्दिर है, जिसमें बड़े आकारका सोमनाथ शिव-

लिङ्ग था। मन्दिर भीतर चौकोना है। उसके बगलोंमें बाहरकी दीवारके भीतर विचित्र ढंगसे स्तम्भ लगे हैं। मन्दिरके आगे पेशगाहके पश्चिमके भागमें नन्दीके रहनेका स्थान है। मन्दिर और पशगाहकी छत एकही है। उसपर चढ़नेके लिये बाहरसे सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर और उसके आगेका एक गुम्बज गिर गया है। ऊपरसे मन्दिरके भीतरका भाग देख पड़ता है। मन्दिरके पीछेकी टूटी हुई दीवार पत्थरके ढोकोंसे बना दी गई है। मन्दिर और पेशगाहकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक १२० फीट और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक ७५ फीट तथा उसका घेरा ३३० फीट है। पेशगाहके तीनों दरवाजोंमें काठके जङ्गले लगा दिये गये हैं। ताला बन्द रहता है।

मन्दिरसे पश्चिम उसके घेरेके पश्चिमकी सीमाके पास एक पुराना ओसारा है, जिसको मुसलमानोंने निमाजगाह बनाया है। मन्दिरसे पूर्व बस्तीके भीतर दो जगह हनुमानजीकी २ बहुत पुरानी मूर्त्तियाँ हैं। पण्डे कहते हैं कि जब महमूदने मन्दिरको लूटा, उससे पहिलेकी ये मूर्त्तियाँ हैं।

बाणतीर्थ—सोमनाथपट्टन और विरावल कसबेके मध्यमें सोमनाथपट्टनसे लगभग १ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके तीरपर बाणतीर्थ है। वहाँके लोग कहते हैं कि जरा नामक व्याधने इसी स्थानसे श्रीकृष्णको बाण मारा था, इसी कारणसे इस स्थानका नाम बाणतीर्थ हुआ। बैशाखकी अक्षय तृतीयाको वहाँ स्नानका मेला होता है। वहाँ समुद्रके तीरपर शशिपोषण महादेवका पुराना विशाल मन्दिर है।

बाणतीर्थके पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रभागातीर्थ है। वहाँ बालूमें बिना अर्धेके कपिलेश्वर शिवलिंग हैं।

भालकतीर्थ—बाणतीर्थसे १½ मील उत्तर और भालपुर बस्तीसे पश्चिम भालकतीर्थ है। वहाँ भालकुण्ड नामक एक पक्का तालाब है। उसके पास पद्मकुण्ड नामक छोटा सरोवर और एक पीपलके वृक्षके पास भालेश्वर शिवलिङ्ग हैं। वहाँके पण्डे कहते हैं कि इसी स्थानपर कृष्णको जरा नामक व्याधका बाण लगा। उन्होंने पद्मकुण्डके जलमें अपने रुधिरको धोया था। इसी स्थानसे वह परम धामको गये। इस स्थान पर कृष्णभगवान्‌को भाल अर्थात् बाणका अग्र भाग लगा, इसी लिये इस स्थानको लोग भालतीर्थ कहते हैं। यात्री लोग भालकुण्डमें स्नान और पद्मकुण्डमे मार्जन तथा कोई कोई दोनोंमें मार्जन करते हैं।

इतिहास—सन् १०२४ में गजनीके महमूदने सोमनाथका मन्दिर लूटा था, उससे पहिलेका वहाँका ठीक इतिहास मालुम नहीं होता है। कहा जाता है कि ८ वी सदीमें काठियावाडका वह भाग चालुक्य वंशके राजाके अधीनके राजपूतोंके अधिकारमें था।

सन् १०२४ में महमूदने सोमनाथपर आक्रमण किया। उसने तीन दिनकी सख्त रुकावटके बाद शहर और मन्दिरको लेलिया। ऐसा प्रसिद्ध है कि मन्दिरके खर्चके लिये २००० गाँव थे। वहाँ ३०० बाजा वाले नियत थे, ५०० नाचने वाली लड़कियां मुकरर थीं, हजामत बनानेके लिये ३०० नाई रहते थे। मन्दिरके ५६ खम्भोंमें उत्तम जड़ावका काम था। सोनेकी मोटी जंजीरमे घण्टा लटकता था। महमूद मन्दिरसे करोड़ोंकी संपत्ति तथा सोमनाथका प्रसिद्ध फाटक गजनीको लेगया। अङ्गरेज महाराजने सन् १८४२ में

काबुलके जीतनेके पश्चात् सोमनाथके फाटकको लाकर आगरेके किलेमें रक्खा। महमूद सोमनाथपट्टनमें एक मुसलमान गवर्नर रख गया, किन्तु पीछे वाजा जातिके राजपूतोंने सोमनाथपट्टनको अपने अधिकारमें कर लिया, वह तीर्थ स्थान बना। सोमनाथपट्टनके एक मन्दिरके शिलालेखसे जान पडा है कि गार्गेय गोत्रके वाल्मीकराशिके पुत्र त्रिपुरांतकने देवपत्तन अर्थात् सोमनाथपट्टनमें आकर सोमेश्वरके मन्दिरके उत्तर ५ मन्दिर बनवाये और संवत १३४३ ( सन् १२८७ ईस्वी ) के माघ सुदी पञ्चमाको उनमें माल्हणेश्वर, गण्ड-बृहस्पति महादेव, उमेश्वर, त्रिपुरांतक और रामेश्वर महादेव तथा भैरव, गोरख, हनूमान, सरस्वती और सिद्धिविनायकको स्थापित किया, उसने गण्डबृहस्पति महादेव तथा चालुक्य वंशके राजा सारङ्गदेवके बनाये हुए सारङ्ग तालावके पास एक बावली बनवाई। लगभग सन् १३०० में अलमखां सिर्कीने फिर सोमनाथपट्टनको उजाड किया और समुद्रके किनारेके नागर राज्यको जीता। उस समय सोमनाथपट्टनमें मुसलमानोंका अधिकार हुआ। १४ वीं सदीके आरम्भ महम्मद तुगलकके राज्यके समयसे वहाँ बराबर मुसलमान गवर्नर मुकरर होते आये। १७ वीं सदीके अन्त तक सोमनाथके मन्दिरमें पूजा होती थी, किन्तु पीछे औरङ्गजेबने मन्दिरको अच्छी तरहसे बरबाद करदिया। मुग-लोंके राज्य निर्बल होनेके समय सोमनाथपट्टनपर कभी मंगरोलके शेष और पोरबन्दरके राणाका अधिकार था। पीछे जूनागढ़के नव्वाबने उसको जीता, तबसे वह उन्हीके वंशजोंके अधीन है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शंखस्मृति—( १४ वाँ अध्याय ) जो कुछ प्रभासमे पितरोंके निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

महाभारत—( वनपर्व ८२ वाँ अध्याय )–प्रभासतीर्थमें भगवान् अग्नि आपही निवास करते हैं। जो मनुष्य वहाँ स्नान करके ३ दिन वास करता है, वह अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है। सरस्वती और समुद्रके सङ्गमपर जानेसे सहस्र गोदानका फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहाँ समुद्रमें स्नान करके तीन दिन पितर और देवताओंके तर्पण करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है। ( ८८ वाँ अध्याय ) सुराष्ट्र देशमें समुद्रके निकट देवताओका प्रभास नामक तीर्थ है। उसीके पास पिण्डारकतीर्थमें अनेक महर्षि निवास करते है। उसी ओर शीघ्र सिद्धि देनेवाला उजयंत पर्वत है।

( शल्यपर्व, ३५ वाँ अध्याय ) चन्द्रमा प्रभास क्षेत्रमें जा करके "राजयक्ष्मा" रोगसे छूटकर फिर तेजको प्राप्त हुआ। कथा ऐसी है कि दक्ष प्रजापतिने अपनी २७ कन्याओंका व्याह चन्द्रमाके साथ कर दिया। उनमें रोहिणी अधिक रूपवती थी, इस लिये चन्द्रमा उसीसे अधिक प्रेम करता था। ऐसा देखकर चन्द्रमाकी सब स्त्रियोंने अपने पिता दक्षप्रजा-पतिसे जाकर कहा कि चन्द्रमा सदा रोहणीके गृहमें रहते हैं। दक्षने दो बार चन्द्रमाको समझा बुझाकर अपनी पुत्रियोंको उनके घर भेजा, परन्तु चन्द्रमा फिर भी रोहिणीसे वैसाही प्रेम करने लगा। जब तीसरी बार वे स्त्रियाँ रुष्ट होकर अपने पिताके घर गई, तब दक्षप्रजा-पतिने क्रोध करके राजयक्ष्मा रोगको चन्द्रमाके पास भेज दिया। उस रोगके हृदयमें घुसनेसे चन्द्रमा दिन दिन क्षीण होने लगा। उन्होंने इस रोगके छूटनेके लिये अनेक यज्ञादि यत्न भी किये, परन्तु वह न छूटा। जब सब देवताओंने दक्षप्रजापतिके समीप जाकर चन्द्रमाके

आरोग्य होनेकी प्रार्थना की, तब दक्षप्रजापति बोले कि हमारा शाप वृथा नहीं होगा, परन्तु हम उपाय बतला देते है, यदि चन्द्रमा सरस्वती तीर्थमें स्नान करे तो उसका तेज फिर वैसाही होजायगा, किन्तु वह आधे मास तक क्षीण हुआ करेगा और आधे महीने तक बढ़ा करेगा। यह पश्चिम समुद्रके तटपर जाकर सरस्वती और समुद्रके सङ्गममे शिवकी पूजा करे, तब फिर इसका तज बढ़ जायगा। ऋषियोकी आज्ञासे चन्द्रमा अमावास्या तिथिको सरस्वती तीर्थमें पहुँचा। उस समयस उसका तेज बढ़ने लगा और उसकी किरणें शीतल होगई। उस दिनसे चन्द्रमा सदा अमावास्याको प्रभास तीर्थमें स्नान करता है। इसी तीर्थमें चन्द्रमाकी प्रभा बढी, इसलिये इसको लोग प्रभास कहने लगे। ( शान्ति पर्वके ३४२ वें अध्यायमें भी यह कथा है )।

( स्त्री पर्व, २५ वॉ अध्याय ) धृतराष्ट्रकी स्त्री गान्धारीने कहा कि हे कृष्ण ! तुमने सामर्थ्य रहनेपर भी कौरव और पांडवोको युद्ध करनेसे निवारण नहीं किया, इस लिये मेरे शापसे तुम भी अपनी जातिका नाश करोगे। तुम अबसे छत्तीसवे वर्ष अपने पुत्र, पौत्र, जाति और बांधवोंसे हीन होकर अनाथके समान वनमे दुष्ट उपायसे मारे जावोगे। जैसे कुरु-कुलकी स्त्रियाँ रोती फिरती है, ऐसेही तुम्हारि स्त्रियाँ पुत्र और बान्धवोंसे हीन होकर रोवेंगी।

( मौशल पर्व्व, प्रथम अध्याय ) युधिष्ठिरके राज्य मिलनेके छत्तीसवे वर्षमे वृष्णि-वंशियोमे बहुतही दुर्नीति उपस्थित हुई। वे लोग एरकामें लगे हुए मूशल-रूपके द्वारा परस्परकी मारसे बिनष्ट हो गये।

एक समय सारण प्रभृति वीरगण विश्वामित्र, कण्व और नारद मुनिको द्वारिका नगरीमे आये हुए देखकर साम्बको स्त्रीकी भांति सज्जित करके बोले कि हे महर्षिगण ! यह पुत्राभि-लाषिणी भार्य्या क्या प्रसव करेगी। ऐसा सुनके महर्षिवृन्द अत्यन्तही रुष्ट हुए। उन्होंने कहा कि यह श्रीकृष्णका पुत्र साम्ब वृष्णि और अन्धकोंके विनाशके निमित्त एक मूशल प्रसव करेगा। राम और कृष्णको छोड़कर सारा यदुकुल उससे विनष्ट होगा। हलधर समुद्रमे प्रवेश करके शरीर छोडेंगे। जरा नाम कैवर्त्त पृथ्वीपर सोये हुए कृष्णको विद्ध करेगा। इसके दूसरे दिन साम्बने एक मूषल प्रसव किया। राजा उग्रसेनने उस मूसलका महीन चूर्ण करवा करके समुद्रमें फेंकवा दिया। (दूसरा अध्याय) कृष्ण बोले कि गान्धारीने पुत्र शोकसे संतापित होकर आर्त भावमे जो छत्तीसवे वर्षमे यदुवंशियोके नाश होनेका शाप दिया था, यह वही छत्तीसवा वर्ष उपस्थित हुआ है। उस समय द्वारिकामे भांति भांतिके अशकुन होने लगे। ( तीसरा अध्याय ) बहुत अशकुन देख कर वृष्णि और अंधकवंशी लोग अपनी अन्तःपुरचारिणी स्त्रियोंके सहित तीर्थयात्राके अभिलाषी हुए। वे सैनिक पुरुषोंके सहित घोडे, हाथी और यानोंमें चढके प्रभास तीर्थमें पहुँचे और वहाँ इच्छा-नुसार गृह वासके अनुरूप सुख भोगने लगे। उस समय उद्धवने योगबलसे सब भविष्य वृत्तान्त जानकर वहाँसे प्रस्थान कर दिया।

प्रभास तीर्थमें यादवोंके सैकड़ो तूर्य्य शब्द तथा नट नर्तकोंके नृत्य गीतादि युक्त महापान आरम्भ हुआ। सब लोगोंने मत्तमत्त होकर ब्राह्मणोंके भोजनके निमित्त पकाये हुए अन्नको बन्दरोंको खिला दिया। राम, कृतवर्म्मा, सात्यकी, गद, बभ्रु आदि वीरगण कृष्णके सन्मुखही मद्य पीने लगे। उसी समय सात्यकी मतवाला होकर कृतवर्म्मासे बोला कि तुमने

जो महाभारतकी लडाईमे सोते हुए पुरुषोंका वध किया, यदुवंशी उसको कदापि नही सहेंगे। प्रद्युम्नने सात्यकीके कहे हुए वचनकी बहुत प्रशंसा की। तव कृतवर्म्मा क्रुद्ध होकर वोला कि जव भुजा कट जानेपर भूरिश्रवा रणमें योगयुक्त होकर वैठा था, तव तुमने वीर होकर किस प्रकार नृशंशकी भांति उसका वध किया था। इतनी वात सुनकर कृष्ण वहुत क्रुद्ध होकर तिरछे नेत्रसे कृतवर्माको देखने लगे। तव सात्यकीने क्रोध पूर्वक दौडकर तलवारसे कृतवर्माका शिर काट डाला और उसके वाधवोंका वध करते हुए चारों ओर घूमने लगा। इतनेही समयमें भोज और अन्धक वंशियोंने एकत्रित होकर सात्यकीको घेर लिया और सात्यकी और रुक्मिणीके पुत्र शेनेयको मारडाला। यह देख कृष्णने क्रोध पूर्वक एक मुट्ठी एरका घास ग्रहण किया। वह वज्र सदृश लोहमय मूशल होगया। कृष्णने जिसको सामने पाया, उसको उसी मूशलसे नाश कर डाला उसे देख कर अन्धक, भोज, शैनेय और वृष्णिवंशीयगण उसही मूशलभूत एरकाको लेकर उससे परस्परमें एक दूसरेका नाश करने लगे। उस समय ब्राह्मणोके शापसे समस्त एरका वज्रकी भांति होगया और समस्त तृण भी मूशल होगये। वे इतने मतवाले हुए थे कि परस्पर युद्धमें प्रवृत्त होकर पिता पुत्रको और पुत्र पिताको मारकर गिराने लगे। कृष्णने सांव, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध तथा गद आदि वीरोंको मरे हुए वा पृथ्वीमें पडे हुए देख कर क्रुद्ध हो वचे हुए लोगोंका नाश करके यदुकुलको प्राय निःशेष कर दिया।

( चौथा अध्याय ) कृष्ण, दारुक और वभ्रुने वलरामके समीप जाकर देखा कि वह निर्जन स्थानमे वृक्षके ऊपर वैठकर ध्यान कर रहे हैं। माधवने अर्ज्जुनको वुलानेके लिये दारुकको हस्तिनापुरमे और वभ्रुको स्त्रियोकी रक्षाके लिये द्वारिकामें भेजा। उसी समय किसी व्याधने कृष्णके निकटही मूसलसे वभ्रुका जीवन हर लिया। तव कृष्णने द्वारिकामे जाकर वसुदेवसे कहा कि हे पिता! जव तक अर्ज्जुन न आवें, तव तक आप यहाँके नर नारियोंकी रक्षा कीजिये मैं रामके सहित वनवासी होकर अपना शेष समय व्यतीत करूँगा। इसके पश्चात् कृष्णने वनमे जाकर देखा कि वलराम निर्जनमे अकेले योग युक्त होकर वैठे है और उनके मुखसे एक श्वेत वर्ण महा नाग वाहर होता है। देखते देखते वह समुद्रमे प्रवेश कर गया। श्रीकृष्ण दिव्य दृष्टिके सहारे कालकी गति देख कर निर्जन वनमे घूमते घूमते पृथ्वीमे वैठे और गान्धारीका वचन स्मरण कर महायोग अवलम्बन करके सोगये। उस समय जरा नामक व्याधने सोये हुए माधवको मृग जानकर वाणसे विद्ध किया। जव उसने निकट जाकर योगयुक्त पीताम्वर धारी चतुर्भुज रूप कृष्णको देखा, तव अपनेको अपराधी समझकर शंकित चित्तसे उनके दोनो चरणोंको जा पकडा। उस समय माधव उसे आश्वासित करके निज तेजसे सहा स्वर्गमे जाकर सव देवताओंसे पूजित हो अपने धामको चले गये। दारुक अर्जुनको हस्तिनापुरसे ले आया। ( ७ वाँ अध्याय ) अर्जुनके द्वारिकामे पहुँचनेके दूसरे दिन वसुदेव योग अवलम्वन करके उत्तम गतिको प्राप्त हुए। देवकी, भद्रा, मदिरा और रोहिणी ये चारो स्त्रियों वसुदेवके सहित चिताग्निमे जलकर पतिलोकको गई। वज्र आदि वृष्णि कुमारो तथा यादवोंकी स्त्रियोंने उनका तर्पण कार्य्य पूरा किया। अर्जुन उन कार्योंको पूरा कर प्रभासमें गये। उन्होने वहाँ प्रधानताके अनुसार सव मृतकोका अन्त्येष्टि कार्य किया और वलराम तथा कृष्णके शरीरको विधि पूर्वक जलाया। अर्जुनने सातवें दिन प्रेतकार्य समाप्त करके हस्तिनापुरको प्रस्थान किया।

वृष्णि वंशियोंकी स्त्रियाँ रथोंमे चढ़के अर्जुनके पीछे चलीं। अन्धक तथा वृष्णि-वंशीय रथी तथा घुडसवार आदि सेवकगण वालक और वूढोंसे युक्त स्त्रियोंकी रक्षाके लिये उनके चारोंओर चले। पदाति तथा गजारोही पुरुष आगे पीछे चलने लगे। चारों वर्णके मनुष्य और अन्धक तथा वृष्णिवंशीय वालकगण अर्जुनके अनुगामी हुए। कृष्णकी स्त्रियाँ उनके परपोते वज्रको आगे करके वाहर हुईं। वृष्णि और अन्धकवंशीय स्त्रियाँभी उनकी अनुगामिनी हुई। उन लोगोंके वाहर होने पर समुद्रने समग्र द्वारिका नगरीको जलमें डुबा दिया। एक दिन अर्जुनके संग सब द्वारिका वासियोंने पंचनदके समीप निवास किया। वहाँ आभीरोंने आकर वहुतसी स्त्रियोंका हरण कर लिया। अर्जुन और सम्पूर्ण रथी तथा गजसवारोंके सब बाण और पराक्रम निष्फल हो गये। अर्जुनने यादवोंकी बची हुई स्त्रियोंको कुरुक्षेत्रमें लाकर स्थान स्थानपर वास करवाया और कृतवर्मा और अन्य भोजवंशीय स्त्रियोंको, जो आभीरोंके हरण करनेसे बची थीं, मार्तिकावत नगरमें, बाकी वालक, वृद्ध और स्त्रियोंको इन्द्रप्रस्थमें और वृद्ध और वालकोंके सहित युयुधानके पुत्रको सरस्वती नदीके तट पर बसा दिया। उन्होंने अनिरुद्धके पुत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थका राज्य दे दिया। कृष्ण भगवान्‌की स्त्रियोंमेंसे रुक्मिणी, गांधारी, शैव्या, हेमवती और जांववती अग्निमें प्रवेश कर गईं और सत्यभामा आदि अन्य स्त्रियाँ तपस्या करनेके अर्थ वनमें चली गई। ( ८ वाँ अध्याय ) इस भांति ५ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लडकर प्रभासमें मर गये थे।

देवी भागवत—( दूसरा स्कन्ध, ८ वाँ अध्याय ) अर्जुनने प्रभासमें जाकर सबकी क्रिया की। कृष्णके शरीरके साथ उनकी ८ स्त्रियाँ और वलदेवजीके सहित रेवती सती हो गई।

लिङ्गपुराण—( ६९ वाँ अध्याय ) श्रीकृष्ण भगवान्‌ने भूमिका भार उतार ब्राह्मणोंके शापके बहाने अपने कुलका संहार किया। वह आपभी १०० वर्ष पूरे होनेके अनन्तर जरा नामक व्याधके वाणसे मनुष्यदेह त्याग कर उस व्याधको साथ ले वैकुण्ठको चले गये। वलदेवजी नागरूप धर कर गये। रुक्मिणी आदि प्रधान रानी श्रीकृष्णके साथ सती हुईं, किन्तु बाकी सब अष्टावक्र मुनिके शापसे चोरोंके हाथमें पड़ीं। रेवती वलदेवजीके साथ सती होगई। अर्जुनने कृष्ण और बलदेवकी और्ध्वदैहिक क्रिया की।

विष्णुपुराण—( ५ वाँ अंश, ३७ वाँ अध्याय ) देवताओंका पठाया हुआ दूत कृष्णके पास आया और एकान्तमें उनसे बोला कि १२५ वर्ष मनुष्य लोकमें रहकर पृथ्वीके भार उतारनेके लिये आप आये थे, वह दिन पूरा होगया; अब आप स्वर्गको चलिये। उसके पश्चात् सब यदुवंशी रथों पर चढ़ प्रभासमें पहुँचे। वहाँ सब मद्य पान कर परस्पर विवाद करने लगे। जब उनलोगोंके सब आयुध टूट गये, तब वे लोग शापित लोहके चूर्णसे उत्पन्न एरका घासको उखाड़ एक दूसरेको मारने लगे। क्षण मात्रमें कृष्ण और दारुक सारथीको छोड़ यादवोंमे कोई जीता न रहा। उन्होंने देखा कि एक वृक्षके नीचे घायल वलदेवजी बैठे हैं। उनके मुखसे बडा भारी सर्प निकल समुद्रमें चला गया। कृष्ण दारुकसे द्वारिका और हस्तिनापुरमें खबर भेज कर आप योग युक्त हो पलथी मार वृक्षके नीचे बैठ गये। उसी समय जरा नामक लुब्धक, जिसने बचे हुए लोह मय मूशलके टुकडोंको अपने वाणके फोंकपर लगाया था, वहाँ आया। उसने भगवान्‌के चरणको मृग जानकर उसको

अपने वाणसे विद्ध किया । भगवान्ने स्वर्गसे आये हुए विमानपर लुब्धकको भेजा और आपभी मनुष्य शरीर त्याग किया । ( ३८ वाँ अध्याय ) अर्जुनने हस्तिनापुरसे आकर कृष्ण और वलरामके मृतक शरीरको ढूँढ सब मृतक कर्म किया। कृष्णकी ८ पटरानियां हरिके शरीरके संग सती होगईं । रेवती वलदेवजीके शरीरके साथ भस्म हुई । उग्रसेन, वसुदेव, देवकी, रोहिणी अग्निमे प्रवेश करगईं । अर्जुनने कृष्णकी अवशेष स्त्रियोंको और कृष्णके पर-पोते वज्रको सङ्ग ले हस्तिनापुरको प्रस्थान किया । जब पञ्जाबमे आकर एक स्थानमें वह ठहरे तब आभीर चोरोंने सब धन और स्त्रियोको छीन लिया अष्टावक्र मुनिने पूर्व जन्ममें स्त्रियोंको शाप दिया था कि तुम चोरोके हाथमें पडोगी ।

श्रीमद्भागवत—( एकादश स्कन्ध, प्रथम अध्याय ) विश्वामित्र, असित, कण्व, दुर्वासा भृगु, अङ्गिरा, कश्यप, वामदेव, अत्रि, वशिष्ठ, नारद आदि ऋषि पिण्डारक स्थानमें वास करते थे । यदुवंश कुमारोने साम्बको स्त्री बनाकर पूछा कि हे ऋषीश्वरो ! यह स्त्री गर्भवती है, इसके पुत्र होगा कि पुत्री । तब मुनियोंने कहा कि यह तुम्हारे कुलनाशक मूशलको उत्पन्न करेगी । तब सब बालकोने साम्बका उदर खोल लोहेका मूसल देखा । राजा उग्रसेनने मूशलको चूर्ण करवाकर समुद्रमें बहवा दिया और रेतनेसे जो शेष भाग बचा, उसे भी समुद्रमे फेकवा दिया । वहाँ कोई मत्स्य उस लोहेके टुकड़ेको निगल गया । वह चूर्ण बहता हुआ समुद्रके तीरपर आ लगा, उसीसे सब एरका अर्थात् पटेर ( घास ) उत्पन्न हुए । मत्स्य धीवरके हाथ पकडा गया । मत्स्यके पेटसे जो लोहा निकला, उससे धीवरने अपने तीरकी भाल बनाई । ( ३० वाँ अध्याय ) मृत्यु सूचक घोर उत्पातोको देख कृष्णजीने यादवोसे कहा कि अब हम लोगोंको दो घड़ी भी द्वारिकामें रहना उचित नहीं है, सब स्त्री, बालक और वृद्ध शखोद्धारको चले जाओ । हम लोग प्रभास क्षेत्रमें जाकर पश्चिमवाहिनी सरस्वतीमें स्नान करेंगे और पवित्र होकर अरिष्टोंके नाशके लिये देवताओंका पूजन करके ब्राह्मणोंको दान देंगे । सब यादव कृष्णके आदेशानुसार नौकाओं द्वारा समुद्र उतर प्रभासको चले गये। उसके उपरान्त दैवसे हतबुद्धि यादवोंने मदिरा पान किया । मद्य पानसे अतिगर्वयुक्त यादवोंका बडा कोलाहल हुआ । उसके उपरान्त अत्यन्त क्रोधित हो प्रद्युम्न, सांब, अक्रूर, अनिरुद्ध, सात्यकी, निशठ इत्यादि दाशार्ह, वृष्णि, अन्धक और भोजवंशी वीर समुद्रके तटपर खड्ग, गदा, तोमर और रिष्टियोंसे युद्ध करने लगे । जाति जातिहीको मारने लगे । अब शस्त्रोंके चुक जानेपर वे लोग पटेर घासोंको ग्रहण करने लगे, जो यादवोके हाथमें लेतेही वज्रके समान दुधारे खांडे हो जाते थे । उससे यादव लोग वैरियोंको मारने लगे । जब कृष्णचन्द्रके निषेध करनेपर वे लोग कृष्ण, वलदेवको मारनेके लिये शस्त्र ले उनके सन्मुख आये, तब दोनों भाई खड्गरूप पटेरोंको हाथोमे ले सबको मारने लगे। सबके मरनेपर वलदेवजीने समुद्रके तटपर परम पुरुषके ध्यानरूप योगसे आपमें युक्त कर मनुष्य लोक छोड़ दिया। कृष्ण पीपलका आश्रय ले मौन होकर भूमिमें बैठ गये । उसी समय जरा नामक वधिकने, जिसने मूशलके अवशेष लोहेके खण्डसे वाण बनाया था, मृगके आकार वाले कृष्णके चरणको वींध डाला किन्तु जब उसने निकट जाकर कृष्णका चतुर्भुज रूप देखा, तब भयभीत होकर उनके चरण पर गिर पड़ा । कृष्ण भगवान्ने वधिकको अभय करके विमानमें बैठाकर स्वर्गमें भेज दिया। उस समय कृष्णका सारथी आया । कृष्णने सारथीसे कहा कि अब समुद्र द्वारिकापुरीको

जलमे डुबा देगा, तुम हमारा हाल द्वारिका वासियोंसे कहकर हस्तिनापुरमे जाकर अर्जुनको ले आवो । सारथी द्वारिकाको चला गया । ( ३१ वाँ अध्याय ) कृष्णजी उसी शरीरसे अपने परम धामरूप वैकुण्ठको चले गये । कृष्णके सारथीने द्वारिकामे जाकर यादवोंके नाश होनेका वृत्तान्त कहा । सब लोग व्याकुल हो प्रभासमें आये । देवकी, रोहिणी और वसुदेवने अपने प्राण छोड दिये । दूसरी स्त्रियाँ अपने अपने पतियोंसे मिलकर चितामे प्रवेश कर-गईं । रुक्मिणी आदि कृष्णकी स्त्रियाँ कृष्णमय होकर अग्निमें प्रवेश कर गईं । अर्जुनने सन्तान हीन लोगोका पिण्डदान और तर्पण किया । उस समय समुद्रने कृष्णचन्द्रके मन्दिरको छोड़-कर सारी द्वारिकापुरीको जलमें डुबा दिया । उसके पश्चात् अर्जुनने बची हुई स्त्रियों,बालकों और वृद्धोंको लेकर इन्द्रप्रस्थमे प्रवेश कराया और वहाँ वज्रका अभिषेक कर दिया । पांडव-लोग परीक्षितको राजतिलक देकर महाप्रस्थानको चले गये ।

भविष्यपुराण ( ६९ वाँ अध्याय ), मत्स्यपुराण ( ६९ वाँ अध्याय ) और पद्मपुराण ( सृष्टि खण्ड २३ वाँ अध्याय ) में है कि साम्बका मनोहर रूप देख कृष्णकी १६ हजार स्त्रियाँ कामातुर होगईं । तब कृष्ण भगवान्ने अपनी स्त्रियोंको शाप दिया कि तुमको पति-लोक और स्वर्ग नहीं मिलेगा; तुम लोग अन्तमे चोरोंके वश पडोगी और साम्बको शाप दिया कि तू कुष्टी होजा इत्यादि । इसी कारणसे आभीरलोग पंचनदके किनारेसे स्त्रियोंको हर लेगये थे ।

वामनपुराण—( ३४ वाँ अध्याय ) सोमतीर्थमे, जहाँ चन्द्रमा व्याधिसे मुक्त हुआ था, स्नान करके सोमेश्वर, अर्थात् सोमनाथके दर्शन करनेसे राजसूय यज्ञका फल मिलता है । वहाँके भूतेश्वर और भालेश्वरकी पूजा करनेसे मनुष्य फिर जन्म नहीं लेता है । ( ८४ वाँ अध्याय ) प्रह्लादने प्रभास तीर्थमें जाकर सरस्वती और समुद्रके सङ्गममे स्नान करके शिवका दर्शन किया ।

गरुडपुराणण—( पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय ) प्रभासक्षेत्र एक उत्तम स्थान है, जिसमें सोमनाथ महादेव निवास करते हैं ।

कूर्मपुराण—( उपरि भाग, ३४ वाँ अध्याय ) तीर्थोंमें उत्तम प्रभास तीर्थ है, जिसको सिद्धाश्रम भी कहते हैं । उस तीर्थमें भगवान् शंकरके पूजन, जप, होम आदि कर्म करनेसे और ब्राह्मणोको दान देनेसे अक्षय पद मिलता है । शिवजीका सोमेश्वर तीर्थ सम्पूर्ण व्या-धिका नाश करनेवाला और शिवलोक देनेवाला है ।

शिवपुराण–(ज्ञान संहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिंग है,–( १ ) सौराष्ट्र देशमें सोमनाथ ( २ ) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, ( ३ ) उज्जैनमें महाकालेश्वर, ( ४ ) ओंकारमें अमरेश्वर, ( ५ ) हिमालय पर केदारेश्वर, ( ६ ) डाकिनीमे भीमशंकर, ( ७ ) वाराणसीमें विश्वेश, ( ८ ) गोदावरीके तटपर त्र्यंबक, ( ९ ) चिताभूमि पर वैद्यनाथ, ( १० ) दारुका वनमे नागेश, ( ११ ) सेतुबंधमें रामेश्वर और ( १२ ) शिवालयमें घुश्मे-श्वर । ज्योतिर्लिङ्गोंकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है । इनके नैवेद्य भोजन कर-नेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होजाता है । नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममे शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होते हैं और उसके पश्चात् उनकी मुक्ति होजाती है ।

(४५ वाँ अध्याय) दक्षप्रजापतिने अश्विनी आदिक अपनी २७ पुत्रियोंका विवाह चन्द्रमासे कर दिया। जब चन्द्रमा अपनी रोहिणी नामक पत्नीसे अधिक स्नेह करने लगा, तब दक्षकी अन्य कन्याओंने अपने निरादरका वृत्तांत अपने पितासे कह सुनाया। दक्षने चन्द्रमाको बहुत समझाया कि तुमको अपनी सब स्त्रियोंपर समान प्रीति रखनी उचित है; किन्तु भावी वश चन्द्रमा उनका वचन न मानकर सब स्त्रियोंका निरादर करके फिर रोहिणीसे आसक्त हुआ। तब दक्षने दुःखी होकर चन्द्रमाको शाप दिया कि तू क्षयी रोगसे पीडित होजा। उसी क्षण चन्द्रमा क्षयी रोगसे युक्त होगया। चन्द्रमाके क्षीण होनेसे जगत्में हाहाकार मच गया। देवता और ऋषिगण दुःखी हुए। चन्द्रमाकी प्रार्थनासे इंद्रादिक देवताओंने ब्रह्माके पास जाकर उनसे चन्द्रमाके आरोग्य होनेका उपाय पूछा। ब्रह्माजीने कहा कि चन्द्रमा प्रभास तीर्थमें जाकर मृत्युञ्जयके मंत्रसे प्रभाके सागरपर शिवजीकी आराधना करे, तो शिवजीकी प्रसन्नतासे उसका रोग दूर होगा। ब्रह्माके आदेशसे इन्द्रादिक देवता और पुरातन ऋषिगण दक्षको शान्त करनेके पश्चात् चन्द्रमाको लेकर प्रभास तीर्थमें गये। उन्होंने वहाँ एक गढा खोदकर उसमें तीर्थोंका आवाहन किया और मृत्युञ्जयके विधानसे पार्थिव लिङ्ग स्थापित किया। उसके पश्चात् वे लोग चले गये। चन्द्रमाने जब ६ मास तक मृत्युञ्जयके मन्त्रसे शिवजीका पूजन किया, तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे चन्द्रमा! तुम इच्छित वर मांगो। चन्द्रमाने कहा कि हे स्वामी! मै यही चाहताहूँ कि मेरा क्षयी रोग दूर होजावे। शिवजीने कहा कि तुम्हारी कला जिस भांति क्रम क्रमसे कृष्ण पक्षमे घटेगी, उसी प्रकार शुक्ल पक्षमें वृद्धिको प्राप्त होगी। उस समय समस्त देवता और ऋषिगण प्रसन्न होकर शिवजीसे बोले कि हे स्वामी! आप इस स्थानमें स्थित होजाइये। तब शिवजी वहाँ स्थित होकर सोमेश्वर अर्थात् सोमनाथ नामसे जगत्मे प्रसिद्ध हुए। देवताओं तथा ऋषियोंका खोदा हुआ गढ़ा चन्द्र कुण्ड नामसे विख्यात हुआ। उसमें स्नान करनेसे मनुष्यका सब पाप छूट जाता है। जो मनुष्य उसमें ६ मास तक स्नान करता है उसके कुष्ट आदि असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं।

## अट्ठाईसवां अध्याय।

### (काठियावाड़में) जूनागढ, गिरनारपर्वत, जेतपुर, लाठी, पालीटाणा, शत्रुंजय पहाड़ी, भावनगर और लिंबड़ी।

### जूनागढ़।

विरावल कसबेके रेलवे स्टेशनसे उत्तर २९ मील केशोद, ४४ मील शाहपुर और ५१ मील जूनागढ़का रेलवे स्टेशन है। केशोद और शाहपुर दोनो गांवोंके चारोंओर पक्की दीवार बनी हुई है। केशोदसे उत्तर एक नदी पर रेलवेका पुल बना है।

बम्बई हातेके काठियावाड़में (२१ अंश, ३१ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ३६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) देशी राज्यकी राजधानी जूनागढ़ एक सुन्दर छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ कसबेमें ३१६४० मनुष्य थे; अर्थात् १६७१० पुरुष और १४९३० स्त्रियाँ। इनमें १५३३१ हिन्दू, १५२४० मुसलमान, १०१७ जैन, ३० कृस्तान, १३ पारसी और ९ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बम्बई हातेके देशी राज्योंमे पांचवाँ और काठियावाडमें तीसरा कसबा है।

जूनागढ़के बगलोंमें पक्की दीवार हैं। शहरसे पूर्व-उत्तर, गिरनार आदि पहाड़ियाँ और पश्चिम रेलवे लाइन है। रेलवेके पास शहरके पश्चिमका फाटक है। शहरसे दक्षिण-पूर्व गिरका मैदान है। जूनागढ़ शहरमें कई एक मकबरे, कई मसजिदें, अनेक देवमन्दिर, जिनमें स्वामीनारायणका मन्दिर उत्तम है, कई एक धर्मशाला, कई सदाव्रत, एक उत्तम अस्पताल, जेलखाना, नवाबकी कचहरियोंकी इमारतें और अनेक स्कूल हैं। मेरे जानेके समय जेलखानेसे दक्षिण एक घोडशालमें १०० धोडे और एक गाड़ीखानेमे लगभग ४० बग्गी टमटम और ४० घोड़े थे। हालमें शहरमें अनेक सरकारी तथा कचहरीके सरदारोंके उत्तम मकान बने है।

शहरके उत्तरीय भागमें जूनागढ़के दूसरे बहादुरखाँ दूसरा हमीदखां और लाडलीबू नामक एक स्त्री इन तीनोंके ३ मकबरे हैं। जेलखानासे दक्षिण नवाब महब्बतखांका मकबरा है। जूनागढ़के सम्पूर्ण मकबरे इसी सदीके बने हुए हैं। उनमेंसे कई एक ३० वर्षके भीतरके हैं। शहरके उत्तरवाले फाटकसे ½ मील दूर वजीरसाहबका सांकर बाग नामक सुन्दर उद्यान है। उसमें दो मञ्जिले बङ्गलेके बगलोमे पानीसे पूर्ण एक नाला है। उससे लगभग ५० गजके अन्तरपर एक जन्तुशालामें बाघ, हरिन आदि जन्तु रक्खे हुए हैं। शहरसे दक्षिण सांकर बागसे अधिक मनोरम सरदार बाग है, जिसमें सुन्दर बङ्गले बने हैं और गिरके जङ्गलोंसे लाकर अनेक सिंह और सिंहनी रक्खी गई है।

जूनागढ़के विरावल फाटकके दक्षिण, पूर्व, उत्तर अर्थात् जमियालशाहका मनोरम स्थान है। वहाँ ३० फीट ऊँचा उत्तरका दरगाह, एक तालाब और वजीर साहब बाहुदीनका बनवाया हुआ एक कोढ़ीखाना है, जिसकी नेव सन् १८९० में प्रिंस एलवर्ट विक्टरने दी थी। उसमें लगभग १०० कोढ़ी रह सकते हैं। उस स्थानसे ४ मील दक्षिण-पूर्व २७८० फीट ऊँची उत्तर पहाड़ी है, जिसके शृङ्गपर एक छोटा स्थान बना है। उस पहाडीको हिंदू और मुसलमान दोनों पाक समझते हैं। लोग कहते है कि उसके पास रहनेसे कुष्ठ रोग छूटता है। बहुतसे कोढ़ी उस पहाड़ीको सेवते हैं।

जूनागढ़के नवाबका महल—शहरके मध्य भागमे एकही जगह कई एक कितेमें दो मञ्जिले चौमञ्जिले नवाब साहबके मकान बने हैं। उनके ऊपरके भागोंमे बहुतसे मेहराबदार द्वार हैं। मकान रङ्गोंसे चित्रित है। महलका एक मकान सर्व साधारण लोगोंके देखनेके लिये खुला रहता है। उसका दोमञ्जिला कमरा बहुतसे झाड, फानूस, तस्वीरों, बडे बड़े आइनों और सुनहरी रुपहरी कोच कुर्शियोंसे सजा हुआ है। उसमें जगह जगह प्रदर्शनीकी वस्तु भी रक्खी हैं। महलके आगे महब्बतसर्किल नामक बाजार है।

महब्बतखांका मकबरा—शहरके जेलखानेसे दक्षिण जूनागढ़के मृत नव्वाबके पिता सर महब्बतखांजी के० सी० एस० आईका बहुत सुन्दर मकबरा है। मकबरा ३४पहलका है। सब पहलोंकी मेहराबियोंमे लोहेका सुन्दर जालीदार काम है। मकबरेके भीतर उसके मध्यमें

८पहलका खास मकबरा है, जिसके ५ पहलोंमें लोहेकी सुन्दर झंझरी और ३ पहलोमें चांदी और शीशाओंके सुन्दर काम हैं। खास मकबरेके भीतर चांदनीके नीचे, जिसमे चांदीके चोव लगे है, सर महब्बतखांकी कब्र है। खास मकबरेके चारों बगलोंमें नील और श्वेत मार्बुलके टुकडोंका फर्श और उत्तर बगलकी भूमिपर वेश कीमती पत्थरकी पच्चीकारीका काम है। छतमे बडे बडे झाड लगे है। मकबरेके शिरपर मध्यमें एक बड़ा गुम्बज और उसके चारोंओर बहुतसे छोटे गुम्बज हैं। मकबरेके आगे पत्थरका बडा फर्श है।

महब्बतखाँके मकबरेके उत्तर एक दूसरा उससे छोटा मकबरा बन रहा है। उसमे थोड़ा काम बाकी है।

नव्वाब साहबकी मसजिद—महब्बतखाँके मकबरेसे दक्षिण ओर जूनागढ़के नव्वाब साहबकी मसजिद है। वह बाहरसे चौकोनी है, किन्तु उसके भीतर ५८ खम्भे ऐसे ढवसे लगाये गये है कि उसमे ६ भाग हो गये है। प्रत्येक भागके बगलोमे ८ खम्भे पडते हैं। प्रति भागके ऊपर एक सुन्दर गुंबज है। मसजिदके भीतर श्वेत और नील रङ्गके मार्बुलका और उसके आगेके बडे आंगनमे साधारण पत्थरका फर्श है।

अपरकोट—शहरके पास अपरकोट नामक पुराना किला है, जो पूर्व समयमें हिन्दू राजाओंका गढ था। वह सन् १८५८ तक जेलखानेके काममें आता था, किन्तु अब बेकार पडा है। वहाँ सन् ईस्वीके आरम्भसे २७० वर्ष पहिलेसे राजा अशोकके सूबेदार और उनके समयके पीछे गुप्त वंशके राजाओंके सूबेदार रहते थे। अपरकोटमें तथा उसके पास अनेक बौद्ध गुफा है। किलेकी पश्चिमकी दीवारमें आगे पीछे एक दूसरेके भीतर क्रमसे ३ फाटक बने हुए है। किलेकी दीवार ६० फीटसे ७० फीट तक ऊँची है। फाटकके ऊपर पांचवें मण्डलीकका सन् १४५० का शिला लेख है। किलेमें २ पुरानी तोपें पडी है, जिनमेंसे एक १७ फीट और दूसरी १३ फीट लम्बी है, मुहम्मद बेगड़ाकी बनवाई हुई जुमामसजिद टूट फूट गई है; उसका एक मीनार खडा है। मसजिदके पास नूरीशाहका मकबरा है। किलेमें २ पुरानी बावली है, जिनमे नीचे तक चक्कर दार सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। बड़ी मसजिदसे लगभग ५० गज उत्तर अनेक दो मञ्जिले गुफामन्दिर है, जिनके नीचेके कमरे ११ फीट ऊँचे है। बागेश्वरी फाटकके भीतर बाबाप्यारांकी गुफा है। बाबाप्यारा नामक एक फकीर गुफाओंमे रहता था, इस कारणसे उनका यह नाम पडगया। अपरकोटके पास खपड़ा-खोडिया नामक गुफाओंका झुण्ड है। देखनेसे जान पडता है कि एक समय वे तीन मञ्जिले मठ थे।

जूनागढका राज्य—काठियावाडके दक्षिण-पश्चिमके भागमें जूनागढ एक देशी राज्य है। भूमि साधारण प्रकारसे समतल है। गिरनार पहाड़ियोंकी एक चोटी समुद्रके जलसे ३६७५ फीट ऊँची है। राज्यका एक भाग गिर कहलाता है, उसमे सघन वृक्षोंका जङ्गल और उसके चन्द भागोमे पहाडियाँ हैं। पहिले काठियावाड प्रायद्वीप और गुजरातमे बहुत सिंह मिलते थे, परन्तु अब वे केवल गिरिके जंगलोंमे पाये जाते हैं। अफ्रिकाके सिंहोसे मिलानेमें इनका आल छोटा और रङ्ग हलका होता है। गिरके जङ्गलोंमें १२ से अधिक सिंह है। जूनागढ़के राज्यके खानोंसे मकानके कामके योग्य पत्थर निकलता है। काली मिट्टीके खेत कुओं और नहरोंसे पटाये जाते हैं। कपास बहुत होती है, जो विरावल बन्दरसे

आगबोटों द्वारा बम्बई भेजी जाती है। गेहूँ, दलिहन, ऊख और तेलहनभी होते हैं। राज्यके ३४ स्कूलोंमें लगभग २००० लडके पढ़ते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ राज्यके ३२७९ वर्गमील क्षेत्रफलमे ७ कसबे, ८५० गाँव, ६५७८ मकान और ३८७४९९ मनुष्य थे, अर्थात् ३०६२९५ हिन्दू, ७६४०१ मुसलमान और ४८०३ अन्य।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ राज्यके जूनागढ़ कसबेमे ३१६४० और विरावेलमें १५३३९ मनुष्य थे। उस राज्यमें सोमनाथपट्टन एक प्रसिद्ध कसबा है।

जूनागढ़का राज्य काठियावाडके प्रथम दर्जेके राज्योंमेसे एक है। वहाँके नवाबोंको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। जूनागढ़के राज्यसे लगभग २१००००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकार और बडोदाके गायकवाड़को ६५६०० रुपया राज्य-कर दिया जाता है। इनका सैनिक बल लगभग २७०० आदमियोंका है। जूनागढ़के नवाब अङ्गरेजी सरकार और गायकवाड़को 'राज्य कर' देते है और काठियावाडके बहुतेरे छोटे देशी राजाओंसे जोरतलबी नामक एक प्रकारका 'कर' लेते हैं, जिसको काठियावाड़ एजेंसीके अफसर लोग तहसील करके उनको देते हैं।

इतिहास—अति पूर्व कालमें जूनागढ़ बौद्धों तथा राजपूतोंका राज्य था ( अपरकोटमें देखिये )। उस समय अपरकोट अर्थात् पुराना जूनागढ राजधानी था। सन् १४७२ में अहमदाबादके सुलतान महम्मद बेगड़ाने अपरकोटके राजपूत राजाको जीता। उसीने ( वर्तमान ) जूनागढ़ शहरको बसाया। सोलहवीं सदीमें अकबरके राज्यके समय जूनागढ़ दिल्लीके अधिकारमे हुआ और गुजरातके सूबेदारके अधीन रक्खा गया। जब गुजरातसे मुगलोंका अधिकार उठ गया, तब लगभग सन् १७३५ में शेरखांबाबी नामक एक सिपाहीने मुगलोंके गवर्नरको निकाल कर जूनागढ़में अपना अधिकार कर लिया। शेरखांके पुत्र सलावतखांने अपने वारिश पुत्रको जूनागढ़का नवाब बनाया और छोटे पुत्रोंको जागीर दे दी।

शेरखांबाबीके वंशधर जूनागढ़के ८ वें नवाब सर महब्बतखांजी के. सी. एस. आई. थे, जो सन् १८८२ में मर गये, तब उनके पुत्र बहादुरखांजी उत्तराधिकारी हुए, जिनको पीछे जी. सी. एस. आई. की पदवी मिली थी, किन्तु सन् १८९२ में ३८ वर्षकी अवस्थामें उनका देहान्त हो गया।

नरसी भक्तकी कथा—एक कहावत है कि जूनागढ़में एक ब्राह्मणके गृह नरसीभक्तका जन्म हुआ। जब उनके माता पिता मर गये, तब वह अपने भाईके घर रहने लगे। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियां हुईं। नरसीभक्त वहाँ आनेवाले साधुओंकी अच्छी भांतिसे सेवा किया करते थे। एक दिन अनेक साधुओंने जूनागढ़में आकर वहाँके लोगोसे पूछा कि यहां साहूकार कौन है? हम लोगोंको द्वारिकाकी हुण्डी करानी है। नरसीके शत्रुओंने परिहास करके कह दिया कि नरसीभक्त यहांके साहूकार हैं। साधुओंने नरसीजीके पास सातसौ रुपये रख कर उनसे हुण्डी लिख देनेको कहा। नरसीजीके अस्वीकार करने पर जब साधुलोग हुण्डी लिख देनेके लिये हाथ जोड़ कर उनकी प्रार्थना करने लगे, तब उन्होंने जान लिया कि भगवान्ने शत्रुओंके हृदयमें प्रेरणा करके मुझको यह खर्च भेजवाया है। ऐसा सोच नरसीजीने द्वारिकामें सांवलशाहके ऊपर हुण्डी लिख दी। साधुलोग उस हुण्डीको लेकर

द्वारिकामें गये । वहाँ सांवलशाह अर्थात् कृष्ण भगवान्ने साहूकारका रूप धर कर साधुओं-को हुण्डीका रुपया चुका दिया और नरसीजीके नामसे रुक्का लिख दिया कि मैंने हुण्डीका दाम दे दिया है । नरसीजीने सब रुपयेको साधुओंकी सेवामें खर्च कर दिया । लोग इस प्रकारके नरसीजीकी अनेक आश्चर्य कथा कहते हैं ।

## गिरनार पर्वत ।

जूनागढ़ शहरसे पूर्व गिरनार नामक पहाडियाँ है, जिनमेसे गिरनार पहाड़ी ३६७५ फ़ीट, योगिनिया पहाडी २५२७ फीट, वेसला पहाड़ी २२९० फीट और दत्तर पहाड़ी २७८० फीट समुद्रके जलसे ऊँची है । इनके अलावे लक्ष्मण टेकरी इत्यादि अनेक छोटी पहाडियाँ हैं । गिरनार पहाडीपर हिन्दुओ और जैनोंके बहुत मन्दिर तथा स्थान बने हुए हैं । गिरनारका हिन्दू, जैन और बौद्ध ये तीनो मतके लोग आदर करते है । जूनागढ़ शहरसे गिरनार पहाड़ीकी केवल चोटी देख पड़ती है, क्यो कि उसके आगे ( जूनागढ़की ओर ) योगिनिया, लक्ष्मण-टेकरी, वेसला, दत्तर इत्यादि छोटी पहाडियाँ है । पहाडियोपर जानेके लिये जूनागढ़में किरायेकी डोली मिलती है ।

जूनागढ़ शहरसे लगभग १० मील पूर्व २१ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ४२ कला पूर्व देशान्तरमें पवित्र गिरनार पहाडी है । यात्री लोग जूनागढ़ शहरके पाससे पहाडियोकी यात्रा आरम्भ करते हैं । जूनागढ़से १४ मील दूर गिरनारके शिखरपर दत्ता-त्रेयजीका स्थान है । पहाडियोकी चढ़ाई कडी है । नित्य हिन्दू यात्री पहाडियोंपर चढते है । यात्री लोग दो तीन दिनमें पहाड़ी यात्रा समाप्त करते हैं । अगहनकी पूर्णमासीको दत्तात्रेय-जीका जन्म हुआ था, उस दिन उनके दर्शनका अधिक माहात्म्य है ।

कुछ लोगोका मत है कि गिरनार पर्वत, जो गोमती द्वारिका तथा बेट द्वारिकासे सीधी लकीरमें लगभग १०० मील दूर है, द्वारिकाके पासका रैवतगिरि है, जिसपर द्वारिकाके लोग उत्सव तथा क्रीडा किया करते थे । महाभारत आदि पर्वके २१९ वे अध्याय, और अश्वमेधपर्वके ५९ वें अध्यायमे रैवतगिरिपर यदुवंशियोंके उत्सव करनेकी और लिङ्गपुराण—उत्तरार्द्धके तीसरे अध्यायमे उस पर्वतपर कृष्णके विहार करनेकी कथा लिखी हुई है ।

जूनागढ शहरके पास जूनागढकी पुरानी राजधानी अपरकोट नामक किला है । लोग उसके वागेश्वरी फाटक होकर, जिसके पास एक धर्मशाला है, गिरनारकी यात्रा करते है । उस स्थानसे लगभग २०० गज आगे मार्गके दहिने वागेश्वरीका मन्दिर है । उससे आगे नया तीन मञ्जिला मन्दिर, मन्दिरसे थोडा आगे पत्थरका पुल और पुलसे आगे चट्टानोंपर पुराने शिलालेख हैं । वहाँ लगभग ३० फीट लम्बे और २० फीट चौडे एक चट्टानपर मौर्यवंशी राजा अशोकके लेख जो विक्रमी सवत्से २०० वर्ष पहिलेके है, खोदे हुए है । दूसरे चट्टानपर शक सवत्की पहली शताब्दी सन् ईस्वीकी दूसरी सदी के क्षत्रपवंशके राजा रुद्रदामाके शिला लेख हैं ( दोनोंके अक्षरान्तर और अनुवाद अन्यत्र देखिये ) । एक तीसरे स्थानमें सन् ईस्वीकी पांचवी सदीके लेख हैं, जिनमें दर्शन तालावके बाँधके टूटने और सुएक पुल बनवानेका वृत्तान्त खोदा हुआ है ।

## मौर्यवंशी राजा अशोक के गिरनारपर्वतपरकेलेखसे (वि० सं० से २०० वर्ष पहिले)

## लेखकी असली पंक्तियोंका अक्षरान्तर.

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राञा लेखापिता इधन किंचि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं नच समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा अरित पितुए कचा समाजा साधुमता देवान प्रियस प्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि देवानं प्रियसा प्रियदसिनो राञो अनु दिवसं वहूनि प्राणिसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय से अज यदा अयं धंमलिपी लिखिता तीएन प्राणा आरभदे रूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सोपि मगो न ध्रुवो एतेपि त्रीप्राणा पछा न आरभिसंदे (१).

अ आ इ उ ए ओ अं क ख ग घ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध

न प फ ब भ म य र ल व स ह खा जा मा श वा गा खि टि नि भि

लि यी मी तु नु हु कू जू दे थे गो मो नो क्र त्रा प्रि ब्रा स्हि व्या ब्रे स्टि स्ता स्टा स्ति

**क्षत्रप वंश के राजा रुद्रदामा के (गिरनार पर के) लेख से (शक सं० की पहिली शताब्दी)**

(१५)

(१६)

परमलक्षणव्यंजनैरुपेतकान्तमूर्त्तिना स्वयमधिगतमहाक्षत्रपनाम्ना नरेंद्रकन्यास्वयंवरानेकमाल्यप्राप्तदाम्ना महाक्षत्रपेणरुद्रदाम्ना वर्षसहस्रायगोब्राह्म.............
...र्थं धर्मकीर्त्तिवृद्ध्यर्थं च अपीडयित्वा कराविष्टिप्रणयक्रियाभिः पौरजानपदं जनं स्वस्मात्कोशा (त्) महता धनौघेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुणदृढतराविस्तारा-
यामं सेतुं विधाय---र्व्वंनग.............सुदर्शनतर कारितमिति---रस्मिन्नर्थे महाक्षत्रपस्य मतिसचिवकर्मसचिवैरमात्यगुणसमुद्युक्तैरप्यतिमहत्वाद्भेदस्य (स्या)
नुत्साहविमुखमतिभिः

अ आ इ ए क ख ग घ च छ ज ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य

र ल व श ष स ह ळ का जा दा मा ला लि वि की कु गु नु रु सु दू पू मू रू

हे पे नै गो नो पो मो यो क्त क्रि क्ष ग्ट ग्रा ज्ञ द्द द्यु प्र र्जि र्थ र्गो र्मा त्

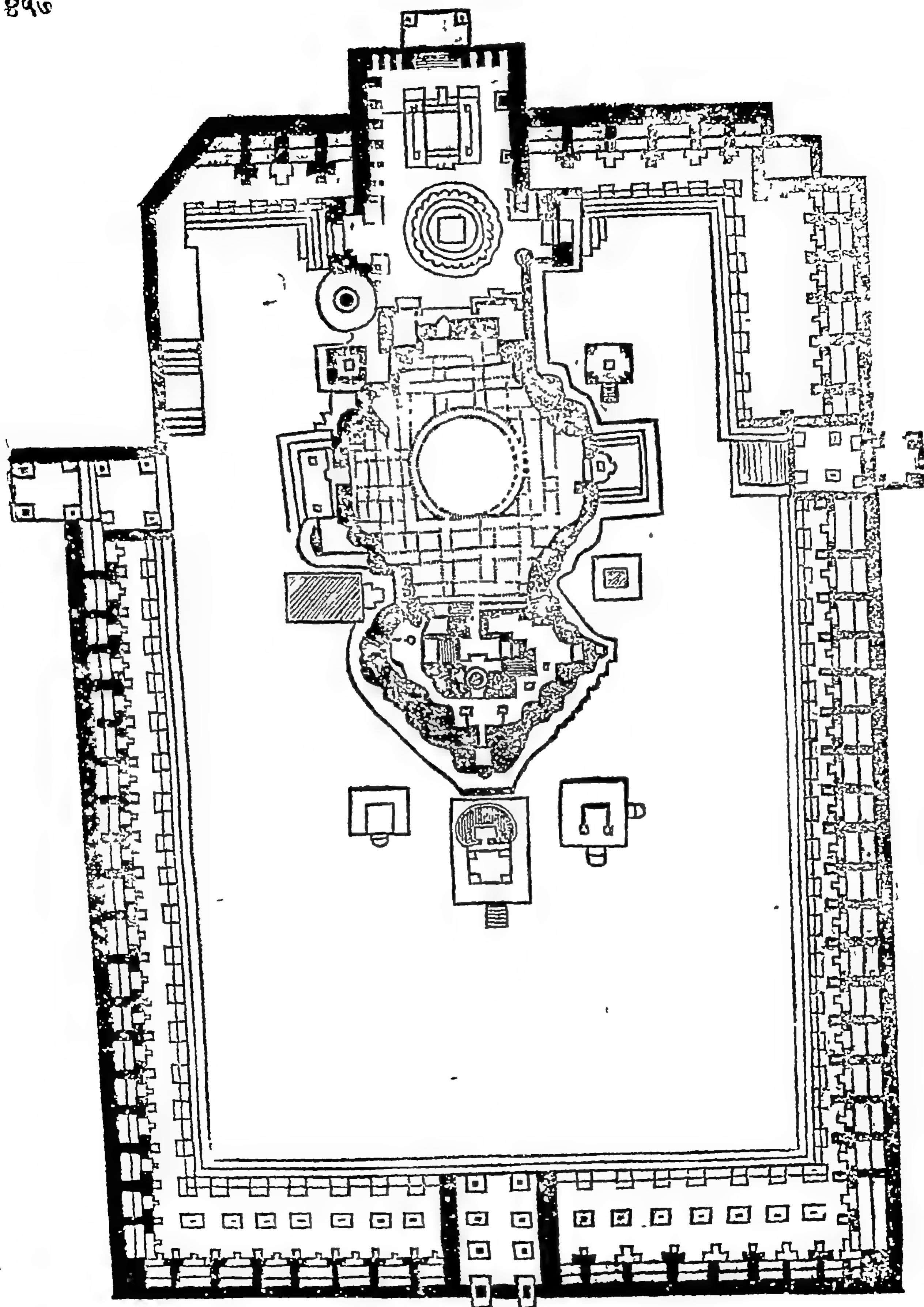
राजा अशोकके लेखके पत्थरसे आगे सोनारोखा नदीपर सुन्दर पुल बना है। नदीके दोनों किनारोंपर अनेक मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें दामोदरजीका मन्दिर बडा है। उस स्थानपर दामोदरकुण्ड और रेवतीकुण्डमें यात्री लोग स्नान करते हैं। उससे आगे जङ्गली घाटी होकर पहाड़ी मार्ग निकला है। एक जगह वृक्षोंके पास, जहां बहुत बन्दर रहते हैं, भवनाथ शिवका मन्दिर है। उससे आगे एक स्थानपर १ कूप और कई एक मन्दिर हैं। नेमिनाथके मन्दिर तक जगह जगह ६ परवा अर्थात् विश्रामगृह मिलते हैं।

मैदानसे ५०० फीट ऊपर चुड़िया परवाका और १००० फीट ऊपर टोलीटेरी नामक विश्रामगृह है। वहाँसे खडी चढाई आरम्भ होती है। लगभग १४०० फीट ऊपर; जिसके आगेसे राह दहिने घूमती है, तीसरा विश्रामगृह है। उससे आगे जानेपर दहनी और दत्तर पहाडी देख पड़ती है। लगभग१५०० फीट ऊपर एक पत्थरकी धर्मशाला है, जहाँसे भैरवथंपा चट्टान; अर्थात् भयंकर कुण्डके चट्टानका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। पूर्व कालमें अनेक लोग उस स्थानसे १००० फीट अथवा उससे अधिक नीचे कूदकर आत्मघात कर डालते थे। उनको विश्वास था कि जो आदमी इस प्रकारसे प्राण त्याग करेगा वह दूसरे जन्ममें राजा होगा। उसके पास पांडव गुफा है। एक स्थानमें हनूमान धारा और एक स्थानमें रामानन्दस्वामीकी चरणपादुका और गुफा मिलती है। एक जगह मुचुकुन्द गुफा है। लोग कहते हैं कि इसी गुफामें राजा मुचुकुन्द सोये थे, जिनकी दृष्टिसे कालयवन भस्म होगया। इनके अलावे मार्गमें सेवानाथका मन्दिर, हाथीपगलाकुण्ड, सूर्यकुण्ड, मालीपर्वकुण्ड तथा अनेक दूसरे कूप, कुण्ड तथा मन्दिर हैं।

४ जैन मन्दिर–जूनागढ़के मैदानसे २३७० फीट (समुद्रके जलसे लगभग ३००० फीट) ऊपर देवकोटके घेरेका, जिसको खेगारका महल भी कहते हैं, फाटक है। फाटकसे भीतर जानेपर बाईं ओर पहाड़ीके पश्चिम किनारेके पास जैन मन्दिरोंका बडा घेरा और दहिनी ओर कच्छके राजा मानसिंहका पुराना मन्दिर मिलता है। वहाँ पहाडीकी चोटीसे लगभग ६०० फीट नीचे उस पहाडीके खडे भागके शिरपर १६ जैन मन्दिर बने हुए हैं; जिनमें सबसे बड़ा और कदाचित् सब मन्दिरोंसे पुराना जैनोंके २२ वे तीर्थकर नेमीनाथका विचित्र मन्दिर है। मन्दिर परके लेखसे जान पड़ता है कि सन् १२७८ में उस मन्दिरकी मरम्मत की गई। गिरनारके मन्दिर बहुत पुराने हैं। ईशासे २७० वर्ष पहिले भी वह जैन यात्राका स्थान था।

जैन लोगोंके ५ पवित्र स्थानोंमेंसे सबसे अधिक पवित्र पालीटाणाकी शत्रुंजय पहाडी और उसके पश्चात् गिरनार पहाड़ी है।

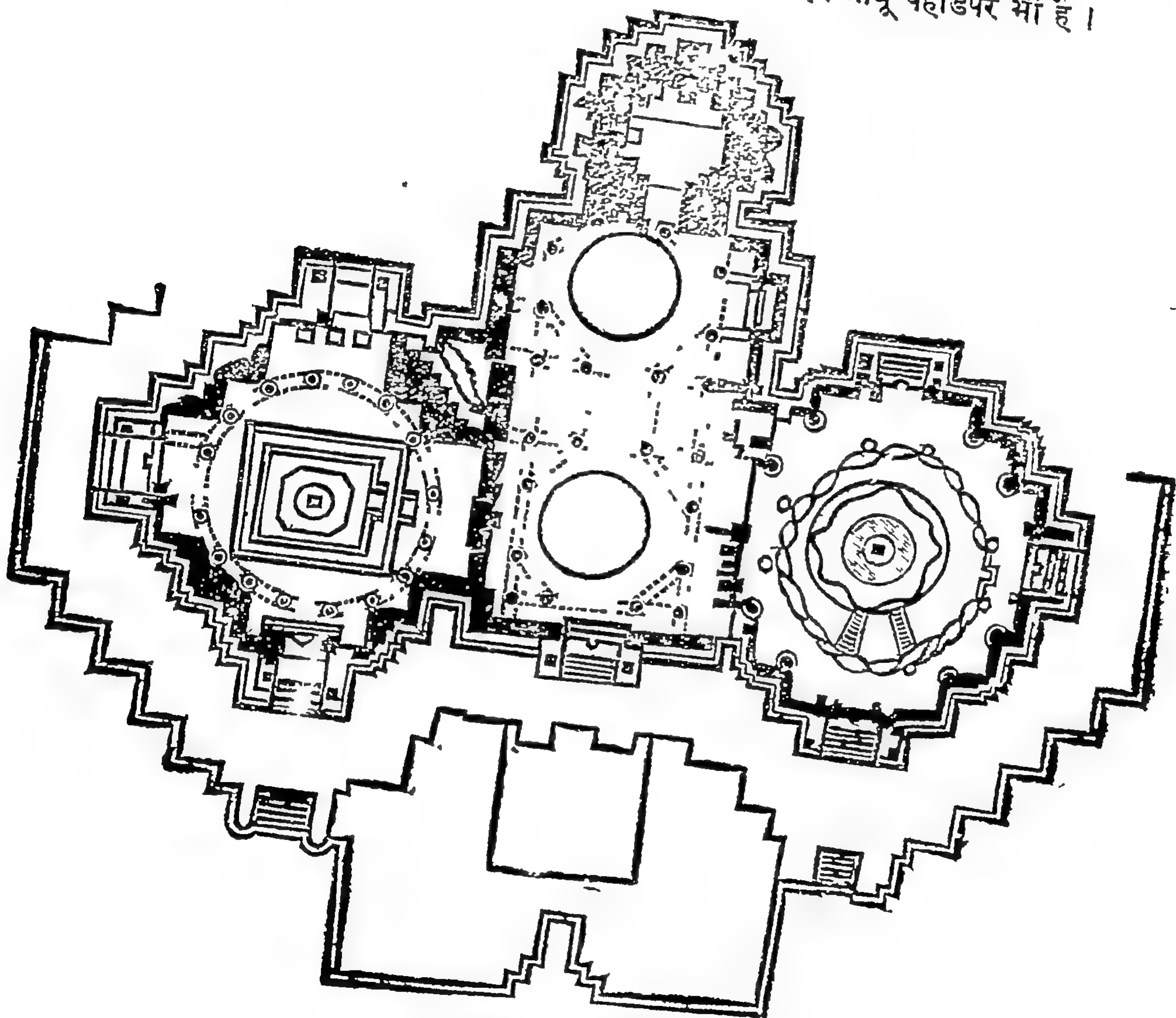
१९५ फीट लम्बे और १३० फीट चौडे चौकोने आँगनमें नेमीनाथका मन्दिर है। मन्दिरके भीतर सोनेके भूषणों और रत्नोंके जड़ावसे भूषित नेमीनाथकी नीलरङ्गकी प्रतिमा है। उस स्थानके चारों ओर एक राह है, जिसके बगलमें सफेद मार्बुलकी अनेक मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम क्रमसे दो कमरे और एक जगमोहन अर्थात् आगेका मण्डप है। उनमेंसे पूर्ववाले कमरेके मध्यमें एक स्थान, पश्चिमवाले कमरेमें पीले रंगके पत्थरसे बने हुए २ चबूतरे; जिनपर दो दो चरणचिह्न बने हैं, और उसके पश्चिमके जगमोहनके खम्भोंमेंसे २ खम्भोंपर मन्दिरकी मरम्मतके समय लिखे हुए हैं, जो सन् १२७५—१२७८—१२८१ के मुताबिक होते हैं। मन्दिरके आँगनके चारो बगलोंमे ७० कोठरियां हैं। प्रति कोठरीमें नेमीनाथकी एक प्रतिमा पल्थी मार कर बैठी है। कोठरियोंके आगे लगातार ओसारा है, जिसके आगे पत्थरकी जालीदार टट्टियां बनी हैं।



गिरनारमें नेमीनाथ कामन्दिर

नेमीनाथके मन्दिरको छोड़नेपर बाईं ओर ३ मन्दिर मिलते हैं, जिनमें दक्षिणवाले मन्दिरमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभजी, अर्थात् आदिनाथकी एक बड़ी मूर्त्ति और चौवीसों जैन तीर्थंकरों अर्थात् जैन देवताओंकी प्रतिमा है ( चौवीसोंके नाम शत्रुंजयमें देखिये )। उस मन्दिरके सामने पंचभाइयोंका नया मन्दिर है। उसके पश्चिम पार्श्वनाथका बड़ा मन्दिर और बड़े मन्दिरसे उत्तर पार्श्वनाथका दूसरा मन्दिर है। उत्तर बगलके पास कुमारपालका मन्दिर है, जिसको मुसलमानोंने कुरूप किया था, किन्तु सन् १८२४ में हंसराज जेठाने उसको फिर पूर्ववत् बना दिया।

नेमीनाथके मन्दिरके पीछे तेजपाल और वास्तुपाल दोनों भाइयोंके ( सन् ११७७ के ) बनवाये हुए एकही साथ ३ विचित्र मन्दिर हैं। वहाँ १९ वें तीर्थंकर मालीनाथकी मूर्त्ति है। तेजपाल और वास्तुपालका बनवाया हुआ एक उत्तम मन्दिर आबू पहाड़पर भी है।



गिरनार में
तेजपाल और वस्तुपालका मन्दिर

गौमुखी—ऊपर लिखे हुए जैन मन्दिरोके घेरेसे उत्तर ७० फीट लम्बा और ५० फीट चौडा भीमकुण्ड नामक जलाशय है; जिसमें हिन्दू यात्री स्नान करते हैं।

जैन मन्दिरोंसे दक्षिण उस स्थानसे २०० फीटकी उँचाई पर जूनागढ़ कसवेसे लगभग १० मील दूर गौमुखी स्थान है। वहाँ पत्थरकी गोमुखी होकर जलकी धारा गिरती है, जिसको लोग गंगा कहते है। वहाँ कई एक झरने तथा ब्रह्मेश्वर और नर्मदेश्वरके २ मन्दिर है। गोमुखीसे ऊपर दो राह दो तरफ गई है।

अम्बाका मन्दिर—गोमुखीसे एक मील दूर पहाडीकी पहिली चोटीके शिरपर ३३३० फीटकी उँचाई पर अम्बादेवीका पुराना मन्दिर है, जो दूरसे देख पड़ता है। खडी सीढियोंसे मन्दिरके पास पहुँचना होता है। उस प्रान्तके दूर दूरके बहुत ब्राह्मण विवाह होने पर दुलहिनके सहित वहाँ जाते है और दुलहिनके साथ गँठजोड़ाव किये हुए अम्बादेवीको नारियल आदि पूजा चढाते है। एक ब्राह्मण दुलहाने उस मन्दिरकी मरम्मत करवाई है।

गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर—अम्बाके मन्दिरसे पूर्व गोरखनाथ, दत्तात्रू अर्थात् दत्तात्रेय और कालिका नामकी ३ चोटियोंके ३ शृङ्ग है। पहिले गोरखनाथका स्थान, जिसको गोरखटेकरी कहते है, मिलता है। उससे आगे गोमुखीसे ४ मील और जूनागढ़ शहरसे १४ मील दूर गुरु दत्तात्रेयका छोटा मन्दिर है, जिसमें उनका चरण चिह्न बना हुआ है। श्रीमद्भागवतके लेखके अनुसार दत्तात्रेयजी विष्णुके २४ अवतारोंमेसे एक है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—( प्रथमस्कन्ध, तीसरा अध्याय ) विष्णुभगवान्‌के २४ अवतार हैं,—( १ ) सनत्कुमार, ( २ ) वाराह, ( ३ ) यज्ञ, ( ४ ) हयग्रीव, ( ५ ) नर-नारायण, ( ६ ) कपिलदेव, ( ७ ) दत्तात्रेय, ( ८ ) ऋषभ, ( ९ ) पृथु, ( १० ) मत्स्य, ( ११ ) कच्छ, ( १२ ) धन्वंतरि, ( १३ ) मोहिनी, ( १४ ) नृसिंह, ( १५ ) वामन, ( १६ ) परशुराम, ( १७ ) व्यास, ( १८ ) रामचन्द्र, ( १९ ) कृष्ण ( २० ) नारद, ( २१ ) हरि, ( २२ ) हस, ( २३ ) बुद्ध और ( २४ ) कल्की। दत्तात्रेयजीने महर्षि अत्रिके पुत्र होकर अपनी माता अनुसूयाको प्रसन्न किया और राजा अलर्क और प्रह्लादको आत्म विद्याका उपदेश दिया।

विष्णुपुराण—( प्रथम अंश, १० वाँ अध्याय ) महर्षि अत्रिकी भार्या अनुसूयासे चंद्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा नामक ३ पुत्र हुए।

दूसरा शिवपुराण—( ७ वाँ खण्ड, २५ वाँ अध्याय ) अत्रिके ३ पुत्र हुए,—ब्रह्माके अंशसे चन्द्रमा, विष्णुके अंशसे दत्तात्रेय और शिवजीके अंशसे दुर्वासा।

भविष्यपुराण—( उत्तरार्द्ध, ५१वाँ अध्याय ) महर्षि अत्रिके पुत्र योगी दत्तात्रेयजी, जो विष्णुके अवतारोंमेंसे थे, विन्ध्य पर्वत पर अपने आश्रममे योग साधन करते थे।

## जेतपुर।

जूनागढके रेलवे स्टेशनसे १७ मील उत्तर जितलसरका रेलवे जक्शन है। जितलसरसे पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ़, ९८ मील सिहोर कसवा और ११२ मील भावनगरका रेलवे स्टेशन। जितलसर जक्शनसे पश्चिम

१० मील धोराजी और ७८ मील पोरबंदरका रेलवे स्टेशन और जितलसरसे पूर्वोत्तर ओर २३ मील गोंडल, ४७ मील राजकोट; ७२ मील वंकानेर जंक्शन और १३४ मील वाढ़वान जंक्शनसे उत्तर ५५ मील लिंबडी, ६८ मील वाढ़वान शहर और ७२ मील वाढ़वान जंक्शनका स्टेशन और वंकानेर जंक्शनसे उत्तर १६ मील मोरवीका स्टेशन है।

जितलसर जंक्शनसे ३ मील पूर्व जेतपुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड सौराष्ट्र डिवीजनमें एक देशी राज्यकी राजधानी जेतपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जेतपुर कसबेमें १३६४६ मनुष्य थे, अर्थात् ७२६८ हिन्दू, ५१३५ मुसलमान; १२४२ जैन और १ पारसी।

जेतपुर कसबेके चारोंओर पक्की दीवार है। कसबा उन्नति पर है। वहाँसे राजकोट, धोराजी, जूनागढ और मनवाडाको सड़क गई है। जेतपुरसे धर्मशाला, बङ्गला, अस्पताल, कचहरियोंके मकान और कई एक स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जेतपुर राज्यके ७३४ वर्गमीलमें ९२५५३ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ८ लाख रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको लगभग ६० हजार राज्यकर दिया जाता है। इसमे अलग अलग कर देनेवाले १७ तालुकदार हैं।

## लाठी।

जेतपुरके रेलवे स्टेशनसे ५३ मील और जितलसर जंक्शनसे ५६ मील पूर्व लाठीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड प्रदेशके गोहेलवार प्रान्तमें देशी राज्यकी राजधानी लाठी है।

रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दूर लाठी कसबा है। लाठीमें ठाकुर साहबका महल, एक धर्मशाला, अस्पताल, स्कूल और पोष्ट आफिस है।

लाठीका राज्य–यह राज्य काठियावाड़के चौथे दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। राज्यमे ऊख और कपास अधिक होती है। सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय लाठी राज्यके ४८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८ गाँव, और ६८०४ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ७४००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे बडोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको २००० रुपया राज्यकर दिया जाता है।

लाठीके ठाकुर साहब गोहेल राजपूत हैं। लोग कहते हैं कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत सेजाक नामक अपने प्रधानके अधीन उस देशमे बसे। सेजाकके ३ पुत्र थे, जिनमेंसे रानोजीके वंशधर भावनगरके ठाकुर, सारङ्गजीके वंशधर लाठीके ठाकुर और शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर हैं। वर्तमान लाठीनरेशका नाम ठाकुरसाहब सूरसिंहजी हैं।

## पालीटाणा।

लाठीके रेलवे स्टेशनसे २४ मील पूर्व धोला जंक्शन है, जहाँसे उत्तर ७२ मीलकी एक रेलवे लाइन वाढ़वान जंक्शनको गई है। धोलाके स्टेशनके पास भावनगरके ठाकुर साहबकी धर्मशाला है।

धोला जंक्शनसे १३ मील ( जितलसर जक्शनसे ९३ मील ) पूर्व और सिहोरके स्टश-नसे ५ मील ( भावनगरसे १९ मील ) पश्चिम सोनगढका रेलवे स्टेशन है। सोनगढ गोहेलवार सबडिवीजनका सदर स्थान है। सोनगढसे १४ मील दक्षिण एक अच्छी सडक पालीटाणा कसबेको गई है।* बम्बई हातेके काठियावाड देशके गोहेलवार प्रांतमें शत्रुंजय नामक प्रसिद्ध पहाडीकी पूर्वी नेवके पास ( २१ अंश, ३१ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अश, ५२ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमे ) एक देशी राज्यकी राजधानी पालीटाणा है। पालीटाणा कसबेसे ७० मील दक्षिण–पश्चिम सूरत शहर, १०५ मील पूर्व कुछ उत्तर बडोदा शहर, १२० मील पूर्वोत्तर अहमदाबाद शहर और लगभग २०० मील दक्षिण कुछ पूर्व बम्बई शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय पालीटाणा कसबेमे १०४४२ मनुष्य थे, अर्थात् ६५८६ हिन्दू, १९५७ जैन, १८७८ मुसलमान, २० कृस्तान और १ पारसी।

पालीटाणामें वहाँके ठाकुर साहबका महल बना है और स्कूल, अस्पताल और डाकखाना है।

पालीटाणाका राज्य—पालीटाणाका राज्य काठियावाडके गोहेलवार प्रान्तमें काठियावाडके दूसरे दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। उस राज्यमें ऊख, कपास और गल्ले आधिक होते है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पालीटाणा राज्यके २८८ वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसबा, ८६ गाँव, १०४८६ मकान और ४९२७१ मनुष्य थे, अर्थात् ४२९५५ हिन्दू, ३५८१ मुसलमान और २७३५ दूसरे। पालीटाणाके राज्यसे लगभग २००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे १०३६० रुपया बडोदाके गायकवाड और जूनागढके नव्वाबको राज्यकर दिया जाता है। ठाकुरसाहबका फौजी बल लगभग ४५० आदमीका है। पालीटाणा राज्यकी शत्रुंजय पहाडीका वृत्तान्त नीचे देखिये।

पालीटाणाके ठाकुर गोहेल राजपूत हैं। कहते है कि सन् १२६० में सेजाक नामक गोहेल राजपूतके अधीन उस जातिके लोग उस देशमे बसे। सेजाकके ३ पुत्र थे, जिनमेंसे बड़े पुत्र रानोजीके वशधर भावनगरके ठाकुर. सारङ्गजीके वंशधर लाठीके ठाकुर और तीसरे पुत्र शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर हैं। ठाकुरसाहब सूरसिंहजीके देहान्त होनेपर वर्तमान पालीटाणा नरेश ठाकुरसाहब मानसिंहजी, जिनकी अवस्था लगभग २७ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए।

## शत्रुंजय पहाड़ी।

पालीटाणा कसबेसे १½ मील पश्चिम पालीटाणाके राज्यमें शत्रुंजय पहाड़ी है। कसबेस पहाडीके पास तक सडकके बगलेंमें वृक्ष लगे हुए हैं। जैन लोगोकी ५ पवित्र पहाडियाँ हैं,–काठियावाड़में शत्रुजय और गिरनार, राजपूतानेमें आबू, मध्य भारतमे ग्वालियर और छोटे नागपुर प्रान्तके हजारीबाग जिलेमें पारसनाथ। इन पांचोमें शत्रुञ्जय; जिसका प्रधान देवता आदि नाथ है, सबसे अधिक पवित्र है; इस लिये भारतवर्षके प्रायः सब शहरोंके धनी जैन लोग इसके मन्दिरोंकी सहायता करते आते हैं और पहाडीपर

* सोनगढसे ५ मील पूर्व सिहोरका रेलवे स्टेशन है। वहांसे रेलवे शाखा पालीटाणाको गई है।

मन्दिरोंको बनवाते हैं। शत्रुञ्जय माहात्म्य १४ सर्गकी पुस्तक है। प्रति वर्ष बहुतसे जैन यात्री तथा देखने वाले लोग पहाड़ी पर चढ़ते है। यात्री लोग सबेरे पहाडी पर चढ़ते हैं और उसी दिन दर्शन या पूजन करके लौट आते है. क्योंकि उस पवित्र पहाड़ीपर रसोई बनाना और सोना जैन लोगोंके मतमें निषेध है। बहुतेरे जैन लोग उस पर भोजनभी नहीं करते। पहाडी पर चढ़नेके लिये वहाँ झंपान, जिसमें ४ कुली लगते हैं, बहुत मिलते हैं।

शत्रुञ्जय पहाडी समुद्रके जलसे १९८० फीट ऊँची है। पहाड़ीकी चढ़ाईके मार्गमें और खास करके आदिनाथके मन्दिरके पीछे बहुतसी छोटी कोठरियों तथा ताकोंमे मार्बुलके तखते पर जोडे चरणचिह्न बने है, जिनको निर्धन जैनोंने बनवाया था। मार्गमें बेडौल पत्थरकी सीढ़ियाँ है। किसी किसी जगह दुरुस्त सीढियाँ बनी हुई है। जगह जगह विश्रामके लिये मकान बने हैं। बहुत जगह पहाड़ीका बगल बहुत खडा है। जमीनसे कुछ ऊपर हनूमानजीका एक छोटा मन्दिर है। उस मन्दिरके पाससे ऊपरको दो राह गई हैं,–एक दहिनी ओर पहाडीकी उत्तरी चोटीको और दूसरी बाई ओर बीच वाली घाटीसे होकर दक्षिणी चोटीको। दहिनेकी राहसे कुछ ऊपर जाने पर एक मुसलमानी पीरका दरगाह मिलता है। हनूमान्‌जीके मन्दिरके होनेसे हिन्दू लोग और उस दरगाहके होनेसे मुसलमान लोग उस जैन पहाडीको अपने अपने मतका कह कर उसका आदर करते हैं।

पहाडीके ऊपर दो चिपटे शिखर हैं। दोनों शिखरोंके बीचमें एक घाटी है। प्रत्येक शिखर लगभग ३५० गज लम्बा है। घाटी और दोनो शिखर दृढ दीवारसे घेरे हुए है। दीवारोंमें गोली चलाने योग्य भवांरियाँ बनी हुई है। बगलमें फाटक हैं। घेरेके भीतर अलग अलगके प्रधान मन्दिरोंके घेरेके १९ फाटक हैं। उनमें एक एक प्रधान मन्दिरके साथ अनेक छोटे मन्दिर हैं। सब फाटक रातमें बन्द कर दिये जाते हैं। यह पहाडी जैन मन्दिरोंका एक शहर है, क्योंकि सिवाय चन्द तालावोंके फाटकके भीतर मन्दिरोंके अतिरिक्त कोई दूसरी मशहूर वस्तु नहीं है। उसमें सैकड़ों जगह जैन मन्दिर बने हुए हैं। शिखरकी दीवार पर चढ़नेसे दक्षिण ओर शत्रुञ्जय नदी देख पडती है। पहाड़ीका सम्पूर्ण शिर जैन मन्दिरोंसे परिपूर्ण है, जिनमें आदिनाथ, कुमारपाल, विमलशाह, संप्रतिराज और चौमुख मन्दिर मुख्य हैं। उनमेंसे चौमुख मन्दिर सब मन्दिरोंसे ऊंचा है, वह २५ मील दूरसे पहचाना जा सकता है।

एक घेरेके मध्यमे चौमुख अर्थात् चार मुख वाला जैन मन्दिर है। वह मन्दिर २ फीट ऊँचे चबूतरे पर लगभग ६८ फीट लम्बा और ५८ फीट चौडा बना हुआ है, किन्तु उसका अगवास कुछ दूर तक फैला है। मन्दिरके पूर्व मण्डप है, जिसके पश्चिम ३१ फीट लम्बा और इतनाही चौडा अन्तरालय, अर्थात् एक कमरा है, जिसके दोनो बगलोंमे चबूतरे पर एक एक द्वार बने हुए है। अन्तरालयमें १२ स्तम्भ लगे है। उसकी छत गुम्बजदार है। अन्तरालयसे होकर गर्भगृहमें, जो २३ फीट लम्बा और इतनाही चौडा है, जाना होता है। उसमें मूर्त्तिके सिंहासनके कोनोंके पास ४ विचित्र खम्भे लगे हैं। फर्शसे ५६ फीट ऊँचा विमान अर्थात् देवताके रहनेका स्थान है। चारोओर ४ बडे द्वार हैं, अर्थात् १ अन्तरालयमें और तीन देवढियोंमें चबूतरे पर। गर्भगृहकी दीवार, जो विमानको थांभती है, बहुत मोटी है, उसमें अनेक छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। बड़े मन्दिरोंके फर्शमे नील,

श्वेत तथा भूरे रङ्गके सुन्दर मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए है। सीढ़ियाँ उत्तर बगलपर विमानके ऊपरके मञ्जिलको गई हैं। गर्भगृहमें २ फीट ऊँचा, १२ फीट लम्बा और इतनाही चौडा श्वेत मार्बुलका सिंहासन, अर्थात् चबूतरा है। सिंहासन पर श्वेत मार्बुलकी बनी हुई १० फीट ऊँची आदिनाथकी ४ मूर्त्तियाँ पलथी मारकर बठी है। गर्भगृहके चारोंओरके द्वारोंमेंसे प्रति द्वारकी ओर एक मूर्त्तिका मुख है, इस लिये वह मन्दिर चौमुख मन्दिर कहलाता है। मारवाड़से लाकर मार्बुल उस मन्दिरमें लगाया गया था। लोग कहते है कि इस मन्दिरमें १३५ मूर्त्तियाँ हैं। बहुतसी मूर्त्तियोंके भौंओं और छातियोंपर बेशकीमती रतन और कंधाओं, केहुनियों, ठेहुनों तथा शिरके मुकुटपर सोनेके पत्तर जडे हुए हैं। उस घेरेमें चौमुख मन्दिरके अतिरिक्त अन्य बहुत छोटे मन्दिर हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि इस घेरेके भीतरके कई मन्दिर राजा विक्रमके समयमें बने थे; किन्तु यह नहीं निश्चय होता है कि वह उज्जैनका विक्रम, अथवा लगभग सन् ५०० ईस्वीका हर्ष विक्रम या कोई अन्य विक्रम था। लेखोसे विदित होता है कि सवत् १६७५ ( सन् १६१९ ई० )में सुलतान नूरुद्दीन जहाँगीर, प्रिंस सुलतान खुशरू और प्रिंस खुर्रमके समयमें शनिवार, वैशाख सुदी १३ सोमजी और उसकी स्त्री रजाल देवीने आदिनाथके चार मुख वाले मन्दिरको बनवाया, अर्थात् अहमदाबादके सेवा सोमजीने मन्दिरको वर्तमान शकलमें फिर बनवा दिया।

वैज्ञानिक लोग अनुमान करते हैं कि शत्रुंजयके मन्दिरोंमेंसे चन्द मन्दिर ११ वीं सदीके हैं। बाकी सब उसके पीछेसे अब तकके बने हुए है, किन्तु उनमेंसे बहुत मन्दिर और प्रसिद्ध मन्दिरोंमेंसे चन्द मन्दिर १०० वर्षके इधरके बने हुए हैं।

एक स्थानमें इतने मन्दिरोंका जमाव हिन्दू अथवा बौद्ध लोगोंके किसी तीर्थमे नहीं है। यद्यपि काशी और भुवनेश्वरमें हिन्दुओंके बहुतसे मन्दिर और सांची, पेशावर इत्यादिमें बौद्धोंके बहुत स्तूप और विहार हैं, किन्तु वे छितराये हुए हैं, अर्थात् शहरके समान इकट्ठे नही है। जैन लोग प्राय करके अपने मन्दिरोंको इकट्ठे एक झुण्डमें बनवाते हैं।

शत्रुंजयपर सन्नाटा रहता है, अर्थात् निर्जन स्थान है। वहाँ कभी कभी प्रातःकालमें बहुत थोडे समय तक घण्टी या नगाड़ेका शब्द सुन पड़ता है और कोई विशेष दिनोंमे बड़े मन्दिरोंसे गीतका शब्द। जैन मतके चन्द साधु वहाँके मन्दिरोंमें सोते हैं और वहाँ अपनी नित्य-क्रिया करते हैं और चन्द नोकर, जो बड़े परिश्रम और सावधानीसे मन्दिरो और स्थानोंको साफ करते है तथा वहाँके कबूतरोंको खिलाते हैं, वहाँ सर्वदा निवास करते हैं। यात्री लोग, पूजा अथवा दर्शन करके उसी दिन लौट जाते हैं, क्योंकि उस पवित्र पहाड़ीपर, जो देवताओंका शहर है, सर्व साधारणको रसोई बनाना, शयन करना तथा भोजन करना भी निषेध है किन्तु बहुतेरे लोग अपने साथ खानेकी वस्तु ऊपर ले जाते हैं। मन्दिरोंपर तथा उनके आस पास बहुतसे कबूतरों, पण्डुकों तथा रुक्खियोंके झुण्ड रहते हैं। इनके अलावे मयूर इत्यादि पक्षी भी वहाँ हैं।

जैनधर्म—पुराणोंमें किसी किसी जगह जैनधर्मका वृत्तान्त मिलता है। जैनी लोगोंके नीचे लिखे हुए २४ तीर्थकर अर्थात् देवता हैं,–१ ऋषभनाथजी, जिनको आदिनाथ भी कहते

है, २ अजितनाथ, ३ सम्भवनाथ, ४ अभिनन्दननाथ, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभनाथ, ७ सुपार्श्वनाथ, ८ चन्द्रप्रभनाथ, ९ पुष्पदन्तनाथ, १० शीतलनाथ, ११ श्रेयांशनाथ, १२ वासुपूज्यनाथ, १३ विमलनाथ, १४ अनन्तनाथ, १५ धर्मनाथ, १६ शान्तिनाथ, १७ कुंथुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० सुव्रतनाथ, २१ नमिनाथ, २२ नेमीनाथ, २३ पार्श्वनाथ और २४ वाँ महावीर स्वामी । जैनी लोगोंके मन्दिरोंमें इन्हीं तीर्थकरोंकी मूर्त्तियाँ रहती हैं। किसी मन्दिरमें इनमेंसे चन्दकी मूर्त्तियाँ और किसीमें चौवीसों तीर्थकरोंकी प्रतिमा हैं।

जैनियोंके ग्रन्थमे लिखा है कि चौवीसवें तीर्थकर महावीरका देहान्त विक्रमीय संवत्से ४७० वर्ष ( सन् ईस्वीसे ५२७ वर्ष ) पहिले हुआ था; अर्थात् गौतम बुद्धके समयमें महावीर विद्यमान थे । जैनी लोग कहते हैं कि २३ वाँ तीर्थकर पार्श्वनाथसे२५० वर्ष पीछे महावीरका देहान्त हुआ था ।

जैनी लोगोंकी पुस्तकोंमें लिखा है कि महावीर राजा सिद्धार्थके पुत्र थे । राजाने पुत्रका नाम वर्द्धमान रक्खा था और उनको महावीरकी पदवी दी थी । महावीरकी प्रियदर्शना नामक पुत्रीका व्याह कुमार जमालीसे हुआ था । महावीरने अपने माता पिताकी मृत्यु होजानेके पश्चात् अपने ज्येष्ठ भ्राता नन्दिवर्द्धनको राज्य भार देकर यतिधर्मका आश्रयण लिया और १२ वर्ष इन्द्रियोंका संयम करके जिनत्वको प्राप्त किया । महावीरके धर्म उपदेशसे मुग्ध होकर १००००० लोग श्रावक अर्थात् गृहस्थ जैन और १४००० लोग श्रमण अर्थात् विरक्त जैन होगये । उनके ११ प्रधान शिष्य महा पण्डित थे । ७२ वर्षके वयमें महावीरका देहान्त हुआ । बहुत लोगोंका मत है कि बौद्ध धर्मके भारतवर्षसे उठ जानेपर महावीर कृत जैनधर्मका प्रचार हुआ ।

जैनियोंके मतमें प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द ये ४ प्रमाण हैं । उनके मतमें जगत्के मूल तत्त्व ९ हैं—१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव ( कर्मका बन्धन), ६ संवर, ७ बंध, ८ निर्जरण ( कर्मका त्याग ) और ९ वाँ मुक्ति ( अष्ट कर्मोंका क्षय )। कुछ लोग इनमेंसे ७ तत्त्वोंको मानते हैं ।

नैयायिक लोग अनुमान प्रमाणसे कहते हैं कि पृथ्वी आदि सब वस्तुका कोई कर्त्ता है; क्योंकि जब पदार्थ है तब उसका कर्त्ता अवश्य होगा, किन्तु जैनीलोग इस रूपसे अनुमान नहीं करते; उनके मतमें जगत्की उत्पत्ति नहीं है, न कोई ईश्वर है । उनके मतमें संसारी और मुक्त दो प्रकारके जीव हे । वे लोग अपने तीर्थकरों और सिद्ध देवताओंको मानते हैं।

बौद्धोंके समान जैनियोंमें भी अहिंसा परम धर्म है । किसी प्राणीका वध नहीं करना, यही जैन धर्मकी सार नीति है। जानवरोंपर जैन लोगोंकी बड़ी दया है । उन्हींके उद्योगसे स्थान स्थान पर जानवरोंके अस्पताल तथा पशुशालाये बनी हुई हैं । बहुत बातोंमें बौद्धों और जैनोंका मत मिलता है । बौद्धोंके समान जैनी लोग भी ईश्वरकी स्थितिको नहीं स्वीकार करते हैं । उनके मतमें मन्दिर बना कर जैन तीर्थकरकी प्रतिमा स्थापित करना उत्तम कर्म है; चाहे प्रतिमाओंकी पूजा हो अथवा न हो । उन्होंने बहुतसे उत्तम मन्दिर, जिनमे मार्बुलका बहुत काम है, बनवाये हैं । बहुतेरी जैन प्रतिमाओंके भौंहोपर और छातीके बीचमे चाँदी अथवा सोने पर हीरे जड़े रहते हैं; और किसी किसीके कंधो, केहुनियों, ठेहुनो तथा शिरके मुकुट पर सोनेके पत्तर जड़े रहते हैं।

जैनियोंमें श्वेताम्बर और दिगम्बर दो प्रकार होते है। श्रावक श्वेताम्बरोंमें ओसवाल और पोरवाल जातिके बनिये और दिगम्बरोंमें अग्रवाला सरावगी जातिके बनिये बहुत हैं। दिगम्बर जैनियोकी देव मूर्त्तियोकी देहमे वस्त्रका चिह्न नहीं रहता। श्वेतांबर लोग अपने तीर्थकरोकी पूजा करते है और अपने मतवालोंका बडा सम्मान करते है। जैन लोग उदारता, सुशीलता, पुण्य और तप इन ४ को मुख्य धर्म मानते हैं।

जैन श्रमणोंका कर्तव्य कार्य आठवाँ तपस्या नीचे लिखे हुए ५ कर्म है;-( १ ) चैत्य अर्थात् देवमन्दिरमें पाठ करना, ( २ ) साधुओंकी वन्दना करना, ( ३ ) वार्षिक परिभ्रमण करना, ( ४ ) परस्पर स्वधर्मकी चर्चा करना और ( ५ ) इन्द्रियोंका दमन करना। श्रमण लोग क्षमाशील, सग रहित, केश संस्कारसे रहित और भिक्षान्न भोजी होते हैं। वे लोग इसलिये अपने मुखपर पतला कपडा दिये रहते हैं कि उडनेवाला कोई कीड़ा मुखमे न पड़ जाय। वे एक झाड़ू अपने हाथमें लिये रहते हैं, उसीसे जगह बहार कर जीवोंको बचा कर बैठते हैं तथा भूमिको बहार कर मल मूत्र त्याग करते हैं। उनमें बहुतेरे लोग ऐसे होते हैं कि जीव हिंसाके भयसे न तो रसोई बनाते हैं न किसीको अपनी रसोई बनानेकी आज्ञा देते हैं, जो लोग अपने निमित्त रसोई बनाते हैं, उन्हींसे वे माँग कर उसको भोजन करते है। वे माँड और चावल धोये हुए पानीसे जलका काम निबाह लेते है, क्योंकि जलमें सूक्ष्म जीव रहते हैं, माँड़में कोई जीव नहीं है।

जैन लोग सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४१६६३८ थे, वे लोग राजपूताना और पश्चिमी भारतमें बहुत हैं।

## भावनगर।

सोनगढ़ के रेलवे स्टेशन से ५ मील पूर्व सिहोर का रेलवे स्टेशन है। स्टेसनसे १½ मील दक्षिण सिहोर कसबा है, जो एक समय राजधानी था। सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिहोर कसबेमें १०००५ मनुष्य थे; अर्थात ७६७८ हिन्दू, १४१३ मुसलमान, ९१३ जैन और १ कृस्तान। सिहोरमें कई एक देव मन्दिर बने हुए हैं।

सिहोरके रेलवे स्टेशनसे १४ मील ( धौला जंक्शनसे ३२ मील और जितलसर जंक्शनसे ११२ मील ) पूर्व भावनगरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड़ देशमें काठियावाड प्रायद्वीपके पूर्वी किनारेके पास ( २१ अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १२ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें ) कांबेकी खाडी पर गुजरातके भड़ौंच शहरसे लगभग ५० मील पश्चिम कुछ उत्तर एक देशी राज्यकी राजधानी भावनगर है, जिसको लोग भाऊनगरभी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भावनगर कसबेमें ५७६५३ मनुष्य थे, अर्थात् ३१११६ पुरुष और २६५३७ स्त्रियाँ। इनमें ४२०२१ हिन्दू, १०२६७ मुसलमान, ४७६१ जैन, ३०८ कृस्तान और २९६ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ६४ वाँ और बम्बईके गवर्नरके अधीनके देशी राज्योंमें पहिला कसबा है।

भावनगरमे कोई पुरानी वस्तु दर्शनीय नहीं है। हालमें बहुत सुन्दर इमारतें बनी है। वहाँ ठाकुर साहबका महल, कई एक सुन्दर बाग, हौज, सूत कातने और कपड़े बिननेके मिल (कल कारखाने), एञ्जनके छापेखाने, १ बीमारखाना, पानीकी कल, अस्पताल और कई स्कूल हैं। भावनगरमें बडी तिजारत होती है। वहाँके बन्दरगाहसे बहुत रुई गाँठे बांधकर काठियावाड तथा अन्य देशोंमे भेजी जाती हैं।

भावनगरका राज्य—काठियावाडके पूर्वी किनारेके पास भावनगरका राज्य है। राज्यमें कपास, नमक और गल्ले पैदा होते हैं। तेल, कपडे और पीतल तथा तांबेके बर्तन तैयार होते हैं। राज्यमें अनेक बन्दरगाह हैं, जिनमेंसे करोड़ों रुपयेके माल जाते आते हैं। ११७ स्कूलोंमें लगभग ६३०० लडके पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भावनगर राज्यके २८६० वर्गमील क्षेत्रफलमें ६५९ गाँव और ४००३२३ मनुष्य थे; अर्थात् ३४६०९४ हिन्दू, ३७०४० मुसलमान और १७१८९ अन्य।

काठियावाडमें भावनगरका राज्य प्रथम दर्जेके राज्योंमेसे एक तथा सब राज्यांसे अधिक प्रसिद्ध है। वहाँके ठाकुर साहबको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। राज्यका सैनिक बल ८५ पुलिसके सवार, ५०० पैदल और २७६५ अन्य मनुष्य हैं। राज्यसे लगभग ३४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे १२८०६० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको और १५४४९० रुपया बडोदाके गायकवाड और जूनागढ़के नवाबको दिया जाता है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत अपने प्रधान सेजाकके अधीन उस देशमे बसे। सेजाकके ३ पुत्र थे;—रानोजी, सारङ्गजी और शाहजी, जिनमेंसे रानोजीके वंशधर भावनगरके, सारङ्गजीके वंशधर लाठीके और शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर साहब हैं। सन् १७२३ में भाऊसिंहने भाऊनगर अर्थात् भावनगरको बसाया। भाऊसिंहके पुत्र रावल अखेरजीकी मृत्यु होने पर उनके पुत्र बख्तासिंह सन् १७७२ में राज्यके उत्तराधिकारी हुए। भाऊसिंह, रावल अखेरजी और बख्तासिंहने देशकी सौदागरीकी उन्नति करने और समुद्रके डकैतोंके विनाश करनेमें बडा परिश्रम किया। बख्तासिंहने भावनगर राज्यको बहुत बढ़ाया।

भावनगरके वर्तमान नरेश ठाकुर साहब सर तख्तासिंहजी यशवन्तसिंहजी जी. सी. एस. आई. जिनका जन्म सन् १८५८ में हुआ था, राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढ़े हैं, उनके नाबालिग रहनेके समय एक अङ्गरेजी अफसर और पुराना दीवान गौरीशङ्कर सी. एस. आई. ने राज्यका प्रबन्ध किया था। भावनगरके वर्तमान ठाकुर साहबने राजकोटके कालिजके एक बाजू और प्रिंसपलके मकान बनानेके लिये १००००० रुपया और खैराती फण्डमे ५०००० रुपया दिया था।

# लिंबड़ी ।

भावनगरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील पश्चिम धौला जक्शन और धौला जक्शनसे ५५ मील उत्तर लिंवड़ीका रेलवे स्टेशन है । काठियावाडके झालावार प्रान्तमे एक छोटी नदीके उत्तर किनारेपर एक देशी राज्यकी राजधानी लिंवडी है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लिंवडी कसबेमें १३४९७ मनुष्य थे, अर्थात् ८६३१ हिन्दू, ३४२७ जैन, १४२७ मुसलमान, ९ पारसी और ३ क्रुस्तान ।

लिम्बड़ीमें ठाकुर साहवका सुन्दर महल बना है और एक अस्पताल, एक स्कूल और ठाकुर साहवकी कचहरियां हैं ।

लिम्बडीका राज्य–काठियावाडके झालावार विभागमें लिवडी राज्य है । राज्यकी भूमि समतल है । एक छोटी नदी राज्यमे होकर बहती है । राज्यमे कपास और गल्ले होते हैं । सन् १८८३ मे राज्यके १७ स्कूलोंसे १३१७ लडके पढ़ते थे ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लिवडी राज्यके ३४४ वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसबा, ४३ गाँव और ४३०३३ मनुष्य थे, अर्थात ३३५५६ हिन्दू, ४६३२ मुसलमान और ४८७५ अन्य ।

लिंवडीका राज्य काठियावाडके दूसरे दर्जेके राज्योमेसे एक है । वहाँके ठाकुर साहव झाला राजपूत हैं । उनको ९ तोपोंकी सलामी मिलती है । वर्त्तमान लिम्बडी नरेश ठाकुर साहव सर यशवतसिंहजी फतहसिंह के० सी० आई० ई० राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढे हैं ।सन् १८७६ में मवालिग होनेपर उनको राज्यका पूरा अधिकार मिल गया । सन् १८८७ में उनको के० सी० आई० ई० की पदवी मिली । लिम्बड़ीके राज्यसे २६४००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेसे अंगरेजी गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवावको ४५५२० रुपया राज्यकर दिया जाता है । उनका सैनिक बल १६० आदमीका है ।

---

# उन्तीसवाँ अध्याय ।



## ( बम्बई हातेमें ) पाटन, राधनपुर, वीसनगर, वाड-नगर, सिद्धपुर, पालनपुर, ( राजपूतानेमें ) आबू पहाड़ और सिरोही ।

लिंवडीके रेलवे स्टेशनसे १७ मील उत्तर वाढ़वान जंक्शन, वाढ़वानसे ३९ मील पूर्वोत्तर वीरम गाँव जंक्शन और वीरमगांवसे ४१ मील पूर्वोत्तर ( अहमदावाद जंक्शनसे

४३ मील उत्तर ) महसानामें रेलवेका जंक्शन है। महसानासे २७ मील दक्षिण और अहमदावादसे १६ मील उत्तर कलोलका रेलवे स्टेशन है, जिससे १४ मील पश्चिम वडोदा राज्यमें काडी कसवा है; जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १६३३१ मनुष्य थे।

महसानासे रेलवेकी एक लाइन पश्चिमोत्तर पाटनको; दूसरी लाइन पूर्वोत्तर बीसनगर, वाड़नगर होकर खेरालूको, तीसरी लाइन उत्तर बाद पूर्वोत्तर सिद्धपुर होकर अजमेर इत्यादिको; चौथी लाइन दक्षिण-पूर्व अहमदावाद इत्यादिको और पाँचवी लाइन दक्षिण-पश्चिम वीरमगाँव, वाढ़वान, वंकानेर, राजकोट और जितलसर जक्शन होकर पोरवन्दर तथा विरावल वन्दरको गई है। इनमेंसे महसानासे पाटन, खेरालू और वीरमगाँव जानेवाली ये ३ लाइने वड़ोदाके महाराजकी वनवाई हुई हैं।

महसाना जंक्शनसे २५ मील पश्चिमोत्तर पाटनका रेलवे स्टेशन है। गुजरात देशके वड़ोदा राज्यके काड़े विभागमे ( २३ अंश, ५१ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १० कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें ) सरस्वती नदीके किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान पाटन कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पाटन कसबेमें ३२६४६ मनुष्य थे, अर्थात् १५७२४ पुरुष और १६९२२ स्त्रियां। इनमें २२७८६ हिन्दू, ५८९९ मुसलमान, ३९२९ जैन; १६ पारसी, १० एनिमिष्टिक, अर्थात् जङ्गली जातियाँ और ६ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह वड़ोदाके राज्यमे दूसरा कसबा है।

कसबेके बगलोंमें मोटी दीवार बनी हुई है। पाटनमें वड़ोदाके महाराजकी कचहरी, अस्पताल, कई छोटे स्कूल, कई एक देवमन्दिर और १०८ से अधिक जैन मंदिर है। जैनोंके पुस्तकालयोंके लिये अब तक पाटन प्रसिद्ध है। कसबेमें तलवार, वर्छी, छुरी, कपडे, रेशमी वस्त्र और मिट्टीके वर्तन बहुत बनते है।

इतिहास—पाटन पहिल अनहिलवाडा करके प्रख्यात था ! यह गुजरातके सबसे अधिक पुराने और सबसे अधिक प्रसिद्ध कसबोमेंसे एक है। अनहिलवाडा सन् ७४६ से सन् १२९४ तक तोमर राजपूतोंकी राजधानी था; मुसलमानोंके अधिकारके समय भी यह लगातार प्रसिद्ध बना रहा, अब तक कसबेके आसपास पुरानी कारीगरीकी वहुतसी निशानियाँ देखनेमें आती हैं। सन् १०२४ में गजनीके महमूदने सोमनाथको जानेके समय अनहिलवाड़ाको लेलिया था और १३ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीके बादशाह कुतुबुद्दीनने अनहिलवाड़ाके राजा भीमदेवको परास्त किया, किन्तु सन् ७४६ से सन् १२९७ तक अनहिलवाड़ाका राज्य राजपूत राजाओं के अधिकारमे रहा। सन् १२९७ में मुसलमानोने अनहिलवाड़ाके राज्यको ले लिया। नये पाटन कसबेका बड़ा भाग महाराष्ट्रोंका बनाया हुआ है।

# राधनपुर ।

पाटनके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५० मील पश्चिम ( खारागोड़ाके रेलवे स्टशनसे ४० मील उत्तर ) २३ अश, ४९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, ३८ कला ४० विकला पूर्व देशांतरमें बम्बई हातेके पालनपुर एजेंसीमें देशी राज्यकी राजधानी राधनपुर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राधनपुर कसबेमें १४१७५ मनुष्य थे, अर्थात् ६७२३ हिन्दू, ४६६० मुसलमान और २७९२ जैन ।

राधनपुर कसबेके चारोओर १५ फीट ऊँची और ८ फीट मोटी दीवार है । दीवारम अबांरियाँ बनी हुई हैं, चारोंओर ८ फाटक हैं । शहर पनाहके भीतरका किला, जिसमे राधनपुरके नब्बाव रहते है, दीवारसे घेरा हुआ है । कसबेमें अस्पताल और स्कूल बना है और बड़ी सौदागरी होती है । रुई, गेंहू, चना इत्यादि वस्तु राधनपुरसे अन्यत्र भेजी जाती ह और चीनी,चावल,तंबाकू,कपडा और हाथीदांत इत्यादि चीजें अन्य जगहोंसे वहाँ आती है ।

राधनपुरका राज्य—पालनपुर एजेंसीमें राधनपुर प्रथम दर्जेका राज्य है । देश समतल है । ३ छोटी नदियाँ, जो ग्रीष्म कालमें सूख जाती है, राज्यमे होकर बहती है । कूपोंका पानी १० फीटसे ३० फीट तक नीचे है, कच्छके नमकदार रनके पास होनेके कारण गहिरे कूपोंका पानी खारा और कम गहिरे कूपोंका पानी मीठा होता है । सन् १८८३ मे राज्यके ९ स्कूलोंमें ५७२ विद्यार्थी पढ़ते थे ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राधनपुर राज्यके ११५० वर्गमील क्षेत्रफलके२ कसबे और १५६ गावोंमे ९८१२९ मनुष्य थे, अर्थात् ८०५८८ हिन्दू, ११७५७ मुसलमान और ५७८४ अन्य। राधनपुरके राज्यसे लगभग६०००००रुपया मालगुजारी आती है। वहाँके नब्बावको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। उनका सैनिक बल लगभग २५० सवार और ३६० पैदलका है ।

इतिहास—राधनपुरका राज्य बाबी खानदानके पठानके अधिकारमे है । वह पहिले घाघेलोंके अधिकारके समय लुनवाडा कहलाता था, जो पीछे गुजरातके मुसलमानोंके अधीन फतहखाँ बलूचीके अधिकारमे हुआ । कहा जाता है कि उसी खानदानके राधनखाँके नामसे उसका राधनपुर नाम पडा ।

पहला बाबी १६ वीं सदीमे हुमायूंके साथ हिन्दुस्तानमे आया । १७ वीं सदीमें शाह जहाँके राज्यके समय बहादुरखां बाबी थारडका फौजदार बनाया गया । उसका पुत्र शेरखाँ बाबी जो गुजरात देशका जानकार था, शाहजादे मुराद बखसकी सहायता देनेके लिये गुजरातमें भेजा गया । उसके पुत्र जाफरखांने सन् १६९३ में राधनपुर, सामी, मुञ्जपुर और

तेरवाड़ाकी फौजदारीको प्राप्त किया । वह सन् १७०४ में बीजापुरका और सन् १७०६ में पाटनका गवर्नर बनाया गया । उसका पुत्र खांजहां राजनपुर, पाटन, वाडनगर, वीसनगर, बीजापुर खेरालू इत्यादिका गवर्नर हुआ । खांजहाँके पुत्र कमालुद्दीनखांने औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् अहमदाबादके सूबेको मुगलोंसे छीन लिया । उसीकी हुकूमतके समय उस खान्दानके शेरखां बाबीने जूनागढ़के राज्यपर अपना अधिकार कर लिया, जिसके वंशधर जूनागढ़के वर्तमान नवाब है । सन् १७५३ में रघुनाथराव पेशवा और दामाजी गायकवाड़ने अहमदाबादपर आक्रमण करके कमालुद्दीनको परास्त किया । उस समय उन्होंने उसको राधनपुर, सामी, मुञ्जपुर, पाटन, वीसनगर, वाड़नगर, बीजापुर, थराड और खेरालूका जागीरदार बनाया । उसके पीछे दामाजीने कमालुद्दीनके उत्तराधिकारियोंसे राधनपुर, सामी और मुञ्जपुरको छोडकर सब जागीरोंको छीन लिया । पीछे राधनपुर अङ्गरेजी गवर्नमेंटके अधीन हुआ । सन् १८१६ और १८२० की महामारीसे राधनपुर कसबेके लगभग आधे निवासी मर गये । सन् १८२२ में १७००० रुपया राधनपुरका राज्यकर मुकरर हुआ, जिसको अङ्गरेजी सरकारने सन् १८२५ में माफ कर दिया । इस समय नवाब महम्मद बिसमिल्लाखां, जिनकी अवस्था ५० वर्षकी है, राधनपुरके नवाब है ।

## बीसनगर ।

महसाना जंक्शनसे १३ मील पूर्वोत्तर वीसनगरका रेलवे स्टेशन है । बड़ोदा राज्यके काड़ी विभागमे सबडिबीजनका सदर स्थान वीसनगर एक कसबा है, जिसको ११ वीं या १३ वीं सदीमें विसलदेवने बसाया था ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वीसनगर कसबेमे २१३७६ मनुष्य थे; अर्थात् १८५३० हिन्दू, १६०६ मुसलमान, १२३८ जैन और २ पारसी ।

बीसनगर ६ प्रकारके नागर ब्राह्मणोंमेंसे १ का प्रधान स्थान है, इसमेसे बहुत नागर ब्राह्मण स्वामीनारायणकी सम्प्रदायके हैं । स्वामी नारायण सन् १८२५ ई० के पीछे तक थे । गुजरात और काठियावाड तथा बम्बईमें स्थान स्थान पर उनके मन्दिर बने हुए हैं ।

## बाडनगर ।

बीसनगरसे ८ मील ( महसाना जंक्शनसे २१ मील ) पूर्वोत्तर वाडनगरका रेलवे स्टेशन है । बडोदा राज्यके काडी विभागमें वाडनगर एक पुराना कसबा है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वाडनगरमें १५९४१ मनुष्य थे, अर्थात् १४२७६ हिन्दू, १०३५ मुसलमान और ६३० जैन ।

वाडनगरमें चन्द दिलचस्प खण्डहर है । वहाँके हाटकेश्वर महादेवका मन्दिर दर्शनीय है । वाडनगर नागर ब्राह्मणोंका, जो गुजरात और काठियावाड़में माननीय हैं, प्रधान धर्म स्थान है ।

# सिद्धपुर ।

महसाना जक्शनसे १३ मील उत्तर ऊंझाका रेलवे स्टेशन है। वडोदा राज्यके काडी विभागमें ऊँझा एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ११८८७ मनुष्य थे।

ऊंझासे ८ मील ( अहमदाबादसे ६४ मील ) उत्तर और अजमेर शहरसे ३४१ मील दक्षिण पश्चिम सिद्धपुराका रेलवे स्टेशन है। वडोदाके राज्यके काडी विभागमें ( २३ अंश, ५५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें ) सरस्वती नामक नदीके किनारे पर सिद्धपुर एक पुराना कसवा और प्रसिद्ध तीर्थ है। उसीमें कपिल-देवजीका जन्म हुआ था। उसको लोग मातृगया कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिद्धपुर कसबेमें १६२२४ मनुष्य थे, अर्थात् १२०५३ हिन्दू, ३६६० मुसलमान, ५०० जैन ६ क्रस्तान और ५ पारसी।

रेलवे स्टेशनके पास वडोदाके महाराजकी धर्मशाला है। स्टेशनसे ½ मील सिद्धपुर कसवा है। कसवेके पास सरस्वतीनदी बहती है, जो राजपूतानेमें आवू पहाड़ीसे निकल कर पालनपुर, राधनपुरके राज्य और वडोदा राज्यके पाटन सबडिवीजन होकर १०० मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम बहनेके पश्चात् कच्छके रनमें गिरती है। वह नदी कई मीलों तक पृथ्वीके गर्भमें बह करके राधनपुरके राज्यमें प्रवेश करनेके पहिले फिर प्रकट होजाती है। नदीमें सब जगह हिल जाने लायक पानी है। सिद्धपुरके पास नदीके किनारेपर पक्का घाट बना है। गर्मीके दिनोंमें नदीमे थोड़ा पानी बहता है। लोग पानीमें बैठकर स्नान करते हैं। सिद्धपुरके पास सरस्वतीके किनारोपर और उसके जलमें सैडकों डोड़ सर्प रहते हैं। वे न किसीसे डरते हैं और न किसीको काटते हैं। उनमेंसे कोई कोई स्नानके समय आदमीकी देहमे भी लग जाते है।

सिद्धपुरमे वडोदाके महाराजकी कचहरिया, पुलिस, स्कूल और अस्पताल हैं। वहाँ सदावर्त लगा है, धर्मशालाये वनी हैं और हजारों वर पंडे वसते है। रणछोडजी इत्यादि देवताओंके बहुतसे मन्दिर हैं। वहाँ सरस्वती नदी, रुद्रमहालय, गोविन्दराव तथा माधव-रावका मन्दिर और बिंदुसर ये ४ स्थान प्रधान है,—सरस्वतीके किनारेसे थोड़ीही दूरपर कसबेमें रुद्रमहालयका खडहर है। वहाँ पश्चिमी भारतके प्रसिद्ध पुराने मन्दिरोंमेंसे एक रुद्रेश्वर महादेवका मन्दिर था. जिसको लगभग सन् १३०० ईस्वीमें अल्लाउद्दीनने तोड़ दिया। पंडे लोग कहते है कि उस समय सिरोहीके राजा शिवलिङ्गको अपनी राजधानीमें लेगये, वहाँ उनका नाम सरणेश्वर पड गया, जो वहाँ अब तक विद्यमान हैं। रुद्रमहालयमे अब केवल उस मन्दिरका टूटा हुआ फाटक है। फाटकसे बाहर मुसलमानोंके अधिकारमें

उस समयका एक छोटा कुण्ड और कोठरीके समान दो तीन छोटे खाली मन्दिर हैं। कसबेके बाहर विन्दुसरके मार्गमें एक मन्दिरमें गोविन्दराव और दूसरेमें माधवरावकी सुन्दर मूर्ति है।

सिद्धपुर कसबेसे १ मील दूर बिदुसर है। वहाँ पहुँचनेसे पहिलेही एक स्थानपर एकही पंक्तिमें शिखरदार ३ नये मन्दिर मिलते हैं, जिनमेंसे एकमें शेषशायी भगवान्, दूसरेमें लक्ष्मीनारायण और तीसरेमे राम, लक्ष्मण और सीता है। दूसरे स्थानमें वल्लभकुलवालोंके मन्दिरके निकट एक कोठरीमें कर्दम ऋषि और देवहूतीकी छोटी मूर्त्ति है। तीसरे स्थानमे विन्दुसरके समीप ज्ञानवापी नामक छोटी वावली और छोटे मन्दिरमें सिद्धेश्वर महादेव है। लगभग ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा बिन्दुसर नामक छोटा पोखरा है। उसके चारो बगलोपर नीचे पत्थरकी सीढ़ियाँ और ऊपर पत्थरके फर्श हैं और दक्षिणके किनारेके पास ३ छोटे मन्दिर हैं, जिनमेसे एकमें महर्षि कर्दम और देवहूती, दूसरेमें कपिल मुनि और तीसरेमे गया गदाधरजी हैं। विन्दुसरके किनारेपर बहुतेरे यात्री, जिनकी माता मरगई है, पिण्डदान करते हैं। विन्दुसरके पासही अल्पासरोवर नामक बहुत बड़ा तालाब है। उसके चारों बगलोपर पक्के घाट बने हुए हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—( वनपर्व, २५८ वाँ अध्याय ) राजा युधिष्टिरने कहा कि अब हमलोग मरु देशके उत्तम काम्यक वनमे जाकर विन्दुसर नामक तालाबके तटपर विहार करेंगे। उसके पश्चात् पाण्डव लोग काम्यक वनमे चले गये।

वामनपुराण–( ३५ वाँ अध्याय ) मातृ तीर्थमे जाकर स्नान करनेसे प्रजाकी वृद्धि होती है।

श्रीमद्भागवत—( पहिला स्कन्ध, तीसरा अध्याय ) विष्णु भगवान्के २४ अवतार हैं–( १ ) सनत्कुमार; ( २ ) वाराह, ( ३ ) यज्ञ, ( ४ ) हयग्रीव, ( ५ ) नर नारायण, ( ६ ) कपिलदेव, ( ७ ) दत्तात्रेय, ( ८ ) ऋषभ, ( ९ ) पृथु, ( १० ) मत्स्य, ( ११ ) कच्छ, ( १२ ) धन्वन्तारि, ( १३ ) मोहिनी, ( १४ ) नृसिंह, ( १५ ) वामन, ( १६ ) परशुराम, ( १७ ) व्यास, ( १८ ) रामचन्द्र, ( १९ ) कृष्ण, ( २० ) नारद, ( २१ ) हरि, ( २२ ) हंस, ( २३ ) बुद्ध और ( २४ ) कल्की।

( तीसरा स्कन्ध, २१ वाँ अध्याय ) ब्रह्माजीने कर्दम ऋषिसे कहा कि तुम सृष्टि रचो। ऋषिने सतयुगमें सरस्वती नदीके किनारे पर जाकर विवाहके हेतु हजार वर्षतक तप किया। भगवान्ने प्रकट होकर कहा कि हे महर्षि! ब्रह्माका पुत्र मनु ब्रह्मावर्तमें वसकर सातों द्वीपोंका राज्य करता है। वह परसोंके दिन यहाँ आकर तुमको अपनी पुत्री देजायगा। मैं तुम्हारे घर जन्म लूँगा। भगवान्के कहे हुए दिनमें राजा मनु अपनी पत्नी तथा पुत्रीके साथ रथमें बैठे हुए विन्दुसरके पास कर्दम मुनिके आश्रममें आये। भगवान्ने कर्दम ऋषिके वरदान देनेके समय दया करके अश्रुविन्दु गिराये थे, । उसी दिनसे उस स्थानका नाम विन्दु-

सर होगया था। ( २२ वाँ अध्याय ) राजा मनु और उनकी पत्नी शतरूपाने अपनी पुत्री देवहूतीको महर्षि कर्दमको समर्पण कर दिया। ( २३ वाँ अध्याय ) कर्दमने अपने विहार करनेके लिये योग बलसे इच्छानुसार भूमण्डलमें भ्रमण करनेवाला एक उत्तम विमान प्रकट किया। देवहूतीने पतिकी आज्ञासे सरस्वतीके शिवसरोवरमें स्नान किया। सरोवरसे १००० कन्या निकलकर देवहूतीकी दासी बनीं। महा योगी कर्दमजी अपनी भार्याके सहित विमानमे बैठ सम्पूर्ण भूमण्डलमें भ्रमण करके अपने आश्रममें आये। देवहूतीसे ९ कन्या उत्पन्न हुई। ( २४ वाँ अध्याय ) कुछ दिनोके पश्चात् देवहूतीके गर्भसे भगवान् कपिलजीने जन्म लिया। कर्दमजीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार मरीचि आदि मुनीश्वरोंको अपनी नवो कन्या देदीं। उसके पीछे वह कपिलदेवजीकी प्रदक्षिणा करके वहाँसे चले गये। ( २५ वाँ अध्याय ) कपिलदेवजीने बिन्दुसरोवरपर बसकर अपनी माताको ज्ञान उपदेश दिया। ( ३३ वाँ अध्याय ) वह देवहूतीको आत्मगति दिखाकर उनसे आज्ञा ले वहाँसे ईशान कोणकी ओर ( गङ्गासागर ) में चले गये। वहाँ समुद्रने उनको रहनेका स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोककी शान्तिके निमित्त योग धारण करके उसी स्थानपर विराजते हैं। देवहूती सरस्वतीके तीरपर वास करने लगी और थोडेही कालमें अनन्य गतिको पहुँच गई। वह आश्रम सिद्धपद ( सिद्धपुर ) नामसे विख्यात हो गया।

पद्मपुराण—( उत्तर खण्ड, १४६ वाँ अध्याय ) रुद्रमहालय तीर्थ साक्षात् महादेवजीका रचा हुआ केदार तीर्थके तुल्य है। वहाँ श्राद्ध करनेसे पितर गण रुद्र लोकमें चले जाते हैं। वहाँ स्नान करनेसे मुक्ति हो जाती है। कार्त्तिक अथवा वैशाखकी पूर्णमासीको उस तीर्थमें जानेसे फिर संसारमें जन्म नहीं होता है।

## पालनपुर।

सिद्धपुरसे १९ मील ( अहमदाबादसे ८३ मील ) उत्तर पालनपुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके पालनपुर एजेंसीमें देशी राज्यकी राजधानी और पालनपुर एजेंसीका सदर स्थान पालनपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालनपुर कसबेमें २१०९२ मनुष्य थे, अर्थात् १०१२३ हिन्दू, ७९९३ मुसलमान, २९३५ जैन, २५ पारसी, १२ कृस्तान और ४ यहूदी।

पालनपुर कसबा ३ मील लम्बी दीवारसे, जो १७ फीटसे २० फीट तक ऊँची और ६ फीट मोटी है, घेरा हुआ है। जैनपुरा और ताजपुर नामकी दो शहरतलियाँ हैं। कसबेके मकानोंमें चन्द मकान अच्छे हैं। प्रधान सड़कपर रातमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। इनके अतिरिक्त पालनपुरमें पालनपुरके नव्वावका महल, पोलिटिकल एजेंटकी कोठी, बङ्गला स्कूल, लायब्रेरी, अस्पताल और पोष्टआफिस है। पालनपुर कसबेसे पश्चिम कुछ उत्तर १७ मीलकी रेलवे शाखा डीसा छावनीको गई है।

पालनपुरका राज्य—पालनपुर पोलिटिकल एजेंसीमें १३ राज्य हैं, जिनमेंसे पालनपुर और राधनपुर पहिले दरजेके राज्य और दूसरे ११ बहुत छोटे राज्य हैं। पालनपुर सबसे बडा राज्य है। उसके उत्तर सिरोहीका राज्य और मारवाड़का सवडिवीजन; पूर्व सिरोही और एक दूसरा राज्य तथा अर्बलीका सिलसला, दक्षिण बडोदाका राज्य और पश्चिम पालनपुर एजेंसीके राज्य हैं।

राज्यके उत्तरी भागमें सघन वनोंके साथ पहाडियाँ है। पूर्व और दक्षिणकी नीची ऊँची काली भूमि उपजाऊ है, उसमें वर्षमें तीन फसिल होती हैं। पश्चिमोत्तर समतल मैदान है, जिसमें साधारण तरहसे सालमें एक फसिल होती है। पहाडियोंपर अच्छे चरागाह हैं। गाँव, जो साधारण प्रकारसे गरीब हैं, दूर दूर पर बसे है। उस राज्यमें बनास और सरस्वती नदी बहती है। बोखारकी बीमारी बहुत होती ह। ऊँख, गेहूँ, धान इत्यादि फसिल होती हैं। अहमदाबादसे पालनपुरके राज्यसे होकर अजमेर, दिल्ली और आगराको सडक गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पालनपुर राज्यके ३१५० वर्गमील क्षेत्रफलके १ कसबे और ४५१ गाँवामें २३४४०२ मनुर्ष्य थे, अर्थात् १९३३१७ हिन्दू, १७२५६ मुसलमान और १३८२९ दूसरे।

पालनपुर राज्यसे लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ४३७५० रुपया वड़ोदाके महाराजको 'कर' दिया जाता है। वहाँके नवाबको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। उनके पास लगभग ३०० सवार और ७०० पैदल सेना है।

इतिहास—पालनपुरके नवाब लोहानी अफगान है। कहा जाता है कि दिल्लीके हुमायूँके राज्यके समय लोहानी लोग विहारपर अधिकार रखते थे। सन् १५९७ में अकबरने उनके प्रधान गजनीखांको दीवानकी पदवी देकर लाहौरका सूबेदार बनाया। सन् १६८२ मे औरङ्गजेबने गजनीखांके वंशजको पालनपुर, डीसा इत्यादि दे दिये। सन १६९८ में मारवाड़के राठौर राजपूतोंने उसके उत्तराधिकारीसे सब देश छीनकर उसको पालनपुर छोड दिया। उस समयसे वे लोग पालनपुरमें रहने लगे। सन् १७५० में दीवान वहादुरखांन पालनपुरके शहर पनाहको बनवाया। सन् १८१२ में पालनपुरके फीरोजखांको उनके अधीनके एक आदमीने मारडाला। उस समय फीरोजखांके पुत्र फतहखांने अङ्गरेजी गवर्नमेंटसे सहायता मांगी। सन् १८१३ मे अङ्गरेजी सरकारने अपनी सेना भेजकर फतहखांको पालनपुरका प्रधान बना दिया। सन् १८१७ में अङ्गरेजोने आक्रमण करके पालनपुरको ले लिया। उसके पश्चात् पालनपुरके प्रधान उनके अधीन हुए। इस समय दीवान सर शेरमहम्मदखां, जिनकी अवस्था लगभग ४० वर्षकी है, पालनपुरके नवाब हैं।

# आबू पहाड़।

पालनपुरके रेलवे स्टेशनसे १३ मील पूर्वोत्तर सरोत्राका रेलवे स्टेशन है, जिससे पूर्वोत्तर वम्बई हाता छूट कर राजपूताना प्रदेश मिल जाता है। सरोत्रासे १९ मील और पालनपुरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील पूर्वोत्तर राजपूताना प्रदेशमे आबूरोडका रेलवे स्टेशन है।

राजपूतानेकी दक्षिणी सीमाके पास राजपूतानेके सिरोहीके राज्यमें आबू नामक प्रसिद्ध पहाड है। वह पहाड अर्बुदगिरिका, जिसको अब अर्वली कहते है, एक भाग है, किन्तु अर्बलीके सिलसिलेसे आवू पहाड एक तङ्ग घाटी द्वारा अलग होगया है। उस घाटीसे होकर पश्चिमी वनास नदी बहती है। आबू पहाड पर बहुतसे जैनयात्री और हिन्दू यात्री जाते हैं।

आबूका शिर लगभग १४ मील लम्बा और २ मीलसे ४ मील तक चौडा है। उस पर स्थान स्थानमें चोटियाँ है। उसका प्लेटू अर्थात् ऊपरका मैदान नीचेके मैदानसे लगभग ३००० फीट और समुद्रके जलसे ४००० फीट ऊचा है। आबूके उत्तर भागका शिखर, जो उसके सब शिखरोंसे बुलन्द है, समुद्रके जलसे ५६५० फीट ऊँचा है।

आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे आबू पहाडके पूर्व वगलके पास तक १६$\frac{3}{4}$ मील पर्यंत चढाईकी सुन्दर सडक है। रेलवे स्टेशनसे पांच छः मील तक हलके पहियेकी गाडीका और उससे आगे पहाडके शिर तक छोटे घोडेका मार्ग है। तागाभी पहाडके शिर तक जा सकता है।

आबू पहाडपर गर्मीके समय गवर्नर जनरलके राजपूतानेके एजेंट और अन्य यूरोपियन तथा देशी अमीर लोग रहते हैं। वहाँ तंदुरुस्तीके लिये यूरोपियन सेना रक्खी जाती हैं। आबूकी नवके पास और उसके ढालू बगलों पर मनोहर सघन जङ्गल हैं, जिनमें स्थान स्थानपर वासके जङ्गल लगे हैं। जङ्गलोंमें भालू बहुत रहते है, वाघ कभी कभी देखनेमें आते है। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा लगभग ७० इञ्च होती है। वर्षा कालमें नदियों और झरनोका पानी बढ़ जानेसे तथा हरे भरे जङ्गलोंसे आबूकी शोभा बहुत बढ़ जाती है। प्रायः सम्पूर्ण घाटियोंमें २० या ३० फीट कूप खननेसे अच्छा पानी मिल जाता है। जाडेके समयमें आबू पर बहुत कम लोग रहते हैं। सरकारी अफसरों तथा दर्शकोंके लिये आबू पर लगभग ५० बॅगले वने हैं। फौजी छावनीमें लगभग २०० सैनिक रह सकते है। उस पहाड पर गर्मीके समयमें लगभग ४५०० और दूसरे समयमें लगभग ३५०० आदमी रहते हैं। आबूकी कन्दराओंमे बहुतसे साधु निवास करते हैं। आबूकी पीठपर गाडीकी सडक बहुत कम हैं, किन्तु घोडे और पैदलके सुन्दर मार्ग है

आबूके प्लेटूके दक्षिण-पश्चिमके वगलके पास वारक अर्थात् सैनिक गृह, लारंस स्कूल, अङ्गरेजी गिर्जा, रेजीडेन्सी, क्लब, बाजार इत्यादि हैं।

लगभग $\frac{1}{2}$ मील लम्बी "नखी तालाब" नामक एक सुन्दर झील है, जिसको लोग नैला तालाब भी कहते हैं। उसके चन्द छोटे टापुओंपर वृक्ष लग गये हैं। उसमे सर्वदा झरनोंका पानी गिरता है। हालमे पानी अधिक रहनेके लिये झीलके पश्चिम किनारेके पास एक बाँध बनाया गया है। झीलके पूर्वके किनारेके पास पानीकी गहराई कम है; किन्तु अन्य भागोमे पानी गहरा है। उसकी औसत गहराई २० से ३० फीट तक है, किन्तु बाँधकी ओर झीलके मध्य भागमें लगभग १०० फीट गहरा पानी है। उस देशके लोग कहते है कि देवताओंने महिषासुरके भयसे भाग कर अपने छिपनेके लिये अपने नैल अर्थात् नखोंसे खोदकर इस झीलको बनाया था, इसी लिये इसका नाम नैला तथा नखी तालाब पडा है। नखी झीलके किनारेपर खानगी मकान बने हुए हैं।

झीलकी दक्षिण रामकुण्ड नामक चोटी ४३५४ फीट और उत्तर अम्बादेवी चोटी ४७२० फीट, चर्च चोटी ३८४९ फीट, रेजीडेसी चोटी ३९३० फीट, केका पहाड़ ४६०० फीट, देवली पहाडी ४३३५ फीट, विमली चोटी ४५४२ फीट, फिटपरेप ४५७२ फीट, अचलगढ़ चोटी ४६८८ फीट, नैरा चोटी ४६८६ फीट, झाका चोटी ५१९६ फीट और नगरातालाब चोटी ४९३३ फीट समुद्रके जलसे ऊँची है।

आबूके जैन मन्दिर—आबूके सिविल स्टेशनसे लगभग १ मील उत्तर पहाड़के ऊपर देवलवाडेमे आबूके प्रसिद्ध जैन मन्दिर हैं। मन्दिरोंके चारों ओर पर्वतकी चोटियाँ हैं। वहाँ ५ मन्दिर हैं, जिनमेंसे एक विमलशाहका और दूसरा वास्तुपाल और तेजपालका बनवाया हुआ है। वे दोनों मन्दिर भारत-वर्षके सब जैन मन्दिरोंसे अधिक सुन्दर है। मध्यमें जैन लोगोंके पहिले तीर्थकर ऋषभनाथ अर्थात् आदिनाथका चौमुख नामक तीन मञ्जिला मन्दिर है। उस मन्दिरमें चारों ओर ४ दरवाजे हैं। मन्दिरके मध्यमे ऋषभनाथकी चौमुख अर्थात् चार मुखवाली प्रतिमा है। मन्दिरके पश्चिम बगलमे दोहरी और तीन बगलोंमे एकहरी मंडप अर्थात् जगमोहन है। चौमुख मन्दिरके उत्तर ओर एक ऊँचे चबूतरेपर दूसरा बड़ा मन्दिर; चौमुखसे दक्षिण-पूर्व ऊँची दीवारसे घेरा हुआ आदिनाथका एक मन्दिर और चौमुखसे पश्चिम विमलशाहका और वास्तुपाल तथा तेजपालके ये दोनों मन्दिर है।

विमलशाहके मन्दिरमें जैनोंके तीर्थंकर आदिनाथ और उसके उत्तर वास्तुपाल और तेजपाल नामक दोनो भाइयोंके मन्दिरमें जैन लोगोके २२ वे तीर्थंकर नेमीनाथकी प्रतिमा है। वहाँके शिलालेखोंसे विदित होता है कि विमलशाहका मन्दिर सवत् १०८८ ( सन् १०३१ ई० ) में बना और संवत् १३७९ ( सन् १३२२ ई० ) में मरम्मत किया गया और वास्तुपाल, तेजपालका मन्दिर सन् ११९७ और सन् १२४७ ईस्वीके बीचमे बना था। दोनो मन्दिर सैकड़ों मीलसे मार्बुल अर्थात् संगमर्मर लाकर पहाड़पर बनाये गये। उनमें बारीक नक्काशीका काम है और पत्थर काट कर विचित्र फूल पत्ते निकाले गये हैं। किसी किसीका मत है कि आगरेके ताजमहलको छोड़ कर भारतवर्षमे कोई ऐसी इमारत नहीं है।

एक आँगनमे, जिसकी लम्बाई १४० फीट और चौड़ाई ९० फीट है, आदिनाथका मन्दिर है। आँगनके चारों बगलोंमें ५५ छोटी कोठरियां हैं। प्रति कोठरीमें जैन देवताकी प्रतिमा पलथी मारकर बैठी हुई है। कोठरियोके आगे छोटे खंभे लगे हुए ओसारे हैं। वह मन्दिर जैन मन्दिरोके मामूली ढाचेका है, उसमें केवल एक द्वार है। मन्दिरमें आदिनाथकी पीतलकी प्रतिमा पल्थी मारकर बैठी है। मन्दिरके आगे आंगनमे ४८ स्तम्भोंका मण्डप है, जिसके ऊपर मध्यमें एक गुम्बज बना हुआ है। एक मुरब्बा मण्डपमें, जिसका अगवास दरवाजेकी ओर है, सफेद मार्बुलके लगभग ४ फीट ऊँचे ९ हाथी हैं। प्रत्येक हाथीपर हौदेमें एक पुरुष और एक पीलवानकी प्रतिमा बनी हुई है। उनमेंसे कई एक टूट गई हैं। यह ठाट विमलशाह और उनके वंशके लोगोंके मन्दिरमें जानेका बना हुआ है, अर्थात् हाथियोपर विमलशाह और उनके वंशके लोगोकी प्रतिमा हैं। विमलशाहकी प्रतिमाको मुसलमानोने तोड़ दिया था। उनकी वर्त्तमान प्रतिमा चिकनी मिट्टीकी बनी है।

विमलशाहके मन्दिरके उत्तर बगलमें जैनोके २२ वें तीर्थंकर नेमीनाथका मन्दिर है, जिसको अनहिल पाटनके पोरवाल बनियाँ वास्तुपाल और तेजपालने, जो गुजरातके बघेला राजाके दीवान थे, बनवाया था। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस मन्दिरके बननेमें १ करोड़ ८० लाख रुपया खर्च पडा। उसके अलावे उस जगहके, जिसपर मन्दिर बना है, भरती करनेमें ५६ लाख रुपया अलग खर्च हुआ था। वह मन्दिर सुन्दरता और कारीगरीमें बहुत उत्तम है। उसमे कई एक संस्कृत लेख हैं। ड़े आं गनमें मान्दिर है। आंगनके चारो बगलोंमें बहुत सी छोटी कोठरियाँ बनी हुई है, जिनमे जैन मूर्त्तियॉ बैठी हैं। कोठरियाक दरवाजेके ऊपर उनकी बनावटके विषयमें४६लेख हैं, जिनमे संवत १२८७ ( सन् १२३० ) से संवत् १२९२ ( सन् १२३६ ई० ) तक देख पडता है। उस मन्दिरमे उत्तम सङ्गतरासीके १० हाथियोका ठाट है। हाथियोंके सवारोंको कोई राजा ले गया था। प्रति हाथीके पीछे एक ताक है। उन ताकोंमें वास्तुपाल, तेजपाल और उनके चचा तथा उन लोगोंके परिवारके अन्य लोगोकी प्रतिमा बनी हुई हैं।

अचलगढ़—देवलवाडासे ४ मील आगे उरिया गाँवके पास एक बङ्गला है। दहिनेके मार्गसे उस जगहसे १ मील दूर जानेपर एक घेरेके भीतर अचलेश्वर महादेवका सुन्दर मन्दिर मिलता है। उसके दक्षिण अग्निकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनारेपर एक पमारकी मार्बुलकी सुन्दर प्रतिमा बनी हुई है, जिसके हाथमे धनुप बना है। उसके पास पत्थरके ३ भैंसे हैं। मन्दिरसे दक्षिण–पूर्व एक दूसरा सुन्दर मन्दिर है। वहाँके सब मन्दिर पहाड़ीपर चढ़नेके समय दूरहीसे देख पड़ते हैं। वहाँ हिन्दू यात्री बहुत जाते हैं। अचलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक संन्यासीके मठमें राणा समरसिंह प्रशस्ति, जिसको संवत् १३४२ ( सन् १२८५ ईस्वी ) में चित्तौरगढ़के वेदशर्म्मा नामक नागर ब्राह्मणने श्लोकबद्ध संस्कृतमें बनाया था, पत्थरपर खोदी हुई है। उसमें बप्पारावलसे ले करके राणा समरसिंह तकके चित्तौरके राजाओका वर्णन है और लिखा है कि राणा समरसिंहने अचलेश्वरको स्थापित किया तथा भावशंकर तपस्वीकी आज्ञासे उनके पुराने मठका जीर्णोद्धार करवा दिया राणा

समरसिंह सन् ११९३ ईस्वीमें अपने शाले पृथ्वीराजके साथ महम्मदगोरीके संग्राममें मारे गये थे ( प्रथम खण्डके चित्तौरमें देखिये )।

मन्दिर और स्थान—आबू पहाड़के बगलोंपर तथा उसके चारोंओरके मैदानोंमें बहुतसे मन्दिर और स्थान हैं, उनमेंसे चन्द सुन्दर हैं। पहाड़के दक्षिण–पूर्वके ढालूपर ५०० फीट नीचे अङ्गरेजी गिरजासे ३ मील दूर गौमुखके पास एक सुन्दर मन्दिर है। मन्दिरके आगे एक पीतलकी प्रतिमा बनी हुई है।

सिविल स्टेशनसे ५ मील दूर गौमुखसे पश्चिम पहाड़के दक्षिण बगलपर गौतमका मन्दिर है।

सिविल स्टेशनसे १४ मील दूर पहाड़के दक्षिण–पूर्वके पादमूलके पास एक देवमन्दिर है। आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे सुगमतासे आदमी वहाँ जा सकते हैं।

पहाड़से दक्षिण–पश्चिमके मैदानमें अनन्दाके डाक बँगलेसे २ मील दक्षिण देवाङ्गना स्थान है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत–( वनपर्व, ८२ वाँ अध्याय ) तीर्थके यात्रियोंको उचित है कि चर्मण्वती अर्थात् चम्बल नदीमें स्नान करनेके उपरान्त हिमाचलके पुत्र अर्बुदगिरि जायँ। वहाँ पूर्व समयमें पृथ्वीमें छेद था। उसी जगह तीनों लोकोंमें विख्यात वशिष्ट मुनिका आश्रम है, वहाँ एक रात निवास करनेसे हजार गोदानका फल और वहाँके पिंगतीर्थके स्पर्श करनेसे सौ गोदानका फल मिलता है।

## सिरोही।

आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे २८ मील उत्तर और नानाके रेलवे स्टेशनसे लगभग १६ मील पश्चिम ( २४ अंश, ५३ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५४ कला, २८ विकला पूर्व देशान्तरमें ) राजपूतानाके सिरोही राज्यकी राजधानी सिरोही नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिरोही कसबेमें ५३९९ मनुष्य थे, अर्थात् ५१२९ हिन्दू और ५७० मुसलमान।

सिरोहीमें वहाँके महारावका महल, एक अस्पताल, एक जेलखाना और शरणेश्वर शिवका मन्दिर है। वहाँ तलवार, बर्छी, छुरी, इत्यादि हथियार सुन्दर बनते हैं।

सिरोहीका राज्य—राजपूताना एजेंसीमें सिरोही एक देशी राज्य है। उसके उत्तर जोधपुरका राज्य, पूर्व उदयपुरका राज्य, दक्षिण पालनपुर और माहीकण्ठाके इडर और दन्ताका राज्य और पश्चिम जोधपुरका राज्य है। उस देशमें चट्टान और पहाड़ियाँ बहुत हैं, इस लिये वह राज्य बहुत टुकड़ोंमें बट गया है। उस राज्यके आबू पहाड़की सबसे ऊँची चोटी समुद्रके जलसे ५६५० फीट ऊँची है। अर्वली पहाड़से वह राज्य दो भागोंमें विभक्त हुआ है। पश्चिमी भाग दूसरे भागोंसे अधिक मैदान और खेतीके लायक है। राज्यकी प्रधान फसिल गेहूँ और जव हैं; किन्तु चना; मिल्लेट और तेलहन अर्थात् तेलके बीजभी होते हैं। राज्यमें केवल पश्चिमी बनास नदी है, जिसकी धारा गर्मी आरम्भ होनेके समय बढ़नेसे

बन्द होजाती है, किन्तु स्थान स्थानमें नदीके गहरे स्थानमें पानी रह जाता है। कूपोंका पानी राज्यके पूर्वोत्तरके भागमें ५० फीटसे १०० फीट तक नीचे; पश्चिमोत्तरके भागमे ७० फीटसे ९० फीट तक नीचे, पूर्वी भागमें १५ फीटसे ६० फीट तक नीचे और पश्चिमी भागमे ६० फीटसे ७० फीट तक नीचे है। सिरोही कसबे और उसके पड़ोसके कूपोंमें खारा पानी है। पहाड़ियों और वनोंमे बाघ बहुत है, जो बहुत मवेसियोंको मार डालते हैं। भालू, हरिन और तेंदुएभी हैं। सिरोहीके राज्यसे १७५००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्यका फौजी बल २ तोप, लगभग १०० सवार और ५९० पैदलका है। वहाँके महाराव अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी पाते हैं। अब उस राज्यके कुछ लोग पढ़नेमें मन लगाते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिरोहीके राज्यके ३०२० वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसबा, ३६५ गाँव, ३०५३२ मकान और १४२९०३ मनुष्य थे, अर्थात् १२३६३३ हिन्दू, १६१३७ जैन, २९३५ मुसलमान, १७९ कृस्तान और १९ अन्य। हिन्दुओंमे १७३१७ वनियां, १३४६६ राजपूत, १३२८८ ब्राह्मण और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। राज्यके उत्तरके भागमें मीना और दक्षिण भागमें भील बहुत है, जिनमेंसे बहुत लोग चोरीका पेशा करते हैं।

इतिहास—वर्त्तमान सिरोही नरेश दिल्लीके महाराज पृथ्वीराजके वंशज देवराजके वंशधर चौहान राजपूत हैं। अति पूर्व समयमे सिरोहीमे भील लोग बसते थे। वहाँ राजपूतोंमें प्रथम गिहलोट राजपूत और उसके थोड़ेही दिन पीछे पमार राजपूत आये। पमारोंकी राजधानी चन्द्रवती थी, जिसके खण्डहरोंको देखनेसे जान पड़ता है कि एक समय यह बड़ा शहर था। पमारोंके उत्तराधिकारी चौहान हुए, जो लगभग ११५२ ईस्वीमें उस देशमें बसे थे। उन्होंने बहुत वर्षों तक बड़ी लडाई करके पमारोंके राज्यपर अपना अधिकार किया। अन्तमें जब पमार लोग आबू पहाड पर भाग गये तब देवराज चौहानने उनके पास खबर भेजी कि तुम लोग अपनी १२ लड़कियां चौहानोंको देकर इनसे मित्रता कर लो। उसकी बातपर विश्वास करके प्रायः सब पमार राजपूत १२ लडकियोंको लेकर सिरोहीकी दक्षिणी सीमाके पास भदेली गांवमें आये। उस समय चौहानोंने उन पर आक्रमण करके बहुतेरोंको मार डाला और आबूको अपने अधिकारमें कर लिया। अब तक पमारोंकी किलाबन्दियोंके खण्डहर आबू पर विद्यमान है।

सन् १८५७ के बलवेके समय सिरोहीके महाराव शिवसिंहने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की, उसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेज महाराजने उनका आधा 'कर' छोड़ दिया, अब वहाँके महारावको केवल ६८८० रुपया कर देना पड़ता है। सन् १८४५ मे सिरोहीके महारावने अङ्गरेजी सरकारको आबू पहाड़ पर उसके चन्द टुकडे दे दिये, जिनपर अङ्गरेजी अफसर गर्मीके दिनोंमें रहते हैं। वर्त्तमान सिरोही नरेश महाराव केशरीसिंहजी बहादुर लगभग ३३ वर्षकी अवस्थाके चौहान राजपूत हैं।

---

आवूरोडके रेलवे स्टेशनसे १९० मील अजमेर, २०८ मील किसनगढ़, २३९ मील फलेरा जंक्शन, २७४ मील जयपुर, ३३० मील बाँदीकुई जंक्शन, ३९१ मील भरतपुर, ४२५ मील आगरा किलाका स्टेशन, ४४१ मील तुण्डका जंक्शन, ४९८ मील इटावा, ५८५ मील कानपुर, ७०४ मील इलाहावाद, ७९८ मील नयनी जंक्शन, ७५५ मील विंध्याचल, ७६० मील मिर्जापुर, ७९९ मील मुगलसराय जंक्शन, ८५७ मील वक्सर और ८८७ मील विहियाका रेलवे स्टेशन है । मैं विहियाके स्टेशनपर रेलगाडीसे उतरकर स्टेशनसे १२ मील उत्तर अपने घर चरजपुरा चला आया ❀ ।

साधुचरणप्रसाद,

**भारत-भ्रमण चौथा खण्ड समाप्त ।**



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

**"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बम्बई.**

---

❀ अव ग्रन्थकर्त्ता वावू साधुचरणप्रसाद, जिनका वय ( सन् १९०२ ईस्वीमें ) ५१ वर्षका है, अपने गृहके कार्योंको छोड़कर काशीमें रहते हैं ।